Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या 69/८९(२)
पुस्तक संख्या ४९,४२८
आगत पञ्जिका संख्या

पुस्तक पर किसी प्रकार का निशान लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
विषय संख्या 69 आगत नं० ४९,४२८
लेखक ८९(२)
शीर्षक

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४३,४२८
१.०-५-६५

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या 69 / ८१(२) आगत संख्या ४१,४२८

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा 50 पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीजक कबीरदास सटीक

بیجک کبیرداس سٹیک

CHECKED 1973
Initial

जिसमें

आदिमङ्गल, रमैनी, शब्द, कहरा, वसन्त, चौंतीसी, शारवी इत्यादि स्वरूपों में जनन मरणादि अनेक दुःख सन्तप्त जीवों के उपकारक योग और उपासनादि मतका प्रकाशक और परम पुरुष श्री रामचन्द्र के स्वरूप ज्ञानका प्रदर्शक सर्वोत्तम मत वर्णन किया है

जिसको

श्री सन्महाराजाधिराज श्री रीवा राज्याधिपति श्री १०८ विश्वनाथ वैकुण्ठवासी ने अत्युत्तमता से सम्पूर्ण ग्रन्थ की प्रत्यक्षर टीका की

वही

श्री महिद्र इन्द्र शिरोमणि महात्मा युगलानन्य शरण जी वैकुण्ठवासी अयोध्या निवासी की पुस्तकालय से उक्त श्री महात्मा जी के स्थानापन्न श्री महोपाध्याय परम साधु श्री जानकी वर शरण जी के द्वारा बड़े परिश्रम से प्राप्त हुआ

सम्पूर्ण विद्यारसिक व वेदान्त मतानुरागियों के अवलोकनार्थ

पहली बार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के यन्त्रालय में मुद्रित हुआ

सितम्बर सन १८८२ ई०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञप्ति

इस मद्रीने अर्थात सितम्बर सन् १८८३ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय कर लें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा इतिहास	वैकुण्ठ प्रस्थान स्वर्गा	११-अश्वमेध आ-	६-लंका काण्ड
महाभारत	रोहण पर्व्व	श्रम वासिक सुपर्ण	७-उत्तर काण्ड
१-पहिले हिस्से में	हरिवंश पर्व्व	पर्व्व महा प्रस्थान	रामायण शब्दार्थ को
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	महाभारत पर्व्व अलग	स्वर्गा रोहण	रामायण का इतिहास
वन पर्व्व	छपा भी है	१२-हरिवंश पर्व्व	रामायण मानस दीपिका
२-दूसरे हिस्से में वि-	१-आदि पर्व्व	रामायण रामविलास	रामायण कवितावली स-
राट पर्व्व उद्योग पर्व्व	२-सभा पर्व्व	रामायण तुलसी कृत	रामायण गीतावली त-
भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	३-वन पर्व्व	रामायण सटीक मय	भुवनेश भूषण ७-
३-तीसरे हिस्से में क-	४-विराट पर्व्व	मानस दीपिका कोष श्र-	विनय पत्रिका बा- नो
र्ण पर्व्व शल्य पर्व्व	५-उद्योग पर्व्व	रामायण तुलसी कृत	विनय पत्रिका वा- शि-
गदा पर्व्व सौप्तिक प-	६-भीष्म पर्व्व	टीका सुखदेव कृत	विष्णु पुराण भाषा
र्व्व योषिक पर्व्व वि-	७-द्रोण पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	लिंग पुराण
शोक पर्व्व स्त्री पर्व्व	८-कर्ण पर्व्व	सयत सचीर व क्षेपक	ब्रह्मोत्तर खण्ड
शान्ति पर्व्व में राज ध-	९-शल्य पर्व्व गदा	रामायण तुलसी कृत	भविष्योत्तर पुराण
र्म आपद्धर्म मोक्ष	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	सातों काण्ड	शुक्र नीति
धर्म	स्त्री योषिक व विशो-	१-बाल काण्ड	रसतरंगिणी रस चन्द्रोदय
४-चौथे हिस्से में शा-	क वन्त्री पर्व्व	२-अयोध्या काण्ड	सुदामा चरित्र
न्ति पर्व्व दान धर्म्म अ-	१०-शान्ति पर्व्व राज	३-आरण्य काण्ड	कृष्ण गीतावली
श्वमेध आश्रम वासि	धर्म मोक्ष धर्म्म व	४-किष्किन्धा काण्ड	श्री अनुराग रस
क पर्व्व मौशल पर्व्व	दान धर्म	५-सुन्दर काण्ड	सौदागर लीला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६१
२१(२) पृ.४२८

भूमिका ॥

दोहा ॥

श्रीहरि गुरु प्रियदासजय मनबच परजय राम ॥
जय हनुमतजयशिवशिवा जयसरस्वतिअभिराम १
श्रीकवीर जय साधु सब जे जानत गुरु भेद ॥
बीजक को टीका करत विश्वनाथ हरषेद २
कथनी अकथ पषंड खंडनी यहिको जोई बिचारी ॥
भजनक्रियाजेलिखीकरिहिजोसोपरधामसिधारी ३
अनुभवपरेप्रदरसनिनामा टीकासुनिहि जोगैहै ॥
विश्वनाथ परतमपरेश प्रभुतेहि सबठौर दिखैहै ४

जेतने भर कवीरजीके ग्रन्थहैं तेभर यही बीजकको मत लैकै बनेहैं याते यह बीजक सब ग्रन्थन केर बीजकहै याते याको बीजक नामहै औ सार शब्द बर्णन कियो है याते यह बीजक सब ग्रन्थनको सारहै तामें प्रमाण कवीरजीको ॥ चौदह अरब ज्ञानहमभाखा । सार शब्द करिऊपर राखा ॥ सार शब्द जो रामनामहै ताको बीज नाम मंत्र शास्त्रनमें बर्णन है ताही बीजक को ज्ञान यामें बर्णन है याते याको बीजक कहैहैं औप्रथम की उत्पत्ति यामें है याते आदिमंगल जो है कवीर जीको सो यही बीजकको मङ्गलाचरण है यह जानिकै आदिमङ्गल यह बीजकमें लिखि दियो है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

बीजक कबीरदास ॥

अथ आदिमंगल ॥

दोहा ॥ पूथमै समरथ आप रहे दूजा रहा न कोइ ॥
दूजा केहि बिधि ऊपजा पूछत हौं गुरु सोइ १
तब सतगुरु मुख बोलिया सुकृत सुनो सुजान ॥
आदि अन्त की पारचै तोसों कहौंबखान २
पूथम मूर्ति समरथ कियो घटमें सहज उचार ॥
ताते जामन दीनिया सात करी बिस्तार ३
दूजे घट इच्छा भई चित मन सातो कीन्ह ॥
सात रूप निरमाइया अविगत काहु न चीन्ह ४
तब समरथ के श्रवण ते मूल सुरति भै सार ॥
शब्द कला ताते भई पांच ब्रह्म अनुहार ५
पांचौ पांचै अंड धरि एक एकमा कीन्ह ॥
दुइ इच्छा तहँ गुप्तहैं सो सुकृत चित चीन्ह ६
योग मया यकु कारन ऊजे अक्षर कीन्ह ॥
या अविगति समरथ करी ताहि गुप्त करिदीन्ह ७
श्वासा सोहं ऊपजे कीन अमी बंधान ॥
आठ अंग निरमाइया चीन्हौ संत सुजान ८
तेज अंड अचिंत्यका दीन्हों सकल पसार ॥
अंड शिखा पर बैठिकै अधर दीप निरधार ९
ते अचिन्त के प्रेमते उपजे अक्षर सार ॥
चारि अंग निरमाइया चारि वेद बिस्तार १०
तब अक्षर का दीनिया नींद मोह अलसान ॥
वे समरथ अविगति करी मर्म कोइ नहिं जान ११
जब अक्षर के नींदगै दबी सुरति निरबान ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्यामबरण यक अंडहै सो जलमें उतरान १२
अक्षर घटमें ऊपजे व्याकुल संशय शूल ॥
किन अंडा निरमाइया कहा अंड का मूल १३
तेही अंड के मुख्यपर लगी शब्द की छाप ॥
अक्षर दृष्टिसे फूटिया दश द्वारे कढ़ि बाप १४
तेहिते ज्योति निरञ्जनो प्रगटे रूप निधान ॥
काल अपरबल बीरभा तीनि लोक परधान १५
ताते तीनो देवभे ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
चारि खानि तिन सिरजिया मायाके उपदेश १६
चारि वेद षट शास्त्रऊ औ दशअष्ट पुरान ॥
आशादै जग बाँधिया तीनो लोक भुलान १७
लख चौरासी धारमा तहां जीव दिय बास ॥
चौदह यम रखवारिया चारिवेद विश्वास १८
आपु आपु सुख सब रमै एक अंड के माहिँ ॥
उत्पतिपरलयदुःखसुखफिरिआवहिँफिरिजाहिँ १९
तेहि पाछे हम आइया सत्य शब्द के हेत ॥
आदि अन्त की उतपति सो तुमसों कहिदेत २०
सात सुरति सब मूलहै प्रलयहु इनहीं माहिँ ॥
इनहीं मासे ऊपजे इनहीं माहँ समाहिँ २१
सोई ख्याल समरत्थकर रहेसो अछप छपाइ ॥
सोई संधिलै आइया सोवत जगहि जगाइ २२
सात सुरति के बाहिरे सोरह संखि के पार ॥
तहँ समरथ को बैठका हंसन केर अधार २३
घर घर हम सबसों कही शब्द न सुनै हमार ॥
ते भवसागर डूबहीं लख चौरासी धार २४
मंगल उत्पति आदिका सुनियो संत सुजान ॥
कह कबीर गुरु जागृत समरथ का फुर मान २५

दो० प्रथमै समरथ आपहै दूजा रहा न कोय।
दूजा केहिबिधि ऊपजा पूछत हौं गुरुसोय॥ १ ॥

कबीरजीकी वाणीके अर्थ करिबेको मोमें सामर्थ्य नहीं रही परंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब यह विचारिकै कि कबीरजीके बीजकको पाषण्ड अर्थ लगाइकै जीवबिगरे जायँहैं सो साहब तो परमदयालु है उनको करुणा भई तब कबीरजी को भेज्यो या कहिकै कि आगेहम तुमको भेज्यो हतो सो तुम ग्रन्थ बनाइकै बहुत जीवनको उपदेश करिकै उद्धार कियो सो अब तिहारे ग्रन्थको पाषण्ड अर्थ करिकै पाषण्डी ह्वै कै जीवबिगरे जायँ हैं औ बहुत बिगरि गये सो तुमजाइकै जौनअर्थ तुमबीजकमें राख्योहै सोअर्थ बिश्वनाथसों बनवावो जातेसो अर्थ समुझिकै जीव हमारे पासआवै सोकबीर जी आयकै मोसोंकह्यो कि तुम बीजकको अर्थ बनावो हम तुमको बतावेंगे सो उनके हुकुम ते मैं बीजक को अर्थ बनाऊं हौं बतावने वारे श्रीकबीरहीजीहैं मोमें तागत नहीं है जोमैं बनायसकौं औनाभाजी भक्तमालमेंलिख्योहै कि॥कबीर कानिराखीनहीं बरणआश्रमषटदरशनी॥सोइहां कबीर जीको सिद्धांत मतमैं कहौंगो औ सर्वसिद्धांत ग्रन्थ जो मैं बनायो है तामेंसबको सिद्धांत यथार्थ राख्योहै सो यहां बीजकके तिलकमें साहबको औ कबीरजीको हुकुम यहीहैकि एक सिद्धांत रहै जो सबते परे है और सिद्धांत सबखंडन ह्वै जायँ सो सबके सिद्धांतन को खंडन करिकै एक सिद्धांत मैं बर्णन करौहौं सो सुनिकै साहब के हुकुमी जानिकै साधु लोग पण्डित लोग और और मतवारे जेहैं तेमेरे ऊपर खफा न होयँ प्रसन्न रहैं नासमुझि परै तौ प्रसन्न होइकै गुरूसों पूछिलेइँ औ यह बस्तु निर्देशात्मक मंगल है ताको अर्थ लिखैहै अथअर्थ ॥ प्रथम समरथ जे औ रामचन्द्रहैं ते आपहीहैं दूसराकोई नहीं रह्यो जो कहो उनके लोकमेंतौ हंस हंसिनी सब बर्णन करैहैं उनके पार्षद सबहैं ताकोबर्णन निर्भयज्ञान में बिस्तरते हैं सो इहां संक्षेपते सूचित कियेदेइ है॥ सत्यपुरुष निर्भय निरबाना।निर्भय हंसतहँनिर्भय ज्ञाना॥इत्यादिकबहुतबर्णन निर्भयज्ञानमें कबीरजी कियोहै तुम एकही कैसे कहौहौ सो सत्यहै उहांके जीव सनातन पार्षद बनेरहै हैं औ साहब औ साहबको लोक सनातन बनोरहै है परंतु उहांके पार्षद जीव और उहांकी सबबस्तु साहबही के रूपहै औ सबचिन्मयहै सो वेदकहैहैं॥ श्लोक॥सच्चिदानन्दोभगवान्सच्चिदानंदत्मिकाअस्यव्यक्ति॥औ वह अयोध्या नगरीब्रह्मके परेहै ब्रह्म वाको पकाश है औरघुनाथजीके समीपके जे पार्षदहैं ते साहबकेस्वरूपहैं तामेंप्रमाण॥ अयोध्याचपरब्रह्मसरयसगुणःपुमान्॥ तन्निवासीजगन्नाथः सत्यंसत्यंवदाम्यहम्१अयोध्यानगरीनित्यासच्चिदानन्दरूपिणी॥ यदंशेनगोलोकःवैकु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ष्ठस्थाःप्रतिष्ठिताः २ ॥ इतिबशिष्टसंहितायां ॥ देवानांपूरयोध्यातस्थांहिर ण्मयःकोशःस्वर्गलोकोज्योतिषावृतः इति श्रुतेः ॥ सो इहां कहै हैं कि प्रथम तौसमरथ साहब वह लोकमें आपही आपहै दूजा कोई नहीं रह्यो दूजा जो रह्यो सोतौ साहब के लोक को प्रकाश चैतन्याकाश में रह्योहै सो कबीरजीते धर्मदास कहै हैं कि हे गुरूजी मैं तुमसे पछौहौं कि साहब के लोक को प्रकाश चैतन्याकाश में जो समष्टि जीव वह दूजा रह्यो सो केहिबिधिते उपज्यो संसारी भयो काहेते कि साहब तो दयाल हैं जीव को संसार ते छोड़ाइदेइ हैं जीवको संसारी नहीं करि देइहैं औ वह समष्टि जीवके तब मनादिक नहीं रहे शुद्ध रह्यो है उपजिबेकी सामर्थ्य नहीं रहीहै औ साहब सामर्थ्य दैकैजीवको संसारी करब हीन करैंगे सो दूसरा जोहै समष्टिजीव सो उपजिकै व्यष्टि रूप संसारी केहिबिधि ते भयो औ जीव के अपने ते उपजिबे की सामर्थ्यनहीं रही तासें प्रमाण ॥ कर्तृत्वंकरणत्वंचसुभावश्चेतनाधृतिः ॥ तत्प्रसादादिमेसंतिनसंतियदुपेक्षया इतिपयंगश्रुतेः १ ॥

दो० तब सतगुरु मुखबोलिया सुकृत सुनो सुजान ॥
आदि अन्तकी पारचै तासों कहौं बखान २

गुरूसाहब को कहै हैं काहेते सबते श्रेष्ठ हैं औ जे यथार्थ उपदेश करै हैं तिनको सतगुरु कहै हैं औ जे अयथार्थ उपदेशकरै हैं तिनको गुरुवा लोग कहै हैं सो यह बीजक ग्रन्थकी औ अनभवातीत प्रदर्शनी यह टीका की यह सैली है तब सतगुरु जे कबीरजीहैं ते मुख ते बोले कि हे सुजान हे सुकृतजीव समष्टिते व्यष्टि जेहि प्रकार भये हैं सो सुनौ मैं तुमसों आदिअन्तकी परचै कहौहौं जेहिते तुमजानिलेउ२ ॥

प्रथमसुरति समरथ कियो घटमेंसहज उचार ॥
ताते जामन दीनिया सात करी बिस्तार ३

प्रथम समर्थजे साहबश्रीरामचन्द्रहैं साकेत निवासी दयाल जिनके लोक के प्रकाश में समष्टि रूपते यह जीवहै ते श्रीरामचन्द्र परमदयालु यह जीव को देखिकै कि कछूवस्तुको याको ज्ञान नहीं है जबयह जीवपर साहबकी दया भई तब सुरतिमात्र दैकै अपने जानिबे को वाको समर्थ करत भये कि जब याकै सुरति होइगी तब मोको जानैगो मैं हंस स्वरूपदैकै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपने लोक लैआऊंगो जहां मनमाया कालकी गति नहीं है तहां सुख पावैगो अबै तो याको सुखको ज्ञानई नहीं है यह करुणा करिकै वह समिष्ट रूप जीवके घटमें सहजही सुरति को उच्चार करतभये कहे अंकुर करतभये सो साहबतो आपने जानिबेको सुरतिदियो कि मोको जानै औ यहजीव वही सुरति को पाइकै औ मनादिकन को कारण इनकेरहबईकरै औ शुद्धरहै दूधरहै जीव अपनी शुद्धतारूप दूधमें जगतको कारण बनोई रहै तामेंवही सुरतिको जामन दै दियो सो बिनशि गयो सो वह सुरति पाइकै साहब के पास तो न गयो जीव बिनशिकै इच्छादिक जे सात तिनको बिस्तार करत भयो औ यह चैतन्यजीव को सुरति दैकै साहब चैतन्य करै-हे साहब चैतन्योको चैतन्यहै तामें पमाण श्लोक॥ नित्योनित्यश्चेतनश्चेतनानां। द्रव्यंकर्मचकालश्चस्वभावोजीवएवचायदनुग्रहतःसंतिनसंतियदुपेक्षया इतिभागवते॥ औइच्छादिकनकोकौनसातबिस्तारकरतभयोसोआगेकहैहैं ३

दो दूजे घटइच्छा भई चितमन सातौं कीन्ह ॥
सातरूपनिरमाइया अबिगतकाहुनचीन्ह ४

जब याको साहब सुरति दीन तब जीवके जगतको कारणमें रामा ज्ञा न बनोई रहै तेहिते सुरति साहब में न लगायो जगत मुख लगायो जब सुरति जगत मुखलाग्यो तब प्रथम जगतको कारण पुष्ट भयो बिनशि गयो तेहिते दूसर इच्छा रूप अंकुर भयो तीसर चित्त भयो चौथ मनभयो पांचौं बुद्धिभई छठौं अहंकर भयो सातौं अहंबह्म कहे अनुभवते भयो जो ब्रह्मताको मान्यो कि महीं ब्रह्महौं सो शुद्धते अशुद्धह्वै कै सातबिस्तार करि कै समिष्ट रूप जो जीव सोअहंब्रह्मास्मि मान्यो तब याको अनुभव ब्रह्ममाया सबलित भयो ताही द्वारा जगत उत्पन्न भयो ताही द्वारा यह जीवौ उत्पन्न भयो अर्थात् समष्ठि रूप जीव को अनुमान जो ब्रह्मसो इच्छाकियो एकते अनेक होउं सोवा अनुमान ब्रह्म समष्ठि जीव कोहैयहि हेत ते वह समष्ठि जीव एकते अनेक ह्वै गयो औ फिरि वह समष्ठि रूप जीव को जो अनुमानब्रह्मसोबिचार्यो कि ई जे अशुद्ध रूपजीवात्मा तिनमें प्रवेशकैकै नामरूप करौ याही अर्थमें प्रमाण श्लोक॥ सदैवसौम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयं तदैक्षतबहुस्यां प्रजनेयजीवेनात्मनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणिइत्यादिश्रुतयः॥ जो कहो वा सतब्रह्मजीवको अनुमान कैसे कहौहौं ब्रह्मही सब भयो ऐसो काहे नहीं कहौ हौ तौ॥ यतोवाचो निवर्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेअगह्यमनसासह ॥ इत्यादिक श्रुतिन करिकै मन बचनके परेहैं सत-नाम कहनो वामें नहीं संभवित है काहेते वो निर्विकारहै साविकार ह्वैकै एकते अनेक ह्वै जैबो नहीं संभवै या हेतुते यह समष्टि जीवही आपनो अनुमान रूप धोखा ब्रह्म ठाठ कैकै माया सबलित ह्वैकै तद द्वारा जगत उत्पन्न कैकै तदद्वारा आयो उत्पन्न ह्वैकै समष्टि ते व्यष्टि ह्वैगये अविगति समर्थ जे साहब हैं तिनको ना चीन्हत भये यहसंक्षेप सूक्ष्म रीतिते जो उत्पत्ति भई सो कहिदियो औ जब जीवसाहबकेजानिबे को समर्थ भयो तब जैसी उत्पत्ति भईहै सो कहैहैं साहब जो सुरति दियो सोतौ आपने में लगायबेको दियो यह संसारमें लगायो परंतु जो संसारते खैंचिकै अजहूं सुरति सम्हारै साहब में लगावै तो साहबके हजूर आठौपहर बनोरहै अर्थात् साहबै सर्वत्र देखेपरै संसार देखिही ना परै तामें प्रमाण कबीरजी को साखी ॥ सुरति फँसी संसारमें तेहिसे परिगादूर। सुरति बाँधि अस्थिर करै आठौपहर हजूर १ आगे जौनी तरहते उत्पत्ति भई साहबको त्यागि संसारी भयो सुरति पाय काज करिबे को समर्थ भयो तबहूं साहब सारशब्दको उपदेश दियो है ताको साहबै मुख अर्थ ना समुझिकै संसार मुख अर्थ समुझिकै ब्रह्मकी कल्पना कैकैसंसारको उत्पन्न कैकै संसारी भयोहै यह जीव सो आगे कहै हैं ॥

दो० तबसमरथकेश्रवणतेमूलसुरति भइसार ॥
शब्द कला ताते भई पांचब्रह्म अनुहार ५

साहबको दियो सुरति पाइकै समरथ भयो जो समष्टि जीव ताके श्रवणमें मूल सुरति जो साहब आपने जानिबेको दियोहै सो सारभई कहे रामनाम रूपते प्रगट भई सार रामनामको कहैहै तामें प्रमाण साखी कबीर जीकी॥रामैनाम अहै निजसारू। औ सब झूंठ सकल संसारू १ साहबजो सुरति दियोहै सो वह सुरतिके चैतन्यताते नाम सुन्यो अर्थात् साहब जो याको गोहरायो कि रामनामको जपिकै बिचारिकै मोको जानो तो मैं हंस स्वरूप दैकै अपने पास बोलाइलेउं सो सुनिकै रामनाम में जगतमुख अर्थहै ताको गहण कियो औ शब्दमें लगाइ दियो वही रामनाम लैकै शब्द रूप वाणी उचरीहै सो कबीर जीकी रमैनीमें आगे लिख्योहै ॥ रामनाम लैउचरी वाणी ॥औवही रामनामते शब्द कलाबाणी होतभई सो पांच ब्रह्मके अनुहारहैं पांच ब्रह्म कौनहैं तेकहैहैंसोहं ररंकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंकार अकारपराशक्ति रूप रेफतामेंश्रीकबीरजीके भेदसारग्रन्थकोपमाण॥ प्रथम शब्द सोहं जोकीन्हा।सब घटमाहीं ताकर चीन्हा॥ररंकार यकशब्द उचारी। ब्रह्मा बिष्णु जपैं त्रिपुरारी ॥ ओंकार शब्द जो भयऊ। तिन सबही रचना करिलयऊ ॥ शब्द स्वरूप निरंजन जाना। जिन यहकियो सकल बंधाना ॥ शब्द स्वरूपी शक्ति सो बोलै। पुरुष अडोलन कबहू बोलै५॥

दो० पांचौपांचै अंडधरि एक एकमा कीन्ह॥
दुइइच्छा तहँ गुप्तहै सोसुकृत चितचीन्ह ६

ते पचहुंन को पांचअंड कहे पांच स्वरूप बनाइकै एक एक स्वरूप में एक एक अक्षर राखत भये औ दुइ इच्छा जे पथम कहिआये हैं एक वह इच्छा कारण रूपा जब साहब सुरति दियोहै तब जो रहीहै साहब मुख नहीं होनदियो याको बिनशिकै जगत मुख कियो औ दूसरी वह सुरति पाइकै जगत मुख होइकै अपने अनुभव ब्रह्मको खंडा कियो वह ब्रह्ममाया सबलित होइगई तौ न माया आदि शक्ति गायत्रीरूपा इच्छा सो ये दूनों इच्छा पचहुंनमें गुप्तहैं सो कबीरजी कहैहैं कि हे सकृत चित मैं चीन्हों मैं बर्णन करोहौं बिचारिकै देखो ये पचहुंन में दूनौ इच्छाहैं फिनहीं ये सिगरे ब्रह्मजे सार शब्दके जगत मुख अर्थ ते भयेहैं ते माया सबलित हैं कि नहीं तुम चीन्हौ सो आगे कहैं हैं ६ ॥

दो० योगम याय कुकारनो ऊजो अक्षर कीन्ह॥
याअविगतिसमरथकरीताहिगुप्तकरिदीन्ह ७

कारण रूप सुरति औ योगमाया गायत्री ये जे दुइ इच्छाहैं तेवे पांचो ब्रह्मको करती भईं सो सर्वत्र तो यह सनैहैं कि ब्रह्मते सब होइ है औ यहां इनते ब्रह्म होइहै पांचौ यह बड़ो आश्चर्य है यह अविगति समर्थ जे परम पुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते जब सुरति दियोहै तब ये सब भयेहैं तिनको गुप्त करिदियो अर्थात् इनहीं पांचौ ब्रह्ममें औ जीव में नामको अर्थ लगायदियोहै ते पचहुंनको बतावैहै ७ ॥

श्वासा सोहं ऊपजे कीन अमी बंधान॥
आठ अंश निरमायया चीन्हों संत सुजान ८

यहसोहं शब्दवह परमपुरुष जो है समष्टि जीव ताके श्वासाते उपज्यो सोई बतावैहै किसोहंकहे सःअहं सोजोहै अनुभवगम्य ब्रह्मसो मैं हौं औ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही आदिपुरुष समष्टिजीव श्वासाते अभी बंधान करत भयो कि इनको मिठाईपाइकैलोग लोभायजायँ कौनअभी बंधा न करतभयो वही श्वासा ते आठअंश बनावत भये कहे आठौ सिद्धि निकासत भये आठौ सिद्धिके नाम॥अणिमामहिमाचैव गरिमालघिमातथा । प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वंचाष्टसिद्धयः ॥ अथवा आठ अंश निरमाइया कहे आठ प्रधान ईश्वर प्रगट कियो तेई परमपुरुष समष्टि जीवके मंत्री भये तामें प्रमाण महातंत्रमें महादेवकी वाक्य॥ कालीच कौशिकीविष्णुःसूर्योहंगणनायकः॥ ब्रह्माचभैइक्यो बईछ बराइति कीर्तिताः १ यह प्रमाण सतानंद भाष्यमें बिस्तारकै कैहै सो हेसंतसुजानौ तुम चीन्हत जाउ वह जो सार शब्द राम नामहै सो साहब समष्टि जीव पुरुष को बतायो सो सुन्यो औ साहबको न जान्यो धोखाब्रह्मरूप आपहै कै वाको और ई जगद्रूप अर्थ निकासि लियो औ वह जो सोहं शब्द प्रगटभयो सो संकर्षणहै काहेते कि सोहंशब्द जीवमें घटित होइहै कि वह जीव जोहै सोई बिचार करै है कि सो जोहै ब्रह्मसो अहंकहे मही हौं। एक और दूसरो कोई नही है सो उन्हीं को आदि पुरुष औ विराट औ हिरण्य गर्भ कहै है औ सहस शीर्षा पुरुषकहैहै औ ई समष्टिरूपजीव पुरुषहै सोवही समष्टि रूपते संकर्षण स्थूल रूप धारण करिकै प्रगट भयो सबकोआकर्षण करिकै एक ह्वै रहै ताको संकर्षण कही समष्टि जीव काहेते महा प्रलय में सबजीव समष्टि जीवमें रहैहैं औव्यंजन मकार पनीसौ बर्महै सोजीव बाचक है ताको अर्थ समष्टि जीव रूप संकर्षण समुझ्यो औ रामनामकी जो मकार है सोतौ वर्णातीतहै पचीसौ वर्ण नही है रामनाम के व्यंजन मकार में संकर्षण के अंशीजे हैं लक्ष्मण तिनको अर्थ न समुझ्योवहांपांच ब्रह्म कहि आयेहैं सो इहांएकब्रह्म की औरामनामके एकमात्राकीप्रागट्य भई ८॥

दो० तेजअंड आचिंत्यका दीन्होसकल पसार ॥
अंडशिखापर बैठिकै अधरदीप निरधार ९

अचिन्त्यजोहै रामनाम ताको तेज अण्डजो है रामनाम को रेफतौने रेफको अर्थ लेकै सर्वत्र पसराइदियो अर्थात्रेफ अर्धमात्रा को अर्थ परा आद्याशक्ति ब्रह्मस्वरूपा समुझ्यो सो सब जगत् में पसराइदियो वही माया ते संपूर्ण जगत् होतभयो सो वहपरा आद्याशक्ति अंडजो है ब्रह्माण्ड ताकीशिखापर बैठिकै अधरदीपकहे नीचेके ब्रम्हांडनकोनिरधारकहेप्रकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करिकै निर्माण करत भई सोवहीको योगीलोग ब्रह्मांड में प्रान चढ़ाइ कै वही ब्रह्म ज्योति को ध्यान करैं है औवही ज्योतिमें जीवको मिलावैं है औ रेफपदवाच्यते श्री जानकीजी हैं सो अर्थ न समुझ्यो इहां दूसरे ब्रह्म की प्रागट्य भई ६॥

दो० ते अचिन्त्य के प्रेमते उपज्यो अक्षर सार॥
चारिअंश निरमाइया चारि वेद बिस्तार १०

तौन जो अचिन्त राम नाम ताके प्रेमते कहे जब वामें पूंछकियो कि याको समुझै कहाहै तब राम नाम में जो है रकार तेहिमें जोहै लघु अकार तौनेके शक्तिहू अक्षर सार जोहै रामनाम सो प्रणव रूपते प्रगटहोत भयो ताहीको शब्द ब्रह्मरूप करिकै समुझत भये तौने प्रणव की चारि मात्राहैंअकार उकार मकार बिंदु ते एक एक मात्राते एक एकवेदभये सो चारि वेद होत भये औ सबतेपरे जे श्रीरामचन्द्रहैं रकारार्थतिनको न समुझत भये सो याही में एकाक्षरौ ब्रह्मकी औ शब्दहू ब्रह्मकी प्रागट्यभई सो इहां तीसरे ब्रह्मकी प्रागट्य भई १ वहां रकार की अकारकोअर्थकरि आयोयहांरकारार्थ श्रीरामचंद्रकोकहौ हौं यह कैसेसोरेफ बाच्यते जानकी औ श्रीरामचंद्र ते बिलग नहीं होयहै याही अभिप्रायते लघु रकार की जो अकार तौनेके रेफते सहिते कह्योहै रकार बाच्य श्री रामचन्द्रको लिख्यो याही प्रमाणके अनुरोध ते वोहू रकार बाच्य श्रीरामचंद्र को लिखिदियो सीताराम बिलग नहीं होयहैं तामें प्रमाण॥अनन्याराघवेणाहं प्रभायथा वा जानकी को बचनहै॥ अनन्याहिमया सीता भास्करस्य प्रभायथा॥ येश्रीरामके बचनहैं याही अभिप्रायते कबीरजी जानकी को बर्णन नहीं कियो श्रीरामहीं के बर्णन ते जानकी आयगईं काहेते सीतारामें भेदहै तामें प्रमाण॥ नरामः सीता जानकी रामचन्द्रो नित्यास्वंडोयेचपरयंतिधीराः इतिश्रुतिः १०॥

दो० तव अक्षरका दीनिया नींद मोहअलसान॥
वेसमरथ अविगति करी मर्मकोइ नहिंजान ११

तब योगमाया अक्षर कहे जो एकाक्षर ब्रह्म प्रणवत स्फुतिपाय जोईश्वर प्रगट भयो जो जीव ताको नींद मोह आलस्य देतभई औ प्रणव औ वेदनते पृथ्वी अप तेज वायु आकाशादिक सब जगत प्रगट भयो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औ ताही प्रणव वेदनते सब जीवनके नामरूप शुभाऽशुभ कर्मादिक सब वस्तु प्रगट भई अर्थात् वेदहीमें सब वर्णितहै औ सबके नाम रूप वेदही ते निकसेहैं सो प्रणव रकारहीते प्रगट भयोहै औ सब अक्षर प्रगट भये हैं ताहीते सब वेद भयेहैं याही हेतुते प्रणव औ वेदहू अविगति समर्थ जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकी महिमा करीकहे कही जो वेद तात्पर्य करिकै बतावैहैं तौनेको मर्म कोई न जानत भयो औ प्रण व तात्पर्य्य करिकै श्री रामचन्द्रहीको कहैहैं सो अर्थ तापिनी का प्रमाण दैकै लिख्यो है सो मेरे रहस्यत्रय ग्रन्थमेंहै सो प्रणव अक्षर वेद सब रामनामही ते निकसे हैं सो मेरे मंत्रार्थ में प्रगटहै ११॥

दो० जब अक्षरके नींदगइ दवीसुरति निरवान॥
श्याम बरण यक अंडहै सो जलमें उतरान १२

योग मायामें सोयरहे अक्षर कहे नाश रहित जे नारायण तिनको जब योगमाया जगायो नींदगई तब उनको निर्वाण सुरति देत भई काहेते ईजेहैं नारायण तिनको निर्वाण रूप कहे निराकार रूप कैकै अंतर्यामी रूपते सबके भीतर दबाइ देतभई अर्थात् चेष्टा रहित दिव्य गुण विशिष्ट सर्वत्र व्यापक अंतर्यामी तत्वरूप जे निर्वाण नारायण तिनको सबके अंतर दबाइदेत भई कहे सबके अंतर्यामी करिदेत भई तेई प्रगट होत भये श्याम बर्ण अण्ड कहे चतुर्भुज रूप धारण करिकै जलमें उतरान कहे जलमें रहत भये सो इनके शरीरमें शरीर जेहैं निराकार नारायण तिनको नित्य संबंध होत भयो सो रकारमें जोहै अकार ताको नारायण अर्थ करत भये औभरत वाची जोहै अकार सो अर्थ न समुझत भये यहां चौथे ब्रह्मकी प्राप्तव्यभई १२॥

दो० अक्षर घटमें ऊपजै व्याकुल संशय शूल॥
किन अंडा निरमाइया कहा अंडका मूल १३

अक्षरजे नारायणहैं तिनके घटते ऊपजे अर्थात् तिनकी नाभीमें कमल होइहै तेहिते ब्रह्म होइहै ते ब्रह्मा सब जगत् करैहैं तब समष्टि जीव शुद्धते अशुद्धहै कै ब्रह्माते उत्पन्न हैं कै बहुत शरीर धारण करैहैं ते ब्रह्म जब उत्पन्न भये तब व्याकुल भये औ संशय करत भये कि कहांअंडका मूलहै औ कोअंडाको बनायोहै औ हम कहांते उत्पन्न भयेहैं सो खोज्यो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोजे न पायो तब तपस्या करत भयो तब नारायण प्रगट भये ते ब्रह्मा ते कह्यो कि तुम जगत्की उत्पत्ति करौ यह कथापुराणन में प्रसिद्ध है १३ ॥

दो० तेही अंडके मुख्यपर लगी शब्द की छाप॥
अक्षर दृष्टिसेफूटिया दशद्वारे कढ़ि बाप १४

तौने ब्रह्मरूपी अंडके मुखपर शब्द की छापलगी अर्थात् शब्द ब्रह्म जो वेदसार ताको नारायण बताय दियो तौनेको ब्रह्मा जपत भये तब वाही ते प्रगटे जे चारो वेद ते ब्रह्माके चारिउ मुखते निकसत भये तौने वेदनको अक्षर जो समष्टि जीवहै सो जगत् मुख दृष्टिकियो अर्थात्जगत् मुख अर्थदेख्यो तबद्वारे ह्वैकै वहमाया ते सबलितजोहै ब्रह्मजाको आगेबाप कहि आयेहैं जो शुद्धते अशुद्ध जीवनको कैकै उत्पन्नकरै है सोदशद्वारेते कहे दशौ इंद्रिन ते कढ़त भयो तब इंद्रिनकी बिषयह्वैकै इंद्रीह्वैकै चिदंश ह्वैकै चिद चिदात्मक जगत् होतभयो अर्थात् वेदनको अर्थ जब जगत् मुखदेख्यो तब वहजीव चिदचिदात्मक जगतको धोखा ब्रह्मही देखत भयो सो जगत् तौ साहबके लोक प्रकाशको शरीरहैतौने को बेदार्थ करिकै धोखा ब्रह्मही देखत भयो यहीधोखाहै तात्पर्य कैकै वेद जो साहब को कहैहै ताको न जानत भये लघु रकारकी अकारते नारायण भये तिनते ब्रह्माकी उत्पत्ति भई सो कहि आये अरु वहिते जेतो जगत्के उत्पन्नको प्रयोजन रह्यो सो कहिगये अब फेरि सिंहावलोकन करिकै पंचम ब्रह्मकी प्रागट्य कहैहैं १४ ॥

दो० त्यहितेज्योति निरंजन प्रगटे रूपनिधान ॥
कालअपर बलबीरभा तीनलोकपरधान १५

तेहिते कहे वही रामनामते व्यंजन मकारको जो अर्थकरि आयेहैं तामें जो अकार रहीहै ताको महाबिष्णु अर्थ करत भये जे विरजाके पारपर बैकुण्ठमें रहैहैं जिनके अंश ते रमाबैकुण्ठबासी भगवान भयेहैं सो अंजन जो अबिद्या माया तातेबैरहितहैं काहेते कि अबिद्या माया बिरजाकेयही पार भर बननहै पै पुराणादिक में सो व्यंजन मकार की अकार को महाबिष्णु अर्थ करतभये औ वह अकार शत्रुघ्न बाचकहै सो अर्थ न समुझत भये ते अकाररूप महाबिष्णु ते महाकाल अपरबल बीरभा कहे जेहिते प्रबलबीर कोई नहीं है अथवा अकार जे बिष्णुहैं तेईहैं परम बल जिनके सो तीनलोक में प्रधान होतभयो इहांपाँचौ ब्रह्मकी प्रागट्यह्वै गई १५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो० तातेतीनों देवभे ब्रह्माबिष्णु महेश ॥
चारिखानितिन सिरजिया मायाके उपदेश १६

तौनेकालते कहे वहीकालमें काल पाइपाइ कै एक एक ब्रह्माण्ड में तीन तीन देवता ब्रह्माबिष्णु महेश उत्पन्न होतभये सो कोटिन ब्रह्माण्डनमें कोटिन ब्रह्मादिक भयेते मायाके उपदेश ते कहे माया को ग्रहण करिकै संसारमें चारिखानि जे जीवहैं तिनको सिरजिया कहे उत्पत्ति करत भये सो उत्पत्तिको क्रम ब्रह्माते पहिले कहि आयेहैं १६ ॥

दो० चारिवेदषट् शास्त्रऊ औ दशअष्टपुरान ॥
आशादै जगबाँधिया तीनोंलोक भुलान १७

छवोशास्त्र औ अठारहौ पुराणमें मायाजोहै सो औरई और फलकी आशा बताइकै औरई और नाना मतनमें लगाइ दियो और संपूर्ण जगत् बांधिलियो मुख अर्थ करिकै साहबको भुलाय दियो ये सब तात्पर्य्य कैकै साहबको कहैहैं सो साहब को न जानन पाये तातेतीनों लोकके जीव भलायगये १७॥

दो० लखचौरासी धारमा तहांजीवदिय बास ॥
चौदह यम रखवारी चारिवेदबिश्वास १८

चौरासीलाख जो योनिहैं सोईहैं धारा ताहीमें जीवको वासदेतभये कहे वही चौरासी लाखयोनिरूपी धारामें सबजीव बहेजाइहैं अर्थात् नानारूप धारण करैहैं सो चारिवेदके बिश्वासते कहे चारिवेदके मतते नानामतहोतभये॥ शीतलेत्वं जगन्माता शीतलेत्वं जगत्पिता ॥ इत्यादिक नाना देवतन की उपासना गुरुवा लोग बतावत भये वेद जो तात्पर्य्यकरिकै बतावैहै साहबको सो अर्थ न जानत भये औ चौदौयमजीवकी रखवारी करत भये यह जीव निकसिकै साहब के पास न जान पायो चौदह यमके नाममें प्रमाण ज्ञान सागर को ॥ दुर्गद चित्रगुप्त बरिआरा । ईतो यमके हैं सरदारा ॥ मनसा मल्ल अपरबल मोहा । कालसैन मकरन्दी सोहा ॥ चित चंचल औ अंध अचेता । मृतक अंधजो जीतै खेता ॥ सूरसिंह औरौ क्रमरेखा । भावीतेज काल का पेखा ॥ अघ निद्रा औ क्रोधित अंधा । जेहिमा जीव जंतु सबबंधा ॥ परमेश्वर परबल धर्मराजा । पाप पुण्य सबते भल छाजा ॥ यह सब यमैं निरंजन कीन्हा । लिखनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कागद रचिकै दीन्हा ॥ १ ॥ प्रथम दुर्गद कहैहै दुर्गकहावै कि जो कोई पुण्य करैहै ताको स्वर्गदकै पुण्य भोग करावैहै औ जो पाप करैहै तिनको नरकन में पापको भुगताइकै किलारूपी जो है शरीर सो जीवको देयहै याते दुर्ग-दयम एक औदूसर चित्रगुप्त जे कर्मनके लेखा करैहै तीसर मलिन मन औ चौथ मोह औ पांचौ कालकी सैनाका मकरन्दी कहे बसंत ते सहितऔ छठौ अंध अचेत जोहै चित्त सो औ सातौं मृत्यु भई जो खेतको जीतैहै कहे सबको मारैहै औ आठो सूरकहे अंधा अर्थात् अशुभकर्म की रेखा औ नवों सिंह कहे समर्थ शुभकर्मकी रेखा औ दशौ यमभावी जो कालको पेखाहै कहे जोकर्म होनहार है सो काल करिकै होइहै अर्थात् काल की अपेक्षा राखैहै औग्यारहौं अघ कहे पापरूप निंदा औ बारहौं अंधको देन वारो क्रोध जामें सबजीव जंतु बँधैहै तेरहौं प्रबल परमेश्वर रमावैकुण्ठ-बासी बिष्णु जे शुभाशुभ फलके दाताहैं औ चौदहौं धर्मराज यज्ञ पुरुष ये चौदहौं यमनिरंजन जो आगे कहिआयेहैं बिरजा पार बिष्णुकी सत्ता बिना ये सब जड़हैं कार्यनहीं करि सकैहैं वोईलिखनी कागद देइहैं १८॥

दो० आपु आपु सुख सब रमै एक अंडके माहिं ॥
उतपति परलय दुःखसुख फिरिआवै फिरि जाहि १९

एक अंडजो है ब्रह्मांड तौनेमें जीव अपने अपने सुखके लिये सब रमैहै कोई मानैहै कि हम जीवात्माहैं कोई मानै है कि हम ब्रह्महैं कोई मानैहैकी हमईश्वरहैं कोई मानैहै कि हम देवताहैं कोई मानै है कि हम सेवकहैं कोई मानैहै कि शरीर भर सबकुछहै आगेकछू नहीं है सो बिषय ही सुखकरि लेइ कोई यज्ञादिक करिकै स्वर्गको सुखचाहै है औ कोई यश चाहै है कि अपने स्व स्वरूप को प्राप्त होयँ तौ हमको अक्षय सुख होय सो जिन जिन मतन करिकै जौन जौन स्वस्वरूपई मानै है तेइनके स्वस्वरूप नहीं है ये अच्छे सुख काहेको पावैं तेहिते इनके जननमरण ना छूटत भये उत्पत्ति प्रलयमें दुःख सुखको प्राप्ति होइहै औ फिरि आवै है फिरि जाइहै ककार चकार आदिक जे बरणहैं तिनमें बुंदार्थ चंद्र देइ तब सानुनासिकता की एक मात्रा रामनाममें और है सो याके अर्थहंस स्वरूपहै सो साहब देइहै सो ना समुझो प्राकृत नानाजीव रूप आपनेको मानिकै नाना मतनमें लागिकै संसारी ह्वैगये औ राममाममें छात्रा हैं तामें प्रमाण॥रामनाम महाबिंधे षड्भिर्वस्तु भिरा वृतम् ॥ जीव ब्रह्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महानादैत्रिभिरन्यवदामिते॥ स्वरेनअर्धमात्रेणदिव्ययामाययापिच ॥ इति महारामायण॥औ रामनामको जो अर्थ भूलि गयेहैं तामेंप्रमाणसबमुनिन को भ्रमभयो श्रुतिनको प्रमाणदै कोईकहै हमारो मतठीकहै कोईकहैहमारो मत ठीकहै तब सबमुनि वेदनतेपूछ्यो जाइ वेदहूबिचारेउ कि सबमें तौ हमारहीप्रमाणमिलैहै सो वेदहूको भ्रमभयो तबसबमुनि औ वेदब्रह्मा के पासगये तब ब्रह्माते पूछ्यो तब ब्रह्माके भ्रमभयो कि साँचमत साँच साहब कौनहै सो महादेवजी पार्वतीजीते कहैहैं कि तब सबको साहब श्रीरामचन्द्रको ध्यानकियो तब साहब कह्यो कि यहबात सबके आचार्य जे संकर्षणहैं तेजानैहैं तिनके पास सबको पठैदेहु वैसमझाय देयँगे तब ब्रह्माकी आज्ञाते सब संकर्षण रूपसे शेष के इहांगये सोवेद उहां पूछ्यो संकर्षणते तब संकर्षणजी एकसिद्धांत जे परम पुरुष श्रीराम चंद्रहैं तिनको बतायोहै रामनामको यथार्थ अर्थतौन सदाशिव संहिता के ये श्लोकहैं ॥ रामनाम्नोथमुख्यार्थभगस्त्व तप्तिष्ठितम् ॥ विस्मृतकंठमणिवद्दाश्णुततत्वतः १ तात्पर्य्यवृत्त्याविज्ञेयबोधयामिविभागतः ॥ राम नाम्निशुचिर्ज्ञेयाःषरामात्रांतत्ववोधकाः २ रामनाम्निस्थितोरेफोजानकीतेन कथ्यते ॥ रकारेणतुविज्ञेयःश्रीरामःपुरुषोत्तमः३ अकारेणतथाज्ञेयोभरतो विश्वपालकः ॥ व्यंजनेनमकारेण लक्ष्मणोत्रनिगद्यते४ ह्रस्वाकारेणनिगमाः शत्रुघ्नःसमुदाहृतः ॥ मकारार्थोद्विधाज्ञेयःसानुनासिकभेदताः५ प्रोच्यंते तेनहंसावैजीवाःचैतन्यविग्रहाः । संसारसागरोत्तीर्णपुनरावृत्तिवर्जिताः६ दास्याधिकारिणःसर्वेश्रीरामस्यमहात्मनः ॥ एतत्तात्पर्य्यमुख्यार्थादन्यार्थो योनभूपते ७ सोनर्थइतिविज्ञेयःसंसारप्राप्तिहेतुकः ॥ इतिसदाशिवसंहितायांविंशध्यायेवेदान्प्रतिशेषवचनम् ॥ सोजौन नाम साहब बतायो ताके औरई और अर्थ करिकै जीव संसारी ह्वैगये साहबको न जान्यो १६ ॥

दो० तेहिपाछे हम आइया सत्यशब्द के हेत ॥
आदिअंतकी उत्तपति सो तुमसों कहिदेत २०

इहां कबीरजी कहैहैं कि तेहिपीछे कहे जब संसार की उत्पत्ति ह्वैगई औ जीव नाना दुःखपावन लगे तब साहब जे दयालुहैं तिनके दयाभई कि हमतो आपने नामको उपदेश कियो कि हमारे रामनामको जो यह अर्थ लक्ष्मण जानकी हमभरत शत्रुघ्न हमारे हंसरूप पार्षद तिनको जानिकै हमारे पास आवै औयेसबजीव संकर्षण आद्यापराशक्ति शब्द ब्रह्म नारा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महाविष्णु जीव इनके पक्षमें रामनामकी छवो मात्रा इनमें लगाइकै और और मतनमें लगिकै संसारी ह्वैकै नानादुःख पावन लगे तब रामनाम को यथार्थ अर्थ बतावनको हमको भेज्यो सोहम सारशब्द जोहै रामनाम ताको सत्यकहे साँचजो अर्थहै ताके बतावनके हेतु हम आये सोआदि अंतकी उत्पत्ति हमतुमसे कहेदेइ हैं आदि कौन है जोयह उत्पत्ति ह्वैआई संसार भयो औअंत कौनहै जोहम रामनामको साँच अर्थ बतायो सोअर्थ समुझिलेइ साहेबके पासजाय वाको संसारको अंतह्वै जाइहै फिरि संसारमें नहीं आवैहै सोयह आदिअंतकी उत्पत्ति हमतुम सों कहिदियो कि यहिभांतिते जगत्की उत्पत्ति होयहैजीव संसारी होइहै औयहि भांतिते जब रामनामको सांच अर्थ जानैहै तब संसारको अंतह्वै जाइहै ॥

दो० सातसुरति सबमूलहैं प्रलयहु इनहींमाहिं ॥
इनहीं मासे ऊपजै इनहीं माहिं समाहिं २१

इहां मंगलको उपसंहार करैहै सबकी मूल सातसुरति जेप्रथम वर्णन करि आयेहैं सो वेतो सोई सुरति स्थूलरूप सात रूपते प्रकट भईहै सात कौन हैं दुइइच्छा एक योगमाया एक जगत्को अंकुरकारणरूपा औपांचौ ब्रह्मरूपा येई सातौ सबके मूलहैं इनही तेउपजैहै इनही ते प्रलय ह्वै जायहै कहे नाशह्वै ह्वै जायहै औ इनही में पुनिसमाइ है सातौ सूरति में प्रमाण साखी शंकरगुरुकी ॥ निरअंजन अक्षर अचित वोहं सोहंजान ॥ औ पुनि मूल अंकूर कहि सात सूर्त परमान २१ ॥

दो० सोइख्याल समरत्थकर रहेसो अछप छपाइ ॥
सोई संधिलै आयउ सोवत जगहि जगाइ २२

सो समष्टि जीव आपने को समर्थ मानिकै साहब को न जानिकै यह ख्याल करत भयोअछपकहे रामनामके अर्थमें साहब न छपेरहे औसर्वत्र पूर्णरहे साहबकै सब सामग्री साहबको लोक साहिबेको रूप वर्णन करिआयेहैं जो साहबके लोकको प्रकाश सर्वत्र पूर्ण रहा तौसाहब पूर्णईरहे सर्वत्र सोजीव रामनामको और और अर्थकरिकै और और मतनमें लग्यो तेहिते साहब छपाय गये साहबको जीव न जानत भये सोतौनै संधिलैकै मैं आयोंकि जीवते संधिकहे बीच परिगयोहै रामनाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को सांच अर्थ भूलि गयो सो जौने संसारमेंयह सोवै है तौनी जग्ह में आयो किमैं याको सोवत ते जगाय देहुं किजौनेजौने मतनमें तुम लगे हौ सो रामनामको अर्थनहीं है येसंसारके देनवारेहैं तुम संसारी ह्वै गये सब स्वप्न देखौ हौ वह अर्थनाम को मिथ्याहै तुम जागिकै रामनामार्थ जे साहबहैं तिनको जानौ २२ ॥

दो० सात सूर्त के बाहिरे सोरह संखिके पार ॥
तहँ समरथ को बैठका हंसनकेर अधार २३

साहब कैसेहैं कि सात सूर्तजे कहि आये तिनके बाहिर हैं औ षोड़श कलाजीव को छान्दोग्य उपनिषद में तत्वमसीके पूर्व लिख्यो है सोइहां कहैहैं कि सोरह संख्यके कहे सोरहसंख्यक जेजीव हैं अर्थात् षोड़शकलात्मक जे समष्टि जीव जेलोकके प्रकाश में रहैहैं शुद्धरूप तिनके साहब पारहैं सोजहां सोरहसंख्यक है षोड़श कलात्मक जीवहै तिनके पार वह लोक साहब कोहै तहां समर्थ जेसाहबहैं तिनको बैठकाहै कहेवहीलोकमें रहैहैं समर्थ जोकह्यो सो समर्थ साहिबही हैं जीव समर्थ नहीं है उन्ही के किये जीव समर्थ होइ है यह आपको झूठही समर्थ मानिलियोहै याही हेतु ते जीव संसारी भयोहै सो हंसन के आधार तो परम पुरुष श्रीरामचन्द्रहीहैं तेहिते जब हंसरूप पावै तबसाहबके पास वहलोक में बसैजाय २३ ॥

दो० घरघर हम सबसों कही शब्द न सुनै हमार ॥
तेभवसागर डूबही लख चौरासी धार २४

सोकबीरजी कहैहैं कियरघर हम सब सो बातकही हमारो कह्योसांच शब्द को अर्थ कोई नहीं समुझैहै नासुनैहै ते संसार रूपी सागर के चौरासी लाख योनि जोहैं धारातामें डूबिजायहै २४ ॥

दो० मंगल उतपति आदिका सुनियो संत सुजान ॥
कहकबीर गुरुजाग्रत समरथ का फुरमान २५

सो आदिकी उत्पत्तिका मंगल हम यह कह्योहै सो हेसंत सुजानौ सुनत जाइयो हम आपनो बनायकै नहीं कह्योहै हम यह मंगल गुरुकहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबते श्रेष्ठ औ तीनो कालमें जागृतकहे ब्रह्ममन मायादिकन के भ्रमते रहित ऐसेजे समर्थ सत्यलोक निवासी श्रीरामचन्द्र हैं तिनको फुरमान कहे उनके हुकुमते मैं कह्यों है औ सबके पर साहेब हैं औ साहेब की लोकहैतामें प्रमाण आदि बाणीको शब्द॥बलिहारी अपने साहेबकी जिन यह जुगुति बनाई। उनकी शोभा केहि बिधि कहिये मोसोंकही न जाई॥ बिनाज्योतिकी जहँ उजियारी सो दरशै वहदीपा। निरतै हंस करै कौतहल वोही पुरुष समीपा॥ झलकै पदुम नाना बिधि बानी माथे छत्र बिराजै। कोटिन भानु चंद्रतारागण एक फुचरियन छाजै॥ करगहि बिहँसि जबै मुख बोलै तबहसा सुख पावै। बंश अंश जिनबूझ बिचारी सो जीवन मुकतावै॥ चौदह लोकबेदका मंडल तहँलग काल दोहाई। लोक बेदजिन फंदा काटी ते वह लोक सिधाई॥ सात सिकारी चौदह पारथ भिन्नभिन्न निरतावै। चारि अंशजिन समुझि बिचारी सोजीवन मुकतावै॥ चौदह लोक बसै यमचौदह तहँ लग काल पसारा। ताके आगे ज्योति निरंजन बैठे सुन्न मझारा॥ सोरह षट् अक्षर भगबाना जिन यह सृष्टि उपाई। अक्षर कला सृष्टिसे उपजी उनहीं माहँ समाई॥ सत्रह संख्यपर अधरदीप जहँ शब्दा तीत बिराजै। निरतै सखी बहूबिधि शोभा अनहद बाजा बाजै॥ ताकेऊपर परम धामहै मरम न कोइपाया। जो हमकही नहीं कोउ मानै ना कोइ दूसर आया॥ बेदन साखी सब जिउ अरुझे परम धाम ठहराया। फिरि फिरि भटकै आपचतुरह्वै वह घर काहुन पाया॥ जोकोइ होइ सत्य का किनका सोहम का पतिआई। और न मिलै कोटिकरथाकै बहुरि काल घरजाई॥ सोरह संखिके आगेसमरथ जिनजग मोहिं पठवाया। कहैकबीर आदिकी बाणी बेद भेद नहिं पाया॥ २५॥

व मंगलको सात सुरति तेई शिकारी औ चौदह जे यमपारथ हैं कहे तेऊ शिकारीहैं औ चारिअंश चारिबेद तिनको बूझिकै बिचारै तौ जीवनका समुझावै का बिचारै जे सातौशिकारीहैं सुरतितेभीतर जीवमृगाके भीतरको शिकार खेलैहै बाहेर तेमारैहै सोआगे निरंजन शून्यमें बैठाहै जीवपकर बेके रहा शून्यमें बैठा निरंजनको कस्तो सोसबके ऊपरहै वोई सब को बांधेहै साहेबके इहां नहीं जान पावैहै शून्यमें लगाय देइहै अपनेमें लगाइराखै सोरह खंड कहे समष्टि जीव सोरह कलात्मक तौनेते उतपत्य होइहै सो उनहीं में समाइहै सत्रहसंख्य कहे सत्रहतत्व जेसूक्ष्म शरीर मेंरहतीहैं तेहिके ऊपरअधरदीपिका लोकहै जोमंगलमें ज्योतिरूप कोबर्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करि आयेहैं सबके ऊपर तहांसूक्ष्म शरीरनहीं पहुंचि सकैहै तेहिकेऊपर पात्रदैकै आगे लिखैंगे अर्थात् यह स्पष्टहै धाम औरहै सो दशमुकामी रेखता प्रमाण॥ उपक्रमोपसंहार वभ्यासो पूर्वताफलैः॥अर्थवादोपपत्तीभ लिंगतात्पर्यनिर्णये १ ॥ उपक्रम उपसंहार अभ्यास अपूर्वताफल अर्थवाद उपपत्ति इहां वस्तु तात्पर्यके वर्णनमें लिंगकहे बोधकहै ॥ उपक्रम को लक्षण यहहै प्रकरण केविषे प्रतिपाद्य जोवस्तु ताको आदिअंतके विषे जो है वर्णन सोउपक्रम औ उपसंहार कहावै १ औ प्रकरणके विषेप्रतिपाद्य जोहै वस्तु ताको फेरि फेरि जोहै वर्णन सो अभ्यास कहावैहै २ औ प्रकरण केविषे प्रतिपाद्य जोहैवस्तु सो औरै प्रमाण करिकै वर्णनमें न आवै सो कहावै अपूर्वता३ प्रकरणके विषेप्रतिपाद्य जोहैवस्तु ताके ज्ञानैकरिकै ताकी जोहै प्राप्तिसो कहावै फल ४ औ प्रकरण में प्रतिपाद्यजोहै वस्तु ताकी जोहै प्रशंसा सो कहावै अर्थवाद ५ औप्रकरणमें प्रतिपाद्यजोहै वस्तुताकोदृष्टांत करिकै फेरि जोहै प्रतिपादन सो कहावै उपपत्ति६ इहाँकबीरजीके बीजक के प्रकरणके आदिमें औ आदिमंगल में कहाहै कि शुद्ध जीव साहब के लोकके प्रकाश में पूर्ण रहैहैं जब साहब सुरति देइहै तबजीव उत्पन्न होइहै यह जीव शुद्धहै साहब कोहै मन मायादिक यामें नहीं है ये बीचही ते भयेहैं मनमायादिक को कारण यामें बनो रह्योहै ताते साहबमें नालगे संसार मुखहवै गये जब श्रीरामचन्द्र की प्राप्तिहोय तबही शुद्धजीव होइ सो साहब हटक्यो सो नामान्यो मनमाया ब्रह्ममें लगिकै संसारी ह्वैगयो जीवरूप यकअंतरबासा। अंतरज्योतिकीन परकासा १ इच्छारूप नारिअवतरी। तासुनाम गायत्री धरी २ यहउपक्रम वाक्यहै औ पदनके अंतमें बिरहुलीहै विषहर मंत्र न मान बिरहुली गाडुरि बोलै आर बि- रहुली बिषकी क्यारी बोयो बिरहुली जन्म जन्म अवतरे बिरहुली फल यक कनइल डाल बिरहुली कहैं कबीर सचुपाय बिरहुली जो फल चाखहु मोर बिरहुली १ सो बिरहुली में यह लिख्योहै कि तुम तौ प्रथ- म शुद्धरह्योहै तुमहीं मनमायादिकन को बनायकै फँसि गयेहौ यह उप- संहार भयो औ साखिनके आदिमें यह साषी है जहिया जन्म मुकुताहता तहिया हतान कोय। छठीतिहारी हौंजगा तू कहँ चलाबिगोय १ औ एक पोथीके अंतमें यह साषीहै। जासों नाता आदिका बिसरि गयो सो ठौर। चौरासीके बश परे कहत और के और १ सोयेहूमें वहीबातहै औ दूसरी पोथीके अंतमें यहसाषा है धोखे धोके सब सबजग बीता है अगक साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहै कबीर पेड़जो बिगरयो अबका आवैहाथ १ सो यहूमें वही बातहै औ अठाइस साखी कौनिउँ पोथीमें औरहैं कौनिउँ पोथीमें औरहै ताते दुइसाखी अंतकी लिख्यो है यह उपक्रम उपसंहार भयो १ और प्रकरण में यहहै कि श्रीरामचन्द्रकोजबजीव जानै तबछूटै सोग्रन्थभरमें बारबार यही उपदेशहै ॥ लखचौरासी जीवयोनिमेंभटकिभटकिदुखपावै। कहैंकबीर जो रामहिं जानै सो मोहिनीकेभावै १ राम बिनानरहै होकैसा।बाटमांझ गोबरौरा जैसा २ इत्यादिक बहुतवाक्यहैं याते अभ्यास भयो औ सगुण जेहैं ईश्वर परमेश्वर अवतार अवतारीसब निर्गुणजोहै ब्रह्मजौन मनबचन के परेहै ताहूते परे नित्यसाकेत रासबिहारी रामचन्द्रहैं यह अपूर्वताभई अवधूछोड़हु मनविस्तार। सो पदगहो जाहिते सदगति पारब्रह्मते न्यारा॥ नहीं महादेव नहीं महम्मद हरिहजरत तवनाहीं। आदम ब्रह्मनाहिंतव होतेनहीं धूपनहिं छांही॥ असीसहसपैगंवर नाहीं सहस अठासी मूनी। चद्र सूर्य तारागण नाहीं मच्छ कच्छ नहिंदूनी। वेद किताब सुमृति नहिं संयमनाहिं जमन परसाही। बाँगनिवाज नहीं तव कलमारामौनहीं खोदाही। आदिअंत सनमध्य न होते आतस पवन न पानी। लख चौरासी जीवजंतु नहिं साषी शब्द न बानी। कहँहिं कबीर सुनौहो अवधू आगेकरहुविचारा। पूरण ब्रह्म कहाँते प्रगटे करतिम किन उपचारा १ यह पद यही बीजक ग्रन्थकोहै सो जहां या पदहै तहांअर्थ लिख्योहै सोदेखिलीजियो याते अपूर्वताभई औ राम नामहीं के जपते श्री रामचन्द्रही के जानेते मनबचन के परे श्रीरामचन्द्र रूप फलकी प्राप्ति होइहै यह फल है छच्छाआहि छत्रपति पासा। छकिकिन रहै छोंड़िसब आसा। मैंतोहीं क्षणक्षणसमुझाया। खसमछोंड़िकस आपबँधाया १ ररंकारि रहाअरुझाई। रामकहेदुखदारिद जाई॥ ररंकहै सुनोरेभाई। सतगुरुपछिकै सेवहुआई २ इत्यादिक बहुतवाक्यहैं यहफलहै औ अर्थवादकबीरजीतो साहबके पास कहैंउनको संसार का कौन डरहै यह प्रशंसा करैहै याते अर्थवादभयोडरपतअहो यहझलिबेको राखुयादव राय। कह कबीर सुनु गोपाल बिनती चरण हरि तुवपाय॥ औ प्रकरणमें पूसिपाय जोहैकि रामनामै को जानैहै तेई छूटिजायहैं औ जेनहीं जानैहैं और और मतनमें लगेहैं तेई संसारी होयहैं यह बात दृष्टान्त दैकै रामनामहीं को दृढ़कियोहै राम नाम बिन मिथ्याजन्म गँवाईहो। सेमरसेय सुवाजोजहँड़्योऊनपरेपछिताईहो॥जैसे बिनमदिप गांठि अरथैदै घरहुकि अकिल गँवाईहो। सादहु उदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरैजोकैसे वोसहिप्यास न जाईहो। इत्यादिककहरामेंलिख्योहै यहउत-पत्तिभईयेई षट्लिंगहैं जे इनको देखिकै अर्थकरैहैं सो सत्यहै जे इनको नही जानिकै अर्थकरैहैं वहग्रन्थको तात्पर्य औरहै और अर्थकरैहै सोअनर्थ हैजैसे बीजकको कोई निराकार ब्रह्ममें लगावैहै कोई जीवात्मामें लगावै कोई नये नये खामिन्द बनाइकै अर्थ लगावै है इत्यादि वेमनमुखी अपने अपने मनते नाना मतन में अर्थ लगावै हैं ते अनर्थ हैं अर्थ नही हैं वे गुरूजे हैं सबते गुरू परम पुरुष श्रीरामचन्द्र तिनके द्रोही हैं ताते प्रमाण॥गुरु द्रोही औ मनमुखी नारि पुरुष अबिचार। तेनर चौरासी भ्रमहिं जबलगि अधिदिनकार १ अरुहम जो बीजक को यह अर्थ करैहैं तामें छइउलिंग श्रीरामचन्द्रमें घटितहैं तेहितेजो अर्थ हम करैहैं अनिर्वचनीय श्रीरामचन्द्रको प्रतिपादन सोई ठीकहै काहेते कि जहांभरि प्रभुहैं तिनहू के प्रभुहैं तौनेमें प्रमाण बाल्मीकी को सूर्य्यस्यापिभवेत्सूर्य्योह्यग्नेरग्नि प्रभोप्रभुः। अर्थ जो येईसूर्य्यमें येई अग्निमें अर्थ लगावै तौ पुनरुक्ति होयहै काहेते जबबड़ो प्रकाशमान सूर्यको कह्यो तब अग्नि को काकहिबे को है ताते यहअर्थहै जो कर्मन में लोकन की प्रेरणा करै सो कहावै सूर्य अर्थात् अन्तर्यामी औ सबके आगे रहत भयो याते अग्नि कहावै ब्रह्म सोसूर्यके सूर्य कहे अन्तर्यामीके अन्तर्यामी औ अग्निके अग्नि कहे ब्रह्मके ब्रह्म अंतर्यामी परिछिन्न है ताते बड़ोब्रह्महै जो सरबत्र पूर्णहै औ परिछिन्न है तातेबड़ोजाको प्रकाश यह ब्रह्महै जामें सब जीवभररहेहैं ऐसो साहबकोलोकहै सबको प्रभुपरब्रह्मस्वरूप ताहूकेप्रभु वह लोकके मालिक श्री रामचन्द्रहैं वह ब्रह्मजोहै सोई मन बचनकेपरे हैं पुनि जाको वो प्रकाशहै ब्रह्मसो लोककैसे मनबचनमें आवै साहब तो दुहुन का मालिक है उनकी कहवाई कहाकरै जो कहौ सबके मालिक श्रीरामचन्द्रहैं या कहतई जाउहौ औ कहौ कि मन बचन में नहीं आवैहै यह बड़ो आश्चर्यहै सो सत्यहै ये कबीरहूजी कहैहैं कि रामोनहीं खोदाई काहेते रामो नहीं खोदायहौ कहैहैं रामै नाम अहैनिज सारू। औसब झूठ सकल संसारू॥ इत्यादिक बहुत प्रमान दैकै बीजक भरेमें रामै नामको सिद्धांत कियोहै ताहीमें याको समाधानहै औ ताहीमें कबीरजी को बीजक लागैहै औरीभांति अर्थकिये नहीं लागैहै सोसुनो जो साहबको राम नामहै ताके साधनकीन्हें ते वह मनबचनके परेजो रामनाम ताको साहब देइहै सो वह नाम याके बचनमें नहीं आवै है साहिबे के दीन्हे ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पावैहै जब याको संसार छूट्यो तब अपने लोकको साहब हंसस्वरूप देइहै तौने हंस स्वरूप में टिकिकै साहब को देखे हैं नाम लेइहैं साहब साहब को नाम साहबको लोक साहब को दियो हंस स्वरूप या प्राकृत अप्राकृत मन बचन के परेहै तामें प्रमाण यतोवाचोनिवर्तन्ते यत्परम्ब्रह्मणःपरं अतःश्रीरामनामादि नभवेद्ग्राह्यमिन्द्रियैः ॥ औ यह रामनामके जपन को बिधि जैसी २ कबीरजी आपने शब्दनमें कह्योहै तेहि रीतिते जो जपकरै तौरामनाम मन बचनके परे जोआपनो स्वरूपसो याके अंतष्करणमें अस्फूर्तिकरि देयहै औ साहबको रूप अस्फूर्ति करि देयहै अर्थात् आपही अस्फूर्ति होइजायहै तामें प्रमाण॥ नाम चिन्तामणी रामश्चैतन्य परविग्रहः । नित्यशुद्धो नित्य युक्तो न भिन्ननाम नामिनः ॥ अतः श्री रामनामादि न भवे द्ग्राह्यमिन्द्रियैः ॥ स्फुरति स्वयमेवैतज्जिह्वादौ श्रवणे मुखे २ सो यही रामनाम जो मनबचनके परेहै ताहीको कबीर जानै ॥ सोजानै जेहि महीं जनाऊं । बांह पकरि लोकै लैआऊं ॥ सहज जाप धुनि आपै होई । यह सँधि बूझै बिरला कोई ॥ रंग २ बोलै रामजी रोम २ राकार। सहजै धुनि लागी रहै सोईसुमिरण सार ॥ ओठकंठ हालैनहीं जिह्वा नाहिं उचार । गुप्त बस्तु को जो लखै सोई हंस हमार ॥ जो हंसरूपमें टिकि कै जपत रहेहैं तौनेमें प्रमाण भक्तमालके टीकामें श्री प्रियादासजी लिख्योहै ॥ बिनै तानो वानो हिय राममड़रानो ॥ श्री महाराजा धिराज रामसिंहबाबा पूछ्योहै कबीर साहब कह्योहै ॥ राअक्षर घट रम्यो कबीरा ॥ निज घरमेरो साधु अहीरा १ ताते रामनामही को परत्व बीजक मेंहै मुक्ति रामनामही मेंहैऔरसाधनमेंनहीं है यह कबीरजी बीजकभरमेंकह्यो हैऔर अर्थजे करेहैं ते बीजकको अर्थ नहीं जानैहैंकाहेते भागूदास बीजक लैभागेहैं सो बघेल बंश बिस्तारमें कबीरही जी कहिदियोहै कि अर्थ नहीं जानैहैं तामेंप्रमाण भागूदासकी खबरि जनाई ॥ लैचरणामृत साधु पियाई॥ कोउ आय कह कलि जरि गयेऊ । बीजक ग्रंथ चोराइ लैगयेऊ ॥ सतगुर कहँ वह निगुरा पंथी । काह भयो लैबीजकग्रंथी ॥ चोरी करिवह चोर कहाई । काह भयो बड़भक्तकहाई ॥ बीजमूल हम प्रगट चिन्हाई । बीजन चीन्हो दुर्मति ल्याई ॥ बघेलबंशमें प्रगटी हंसा । बीजक ज्ञानकी करी प्रशंसा ॥ सबसों पूछी पूंमहिं ताई । आप सुरति आपैमें ल्याई ॥ बीजक लाय गुफामें राखी । सत्यै कहौं बचन मैं भाखी ॥ सो और २अर्थ जे कबीरहा करैहैं ते भागूदास औ भागूदास के शिष्य प्रशिष्यते बीजक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बितंडावादअर्थ करिकै कबीरजी के सिद्धांतको अर्थ जोरामनामहै ताते जीवनको बिमुख करिडार्‌यो नरककी राह बताय दियो काहेते दूसरी पोथीतो रही नहीं वोही पोथीरही तौने को मनमुखी अर्थ करिकै आप बिगरे औ शिष्यन प्रशिष्यनको बिगार्‌यो जे उनके सत्संग कियेते सब याहीते नाम तोरहै भगवानदास पैभागूदास कबीरजी कह्योहै औ मैंजो तिलक करौहौं बीजक को सो एकतो साहबके हुकुमई ते कियोहै सो आगे लिखि आयेहैं दूसरे तिलक बनाइ बांधौगढ़में आयो तहां बयालिस बंशविस्तार ग्रंथदेख्यो ताको प्रमाण तिलकमें लिखि दियोहै पोथीपंद्रहसैयकइसके सालकी धर्मदासके हाथकी लिखीहै औ येही पोथीमें कबीरजी राजारामते आगम कहिदियोहै ॥ तुमसे दशौ बंशजो ह्वैहैं। सोतौ शब्द हमारो गहिहैं ॥ परम सनेही अनुभववानी। कथिहैं शब्द लोक सहिदानी २ तेहिते मैंजो अर्थ करौहौं। सोई कबीरजी का सिद्धांत है औ यह ग्रंथ में चारि साधन करिकै युक्तजो पुरुष है सो अधिकारी है चारिसाधन कौनहैं नित्यानित्य बस्तु विवेक १ औ इहां मुत्रार्थफल भोग बिराग २ औ दम सम उपपति तितिक्षाऔश्रद्धासमाधानई षट्संपति ३ औमुमुक्षुता ४ नित्या नित्य विवेक का कहावै जीवात्मानित्यऔदेहइंद्री आदि दैकै जो संसारसो अनित्यहै यहै कहावै नित्या नित्य बिवेक औ इहां मुत्रार्थ भल भोग बिरागका कहावै यह लोकके औ परलोक केबिषे जेहैं स्त्रकचंदन वनिता यह आदि दैकै जेहैं तिनको अनित्यता बुद्धिकैकै तिनते जो है बैराग्य सो इहां मुत्रार्थ फलभोग बिराग कहावै औ लौकिक व्यापार ते मनकै जोहै निवृत्ति सो कहावै समऔबाह्यजे इन्द्रियहैं तिन की श्रीरामचन्द्रके संबंधते व्यतिरिक्त जोविषय है तेहिते निवृत्तिहोबजोहै सोंकहावै दम औ श्रीरामचन्द्रको जो ज्ञानहै तेहि पूर्वक उपासना के अर्थ विहित जेहैं नित्यादिक कर्म तिनको जोहै त्याग सोकहावै उपरति औ शीत उष्ण आदि दैकैजेहैं द्वन्दतिनको जोहै सहब सोकहावै तितिक्षा औ निद्रा आलस्य प्रमाद इनको जोहै त्याग तेहि पूर्वक मनकै जोहै अस्थिरता सो कहावै समाधान औ गुरुवेदांत बाक्यमें अविचल विश्वास सो कहावै श्रद्धा औ संसार ते छूटिबेकी जोहै ३ इच्छासो कहावै मुमुक्षुताई साधना चतुष्टय जामें होय सोकहावै अधिकारी १ औ यह जीव साहबकोहै औरको नहीं है यह जोहै ज्ञानसो यह ग्रंथमें बिषयहै २ औ ग्रंथको बिषय सो संबंध कौनहै तात्पर्य करिकै प्रतिपाद्य प्रतिपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाव ३ औ यह ग्रन्थमें प्रयोजनका है कि मनमाया औ अहंब्रह्म जोहै ज्ञान तौनेमें बंधा जोहै जीव सो मनमाया ब्रह्मते छूटिकै रघुनाथजीको प्राप्ति होय सो प्रयोजन ४ जीवको मन माया ब्रह्मते छोड़ाय कै श्रीरघुनाथ जीके पास प्राप्ति करिबेकोकही अपनी उक्तिते कही साहबकीउक्तिते कही माया की उक्तिते कही जीवकी उक्तिते कही ब्रह्मकी उक्तितेकबीर जी उपदेश कियोहै औ उत्पत्ति प्रकरण कैयो प्रकारते अपने ग्रन्थनमें कबीरजी कह्योहै सो इहां कबीरजी प्रथम रमैनीमें आदिकी उत्पत्ति कहेहैं जब कुछ नहीं रह्योहै तब वही साहबको लोक रह्योहै ताहीको परम अयोध्या कहेहैं औ सत्यलोक सांतानक लोक नापैद लोक आदि दैकै नानानाम हैं तौने लोकमें जे हंस हंसनी हैं गुल्मलता तृण आदि दैकै ते सब चिन्मयहैं औ परम पुरुष श्रीरामचन्द्र सबके मालिकहैंतामें प्रमाण राजा धिराजसर्वेषां रामएवनसंशयः ॥इतिस्तुतेदूसरोप्रमाण। यत्र वृक्षलतागुल्मपत्रपुष्पफलादिकम्॥ यत्किंचित्पक्षिभ्रमादितत्सर्वंभांतिचिन्मयं॥ इतिबशिष्टसंहितायां ॥ कबीरौजी कह्योहैसदाबसंतजहंफूलहिंकुंज सोहावहीं। अक्षय वृक्ष तरसेज सोहंस बिछावहीं॥ धरती आकाश जहां नहिं जगमगै। वहिया दीनदयाल हंसके सँग लगै॥ तौने श्रीअयोध्याजी को जो है प्रकाश तामें शुद्धजीव जेहैं तेभरेहैं तिनको साहब को औ साहबके लोकको ज्ञान नहीं है जो साहबको जानै औ साहबके लोक जायतौना उलटि आवै सो साहबको तौजानै नहीं है याहीतेमायाउनको धरिलै आवैहै सो प्रथम साहब दयाल उनमें दयाकरिकै आपनी शक्ति दैकै उनके सुरति उत्पत्ति करत भये कि हमको जानै हमारे पास आवै तौ मायातें बचिजाय सो आदिमंगलमें करिआये हैं जब उनके सुरति भई तबहैं धोखा ब्रह्ममें औ मायामें लगिकै संसारीभये सोसाहब बहुत हटक्यो सो हटको नामान्यो सोआगे वेलिमें कहैंगे ॥ तूहंसा मन मानि कहोरमैयाराम। हटल न मान्यो मोरहोरमैया रामाजसकीन्ह्योतस पायोहो रमैयाराम। हमर दोषजनिदेहुहोरमैयाराम॥ औसाहबकेलोकमें मनादिकन कोकारण नहीं है तामें प्रमाण॥नयत्रशोको नजरानमृत्युर्न कालमायाप्रलयादिविभ्रमः रमेतरामेतसनत्रगत्वास्वरूप्यतांप्राप्यचिरंनिरंतरं॥इतिबशिष्टसंहितायां १॥ कबीरौजीकह्योहैतत्वभिन्ननिहतत्वनिरक्षर मनौपै मसे न्यारा । नादविंदुअनहदनिरगोचरसत्यशब्दनिरधारा ॥ औ साहबको लोक सबके पार है सो मंगलमें कहिआये हैं जो साहबको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानै औ साहबके लोकजाइ तौ संसार में ना आवै सोतौनै उत्पत्ति श्री कबीर जी प्रथम रमैनीमें संक्षेप ते कहैहैं औ सबकी उत्पत्ति साहब के लोकके प्रकाश के बाहिरेही ते होइहै तामें प्रमाणज्ञानसागरको ॥ जानै भेद न दूसर कोई । उतपति सबकी बाहर होई १ ॥

इति आदिमंगलसम्पूर्णम् ॥

अथ रमैनी प्रथम १ ॥

चौ० जीव रूप यक अंतरबासा । अंतर ज्योति कीन परगासा १
इच्छा रूप नारि अवतरी । तासु नाम गायत्री धरी २
तेहिनारीके पुत्रतिनभयऊ । ब्रह्मा बिष्णुमहेशनाम धरेऊ ३
तब ब्रह्मा पूछत महतारी । कोतोरपुरुषकाकरितुमनारी ४
तुमहमहमतुम औरन कोई । तुमतोरपुरुषहमैंतोरिजोई ५

साखी ॥ बाप पूतकी एकै नारी औ एकै माय बिआय ॥
ऐसापूत सपूत न देख्यो जो बापै चीन्है धाय १

चौ० जीवरूपयकअंतरबासा । अंतरज्योतिकीनपरगासा १ ॥

श्री रघुनाथजीके लोककोजोहै प्रकाशतेहिके अंतर जेहैंजीव एकहूपतेकहे समष्टि रूपते बासकियेरहे अंतरज्योति कहे साहबके लोकको जोहै प्रकाश तेहिकेअंतरैकहे भीतरै आपनईप्रकाश करतभये अर्थात् सुरतिकी चैतन्यता पाय मनादिक उत्पन्नकै संसार प्रकट कै संसारीह्वै गये साहबको नजानत भये यावात मंगलमें बिस्तारते कहि आयेहैं याते इहां प्रसंग मात्र सूचित कियोहै जब पलयहोयहै तबहूं वही ब्रह्ममें लीनहोइहैउहैंते पुनि उत्पत्ति होइहै औअनुभवधोखा ब्रह्मज्ञान करिकै जेमुक्त होयहैं ते सनातनज्योति जोहै अयोध्याजीको प्रकाशवही ब्रह्मजहांपूर्वलोनरहेहै तहैंजायलीनहोयहै औ जे श्रीरामचंद्रको जानैहैं तेज्योति वहभेदिकै श्रीरामचद्र के पास जायहै तामेंप्रमाण॥ सिद्धाब्रह्मसुखेमग्नादेव्याश्चहरिणाहताःतेज्ज्योतिर्भेदनेशक्तारसिकाहरिवेदनः॥जैसे माया मन मिल्यो ऐसेरामरमाय । तारा मंडलभेदिकै तबै अमरपुर जाय ॥ औ धोखा को अर्थयहहै जो और को और देखे सो कौनहै कि एक जोहै सर्वत्रपूर्णलोकःप्रकाश ब्रह्म ताके अंतर कहेभीतर अनुरूप जे जीव ते समष्टि रूपते बास किये रहे सो अंतर ज्योति प्रकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहे जब साहब सुरति दियो सोई अंतर प्रकाश करत भई तब जीव को जानपरन लग्यो चैतन्यता आई तब संकल्प विकल्प कियो कि मैं कौन हौं यही मनकी उत्पत्ति भईसो जीवकोरूपतौ॥बालाग्रशतभागस्य शतधाकल्पि तस्यच। भागो जीवः सविज्ञेयः सचानांत्याय कल्पते ॥ इति श्रुतेः ॥ इत्यादिक प्रमाण करिकै वाकोस्वरूप तो अनुहै सोतौवाको न देखिपर्‌यो सर्वत्रप्रकाश रूप ब्रह्मदेख्योसोमान्योकि महीं ब्रह्महौं यही धोखा ब्रह्महै कही जीव ब्रह्म तो बनैहै जीवकहना यहीयाकी भूलहै जब याको ज्ञान भयो ज्ञानते विज्ञानभयो अनुभवानन्द प्राप्ति भयो जब भर अनुभवानन्द बनो रहैहै तब भर याकोजीवत्व को लेश बनो रहै है जब अनुभवानन्द रूपही ह्वै गयो तबयाकोजीवत्व मिटिगयोसंसारऊ मिटिगयो एक आपही आप रहतभयो तुमकैसे कहौहौ कि जीवको ब्रह्महोना धोखाहै जो ऐसो कहौ तौ सुनौ जोपदार्थ बीचको होयहै सो मिटि जायहै औ जो पदार्थ सनातनहै सोनहीं मिटिजायहै कैसे जैसे तुमकहौहौ किजीवत्वबीचहीको है वही ब्रह्म अनेक रूप धारण कै लियोहै एकते अनेक होइगयो है जब जीवत्वको भ्रम मिटि गयो तब ब्रह्मही रहि जायहै जो प्रथम रह्यो है सोई रहिजाय है जोपदार्थ बीचको होयहै सो मिटिजायहै तैसे हमहूं कहैहैं कि आदि में तो जीवरह्योहै सोजब संसार छूट्यो तबशुद्ध जीवको जीवही रहिजायहै जोकहो ब्रह्महीजीवह्वै जायहै तौहम तुमसों या पूछैहैं कि प्रथमतो ब्रह्महो रहत भयो सो ब्रह्म अकर्ताहै निर्धर्महै मनमायादिक ते रहितहै देशकाल वस्तु परिछेदते शून्यहै सो ऐसे ब्रह्मको जीवत्व को भ्रम कहांतेभयो जोकहो वह ब्रह्म जीवत्व को धारण नहीं कियो वाकोतो भ्रमही नहीं है काहेते कि ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ यह श्रुति लिखैहै वाको भ्रमतो संभवितै नहीं है भ्रमतो जीवनकोभयोहै जिनको ब्रह्म को विज्ञानहै तिनको न जीवत्व है न संसार है जैसे अज्ञानी जीवन को संसारही देखिपरैहै तैसेज्ञानी जीवनको ब्रह्मही देखि परैहै तौ सुनौतुमहीं दुइजीव कहौहौ एक अज्ञानी जीव एक ज्ञानी जीव सो अज्ञानी जीवको या कह्यो कि संसारही देखायहै सो ब्रह्मके तौ अज्ञान होतही नहीं है जाते आपको जीवत्व मानिकै संसारीहोय जो कहो मायाते सबलितह्वै कै ब्रह्मही जीवहोइ संसारी ह्वै जायहै तौ मायाको तौ मिथ्या कहौ हौ जायासामाकोअर्थःमिथ्यैव फिरिब्रह्मको तौ ज्ञान स्वरूप कहिआये हौं कि ब्रह्मको मायाको स्पर्श नहीं होयहै ब्रह्म-जीवनहीं होइसकैहै तौज्ञानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अज्ञानी जीव औ संसार वह ब्रह्मभ्रम करिकै कैसे भयो जो कहो जीव औ संसार या हई नहीं है तौ पुराण औकुरान वेदांतकाको उपदेश करैहै तेहितेतुम्हारो समाधान कियो नहीं होयहै जीव ब्रह्म कबहूं नहीं होइहै सनातन ते जीव भिन्नहै औ ब्रह्मभिन्नकाहेते साहबके लोकःप्रकाश ब्रह्ममें अनादिकालते समष्टि रूपतेजीवरहैहै ताको साहबदयाल दयाकरिकैसुरति दियो कि मोमें सुरति लगावै तौ मैं हंसरूप दैके अपने पास लैआऊं सो अनादि कालते श्रीरामचंद्रको जनवई न किये या मनादिकन को कारण उनके रहबही करै वह सुरति पायकै संसारी ह्वै गये जो साहबको जानते तौ संसारमें ना आवते जब मनादिक भये तब अनुभव ब्रह्मको उत्पन्न कियो सो यहतो साहबको है सो साहबको ना जान्यो आपहीको ब्रह्म मान्यो यही धोखा है औ जीव सनातन है सर्वत्रपूर्ण लोकप्रकाशरूप ब्रह्म नहीं होयहै वही प्रकाशमें अचल समष्टि रूपते भरो रहैहै तामेंप्रमाण ॥ नित्यःसर्वगतःस्थाणुरचलोयंसनातनः ॥ इतिगीतायां ॥ औ लोक प्रकाशव्यापक ब्रह्मते जीवते भेदहै तामें प्रमाण॥सत्यआत्मासत्योजीवः सत्यभिदः सत्यभिदः ॥ औ अज्ञानहूते ब्रह्म में लीन होयहै तबहूं माया धरिलै आवैहै तामेंप्रमाण ॥ येन्येरविन्दाक्षविमुक्तमानिनः त्वय्यस्तभावाद विशुद्ध बुद्धयः ॥ आरुह्यकृच्छ्रेणपरंपदंततः पतन्त्यधोनादृतयुष्मदंघ्रयः ॥ इतिभागवते ॥ तेहिते साहबके लोक प्रकाश में भरे जे जीव हैं तहँतेसृष्टि होतहै औ तहँ समष्टि रूप करिलीन होतहै अनादि काल यही क्रमहै सो जैसो हम बर्णन करि आये हैं ताही रीतिमेंप्रकाश रूपजो ब्रह्महै तामें निर्विकारत्वनिर्धर्मत्वादि जे वेदांतमें विशेषणहैं ब्रह्मके ते बनरहैहैं औगी भांति नहीं संघटित होयहै औ प्रकाश रूप जो ब्रह्महै सो निर्विकार है निर्धर्महै अकर्त्ताहै वाकी करी रक्षा जीवकी नहीं होयहै दूनों ते परेजे साहब हैं तिनकोजो जानैहै जानिकै उनकेलोककोजायहैसो फेरिनहीं आवै है वे रक्षाकरि लेयहैं काहेते वहां मन मायादिकन की गति नहीं है ॥तामें प्रमाण ॥ यद्गत्वाननिवर्तंतेतद्धामपरममम ॥ औ जगतकी उत्पत्ति जो उपनिषदन में लिखै है सो समष्टि रूप जीवही ते लिखैहै सो कहै हैं ॥ सदेवसौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयं ॥ इतिश्रुतेः॥ एककहेसजातीय भेद शून्य अद्वितीयकहे बिजातीय भेदशून्य ये वकारते स्वगत भेद शून्य यद्यपि सूक्ष्मभेद वामें बनैहैं परंतु समष्टि रूप करिकै जीव एकही रहैहै प्रलय में अथवा जीवत्व करिकै एक रहै है यह श्रुति सद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम कैके कहेहै ताते अनामा जो ब्रह्महै तामें नहीं लगैहै औ दूजी श्रुति है ॥ सऐच्छतएकोहं बहुस्यां ॥ तौनैजोहै समष्टि जीव सो सुरति पाय कै इच्छा करत भो कि एकते बहुत होउ सो या ब्रह्मष्ठि जे समष्ठि जीव ताहीमें लगैहै औ ब्रह्मपद यह समष्टि जीवही में घटित होयहै काहेते वृहि वृद्धौ यह धातुहै व्यष्टिते समष्टि ह्वै जायहै समष्टिते व्यष्टि होइ जायहै औ वहजो लोकपूकाश ब्रह्म एकरसना घटै नबढ़ै तामें एकोहं बहुस्यां या अर्थ नहीं लगैहै औ अनुभव करि आपने कोजोब्रह्ममान्योहै सोतो धोखै हैनाम मिथ्यैहै सोएकतौ समष्टि जीव रूप सगुण ब्रह्मतौन औएक लोकःपूकाश रूप निर्गुण ब्रह्म तौन ई दूनौते साहब परेहै औमगल में पांच ब्रह्म कहि आयेहैं सो नारायण जेहैं साकारते औतिनके अंतर्यामीजेहैंनिराकारतत्वरूप नारायण तेई दूनौं जेसाकार निराकारहैं तिनते साहब परेहै औनिराकार साकार ये दोऊ साहब के शरीरहैं तामें पूमाण ॥ यामिच्छसिमहाराज तांतनुंकविशेवकाः । वैष्णवीतांमहातेजो यद्वाकाशं सनातनम्॥इतिवाल्मीकीये ॥ औ साहब साकाराद्विभुजनराकृतिहै । तामें पूमाण ॥ स्थूलंचाष्ट भुजंप्रोक्तं सक्ष्मंचैवचतुर्भुजं । परंतुद्विभुजंरूपं तस्मादेतत्त्रयंयजेत् ॥ इति आनंदसंहितायां ॥ आमन्दोद्विभुजःप्रोक्तो मूर्त्तश्चामूर्त्तएवच । अमूर्त्तस्त्र्यश्रयोमूर्त्तः परमात्मानराकृतिः ॥ इतिआनंदसंहितायां ॥ औ मुसल्माननके जे अच्छे समुझवारेहैं ते साकारही मानैहैं काहेते कि कुरानमें लिखैहै अल्लाह कहैहै कि महम्मद मोको एकबारजबलकड़ा में देखाहै औ एक बारमैंने बुलाया मेरे सामने चलाआया दुइकमान से कमफर करहि गया सो महम्मद देखा याते अल्लाहके सुरतिहै यहआयो औमहम्मद का हदीसखलकल ईसाना अल्लाहके सुरतिहोमें बनायाहै ईसान अपनी सुरतिका यहिसे या आया कि अल्लाह द्विभुजहै यहिसे या मालूम भया कि अल्लाह कहिकै द्विभुज श्रीरामचन्द्रही वर्णन करैहै औ जे अल्लाहकी सुरति कहतेहैं कि नहीं है कुरानकी जबाननहीं मानतेहैं तिनकोकाफरकहते हैं औ वह जोहै निर्गुण सगुण के परे साहब अराकृति सो जाके ऊपर कृपा करैहै ताको आपनो हंसरूप आपनी इंद्री देइहै आपैदेखि परैहै तामें पूमाण॥ ब्रह्मणैवजिघ्रति ब्रह्मणैवपश्यतिब्रह्मणैवश्रृणोतिइतिश्रुते ॥ औ साहबको रूप साकार निराकारते बिलक्षणहै यातेअरूपी रूपकहैहैं औजैसो यह नामहै तैसो नाम नहीं है वहनाम बिलक्षण मन बचनके परेहै याते वाको अनामा नाम कहैहैं तामें पूमाण॥ अनामासोऽपूंसिद्ध्या दरूपोभूतव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्जनात् ॥ इतिअग्निपुराणे ॥ अप्राकृतशरीरत्वा दरूपीभगवान्विभुः॥ इति वायुपुराणे ॥ औ साहबके हाथ पांय नहीं हैं निराकार आयो औ च-लैहै ग्रहण करिलेइहै याते साकार आयो तामेंप्रमाण ॥ अपाणिपादोजब नोगृह्णात्वापश्यत्यचक्षुःसश्रृणोत्यकर्णःइतिश्रुतेः ॥ सी ऐसेसाहबकेलोकः प्रकाश ब्रह्मको यहजीव ना समुझयो कि साहबको लोकःप्रकाश है मनते अनुभव करि वह ब्रह्म आपही को मानत भयो यही धोखा ब्रह्महै सो जीव पैकहे एकरूपते औ कहे समष्टि रूपते जीव लोकःप्रकाश के अंतर में बास कियेरहै सोअंतर ज्योति कहे सुरति पाय प्रकाशकीन कहे मतादिक उत्पन्न करि समष्टि ते व्यष्टि होवेकी इच्छा करत भये सो आगे कहै हैं १ ॥

चौ० इच्छारूपनारि अवतरी । तासुनामगायत्रीधरी २ ॥

आपनेको जो धोखाते ब्रह्म मानिलियो समष्टि रूप जीव ताके जब इच्छाभई सोई मल प्रकृति मायाहै तेहिते सबलित ब्रह्मभयो सो इच्छा माया जब प्रगटभई ताको नाम गायत्री धरावत भये गायत्रीतो सूर्यमध्यवर्ती जे श्री रामचंद्र हैं तिनको तात्पर्य ते बतावैहै सो अर्थतो नाग्रहण करतभये सूर्यके मध्यमें साहबहै तामेंप्रमाण ॥ सूर्यमंडलमध्य-स्थं रामसीता समन्वित ॥ सूर्यप्रतिपादक अर्थ ग्रहण करतभये तेहिते दिन राति संध्या होतभई औ ब्रह्मादिक देवताभये सोआगे कहैंगे यह संसार मुख अर्थ समुझयो तेहिते गायत्री सबकी उत्पत्ति करत भई जो कहो काहेते जानो कि गायत्री के द्वै अर्थहैं तौ सुनो यहबाणी जोहै सो सार शब्द जो रामनाम ताको लैके पथम प्रगट भईहै तामें द्वै अर्थहैं एकसाहब मुख एक संसारमुख ऐसे प्रणव निगम आगम इनमें द्वै द्वै अर्थहैं एक साहबमुख एक संसारमुख काहेते कि रामनामते सब निकसेहैं सो जो कारण में द्वै अर्थभये तौ कार्य में द्वै अर्थ होवई चहैं सोसंसारमुख अर्थ लैके जीव संसारी होतभये सो यह उत्पत्ति मंगल में विस्तारते लिखि आयेहैं ताते संक्षेप इहां उत्पत्ति लिख्योहै २ ॥

चौ०तेहिनारीकेपुत्रतिनिभयऊ।ब्रह्माबिष्णुमहेशनामधयऊ३

तौनै गायत्री रूप नारीके ब्रह्मा बिष्णु महेश उत्पन्न होत भये तब वह जो गायत्री रूप नारीहै ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौ० तबब्रह्मापूछतमहतारी । कोतोरपुरुषकाकरितुमनारी ४

तासों ब्रह्मा पूछतभये किकोतोर पुरुषहै काकरि तूनारीहै औ काके हम पुत्रहैं सो बताउ हमजानो चहैहैं तबवा नारीकहतभई ४ ॥

चौ० तुमहमहमतुमऔरनकोई । तुममोरपुरुषहमैंतोरजोई ५

प्रथम साहब के लोक प्रकाश में अनादि कालते साहबतेबिमुखता रूप जो जगत को कारण तेहिते सहित जीव समष्टि रूप बासकिये रह्यो तिनके ऊपर साहब दयाकियो कि ये अबोध सुषुप्ति ऐसेमें परेहैं इनको सुखको अनुभव नहीं है यहजानि साहब बिचारयो कि हम इनको सुरति देय जेहिते हमको जानि लेइ तौ मैं हंसरूप दैकै आपने धामको बोलाय लेउं सो जब साहब सुरति दियो तब चैतन्यता भई अर्थात् स्मरण भयो यही चित्तकी उत्पत्ति है औ वाको रूपतो अनुहै सोतो आपनो देखैनहीं है संकल्प बिकल्प करै है कि मैंहौं कि नहीं हौं यही मनकी उत्पत्तिहै फिरि बिचारयो कि मैंहौं तौ पै कौनहौं आपनोरूपतो देखैनही है फिरि निश्चय कियो कि जो मैं होतो न तो या संकल्प बिकल्प काको होतोयाते मैंहौं यहीबुद्धिकी उत्पत्तिभई जौनेलोक प्रकाशमें अपारहै ताको देखि मानत भयो कि सतचित आनंद स्वरूप सोमहीं हौं यहीअहंब्रह्म रूप अहंकार की उत्पत्ति है सो जब समष्टिजीव आपने को चिद्रूप ब्रह्म मान्यो तब वही पूर्व जगतकारणरूपा योगमाया अर्थात् साहबते बिमुखतारूपा सो स्थूलरूप ते चिद्रूपा योगमाया लागी तब आपनेकोसच्चिदानंदब्रह्ममानिकै एकते अनेकहोबेकी इच्छा कियो अर्थात् समष्टिते व्यष्टि होबे की इच्छाकियो तब साहब जान्यो कि समष्टि जीव आपनेको सच्चिदानंद ब्रह्ममानि संसारी होनचहै हैं तब सार शब्द जो रामनाम ताको दियो कि याको अर्थ समुझि हमको जानै तौ हम हंस स्वरुपदै आपने धामको लैआवैं सो रामनाम को अर्थ साहब मुखतो न समुझ्यो जगतमुख अर्थलगाय रामनाम की जे षट मात्राहैं तिनते पांच मात्रा ते पांच ब्रह्म प्रगटकियो छठौं मात्राको अर्थजीवको हंस स्वरुप है सो न जान्यो वाही को जीवको अर्थकरि समष्टितेव्यष्टि ह वैगयो सो समष्टिते व्यष्टिहोबे वाली जो इच्छाहै सोई गायत्री रूपा मायाहै तेहिते ब्रह्मादिक देवता भये सो प्रथम शुद्धजीव आपने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्ममानि अशुद्ध ह्वै गयेहैं याही हेतु ब्रह्म को कोई जगत कोनिमित्तकारण कहै हैं कोई निमित्त उपादान कारण कहै हैं याहीते वा ब्रह्म अशुद्ध जीवन को बापहै सोतो धोखई है गायत्रीकैसे बतावै कि प्रथम ब्रह्मासों कि तिहारा बापहै ताते यह कहैहैं कि प्रथम तुमरहे तिनके इच्छाहम हैं अब हम तुम कहे हमते तुम भये और तो कोईहई नहीं है तुमहीं हमार पुरुष हौ हमैं तुम्हारी जोईहैं अर्थात् जब तुमशुद्धते अशुद्ध भयेहौ तब चित अचित रूपा जो माया हमहैं तिनहीं ते सबलित ह्वै उत्पन्न भयोहै तबहूं हम तुम्हारी नारीरहीहैं औ अबहूं सरस्वती आदिक तुमको देयंगे ते हमहीं हैं याते तुमहीं पुरुषहौ हमहीं नारीहैं ५ ॥

साखी ॥ बापपूतकी एकै नारीओ एकैमायबिआय ॥
ऐसापूत सपूत न देखों जो बापै चीन्हैं धाय ६

बापतो धोखा ब्रह्महै जाते शुद्धजीव अशुद्ध ह्वै उत्पन्न भयेहैं ते अशुद्ध जीव पूतहैं सो दोऊ माया सबलित भये ताते बापपूतकी एकैनारी भई औ पूर्व जगत कारण रूपा जो मायाहै तौनेहीं ते अहंब्रह्मास्मि मान्यो है औ तौनेहीं ते व्यष्टि जीवनकी उत्पत्तिहू भईहै याते दोहुनकी एकैमहतारीहै याते एकै मायाबियानी है सो ऐसा पूत सपूत नहीं देखेहुहै कौन सो बापजोहै ब्रह्मताको धायकै कहेबहुत बुद्धि दौरायकै चीन्हे कि यह धोखाहै अबजाकी शक्ति करिकै यह जगत भयोहै जौनी भांतिते सो समेटिकै सिंहा वलोकन कैकै पुनि कहैहैं ६ ॥

इति प्रथम रमैनी समाप्तम्॥

अथदूसरी रमैनी २ ॥

अन्तर ज्योतिशब्दयक नारी। हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी १
ते तिरिये भग लिंग अनंता। तेउनजानैं आदिउ अंता २
बखरी एक विधातैं कीन्हा। चौदह ठहर पाटिसो लीन्हा ३
हरिहर ब्रह्म महंतौ नाऊं। ते पुनि तीन बसावलगाऊ ४
तेपुनिरचि निषंड ब्रह्मण्डा। छः दरशन ज्ञानबे षंडा ५
पेटहि काहुन वेदपढ़ाया। सुनति कराय तुरुक नहिंआया ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी मोचित गर्भ प्रसूती । स्वांगधरे बहुते करतूती ७
तहिया हम तुम एकैलोहू । एकै प्राण बियायल मोहू ८
एकै जनी जना संसारा । कौन ज्ञानते भयो निनारा ९
भा बालक भगद्वारे आया । भग भोगते पुरुष कहाया १०
अबिगतिकोगतिकाहुनजानी । एकजीभकित कहौं कहानी ११
जो मुखहोय जीभ दशलाषा । तौकोइआय महंतौ भाषा १२
साखी ॥ कहँहिं कबीर पुकारिकै ईलेऊ व्यवहार ॥
एक रामनामजाने बिना भवबूड़िमुवासंसार १३

अंतर ज्योति शब्दयक नारी । हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी १

अंतर ज्योति कहे वह ज्योतिके अंतर कहे भीतरै नारी जोहै गायत्री रूपवाणी सो शब्द जोहै राम नाम ताको लैकै प्रगट भईहै सो मंगल में कहि आयेहैं तौने शब्दकी शक्ति ते तानारीके हरि ब्रह्मा त्रिपुरारी भयेहैं अर्थात् रामनाम को जगत मुख अर्थलैकै वहै वाणीरूप नारी वेदशास्त्र औ सब संसार प्रगट कियो रामनाम में ये सबभरे हैं सोमैं अपने मंत्रार्थ में लिख्योहै सो रामनाम में जो साहब मुखअर्थ है ताको छिपायदियो १ ॥

चौ० तेतिरियै भगलिंग अनन्ता । तेउन जानै आदिउ अंता २

तौन जोहै तिरिया ताते अनंत भग लिंग होत भये अर्थात् बहुत स्त्री पुरुष भये ते अनेक शास्त्रनमें अनेक वेदनमें बिचार करत २ तबहूं वह रामनामके अर्थको अंत न पाये २ ॥

चौ० बखरी एक बिधातैं कीन्हा । चौदहठहरपाटिसोलीन्हा ३

एक बखरी यह ब्रह्माण्ड ब्रह्मा बनावत भये सो चौदहठहर कहे चौदह भुवन करिकै पाटि लेतेभये ३ ॥

चौ० हरिहर ब्रह्म महंतौ नाऊ।तेपुनि तीनि बसावलगाऊ४

औ हरिहर ब्रह्माजौन ब्रह्मांड प्रथम ब्रह्मा बनायो है वोहीब्रह्मांडमें तीनि गांव बसावत भये तहांके मालिक होत भये औ जे प्रथम ब्रह्मादिक देवता भयेहैं तेई ब्रह्मादिकन के अगनके देवता होत भये सो मंगलमें लिखि आयेहैं ब्रह्मादिकनकी उत्पत्ति औ पुनि भगवान की नाभीमें कमल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयो तेहिते ब्रह्मा भयेहैं तिनते उत्पत्ति भई है औ ब्रह्मवैवर्तमें प्रथम ब्रह्माकी उत्पत्ति प्रकृति पुरुषके अंगन ते भईहै औपुनि भगवान की नाभीमें कमल भयोहै जो मंगल में कहि आये हैं तेहिते ब्रह्मा भये हैं तिनते उत्पत्ति भई है औ तौनै बात या रमैनीहू में कहैहैं कि पहिले इच्छारूपी नारीते ब्रह्मादिक भये औपुनि ब्रह्मांडांतर नुवर्ती ब्रह्मादिक भये ते सतो गुणाभिमानी जे बिष्णु ते ऊपर दवलोक बसावत भये ते ताके मालिक और जो गुणाभिमानी जे ब्रह्मा ते मध्यके लोक बसाये ते तहां के मालिक औ तमो गुणाभिमानी जे महादेव ते नीचे के लोक बसाये ते तहांके मालिक होत भये सो ये तीनौ तीन लोकके मालिकैहैं परंतु तौन तौन लोकनकी प्रधानता देखाईहै ४ ॥

चौ० ते पुनि रचिनिखंड ब्रह्मंडा। छादर्शन छानवे पषंडा ५ ॥
पेटहिकाहुनबेदपढ़ाया। सुनतिकरायतुरुकनहिं आया ६॥

ते तीनौ देवता मिलिकै ब्रह्माण्डमें छा दर्शन छानवे पाषंड बनावत भये योगी जंगम सेवरा संन्यासी दुरवेश छठयें कहिये ब्राह्मण छाघरछा उपदेश दश संन्यासी बारह योगी चौदह शेष बखाना। बौध अठारहि जंगम अठारहि चौरासि सेवरा जाना ॥ औप्रथम उत्पत्ति में कहिआये हैं ब्रह्माबिष्णु महेश ते यह ब्रह्मांडके ऊपर अपने लोक बसाये फिरि एकर अनंते अनत कोटि ब्रह्मांडनमें बसेजाय ५ औ पेटै ते कोऊ बेदनहीं पढ़ि आया कह गायत्री नहीं पढ्यो बरुवानहीं भयो औ न पेटै ते सुनति करायकै तुरुक बनि आयाहै ताते हिंदू तुरुकको जीव एकईहै सो तो नाजान्यो बेद किताबकी बाणी सुनिकै अपने २ कर्मते सब अनेक भेदह्वैगये वेद किताब को भेद न जान्यो ६ ॥

चौ० नारी मोचित गर्भ प्रसुती। स्वांग धरे बहुतै करतूती ७
तहिया हम तुमएकैलोहू। येकै प्राण बियाप लमोहू ८

गर्भ बासमें जब तुमरहेहो तबन हिंदूएह्योहै नातुरुकह्यो नवेदपढ्यो न तिहारी सुनति भई तब गर्भते निकसे तब कर्म करिकै हिंदू मुसलमान ह्वैगये वहै नारी जोहै बानी ताहीमें चित्त लगाय कै कर्म करिकै नाना स्वांग हिन्दू मुसलमान भये ७ सो कबीरजी कहैहैं की जैसे हम शुद्धहैं तैसेतुमहू शुद्ध रहेहो जब तुमहीं मन प्रगट कियोहै औ इच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भईहै तब हम तुम एकहीलोहू रहेहैं अर्थात् एकई जाति चित्त स्वरूप शुद्ध रहेहौ सो एक मोह कहे भ्रमजोहै मन सो व्याप्त ह्वै कै नाना भांति तुमको कराइ दियो कि हम हिंदूहैं हम तुरुक हैं इत्यादिक सबसों ८ ॥

चौ० एकै जनी जनासंसारा । कौन ज्ञान ते भयो निनारा ९
भा बालक भग द्वारेआया । भगभोगेते पुरुष कहाया १०
अविगतिकीगतिकाहुनजानी।एकजीभकेतकहौंबखानीं ११

एक जनी कहै उत्पत्ति करनहारी माया औ एकै जनाकहे उत्पत्ति करन हार मन का अनुभव ब्रह्ममाया सबलित इनहीं ते सब जगत्है तुम कौन ज्ञान ते हिंदू तुरुक नाना जाति बनाय लिये निनार निनारह्ट जब भगके द्वारे आया तब बालक कहाया औ जब भोगन लग्यो तब पुरुष कहाया १० अविगति जोहै धोखा ब्रह्म ताकी गति कोई नहीं जानैहै मैं एक जीभते केतो बखानिकै कहौं ११ ॥

चौ० जोमुखहोइ जीभदशलाषा । तौकोइ आयमहंतौभाषा १२

जो एक मुखमें लाख जीभ होयँतौ कोई कहे महंत वही ब्रह्मकोभाषै अर्थात् न भाषै यह काकुअर्थ है काहेते कि वाकेतौ कुछरूपरेखा हुईनहीं है धोखहीहै अथवामहंत जेब्रह्मादिक अपने २ लोकके मालिकजिनजगत् की उत्पत्ति कियोहै तिनके करतव्यता को जो काहूके दशलाख जीभ होयँ कहै तौ का कहिसकै अर्थात् नहीं कहिसकै १२ ॥

साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिके ईलयऊ व्यवहार ॥
रामनाम जानेबिना भव बूड़ि मुवा संसार १३

कबीर जी पुकारिकै कहैहैं कि याजो उत्पत्ति बर्णन करि आये सो सब लयकहे नाश मानहै औ ऊ कहे वह धोखा ब्रह्मको जो बर्णन करि आये सो व्यवहारै मात्रहै अर्थात् समुझेते धोखहीहै कुछ बस्तु नहीं है सोएक बिना राम नामके जाने कहे साहबको जो बतावैहै रामनामसो अर्थबिन जाने मायाको बतायो जो है रामनाम में संसार औ ब्रह्माको अर्थ तौनै है भव कहे भयंरूप समुद्र तौनेमें संसार बूड़ि मुवाइहां लक्षणाहै संसार बूड़ि मुवा कहे संसारी जीव बूड़ि मुये १३ ॥ इतिदूसरीरमैनीसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ तीसरी रमैनी ॥

चौ० प्रथम अरंभ कौन के भाऊ। दूसर प्रगट कीन सो ठाऊ १
प्रगटे ब्रह्म बिष्णु शिव शक्ती। प्रथमै भक्ति कीनजिव उक्ती २
प्रगटिपवन पानी औ छाया। बहु बिस्तार कैप्रगटी माया ३
प्रगटे अंड पिंड ब्रह्मण्डा। प्रथवी प्रगटकीन नवखण्डा ४
प्रगटे सिधसाधक संन्यासी। येसब लागि रहे अविनासी ५
प्रगटे सुर नर मुनि सब झारी। तेऊ खोजि परेसब हारी ६

साखी ॥ जीउ सीउ सब प्रगटे बैठाकुर सब दास ॥
कबिर और जानैनहीं एक रामनामकीआस ७

चौ० प्रथम अरंभ कौनके भाऊ। दूसरप्रगट कीनसोठाऊ १
प्रगटेब्रह्मबिष्णुशिवशक्ती। प्रथमैभक्तिकीनजिवउक्ती २

प्रथम अरंभ कौनके भाऊ कहे भयो औ दूसर कौन प्रगट कियो जाते ये सब व्यवहारहैं १ प्रथम अनमान समष्टि जीवकियो मनके अनुभवते ब्रह्म भयो औ बाणी भई ताते ब्रह्मा बिष्णुमहेशादिक देवता प्रगट भये उनकी सब शक्ती प्रगटभई औ प्रथमही जीव जोहै सो अपनी उक्तिकरि कैउतदेवतनकी भक्तिकरत भयो अर्थात् नाना उपासना बांधिलेतभये २ ॥

चौ० प्रगटिपवनपानीऔछाया। बहुबिस्तारकैप्रगटीमाया ३
प्रगटेअंडपिंड ब्रह्मण्डा। प्रथवी प्रगटकीननवखण्डा ४

वेजे ब्रह्मादिक हैं ते अपनो अपनो करतब करतभये तेहिसेपवन पानी औछाया बहुतबिस्तार कैकै मायाप्रगटभई औचारिजे खानिहैं अंडजपिंडज स्वेद उदभिज प्रगट भये जे ब्रह्मांडमें हैं औ नवखंड प्रथ्वी प्रगट भई ४ ॥

चौ० प्रगटेसिधसाधकसंन्यासी। ईसबलागिरहेअबिनासी ५
प्रगटे सुरनरमुनिसबझारी। तेऊ खोजिपरेसबहारी ६

औ सिद्ध साधक संन्यासी प्रगट होतभये ये संपूर्ण जेहैं ते अबिनाशी में लागि रहेहैं अर्थात् अबिनाशीको खोजेहैं ५ औ सुरनर मुनिसब झारिकै प्रगटहोत भये तेऊ अबिनाशीको खोजत खोजतहारि परे तिनहूं न पायो ६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साखी॥ जीव सीव सब प्रगटे वे ठाकुर सबदास॥
कबिर और जानैनहीं एक रामनाम की आस ७

जीव औ सीव कहे ईश्वर सो सब प्रगटे सो ईश्वर तो ठाकुर भयो औ सब जीव दास भये सो कबीरजी कहे हैं कि हमतो दूसरो काहूको नहीं जानैहैं न अबिनाशी निर्गुण ब्रह्मको जानैं न सगुण ईश्वरनको जानैंनिर्गुण सगुणके परेजे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके एक रामनाम की हमारे आशा हैकि वही हमारो उद्धार करैगो ७॥ इति तीसरी रमैनी समाप्तम्॥

अथ चौथीरमैनी॥

चौ० प्रथम चरण गुरुकीन बिचारा। करता गावै सिरजनहारा १
कर्मै करिकै जग बौराया। शक्ति भक्ति लैबांधिनि माया २
अद्भुत रूपजातिकी बानी। उपजी प्रीति रमैनी ठानी ३
गुणि अनगुणीअर्थ नहिं आया। बहुतक जनेचीन्हिनहिंपाया४
जो चीन्है तेहि निर्मल अंगा। अनचीन्हे नल भये पतंगा ५
साखी॥ चीन्हि चीन्हि कहिगावहू बानी परी न चीन्हि॥
आदि अंत उत्पति प्रलय सऊ आपुहि कहि दीन्हि ६

चौ० प्रथमचरणगुरुकीनबिचारा। करतागावैसिरजनहारा१
कर्मैकरिकै जगबौराया। शक्तिभक्ति लैबांधिनिमाया२

प्रथम चरणकहे जगत्की आदिमेंगुरुकहेसाहबबिचारकीन कहेसुरतिदीन कि हमको जानै हमहंस रूपदै आपनेधामको लैआवैं सो जीवजेहैं ते वाचैतन्यतापायजगत्मुखहैं जगत्उत्पन्नकरिकैसंसारीह्वैगयेसोकरतातोसाहबहैं जिनकीचैतन्यता पायजीवसमष्टितेव्यष्टिभये तौनेसाहबकीकरतव्यतातोन जान्योब्रह्मादिकआपहीकोसिरजनहारमानतभये१तेईब्रह्मादिकनानाकर्मन कोप्रतिपादन करिकै जगत्बौराय दियो औ शक्तिजोहैगायत्रीतौनेकेउपदेश कीविधिकै कै ताकीभक्तिआपकै कै औ जीवनको कायकैमायामेंबांधदियो २

चौ० अदभुत रूप जातिकीबानी। उपजीप्रीति रमैनी ठानी ३
गुणिअनगुणीअर्थनहिंआया। बहुतकजनेचीन्हिनहिंपाया४

अदभुत रूप औ नाना जातिकी जोहै कर्म प्रतिपादिक ब्रह्मादिकन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाणी अर्थात् अद्भुतरूपनकेहैं ध्यान जिनमें कहे काहूके बहुत मूड़ काहू के बहुत हाथ काहूके बहुतपाँय यहिरीतिके देवतनकी उपासना करैहैं औनाना जातिकी कहे नाना तरहकीहै उपासना वर्णन जिनमें ऐसीउनकी बाणीसुन के तिन तिनदेवनपर जीवनकी पीति उपजतभई औ रमैनीठानी जो कह्यो सो अपने अपने उपास्य देवगुणीजेहैं सगुण उपासना वाले तेजीवकोस्व-श्वरूप दासरूपता खोजन लगे औ अनगुणी जेहैं निर्गुण वालेते जीवको अनुमान जो ब्रह्मत्वरूपता खोजनलगे सो वा वेदतात्पर्य्यार्थ दुइमें कोई नहीं पाये अर्थात् बहुतेरे जनेबहुत बिचारकियो परंतु न चीन्ह पायो ४ ॥

चौ० जोचीन्हैं तेहिनिर्मलअंगा। अनचीन्हे नलभये पतंगा ५

जे यह धोखाको जानैहैकि यहधोखाहैं तिनही कोजानिये किइनकेपारख है यहबात बिनाजाने जगत्केजेजीवहैं तेजैसेदीपकमें पतंगजरिजायहै ऐसे वहधोखामें परिकै नाना दुःख पावैहैं औ जोकोई साहबको चीन्हैहै जाको नेतिनेति वेदकहैहैं औ पारिख करैहैं ताके निर्मलअंगह्वै जायहैं अर्थात् हंस रूपपावैहैं काहेते किवह साहबतो निर्गुण सगुण मनबचनके परेहै सोजब वाको चीन्ह्यो तब वाहू मनबचनके परह्वै जायहै ५ ॥

साखी ॥ चीन्हि चीन्हि कह गावहू बाणी परी न चीन्ह।
आदि अंतउत्पति प्रलय सबआपुहि कहिदीन्ह ६

चीन्हौ चीन्हौ तुमकहा गावहुहौ अर्थात् कहा कहौहौ वह बाणीतो तुमको चीन्हि नहीं परी काहेते बाणीआपही कहतजायहै किजाकी उत्पत्तिहोय है ताकीप्रलयभी होयहै जाकी आदिहोयहै ताकोअंतहूहोयहै तातेजेतेप-दार्थ जगत्मेंबाणी आदि दैकैहैं ते मन बचनके परेनहीं हैं औ जोचीन्हैहै ताको निर्मल अंग होयजायहै यहजोकह्यो ताते यह देखाय दियोकि जब मनादिक एको नहीं रहि जायहैं तब मन बचनके परेजो पुरुषहै सो वह मुक्तजीवको हंस्वरूपदेइहै ताको पायकै तेहिहंसरूपके इन्द्रिनतेसाहबको देखैहैं सो याकोप्रमाणवेदमेंहै ॥ मुक्तस्यविग्रहोलाभा इतिकंठसाखायासो यह बिचारनहीं करैहैं बाणीकेफेरमें ब्रह्महू भूलिगये सो आगे कहैं हैं ६ ॥ इतिचौथी रमैनी समाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पांचवीं रमैनी ॥

चौ० कहँ लौ कहौंयुगनकी बाता । भूले ब्रह्म न चीन्हे त्राता १
हरि हर ब्रह्मा के मनभाई । बिबि अक्षर लै युक्ति बनाई २
बिबि अक्षरका कीन बिधाना । अनहद शब्दज्योति परमाना ३
अक्षर पढ़िगुणि राह चलाई । सनकसनन्दन के मन भाई ४
वेद किताब कीन बिस्तारा । फैल गैल मन अगम अपारा ५
चहुं युग भक्तन बांधलबाटी । समुझि न परै मोटरी फाटी ६
मैं मैं पृथिवी चहुं दिश धावै । स्थिर होय न औषध पावै ७
होय भिस्तजो चितनडोलावै । खसमैं छोड़िदोजख कोधावै ८
पूरुब दिशा हंसगति होई । है समीप सँधि बूझै कोई ९
भक्तौ भक्तिन कीन सिंगारा । बूड़िगये सब मांझीधारा १०
साखी॥ बिन गुरु ज्ञानै दुंदभो खसम कही मिलि बात ॥
युग युग कहवैया कहै काहु न मानी जात ११

चौ० कहँलौकहौंयुगनकीबाता ॥ भूले ब्रह्मन चीन्हे त्राता १
हरिहर ब्रह्माकेमनभाई ॥ बिबि अक्षर लैयुगुति बनाई २

युगनकी बात मैं कहांलौकहौं मनबचननके परेजोहै ताकीबाट बूझौ भूलिगयेहैं जो बाट पाठहोयहै तो यहअर्थहै औजो त्रातापाठ होयहैतो यह अर्थहै कि सबके त्राताकहे रक्षक जोसाहब ताको ब्रह्मा भूल गयेहैं १ जौन रामनाम को अर्थ जगतमुख लैकैबाणी औ समष्टि जीव आदि जगत् रच्योहै तौनेयुगति ब्रह्मो विष्णु महेशके मनमें भावत भई सो दूनो अक्षर रामनामको लैकैरचत भये २ ॥

चौ० बिबिअक्षरकाकीनबिधाना ॥ अनहदशब्दज्योतिपरमाना ३
अक्षरपढ़िगुनि राहचलाई ॥ सनकस नन्दनके मनभाई ४

ओई जे दूै अक्षरहैं तिनको बिधान करत भये कहां बिधानकियो को बंधान कर देते भये अनहदशब्द ज्योति तिनते प्रमाणहै कि ज्योति रूपी जो है आदि शक्तिरेफ रूपअग्निवीज जाको मंगल में पांचब्रह्ममें लिख्योहै ताहीते अनहद शब्द उठे व मनमें जो कुछ कहने की बासना भई चित्तमें सो मूला धारकी जोहै ज्योति तौनेमें मन मिल्यो कहे संकल्प उठ्यो तब वह ज्योति डोली ताते कछु पवनको संचार भयो ताते नाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रगटता भई तब वह बानी उठी सो पस्यती मध्यमा ह्वै त्रिकुटी के ऊपर मकारहै बिन्दुरूप तहां टकरपाय बैषरी ये तीनरूप ह्वै कैबाहर को आई औ योगीसो जहां अग्नि को औ पवनको संयोग होयहै तहां जो शब्द होय है सो अनहद कहावैहै सो वह बाणी जो बाहर आई सोसम्पूर्णअक्षर भे तौनै पढ़ि गुणिकै सनक सनंदन जे जीवहैं तिनके मनमें भावत भई अथवा सनकसनंदनादिक जे ब्रह्माके पुत्र तिनके मनमें भावत भई सो वहै राह चलावत भये ४॥

चौ० वेदकितावकीन्हबिस्तारा। फैलगैलमनअगमअपारा ५

तेई अक्षरन को लैकै वेद कितांब कुरान पुराण जेहैं तिनको बिस्तार करत भये सो सबके मनमें फैलगैल कहे फैलजात भई अर्थात् जाकेमन में जौनगैल नीकी लगी सो चलतभयेसो वह गैलतो भूलही गये बहुत गैल ह्वै गई अपने अपने मतनकी अपनी अपनीगैलकहैहैंकियही सिद्धांत हैतेहिते नाना सिद्धांत ह्वै गये जो सिद्धांत है ताको तो पावै नहीं वेदादिकन को कुरानादिकन को कहन लग कि अगम है अपार है काहे ते कि नाना मतहैं तिनमें वेद कुरानको प्रमाण सबमें है सो एक सिद्धांतमें निश्चय काहूकी न होत भई अथवा अगम अपार जो धोखा ब्रह्महै ताही में अपनोअपनो सिद्धांत करते भये सो वह तोअगम अपार है काहूको मिलब इनहीं कियो ५॥

चौ० चहुंयुगभक्तनबांधलवाटी। समुझिनपरैमोटरीफाटी ६
भैंभैंपृथ्वी चहुंदिश धावै। अस्थिरहोय नऔषधिपावै ७

चारिहु युगके नाना देवतनकेजे भक्तहैं तेअपनी अपनी राह बांधत भये तबहूं वह सिद्धांत न समुजि पर्‌यो काहेते कि बहुत राह ह्वै गईरामनाम के ससार मुख अर्थ मेंहै तो सब मतबनेही हैं परंतु साहब मुखजोअर्थहै रामनाम को ताको भूलिही गये भरमकी जोहै मोटरी सो फटी कहे पण्डित भये पढ़े भरम नाश की उपाय करन लगे अर्थात् शास्त्रनके अर्थ बिचारन लगे यही थोरो पढ़िबोहै सो वह राहतो पाई नहीं बहुतराह ह्वै गई तब नाना प्रकारकी शंका उठी भरम फैलि रह्यो नाना शास्त्रन के सिद्धांतन में वेद को प्रमाण सबही में मिलैहै काको सांच कहैं काको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असांच कहैं ताते शास्त्रनमें एको सिद्धांत न करिसके ६ तब जीव जेहैं ते भैंभें पृथ्वीमें चारोओर भ्रमन लगे खोजन लगे एकहु मतको सिद्धांत नहीं पावैहैं सो यहरोगकी औषधि जो साहबको जानैहै ताही बिरले संत महैं सोतौपावत न भये औरे और मेंलगे ताते अस्थिर न होत भये ७ ॥

चौ० होयभिस्तजोचितनडोलावैखसमेंछोड़िदोजखकोधावै ८
पूरुबदिशा हंसगतिहोई । है समीप संधि बूझैकोई ९

जो चित्त न डोलावैसुधर्ममें चलै तौ भिस्त जो स्वर्ग सोहोयहै अथवा जौने जौनेदेवतनकी उपासना करैहै तिनके लोक जायहै अथवा यज्ञपुरुष की आराधना करिकै स्वर्ग जायहै औ खसम कहे मालिक ऐसे जे श्रीराम चन्द्रहैं तिनको भुलाइकै सब जीव दौरैहैं मुक्तकहांते होंय दोजख़ जो नरक है ताहीमें परैहैं इहां स्वर्गहूको नरकही मानिकै कहैहैं काहे तेकि खसमके भूलेजो स्वर्गहू जायगो तौ दुखही पावैगो आखिर गिरिही परैगो ८ पूर्ब दिशा कहे सबके पूर्ब जब शुद्धजीव रह्योहै कहे जब शुद्धहै कै अपने स्वस्वरूपको चीन्है तब साहबहंसस्वरूप देयहै सो वा साहबको बिचार कर्म के बाहिरेहै सो याकी जो संधिहै कहेबिचार है सो समीप ही है जो अपने स्वरूपको चीन्है तौ साहब हंसरूप देखैकरै परंतु कोई बूझत है ९ ॥

चौ० भक्तौभक्तिनकीनशृंगारा।बूड़िगयेसबमांझहिधारा १०

ज्ञान मिश्रावाले जे भक्तहैं ते भक्तिनि जो माया तेहिते शृंगार करत भये कहे बिचार करतभये कि हमहीं ब्रह्महैं वह मनकी धारामें बूड़ि गये कहां बूड़ेकि यहसब मिथ्याहै यहकहत कहत एकअनुभव सिद्धांतराख्यो सो अनुभवजीव को है ताते मनते भिन्न नहीं है वही मन की मांझ धारामें बूड़ि गये अथवा साहबको छोड़िकै जे नाना देवतन के भजन करैहैं ते भक्त भक्तिनि कहावैहैं ते साहबको तो न जान्यो शृंगार करत भये कहे नाना वेष बनावत भये कोई क्षाअछिद्रनाको की ओर चंदन दियो कोई मृतिका दियो कोई राख लगायो इत्यादिक नानाबेष बनावत भये ते सब संसार रूपी समुद्रकी मांझ धारामें बूड़ि गये १० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साखी ॥ बिन गुरु ज्ञानै द्वन्दभो खसम कही मिलिबात ॥
युग युग कहवैया कहै काहु न मानीजात ११

खसम जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं ते मिली बात कही कहे अपनो रामनाम बतायो तामें द्वैअर्थ रह्यो एक साहब मुख एक संसार मुख सो आदिमंगल में लिखि आये हैं सो सबते श्रेष्ठ गुरुसाहब तिनको ज्ञानतो नहीं भयो संसार मुख अर्थ ग्रहण कियो ताते द्वन्द कहे जन्म मरण दुःख सुख स्त्री पुरुष ज्ञान अज्ञान इत्यादिक संसारमें होतभयो सो कबीरजी कहैहैं कि युग युग में कहनहार जो मैंहौं कबीर सो कह्यो मेरी कही बात काहूसों नहीं मानी जातहै ११ ॥ इतिपचईं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ छठी रमैनी ॥

चौ० बर्णहुं कौनरूप औ रेखा। दूसर कौन आय जो देखा १
औ ऊोंकार आदि नहिं बेदा। ताकर कहौं कौन कुल भेदा २
नहिंता रागण नहिंरबि चंदा। नहिंकछु होतपिताके बिंदा३
नहिंजलनहिंथलनहिंथिरपवना। कोधरैनामहुकुमकोबरना ४
नहिं कछुहोत दिवस अरुराती ताकर। कहहुंकौन कुलजाती५
साखी ॥ शून्य सहज मनस्मृतितेप्रगट भई यक ज्योति ॥
बलि हारी तापुरुष छबि निरालंब जो होति ६

चौ० बर्णनहुंकौनरूपऔरेखा। दूसर कौनआयजो देखा १
औऊोंकारआदिनहिंबेदा। ताकरकहौंकौनकुलभेदा २

वह जो अनिर्वचनीयहै ताको कौनरूप रेखाबर्णनकरौं मैंही नहीं बर्णन करि सकौं हौं तौ दूसर कौन आयजो देख्यो १ प्रणवको वेदहू नहीं जानै हैं काहेते कि प्रणव एकाक्षर ब्रह्मवेदन को आदिहै सो तौ प्रणवहू नहीं रह्यो ताहूको आदिहै उसको कौन कुल भेदकहौं २ ॥

चौ० नहिंतारागणनहिंरबिचंदा।नहिंकछुहोतपिताकेबिंदा ३
नहिंजलनहिंथलनहिंथिरपवना। कोधरैनामहुकुमकोबरना
नहिंकछुहोतदिवसअरुराती।ताकरकहहुंकौनकुलजाती ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न तारागण न सूर्य्य न चंद्रमा न पिता को विंदु एकौ नहीं रहेजाते सब उत्पत्ति है ३ पृथ्वी अपतेज वायु आकाश ये एकौ नहीं रहे तहां कौन नाम धरतभये औ काको हुकुम वर्णन करत भये ४ औ तहां न दिवस होत भयो न रात्रि होत भई ताकी कौन कुलजाति कहौं ५ ॥

साखी ॥ शून्यसहज मन स्मृतिथे प्रगटभई एकज्योति ॥

बलिहारी तापुरुषछबि निरालंब जो होति ६

सहज शून्य जो प्रकाश देखि परै ब्रह्म ताके मनके स्मरण ते एक ज्योति प्रगट होयहै सो सालंब है योगी जन ब्रह्माण्ड में देखैंहैं औ वह जो अनुभव ब्रह्महै सोऊ सालंबहै काहेते कि वाहूको मन करिकै अनुभव होयहै सो कबीरजी कहैहैं कि ये दोऊ सालंब हैं कि तिनकी बलिहारी मैं कहां जाऊं सबके मालिक निरालंब परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी छबिकी मैं बलिहारी जाउं हौं साहब निरालंब कहेते हैं कि जीवकीजे ती सामग्रीहैं मनादिक इंद्रिन करिकै ज्ञान करिकै अनुभव करिकै साहब न देखे जायहैं न जाने जायहैं जब आपही आपनो हंसरूप देयहैं तब वह रूप करिकै देखे जायहैं औ आपही ते जाने जायहैं तामें प्रमाण ॥ सोजानै जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हैं तुम्हैंह्वै जाई । तुम्हरी कृपा तम्हैंरघुनंदन । जानहिंभक्त भक्ति उर चंदन१ अर्थ हे श्रीरामचन्द्र जाको तुम जनाइ देहु हौ सो जानैहै जो कहो हमारही जनाये कैसे जानैगोवेद शास्त्रतो सब जनौतै है तौ एकबड़ो अवरोध है जब तुम्हारे जानबे के लिये समदमादिक कियोहृदयशुद्ध भयोतब आपहीको मानैहै कि महीं राम हौं सो तुमको कैसे जानि सकै या हेतुते तुम्हारी कृपै ते तुमको जानैहै जब तुम वाको हंसरूप दियो तब वह पांचौ शरीर ते भिन्नह्वै कै हंस रूपमें स्थितभयो वह हंस स्वरूप कैसो है तुम्हारी अनिर्वचनीया सभक्ति रूप जो चन्दनहै सो वाके उरमें लग्योहै ताकी शीतलता ते वह धोखा ब्रह्मके ज्ञानकी गरमी नहीं आय सकैहै जिनको कृपा करिकै तुम हंसरूप देहुहौ सो जानैहै तुमको सोऐसे जे साहब हैं परमपुरुष निरालंब तिनको कबीरजी कहैहैं कि मैं बलिहारी जाउं हौं परम पुरुष श्रीरामचंद्रही हैं तामेंप्रमाण ॥ धर्मात्मासत्यसंधश्चरामोदाशरथिर्यदि ॥ पौरुषेचाप्रतिद्वंदः सरण्य यहिरावणि । इतिबाल्मीकीये लक्ष्मणजीने मेघनाद के मारत में शपथ कियोहै कि जो पौरुष में अप्रति द्वंदी जोश्रीराम होयँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहे पुरुषत्व में वैसो दूसरा न होय तौ हमारो बाण मेघनाद का शिर काटि लेइ सो मेघनाद को शिर काटि लियो औ भागवतहू में है ॥ ध्येयं सदापरिभवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदंशिवविरंचिनुतंशरण्य भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं वंदेमहापुरुषतेचरणारविंद १ अर्थ हे महा पुरुष तिहारे चरणारविंद की हम बंदना करे हैं कैसे तिहार चरणारविंद हैं कि सब कालमें ध्यान करिबेके योग्य हैं औ परिभव जोतिरस्कार ताके नाश करने वालेहैं अर्थात् जो कोई ध्यान करैहै ताको तिरस्कार लोक में कोई नहीं करैहै औ मनो बांछित पूर्ण करनेवाले तीर्थ जे हैं तिनके आश्रय भूत औ शिव विरंचिते स्तुति करे गये शरण्यं कहे रक्षा करने में समर्थ औ दासनके पीड़ा हरणवाले दीनन के पालनवाले औ संसार समुद्र के नौका रूप तामें प्रमाण कबीर जीको ॥ साहब कहिये एकको दूजा कहा न जाय। दूजासाहब जो कहै बादवितंडै आय ६ ॥ इतिछठवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथ सातवीं रमैनी ॥

चौ० जीवमुख–जहियाहोतपवननहिंपानी।तहियास्टष्टिकौनउतपानी१
तहिया होत कली नहिं फूला। तहिया होत गर्भ नहिं मूला २
तहिया होत न बिद्या वेदा। तहिया होत शब्द नहिं खेदा ३
तहिया होत पिंडु नहिं बासू। नाधर धरणि न गगन अकासू ४
तहिया होत गुरूनहिं चेला। गम्य अगम्य न पंथ दुहेला ५
साखी॥ अविगति की गति क्या कहौं जाकेगाउं न ठांउ ॥
गुण विहीना पेखना का कहि लीजै नांउ ६

चौ० जहियाहोतपवननहिंपानी। तहियासृष्टिकौनउतपानी १
तहियाहोतकलीनहिंफूला। तहियाहोतगर्भनहिंमूला२

जहिया कहेजेहि समय स्टष्टिनहीं रही जेहिसमयनपवननरह्यो न पानी रह्यो तब स्टष्टिको कौन उत्पन्न कियो १ न तब कली रही न फूल रह्यो अर्थात् न बालरह्यो न वृद्धरह्यो न गर्भरह्यो न गर्भको मूलबीजरह्यो२ ॥

चौ० तहियाहोत न बिद्यावेदा। तहियाहोत शब्दनहिंखेदा ३
तहियाहोतपिंडनहिंबासू। नाधरधरणिनगगनअकासू ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तहिया होत गुरूनहिंचेला । गम्य अगम्यन पंथदुहेला ५

न वेदरह्यो न चौदहौ बियारहीं न शब्द रह्यो ना खेदकहे दुःखरहो३ न पिंडरह्यो न पिंडमें जीवको बासरह्यो न अधरकहे पाताल रह्यो ना धरणिहो न आकाश रह्यो ४ न गुरूरह्यो न चेला रह्यो न गम्य कहेस-गुण रह्यो न अगम्य कहे निर्गुणरह्यो औदुहेला कहे दूनौपंथ नहीं रहे ५ ॥

साखी ॥ अविगतिकीगतिक्याकहौं जाकेगाउंनठांउ ॥
गुण बिहीना पेखना का कहि लीजै नांउ ६

वहजो अविगति कहे अव्यक्त जो नहीं प्रगट होयधोखा ब्रह्महै निरा-कार ताकेगाउं ठांउ नहीं है वह गुणकरिकै बिहीन जो निर्गुणहै ताको पेखना कहे देखिबेको काकहिकै नामलीजै कि यहहै वातो कुछ वस्तुही नहीं है ६ ॥ इति सातवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ आठवीं रमैनी ॥

चौ० तत्व मसीइनके उपदेशा । ईऊप निषद कहै संदेशा १
ऊनिश्चय उनके बड़भारी । वाहिकिबर्णकरै अधिकारी २
परमतत्वकानिजपरमाना । सनकादिक नारद सुखमाना ३
याज्ञवल्कि औजनक संवादा । दत्तात्रयी वहै रसस्वादा ४
वहै वसिष्ठ राममिलिगाई । वहै कृष्ण ऊधव समुझाई ५
वहैबात जोजनक दृढ़ाई । देहै धरे विदेह कहाई ६
दो० साखी ॥ कुल अभिमानाखोयकै जियत मुवानहिहोय ॥
देखत जो नहिं देखिया अदृष्ट कहावै सोय ७

चौ० तत्वमसीइनकेउपदेशा । ईऊपनिषदकहैसंदेशा १

तौनैधोखा ब्रह्मको जौनीरीति ते गुरुवालोग उपनिषदको प्रमाण दैकै प्रतिपादन करैहैं सो औसांचजो अर्थहै सोकबीरजीदोऊ तात्पर्य्य करिकै दखावैहैं तत्व मसी जो श्रुति उपनिषदको उपदेश ताको गुरुवा लोग संदेश ऐसो कहैहैं संदेश कौन कहावै है किबातको पूर्वापर नहीं समुझै वाकी कहनूति वासों कहिदेइ जो संदेश को हेतु पूछै कि कौने हेततेक-ह्योहै तोवह कहैहैं कि संदेश कहिदियो यह नहीं जानैहैं किकौनहेतुतेकह्यो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है सो ऐसे गुरुवा लोग श्रुतिको तो पूर्वापरजानै नहीं हैं अक्षर मात्रको अर्थ करैहैं कि तत्व ब्रह्मत्व असि तौन ब्रह्मत्वही है सो जीवहीको अनुमान तो ब्रह्महै जीव ब्रह्मकैसे होयगो ब्रह्मतो ज्ञान स्वरूप है शुद्ध है मायाकैसे धरिलावती अज्ञानी कैसे होतो तौगुरुवालोग कहैहैं को वा अतर्क है तर्क न करो सो श्रुतिकोअर्थ यहहै कि पूर्वषोडश कलात्मकजीव को कहि आये हैं ताहीको कहैहैं कि त्वंअसितौन षोडश कलात्म जीवते है षोडश कलातोही मेंहैं तो उनते भिन्नहैं शुद्धहै यह जीवको स्वरूप लखायो सो नहीं समुझैहै सो या बातमेरे तत्वमस्यार्थ वादमें बिस्तारतेहै १ ॥

चौ० ऊनिश्चयउनकेबड़भारी। वाहिकिबरणकरैअधिकारी २

ऊकहे वहजो धोखा ब्रह्महै ताहीकी निश्चय उनके बड़ी भारीहै वाही की बरण कहे वही धोखा ब्रह्मको अधिकारी जे चेलाहैं तिनको बर्ण करै है अर्थात् अंगीकार कराइदेइ है परम तत्वजे श्रीरामचंद्रहैं तिनको नहीं जानैहै जे जानेहैं तिनको कहैहैं २॥

चौ० परमतत्वकानिजपरवाना। सनकादिकनारदसुखमाना ३
यागबक्यऔजनकसँबादा। दत्तात्रेयीवहै रसस्वादा ४

परमत्व जेहैं श्रीरामचन्द्रहैं तिनको निजते परमानत भये याही हेतु ते सनकादिक औ नारदजेहैं तेसुखजानतभये अर्थात् सुखीहोतभये भावयह है किजेकोई परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको अपने तेपरमानैहैं तेईसखी होयहैं ३ औ फिरि कहैहैं यागबल्क्य औजनकको सम्बाद भयोहै सो यागवल्क्य कह्योजो परमतत्व श्रीरामचन्द्र सो जनकजी जान्योहै औवही तथ्य दत्तात्रयी चौबीसगुरूबनाय संसार ते बैराग्य कैकैतात्पर्य्य वृत्तितेजान्योहै ४॥

चौ० वहै बशिष्ठराम मिलिगाई। वहै कृष्ण ऊधवसमुझाई ५
वहैबातजो जनक दृढ़ाई। देहैं धरे बिदेह कहाई ६

वही परमतत्वजे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकोमिलिकै गायकहे कहिकै बसिष्ठ जीजान्योहै औ वही परमतत्व तात्पर्य्यवृत्ति करिकै कृष्णचन्द्र ऊधव को उपदेश कियोहै५ वही परमतत्वजे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको दृढ़स्मरण कैकै देहै धरे जनकजी बिदेह कहावत भये इहांद्वै जनक जोकह्यो सोवाबंश में एकजनक नामकरिकै राजाभयेहैं तेहिते बिदेह होत आये ६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साखी ॥ कुल अभिमानाखोयकै ज़ियतमुवा नहिंहोय ॥
देखत जोनहिं देखिया अदृष्ट कहावे सोय ७

ऐसेजे परमतत्व श्रीरामचन्द्रहैं तिनको जानि आपनो कुलाभिमानखोय कै कहे त्यागिकै जियतै मुआ असनाभये अर्थात् हंस स्वरूप मेंटिकिकै पांचौ शरीरते भिन्न ना भये औदेखत जो नादेखै सो अदृष्टि कहावै सो परमत्व जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको बेदपुराण कुरान शास्त्र महात्मा इनके द्वारा देखत-ऊहैं औजिनकोबर्णनकरिआये सनकादिक महात्मनको उद्धारह्वै गयो यहौ देखतऊहैं समस्त दृष्टिते परन्तुये मूर्खजीव गुरुवालोग ना जाने तेहिते अदृष्टिकहावैहैं कहे आंधरेकहावैहैं परमतत्व श्रीरामचन्द्रहीहैं तामेंप्रमाण॥ रामएवपरंतत्वं श्रीरामोब्रह्मतारकम् ॥इतिहनुमतोपनिषदे जो यहकहौ शु-कसनकादिक येऊ न जान्योतौ अबको जानैगो नास्तिक पना आवै बस्तु मिथ्याहोयहै तातेसाधुतौ जानतईहैं जिनको साहब जनायदियोहै कबीरौ जीकहैहैं॥ध्रुवप्रहलाद उबारियासो हरि हमरेसाथ। हंमकोशंका कछुनहीं हमसेवैश्रीरघुनाथ ७ ॥ इति आठवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ नवीं रमैनी ॥

चौ० बांधे अष्ट कष्ट नौ सूता । यम बांधे अंजनिके पूता १
यमकेबाहनबांधिनिजनी । बांधे सृष्टि कहां लौ गनी २
बांधे देव तेतीस करोरी । सुमिरत बंदि लोहगै तोरी ३
राजा सुमिरैतुरिया चढ़ी । पथी सुमिरि नाम लै बढ़ी ४
अर्थबिहीना सुमिरैनारी । परजा सुमिरै पुहुमी झारी ५
साखी ॥ बंदि मनाय फल पावही बंदि दिया सो देव ॥
कह कबीर तेऊबरे निशि दिन नामहि लेव ६

चौ० बांधेअष्ट कष्टनौ सूता । यम बांधे अंजनि के पूता १

अष्टजे अष्टांग योगहैं औकष्टजो बिज्ञानहै तेहिते बांधि गयो धोखाब्रह्म को बिज्ञानरूप कष्टहै तामेंप्रमाण॥अव्यक्ताहिगतिर्दुःखंदेहवभिरवाप्यते ॥ इतिगीतायां ॥ श्रेयःश्रुतिभक्तिमुदस्यतेविभो क्लिश्यन्तियेकेवलबोधलब्ध ये तेषामसौ क्लेशलएवशिष्यते नान्यंयथास्थूलतुषावाद्यतिनाम् ॥ इति भागवते औनौ सूतकहे सगुना जो नौवा भक्तिहै तेहिकरिकै बांधि गयो औ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमकहे दुइविद्या औ अविद्या तेहिकरिकै अंजनीजो मायाताके पूतजे जीव हैं तेसव बांधि गये १॥

चौ० यमकेबांहनबांधिनिजनी। बांधेसृष्टि कहांलों गनी २
बांधे देव तेतीस करोरी। सुमिरतबंदिलोहगैतोरी ३

औयमजे विद्या अविद्या दूनौंमाया हैं तिनके सबजीव बाहनभये काहे ते कि उनहीं को ढोवनलगे उनहीं के चालचलन लगे औ वेजे दूनौ माया हैं तेबांधिनिजनी कहे फेरि फेरि जीवनको उत्पन्नकरिकै संसार दैकै बांधि लिये औ शीशमें चढ़ीरहती हैं सो अनादि कालते बँधीजो सृष्टि ताको कहांलौं गनी २ तेतीस कोटिदेवता बांधिगये तिनको सुमिरत मात्रही में बंदिकहे लोहेकी बेड़ीमें परिके तोरीकहे मारेगये अथवा तेतीसकोटि देवता बांधिगये तिनके सुमिरतमें का बन्दिलोहेकी बेरी जीवतोरि गये नहीं तोरिगये ३॥

चौ०राजासुमिरै तुरियाचढ़ी। पंथी सुमिरि नामलै बढ़ी ४
अर्थबिहूना सुमिरै नारी। परजा सुमिरै पुहुमीझारी ५

तुरीया अवस्था को नामहै तामेज्ञानीलोग चढ़ीकहे आरूढ़ह्वै कै राजित होयहैंताहीते राजाकहेहैं तेअहंब्रह्मको सुमिरैहैं औ पंथीजेअनेकपंथचलावनवालेहैं तेनाना मतके पंथमें आरूढ़ ह्वै अपनेअपने इष्टदेवनके नामलैकै साधन मेंबढ़ेहैं सोयहौ बिरहीहैं ४ अर्थ बिहीना कहे अर्थजोहै द्रव्य ताको बैराग्यते त्यागि बनमें बसिकै अपने इष्टदेवनको सुमिरैहैं तेऔपरजोब्रह्महै तामें जोजायोचाहैसारी पुहुमी सहित सुमिरैहै अर्थात्सर्बत्र ब्रह्मही देखैहै तेयेदोऊ सगुणनिर्गुणउपासक नारी जोमायाहै ताहीकोसुमिरैहैं काहैते कि जहांलौं मनजायहै तहांलौं सबमायाहै ५॥

साखी॥बंदि मनायफलपावहीं बंदि दिया सोदेव॥
कह कबीरते ऊबरे निशिदिन नामहिलेव ६

बंदिकहे विद्या अविद्या रूपजोबेरी ताको जेमनावैहैं तेतौनै फलपावैहैं अर्थात् जेस्वर्गादिककी चाह करैहैं तेलोहेकी बेरीमें परे जे अहंब्रह्मास्मि मानेते सोनेकी बेरीमें परे सोजौने इष्टदेवतनको मनाये सो बन्दीही फल देतभये अथवा बन्दिमें नाय कहे बन्दि में डारिदियेहैं तेई फल पावै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं अर्थात् स्वर्गादिक जेफलहैं तेसब बंदिमें डारनवारेहैं सोबंदिडारनवारो जेफलदेयहैं तेकादेवहैं नहीं हैं देवसो कबीरजीकहेहैं कि जे श्रीरामचन्द्र को नाम निशि दिनलेयहैं तेई उबरैहैं ६ ॥ इति नवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथ दशवीं रमैनी ॥

चौ० राही लैपिपराही बही । करगी आवत काहु न कही १
आई करगी भोअजगूता । जन्म जन्म यम पहिरे बूता २
बुतापहिर यमकरैपयाना । तीन लोक में कीन समाना ३
बांधे ब्रह्मा बिष्णु महेशू । पार्वती सुत बांध गणेशू ४
बंधे पवनपावक नभनीरू । चंद्र सूर्य्य बांधे दोउ बीरू ५
सांच मंत्रबांधे सबझारी । अमृत वस्तु न जानै नारी ६
साखी ॥ अमृत वस्तु जानै नहीं मगन भये कितलोग ॥
कहहिं कबिर कामो नहीं जीवह मरण न योग ७

चौ० राहीलैपिपराहीलेही । करगीआवत काहुनकही १

राहीकहे सुराहके चलनवाले औपिपराही कहेपीपरकी बनिकाकी नाई अनेकमतिमें डोलनवाले जेजीव ते राहीजेहैं तिनहूं को लैकै संसारसागरमें बहतभये करगी बूड़ाको जलजो छिटकैहै ताकोकहेहैं सो यहमाया ब्रह्मको जो धोखारूप बूड़ाहैताके आवत्तमें कहू न कही कियाधोखा ब्रह्ममें नपरो बूड़िजाउगे १ ॥

चौ० आई करगीभो अजगूता । जन्मजन्म यमपहिरेबूता २

जबकरगी आईतब अयुक्तिहोतभई कैसीभई की जन्मजन्म कहे चब जब ब्रह्मांडनकी उत्पत्तिभई तब तब यमपहिरे बूताकहे यमको काल निरंजन जेहैं तिनको बूताकहे पराक्रम कालपहिरत भयो अर्थात् काल तो जड़ है निरंजनैको पराक्रमलैकै जीवनको मारैहै २ ॥

चौ० बुतापहिरि यमकीनपयाना । तीनिलोकमो कीनसमाना ३
बांधेब्रह्मा बिष्णु महेशू । पार्वती सुतबांधि गणेशू ४
बधेपवन पावक नभ नीरू । चंद्रसूर्य्य बांधेदोउ बीरू ५

वहीनिरंजन को बुताकहे पराक्रम काललैकै पयानकियो सो लव दिन पक्ष मास वर्ष युग कल्परूप करिकै तीनलोकमें समाइ जातभयो ३ जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल तीनलोकमें समानो ताहीमें ब्रह्मा बिष्णु महेश षटमुख गजमुखादि आयुर्दाय प्रमाण रूपते सब बँधतभये ४ अरुताहीमें पवन औ पावक औ पानी औ चंद्रसूर्य्य नभ सब बँधतभये ५ ॥

चौ० सांचमंत्र सब बांधे झारी । अमृत बस्तु न जानै नारी ६

झारा दैकै जे साहबके सांचमंत्रहैं तिनहूं को काल बांधिलियो काहेते कि जो साहबके मंत्रको अर्थ प्रभाव औ साहबको ज्ञानरूप अमृत बस्तु नारी जो आवर्णकैलियो माया तामेंपरे जेजीवते न जानैं जो जानैंगे तौहमारे मारे न मरैंगे याही हेतु ते बांध्योहै ६ ॥

साखी ॥ अमृत बस्तु जानै नहीं मगनभयेकित लोग ॥
कहैंकबिरका मोनहीं जीवहमरन न योग ७

अमृत बस्तु जो साहबहै ताको तो नजान्यो कौनेकुत्सितसंसारमें तूमगनभयो कौन साहब जो कामोनहीं अर्थात् कामे नहीं है सबहीमेंहै सो ऐसो अमृत बस्तु साहब समीपईहै वा जीवका जननमरण योग है अर्थात् नहीं है व्यंग्यतेयाकहैहैं कि जीव महामूढ़है अथवा जिनको सांचमंत्रमाने रहे ते तो सब बांधिगये अमृत बस्तु जो रामनामको साहब मुखअर्थ सोजानतही नहीं है याते जनन मरण न छूटतभयो ७ इतिदशवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथ ग्यारहवींरमैनी ॥

चौ० गुरुमुख ॥ आंधर गुष्टि स्टष्टिमैं बौरी । तीनिलोक महँलागिठगौरी १
ब्रह्महि ठग्यौ नागसहारी । देवनसहित ठग्यो त्रिपुरारी २
राज ठगौरी बिष्णुहि परी । चौदह भुवन केर चौधरी ३
आदि अतजेहि काहु न जानी । ताको डर तुम काहे मानी ४
ऊ उतरा तुम जाति पतंगा । यमघर किहेहु जीव कै संगा ५
नीम कीट जस नीमपियारा । बिषको अमृत कहै गँवारा ६
बिषके संग कवन गुण होई । किंचित लाभ मूलगो खोई ७
बिष अमृत गो एकहि सानी । जिन जाना तिन बिषकै मानी ८
कहां भये नल सुध बेसूझा । बिनपरचै जग मूढ़ न बूझा ९
मतिके हीन कौन गुण कहई । लालच लागे आशा रहई १०
साखी ॥ मुवा अहै मरिजाहुगे मुये कि बाजीढोल ॥
स्वप्न सनेही जगभया सहिदानी रहिगा बोल ११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौ० आंधर गुष्टि सृष्टिभै बौरी। तीनलोक महँलागिठगौरी १

साहब कहैहैं कि जेमोको ज्ञानदृष्टि करिकैनही देखैहैं ते जे आंधरहैं ते माया औनिराकार धोखा ब्रह्मयाहीकी गोष्टीजो बार्ता सो करते भये ताही में सारीस्टष्टि बौरी ह्वै जातभई कोईतौ मैंही ब्रह्महौं यह मानि अपने को मुक्तमानत भये कोई मायामें परि नाना देवतनकी उपासना करि अपनेको मुक्तमानत भये कोई जीवात्मैको मानै कोई सुन्निन को मानतभये सो यहीठगौरी जो मायाहै सोतीनोलोकमें लागतभई सो आगेकहैहैं १ ॥

चौ० ब्रह्महिठग्योनाग संहारी। देवन सहितठग्योत्रिपुरारी २
राजठगौरी विष्णुहि परी। चौदह भुवन केर चौधरी ३

शेषनागको संहारिकै कहेबांधिकैंमायाब्रह्माको ठग्योते संसारकी उत्पत्तिकरनलगे नागकह जाईजो पाठहोयतौ माया ब्रह्माको ठगिसि औशेष ना कहँजाइकै ठगिसि सो शेषनाग पथ्वीको भारशीश में धरतभये देवन सहित महादेव को ठग्यो ते संसारके संहारमें लगे देवता अपने अपने काम में लगे २ औ चौदह भुवन को चौधरी बिष्णुको करिकै ठग्यो ते संसारको पालन करनलगे याहोरीतिते मायातेजे गुणाभिमानी रहेतिनको सबको ठग्यो ३ ॥

चौ० आदिअंत ज्यहिकाहुनजानी। ताकोडरतुमकाहेनमानी ४

फिरिकैसीहै माया जाकोआदि अंतकोई जनयई न कियो काहेते नजान्योवा कुछवस्तुही नहीं है भ्रमहीमात्रहै जेतो पदार्थ देखैहै सुनैहै कहैहै सो सबत्रिगुणमयहै गुणना आत्मईमैंहै न ब्रह्महीमैंहै तातेयेसब मिथ्याहीहैं औ धोखाब्रह्ममिथ्याहै कैसेसोकहैहैं सबको निराकरण करतकरत जो वारहिजायहै ताहीको मानौहौं कि सो ब्रह्महमहैं ताहूको मलअज्ञान कहौं सो जब सोऊ न रह्यो तब वह दशामें बिचारिदेखो तुमही रहिजाउ हौ तुम्हारोई अनुमान ब्रह्महै तातेमिथ्याहीहै जब तुम्ही रहिगये तब तुम मैंतो माया ब्रह्मते छूटनेकी सामर्थ्यहै नहीं जो सामर्थ्यहोती तो तौपहिले होते तुमको काहेको बांधिलेती याते तुम डेराउहौ किहमकैसेकै छूटैंगे सो यामाया औधोवा ब्रह्मकाडर तुमकाहेको मानतेहो मैं जोअनिर्वचनीयहौं ताके तुमअंशहौ तुमहूं अनिर्वचनीय हौ नाहक धोखा ब्रह्म औ मायाको अनुमानकैकै नानादुःख पावतेहौ तुममाया ब्रह्मको भ्रमत्यागिमेरे अनि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचनीय नाममें लगिकैमेरे पासआवो मेरेक्षाकरिलेउंगो यह मालिक जे श्रीरामचन्द्रहैं ते कहैहैं ४॥

चौ० ऊडतंग तुम जाति पतंगा। यमघर किहेहु जीवकैसंगा ५
नीमकीट जसनीम पियारा। बिषकोअमृतमान गँवारा ६

वह जो माया औ धोखा ब्रह्म अग्निरूपताकी उतंगकहे बड़ीऊंचीलपटैं हैं तुमजातिके पतंग हौ कै वामेंकाहे जरिजरि मरौहौ सोहेजीव नानावस्तु नकोसंगकरि जाहीमें मनलगायमरचो औसोई भयो याही भांतिजनमिकै मरिकै यमके पासघरबनायेहौ अर्थात् यासंग का प्रभावहै जो यमके यहां घरबनायेहैं ५ जैसे नीमके किरवाको नीमही पियार लगै है जो मिष्टान्नौ पावै तौ न खाय ऐसे बिषरूप जो विषय ताको अमृत मानि गँवार जो जीवहैं सो खायहैं ६॥

चौ० विषकेसंग कौनगुणहोई। किंचित्लाभमूलगोखोई ७
विषअमृतगोएकहिसानी। जिनजानातिनबिषकैमानी ८

सो याविषरूपी विषयके संग कौनगुणहै क्षणभरेको सुखहै औ सबको मूल जो मेरोज्ञान सो नशायगो अनेकजन्म दुखपावनलग्यो ७ साहब कहैं हैं कि और नाना देवतन को जो नाम जपिबो औ तिनहीं के लोक में जाय सुख पाइबो यातो विषहै औ मेरेनामको जपिबो मेरे लोकमें जाय सख पाइबो यातो अमृतहै सोयेदूमौं विष अमृत एकै में सानिगो कैसे जैसे साहबको नाम लीन्हे मुक्त ह्वै जाय है साहबके लोकमें जाय सुख पावैहै ऐसे औरहू देवतनके नाम लीन्हे से मुक्तह्वै जायहै औ तिनके लोकमें जाय सुखपावैहै वास्तव एकही नाम भेदते और और कहैहैं या भाँतिते जे ज्ञान राखेहैं तिनके ज्ञानको मेरे अनिर्वचनीय नामरूप धामके जे जनैया हैं तिनके ज्ञानको ते विषही मानैहैं ८॥

चौ० कहाभयेनलसुधबेसूझा। बिनपरचै जगमूढ़ न बूझा ९
मतिकेहीनकौनगुणकहई। लालचलागेआशारहई १०

ऐसे बे सूझ जीव जिनको नहीं सूझपरैहै ते कहां शुद्धभये नहीं भये मैं जो अनिर्वचनीय ताके परचै बिना जगमें मूढ़जीवो तुम न बूझत भयो ९ सो ऐसे मतिकेहीन जे तुम तिनके कौनगुण कहैं लालचई में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लागेरहे हैं काहूको द्रव्यकी आशा काहूको ब्रह्मज्ञानकी आशा काहूको नाना देवतन की आशा काहूको विषयकी आशा में फिरै है सांचजो वेद को अर्थमैं ताको न जानत भये १० ॥

साखी ॥ मुवा अहै मरिजाहु गे मुयेकि बाजीढोल ॥
स्वप्नसनेहीजगमयासहिदानीरहिगाबोल ११

साहब कहेहैं कि हे जीवौ मुवा जो धोखा ब्रह्म नानादेवता तिन में जो लागौगे तो मरिजाहुगे अर्थात् जनमतै मरत रहौगे यातुम्हारे मुयेकी ढोल जो वेदपुराण हैं सो बाजैहै कहे कहै हैं तब तुम्हारा इष्टदेवन को स्नेह औ सब सुख जगत् को सपन ऐसा ह्वै जायगा ये सब मुयेहैं ये वेदपुराण तात्पर्य्यते डंका दै के कहैं हैं अथवा जो गुरुवा लोग ब्रह्म को नाना देवतन में लगावैं हैं सो सब संसार में मुये की ढोल बाजैहैं मरि जाहुगे जो यामें लागौगे तो तुम्हारी सहिदानीबोल रहिजायगा बोल कहाहै जे तुम अपने इष्टदेवनके ग्रन्थ बनाय जावगे तेई रहिजायँगे कि फलाने के बनाये ग्रन्थहैं कालपाय वोहू न रहिजायँगे अथवा सहिदानी बोल रहिजायगा कौन जौन मेरे रामनाम को संसार मुख अर्थ करि संसारी भयोहौ सोई जगत्की सहिदानी मेरोनाम रहिजायगो ताहीको फेरि संसारमुख अर्थ-करि संसारी होउगे जब नाम में मोको जानोगे तबहीं मुक्त होउगे ११ ॥
इति ग्यारहवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ बारहवीं रमैनी ॥

चौ० माटी क कोट पषानक ताला । सोई बनसोइ रखने वाला १ ॥
सोबन देखत जीव डेराना । ब्राह्मण बिष्णुएक करि जाना २ ॥
जारि किसान किसानी करई । उपजै खेत बीज नहिं परई ३ ॥
त्यागि देहु नर झेलिक झेला । बूड़े दोऊ गुरु अरु चेला ४ ॥
तीसर बूड़े पारथ भाई । जिन बन दाह्यो दमा लगाई ५ ॥
भूं कि भूं कि कूकुर मरि गयऊ । काज न एक स्यारसोंभयऊ ६ ॥
साखी ॥ मूसबिलारी एकसँग कहु कैसे रहि जाय ।
यक अचरज देखौ हो संतौ हस्ती सिंहहिखाय ७ ॥

चौ० माटीककोटपषानकताला । सोईबनसोइरखनेवाला १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माटी का कोट यहशरीर है पषान का ताला है कठिन. भम जौनेते माया औधोखा ब्रह्म में लग्योहै सोईभम के बनको नाना बाणी माया ताको रक्षक सोई भ्रमही है जबभ्रम मिटै तब माया धोखा ब्रह्म तबहीं मिटै संसार ताला खुलै तब मै सर्बत्र देखे परौं १ ॥

चौ० सोवनदेखतजीवडेराना । ब्राह्मणविष्णुएककैजाना २

तौन जो भ्रमको बन नानाशास्त्र तिनके नाना मतनमें तुमसब नहिं पार पाये कि कौन मत लैकै संसार पार होइ ये शास्त्र एक मत नहीं कहै हैं तब डेराय ब्राह्मण भये ॥ ब्रह्मजानातिब्राह्मणः ॥ एक व्यापकतुमसब विष्णुही को मानत भये व्याप्य पदार्थ न मानत भये सो हेजीवो जो व्याप्य पदार्थ न होयगो तो व्यापक कामें होयगो ताते एक मानिबो धोखई है अथवा ब्राह्मण जे हैं ब्रह्मज्ञानी औ वैष्णव जे हैं विष्णु के दास तौनेके एकै मानत भये कि दास भाव करत करत जब अतष्करण शुद्ध होइगो तब अभेदई भाव होइगो काहेते कि देवहैं कै देवता को पूजा करिबेको होइहै यह शास्त्र में लिखाहै ताते हम विष्णुही ह्वै जाइगे तौने दृष्टांत देइहैं कि बड़े तौ बनैहै बड़े रखवार तौ कैसे पूरपरै माया ब्रह्म ईश्वरई सब मनके कल्पितहैं मनैहै औ यही मनको रक्षक मानै अथवा ब्रह्मज्ञान को रक्षक मानै है सो वही तो भ्रम है औ वही को रक्षकमानै है सो कैसे पूरपरैगो २ ॥

चौ० जोरिकिसान किसानीकरई । उपजैखेत बीजनहिंपरई ३

जैसे सिगरी सामग्री जोरि किसान किसानी करै है जौन बीज खेतमें बोवैहै सोई उपजैहै तैसेहे जीवौ तुम सबनाना बाणीको बिस्तार करि नाना मतन में लाग्यो सोई फल भयो मेरो जो रामनाम बीजसो-तौ खेत में परबई न कियो मेरोज्ञान फल कहां ते होय ३ ॥

चौ० छांड़िदेहुबन झेलिक झेला । बूड़ेदोउ गुरू अरुचेला ४
तीसर बूड़ेपारथ भाई । जिनबन दाह्यो दवांलगाई ५

सो हे नरौ झेली का झेला तुम छांड़ि देहु धोखा ब्रह्म में लागि कै तुम माया को झेला चाहौ हौ माया तुमहीं का झेलै है या नहीं जानौहौ कि धोखा ब्रह्म माया सबलित है तहीं माया के धारमें गुरु जे तुम को उप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश किये तऔ तुम दोऊ बूड़े ४ पृथुबिस्तारे धातुहै अपने ज्ञान दवाग्नि को बिस्तार कैकै अपने सेवकन कैजे बनरूप कर्म जारिअपने लोकनको लैगये ऐसे जे इष्ट देवता जिनको गुरुवालोग उपदेश करैहैं सो हे भाई तीसर तेऊ माया के धारमें बूड़ कहेते महाप्रलय में वोऊ नहीं रहिजायँ ५ ॥

चौ० भोंकिभोंकिकूकुरमरिगयऊ । काजनएकस्यारसोंभयऊ६

हे नरौ जैसे कूकुर शीश के महलमें आपना रूप देखि भोंकि भोंकि मरिजायहै तैसे तुम्हारोई अनुभव जो धोखा ब्रह्म तामें लागि भोंकिभोंकि कहे शास्त्रार्थ करिकरि जन्मत मरत रहौहौ स्यार जो बाणी ताते एकौ काज नहीं भयो अर्थात् जौने बाणीके देखाये प्रतिबिंबदेख्यो अनुभव ब्रह्ममान्यो तौनेके काज न भयो जनन मरण न छूट्यो अथवा हे जीवो तुम जे कूकुर हौ ते स्यार शिवा भवानी रुद्राणी अमर में लिखे हैं अथवा अहं ब्रह्म अहंब्रह्म अहंईश्वरः अहंभोगी अहंसिद्धः अहं बलवान् अहंसुखी इहै भोंकै है तामेंप्रमाण ॥ ईश्वरो हमहंभोगी सिद्धोहं बलवान्सुखी ॥ इत्यादिक रूप जो वाणीहै ताको देखि देखि भोंकतेहौ कहे पढ़ते हौ वा स्यार रूप बाणीके धरिबेकोतौ भोंकि भोंकि तुमहीं मरिगये स्यार ते कार्बन भयौ अर्थात् स्यार रूप जोबाणी सोतुम्हारीधरी न धरिगई वाको तात्पर्य्यार्थ कोधनजानत भये रूपजो बाणी मोमें वृत्तितौनहीं राखौहौ अपने जानपनी को घमण्ड राखोहौ ताते माया ते न छूटे ६ ॥

साखी ॥ मूस बिलारी एक संग कहु कैसे रहिजाय ॥
अचरज एक देखौहो संतौ हस्तीसिंहै खाय ७

हेनरौ मूसजे तुमहौ तिनको बिलारी जो माया है सो कैसे न खाय एक संग तो रहौहौ सो कैसे बिनाखाये रहिजाय सोहेसंतो एकआश्चर्य्यऔर देखो तुम जे जीवहौ तेतौ सिंहहौ तिनको जो हाथी धोखा ब्रह्महै सो खाय लेयहै जो मोको तुम जानौ तौ तुम सिंहही बनेहौ तुमसबधोखा मिटावनवारेहौ ७ ॥

इति बारहवीं रमैनीसमाप्तम्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ तेरहवीं रमैनी॥

चौ० गुरुमुख—नहिंपरतीतिजोयहिसंसारा। द्रव्यकचोट कठिनकोमारा १
सोतौ शेषै जाय लुकाई। काहू के परतीति न आई २
चले लोग सब मूलगँवाई। यमकी बाढ़िकाटिनहिंजाई३
आजुकाजजियकालिहअकाजा। चले लादि दिगंतर राजा ४
सहज बिचारत मूल गँवाई। लाभतेहानि होयरे भाई ५
ओछी मती चंद्रगो अथई। त्रिकुटी संगम स्वामीबसई ६
तहँहीविष्णु कहासमुझाई। मैथुनाष्ट तुमजीतहु जाई ७
तबसनकादिक तत्वबिचारा। ज्यों धनपावहि रंकअपारा ८
भोमर्य्याद बहुत सुखलागा। यहि लेखे सबसंशयभागा ९
देखत उत्पति लागु न बारा। एक मरै यककरै बिचारा १०
मुये गये की काहु न कही। झूठी आश लागिजबरही ११
साखी॥ जरत जरत सेवाचहू काहे न करहु गोहारि॥
विषविषयाकैखायहूरातिदिवसमिलिझारि १२

चौ० नहिंपरतीतिजो यहिसंसारा। द्रव्यकचोटकठिनकोमारा १

साहेब कहैहैं यह तो उपदेश हमकरते हैं तुमसब को परतीति जो नहीं आई सोयहि संसारमें पृथ्वी अपतेज वायु आकाश दिशाकाल मन आत्मा को धोखा ब्रह्मई नवौ द्रव्यका चोट कठिन कौन मार्‌यो तुमकोजातेतुमया मार्‌यो को शरीर मैंहीहौं देवता मैंहीहौं ब्रह्म मैंही हौं सोतुम भूल गये नवौ द्रव्य मेराही शरीरहै ताको न जान्यो तुम तामें प्रमाण॥ खंवायुमग्निंसलिलंमहीं च ज्योतिष्मसत्वानिदिशोद्रुमादीन्॥ शरित् समुद्राश्चहरेशरीरं यत्किंचभूतप्रणमेदनन्यः॥ इतिभागवते॥ यआत्मनितिष्ठनयमात्मानवेदयस्यात्माशरीरनितिश्रुतिः १

चौ० सोतो शेषै जाय लुकाई। काहूके परतीति न आई २

साहेब कहैहे हेजीवौ चित अचित जगत् रूप जो मेरो शरीर तामें तुम द्रव्य बुद्धि कियेहौ सो त्यागि देहु यह मेरही शरीर कैकै देखौ तौ नित्यहै नहीं तो शेषहोतहो तब सबलुकाय जायहैं एक एक में लीनव्हैजायहैनिषेध करत करत तुमहीं रहिजाउहौं कि मैं रहिजाउहौं तब मैंतुमको हंसरूपदै आपने धामको लैआवौं हौं सोया जगत् मेरही शरीरहै यापरतीति तुमको काहूको न आई द्रव्यही बुद्धि मानते भये २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौ० चलेलोगसबमूल गँवाई। यमकीबाढ़ि काटिनहिं जाई ३

सबको मूल जो मेरो रामनाम ताको गँवाय कहे भूलिकै हेजीवो तुम सब नानापथ चलोहौ परंतु यमकहे दोऊ विद्या अविद्या रूप जो घोर नदी तिनकी बाढ़िजोहै धारा सो नाकाटी जायगी अर्थात् ना पैरी जायगी वाहीमें बूड़िजाओगे अथवा यम जोहै कालरूप ब्रह्म ताकी बाढ़ि जो वाणी जोएकते अनेक भईहै सो हेजीवो तुम्हारी काटी न काटी जायगी जो काटि पाठहोय तौयह अर्थहै विद्या अविद्या की दुइ नदी बाढ़ी तुम्हारे हियमें सो तुम्हारी काटी न काटि जायगी अर्थात् वाहीमें परेरहोगे अथवा चौदहौ जे यमवर्णन करि आयेहैं तिनकी बाढ़ि बढ़ीहै सो तुम्हारी काटी न कटैगी बिनामोको जाने ३॥

चौ० आजुकाजियकाल्हिअकाजा। चलेलादिदिगंतर राजा ४

हेजीवो अनिर्वचनीय जो मेरोनाम ताको जो आजु समुझो तौ कार्य्यहोयगोतिहारो औ जो काल्हिकहे शरीर छूटेमें समुझो चाहौ तौ अकाजहै नाजानैं कौनी योनिमें परौ फिरि समुझौ धौं ना समुझौ सो हेजीवो तुमतो राजाहौ मनमायादिक ये तुम्हारेही बनाये हैं सोतौ तुम भूलिगये चलेलादि कहे विद्या अविद्याके जेनाना कर्म तिनको अंगीकार करि अर्थात् वहै बोझा अपने माथेमें धरि दिगंतरमें जायनाना शरीर धारण करतहौ सो अबहूं मोको जानि तुम सबयहदुख त्यागो यह माया रूप धोखा वालेनको उपदेशदियो अब सहज समाधि वालेनकोकहैहैं ४॥

चौ० सहज विचारत मूल गंवाई। लाभतेहानिहोयरेभाई ५

सहजकहे सोहंस अहंयह प्रतिश्वास विचारत विचारत सबको मूल जोमेरो नाम ताको गँवायदियो अर्थात् भुलाय दियो सोहेजीवो तुमकोतौ धोखा ब्रह्मकी लाभ भई परंतु यहलाभते मेरे जाननेवाला जो ज्ञान ताकी हेभाइयो हानिहै गई अर्थात् नहीं प्राप्तभई ५॥

चौ० ओछी मति चंद्रमागो अथई। त्रिकुटी संगम स्वामी बसई ६

तबहीं विष्णु कहा समुझाई। मैथुन अष्टतुम जीतहु जाई ७

वीर्यकी उलटी गति करत करत ओछी मति कहे बुध्यादिक सूक्ष्महै थिरि ह्वै गई तब चंद्ररूपजो वीर्य्य सो अथैगयो अर्थात् उलटीगतिह्वै गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब दूनौं नेत्रको उलटिकै ध्यान लगाय प्राणके साथवीर्यको चढ़ायत्रिकुटी में जहां इडा पिंगला गंगा यमुना सरस्वती को संगमहै स्वामी बसैहै जहां पहुंचौहौ तब लक्ष्मीनारायण तुमसों कहैहैं कि अब ऊपर गैव गुफामें जायकै आठौ प्रकारके मैथुन जीतिलेहु अबै एंकही प्रकार जीत्योहै तब तुम वहां जाउहौ सो आगे कहैहैं ७॥

चौ० तब सनकादिक तत्व विचारा। जैसेरंक धनपाव अपारा ८
भोमर्य्याद बहुत सुख लागा। यहि लेखे सबसंशय भागा ९

सोजबगैव गुफामें ध्यान लग्यो जोतिमें मिल्यो तब सनकादिक कहे हेजीवौ तुम सब वाहीको सवस्यु तत्व विचारौहौ कैसे जैसे रंक अपार धन पायकै परम तत्व मानैहै ८ भोमर्य्याद ब्रह्मजो ज्योति तामें जब आत्माको मिलायोजोतिहीह्वै गयो यहीं तकमर्य्यादहै यामान्यो तबतमको वहुत सुख लागत भयो अर्थात् वाहीमें मग्नहोइ जाते भये सो तुम्हारे लेखे तो सबसंशय भागि गई परंतु संशय नहीं गई सो आगेकहैहैं ९॥

चौ० देखत उतपति लागुनबारा। एकमरैं यककरैंबिचारा १०

हे जीवौ तुम यादेखत हौ कि जो समाधि उतरी तो मनादिक उत्पन्न होत बारनहीं लगैहै तौ संसार कबै छूट्यो औ येहूदेखत हौ कि एकैमरैं हैं तिनको लाय आय गैवगुफा जरिगई औ फिरवही गैवगुफामें प्राण चढ़ाय मुक्ति को बिचारौ हौ अर्थात् मुक्ति चाहौहौ सो हे जीवौ तुम सब बिचारौ तौ जो समाधि सुख नित्यहो तो तौ कैसे मिटि जातो ताते नित्य नहीं है १०॥

चौ० मुयेगयेकी काहु न कही। झूंठी आश लागि जगरही ११

तुम्हारे गुरुवा लोग मरे मरिकै कहांगये कौनी गति को प्राप्त भये या निकास की बात तो काहू न कह्यो सो तौ तुम सबन बिचार्यो धोखा ब्रह्म होबेकी जो झूंठी आश ताहीमें तुम सब लागि रहेहौ मोको न जानत भये ११॥

साखी॥ जरत जरतसे बांचहु काहेन करहु गोहारि॥
बिष बिषया कै खायहु रातिदिवस मिलि झारि १२

प्रथम तो हे जीवौ नानायोनि नरक गर्भ वास के जठराग्नि में जरत जरत से बचेहु अर्थात् मोसों नानाप्रार्थना करि गर्भ वासते निकसे सो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भवास को दुःख तौ तुमको भूलिगयो औ जौन मोसों करार कियेरहौ सोऊ भूलिगयो विषरूपा जो विषय ताहीको रातिवदिन खायहु अर्थात् आरि विषयही भोगकीन्हों मेरी शरणको काहेन गोहरायो जेमेरी शरणको गोहरावैहैं तेईबचैहैं सो हेजीवो जबमेरीशरणको गोहरावौगे तबहीं बचौ गे मेरी या प्रतिज्ञा है जो कोई मेरी शरण को गोहरावै है ताको मैं बचायही लेउहौं गोहारि को अर्थ यहहै कि कोई हमारी रक्षाकरै सोसाहब शरणायेरक्षा करतही हैं तामें प्रमाण ॥ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीति चयाचते । अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद् व्रतम्मम १ इति वाल्मीकीये १२ ॥ इति तेरहवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ चौदहवीं रमैनी ॥

चौ० गुरुमुख ॥ बड़सो पापी आयगुमानी । पाषंडरूप छलो नरजानी १
बावनरूप छल्योबलिराजा । ब्राह्मणकीन कौनसोकाजा२
ब्राह्मणही सबकीन्होंचोरी । ब्राह्मणहीको लागी खोरी ३
ब्राह्मणकीन्हों ग्रंथ पुराना । कैसेहुकैमोहिं मानुषजाना ४
यकसे ब्रह्मा पंथ चलाया । यकसेहंस गोपालहिगाया ५
यक से शंभू पंथ चलाया । यकसे भूतपूत मन लाया ६
यकसे पूजा जौन बिचारा । यकसे निहुरिनेवाजगजारा ७
कोइ काहूकोहटा न माना । झूठा खसमकबीर नजाना ८
तनमनभजिरहु मेरे भक्ता । सत्यकबीर सत्य है बक्ता ९
आपुहि देव आपुही पाती ।आपुहिकुलआपुहिहैजाती१०
सर्व भूत संसार निवासी । आपुहिकुसुमआपुसुवरासी ११
कहते मोहिंभये युगचारी । काके आगे कहौं पुकारी १२
साखी ॥ सांचो कोइ न मानई झूठा के सँगजाय ॥
झूठेझूठा मिलिरहा अहमक खेहा खाय १३

चौ०बड़ोसो पापी आय गुमानी । पाषँड रूप छलो नरजानी १
बावन रूपछलो बलिराजा । ब्राह्मण कीनकौनकरकाजा २

साहब कहैहैं तैं बड़ोपापी है बड़ो गुमानी है काहेते कि मैं येतोसमझाऊंहौं तैं नहीं समझै है सो मैंजान्यो पाषंडरूप जो धोखा ब्रह्म तातेहे नर तम छले गये और जिनको छल्यो तिनको कहै हैं १ वहीमाया सब-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लित ब्रह्म बावन रूप करिकै बलिराजा को छल्यो है सो या ब्राह्मण जो माया सबलित ब्रह्म सो कौनको काज कीन्होंहै अर्थात् नहीं कीन्होहै२॥

चौ० ब्राह्मणही सबकीन्हो चोरी। ब्राह्मणहीको लागीखोरी ३

वहीब्रह्म सबकी चोरीकियोहै काहेते कि मायातो जड़है यह चैतन्यहै ब्रह्मही मायासबलित है मायहूको कर्ताकै मेरेसांचे ज्ञान को संसार में अकादिक पदार्थ बनाइ चोराइराख्योहै सो जब व्यापकरूप ते सबपदार्थ ब्रह्महीठहरयो औब्रह्महीके संयोगते मायाकर्ता भईहै तबब्रह्महीकोखोरि लगी कि वही सब करैहै ३॥

चौ० ब्रह्महि कीन्हो ग्रंथपुराना। कैसेहुकै मोहिंमनुष्यजाना४

वहीमाया सबलित जो ब्रह्महै ताहीते सब वेदपुराण निकसेहैं ताहीते नानामतभये कोई निराकार ब्रह्मही कोई चतुर्भुज कोई अष्टभुज इत्यादिमानतभये तुमसबसहुजोनिर्गुणकेसगुणपरे वेदपुराणको तात्पर्य्यताको जानिकै ऐसोमेरो मनुष्यरूप कैसेहुकैकहे जसतसकै कोई बिरलेसंतजानैहैं और नहीं जानैहैं अथवा मोको सब बातकेजनैया श्रीरामचन्द्र को सांचमनुष्य रूपहै तामें प्रमाण आत्मानंमानुष्यंमन्ये रामंदशरथात्मज॥ मिति और जे नानापंथ वेदतेनिकसे तिनको आगेकहैं अर्थ दशन्तिमया नितिदशः गरुडः सरथोयस्यसःदशरथः विष्णुःसएव आत्मजो यस्यसदृश रथात्मजः नं ४॥

चौ० एकसे ब्रह्महि पंथचलाया। एकसे हंस गोपालहिगाया ५

एकसेकहेएकजो माया सबलित ब्रह्मताहीको प्रतिपादन करत ब्रह्मैनाना शास्त्रके नानापंथ चलावतभये औ एकसेकहे एकजो माया सबलितब्रह्मताहीको बिचारकरत हंसजो जीवसो गोपालहि गावतभये अर्थात् गोजो इंद्रीताको पालनवारो जोमन ताही को गावतभये अर्थात् मनमुखी पंथ चलावतभये औब्रह्माने वेदकह्योहै वेदते सबमत निकसेहैं जीवनको जो जुदेकरिकै कह्यौ सोमेरे संमुखको जो अर्थहै ताको कृपाय दीन्हों वेद अर्थ नाना देवतन यज्ञादिमें लगाय दीन्हे ५॥

एकसे संभूपथलाया। एकसे भूतप्रेत मनलाया ६
एकसेपूजाजौनबिचारा। एकसेनिहुरिनेवाजगुजारा ७

एकसेकहे एकजो माया सबलित ब्रह्मताही को प्रतिपादन करत वेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अर्थ बदलिकै महादेवजीको तामसमत चलावतभये औएकसे कहेएक जो माया सबलित ब्रह्मताहीको प्रतिपादन करत जीवनको मनभूतप्रेत देव सब लगायदेतेभये अर्थात् मायामें अरुझाय देतेभये ६ एकसेकहे एक जो माया सबलित ब्रह्मताके ज्ञानहेतु निहुरिकै मुसल्मानलोग नेवाजगुजारतभये ७ ॥

चौ० कोउकाहूको हटानमाना । झूठाखसम कबीरनेजाना ८
तनमनभजिरहुमेरेभगता । सत्य कबीर सत्यहै बक्ता ९

कोऊकाहूको हटको न मानतभये झूठाजो धोखा ब्रह्मताहीको दृढ़करिकै कायाकबीरजे जीवतेनाना देवतनसोतेखसम जानतभये कोई महीं ब्रह्महैं यामानतभये खसमजो परमपुरुष मैंहौंताको तुमसब न जानतभये ८ तनमन तेमोही में लगोतबही तिहारो उबारहोइगो सोहे कबीर जी वो एक तो तुम सत्यहौ औ एकजो तिहारे समुझावन वालोबक्ता मैं सो सत्यहौं और सबझूठेहैं वही ब्रह्मचारो औरहै गयोहैयहहै मत देखायो तामें प्रमाण सत्यं आत्मा सत्यजीवो सत्यंभिदः ९ ॥

चौ० आपुहिदेव आपुहीपाती । आपुहि कुल आपुहिहैजाती १०
सर्बभूत संसार नेवासी । आपुहिखसमआपुसुखरासी ११
कहते मोहिं भयेयुगचारी । काकेआगे कहौं पुकारी १२

औवही माया सबलित ब्रह्मआपुही देवताहै गयोहै आपुही फूलपातीहैं आपुहीपूजाकरनवालोहै आपुहीकुल जातिहै १० सोयाभांतिते वहीब्रह्म सर्बभूतमें नेवासीहवैकै आपुही खसमहवै रह्योहै औजामें पुरुषके सुख को साचहै ऐसीसुखराशी नारीहवे रह्योहै ११ सो यह बातचारो युगमें को कहतभयो काके आगे पुकारिकै कहों कोई समुझै या धोखा ब्रह्मको नहीं देखोपरै १२ ॥

दो० साखी सांचेकोइनमानई झूठाके सँगजाय ।
झूठे झूठांमिलिरहा अहमक खेहा खाय ॥ १३

सांचोमैं सांचेतुम जीवयह मततो कोई नहीं मानैहै झूठां जो वह ब्रह्मताके संगसबजायहैं अर्थात् वहीको सर्बस्वमानैहैं सोझूठा वह ब्रह्म औझूठाज्ञानवाला जो जीवसो मिलिकैअहमक खेहाखायहै अर्थात् मर्यो तबराखखायहै जननमरणनहीं छूटैहै १३ ॥ इतिचौदहवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पंद्रहवीं रमैनी ॥

चौ० उनई बदरिया परिगैसांझा। अगुवा भूले बन खँड मांझा १
पियअनतै धन अनतै रहई। चौपरि कामरि माथे गहई २
साखी ॥ फुलवा भार न लै सकै कहै सखिन सों रोइ ॥
ज्यों ज्यों भीजै कामरी त्यों त्यों भारी होइ ३

चौ० उनईबदरियापरिगै सांझा। अगुवाभूले बनखँडमांझा २

भ्रम की बदरी ओनई परिगै साँझा कहे जगत में अँधियारी ह्वै गई साहेब को ज्ञान रूपी रबि मूंदिगयो न समुझि परत भयो तब बन खंड जो चारिउ वेद तामें अगुवा जे ब्रह्मादिक सब मुनि ते भूलि गये कोई भैरव कोई भवानी को कोई गणेश को इत्यादि नाना देवतन की उपासना करते भये औ शास्त्रहु में नानामत होत भये कोई कर्म को कोई ब्रह्म को कोई प्रकृतिपुरुषको कोई ईश्वर को कोई कालको कोई शब्द को कोई ब्रह्मांड में ज्योति को प्रधान मानत भये औ तिनहू में एकएक मतन में अनेक मत होते भये औ मुसलमानहू के मजहब में तिहत्तरि फिरके होत भये एक मेंतो मुक्ति होती है औरेन में नहीं होती सो जो जौने फिरके में परा है सो ताहीको मुक्तिवाला मानेहै सो या एक सिद्धांत ब्रह्माके पुत्र वेदन ते पूछ्यो वेद ब्रह्माते पूछ्यो तब ब्रह्मै संभ्रम पूर्वक सबको शेष के पास पठयो सो शेषजी जौन वेद को तात्पर्य्य सिद्धांत सबको समुझायो है सो आदि मंगल में लिखिआये हैं औ मेरे बनाये रामायण के अंतहू में लिख्यो है सो या हेतुते कबीरजी कहैहैं की अगुवा जे ब्रह्मा तिनही को भ्रम भयो है १ ॥

चौ० पियअनतै धनअनतैरहई। चौपरि कामरि माथेगहई २

पियतो साहब है औपियके मिलनवारो जोजीवन को ज्ञानसो इँधनहै सो दोऊ अनतही रहैहैं कोई बिरले संत पावैहैं चौपरि जो चारो वेद तिनकी कामरि ऐसी भारा शीशपर धरे अपने अपने मनको अर्थ करैहैं वेदको सिद्धान्त नहीं पावैहैं अथवा चौपरि जो चारो खानिके जीवतेकर्म रूप जोहै कामरिताको कांधेमें धरे हैं २ ॥

साखी ॥ फुलवाभार न लैसकै कहैसखिन सों रोइ ॥
ज्योंज्यों भीजैकामरी त्योंत्यों भारीहोइ ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीव जेहैं ते अनुहैं अल्प बुद्धि हैं करमकांड रूपजो फूल ताहीकोभार नहीं सहिसकैं अर्थात् सोई नहीं समुझि परै ब्रह्मबिचार कैसे समुझि परै सो वेदरूप कामरी कांधेधरे जब ब्रह्मबिचार करनलगे निषेध करत करत तब बिचार में ब्रह्म न आयो तब सखी जे जीवहैं तिनते रोइकैक-हते हैं नेति नेति यतने नहीं है अबै औरकुछ है नहीं समुझि परै यही रोइबो है सो ज्यों ज्यों वेदरूप कामरी भीजैहै कहे बिचारत जाइहैंत्यों त्यों भारी होतजाय है अर्थात् गहिरो अर्थ होतजाइ है सोकैसे समुझि परैवातो धोखा ब्रह्मकुछ वस्तुहीनहो है ३ ॥इतिपंद्रहवीं रमैनीसमाप्तम्॥

अथ सोरहवीं रमैनी ॥

चौ० चलत चलत अति चरण पिराने। हारि परे तहँ अति खिसिआने १
गन गन्धर्व मुनि अंत न पाया। हरि अलोप जग धंधे लाया २
गहनी बंधन बांध न सूझा। थाकि परे तब कछू न बूझा ३
भूलि परे जिय अधिक डेराई। रजनी अंध कूप ह्वै जाई ४
माया मोह उहां भरि भूरी। दादुर दामिनि पवनहु पूरी ५
बरसै तपै अखंडित धारा। रैनि भयावनि कछु न अहारा ६
साखी ॥ सबैलोग जहँ डाइया औ अंधा सबै भुलान ॥
कहाकोइ नहिं मानही सब एकैमाह समान ७

चौ० चलतचलतअतिचरणपिराने। हारिपरेतहँअतिखिसिआने१

नाना मतमें लगेजीव तिनके चरण ब्रह्मके खोजही में पिरान लगे अर्थात् थकि आये मतिनही पहुंचे एकहू शास्त्रके बिचार के पार न गये अतिरेसयान पाठ होयतो यह अर्थ कि बड़े सयानो रहे तेऊ हारिगे तामें प्रमाण॥इन्द्रादयोपियस्यांतनययुःशब्दवारिधेः । प्रक्रियांतस्यकस्त्स्न स्यक्षमोवक्तु नरःकथम् ॥ तब खिसिआइकै यह कहते भये १ ॥

चौ० गण गंधर्वमुनि अंतनपाया। हरिअलोप जगधंधे लाया २

जौने ब्रह्मको अंत गंधर्व औ मुनिन के गण नहीं पायो ताको हमकैसे जानि सकैं जो ब्रह्मको साकार कहै हैं तौ मध्यम प्रमाण में आयजाय हैं अनित्य होय हैं औजो ब्रह्मको निराकार कहै है तौ जगत्की करतत्व सिद्धांत न भयो कबीर जी कहै हैं कि कैसे होयगी सन्देह में परे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे हरिहैं तैसे बिना सतगुरु के बताये तो जानतही नहीं है यहिते हरि अलोपकहैं हरि अप्रगट भये तिनके बिनाजाने जगत्के धंधेमें जीव सब अपनो मन लगायराख्यो २ ॥

चौ० गहनी बंधन बांधन सूझा। थाकिपरे तब कछू न बूझा ३

गहनी बंधन जोमाया सबलित ब्रह्मजौन बांधिकै संसार में डारि देन वारो ऐसोजो ब्रह्मताको बांधजीवन को न सूझि परयोकौन बांध कि जो कोई मोहीमें लगैहै तोमैं बांधिकै संसार मैं डारिदेउंहौं या माया सबलित ब्रह्मको बांधना सूझि परयो जोकहो काहेते बांधबांध्योहै तो जगत् की उत्पत्ति वही ब्रह्मते होय है वा ब्रह्म जगत् को रहिबोई चाहै है याही ते जो कोई वामें लगैहै ताको साहबको ज्ञान भुलाय कै संसारहीमें राखै है सो कबीर जी कहैहैं कि जब वही संसार में थकिपरे तब कछू न बूझत भये अर्थात् अनेक मतन को बिचारै है पै सिद्धांत न पावत भये साहब को ज्ञान भूलिगये ३ ॥

चौ० भूलिपरे तब अधिक डेराई। रजनी अंध कूप ह्वै जाई ४
मायामोह उहांभरि भूरी। दादुलि दामिनि पवनहुपूरी ५
बरसैतपै अखंडित धारा। रैनिभयावनि कछुन अहारा ६

सो जब साहबको ज्ञान भूले संसारमें परेतबअधिकडर आवत भयोकाहे ते कि मूला अज्ञानरूप रजनी की बड़ी अँधियारीहोत भई कछू न सूझि परयो काहेते कि अहंब्रह्मास्मि मानि कै लीन ह्वै कै वही संसारमें परयो जहां माया मोह भूरि भरेहैं तबतो माया करणरूपा रहीहै अब कार्यरूपा भई बहुत मोहादिक होत भये तामें परे जैसेदादुर बोलै हैं अर्थ कछू न ही है तैसे उनको वेदकोपढ़िबोहै अर्थ नहीं जानैहै जो काहूकेकहेकछूज्ञान भयो तब दामिनी कैसो दमकह्वै जाय है कछु हृदय में नहीं ठहराय है औ पवनहु पूरीजो कह्यो सो पवन चढ़ाय कै योग करिये तो भ्रम करैहै कि कोई खेचरी आदिक मुद्रा करि अखंडधारा अमृत बर्षाइ नागिनी उठाइ समाधि करैहै औ कोई तपैअखंडितधाराकहे पांच हजार कुंभककरिकै ज्वाला उठाइ तौनेते नागिनी को जगाय प्राण चढ़ाय समाधि करैहै तहौंभयावनिरैनिजो मूला अज्ञानकी अँधियारी ताहीमेंपर्यो अर्थात्जबतक ज्योति देख्यो तब तक तो उजियारी जब ज्योति में लीन ह्वै गयो तब सुषुप्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे में पर्‌यो रह्यो यही भयावनि रैनि है भयावनि को हेतु यहहै कि प्राण के उतरिबे की अवधि बनी है॥

साखी॥ सबैलोग जहँडाइया औ अन्धा सभै भुलान॥
कहा कोइनहिं मानही सबएकैमाहँसमान ७

औजे माया ते सभय रहे डेराते रहे ते लोग जहँडाइया कहे बहेकि कै औरई और मतन में लगि गये औ जे अज्ञान आंधरे रहैं ते संसारहीमें परे संसार छूटिबेको उपवेना किये भूलिही गये सो कबीर जी कहै हैं कि मेरो कहा कोई नहीं मानै है सब जे जीवहैं ते एक जो मायाब्रह्म ताहीमें सब समाते भये इत्यार्थ औ साहबको बिनाजाने ब्रह्महू में लीन ह्वैसंसारही में आवै हैं वाको प्रमाण पीछे लिखि आ येहैं ७॥ इति सोलहवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ सत्रहवीं रमैनी॥

चौ०जस जिव आपु मिलै अस कोई। बहुत धर्म सुख हृदया होई १
जासो बात राम की कही। प्रीतिन काहूसो निर्बही २
एकै भाव सकल जग देखी। बाहेर परै सो हो इबिबेकी ३
विषय मोह के फंद छोड़ाई। जहां जाय तहँ काटु कसाई ४
आय कसाई छूरी हाथा। कैसहु आवै काटो माथा ५
मानुष बड़े बड़े ह्वै आये। एकै पण्डित सबै पढ़ाये ६
पढ़ना पढ़हुधरहु जिनगोई। नहिंतो निश्चय जाहु बिगोई ७
साखी॥ सुमिरन करहुसु राम को औ छांड़हु दुखकी आस॥
तर ऊपर धरि चापिहैं जस कोल्हू कोटि पचास ८

चौ० जसजिव आपुमिलैअसकोई। बहुतधर्मसुखहृदयाहोई १
जासों बात राम की कही। प्रीतिन काहू सों निर्बही २

जैसो आपु होइ तैसो जबताको मिलै तबहीं धर्म बढ़ैहै औ हृदयमें बड़ो सुख होय है तामें प्रमाण गोसाईं जीको॥ दोहा॥ इष्ट मिलै अरु मनमिलै मिलै भजन रसरीति॥ तुलसिदास तासों मिलै हठिकै उपजै प्रीति १ सो औरीभांति सुखनहीं होयहै १ काहेते किजासों कहे जौने जीवन सों रामकी बात मैं कहौहौं कि तैं रामचन्द्रकोहै तिनको अपनो साहब मानु नाना ईश्वर जो तैंने मानेहैं सो ये सब मायाके जालमें परेहैं तोको कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उबारेंगे सो कबीरजी कहैहैं कि यामेरी बातपै काहू जीवनकी प्रीति न निबहत भई अर्थात् जो मेरीबात प्रीतितेसुनै साहब को जानै अपनेअपने मतमें आरूढ़ह्वै बादसों करैहै वस्तु नहीं ग्रहण करैहै २ ॥

चौ० एकैभाव सकल जग देखी। बाहर परैसो होइ बिवेकी ३
विषयमोहके फंद छुड़ाई। जहांजाय तहँ काटु कसाई ४

एकै भाव सकल जग देखी कहेजे एक ब्रह्मै भाव जगत्को देखैहैं तेहि ते बाहेर अपनेको दासमानि साहब रूपते जगत्को जानैहैं सोई बिवेकी होयहैं सो ऐसे बिवेकिनके पासतो नहीं जायहै ३ नाना विषयके मोहके फंद छोड़ायकै अर्थात् संसारते वैराग्य करिकै अधिकारिहूह्वैकै जहाँजहांजाय है तहां तहां कसाई जे गुरुवा लोग तेगला काटैहैं अर्थात् साहेबको ज्ञान काटि धोखा ब्रह्ममें लगाय देयँहैं सो याको गला काट्यो गलाकाटे फेरि जन्म होयहै याते गुरुवा लोगनको कसाई कह्यो ऐसे याहूको जनन मरण होयहै व्यंग्य यहहै कि जेजीव साहबको त्यागि और और में लगैहैं तेपशु हैं उनको ऐसही गलाकाट्यो जायहै ये कसाई शरीरको गला काटैहैं यहौ हैत ज्ञान वाले गुरुवालोग जीवनको गला काटै हैंजो संसारमें रहतो त कबहूं दैवयोगते साधु संगभयो उद्धारहूहो तो सो तौने धोखा ब्रह्ममें लगायदियो जहांते उद्धार नहीं है वहां काहेको कोई साहबको बतावेंगे ४ ॥

चौ० आय कसाई छूरी हाथा। कैसेहु आवै काटों माथा ५
मानुष बड़े बड़े ह्वै आये। एकै पंडित सबै पढ़ाये ६

कसाई जे गुरुवा लोग तिनकी बनाई पोथी सोई छूरी हाथमें लीन्हे यह ताकेहैं किकैसेहुकै कौन्यो मतको आवै तौ ठगिकै अपनेमतमें कैलेइं माथ काटिलेइँ कहे मूड़िडारैं चेला करिलेयं सो साहबको छोड़ाइ और औरमें लगावन वारोहै सोगुरू कसाईहै ५ मनुष्यजे बड़ेबड़े ज्ञानीलोगहैं तेयही पढ़ावतभये कि एक वही ब्रह्महै जीव नहीं है औकोई या पढ़ाया कि एक जीवही सांचहै और सब असाँचहै ६ ॥

चौ० पढ़नापढ़हुधरहुजनिगोई। नहिंतो निश्चय जाउबिगोई ७

जौन पढ़ना तुम गुरुवा लोगन तेपढ्यौहै सो अब जनिगोइ राखो औ जो गोइराखोगे तो कुमतिहीमें परे रहौगे जो नगोइ राखोगे तो संतलोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुझायकै भमकाटि डारैंगे कैसेकि जो एक ब्रह्महोतो तौभ्रम कौनको होतो औ जो एक जीवही साहबहोतो तौ बंधि कैसे जातो सोमायातो बांधनवालोहै औ जीव बंधन धारीहै औ साहब छड़ावन वालोहै यह बिचारि साहबको जानो साहब छड़ायलेइंगेनहीं निश्चय बिगोइ जाहुगे अर्थात् कुमतिमें लागिकै बिगरि जाहुगे ७॥

साखी॥ सुमिरन करहु सुरामको ओछाड़हु दुखकी आस॥
तर ऊपर धरि चापिहै जस कोल्हू कोटि पचास ८

सो परम पुरुष जेश्रीरामचन्द्रहैं तिनको सुमिरन करौ धोखा ब्रह्म औ माया इनकी दुखरूप जो आस सोछाड़ो जोन छाड़ोगे तौ तरे तो माया रूपकोल्हू ऊपर ब्रह्मरूप जाठमें तुमकोपेरिडारैगो पचासकोटि कोल्हूकह्यो सो अगणित ब्रह्मांडहै तामें डारिकै ८॥ इति सत्रहवीं रमैनीसमाप्तम्॥

अथ अठारहवीं रमैनी॥

चौ०॥ अद्भुत पंथ बरणिनहिं जाई। भूले रामभूलिदुनिआई १
जो चेतौ तौ चेतुरे भाई। नहितो जिय जरि मूलै जाई २
शब्द न मानै कथै बिज्ञाना। ताते यम दीन्ह्यो है थाना ३
संशय साउज बसै शरीरा। तेखायल अनबेधलहीरा ४
साखी॥ संशय साउज देहमें संगहि खेल जुआरि॥
ऐसायायल बापुरा जीवन मारै झारि ५॥

चौ० अद्भुतपंथ बरणि नहिंजाई। भूलेरामभूलिदुनिआई १
जो चेतौ तौ चेतुरे भाई। नहिंतौ जिय जरिमूलै जाई २

अद्भुत पंथजो ब्रह्मताको वर्णत कोई ने अंतनहीं पायो रामजे साहबहैं तिनके भूले कहे बिना जानेते सब दुनिया धोखाब्रह्म मायामें भूलि गई १ हेभाईउ चेतौतौ चेतौ नहीं तौ माया ब्रह्मकी आगिमें जरिकै मूलतेजाउगे यह कबीरजी कहेहैं नहीं तौ यमजीव लैजाइँ जो यह पाठहोयतौ यह अर्थहै कि चेतौतौ चेतौ नहीं तौ यम लैजायकै नरकमें डारिदेइँगे २॥

शब्द न मानै कथै बिज्ञाना। ताते यम दीन्ह्योहै थाना ३
संशय साउज बसै शरीरा। ते खायल अनबेधल हीरा ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिज्ञान हूको सार जाते सब शब्द निकसेहैं ऐसे जो रामनाम ताकोतौ मानै नहीं है औरऔर मतिमें लगिके बिज्ञानकथैहै ताते यमराज जोजैसो कर्म करैहै ताको तैसो नरक स्वर्गको थान देयहैं ३ संशयरूपी साउज जो मनसो शरीररूपी बनमें बसिके अनबेधलकहे जाकोयश रामनाममें नहीं है ऐसोजो हीराजीवताको खायगयो कौनोरीतितेखायो सोआगे कहैहैं ४॥

साखी ॥ संशय साउज देहमें संगहि खेलै जुआरि ॥
ऐसा घायल बापुरा जीवन मारै झारि ५

जैसे शिकारी बाघको मारैहै जो बाघ घायल भयो तौ शिकारीको धरि डारैहै तैसे संशय साउजजो व्याघ्ररूप मन सो देहरूपी बनमें बसैहै ताके संग जीव जुआ खेलैहै जब मनोनासनाहैकी उपाय कियो तब वही बाको घायल ह्वैहै सो व्याघ्ररूप जो मनहै सो घायल ह्वैके बापुरे जेसब जीवहैं तिनको झारदैके मारैहै अर्थात् सबको वही माया धोखा ब्रह्ममें लगाय दियो औ जो यह पाठहोय कि ऐसा घायल बापुरा सब जीवन मारै झारि तोयह अर्थहै कि ऐसा घायल कहेघाती जोमनसो बापुरे जीवनको झारदैके मारैहै जनन मरण देइहै ५ ॥ इति अठारहवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथ उन्नीसवीं रमैनी ॥

चौ० अनहदअनुभवकी करिआशा । देखौयहबिपरीतितमाशा १
यहैतमाशा देखहु भाई । जहँ है शून्य तहां चलि जाई २
शून्यहि बांधाशून्यहि गयऊ । हाथा छोड़ि बेहाथा भयऊ ३
संशय साउज सब संसारा । काल अहेरी सांझ सकारा ४
साखी ॥ सुमिरन करहु सोरामको काल गहे है केश ॥
नाजानौं कब मारिहै क्याघर क्यापरदेश ५

चौ० अनहदअनुभवकीकरिआसा । देखौयहबिपरीतितमाशा १

अनहद शब्द सुनत सुनत जौने ब्रह्मको अनुभव होइहै ताकोतू बिचारै है कि ब्रह्म मैंही हौं या नहीं जानैहै कि अनहद मेरे शरीरही कोहै वह ब्रह्म मेरही अनुभवहै यह बड़ो तमाशा है ताहीकी आशा करैहै यह बड़ी बिपरीति है १ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहै तमाशा देखहु भाई । जहँहै शून्य तहां चलिजाई २
शून्यहिबांछा शून्यहिगयऊ । हाथाछोंड़ि बेहाथाभयऊ ३

सो हेभाइयो हेजीवो यह तमाशा तुमहू अनेकन जन्मते देखते आये हौ परन्तु जहांशून्य है तहां जाइकै मुक्ति ह्वैबो चाहौ हौ तुम या नहीं बिचारौ हौ कि शून्यजो धोखा ब्रह्म तामें जो हम जाइँगे तौहमारी मुक्ति की बांछहु शून्य ह्वैजायगी अर्थात् मुक्ति न होयगी सो या बड़ो आश्चर्य है आपने ते झूठेमें बांधिकै साहब को हाथ छोड़िकै बेहाथ भयऊ कहेधोखा ब्रह्मके हाथमें ह्वै जाउहौ अथवा कबीरजी छूट जीवन ते कहैहैं हे भाइयो देखोतो तमाशा ये जीव जहां शून्यहै धोखा है तहांसब चलेजायँ हैं जौने ज्ञानमें साहब भरे पूरे हैं तहांनहीं जायँ हैं ३ ॥

चौ०संशय साउजसकल संसारा । काल अहेरी सांझसकारा ४

संशय कहे मनरूप जो साउज ताहीको सकल कहे सुरतिया संसार ह्वै रह्यो है अर्थात् मनरूप जीव ह्वैरह्यो है संकल्प बिकल्प सबकै रहे हैं सो अहेरी जो काल शिकारीसो सांझ सकार कहे काहूको जन्मत में मारै है आदि अंतकहे मध्य को काल है काहूको आयुदीय के अंत में मारै है यगवो ४ ॥

साखी ॥ सुमिरनकरहु सो रामको काल गहेहै केश ।
नाजानोंकब मारिहै क्याघर क्या परदेश ५

सो कबीर जी कहैहैं कि परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको सुमिरन करहु शिकारी जो काल है सो केश करमें गहेहै या नहीं जानौ हौ धौं कब मारै या घरमें या परदेश में अर्थात् साहबके बिना स्मरण घरमें रहोगे तौन बचोगे जो बनमेंजाउगे तो न बचौगे ५ ॥ इति उन्नीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ बीसवीं रमैनी ॥

चौ० अबकहु रामनामअबिनाशी । हरितजिजियरा कतहुं न जासी १
जहांजाहु तहँ होहु पतंगा । अबजनि जरहु समुझि बिषसंगा २
रामनाम लौलायसोलीन्हा । भृंगी कीट समुझि मन दीन्हा ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोअतिगरुवा दुखकै भारी। करुजिय यतन सो देखु बिचारी ४
मनकीबातहै लहरिविकारा। ह्वहिं नहिं सूझै वार न पारा ५
साखी॥ इच्छाको भवसागरै वोहित राम अधार॥
कहैंकबिरहरिशरणगहुगोवच्छखुरबिस्तार६

चौ० अबकहुरामनामअविनाशीहरितजिजियराकतहुंनजासी १

अविनाशी जो राम नामताको अबहूं कहु हरि कहे भक्तन के आरति हरण हारे जे साहब हैं तिनको छोड़ि हेजीव और मतन में कतहुं न जा अर्थात् चितचित्तते विग्रह करि सर्बत्र साहिबै को देखु १॥

चौ० जहांजाहुतहँहोहुपतंगा। अबजनिजरहुसमुझिविषसंगा२

जौनेन मत में जाहुहौ तहां पतंगही से जरिजाउ हौ सो संगजो बिषाग्नि ताको समुझि अबजनि जरहु अर्थात् जो इनको संग करहुगे तौ मन इन्द्रियादिकन को विषय जो सिद्धांत कीन्हें है ताहीमें तुमहूं को लगाइ देयँगे तौ संसारही में परे रहोगे ताते इनको संगत्यागि राम नाम जपौ जो कहौ कौनी रीति ते जपैं राम नाम तो मन बचन के परे है सो आगे कहैहैं २॥

चौ० रामनामलौलायसोलीन्हां। भृङ्गीकीटसमुझिमनदीन्हा ३

रामनाम में सो लौयलगाय लीनहै कौन जौन भृङ्गी औ कीटकी ऐसी गति समुझि कै अपने मनदीन्ह है अर्थात् जैसे कीटभृङ्गी को देखत देखतवाको शब्द सुनत सुनतवाको डेरातडेरात तदाकार कैह्वै भृंगीही रूप ह्वैजायहै तैसे रामनाम जपत जाइहै वाको सुनत जाइहै जगत्मुख अर्थते डेरात जायहै औ साहब मुख अर्थमें साहबकी रूप औ अपनोहँस स्वरूप बिचारत निज हंस रूपमें तदाकारह्वै जायहै मनादिक मिटिजाय है शुद्ध रहिजायहै सो अपने रूप पाय जायहै तब मन बचन के परे जो रामनाम सो आपने ते अस्फुर्ति होइहै तामें लौ लगाय कै जैसे कीटभृंगी बनिकै और कीटको भृंगी बनावैहै तैसे यहौ जीव उपदेश करिकै और हूको हंसरूप बनावैहै सो जो भृंगीको शब्द कीट न ग्रहण करै तौकीट ही रहिजाय ऐसे जो रामनाम को जीवना ग्रहण करै तौ असारही रहि जायहै तामें प्रमाण अनुराग सागरको॥ ज्योंभृंगीगै कीटके पासा। कीटहिगहि गुरगमि परगासा॥ बिरला कीट होय सुखदाई। प्रथम अवाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहै चितलाई ॥ कोइ दूजे कोइतीजे मानै । तन मन रहित शब्द हित जानै । तब लैगे भृंगी निजगेहा । स्वाती देकर निज समदेहा ३ ॥

चौ० भोअतिगरुवादुखकैभारी।करुजियययतनजोदेखुबिचारी४
मनकीबातहैलहरिबिकारा । त्वहिंनहिंसूझैवारनपारा ५

यह संसार भारी दुःखकरिकै अति गरुवा बोझाहै जीव तूबिचारि देखु जो तोको बोझालगै तौ रामनामको यतन करु ४ मनकी बातकहे मन ते गुरुवनको धोखा ब्रह्म तेहिते उठी जो कार रूप लहरि माया ताको कौनो मनकहिकै तोको वारपार नहीं सूझैहै ५ ॥

साखी ॥ इच्छाके भवसागरै वोहित राम अधार ॥
कहै कबीर हरिशरणगहु गोबछखुर विस्तार ६

यहजो समष्टि जीवकी इच्छारूप भवसागर तामें वोहित जो नौका रामनाम सोई आधारहै और नहीं है सो कबीरजी कहैहैं हरिजे साहेबहैं तिनकी शरण गहु यह भवसागर गऊके बछवाके खुरके सम उतरि जाय गो यामें संदेह नहीं है ६ ॥ इति बीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ इक्कीशवीं रमैनी ॥

चौ० बहुत दुखैहै दुखकी खानी । तब बचिहौजब रामहिजानी १
रामहि जानि युक्तिजो चलई । युक्तिहिते फंदा नहिं परई २
युक्तिहि युक्त चलत संसारा । निश्चय कहा न मानु हमारा ३
कनक कामिनी घोरपटोरा । संपति बहुत रहे दिन थोरा ४
थोरेहि संपतिगो बौराई । धरमराय की खबरि नपाई ५
देखि त्रास मुख गो कुम्हिलाई । अमृत धोखे गोबिषखाई ६
साखी ॥ मैं सिरजो मैं मारहूं मैं जारौं मैं खाउँ ॥
जल थलमैहीं रमिरह्यो मोर निरंजन नाउँ ७

चौ० बहुतदुखैहै दुखकीखानी । तबबचिहौ जबरामहिजानी १
रामहिजानियुक्तिजोचलई । युक्तिहितेफंदानहिंपरई २
युक्तिहियुक्तिचलतसंसारा । निश्चयकहानमानुहमारा ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह दुःखकी खानिजोसंसारसो बहुतदुःखहै अर्थात् बहुत दुःखदेइहै तुम तबहीं बातेबचोगे जब सबके मालिक रक्षक जेश्रीरामचन्द्र तिनको जानोगे आन उपाय न बचौगे १ काहेते जेश्रीरामचन्द्रको जानिकै युक्ति सहित चलैहैं तेई वही युक्तिहीते संसारके फंदामें नहीं परैहैं सो कबीर जीकहैंहैं सो यक्ति आगे लिखैंगे २ या संसार केवल अपनी अपनी युक्तिहीते चलैहै कबीरजी कहैहैंमैं जो निश्चय बात कहौहौं कि राम नाम ही ते तेरो ऊद्धार होयगो याकीयुक्तिकोई नहीं मानैहैं अपनेही मनकी युक्ति चलै है ॥

चौ० कनककामिनी घोर पटोरा। संपतिबहुत रहेदिनथोरा ४
थोरेहि संपति गो बौराई। धर्मराज की खबरिन पाई ५

कनक जो है कामिनी जो है घोड़े जे हैं हाथी जे हैं पटंबर जे हैं ये संपति तो बहुत हैं परंतु इन के भोग करिबेको दिन तो थोरही है अर्थात् आयुर्दाय थोरी है सोतौ भोग में बितावै है साहब को कब जानैगो ४ सो तैंतो थोरही संपति में बौराय गयो धर्मराज की खबरि तैंनहीं पाई कि जब मोको धरि लै जाइँगे तब सारी संपति हियई परीरहिजायगी तब कौन भोग करैगो यह बिचारि साहब को जानो ५ ॥

चौ० देखित्रास मुखगो कुँम्हिलाई। अमृत धोखेगो विष खाई ६

औ दैव योग जो कदाचित तुम्हें धर्मराज को त्रास देखि कै मुखजब कुँमिलाइगयो कहे संसार ते बैराग्य भई तब गुरुवा लोगन के निकट जाइ अपनो स्वरूप समुझौ कि मैं अमृत हौं मन मायादिक ते भिन्नहौं सो बाततो तू सांच बिचारी ऐसही है परन्तु भगवत् अंशत्व तेरे स्वरूप मेंहै सो गुरुवा लोग नहीं बतायो औरही में लगाय दियो सो अपनो स्वरूप समुझबो जो अमृत ताहीके धोखाते अहं ब्रह्मास्मि विषखाइ गयो भगवत्दास आपनेको न मान्यो साहब को न जान्यो सर्वत्र मैंही हौं या मानि कहन लाग्यो ६ ॥

साखी ॥ मैं सिरजौं मैं मारहूं मैं जारौं मैं खाउँ ॥
जलथल मैंहींरमिरह्यों मोरनिरंजननाउँ ७

औ मैंही जगत्को सिरजौंहौं मही मारौहौं मही जारौहौं जौने अग्नि तेजारौंहौं ताको मही खाउ हौंऔ जल थल में मैंही रमि रह्योहौं मोरनि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंजन नाउंहै कैवल्यमहीं हौं औ अंजन जो माया तातें सबलित ह्वैकै मैंहीं सब करौंहौं ७ ॥ इति इक्कीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

बाईसवीं रमैनी ॥

चौ० अलख निरंजन लखै न कोई । जेहि के बँधे बँधा सब कोई १
जेहि झूठो सो बँधो अयाना । झूठी बात सांच कै माना २
धंधा बंधा कीन्ह व्यवहारा । कर्म बिवर्जित बसै निनारा ३
षटआश्रम षट दरशन कीन्हा । षटरसबस्तुखोटसबचीन्हा ४
चारि वृक्ष छाशाख बखानै । बिद्या अगणित गनै न जानै ५
औरौ आगम करै बिचारा । तेहि नहिं सूझै वार न पारा ६
जप तीरथ ब्रत पूजे भूता । दान पुण्य औ किये बहूता ७
साखी ॥ मंदिर तो है नेह को मति कोइ पैठै धाइ ॥
जो कोइ पैठे धाय कै बिन सिर सेंती जाइ ८

चौ० अलख निरंजन लखै न कोई । जेहिबंधे बंधा सबकोई १
जेहिझूठे सो बँधो अयाना । झूठीबात सांच कै माना २
धंधा बंधा कीन्ह व्यवहारा । कर्मबिवर्जितबसैनिनारा ३

कबीर जी कहै हैं कि हे जीव तूतो आपने को निरंजन मान्यो सोनिरंजन तो अलख है वाको कोई नहीं लखै है जाके बँधेते कहे माया में सब कोई बँधे हैं १ हे अजानौ जौने झूठे सो तुम बँधो हौ सो झूठही है तुम सांच मानो हौ सो न मानौ २ धंधा जो साहब की सेवा ताको बंधाकहे बांधन वारे तौने को व्यवहार तुम कीन अर्थात् व्यवहार मानिकर्मते बर्जित ब्रह्म सबते न्यारही रहैहै या परमार्थ तुमलोग कहौहौ औयाहीमें आरूढ़ होतहौ साहब को नहीं जानौहौ ३ ॥

चौ० षटआश्रमषटदर्शनकीन्हा । षटरसबस्तुखोटसबचीन्हा ४
चारिवृक्षछाशाखबखानै । विद्याअगणितगनैनजानै ५

षटरसनको खोटमानि त्यागम करिकै औ षटआश्रम करिकै षट दर्शन करिकै वहीधोखा ब्रह्मही को सिद्धान्त मानतेभये ४ पुनि चारि वेद छवोशास्त्रअगणित विद्याबाच्यार्थ करिकैधोखा ब्रह्मकोकहैहैं ताको तोतुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रहणकियो तात्पर्य्य वृत्तितेजो साहबकोकहैहे सोतुम न जानत भये ५॥

चौ० औरो आगम करैविचारा। त्यहिनहिंसूझैवार न पारा ६
जप तीरथ ब्रत पूजे भूता। दान पुण्य औ कियेव हूता ७

अरु औरो आगम जे हैं ज्योतिष यंत्र मंत्र आदिदैके तेऊ तात्पर्य्य वृत्ति ते जोनेसाहबको कहैहैं ताको वारपार तो तुमको न सूझिपर्‌यो वाच्यार्थ प्रतिपाद्य जो धोखा ब्रह्म ताहीमें लाग तभये और और देवता ६ सो यहिप्रकार नानामतन करिकै मानतेभये कोई नाना देवतन के जप किये कोई तीर्थ किये कोई ब्रतकिये कोई भूतनकी पूजाकिये कोई दान किये कोई पुण्य जो यज्ञादिक कर्मते किये ७॥

साखी॥ मंदिरतोहै नेहको मतिकोइ पैठेधाइ॥
जोकोइपैठेधायकै बिनुशिरसेंतीजाइ ८

सो यह सबमत माएक नानादेवता धोखाब्रह्म इनमें जो प्रीति है सो नेहकोमंदिरहै तामें तू धायकै मतिपैठे जो इनमें धायकै पैठैगो तो बिनु शिर कहे सबकेशिरे जे साहब तिनकेबिना संतिही जाइगो ककुहाथ न लगैगो तेरेसाथन मुक्ति देनवाले न होवैंगे संसारही देनवाले होंइगे अथवा तुम्हारोमाथा काटो जायगो वृथा मारेजाउगे ८॥ इतिबाईसवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ तेईसवीं रमैनी।

चौ० अलप सौख्य दुख आदिहु अंता। मन भुलान मैगर मैं मंता १
सुख बिसराय मुक्ति कहँ पावै। परिहरिसांच झूठनिजधावै २
अनल ज्योति डाहै यकसंगा। नयन नेह जस जरै पतंगा ३
करु बिचार ज्यहि सबदुखजाई। परिहरि झूठा करि सगाई ४
लालच लागे जन्म सिराई। जरामरण नियराइल आई ५
साखी॥ भर्मक बांध लई जगत यहिबिधि आवहि जाइ॥
मानुष जन्महि पाइनर काहे को जहडाइ ६

चौ० अलपसौख्यदुखआदिहुअन्ता। मनभुलानमैगरमैंमंता १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखबिसरायमुक्तिकहँपावै । परिहरिसांचझूंठनिजधावै २
अनलज्योति डाहै यकसंगा । नयननेह जसजरैपतंगा ३

जौने संसार में अलप तो सुखहै औ आदिहूमें अंतहू में दुख है ऐसे संसारमें मैंगरमैंमंता कहे मतवारो हाथी जो मन सो भुलाइकै मैंमंता कहे महीं ब्रह्महौं या मानिलियो अथवा मैंहीं देहहौं या मानिलियो १ सुखरूप जे साहब हैं तिनको बिसराइकै कबीर जी कहै हैं कि मुक्ति कहांपावै सांचको छोड़िकै झूठ जो धोखाब्रह्महै तामेंतो धावैहै यह जीव कैसे सुखपावे २ अनलज्योति जो ब्रह्महै सो एक संग सब ज्ञानिन को दाहैहै अग्नि ब्रह्मको नामहै अज्ञात्वादग्ननामासौ ॥ कैसेदाहैहै जैसे नयननेह कहे देखनके लालचलगे दीपककीज्योतिमें पतंगजरैहैं ३ ॥

चौ० करुबिचारज्यहि सबदुखजाई । परिहरिझूठाकेरिसगाई ४
लालचलागेजन्मसिराई । जरामरण नियरायल आई ५

झूठ जो या धोखाब्रह्म है औ अपनो कलेवर तौने की सगाईत्यागि कै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको बिचार करु जाते तेरे सब दुःख जाइं ४ धोखाब्रह्म के लालचमें लगे कि हमारी मुक्ति होय गी हमको बिषयही तेसुखहोयगो याहीमें लगेलगे जन्म सिरायगयो जराजो बुढ़ाई औ मरण सो नियराइ आयो ५ ॥

साखी ॥ भ्रमकोबांधलयहजगत यहिबिधिआवैजाय ॥
मानुष जन्महि पायनर काहेको जहँडाय ६

यही रीतिते भ्रमको बांधा या जगत्है वही ब्रह्मते आवैहै कहे उत्पन्न होइहै औ जाइहै कहे लीन होइहै मानुष जन्महि पायनर काहेको जहँडाय कहे काहे जड़वतहोयहै मनुष्य जन्मयाते कह्योअथवा जहँडायकहे काहे भूलो जातेहैं कि मनुष्यके मानुष्यै होयहैं हाथीके हाथीहोयहैं कछू हाथीके मनुष्य नहीं होयहैं ऐसे जो तैं निराकार ब्रह्मको हो तो तोहूं निराकार होतो सो तैं मनुष्यहै तातें मनुष्य रूपजे श्रीरामचन्द्रहैं तिनही कोहै ६ ॥ इति तेईसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चौबीसवीं रमैनी॥

चौ० ॥ चंदचकोर कसिबातजनाई। मानुषबुद्धि दीनपलटाई १
चारिअवस्था सपनो कहई। झूठ फूर जानत रहई २
मिथ्याबात नजानैकोई। यहिविधि सिगरे गयेबिगोई ३
आगेदैदै सबन गँवावा। मानुष बुद्धि न सपनेहु पावा ४
चौंतिस अक्षरसों निकलैजोई। पाप पुण्य जानैगासोई ५
साखी॥ सोइकहते सोइहोउगे निकलि न बाहेर आउ॥
होहजूरठाढ़ो कहौ धोखे न जन्म गवांउ ६ ॥

चौ० चंद्र चकोर कसिबात जनाई। मानुषबुद्धि दीनलपटाई १

साहब कहेहैं कि हे जीवो तुमको गुरुवालोग चन्द्र चकोर कैसो दृष्टांत जनायके नानाईश्वर में लगायदियो कैसे जैसे चन्द्रमाको ताकत ताकत चकोरचंन्द्ररूपैहै या बुद्धिमानैहै तब चकोरको अग्निकी गरमी नहीं लगैहै अग्नि खायजायहै तैसे अपनो स्वरूप जो ब्रह्म ताको जबजानि लेहुगे तब तुमको दुखसुख न जानिपरैगो कोई यह कहेहैं कि जैसे चन्द्रमा चकोरमें नेहकरैहै ऐसेतुम ईश्वरनमें पीतिकरौगे तौ दुख सुख न जानिपरैगो यह जो तुम्हारी मनुष्यबुद्धि कि मैं हंस स्वरूप हौं द्विभुज हौं द्विभुजईको होउगो सो पलटायके ब्रह्ममें लगायदिये नानादेवतनमें लगायदिये १ ॥

चौ० चारि अवस्था सपनो कहई। झूठेफूरे जानत रहई २
मिथ्यावाननजानैकोई। यहि बिधिसिगरेगयेबिगोई ३

चारि अवस्था जे हैं जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरयाते सपन कहाती हैं तो झूठो फुरि जानत रहेहैं २ वह कैवल्य जो है पवई अवस्थातद्रूपहै जाइबो कि महीं ब्रह्म हौं सो मिथ्या है यह बात कोई नहीं जानै है यही विधि सिगरे जीव बिगरिगये कहे बिगोइ गये ३ ॥

चौ० आगे दैदै सबन गँवावा। मानुष बुद्धि न सपनेहुपावा ४
चौंतिसअक्षर सोंनिक लै जोई। पापपुण्यजानैगासोई ५

वही धोखा ब्रह्म के आगे और कुछु नहीं रह्यो आदिकी उत्पत्ति वही ते है यही बात आगे दैदै कहे विचारि कै सिगरे जे ऋषि मुनिहैं ते आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पने स्वस्वरूप को गँवावत भये मनुष्य रूप जो मैं तिनके जाननेवाली बुद्धि सपन्यौ न पावत भये ४ चौंतिस अक्षर के जोनिकरैगा सोई पाप पुण्य जानैगा मैंसाहब को हौं और मैं लागौं हौं सो पापई करौहौं याबात मेरो अनिर्वच नीयनिवार्णजो नाम है ताको जपिकै जानैगो औ आपनो स्वस्वरूप जानैगो ५ ॥

साखी ॥ सोइकहते सोइहोउगे निकलि न बाहेर आउ ॥
होहुजूरठाढ़ो कहौ धोखेजनम गँवाउ ६

जो पदार्थ देखोगे जो सुनौगे जो कहौगे जो स्मरण करौगे संसार में सोई होउगे वही धोखामें लगिकै पुनि संसारी होउगे वामेंते निकरि कै बाहेर न होउगे काहेते कि वहतो अकर्ता है तुम्हारी रक्षा कौन करैगोसो साहब कहैहैं कि सर्वत्र पूर्णहौं तेरे हजूर ठाढ़ कहतई हौं कि तैं मेरो है तै काहे धोखा ब्रह्ममें ईश्वरनमें जगत् के नाना पदार्थ में लगिकै जन्म गँवाये देतहै ६ ॥ इति चौबीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ पचीसवीं रमैनी ॥

चौ० चौंतिस अक्षर को यही बिशेखा। सहसौ नाम यहीमें देखा १
भूलि भटकि नर फिरिघर आवै। होतज्ञान सो सबन गवांवै २
खोजहिं ब्रह्मबिष्णु शिव शक्ती। अमितलोगखोजहिं बहुभगतीं३
खोजहिं गण गँधर्व मुनि देवा। अमितलोक खोजहिं बहुसेवा४
साखी ॥ जतीसती सबखोजहीं मनैन मानै हारि ॥
बड़बड़े बीरबाचैं नहीं कहहि कबीर पुकारि ५

चौ० चौंतिस अक्षर कोइहै बिशेखा। सहसौनाम यहीमेंदेखा १
भूलिभटकिनरफिरिघटआवै। होतज्ञानसो सबनगवांवै २

चौंतिस अक्षर को बिशेष धोखई है काहे ते हजारन नाम यही चौंतिस अक्षरै में देखै है अर्थात् जे भरि वचन में आवैहै ते माया ब्रह्म रूप धोखई है मिथ्याही सो चौंतिसै अक्षर के भीतर सबहै अनिर्बचनीयपदार्थ तोको कैसे मिलै १ चौंतिस अक्षर को बिस्तार जो निगम अगम तामें साहब को ज्ञान भूलि भटकि कै जब पारनहीं पावैहै तब फिरि थकि कै आपने घटमें आय या कहैहै कि एक येहूनहीं है वेदहू तौ नेति नेति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहैहैं तब अपनो स्वरूप में आयो सो साहब के ज्ञान होतही गुरुवा लोग भटकाइ कै अज्ञान में डारि दिये जौन यह बिचारकियो कि ये सब अनिर्वचनीय नहीं हैं सो गवांय दियो अनिर्वचनीय धोखा ब्रह्मही को मानत भये २ ॥

चौ० खोजहिं ब्रह्मबिष्णुशिवशक्ती। अनतलोकखोजहिं बहुभक्ती
खोजहिंगणगंधर्वमुनिदेवा। अनतलोकखोजहिं बहुसेवा ४

अनंत जे लोक हैं तिन में अनंत जे ब्रह्मा बिष्णु महेश शक्ति तिन की भक्ति करिकै वही ब्रह्माण्डन में अनिर्वचनीय को खोजन लगे अरु वही को अनंत लोक में बहुत सेवा करि गंधर्व मुनि देवता खोजन लगे ४ ॥

साखी ॥ जती सती सब खोजहींमनै न मानै हारि।
बड़ेबड़े बीर बाचें नहीं कहहि कबीरपुकारि ५

औ यती सती सब मन में हारि ना मानि कै वही अनिर्वचनीय जो माया ब्रह्म ताही को खोजै हैं सो कबीर जी कहैहैं कि मैं पुकारि कै कहौहौं या माया ब्रह्म के धोखाते बड़े बड़े बीर नहीं बाचे हैं जे कोईबिरले संत साहेब को जानैहैं तेई बाचेहैं तामें प्रमाण कबीर जीको। रसना राम गुन रमिरमि पीजै ॥ गुणातीत निर्मूलक लीजै। निरगुण ब्रह्मजपौ रे भाई ॥ जेहि सुमिरतसुधिबुधिसबपाई। विषतजिरामन जपसि अभागे॥ काबूड़े लालचकेलागे। ते सब तरे रामरस स्वादी॥ कहँ कबीर बूडे बक बादी ५ ॥

अथ छब्बीसवीं रमैनी ॥

चौ० अपुहि करताभे करतारा। बहुबिधि बासन गढ़े कुम्हारा १
बिधना सबै कीन यकठाऊं। अनेक यतन कैबनक बनाऊं २
जठर अग्नि महँ दिय परजाली। तामें आपुभये प्रतिपाली ३
बहुत यतन कै बाहेर आया। तबशिव शक्ती नाम धराया ४
घरको सुत जो होय अयाना। ताके संगन जाय सयाना ५
सांचीबात कहौं मैं अपनी। भयादेवाना औरकि सपनी ६
गुप्त प्रगट है एकै मुद्रा। काको कहिये ब्राह्मण शुद्रा ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झूंठ गर्भ भूलै मति कोई । हिंदू तुरुक झूंठ कुल दोई ८
साखी ॥ जिनयह चित्र बनाइया सांचो सुरति ढारि ॥
कहहि कबिरते जन भले चित्रवंतहि लेहिं बिचारि ९

चौ० आपुहिकरता भेकरतारा । बहुबिधिबासन गढ़ै कुम्हारा १
बिधनासबै कीनयकठाऊं । अनेकयतनकै बनक बनाऊं २

बिधिजे ब्रह्माहैं ते अपने को कर्ता मानिसब साजुजोरि अनेक यतन कै जगत् बनावत भये जैसे कुम्हार डंड चक्र सब साजु जोरिकै बासन गढ़ैहै सो करतार जो अपने को करता मान्योसो वाकी अज्ञानता है का हैते कबीरजी कहैंहैं कि सबसाजु आगे.हे उत्पन्नह्वै रहीहै कौन नईसाज बनाइ करतार आपने को करता मानै साजुतो सब आगेहि की उत्पन्न भईहै सो कहैहैं १ । २ ॥

चौ० जठरअग्नि महँदियपरजाली । तामेंआपुभये प्रतिपाली ३
बहुत यतनकै बाहेर आया । तबशिवशक्तीनामधराया ४

जब महाप्रलय होइ जाइहै तब जौनकाल रहिजाय है सो कालसदा शिव रूप है ताके जठरमें कहे पेटमें अग्नि जो लोक प्रकाश ब्रह्म तामें समष्टि जीव पर जालि दिये परायणिको जाल लगाइदिये अर्थात् अग्नि जो लोकः प्रकाश ब्रह्म सो महीं हौं यह मानि माया सबलित होत भयो तामें तौने मायाके प्रतिपाली आपही होत भये अर्थात् जीवन के माने मात्रमाया है ३ सो माया सबलित जो ब्रह्म समष्टि जीवरूप सो अनेक यत्न कहे रामनामको संसार मुखअर्थ करि पांचौब्रह्म आदि सब बस्तु उत्पन्न कै समष्टिते व्यष्टि ह्वैकै जगत उत्पन्न कियो ताको शिवशक्त्यात्मक नाम धरावत भये ४ ॥

चौ० घरकोसुत जो होयअयाना । ताकेसंग न जाहि सयाना५

सो कबीरजी कहैंहैं कि हे जीवो ये ब्रह्मादिकतुम्हारही सुतहैं तुमहीं समष्टि ते व्यष्टि भयेहौ किजो घरको पूत अयान होइहै ताकेसंग सयान नहीं जायहै ऐसेई ब्रह्मादिक जे अनेक मत करिकै आपने को करता मानि लिये हैं तिनके संग तुम न लागौ अर्थात् अनेक मतनमें तुम परौ तुम साहेब को जानौ ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौ० सांचीबात कहौं मैं अपनी। भया देवाना औरकी सपनी६

सो कबीरजी कहैहैं कि सांचीबात मैं अपनी कहो हौं अपनी कौन की मैंनाना मतन को छांड़ि साहब को जान्योहै सो तुमनहीं बूझो हौ और की सपनी कहे स्वप्नवत झूठी नाना मतनकी बाणीनें देवाना कहे बिकल हेजीवौ ह्वै रहेहौ सो नानामत त्यागि साहब को जानौ कहे औरकी पुनीजो या पाठ होयताको अर्थ या है सांचीबात अपनी मैं कहता हूं जोमेरे मतमें साहबको जानताहै सोई सांच है यासुनि पुनिऔर का जो भया सोई देवाना है ६॥

चौ० गुप्त प्रगटहै एकै मुद्रा। काको कहिये ब्राह्मण शुद्रा ७
झूठगर्ब भूलै मतिकोई। हिंदू तुरुक झूठ कुल दोई ८

सो हेजीवौ गुप्त कहे जब समष्टिमें रहेहौ तबहूं औ जब प्रगट कहे व्यष्टिमें रहे हौ तबहूं एकही मुद्रा रहेहौ अर्थात् साहिबै के रहेहौ तमजे नाना मतन में परि नाना साहेब मानि ब्राह्मण शूद्र कहतेहौ सो झूठेहौ जीवत्व तो एकही है ७ मैंहिं दूहौं मैं तुरुक हौं यह झूठो गर्व करिकै मति कोई भूलौ बिचारि कै देखौ तौ हिंदू तुरुक कुल ये दोऊ झूठेहैं तुमतौ साहब के हौ ८॥

साखी॥ जिन यह चित्र बनाइया सांचासूत्र सिधारि।
कहहि कबिर ते इजन भले चित्रवंतहिलेहिविचारि ६

जिन यह नाना चित्र बनाइ या कहे जिन यह जीवको मन नाना शरीर जगत् में बनायो है तौने को सूत्र धारी साहब सांचो है जौन सब को सुरति दियो है सो कबीरजी कहैहैं चित्रवंत जो यामन नाना देह देनवालो याको जो कोई बिचारि लियो कि या मिथ्याहै औ सांच साहबको जानि लियो ते जन भले हैं ६॥ इति छब्बीसवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ सत्ताईसवीं रमैनी॥

चौ० ब्रह्मा को दीन्हो ब्रह्मण्डा। सात दीप पृथुमी नौ खण्डा १
सत्य सत्य कै बिष्णु दृढ़ाई। तीनि लोक महराखिनिजाई २
लिंग रूप तब शंकर कीन्हा। धरती कीलि रसातल दीन्हा ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब अष्टंगीरचो कुमारी। तीनिलोक मोहनि सबझारी ४
द्वितिया नाम पार्बति भयऊ। तप करता शंकर को दयऊ ५
एकै पुरुष एक है नारी। ताते रचिनि खानि भौ चारी ६
सरवन बरवन देवो दासा। रजगुण तमगुण धरनि अकासा ७
साखी ॥ एक अंडऊ कारते यह जग सब भयौ पसार।
कह कबीर सब नारिरामकी अबिचलपुरुष भतार ६ ॥

चौ० ब्रह्माकोकोदीन्होंब्रह्मखंडा। सातद्वीपपृहुमीनौखण्डा १
सत्य सत्यकैबिष्णुदृढ़ाई। तीनिलोकमहराखिनिजाई २

अष्टांग कौन है भूमिरायोनलोवायुःस्वंमनोबुद्धिरेवच ॥ अहंकारइतीयं मेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा ॥ ऐसी जो इच्छा रूपी नारि अष्टांगी सो ब्रह्मा को ब्रह्मखंड देतभई औ सात द्वीप नवौ खण्ड पृथ्वी बिष्णु को दैकै तीनि लोक मेरा खिनि कहे व्यापक करिदेत भई औ बिष्णको नाम सत्य धरावत भई सो आठ नाम में प्रसिद्धहै हरिः सत्योजनार्दनः सो जब ब्रह्मा बिष्णु दोऊ अपने अपने को मालिक मानि लरे तब महादे जीव कह्यो कि हम लिंग बढ़ावै हैं जोई अंतलै आवै सोई बड़ो २ ॥

चौ० लिंगरूपतब शंकरकीन्हां। धरती फोरि रसातलदीन्हा ३

तब महादेव जी सात लोक नीचे के सात ऊंचेके तामंकीलवत लिंग बढ़ावत भये ब्रह्मा बिष्णु दोऊको पठयो कि जाय अंत लै आवो सोबिष्णु जायकै या कह्यो कि हम अंत नहीं पाये ब्रह्मा कह्यो हम अंत लै आये सुरभी के दधते नहवायो केतकी के फूलते पूज्यो है सो सुरभी औ केतकी साखी हैं तब महादेव तीनौंको झूठ जानि तीनौं कोशाप दियो ब्रह्मा को कह्यो लोक में अपूज्य होउ सुरभीको कह्यो तुम्हारोमुख अशुद्ध होइ केतकी को कह्यो हमपर न चढ़ौ औ बिष्णु को प्रसन्न हवै कै या कह्यो कि तीनलोकमें पूज्य होउ तुमसत्य कह्योहै यहपुराणन में कथा प्रसिद्धहै ३ ॥

चौ० तबअष्टंगीरचो कुमारी। तीनिलोक मोहनिसबझारी ४
द्वितिया नाम पार्वतिभयऊ। तपकरताशंकरकोदयऊ ५

तब अष्टंगी जो कारण रूपा शक्ति सो प्रसन्न हवैकै तीनि लोक की मोहनहारी कुमारी सती रचिकै तप करता जे दक्ष हैं तिन के द्वारामहादेवजीको देत भई तौ नेहीको दूसरो पार्वती नाम भयो ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौ० एकैपुरुष एकहै नारी। ताते रचिनि खानि भै चारी६
शर्मनबर्मनदेवोदासा। रजगुणतमगुणधरणिअकासा७

एकै पुरुष जोहै ब्रह्म अरु एकै नारी जोहै माया ताते चारि खानि के जीव उत्पत्ति होत भये अंडज पिंडज स्वेदज उद्भिज ६ औ शर्मन बर्मन देवोदासा कहे शर्मन ब्राह्मण बर्मन क्षत्री देवोवैश्य दासाशूद्र अथवा शर्मन कहे श्रोता बर्मन कहे बक्ता अरुदेवता औ उनके दास रजोगुणी तमोगुणी और धरती औ आकाश होत भये ७॥

साखी॥ एकअंड ओंकार ते यह सब जगभयो पसार॥
कह कबीर सबनारिरामकी अबिचलपुरुषभतार ८

मंगलमें पांचब्रह्म पांच अंडमें राख्यो है या कहि आयेहैं सो तामें शब्द ब्रह्मरूप जो है अंडप्रणवतापृतिपाद्य जो ब्रह्म सोमाया सबलितह्वैइच्छा आदि अष्टांगी उत्पन्न कै जगत् पैदाकियोहै सो कबीरजी कहैंहैं कि धोखा वहीहै प्रणव प्रतिपाद्य श्री रामचन्द्रही हैं काहेते रामनामही के जगत् मुख अर्थते प्रणव प्रगट भयो है ताते प्रणव प्रतिपाद्य श्रीरामचन्द्रही हैं यह रामनाम को साहब मुख अर्थ रामतापिनी में प्रसिद्ध है ताते हे जीवो तुमसब रामचन्द्रही की नारीहौ अबिचल कहे न चलायमान निर्विकार सदा एकरस ऐसे भतार कहे स्वामी तुम्हारे श्रीरामचन्द्रही हैं जीव चित् शक्ति माया अष्टांगी आदि अचित् शक्ति ई दूनों शक्ति उनहीं कीहैं याते पति श्रीरामचन्द्रहीहैं इहां कबीरजी मायामें सबपरेहैं या देखाय साहबको लखायो इहां सबजीवनको या देखायो कबीरजीकि तुम रामकी नारीहौ और पुरुषकरोगी तौ मारीजाउगी ८ इति सत्ताईसवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथअट्ठाईसवींरमैनी॥

चौ० अस जोलहाका मर्म न जाना। जिन जगआइ पसार लताना १
महि अकाश दुइ गाड़ बनाई। चन्द्र सूर्य दुइ नरा भराई २
सहस तार लै पूरि न पूरी। अजहूं बिनय कठिन है दूरी ३
कहहिं कबीर कर्म सों जोरी। सूतकुसूत बिनय भल कोरी ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौ० असजोलहाकामर्म न जाना। जिनजगआयपसारलताना १
महिअकाश दुइगाड़बनाई। चंद्र सूर्य दुइनरा भराई २

यहिभांति को जोलहा जो मनहै जौनजगतमें तानापसार्‌यो है कहे बाणी पसार्‌योहै ताको मर्म कोई न जानत भयो भतार श्रीरामचन्द्र को भलिगये धोखाब्रह्म नानापति खोजनलग्यो १ महि औ अकाशकहे अर्द्ध ऊर्ध्व दुइगड़वा बनावतभये तामें चन्द्र सूर्य इला पिंगलाहै तिनकरनरा भरावत भये २॥

चौ० सहसतारलै पूरिनपूरी। अजहूं बिनयकठिनहै दूरी ३
कहहिंकबीरकर्मसोंजोरी। सूतकुसूत बिनय भलकोरी ४

अरु तार जोहै प्रणव ताको हजारन दोनों कुम्भकर्म जपतभये अजहूं लौं वाहीमें लगेहैं औ यहकहेहैं कि कठिन दूरिहै ३ कबीरजी कहेहैं जब तानाकोताग टूटिजाइहै तब कोरी भिजैके जोरिदेइहै ऐसे वह साधक अभ्यासरूप कर्मते जोरिदेइहै सो कर्मकीलाठिन में बांधिकै सूत जो है जीव कुसूत जोहै बाणी ताको जोलहाजो मनहै सोबिनैहै अथवा बिद्या अबिद्या सूतकुसूत बिनैहै जब वस्तु तय्यारहोइजाय है तब जोलहा को बिनिबो छूटैहै सो धोखाब्रह्म में लागि अनादिकालतेबिनतईहै जब साहब को जानै तब साधनरूप कर्मकरिबो छूटिजाइ हंसरूप साहबदेइ जरामरणमिटिजाइ ४ इति अट्ठाईसवीं रमैनीसमाप्तम्॥

अथउनतीसवींरमैनी॥

चौ० बज्रहु ते तृण क्षणमें होई। तृणते बज्रकरै पुनि सोई १
निझरूनरू जानिपरिहरई। कर्मकबांधल लालचकरई २
कर्मधर्मबुधिमतिपस्हिरिया। झूठानाम सांचलै धरिया ३
रजगतित्रिबिधिकीनपरकाशा। कर्मधर्मबुधिकेरबिनाशा ४
रविकेउदय ताराभो छीना। चरवेहर दोनों में लीना ५
बिषकेखायेबिष नहिंजावै। गारुड़सोइजोमरतजिआवै ६
साखी॥अलख जो लागी पलकमों पलकहि मों डसिजाय॥
बिष हर मन्त्र न मानही गारुड़ काह कराय ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौ० बज्रहुतेतृणक्षणमेंहोई। तृणते बज्रकरै पुनिसोई १
निझरूनरूजानि परिहरई। कर्मकबंधनलाललकरई २

बज्रहु तृण क्षणमें करिदेइहै अरु तृणते बज्रकरिदेइहै ऐसे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको जानैं १ निझरूनरूकहे जिनको मायाब्रह्मको धोखानिझरि गयो कहे मिटिगयो ऐसे जे नरहैं ते पूरागुरुपाइकै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र तिनको जानिकै संपूर्ण जगत्के कर्म त्यागिदेइँहैं औ जे कर्ममें बँधे हैं ते अनेकलालचकरेहैं कोई द्रव्यादिक की कोई ब्रह्ममिलन की कोई ईश्वरनकी २ ॥

चौ० कर्मधर्मबुधिमतिपरिहरिया। झूठानामसांचलैधरिया ३
रजुगतित्रिबिधिकीनपरकाशा। कर्मधर्मबुधिकेरबिनाशा ४

साहबके मिलनवारो जो कर्मधर्मबुधिहै ताको त्यागिदेतेभये झूठेझूठेजे देवताहैं तिनको नाम सांचमानिकै जपतभये ३ गुरुवालोग रजोगुणीतमोगुणी सतोगुणी तीनप्रकारकेमत प्रकाशकैकै साहबके मिलनवारो जो कर्म धर्म बुधिहै ताको नाशकरिदेतभये ४ ॥

चौ० रबिकेउदयतारा भो छीना। चरवेहर दोनोंमें लीना ५
बिषकेखायेबिषनहिंजावै। गारुड़सोजोमरतजिआवै ६

गुरुवालोग हे जीवो तुमको उपदेश देयँहैं जैसे सूर्यके उदय मों तारा को तेजछीणह्वै जायहै ऐसे जब ज्ञानभयो जीवत्वमिट्यो तब चर औ वेहर जो अचर ये दोनोंमें लीनह्वैजायहै चरअचर ब्रह्मरूपते आपनेन को मानैहै ५ सो साहब कहेहैं कि हेजीवो ऐसो उपदेश जो गुरुवालोग तुम्हैं दियो सो ठीकनहीं है काहेतेकि संसारबिष उतारिबेको तुम धोखाब्रह्ममें लगेहौ सो बिषकेखाये बिष नहीं जाइहै यह धोखाब्रह्मबिषरूपैहै संसार देनवारोहै गारुड़सो कहावैहै जोमरतमें जिआइलेइ सो मेरोज्ञान धोखा ब्रह्म बिषते बचाइ कालते बचाइलेइ ताको जानो ६ ॥

साखी॥अलखजोलागीपलकमों पलकहिमोंडसिजाय॥
बिषहरमंत्र न मानही गारुड़काह कराय ७

अलख जो वह ब्रह्महै सो सबके पलकमें लाग्योहै अर्थात् पल पलमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यानकरैहै औएकपलहीमें डसिजायहै अर्थात् जो गुरुवनके मुंहैते कह्यो सो पलैमें वा ज्ञान लगिजायहै सो साहब कहैहैं कि तैं मेरीहै मेरोतरफ़ आउ यहि बिषको हरनवारो जो ज्ञान ताको तो मानतही नहीं है मैं जो गारुड़ सो काहकरौं ७ इतिउनतीसवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथतीसवींरमैनी ॥

चौ० औ भूले षटदरशन भाई। पाषण्डभेष रहा लपटाई १
जीवसीवका आयनसौना। चारचोवद्ध चतुरगुणमौना २
जैनी धर्मकमर्म न जाना। पातीतोरि देव घरआना ३
दवना मरुवा चंपा फूला। मानोंजीवकोटि समतूला ४
औ पृथिवी को रोम उचारै। देखत जन्मआपनो हारै ५
मनमथ बिन्दुकरै असरारा। कलपैबिन्दुखसै नहिंद्वारा ६
ताकर हाल होय अदगूचा। छादरशनमें जौन बिगूचा ७
साखी ॥ ज्ञान अमर पद बाहिरे नियरे ते है दूरि ॥
जो जानै तेहि निकटहै रह्यो सकल घटपूरि ८

चौ० औभूले षट् दरशन भाई। पाषंडभेष रहा लपटाई १
जीवसीवकाआयनसौना। चारोवद्धचतुर गुण मौना २

पाषंड वेषजो धोखा ब्रह्म सो सर्बत्र लपटाइ रह्यो है ताहीमें षट-दर्शन जे हैं तेऊ भूलिगये १ यह जो धोखा ब्रह्म को ज्ञान है सो जीव जोहै ताको सीव जो कल्याण है सोनशावन वारो है औ चारो प्रकार के जीव जे हैं तेऊ वद्धहै जे चतुर हैं ते गुणमौनाक हे गुणातीतहैं परंतु वोऊ धोखा ब्रह्मही में हैं २ ॥

चौ० जैनी धर्मकमर्म न जाना। पातीतोरि देवघर आना ३
दवना मरुवाचंपा फूला। मानोंजीवकोटि समतूला ४

अरु जैनी जे नास्तिक हैं ते धर्म को मर्म नहीं जान्यो काहेते कि बांधेतो मुंहै पट्टीरहै हैं कि कहूं किरवा न घुसि जाय जीव को बचावै हैं कि हिंसा हम न करैंगे सो जिन वृक्षन में जीवहैं तिनकी पाती को तोरि कै पाषाण जे पारसनाथ देव हैं तिन में चढ़ावै हैं ३ दवना औ मरुवा औ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंपा के फूल को तोरिकै कोटिन जे जीवहैं ते सूंघि कै अघाय हैं तिनको तोरि तोरिकै पारसनाथकी मूर्ति में चढ़ावै हैं सो अरे मूढ़ो प्रत्यक्ष जे जीव वृक्ष हैं तिन का पत्र को तोरिकै जड़जो पाषाण है तामें काहे को चढावो हौ तुमतो प्रत्यक्ष प्रमाण मानौहौ कर्म किये फल होयहै या मानतही नहीं हौ पाषाण पूजे कहा फल होइगो ४ ॥

चौ० औ पृथिवी को रोम उचारै। देखत जन्म आपनो हारै ५
मन्मथ बिंदु करैअसरारा। कलपैबिंदुखसै नहिंद्वारा ६
ताकरहाल होय अघकूचा। छादरशनमें जौन बिगूचा ७

औ पृथ्वी के रोमा जे हैं वृक्ष तिन को चेलनते उखरावै हैं औ स्त्रिष्यन की स्त्रिन को देखि कै भोग करिकै अपनो जन्म हारिदेइ हैं कहे नरक को जाय हैं ५ साधन करिकै मन्मथ के बिन्दु को असरार कहे सरल करैहैं औ कन्यन ते भगिनी नाते औ उन की स्त्रिन ते भोग करै हैं तब वह बिन्दु ऊपरते नीचेको कल्पत है कहे बढ़त है औ पुनि नीचे ते मेरु दंड ह्वैकै ऊपर को चढ़ाइ लै जाइहै ६ सो जे जैन धर्मी हैं छःदर्शन में बिगूचा कहे भूलि गये हैं तिनकी औ जिन को कहि आये हैं बीर्य बढ़ावन वारे तिनको हाल अघकूचा कहे नरकन में कूचेजाहि हैं ७ ॥

साखी ॥ ज्ञान अमर पद बाहिरे नियरे ते है दूरि ॥
जोजानै तेहि निकटहै रह्यो सकल घट पूरि ८

अमर पद कहे आत्मा को जो स्वस्वरूप है सो साहब को अंशहै दास है सोई अमर है ताको ज्ञान नियरें ते दूरिहै औ बाहिरे है इहां नियरे ते दूरि कह्यो ताते अपने को ज्ञान नहीं है औ बाहिरे है कहे बहुत दूरि देखि परैहै परंतु जो सतगुरु भेद बतावै है तौ ज्ञान होइ है आत्मा के स्वरूपको जानैहै ताको साहब निकटही है काहे घटघट में तौ पूर्ण है तौ आत्मा के निकटै है ८ इति तीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथइकतीसवीं रमैनी ॥

चौ० स्मृति आहि गुणन को चीन्हा। पापपुण्य को मारग लीन्हा १
स्मृति वेद पढ़े असरारा। पाषण्ड रूप करै अहंकारा २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ै वेद औ करै बड़ाई । संशय गाठि अजहुं नहिंजाई ३
पढ़िकैशास्त्र जीवबध करई । मूड़ काटि अगमन कै धरई ४
साखी । कह कबीर पाषडते बहुतक जीव सताय ॥
अनुभवभावन दर्शई जियत न आपुलखाय ५

चौ० स्मृतिआहिगुणनकोचीन्हा । पाप पुण्यकोमारगलीन्हा १
स्मृति वेद पढ़ै असरारा । पाषँडरूप करै अहँकारा २

स्मृति कहे स्मृति गुणनको चीन्हा आप कहे तीनों गुण स्मृति में देखिपरै काहे ते कि पाप पुण्यको मार्ग कीन्हेहैं अर्थात् पाप पुण्यके मार्ग वहीते जानि परैहैं १ रारा जो जीव स्मृति वेदका असपढ़तहै पाषंडरूप ह्वैकै या अहंकार करैहै जानिबेके लिये नहीं पढ़ैहै अर्थात् हमबिद्या में जीतैकोईबिद्यामानजानि हमैं मानै चेला होइ इत्यादिकछूआपनैपढ़ैहै२॥

चौ० पढ़ै वेद औ करै बड़ाई । संशय गांठि अजहुंनहिं जाई ३
पढ़िकै वेदजीवबध करई । मूड़काटि अगमन कै धरई ४

वेद पढ़ैहै सब देवतनकी बड़ाईकहेस्तुतिकरैहै अथवा अपनीबड़ाईकरै है कि महापंडित हौं संशयकी गांठिजो परिगईहै सो अजहूं नहीं जाइहै वेदांत शास्त्र आदि पढ़ैहैं आत्मासर्बत्र है याकहैहै पै चैतन्य जो जीवहै ताको मूड़ काटिकै पाषाणकी मूर्ति है ताके आगू धरैहै ४ ॥

साखी ॥ कहकबीर पाषंड ते बहुतक जीव सताय ॥
अनुभवभावनदरशई जियतनआपुलखाय ५

कबीर जी कहैहैं कि यहिपाषंड ते बहुत जीवनको सतावत भये उन को अनुभव को भाव नहीं दरशैहै कि जैसे हममारैहैं तैसे येऊ हमको मारैंगे जब भरजिअैहैं तब भर अपनी इच्छा नहीं करैं हैं जेहिते बचैं ५
इति इकतीसवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथबत्तीसवींरमैनी ॥

चौ० अंध सो दर्पण वेद पुराना । दरवी कहा महारस जाना १
जस खर चन्दनलादे भारा । परिमलबासन जानगँवारा २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह कबीरखोजै असमाना । सो न मिला जोजाय अभिमाना ३

जैसे आँधर को दर्पण वह आपनो मुख कहा देखै औ, दरवी जो कर-छुलीहै सो पाकके रसको कहाजानै १ औ गदहा चन्दन को लादे चन्दन को सुवास कहाजानैं तैसे गँवारजे हैं ते वेदपुराण को तात्पर्यार्थजे साहब हैं तिनको कहाजानैं जोगरवीपाठ होय तो या अर्थहै अहंकारी लोगमधुर रसका का जानैं २ सोकबीरजी कहैहैं कि आसमान जो निराकार धोखा ब्रह्म ताको खोजैहैं सो वातो झूठईहै सो पुरुषयाको न मिला जाकेउप-देशते अहंब्रह्म को अभिमानजाय औ साहबको जानिलेय ३ इति बत्ती-सवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथ तेतीसवींरमैनी ॥

चौ० वेदकी पुत्री स्मृति भाई । सो जेवरि कर लेते आई १
आपुहि बरी आपु गरबन्धा । झूठी मोह कालको धंधा २
बँधवतबंध छोड़िना जाई । बिषयस्वरूपभूलिदुनिआई ३
हमरे लखतसकल जगलूटा । दासकबीर रामकहिकूटा ४

साखी ॥ रामहि राम पुकारि ते जीभ परोगोरोस ॥
सूधाजल पीवैनहीं खोदिपियनकीहोस ५

चौ० वेदकी पुत्री स्मृति भाई । सो जेवरि कर लेतै आई १

इहां कर्मकांड उपासनाकांड ज्ञानकांड ये तीनोंकी कठिनता देखाइ तात्पर्य वृत्तिते छड़ाइ साहबमें लगावैहै कबीरजी कहैहैं कि हे भाइउ जौनी स्मृति को कर्म प्रतिपादक अर्थ करि कर्मरूप जेवरी में तुम बँधि गये हौ स्मार्त्त भये हौ सो स्मृति वेद की पुत्रीहै तौने वेदही को अर्थ तुम नहीं जानतेहौ धौं वाको तात्पर्य कर्म के छड़ाइबे में है धौं कर्मके बांधिबे में है तौ स्मृतिको अर्थ कब जानोगे सो वेदको तात्पर्य तौ कर्मते छड़ायबेहीमेंहै कैसे जैसेजीवनकी मांसमें आशक्ति स्वभावईतेहै वैसे छोड़ावै तौ न छूटै ताते वेद नेम बतावैहै कि मांसखाय तौयज्ञमें खाय ताते या आयोकि जब बहुत श्रमकरि बहुत द्रव्य लगाय यज्ञ करैगो तब थोड़ामांस बिनास्वादका पावैगो तामें या विचारैगो कि या थोड़मांस बिना स्वादकेखाये यामें कहाहै याविचारि मांसछोड़िदेयगो याभांति कर्मकांडको तात्पर्य निवृत्तिहीमेंहै औ स्मृति नाना देवतनकी उपासना कहैहैं सो उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजनकी यंत्र मंत्रकी पुरश्चरणकी बिधि कठिनहै जो करतमें सिद्धि भयो तौ उनके लोकको गयो जो कछू बीच परिगयो तौ बैकलाइकै मरिजाइ है याभांति उपासना कांडको तात्पर्य निवृत्तहीमेंहै औ स्मृतिज्ञानकांड जो कहैहैं सो मनको साधन कठिनहै काहेते कि जो अहंब्रह्मास्मि मान सर्ब कर्मनको त्यागिदियो औ दूसरी बुद्धि न गई तौ पतित ह्वैजाइहै तामें एक इतिहासहै एकराजाके गोहत्यालगी सोहत्याआई तब राजाकह्यो कि सर्बत्र ब्रह्महीहै हमहूं ब्रह्महैं हमको हत्या काहेको लगैगी हाथके देवता इंद्र हैं सो इंद्रहीको लगैगी इत्यादिक जवाब देतभयो तब वहहत्या राजा की बेटीके पासगई सो वो श्रृंगारकरि रानीके पलंगमें परिरही तहां राजा आये कन्याको परी देखी तब कह्योकि तू कहापरीहै तब कन्याकह्यो जैसे रानी तैसेमैं ब्रह्म तो एकहीहै तब राजा उलटिचले हत्या राजाके शिरमें चढ़ि बैठी याभांति ज्ञानकांडहूको तात्पर्य निवृत्तिहीमेंहै कि जौनसरल उपाय वेद तात्पर्य कैकै बतावैहै कि मनादिकनको छोड़िकै रामनामको जपै साहबको ह्वैजाय तौमुक्ति ह्वैजाइ तामें प्रमाण॥द्वापरान्ते नारदो ब्रह्माणंप्रतिजगाम कथंनु भगवन् गांपर्य्यटन्कलिंसंतरेय मितिसहोवाच भगवत्॥ आदिपुरुषस्य नारायणस्यनाम्नेति नारदःपुनः पप्रच्छभगवतः किंतन्नामेतिसहोवाच हरेरामहरेराम रामराम हरेहरे श्रुतिः॥ आदिपुरुष भगवान नारायणके नामहैं उद्धार करनवारे सो नारायणनाम सुनावहू कियो औ पूछ्योकिकौननामहै तब रामनामकोबतायो तेहिते उद्धारकर्त्तारामनामही है पुनि स्मृतिहू कहैहै॥सप्तकोटिमहामंत्रा श्चित्तविभ्रमकारकाः। एकएवपरो मंत्रो रामइत्यक्षरद्वय॥ताते वेदको तात्पर्य कर्मकांड उपासनाकांड ज्ञानकांडतीनोंकेत्यागमेंहैसाहबकेमिलाइबेमेंहैतामें प्रमाण॥सर्वेवेदायत्पदःसामनंति इतिश्रुतेः॥ औ कबीरहूजी कह्योहै कि वेदको अर्थ उलटिकै कहे तात्पर्य ते समुझै तो तौने अर्थ वेदको सांचहैं अपरोक्ष अर्थतौझूठोहै तामें प्रमाण॥दौरधूप सब छोड़ो सखिया छोड़ो कथापुरान। उलटि वेदका भेद लखौ गहि सारशब्द गुरुज्ञान॥ दूजोप्रमाण॥आसन पवन किये दृढ़रहुरे। मनकोमैल छांड़िदेबौरे॥ काह्वंगी मूड़ा चमकाये। क्या बिभूति सब अंग लगाये॥ क्याहिंदू क्यामूसलमान। जाको साबित रहै इमान॥ क्याजो पढ़ियावेदपुरान। सोब्राह्मणबूझैब्रह्मज्ञान॥ कहैकबीर कछुआननकीजे। रामनामजपिलाहालीजे॥ सोस्मृतिमें जोतुमको नानाअर्थ भासमानहोयहै सोई बंधनरूपजेवर करमेंलेतैआईहैसोवा जेवरि तुम्हारहीबरीहै१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौ० आपुहिबरी आपुगरबंधा। झूठामोह कालकोधंधा २

सो आपही स्मृतिको कर्म प्रतिपादनकरि कर्मरूप रसरी बरिकै आपही गरबांधत भयो अर्थात् कर्म करनलग्यो झूठाजो मोहहै तामें परिकै कालको धन्धा बनावतभयो अर्थात् नाना देहधरतभयो कालमारतभयो साहबको जो तात्पर्यते स्मृति बतावै है ताको मासबुझावतभयो २ ॥

चौ० बँधवतबंधछोंड़िनाजाई। बिषयस्वरूपभूलिदुनिआई ३
हमरेदेखत सबजगलूटा। दासकबीर रामकहिछूटा ४

सो बांधतो बांध्यो पै वह बंधते छोड्यो नहीं छूटैहै बिषयमें सब दुनिया भूलिगई मांस खाइबेको चाह्यो तौ छागरमारि बलिदान देखाइ लियो औ सुरापानहू करिबेको चाह्यो औ बेश्या राखिबो चाह्यो तौ बाम मारगलियो इत्यादिक अर्थ करिकै ३ सो कबीरजी कहैहैं कि हमारे देखत देखत यहमाया संपूर्ण जगको लुटिलियो सो मैंतौ रामै कहिकै छूटिगयो सोमैं सबको बताऊंहौं सो दुष्टजीव नहीं मानै ४ ॥

साखी ॥ रामहिंरामपुकारते जीभपरीगोरोस ॥
सूधाजलपीवैनहीं खोदिपियनकीहोस ५

मोको रामैराम पुकारत पुकारतकी राममें लगी जीभमें रोस परिगयो कहे ठहर परिगयो पैजीव न मानतभये सो सूधा जलतो पीवै नहीं है कि सीधे रामकहै तरिजाय वही धोखा ब्रह्ममें लगाइकै नानामत दक्षिण बामादिक करिकै खोदिकै जलपियनकी होसकरैहै कहे आशा करैहै सो येतो सब धोखाईहै मुक्ति कैसे होयगी सीधे रामजपि स्वामी सेवक भाव करि संसार सागरते उतरि काहे नहीं जायहै ५ इति तेंतीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ चौंतीसवीं रमैनी ॥

चौ० पढ़ि पढ़ि पण्डित करि चतुराई। निज मुक्तिहि मोहिंकहु बुझाई १
कहँ बसै पुरुष कवन सो गाऊं। सो म्वहिं पण्डित सुनावहु नाऊं २
चारि बेद ब्रह्मा निज ठाना। मुक्तिक मर्म उन्हौं नहिं जाना ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दान पुण्य उन बहुत बखाना। अपने मरन कि खबरि न जाना ४
एक नाम है अगम गँभीरा। तहवां अस्थिर दास कबीरा ५
साखी॥ चीटी जहां न चढ़ि सकै राई नहिं ठहराय।
आवा गमन कि गमनहीं तहँ सकलौ जगजाय ६

चौ० पढ़िपढ़िपण्डितकरिचतुराई।निजमुक्तिहिमोहिंकहौबुझाई
कहँबसैपुरुषकवनसोगाऊं। सोमोहिंपण्डितसुनावहुनाऊं२

हे पंडितौ पढ़ि पढ़ि कै चतुराई करौहौ सो अपनी मुक्ति तौ समझाइ कहौ कहां ते तिहारी मुक्ति होइहै जौने को मुक्ति मानेहौ सो ब्रह्मधोखा है १ अरु वह ब्रह्म लोक प्रकाश है सो जाके लोक को प्रकाश है सो वह पुरुष कहां बसैहै ताको गाउँ कौन है सो मोको बतावो अरु वाको नाउँ बताओ वह कौन है २॥

चौ० चारिबेद ब्रह्मानिज ठाना। मुक्तिक मर्मउन्हौं नहिंजाना ३

चारि बेद को हम कियो है औ हमहीं जानै हैं हमहीं पढ़े हैं यहब्रह्मा मानत भये पै वेदको तात्पर्य्यार्थ मुक्ति को मरम वोऊ न जानत भये काहे ते कि जो जानते तो रजोगुणी अभिमानी ह्वै कै जगत की उत्पत्ति काहेको करते ब्रह्महू को भ्रम भयोहै सो प्रमाण मंगल में कहिआये हैं तौ पंडित कहां जानै वही धोखा में पण्डित लोग लगावत भये कि वह जो ब्रह्म सर्बत्र पूर्ण है सोतुही है अहंब्रह्मास्मि यह भावना करु सो वातो जीवही अनुभव है जीव ब्रह्म कैसे होइगो अरु पण्डित कहां बतावै वाको तौअनामा कहै हैं अरु वाको बस्तु गाउं कहां बतावैं वाको तो देश काल बस्तु ते रहित कहै हैं सो जाके नामरूप नहीं है देशकाल वस्तुते रहितईहै सो वह है कि नहीं है जो कहो अनुभवमें तौ आवैहै तौ तौ अनुभवौ तौ जीवहीकोहै जो यह बिचारिबो धोखाईभयो तौ जीवब्रह्म कैसे होइगो ३॥

चौ० दानपुण्यउनबहुतबखाना। अपनेमरनकिखबरिनजाना ४
एक नामहै अगम गँभीरा। तहवाँ अस्थिरदास कबीरा ५

अरु कर्म काण्ड वारे दान पुण्य बहुत बखान्यो है पै अपने मरिबेकी खबरि नहीं जान्यो कि यह काल बहुत दान पुण्य वारेन को खाइलियो है हम कैसे बचैंगे ४ जौने नाम में लगे जन्म मरण नहीं होइ है औअग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म है कहे जे संत लोग हैं तेई पावैहैं अरु गँभीर पदहै कहे गहिर अर्थ है सो कबीरजी कहै हैं कि तौने नाम में मैं स्थिर हौं ५

साखी ॥ चींटी जहां न चढ़ि सकै राई नहिं ठहराय।
आवागमन कि गमनहींतहँ सकलौ जगजाय ६

वो ब्रह्म कैसो है कि चींटी जो बाणी है सो नहीं पहुंचै औ राई जो बुद्धिहै सो नहीं ठहराय अर्थात् मन वचन के परेहै औ आवागमनकी गम नहीं है अर्थात् ब वहां ते कोई आवै है न यहां ते कोई जाय है अर्थात् मिथ्या है तहां सिगरो जग जाय है ६ इतिचौंतीसवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथपैंतीसवीं रमैनी ॥

चौ० पंडित भूले पढ़ि गुण वेदा। आपु अपनपौ जानु न भेदा १
संध्या तर्पण औ षट कर्मा। ई बहु रूप करहिं अस धर्मा २
गायत्री युग चारि पढ़ाई। पूंछहु जाइ मुक्ति किन पाई ३
और के छुये लेत हौ सींचा। तुमते कहौ कौन है नीचा ४
यह गुण गर्ब करौ अधिकाई। अति के गर्ब न होइ भलाई ५
जासु नाम है गर्ब पूहारी। सोकस गर्बहि सकै सिहारी ६
साखी ॥ कुल मर्यादा खोइकै खोजिन पद निर्बान।
अंकुर बीज नशाइकै भये बिदेही थान ७

चौ० पण्डित भूले पढ़ि गुणबेदा। आपु अपनपौ जानुनभेदा १

पण्डित जे हैं ते गुण भेद कहे त्रैगुण्य बिषयक जो वेद है ताको भूलि गये कहे वेद को तात्पर्य्य त्रैगुण्य जानत भये कौन तात्पर्य न जान्यो सो कहै है कि न आपुको जान्यो कहे आपने स्वस्वरूप को न जान्यो कि मैं साहब को अंश हौं औ अपनपौ न जान्यो कहे याके प्रिय सखा साहब हैं तिनहीं ते जीव को अपन पौ है तिनको न जान्यो यह देश बोली है कि फलाने सों अपन पौ है कहे सख्यहै अरु जीवसाहबको सखा है तामें प्रमाण द्वासुपर्णास्युजायाया इति श्रुतेः १ ॥

चौ० संध्या तर्पण औ षट कर्मा। ई बहुरूप करहिं असधर्मा २
गायत्री युग चारि पढ़ाई। पूछहु जाइ मुक्ति किन पाई ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरु संध्या तर्पण औ षटकर्म इनहीं आदिदैकै बहुरूप कहे बहुतभांति के जे धर्महैंतिनको करैहैं २ अरु साक्षात वेदमाता गायत्री ताकोचारियुग में ब्राह्मण क्षत्री बैश्य उपदेशपावै है कहो मुक्तिकेहिकी भईहै काहेते वाको तात्पर्य तौ यहहै कि जब साहब को स्वरूप अरु आपनो स्वस्वरूप जानै तौ मुक्तिहोइसो साहेबको स्वरूप औ आपनो स्वस्वरूपतो जानतई नहीं है मुक्तिकैसे पावै ३॥

चौ० और के छुये लेत हौ सीचा। तुम ते कहौ कौन है नीचा ४
यह गुण गर्बकरौ अधिकाई। अति केगर्ब न होइ भलाई ५
जासु नाम है गर्ब प्रहारी। सोकसगर्बहि सकैसिहारी ६

और को छुवौहौ तौ गंगाजल सींचौ हौ कि पवित्र ह्वै जाय सो कहो तुमहीं ते कौन नीच है ४ मल मूत्रादिक तुमहीं में भरेहैं औ अपने गुण को गर्ब अधिक तुम करते हौ सो अति गर्ब किये भलाई नहीं होइ है काहेते कि ५ जाको नाम गर्ब प्रहारी है सो कैसेगर्ब को सिहारिसकै वह जो परम पुरुष है सो गर्ब प्रहारीहै तिहारो गर्ब कैसे सहैगो ६॥

साखी॥ कुल मर्यादा खोइ कै खोजेनि पद निर्बान।
अंकुर बीज नशाइ कै भये बिदेही थान ७

जे कर्म को त्याग किये हैं तिनको गांठिहूको धर्म गयो आपनी कुल मर्यादा तौ पहिले खोइ दियोहै औ निर्बान पद को खोजत भये अंकुर जो है सरति बीज जो है शुद्ध जीव आत्मा बीजजो है साहेब ता को नशाय कै बिदेही जो है ब्रह्म निराकार ताही के थान भये कहे आपने को ब्रह्म मानत भये सो जाको अनुभव है ब्रह्म ताको तौ भूलिही गये बिना अंकुर पाले कैसे होइगो अर्थात् धोखही में परे रहि गये वामेंकु-छु नहीं मिलैहै तामें प्रमाण कबीर जीको॥अंकुर बीज जहां नहीं नहीं तत्व परकाश।तहांजाय कालेउगे छोड़हु झूठी आश॥अर्थात् चेष्टा रहित ब्रह्मको खोजतभये सोवातो कुछु बस्तुहीनहीं है मिलिबोई कहांकरै७॥

इति पैंतीसवीं रमैनी समाप्तम्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ छत्तीसवीं रमैनी ॥

चौ० ज्ञानी चतुर बिचक्षण लोई । एक सयान सयान न होई १
दुसर सयानको मर्म नजाना । उत्पति परलय रैनि बिहाना २
बाणिजए कसबनमिलिठाना । नेम धर्म संयम भगवाना ३
हरि अस ठाकुर ते जिनजाई । बालन भिस्त गावँ दुलहाई ४
साखी ॥ तेनर मरिकै कहँ गये जिन दीन्हो गुरु छोट ।
राम नाम निज जानि कै छोड़हु बस्तू षोट ५

चौ० ज्ञानी चतुर बिचक्षण लोई । एक सयान सयान न होई १
दुसरसयानकोमर्मनजाना । उत्पत्तिपरलै रैनि बिहाना २

ज्ञानी जे हैं चतुर जे हैं बिचक्षण जे हैं तिनही लौ जेई लोगहैं अर्थात् सूक्ष्मते सूक्ष्म ताहूतेसूक्ष्म लौबिचारनवारे जे अद्वैतवादी सबलोगहैं ते एक जो ब्रह्म ताही में सयान जो भये कि महीं ब्रह्म हौं यही मानत भये तौ वे सयान नहीं हैं १ दूसर सयानजे द्वैत वादी हैं जे साहब को औ आपनेही को मानैं हैं ताको तौ मरमई नहीं जानैंहैं भूलि कै उतपति परलै कहे संसारकी जोउत्पत्ति प्रलय होत रहैहैं ताही में रैनि बिहाना कहे दिन राति जनमतमरत रहैं हैं २ ॥

चौ० बाणिजएकसबनमिलिठाना । नेमधर्म संयम भगवाना ३
हरिअस ठाकुरतेजिनजाई । बालनभिस्तगावँदुलहाई ४

एक बणिज सब मिलि ठानत भये नेम धर्म संयम इत्यादिक जे सब साधन हैं तिनही को भग कहे ऐश्वर्य्य मानि कै तिन में सब लागत भये ३ हरि कहे आरत के हरन हारे जे साहेबहैं तिन ते जिन जाइ कहे जेजे फरक ह्वैगयेहैं ते बालनकहे बालककी ऐसीहै बुद्धि जिनकी ऐसे जे जीव हैं ते भिस्त गाव दुलहाई कहे भिस्त जो स्वर्ग है ताहीको दुलहाइ कै गावत भये अर्थात् संयम नेम करि स्वर्ग में जाइ अप्सरन ते भोगकरै यही गावत भये ४ ॥

साखी ॥ ते नर मरिकै कहँ गये जिन्ह दीन्हों गुरुछोट ।
राम नामनिज जानि कै छोड़हु बस्तू षोट ५

जिन को गुरुछोट दियो है अर्थात् थोरे अक्षर को मंत्रदियो औ जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोट पाठ होइतौ यहअर्थ है कि गुरू उनको मूड़घोटिदियो अर्थात् मूड़ मूड़िदियो अथवा जूंठप्याला को घोटादैदियो पिआइदियो तेनर जे हैं हिंदू मुसल्मान ते मरिकै कहांगये अर्थात् कहूं नहीं गये संसारहीमें परे हैं सो अपनो जो रामनाम ताको जानिकै खोटबस्तु जो नानादेवतन की उपासना धोखाब्रह्म स्वर्गकी चाह ताको छांड़ो अंतमें उबार रामनामही करैगो तामें प्रमाण॥ मनरे जबतेरामकह्योरे। फिरिकहिबेकोकछु न रह्यो रे॥ का भो योगयज्ञजपदाना। जोतैंरामनामनहिंजाना॥ कामक्रोधदोउ भारे। गुरुप्रसाद सबतारे॥ कहैकबीरभ्रमनाशी। राजाराम मिले अबिनाशी ५ इतिछत्तीसवी रमैनी समाप्तम्॥

अथसैंतीसवींरमैनी॥

चौ० एक सयान सयान न होई। दुसर सयान न जानै कोई १
तिसर सयान सयानै खाई। चौथ सयान तहां लैजाई २
पँचयें सयान न जानै कोई। छठयें महँ सब गैलविगोई ४
सतयें सयान जो जानौभाई। लोक वेद मो देहु देखाई ५
साखी॥ बिजक बतावै बित्तको जो वित गुप्ताहोइ॥
शब्द बतावै जीवको बूझै बिरला कोइ ५

चौ० एकसयान सयान न होई। दुसरसयान न जानैकोई १
तिसरसयान सयानैखाई। चौथ सयान तहां लैजाई २

एक जो ब्रह्म ताहीमें जे सयान हैं अर्थात् वाहीको सांचमानैहैं और सब मिथ्याहै ते सयान नहीं हैं औ दूसर मायामें जे सयान हैं वे कहैंहैं कि मायाको हमजानैहैं सो माया तौ सतअसतते बिलक्षणहै ताकोकोई जानतही नहीं है कि कौनवस्तुहै १ अरु तीसर जो जीव तामें जे सयान हैं कि जीवात्मै सबका मालिकहै या बिचारैहैं ऐसे जे गुरुवालोग हैं ते सयान जो जीवहै ताको खाइहैं कहे पाषण्डमतमें लगाय नरकमें डारि देइहैं चौथ जो ईश्वर और सब देवता तामें जे सयानहैं अर्थात् उनकी उपासना जो करैहै ईश्वर देवता तिनको अपनेलोकको लैजायहै २॥

पँचये सयान न जानैकोई। छठये महँ सबगयेबिगोई ३
सतयेंसयानजोजानौ भाई। लोक वेद महँ देहु देखाई ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औ पाँचौइन्द्रिन की बिषय तिनमें जे सयानहैं ते तौ वेकहू जानतही नहीं हैं बद्धहीहैं अरु छठौ है मन ताहीते सबैगैल बिगोइ गईहै ३ सातवें सयान जो साहब ताकोजो जानौ तौ हेभाई लोक वेदमें मैं देखाय देउँ कि जेते बर्णन करिआये तिनते साहबपरेहै ४ ॥

साखी ॥ बिजकबतावै वित्तको जोवितगुप्ताहोइ ॥
शब्दबतावै जीवको बूझै बिरलाकोइ ५

श्री कबीरजी कहैहैं कि जैसे जौन बित्त गुप्तहोयहै कहे गाड़ाहोइ तौने धनको बीजक बतावैहै तैसे सारशब्द जो रामनाम बीजक सो साहब मुख अर्थमें जीवको बतावैहै कि साहब कोहै तेरोधन साहिबै है सो या बात कोई बिरलासाधु बूझैहै ५ इति सैंतीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथअड़तीसवींरमैनी ॥

चौ० यहिबिधिकहौं कहानहिंमाना। मारगमाहिं पसारिनिताना १
रातिदिवसमिलिजोरिनितागा। ओटतकातत भर्म न भागा २
भर्मै सबघट रह्यो समाई। भर्मछाँड़ि कतहूं नहिंजाई ३
परै न पूरि दिनोंदिन छीना। जहांजाहु तहँ अंगबिहीना ४
जोमत आदि अंत चलिआया। सोमतउनसब प्रगटसुनाया ५
साखी ॥ वहसँदेशफुरमानिकै लीन्हो शीशचढ़ाय।
संतोहै संतोषसुख रहहुतौ हृदयजुड़ाय ६

चौ० यहिबिधिकहौंकहानहिंमाना। मारगमाहँपसारिनिताना १

कबीरजी कहैहैं कि सतयुगमें सत्य सुकृत नामते त्रेतामें मुनीन्द्रनाम ते द्वापरमें करुणामय नामते कलियुगमें कबीर नामते मैंचारो युगमें जीवन को रामनाम को अर्थ साहबमुख समुझायो पै कोई जीव कहा न मान्यो वेदमार्गमें तानापसारत भये कहे अपने अपने मतमें अर्थ करिलेतेभये १॥

चौ० रातिदिवसमिलिजोरिनितागा। ओटतकाततभर्मनभागा २

औ रातिउ दिन तागा जोरतभये कहेवेदार्थको अपने अपने मत में लगावतभये अर्थात् जहां जहां अर्थ नहीं लगैहै तहांतहां अपने मतमें योजित करतभये औ ओटत कातत कहे शंकासमाधान करत करत भर्म न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग्यो इहां ताना प्रथम कह्यो ओटब कातब पीछे कह्यो सो प्रथम शंका समाधान करिकै काति ओटिकै ताना तनतभये अर्थ बनावत भये जब बन्यो तब फेर फेर शंका समाधान करि ओटि काति अर्थको ताना पसारत भये भर्म न भाग्यो एक सिद्धांत न भयो २ ॥

चौ० भर्मैसबघटरह्योसमाई । भर्मछोड़ि कतहूंनहिं जाई ३
परैनपूरदिनौदिनछीना । जहांजाहुंतहँ अंगबिहीना ४
जोमतआदिअंतचलिआया।सोमतउनसबप्रगटलखाया५

वही भर्म घट घट में समाइ रह्यो है भर्म छोड़िकै अनत न जात भये वही संशय में रहिगये ३ पूर नहीं परैहै कहे निश्चय नहीं होइहै दिनौदिन क्षीण होत जाइहै क्षीणकहां होइहै कि यह जानैहै कि हमारो अज्ञान दूरि भयो पै जहां जाइहै तहैं निराकार धोखई मिलैहै हाथकछु नहीं लगैहै ४ वेदको अर्थ तौ परोक्षहैकहे अप्रगट है तात्पर्य वृत्तिकरिकै साहब को लखावै तौन अनादि मत ताको न समुझतभये वहवेदको अर्थ गुरुवा लोग प्रगटकरिकै अर्थात् अपरोक्ष जौन आदि अंतते चलो आयो है ताको बल गिरिगयो ५ ॥

साखी ॥ वहसँदेश फुरमानिकै लीन्होशीश चढ़ाइ ॥
संतौहै संतोषसुख रहहुतौहृदय जूड़ाइ ६

वही तत्वमसी उपनिषद्को संदेश शीश चढ़ाइ लेतेभये वेदनमें बाणी में तात्पर्य करिकै सांचपदार्थ कह्यो ताको न जानत भये संतपद संतोष सुखहै तौने जो रहौतौ हृदय जुड़ाइ औरे संतो तापईहोइगो काहे ते सबते परेहै जाको साहब दूसरो नहीं है ऐसे जे चक्रवर्ती श्रीरामचंद्र हैं तिनको जबपायो तब उनते कम ब्रह्महोवे की ईश्वरके मिलिबेकी और मायिक जे पदार्थ हैं तिनके मिलिबेकी चाहई न होइगी काहेते कि वह चक्रवर्तीके मिलिबेके समसुख नहीं है ब्रह्मानंद विषयानंद आदिकनमें बलगैगोतहहीं सबते संतोष ह्वै याको मन शांतह्वैजाइगो ६ इति अड़तीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ उनतालीसवीं रमैनी ॥

चौ० जिन्हकलिमाकलिमाहँपढ़ाया । कुदरत खोजितिन्हैं नहिंपाया १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करि मत कर्मकरै करतूती। वेद किताब भया सबरीती २
करमत सोजोगर्भ औतरिया। करमत सोजोनामहिं धरिया ३
कर्मते सुन्नति और जनेऊ। हिंदू तुरुक न जानै भेऊ ४
साखी॥ पानीपवन संजोयकै रचिआई उतपात॥
सुन्यहिसुरतिसमानियाकासों कहियेजात ५

चौ० जिन्हकलिमाकलिमाहँपढ़ाया॥कुदरतखोजितिन्हैंनहिंपाया
करिमतकर्म करै करतूती। वेद किताब भया सबरीती २

जिन्हमहम्मद सबको कलियुग में कलिमा पढ़ायो है तेऊ कह्यो है कि हम अल्लाहके कुदरति को खोजकहे अंतनहीं पायो १ आपन आपन मत करिकै करतूति कैकै कर्मकरनलगे सो वेदकिताब सबरीति ह्वै जातभये २

चौ० करमतसोजोगर्भऔतरिया। करमतसोजोनामहिंधरिया ३
कर्मते सुन्नति और जनेऊ। हिंदू तुरुक न जानैंभेऊ ४

कर्महिते गर्भमें आय अवतार लेतेभये अरु कर्महीते नाम धरत भये ३ औ कर्मते सुन्नति औ जनेऊ चलत भयो ताको भेद हिंदू तुरुक दूनौ न जानत भये ४

साखी॥ पानी पवन संजोयकै रचि आई उतपात।
सुन्यहि सुरति समानिया कासों कहिये जात ५

पानी कहे विंदु अरुपवन येदूनौके संयोग ते गर्भभयो कहे शरीररूपी उत्पात खड़ाभयो सो कर्म में लगे जन्म मरणादिक येते उत्पात भये पै कर्म न छोड़तभये अरु जिन कर्मछोडिबोऊ कियो तिनकी सुरति शून्यै में समाइ जाती भई सो वहांकी वात कासों कहीजात है अर्थात् काहूसों नहीं कहिजाय है नेति नेति कहिदेइ है अर्थात् उहांतौ शून्यहै कुछहाथ न लग्यो ५ इति उन्तालीसवीं रमैनी समाप्तम्॥

अथ चालीसवीं रमैनी॥

चौ० आदम आदि सुद्धि नहिं पावा। मामाहौवा कहँते आवा १
तबहोते न तुरुक औहिंदू। मायके रुधिर पिता के विंदू २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तबनहिंहोते गाइ कसाई । कहुबिसमिल्लह किनफुरमाई ३
तब ना रह्योहै कुल औजाती । दोजकभिस्तकहांउतपाती ४
मनमसलेकी खबरि न जानै । मतिभुलानदुइदीनबखानै ५
साखी ॥ संजोगे का गुनरवै विनजोगे गुणजाय ।
जिभ्या स्वादकेकारणे कीन्हे वहुत उपाय ६ इति

चौ० आदम आदि सुधि नहिंपावा । मामाहौवा कहँते आवा १
तबहोते न तुरुक औहिंदू । मायके रुधिर पिताके बिंदू २

आदि आदम जे ब्रह्माते मामाकहे जगत पिता हौवा नाम ऐसी जो वाणी ब्रह्माकी नारी सो ब्रह्महू सुधि ना पायो कि कहांते आईहै १ तब आदि में न हिंदूरहे न तुरुकरहे औमायके रुधिरते पिताके विंदुते गर्भ होइहै सोऊ नहीं रह्यो २

चौ० तबनहिंहोतेगाइकसाई । तबकहुविसमिल किनफुरमाई ३
तब न रह्योहैकुल औजाती । दोजक भिस्त कहां उतपाती ४
मनमसले की खबरि न जानै । मतिभुलान दुइदीनबखानै ५

तब न गाइ रही न कसाई रहे सो जो विसमिल्ला कहिकैहलाल करैहै सोकिन फुरमाईहै ३ अरु तब न कुलरह्यो औन जाति रही दोजक भिस्त कहांरह्योहै ४ मनके मसलेकी सुधि न जान्यो कोई मेरेमनै के बनाये हैं दोनौं दीन औ अपने आत्माको मत न जान्यो कि यह न हिंदू है न मुसलमान है मतिहीन दुइदीन वखानत भये ५

साखी ॥ संयोगे का गुणरवै विनजोगे गुणजाइ ।
जिभ्या स्वादके कारने कीन्हे बहुत उपाइ ६

जबमनको आत्माको संयोग होइहै तबहीं संकल्प होइहै औ तबहीं गुणहोयहै अरुजब मनको आत्माको संयोग नहीं होइहै तबगुण जाइहै कहेगुणौ नहीं रहै है अरु संकल्पौ नहीं रहैहै सो नर जेहैं ते जिभ्या सुखके कारण औसिस्न इंद्री सुखके कारण बहुत उपाय करत भये औमन औआत्माको संयोग छोड़ावन को उपाइ करत भये औजेमन आत्मा को संयोग छोड्यो है ते आपने स्व स्वरूपको प्राप्तिभये हैं ६ इति चाली सवी रमैनी समाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ इकतालीसवीं रमैनी ॥

चौ० अंबुकि राशि समुद्र कि खाई। रवि शशिकोटि तेंतिसौभाई १
भवंर जालमें आसन माड़ा। चाहत सुखदुखसंग न छाड़ा २
दुखका मर्मकाहु नाहिं पाया। बहुत भांतिके जग बौराया ३
आपुहि बाउर आपु सयाना। हृदया वसत रामनहिं जाना ४
साखी ॥ तेई हरितेइ ठाकुरा तेई हरिके दास।
जामें भया न यामिनीभामिनि चलीनिरास ५

चौ० अंबु किराशि समुद्रकिखाईं। रविशशिकोटितेंतिसौभाई १
भवँर जालमें आसन माड़ा। चाहतसुखदुखसंगन छाड़ा २

अंबुकहे विंदु ताकीराशि शरीरहै समुद्र जोहै संसार सागर ताकीखाई है अर्थात् संसारही में सब शरीर परेहैं जैसे जलजीव समुद्र में रहे आवै है तैसे नाना जीवनके शरीर परेरहे हैं औसूर्य चन्द्रमा तेंतीस कोटि देवता १ यहीसंसार सागरके भवँरजालमें परे कबहू नरकको जायहैं कबहू स्वर्गको जाइहैं याहीभांति सबजीव औसब देवताचाहत तोसुखकोहैं कि हमको सुखहोय पै दुखरूप जो संसारहै ताको संगनहीं छोड़हैं २ ॥

चौ० दुखकामर्म काहुनहिं पाया। बहुत भांतिके जग वौराया ३
आपुहि वाउर आपु सयाना। हृदया वसत रामनहिं जाना ४

वह ऊंखरूप जो संसारहै ताको मर्मकोई न जानत भयो बहुत भांति करिकै जगमें सबजीव बौराय गये ३ सो जीवजे हैं ते आपुहीते बाउर होतभये अरु आपहीते सयान होतभये हृदयमें बसत जे श्रीरामचंद्रहैं तिनको न जानत भये अर्थात् जे संसार में परेहैं तेतौ बाउरई हैं जे आपने को बहुत ज्ञानीमानै हैं औ सयान मानेहैं तेऊ बाउरेहैं अर्थात् जे और और ईश्वरन के दासभये औजे आपही को ब्रह्म मानत भये कि हमहीं ब्रह्महैं औ आपने आत्मै को मानत भये तिनको साहेब को ज्ञान नहीं होयहै याहेतुते दुखहीको सुखमानै है ४

साखी ॥ तेई हरितेइ ठाकुरा तेई हरिके दास।
जामें भयान यामिनीभामिनिगई निरास ५

तेई जे जीवहैं ते अपने को हरि मानत भये औ आपनेही को ठाकुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानतभये कि हमहीं जगत करताहैं औ आपनेही को हरिके दास मानत भये अर्थात् सब आपही को मानत भये औ यामिनी कहावैहै लगनिया वहवस्तु कराइ देइहै सो पूरागुरू कहावैहै सो यह जीवको उद्धार कराइ देइहै सो जोजीव पूरागुरु रामोपासक ना पायो जो समझाइदेइ कि यह धोखाहै तिन जीवनते भामिनि जो मुक्ति सो निराश ह्वै गई कि ई न मुक्ति होयँगे ५ इति इकतालीसवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथ बयालीसवींरमैनी ॥

चौ० जबहम रहल रहानहिं कोई । हमरे माहँरहल सबकोई १
कहहुसो राम कवन तोरसेवा । सोसमुझाइ कहौ मोहिंदेवा २
फुरफुर कहउ मारु सबकोई । झूंठे झूठा संगति होई ३
आंधर कहै सबै हमदेखा । तहँ दिठियार पैठि मुह पेखा ४
यहिविधि कहौ मानुजो कोई । जसमुख तस जो हृदया होई ५
कहहिं कबीर हंस मुकुताई । हमरे कहिले छुटिहौ भाई ६

चौ० जबहम रहल रहानहि कोई । हमरे माहँ रहल सब कोई १
कहहुसोराम कौनतोरसेवा । सोसमुझायकहौमोहिंदेवा २

श्री कबीरजी कहैहैं कि जब हम साहेब के लोक में रहैहैं तब तुम कोईनहीं रहेहौ तुमसबहमरे साहेबके लोकःप्रकाशमें रहेहौ १ अपनेको रामतौ कहौहौ तुम्हारीसेवा कौनहै कहां वेदपुराण में लिखौहै कि इनकी सेवाकिये मुक्तिहोइगी सो तुमदेवतो बनेफिरौहौ परंतु मोको समुझायकै कहौ तौ कौन मुनि तुम्हारी सेवा कियोहै काकी मुक्तिभई है २ ॥

चौ० फुरफुर कहेमारुसबकोई । झूठेहझूठासंगतिहोई ३

जोकोई फुरफुर कहैहै तौ सब मारनधावैहै अर्थात् जोकोई कहैहै कि तुमसांचहौ साहेबकेहौ तौ सब मारनधावैहै शास्त्रार्थ करिलेरैहै काहेते लोकमें रीतिहै कि झूंठेकी झूंठेन सों संगतिहोइहै सो सांच जो जीव सो झूंठासन उत्पति करिकै झूंठा जो धोखा ब्रह्मताहीकी संगतिहोतभई३ ॥

चौ० आंधरकहैसबै हमदेखा । तहँदिठियारपैठिमुंहपेखा ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहबके ज्ञानते विहीन जे आंधरहैं ते या कहैहैं कि वेदशास्त्र पुराण में अर्थ सबहम बूझारूपई देखाहै जाके देखेते सबको ज्ञान हमको ह्वै गयो तामें प्रमाण येनाश्रुतं श्रुतं भवत्यमतं मुतम विज्ञातंविज्ञातंभवति तहां दिठियार जे साहेबके देखनवारो ते वोई श्रुतिनमें साहेबमुख अर्थदेखैहैं कैसे जैसे येनाश्रुतंश्रुतं कहे जौने रामनामके सुनेजोनहीं सुनाहै सोऊ सुनै असहोइजायहै काहेते वेदशास्त्र पुराणादि रामनामहीते निकसेहैं औ जौनेरामनामके जानेते यह जो अमतहै सर्वत्र ब्रह्ममानिबो धोखा सो मतहोइजाइहै अर्थात् परमपुरुष श्री रामचंद्रको चित अचित विग्रही सबको मानैहै औ मनबचनके परे जे अविज्ञात साहेब ते रामनामसाहेब मुख अर्थ में व्यंजित होयहै अथवा रामनामको जानिकै साधन किहेते साहेब हंसरूप दैजानेजाइहै ४ ॥

चौ० यहिविधिकहौंमानुजोकोई। जसमुखतसजोहृदयाहोई ५
कहहिं कवीर हँस मुसकाई। हमरेकहले छुटिहौभाई ६

सो याभांतिते मैं सबजीवनको समुझाऊंहौ पैकोई बिरला मानै है कौनमानैहै जौनजस मुखते कहैहै तैसे हृदयत होइहै ५ कवीरजी कहैहैं कि मुसकाई मुसकैबँधी जीवो हमारेही कहेते तुम छूटौगे औरीभांति न छूटौगे औ मुकुताई पाठहो यतौ याअर्थमक्ति होवेकीहै इच्छाजिनके ६ इति बयालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ तेंतालीसवींरमैनी॥

चौ० जिन्हजिवकीन्ह आपुविश्वासा। नरकगयेतेहि नरकहिबासा १
आवत जात न लागै बारा। काल अहेरी सांझ सकारा २
चौदहि विद्या पढ़ि समुझावै। अपने मरनकी खबरिनपावै३
जाने जिवको परा अँदेशा। झूंठ आनिकै कहै सँदेशा ४
संगतिछोड़ि करै असरारा। उवहै मोट नरककी धारा ५
साखी॥ गुरुद्रोही औ मनमुखी नारिपुरुष अविचार।
तेनर चौरासी भ्रमहिं जबलगि ससिदिनकार ६

चौ० जिन्हजिवकीन्हआपुविश्वासा।नरकगयेतेहिनरकहिबासा १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जे नर अपने में विश्वास कियो कि हमारो जीवात्माहै सोई मालिकहै दूसर नहीं है एकैहै ते नरकी मुक्तिकी बातैं कौनकहै वै स्वर्गहू नहीं जाय हैं नरक में जायकै नरकही में बासकिये रहे हैं काहेते नरकही जा-यहैं कि इहांतौ तीर्थब्रत सँय्यम जो स्वर्गजावे को उपायहै तेतौमिथ्या मानि छांड़िदियो जीवात्मैको मालिक मान्यो दूसरा मालिक न मान्यो जो यमतें रक्षा करै औवेद पुराण को मिथ्या मान्यो कूटन की उपाय एकौन कियो जब यमदूत मोगरा लैकै मारनलगे बांधिकै कांटामे कढिलावन लगे तबमूढ़ पुकारन लग्यो गुरूवा लोगन को ते रक्षा न किये औगुरुवा लोगनहूं की वही हवाल देखन लग्यो सो साहेब को नामतो सबछोड़ि कै लियो नहीं जो यमते रक्षाकरि वहांको लैजाय इहांस्वर्ग जाबेवारो सु-कर्म कियो नहीं ये अहमक ऊंटकैसे पादजन मंगवाइ दिये न इतके भये ना उतके भये तामें प्रमाण ॥ रामनाम जान्यो नहीं कहां कियो तुम आय । इतके भये न उतके रहियाजन मँगवाय १

चौ० आवतजात न लागहि बारा । कालअहेरी सांझ सकारा २
चौदह बिद्या पढ़ि समुझावै । अपनेमरणकिखबरिनपावै ३

आवत जात बारनहीं लगैहै कहे पुनिपुनि जन्म लेइहै काल जो अहेरी है सो सांझ सकार उनहीं को खायहै वही वासना उनकी बनीरहै है फेरि वाही मनमें आरूढ़ ह्वै फेरि वही नरकही को जाय है २ औ चौद-हौ बिद्या पढ़ि कै गुरुवा लोग जे हैं ते औरे को तौ समुझावैं हैं परंतु अपने मरण की खबरि नहीं पावैहैं ३ ॥

चौ० जानो जियको परा अँदेशा । झूठआनि कै कहै सँदेशा ४
संगति छोड़ि करै असरारा । उवहै नर्क मोट को भारा ५

जे जीवात्महीं को जानै हैं साहब को नहीं जानैहैं तिनहीं को अँदेशपरै है काहे ते कि सब झूठही है वही सँदेश कहै हैं जब यमदूत मारन लगे तब वा मारु देखि उनको अँदेश परै है कि हमारी रक्षा कौन करैहै सोया पापिन की दशा गरुड़ पुराण में प्रसिद्ध है ४ साहब के जाननवारे जे साधु हैं तिनकी संगति छोड़िकै जे असरार कहे कफरई करैहैं अपने जी वात्मै को मालिक मानैहैं साहेब को नहीं जानै हैं ऊ कहे वै जे दुष्ट हैं ते वहै मोट नरक को भारा कहे नरकको है भार जामें ऐसी जो माया की मोटरी ताही को बहै कहे ढोवै हैं ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साखी ॥ गुरु द्रोही औ मन मुखी नारी पुरुष बिचार।
तेनर चौरासी भ्रमहिं जब लगिशशिदिनकार ६

कबीर जी कहैहैं कि शुकादिक मुनि वेद पुराण साधु और जे जे साहब के बतावन वारे हैं सो येई गुरुहैं जो कोई इनकी बाणी को मिथ्या मानैहै सोई गुरु द्रोही है सो गुरु द्रोही औ मन मुखी कहे अपने मानै ते नारि नर बिचारिकै जे एक जीवात्महीं को मालिक मानै हैं ते चौरासी लक्ष योनिहीमें जबलगि सूर्य चंद्रमा रहैहैंतब लगि वाहीमेंपररहैहैं ६ ॥
इति तेंतालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ चौवालीसवीं रमैनी ॥

चौ० कबहुं न भये संग औ साथा। ऐसो जन्म गवांये हाथा १
बहुरि न ऐसो पैहौ थाना। साधुसंगतुमनहिंपहिंचाना २
अबतौ होइ नरक में बासा। निशिदिनपरे लवारकेपासा ३
साखी ॥ जात सबन कहँ देखिया कहै कबीर पुकार।
चेतवा होहु तौ चेति ले देवस परत है धार ४

चौ० कबहुंन भये संग औ साथा। ऐसो जन्म गँवाये हाथा १

साहेब के जानन वारे जे साधु तिनको सतसंग कबहूं न कियो औ उनके बताये साहेब को साथ कबहूं न कियो जेहिते आवागमन रहित होय मनुष्य ऐसो जन्म अपने हाथ ते गमाय दियो १ ॥

चौ० बहुरिनऐसोपैहौथाना। साधुसंगतुमनहिंपहिंचाना २
अबतोरहोइनरकमेंबासा। निशिदिनपरेलवारकेपासा ३

ऐसोथानकहे मनुष्यदेह तुमफेरि न पावोगे साधुसंग तुम नहीं पहिचान्यो है साधुसंगकरो जो पूरागुरु पाइजाउगे तौ उबार ह्वैजाइगो १ धोखा जोहै ब्रह्म औ माया ताके उपदेश करनवारे जेहैं गुरुवालोग लवरातिनकेपास में निशिदिन परचोहै सो बिनापारिख तेरो नरकही में बासहोइगो ३ ॥

साखी ॥ जातसबनकहँदेखिया कहैंकबीर पुकार ॥
चेतवाहोहुतौचेतिले देवस परतहै धार ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूनौ ब्रह्ममायाके धोखामें सबको नरक जात देखिकै कबीरजी पुकारिकै कहैहैं कि चेतिबेकोहोइ तौ चेतौ नहीं तौ दिनैकै तिहारेऊपर धार परैहै कहेगुरुवालोगनको डाकापरैहै भावयहहै जोगुरुवालोगन को डाका तुम्हारेऊपर परैगो औ वह ब्रह्मको उपदेशकरैगो औ तुम्हारे वह धोखा दृढ़परिजाइगो तौ तुम मारेपरोगे कहे जैसे मरा काहूकोफेरो नहीं फिरै है तैसे तुमहूं वहधोखाते काहूके फेरे न फिरौगे अर्थात् काहू को कहा न मानोगे तौ संसारहीमें परेरहौगे बहुत बड़ेबड़े वही धोखा ते ब्रह्म में परिकै मरिगये साहबको न जानतभये सो आगेकहैहैं ४ इतिचवालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ पैंतालीसवींरमैनी ॥

चौ० हिरणाकुश रावण गये कंसा । कृष्णगये सुरनर मुनिबंसा १
ब्रह्मागये मर्म नहिंजाना । बड़ सबगयो जो रहे सयाना २
समुझिनपरी रामकी कहानी । निरबकदूधकि सरबकपानी ३
रहिगोपंथ थकितभो पवना । दशौदिशा उजारिभो गवना ४
मीनजाल भोई संसारा । लोह कि नाव पषाण को भारा ५
खेवै सबै मरम नहिं जाना । तहिबो कहै रहै उतराना ६
साखी ॥ मछरीमुख जस केचुवा मुसवन मुहँ गिरदान ॥
सर्पनमाहँ गहे जुवा जाति सबनकी जान ७ ॥

चौ० हिरणाकुशरावणगयेकंसा । कृष्णगयेसुरनरमुनिबंसा १
ब्रह्मागयेमरमनहिंजाना । बड़सबगयेजोरहलसयाना २

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हिरणाकुश रावण कंस मरिजात भये औ इन तीनों के मरवैया कालस्वरूप जे कृष्ण तेऊ मरजात भये दशौ अवतार निरंजन नारायण ते ह्वैहैं या हेतु ते मरिजानवारे तीनिकह्यो मारनवारो एकहीकह्यो औ सुर नर मुनि इनकेबंशवारे तेऊ मरिगये औ ब्रह्माआदि क जे बड़ेबड़े सयानरहैं तेऊ वेदको तात्पर्य न जान्यो मरिगये२ ॥

चौ० समुझिनपरीरामकीकहानी । निरबकदूधकिसरबकपानी ३
रहिगोपंथथकितभोपवना । दशौदिशाउजारिभोगवना ४

रामकी कहानी कहे राममामकी कहनि जो चारोवेद कहैहैं सो काहू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को न समुझि परी धौं निरबक दूधहीहै धौं पानिहीपानीहै अर्थात् जिनको परमपुरुष श्रीरामचन्द्र को ज्ञान भयो वेदको तात्पर्य बूझ्यो साहब मुख अर्थ लगायो सो दूधही पियतभयो औ जे जगत्मुख अर्थ में लग्यो सो पानिहीपानी पियतभयो साहब मुख अर्थ न जान्यो येते सब मरिगये ३ अपने अपने पंथ चलावतभये जब पवन थकितभयो कहे श्वासा रहितभई तब दशौ दिशा कहे दशौ इंद्रिन द्वार के जे देवता ते जात रहे तब दश द्वारको जो शरीर गांउ सो उजारि ह्वै गयो कहे मरिगये यातें या आयो कि जे नाना मत चलावै हैं मत यहै रहिजाय है जा शरीर में मरिकै गये ताही की सुधि रहै है ४॥

चौ० मीनजाल भो ई संसारा। लोहकि नाव पखानको भारा ५

याही रीति ते मरत जियत जे मीन रूप जीव हैं तिन को यहि संसार समुद्र में बाणी जाल फंदन को भयो सो जे जाल में फंदेते तो अविद्या के जाल में फंदेही हैं जे उबरे चाहे हैं ते जड़वत् जो मन पाषाण ताहीको है भार जामें ऐसी जो बिद्यारूपी लोहे की नाव तामें चढ़े सो वह बूड़िही जायगी फिरि वही संसारमें परेरहैहैं ५

चौ० खेवैसबै मर्म नहिं जाना। तहिवो कहैरहै उतराना ६

सब गुरूवाजन खेवैहैं कहे वही धोखा ब्रह्ममें लगावैहैं औ या कहैहैं कि हम मर्मजान्योहै तुम यामें लगो पारह्वैजाउगे सो वह जो संसारसमुद्र में अबिद्यारूपी नाव मन पाषाण ते भरी बूड़िही जायगी तामें गुरू चेला दोऊबूड़िही जायँगे पार न पावैंगे अर्थात् बेदांत आदि नाना शास्त्रनमें नाना तर्क उठायउठाय बिचारकरतऊ जायहैं संकल्प बिकल्प नहीं छूटै तात्पर्य तो जानै नहीं औ जन्म भरि चेलापूंछतई जायहै परन्तु तबहूं यही कहैहैं कि तुम संसार समुद्रमें उतरानेहौ कहे उबरेहौ यहनहीं बिचारैहैं कि संकल्प बिकल्प छूटबई नहीं कियो संसारते कैसे उबरैंगे ६॥

साखी॥ मछरीमुख जस केचुवा मुसवन मुहँगिरदान॥
सर्पन माहँ गहेजुवा जाति सबनकी जान ७

जैसे मछरीके मुखमें केचुवा मुसवानके मुहँमें गिर्दान अर्थात् जबमूस गिर्दान को रंग देख्यो तब लालमास अथवा लाल फल जानि धरन धायो जब फूकमारयो तब आंधरह्वैगयो गिर्दानही मूसको खायलियो औ सर्पजैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहेजुवा कहे छँछूदरको धरैहै जो उगिलै तो आंधरह्वै जायहै खायतो मरि-जाइ ऐसे सब जीवनकी जातिहै जे कर्म कांडीहैं ते जैसे मछरी केचुवाको जब खायहै तब मुहँमें वर्रवा चुभिजायहै वाहीमें फँसिजायहै तैसै स्वर्गादिक फलकी चाहकरि कर्मकरैहै जनन मरन नहीं छूटैहैं काल खायलेइ है औ जे ज्ञानकांडीहैं ते साहबको ज्ञानतो काचोहै अपने शास्त्रबल या कहैहैं कि हम समुझायकै पाषंडमत वारेजेहैं तिनको अपने मतमें लै आवैंगे या बिचारि तिनकेयहांगये सोवै धोखाब्रह्मरूप उपदेश फूंक ऐसा मारयो कि आंधरेह्वैगये साहबको जौन ज्ञानरहै सो भूलिगये तो उनकेखाबे को पै वोई उलटिकै खायगये औ उपासना कांडी जेहैं ते अपनेअपने इष्टकी उपासना धरयो सोतौ छोड़तहीनहीं बनै है डरै है कि देवता खफा न होइ आंधर न करिदेइ जो न छोड़ै तो वाही देवताके लोक गये औ फेरि आये जन्ममरन नहीं छूटैहै जैसेसांप छँछूदरको धरयो परन्तु न उगिलत बनै न लीलत बनै ताते कबीरजी कहैहैं कि साहब को जानो जननमरन उनही के छुड़ाये छूटैगो ७ इति पैंतालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथछियालीसवीं रमैनी

चौ० बिनसै नागगरुड़ गलिजाई। बिनसै कपटी औ सत भाई १
बिनसै पापपुण्य जिनकीन्हा। बिनसै गुणनिर्गुण जिनचीन्हा२
बिनसै अग्निपवन अरुपानी। बिनसै सृष्टि जहांलौ गानी ३
बिष्णु लोक बिनसै छनमाहीं। होदेखा परलयकी छाहीं ४
साखी॥ मक्षरूप माया भई यमराखे लहि अहेर।
हरिहर ब्रह्म न ऊबरे सुरनर मुनि केहिकेर ५

जे भर ब्रह्माड के भीतर हैं ते सब नाशमान हैं संसार समुद्र में ऐसो माया लपट्यो कि यह मत्स्यजीव माया ह्वै गई अर्थात् मिलि गई है कहे जीवनको शरीर में डारिदियो है शरीरही देखे परैहै जीवको खोज नहीं मिलैहै भीतर बाहर मनमास आदिक वह जड़मायही देखिपरै है यमराजो ढीमर कालहै सो शिकार खेलेहै ताते कोई नहीं उबरै है कोई हालही मरैहै कोई महापूलयमें मरैहै ५

इति छियालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथसैंतालीसवीं रमैनी ॥

चौ० जरासिंधु शिशुपाल संहारा। सहस अर्जुनै छलसो मारा १
बड़छल रावणसोगयेबीती। लंकारह कंचनकी भीती २
दुर्योधन अभिमानहिं गयऊ। पंडवकेर मरम नहिं पयऊ ३
मायाके डिभगे सबराजा। उत्तम मद्धिम बाजन बाजा ४
छांचकवैवित धरणिसमाना। यकौ जीव परतीतिन आना ५
कहलौं कहौं अचेते गयऊ। चेत अचेत झगर यक भयऊ ६
साखी ॥ ईमाया जग मोहनी मोहिंसि सब जगधाय।
हरिचन्द्र सतिके कारने घर २ सो गोबिकाय ७

येजे राजाबड़े २ गनाय आये ते सब मारे परे कोई उत्तम कोई मध्यम कोई निकृष्ट कर्म करिकै गयेसो कहां लौं मैं कहौं चित अचित के झगरा ते कहे चित जीव अचित मायाई दूनौ के संयोगते सब जीव पृथ्वी में मिलिगये अपने शुद्ध आत्माको न जानत भये यह माया जो है जग मोहनी सो सब जगको धायके मोहिं लेतभई हरिश्चन्द जे राजाहैं तेसत्य के कारणे विद्यामायामें बँधिकै घर २ बिकाय जात भये पुत्र बिकानो स्त्री बिकानी ७ ॥ इतिसैतालीसवीं रमैनी समातम्

अथ अड़तालीसवीं रमैनी ॥

चौ० मानिक पुरहि कबीर बसेरी। महति सुनो शेष तकिकेरी १
ऊजो सुनी जमनपुर धामा। झूसी सुनी पिरन के नामा २
इकइसपीर लिखेतेहिटामा। खतमा पढ़ैं पैगं सरनामा ३
सुनिबोलमोहिंरहा न जाई। देखि मुकुरवा रहेलोभाई ४
हवीवी औ नवीके कामा। जहलो अमलसो सबै हरामा ५
साखी ॥ सेखअकरदीसेख सकरदी मानहु बचन हमार।
आदिअंत उत्पति प्रलय देखो दृष्टिपसार ६

प्रकट कबीर जी तो यह कहैं हैं कि मानिकपुरमें रह्यो तहांसे खत की महति सुन्यो जिन पीरनके स्थान १ जमनपुरमें सुन्यो ते झूसीपार में आये तहां मैंहू गयो २ यकैसौ जे पीरहैं तिनके नाम लिखे हैं कि ये सब पैगंबरैकेर फातियां देइ हैं औ कलमा पढ़ै हैं ३ सो उनके बोल सुनि २ मोपै नहीं रहा जायहै मकुरवा देखि२ ये सब भुलाय रहेहैं यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानिकै तहां मैं जाइकै कह्यो कि ४ हवी कहे देवतन को खाना अथवा हवी फारसीमें दोस्तकोकहै हैं औ जहां भर नामहै नवीके जे तम लेतेहौ औ नवीके जहांभर काम है जे पीरलोग तुमको उपदेश करतेहैं सो सब हराम है काहेते अल्लाह तो मनबचन के परेहै ५ हे सेख अकरदी हे सेख सकरदी हमारो कहो जो बचनहै सो सब सांचमानोआदि अंतमें जो दृष्टि पसारिकै देखौ तो जहां भर मनबचन में पदारथ आवैहैं सो सब मायाको पसार है अल्लाह नहीं है सो कबीर जीके चौबिसपरचैसे खतके लिखे पीछे शिष्य भये सो सब कथा निर्भय ज्ञानमें बिस्तारते हैं ६ ॥ इति अड़तालीसवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ उनचासवीं रमैनी ॥

चौ० दरकी बात कहौ दुर्वेसा । बादशाह है कौने भेसा १
कहां कूच कहंकरै मुकामा । कौनसुरतिको करौसलामा २
मैंतोहि पूंछौ मूसलमाना । लाल जर्दकी नाना बाना ३
काजीकाज करौ तुम कैसा । घर २ जबै करावो वैसा ४
बकरीमुर्गी किन फुरमाया । किसकेहुकुमतुमछुरीचलाया ५
दर्द न जानै पीर कहावै । बैता पढ़ि २ जग समुझावै ६
कह कबीरयकसय्यद कहावै । आपु सरीकाजग कबुलावै ७

साखी ॥ दिन भर रोजा धरतहौ राति हततहौ गाय ।
यहतौ खून वह बंदगी क्यों कर खुसी खोदाय ८

और पदको स्पष्टहीहै ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ दर्दतो तिहारे दिलमें आवती नहीं है गला कटावतेमें अल्लाहको बागी चाखअैब करतेहौ अरु बैतैं पढ़ि२कै पीरकहावते हौ औ जगत्को समुझावतेहौ अर्थात् हौ बे पीर पीर भर कहवावतेहौ ६ सो कबीर जी कहैहैं कि एक सय्यदजोहै वह पीर गुरुवा सो जैसा आप खुआर है औ तैसे सबको खुआरकरैहै ७ दिनको तो रोजा धरतेहौ औ बंदगी करतेहौ औ रातिको गाईहततेहौ कहेमारते हौ सो यह तो खूनकरते हौ बहुत भारी औ वहबंदगीबहुत थोरी करते हौ दिन को नखायो रातिहीको खायो क्यों कर तिहारे ऊपरखोदाय खुशीहोय ताते यह कि वहतो साहबको है सो जिनको गला तुम काटतेहौ तिनहीं के हाथ तुम्हारऊ गला वह साहब कटावैंगे ८ इति उनचासवीं रमैनी समाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथपचासवीं रमैनी ॥

चौ० कहते मोहिं भयल युगचारी। समुझत नाहिं मोहि सुतनारी १
बंध्य आगिलगि बंधै जरिया। भ्रम भुलाय नल धंधे परिया २
हस्ती के फंदे हस्ती रहई। मृगी के फंदे मिरगा परई ३
लोहै लोह काट जस आना। तियकै तत्व तिया पहिचाना ४

साखी ॥ नारि रचंते पूरुष है पूरुष रचंते नार।
पुरुषहि पूरुष जो रचै तेहि विरले संसार ५

चारिउ जग मोको समुझावत भयो पै सुत नारीके मोहते कोई समुझतनहीं है १ जैसे बांसकी आगी बांसैको जारि देइहै तैसे सुतनारीके मोहरूप भ्रममें भुलायकै नरधंधे में परे जाइहैं कोई नाना ज्ञान उपासना में परिकै जरैहै कोई सुतनारीके धंधेमें परिकै जरैहै २ जैसे हथनी के फंदे हाथी रहैहै मृगीके फँदे मृगा परैहै कहे फंदिजाय है ऐसे जीवके फंदे में जीव परैहै जैसे लोहते लोह कटिजाय है तैसे जीवहीते जीव यह मारो परै तियकी तत्व स्त्री पहिचानैं स्त्रीजो ऊटिनी ताकी तत्व वही जानै है अर्थात् जीवही ते जीव भ्रमि जायहै काहेते साहबको तो जानैनहीं जीव जीवही मों बिश्वास माने मायामें मिलिकै या जीव मायाहीमें रह्योहै ताते माया कही पदारथमें बिश्वास मानै है ४ नारीते पुरुष रचिजाइ है कहे माया ते सब पुरुष भयेहैं औ पुरुष जो है शुद्धसमिष्टि जीव ताहीते माया भई है औ पुरुष जो हैं शुद्धजीव सो परमपुरुष जे श्रीरामचंद्र हैं सबके बादशाह तिनमें रचे कहे प्रीति करै ऐसो कोई बिरलाहै ५ इतिपचासवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथ इक्यावनवींरमैनी ॥

चौ० जाकर नाम अकहुवा भाई। ताकर कहां रमैनी गाई १
कहैको तात्पर्य है ऐसा। जस पंथी वोहित चढ़ि वैसा २
हैकछुरहनिगहनिकीबाता। बैठारहत चला पुनि जाता ३
रहैबदन नहिंस्वागसुभाऊ। मनस्थिर नहिं बोलै काऊ ४

साखी ॥ तनरहते मन जातहै मनरहते तनजाय।
तनमन येकै ह्वैरह्यो हंसकबीर कहाय ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौ० ॥ जाकर नाम अकहुवाभाई। ताकर कहां रमैनी गाई॥

जाको नाम अकहहै ताको तो हिंदू मन बचनके परे कहतेहैं औ मुसलमान बेचून बेचिगून बेसुभा बेनिमून कहतेहैं सो हम पूछतेहैं हिंदू कहैहैं कि वह तो निराकार होतो तो कहैहैं कि बेद मेरी श्वासाहै शरीर न होतो तौ बेदश्वासा कैसेहोतो जोकहो बेद तो माय कहेतौ मिथ्याके बतायेतुमहीं सांच पदार्थ कैसेजानिहौ जो कहै साकारहै तौ मध्यम परमान ठहराय तौ अनित्यहोइहै अकहुवा न होइगो अरु जो मुसलमान निराकार कहै हैं कि उसके आकारनहीं है तो मसा पैगंबरको कोहतरके पहाड़में कूँगुनी देखायो सो वह पहाड़ छार ह्वै गयो जो शरीर न होतो तौ कूँगनी कैसे देखावतो कुरानमें लिखैहै कि जिस तरफ अपना मुहँफेरै तिसी तरफ साहेबका मुहँहै औ सबके हाथके ऊपर अल्लाहको हाथहै औअल्लाहमहम्मदसों कहतेहैं कि जिसका हाथपकरा तूनेतिसका हाथ पकरामैं तबसोइन लीलौते यह आवताहै कि उसके सकलहै पै जिस तरह का उसका सकल है सो कोई नहीं कहिसकैहै काहेते कि जो उसके मिसाल दूसरा कोई होयतौ उसकी उपमा दैके समुझाय सक्के सो उसकी सकलतो कोई नहीं समुझाय सक्ताहै लेकिन जोकोई उसकी सकल देखाहै सोई जानताहै जैसी उसकी सकलहै लेकिन बयान नहीं करिसक्ताहै औ कुरान खोदाकी कलामहै कहेबातहै जो बदन न होता तौ कलाम कैसे कहते सो निराकार साकारके परे अकह जो साहबहै ताकी रमैनी कहे तिसके रूपादि बर्णनकी कथा जबानमें किस तरहसे कहौ बचनमें तौ आवैनहीं है अथवा जाकर नामै अकहुवाहै ताकोरूप अकहुवाबनैहै तिसकी कथा कहाँकहैं जो वाहू अकहुवा होयगो जो ऐसाभया तौ जानि न परैगो कि सूको मिथ्या होइ जाइगो तौनेको कबीरजी कहैहैं कि सबको हमको अकहुवाहै कछू उस को साहबको कोई बात अकहुवा नहीं है हमताहीकी कही रमैनी गाइतहै सो जो कछु रमैनीमें लिख्योहै सो साँचहीहै १

चौ० कहैको तात्पर्यहै ऐसा। जस पंथी वोहित चढ़िवैसा २
हैकछुरहनिगहनिकीबाता। बैठारहा चलापुनिजाता३

जौन कहि आये तौनेको तात्पर्य ऐसाहैकि पांचशरीर ते साहब नहीं मिलैहै काहेते मनबचनके परेहै साहब औ जो हमसो साहब कहा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनको रमैनी उपदेश करौ ताको हेतु यहहै साहब बिचार्‌यो कि मन बचके परे जो मैं हौं सो बिना मेरे बताये जीव मोको न जानैंगे जो कहौसाहबको कापरीहै न जानैंगे जीवतौ साहबके दयालुताकी हानिहोइहै याते उपदेशकरै कहैहैं सोजौने अकह रामनामके जपेते साहब प्रसन्नहै हंस रूपदेइहै तौन रामनाम रमैनी ते जानिकै काहेते कि इक्ष्याकर भवसागर बोहित रामअधार। कहहिं कबिर हरि शरणगहु गोबच्छखुर बिस्तार॥ ऐसी साखी रमैनीमें लिखीहै तेहिते याअर्थ आया कि संसार सागर पारहोवेको एक रामनामही जहाज मानि नामार्थमें जोसरनकी बिधिहै ताको अनुसंधान करत रामनामजपै२ यह रहनि गहनि कैकै जैसे बछ्वाको खुर लोग उतरिजायहैं ऐसोसंसार सागरमें रामनामकी अभ्यासकै तरिजायहैं कैसे जैसे नावकोचढैया नावमें बैठाहै पै पारहोतजायहै ऐसे रामनामको जपैया संसार सागरमें बैठोदेखो परैहै परन्तु पारको चलोजायहै ३

चौ० रहै बदननहिस्वाग सुभाऊ। मन अस्थिर नहिबोलैकाऊ४

इस तरहके जे हैं जिनके बदनकहे संभाषन करिवे ते जीवनको स्वाग को सुभाउ न दीरहै स्वागको सुभाव कहे ब्रह्म ह्वैजावो चतुर भुजादिकन के लोक में जाइ चतुर्भुज ह्वै जावो और नाना देवतन के लोक जाय तिनके तिनके रूपधरिबो सो मिटिजायहै संसारतो छूटिहीजायहै सो वै बोलैहैं औ मन स्थिरह्वैगयोहै कहे मनको संकल्प विकल्प तो छूटैनहीं है मनते भिन्न ह्वै वो कहा है कि संकल्प बिकल्पही मनको स्वरूप है जब संकल्प बिकल्प छूटिगयो तब मनते भिन्न ह्वै गयो सो कैसे मनते भिन्न होइगो सो साधन आगे कहैहैं ४

साखी॥ तनरहते मन जातहै मनरहते तन जाय॥
तन मनएकै ह्वै रहो हंस कबीर कहाय ५

तनजो है वा शरीर स्थूल सूक्ष्म कारण महां कारण सो अर्थ अनुसंधान करत रामनाम जपत २ तनते जब रहित ह्वै गयो तब मन जात रहैहै औ मन जाय है तब चारिउ शरीर जातरहैहैं सो जब तन मन एकैह्वै रहै कहे सिगरे तन प्राण में बँधेहै सो प्राण औ मनको एक घर करिदेइ सोनाम जपि बिधि जानि तब संकल्प बिकल्प मनको छूटिजायहै मनतो संकल्प बिकल्प रूप है सो जब संकल्प बिकल्प छूट्यो तब मन नाश ह्वै गयो तब चारिउ शरीरको हेत जो है ज्ञान सोऊ जातरहै है तब चारिउ शरीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिन्न ह्वैं जायहैं एक शुद्ध आत्मा में स्थिर ह्वै रहेहैं मुक्ति ह्वै जाइहैं जैसे पूर्व शुद्ध समिष्ट रूपमें रह्योहै तैसे सो ह्वै गयो जैसे समिष्टी जीवमें जब रह्योहै तब जगत्को कारण रह्यो आयोहै साहबको न जानिबो रूप ताते संसारही ह्वै गयो है तैसे यह जो शरीरन में साहबको भजन करिराख्यो साहबको जानिराख्यो सो जब मनादिक याके छूटिगये शुद्ध ह्वैगयो तब वाही भांति साहब को जानै को कारण रहिगयो काहेते कि रामनाम को साहब मूर्ख अर्थ जानिराख्योहै सो मंगलमें साहब कहिआयेहैं कि जो रामनाम जपिकै मोको जानै तो मैं हंसरूप दै अपने पास बोलायलेऊं याही ते साहब हंसरूप देइहै तब वह कायाको बीर जीव हंस कहावै है कैसे हंस कहावैहै कि असार जेहैं चारिउ शरीर औ मन मायारूप पानी ताको छोड़िदियो औ सारजोहै साहबको ज्ञान रूपदूध ताको ग्रहणकियो औ अकह रामनाम जो मोती है ताको चुनन लग्यो कहे लेनलग्यो सो कबीरजी लिखवै कियोहै शब्दमें निर्मल नाम चुनिचुनि बोलै अरु अकह रामनामईहै अरु अकहनिर्गुण सगुणकेपरेहै श्रीरामचन्द्रईहैं तामें प्रमाण॥ रामकेनामतेपिंडब्रह्माडसब रामकोनाम सुनिभर्ममानी। निगुणनिरकार के पार परब्रह्महै तासुको नामरंकारजानी। विष्णुपूजाकरै ध्यानशंकरधरैं भनहि सुबिरचि बहुबिबिधि बानी। कहैकबीरकोइ पारपावै नहीं राम को नामहै अकह कहानी ५ इति इक्यानवीं रमैनी॥

अथ बावनवीं रमैनी

चौ० ज्यहिकारण शिवअजहुं बियोगी। अंगबिभूतिलाय भे योगी १
शेषसहसमुख पार न पावै। सो अब खसमसहित समुझावै २
ऐसीबिधि जो मोकहँ ध्यावै। छठये मास दर्श सो पावै ३
कौनेहु भांति देखाई देऊ। गुप्त रहि सुभाउ सब लेऊ ४
साखी॥ कहहिं कबीर पुकारिकै सबका उहै हवाल॥
कहा हमरमानैनहीं किमिछूटे भ्रमजाल ५

ज्यहिकारण शिव अजहुं बियोगी। अंगबिभूतिलाय भे योगी १
शेष सहसमुख पार न पावै। सो अब खसम सहित समुझावै२

जाके कारण शिव अंगमें बिभूति लगाइकै जोगी भये परंतु अजहूं लौं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासों वियोगी हैं काहेते कि जो वियोगी न होतो तौ तमोगुणाभिमानी काहे रहते १ औ शेष सहस मुखते कहिकै पार न पायो तेई दुर्लभ खसम जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तेहिते सहित जीवन को समुझावै है काहेते जीवन को हित मानिकै समुझावै है कि मोको जानिकै मेरे पास आवै संसार दुःख न पावै २ ॥

चौ० ऐसीबिधिजो मोकहँ ध्यावै। छठये मास दर्श सोपावै ३
कौनहुंभांति देखाई देऊ। गुप्तैरहि सुभाउ सबलेऊ ४

साहब कहा समुझावै है कि जैसो पूर्व कहि आये हैं नामार्थ में लिखि आयहै शरनकी बिधि तैसो अनसंधान करत रामनाम जपिकै निरंतर जो छठये मास या होइतौ जो या शरीरते करैहै छा महीनामें दर्शन सो पावै है याही भांति सों जो मोको ध्यावै तौ छठये मास मेरो दर्शन पावै कहे छठौजो हंसस्वरूप तामें स्थिरह्वैकै ३ तौ कौनिउं भांतिसों मैं देखाइ देउहौं औ निशिदिन वाकेसाथ गुप्त रहिकै वाको सब सुभाव लेउ औ जो दृढ़होइ तौ रामनाम कास्तथक हेत ताको छठौ शरीर दैकै वाको प्रत्यक्ष ह्वैजाउ पाछेपाछे रघुनाथ जी नित्य बने रहतहैं तामें प्रमाण॥ राम रामेतिरामेतिरामरामेतिवादिनम्। बत्संगौरिवगौर्य्यच्चाधावंतमनुधावति४

साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै सबका उहै हवाल ॥
कहाहमरमानै नहीं किमिछूटै भ्रमजाल ५

श्री कबीरजी पुकारिकै कहैहैं कि जिनको शेष शिवादिकने पार नहीं पायो यह भांतिके दुर्लभ जे परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं ते आजुकाल्हि ऐसे सुलभ ह्वै गये हैं कि आपई उपाय बतावै हैं कि जो ऐसो उपाय करै तो छठये शरीरमें मोको पाइजाइ ते साहब को कह्यो मैं यतनो समुझावत हौं पै सब बेवकूफ हैं जीवन को हवाल उहैहै कहे वही मायाके नानामतन में लगेहैं वहीको बिचार करैहैं जौन धोखाते संसार पायो है हमारो कहो यतने हू पै नहीं मानैहैं सो ऐसे दुष्ट जीवनको भ्रमजाल कैसे छूटै ५

इतिबावनवीं रमैनीसमाप्तम् ५२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथतिर्पनवींरमैनी॥

चौ० महादेव मुनि अंत न पावा । उमा सहित उन जन्म गवांवा १
उनते सिद्ध साधु नहिंकोई । मन निश्चल कहु कैसे होई २
जौ लग तन में ऐहै सोई । तौलग चेत न देखौ कोई ३
तबचेतिहौजबतजिहौप्राना । भया अनततब मनपछिताना ४
यतना सुनत निकट चलिआई । मनको बिकारन छूटै भाई ५
साखी ॥ तीनिलोकमें आयकै छूटिन काहू कि आश ॥
यक आंधरजग खाइया सबजग भया निराश ६

उनते अधिक सिद्धि कौन साध्योहै जाको मन निहचल होइ अर्थात् सिद्धि साधे मन निश्चल नहीं होयहै २ जबलग शरीर में मनहै तबलग चेतन करिकै अथवा महा महादेवता जेहैं औ बड़े बड़े मुनिजेहैं ते अंतनहीं पायो जोकोऊ जान्योहै ते वोही साधन तेजान्योहै कहे ज्ञान करिकै वह परम पुरुषको कोईनहीं देखैहैं ३ कबीरजी कहैहैं कि तुम तब चेतिहौ जब प्राण छोड़ौगे तब कहां चेतौगे यह काकुहै जब अनतही जानना शरीर पावोगे तब मनको पछितावई रहिजायगो जो भया अयान पाठ होइतौ यह अर्थ है कि तुमजो अयाने भये साहब को न जान्यो हमारकहा मानवईन कियो तौ अब पछिताना क्याहै पछितातो काहेकोहै संसार पीर सहो ४ यह सब जगत् शास्त्रनमें सुनाहै कि मौत निकट चलीआवै है हमहूं मरिजायँगे पै मरघट ज्ञान कथै है मन को बिकार नहीं छोड़ है ५ तीनि लोक में आइकै सब मरि गयो परंतु काहूकी आशा न छूटतभई एक आंधर जो है मन सो जगत् को खाइलियो सब जगत् परमपुरुष के मिलिबे को निराश ह्वै गयो इहां आंधर कह्यो सो मन परमपुरुष को कबहूं नहीं देखैहै काहेते कि साहब मन बचन के परेहै आपही शक्ति देइ है जीवको तबहीं देखैहै ६ इति तिरपनवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथ चौवनवीं रमैनी ॥

चौ० मरिगये ब्रह्मा काशि के बासी । शीव सहित मूये अबिनाशी १
मथुरा मरिगये कृष्ण मुवारा । मरि मरि गये दशौ अवतारा २
मरि मरि गये भक्तिजिन ठानी । सर्गुण में जिन निर्गुणआनी ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साखी ॥ नाथ मछंदर ना छुटे गोरखदत्ता व्यास।
कहंहि कबीर पुकारिकै सबपरेकालकेफाँस ४॥

ब्रह्मा जे हैं काशी के बासी शंभू जे हैं तिनते सहित अबिनाशीजे बिष्णु ते मरिगये सो अबिनाशी सब कोई कहतईहै औ मरिबो कहेहैं सो उनको तो नाश कबहूं होतही नहीं है महा प्रलयमें तिरोधान ह्वै पुनि प्रगट होइहैं याते अबिनाशी कह्योहै १ मथुरा के कृष्ण औ गुवार औ दशौ अवतार तेऊ मरि कहे तिरोधान ह्वै गये कहां गये जहां औरामचन्द्र के आगे हजारन ब्रह्मा बिष्णु महेश दशौ अवतार ठाढ़ेहैं जाकोजौने ब्रह्माण्ड को हुकुम होइहै सो तहां अवतार लै पुनि अपने अंशन में लीनहोयहै तामें प्रमाण शिवसंहिताको अगस्तवचन हनुमानप्रति॥ आसी नंतमनुध्यायेसहस्रस्तंभमंडिते। मंडपेरत्नसंज्ञेचजानक्यासहराघवम् ॥ मत्स्यःकूर्मश्चकृष्णश्चनारसिंहायनेकधाविकुंठोपिहयग्रीवाहरिःकेशववामनौ॥ यज्ञोनारायणोधर्मपुत्रोनरवरोपिच। देवकीनंदनःकृष्णोवासुदेवोबलोपिचाष्टष्णिगर्भोमधुन्माधोगोविंदोमाधवोपिच ॥ वासुदेवोपरोनन्तःसंकर्षण इरापतिः। एतैरन्यैश्चसंसेव्योरामनाम महेश्वरः॥ तेषामैश्वर्य्यदातृत्वं तंमूलत्वंनिरीश्वरः॥ इन्द्रनामासइन्द्राणांपतिःसाक्षीगतिःप्रभुःविष्णुःस्वयंसविष्णूनांपतिर्वेदांतरुद्विभुः॥ ब्रह्मास ब्रह्मणंकर्तापजापतिपतिर्गतिः। रुद्राणांसपतीरुद्रोरुद्रकोटिनियामकः॥ चंद्रादित्यसहस्राणिरुद्रकोटिशतानिच। अवतारसहस्राणिशक्तिकोटि शतानिच॥ ब्रह्मकोटिसहस्राणिदुर्गाकोटिशतानिच। सभांयस्य निषेवंते सश्रीरामइतीरितः॥ २ औजिन सगुणमें भक्तिको ठानीहै तेऊमरिगये औ जेनिर्गुण आन्योहै तेऊमरिगये याते यह आयो कि निर्गुण सगुणवारे भक्त द्वौ मरिगये ३ औ मछंदर औ गोरख औ दत्तात्रेय औ व्यास सोई योगऊ कियो छूटिबेको पै श्री कबीर जी कहैहैं कि सब कालके फाँस में परत भये कहे महाप्रलय में नाशह्वै गये महाप्रलय में जब ब्रह्मा मरेहैं तबकोई नहीं रहेहैं ४ इतिचौवनवीं रमैनीसमाप्तम्॥

अथ पचपनवीं रमैनी॥

चौ० गये राम अरुगये लक्षमना। संग न गै सीता असि धना १
जात कौरवन लाग न बारा। गये भोज जिन साजल धारा २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गे पाण्डव कुंतीसी रानी। गे सहदेवजिन मतिबुधिठानी ३
सर्व सोनेके लंक उठाई। चलत बार कछु संग न लाई ४
कुरिया जासु अंतरिक्ष छाई। सोहरिचन्द्र देखि नहिं जाई ५
मूरुख मानुष अधिक सजोवै। अपना मुवल औरलगि रोवै ६
इन जानै अपनो मरिजैवै। टका दश विदेऔर लै खैवै ७
साखी॥ अपनी अपनीकरि गये लागि न काहूके साथ।
अपनी करिगयो रावण अपनी दशरथ नाथ ८

गयेराम अरु गये लक्ष्मना। संग न गै सीता असिधना १

देवतन मुनिनको कहिआये हैं अब राजन को कहैहैं काहेते कि आगे दशअवतार कहिआयेहैं इहां पुनि रामकहैहैं तहां इहां जे जीव रामराजा भये ताको औ लक्ष्मणको महाभारत सभापर्वमें नारद युधिष्ठिरते कह्योहै राजनके गिनतीमें यमकी सभामें तिनको कहैहैं कि राम गये लक्ष्मण गये औ संगमें सीता असि नारी न जातभई जो यहअर्थ कोई न मानैतौ यह कहैहैं कि नारायणके अवतार रामचन्द्रहैं तिनहीको जाइबो कबीर कहैहैं तौ कबीरजी तौ सांचके कहवैयाहैं झूंठी कैसे कहैंगे सब रामायण में वर्णनहै कि प्रथम जानकीशरीर ते सहितगईहैं पुनि श्रीरामचन्द्र शरीर ते सहित जातभये जिनकेसंग श्री शक्ति भू शक्ति लीलाशक्ति शरीरसहित चलीजातीहै सो जो कबीरजी व राजा जे भयेहैं तिनको जाइबे को न कहते तौ संग में सिया असि धना न गई यह कैसे लिखते १॥

चौ० जातकौरवन लागिनबारा। गयेभोजजिन साजलधारा २
गेपंडव कुंतीसी रानी। गे सहदेव जिन मतिबुधिठानी ३
सर्वसोन की लंकबनाई। चलत बार कछु संग न लाई ४

औ कौरवनको जातबार न लग्यो औ राजाभोजगये जिन धारानगरीको बसायोहै कहे साज्योहै जरासिंधुके पुत्रहैं भोज ते कलियुग क राजा सब आयगये २ औ पांडवा जेहैं औ कुंती ऐसीरानी जो है औ सहदेव जे हैं ते सब जातभये जे पंडितहैं तिनहूं में अपनीमति कहे बुद्धि अधिकठानत भये कहे करतभये ३ औ सब लंका सोने के रावण बनायो पै चलतबार संगमें न गई ४॥

चौ० कुरियाजासु अंतरिक्ष छाई। सोहरिचंद्र देखिनहिंजाई ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औ जाकी कुरिया अंतरिक्षमें छाईहै कहे स्वर्गमें महल बनो है इंद्र ते अधिक सिंहासनमें बैठेहैं ऐसे जेहैं हरिश्चन्द्र राजा तेऊ नहीं देखिपरैहैं अर्थात् तेऊ न रहिगये मरिगये भाव यहहै कि महाप्रलय भये त्रैलोक में कोई नहीं रहिजाइहै ५ ॥

चौ० मूरुखमानुषअधिकसजोवै । अपनामुअल औरलगिरोवै ६
ईन जानै अपनो मरिजैबे । टका दश बिढ़ै और लैखैबे ७

मूरुख जो मनुष्यहै सो संजोवै कहे अधिक सम्यक्प्रकार ते जोवै है अर्थात् औरको मरिबो कहे आजा मरिगयो बाप मरिगयो इत्यादिक सब को मरिबो देखतई जायहैं औ रोवैहैं अपनेमरण की चिंता नहीं करैहैं ६ या नहीं जानैहैं कि जेतेदिन बीतिगये जेतने मरिगये औ मरिहीजायँगे यहै बिचारैहैं कि और दश टका बिढ़वै जाते बहुतदिन बैठेखायँ ७ ॥

साखी ॥ अपनीअपनी करिगये लागिन काहुके साथ ॥
अपनीकरिगयो रावणा । अपनीदशरथनाथ ८

जीतिजीति पृथ्वी सबै अपनी अपनी करिकै गये यशी दशरथराजा ते अधिक कोई न भयो जाकी सब प्रशंसा करैहैं उनके सुकृतको यश जगतही में रहिगयो उनके साथ न गयो औ अयशी रावणते अधिक कोई न भयो जाकी सबकोई निन्दा करै हैं जाके दुःकृतको अयश जगतही में रहिगयो ८ इति पचपनवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ छप्पनवींरमैनी ॥

चौ० ॥ दिनदिन जरै जरलके पाऊ । गाड़े जाइन उमगै काऊ १
कंधन देइ मसखरी करई । कहुधौं कौनिभांति निस्तरई २
अकरमकरै करमको धावै । पढ़िगुणिवेद जगतसमुझावै ३
छूछेपरे अकारथ जाई । कह कबीर चितचेतहु भाई ४

चौ० दिनदिनजरैजरलकेपाऊ । गाड़ेजाँयनउमगैकाऊ १

कबीर जी कहै हैं कि जे रोज रोज ज्ञानाग्नि करिकै कर्मको जारैहैं औ अपने जीवत्व को जारैहैं कि हम ब्रह्म ह्वै जायँ सो जरल के पाऊ कहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न काहूके कर्महीं जरे न कोई ब्रह्महीं भयो अथवा जरल के पाऊ कहे जारि गयेहैं कर्म जाको अर्थात् कर्महीं नहीं है ऐसो जो ब्रह्म ताको पायो है अर्थात् कोई नहीं पायोहै जो कहो जड़ भरतादिक पायो है तौ वे जो ब्रह्महीह्वै जाते तौ दूसरो मानि कै रघुगणको कैसे उपदेश करते कपिलदेव सगर के लरिकन काहे जारिदेते औ सनकादिक जे बिजय को काहे शाप देते सो तुम ब्रह्म ह्वैबे की आशा न करो जो संसार परे रहौगेतौ कबहूं सतसंग पायकै उद्धारहू होइ जाइगो जो ब्रह्म रूपी गाड़में परौगे तौ गड़िजाउगे कबहूं न उमगोगे अर्थात् तिहारोकतहूं उद्धारन होइगो १

चौ० कंधनदेइ मसखरीकरई । कहुधौंकौनभांतिनिस्तरई २

कहो या कौनी भांति ते जीव को निस्तार होय समीचीन साधुन को सतसंग तो मिलै नहीं है गुरुवा लोगको सतसंग मिलैहै ते मसखरी करैहैं मसखरी कौन कहावै जो आपतो जानै औ औरेन को ठगै सो गुरुवा लोग आपतो जानैहैं कि या झूठा ब्रह्ममें हम लागे हमारे हाथ कछु वस्तु न लागी ब्रह्म न भये परंतु जो साहब में लगैहै जीव तिन को कांधा तान दिये अर्थात् उनको ज्ञान अधिक पुष्टतो न किये कि भले लगेहैं तुम मसखरी किये कि जो तुमहूं अहंब्रह्मास्मि मानौ तौ तुम को अनेकप्रकार की रिद्धि सिद्धि प्राप्त होइहै साहब को ज्ञान छांड़िदेहु याभांति समुझाय नरक में डारिदिये २ ॥

चौ० अकरमकरै करमकोधावै । पढ़िगुणि बेदजगतसमुझावै ३
छूंछे परै अकारथ जाई । कह कबीर चित चेतहु भाई ४

कैसेहैं वे गुरुवा लोग करत तो अकरम मतहै कि हमको करम त्याग है हम सन्यासी हैं हम ज्ञानी हैं औ करम करिबे को धावैहैं औ वेद को पढ़ि गुनि कै जगत को समुझावैहैं कि निःकर्म होउ चाहईते सब बिकार है चाह छोड़िदेउ औ आप भाजी के लिये बजारमें झगरैहैं सो उनकेकहे जीवन को कैसे समुझिपरै ३ उनको उपदेश अकारथई जायहै औजोसुनै है सो छूंछई परैहै अर्थात् कछू वस्तु हाथनहीं लगैहै सो कबीरजीक हैहैं कि हे भाई चितचेत करो जेहिते कनक कामिनी रूप मायाते औ धोखा ब्रह्मते बचिजाउ ४ इति छप्पनवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Dômain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सत्तावनवीं रमैनी ॥

चौ० कृतिया सूत्रलोक यक अहई । लाख पचास के आगे कहई १
बिद्या बेद पढ़ै पुनि सोई । बचन कहत परतक्षै होई २
पहुंचि बात बिद्या के वेता । बाहु के भर्म भये संकेता ३
साखी ॥ खग खोजनको तुमपरे पीछे अगम अपार ॥
बिन परचैकिमि जानिहौ झूठाहै हंकार ४

चौ० क्रितिपा सूत्रलोकवकअहई । लाखपचासके आगेकहई १

अथ कृतिया कहे यह कृतिम जो है कर्म अहं ब्रह्म मानिबो सो यह लोक में एक सूत्र के बरोबर है कहे रसरीके बरोबरहै जीवनके बाँधिबे को मंगल में कहेउ आयेहैं कि ब्रह्म में अणिमादिक सिद्धिहोइहैं सो वह कृत्य करिकै कहे ब्रह्म मानिकै पचास लाख बर्षके आगेकी कहैहैं सो पचासलाख यह उपलक्षन है अर्थात् भूत भविष्य बर्तमान सबकहैहैं १ ॥

चौ०॥ बिद्या बेद पढैपुनिसोई । बचन कहतपरत सै होई २
पहुचि बात बिद्याकेवेता । बाहुके भर्म भपे संकेता ३

बिद्या जो है बेद जो है सो संपूर्ण पढ़िलेइ अर्थात् आइ जाइ तबजौनबात कहैहैं तौन परतक्ष होइहै कहेबाक्य सिद्धि ह्वै जाइहै २ वै बिद्याके बेत्ता कहे जनय्या जे लोगहैं ते वह बातको पहुंचिकहे पहुंचतभये अणिमादिक सिद्धि होतभई औ ब्रह्मको जानतभये परन्तु साहबको जोहै साकेत लोक ताके जानिवेको उनहूं को भ्रमभयो अर्थात् साहबको लोक न जानत भये ३

साखी ॥ खगखोजनको तुमपरे पीछे अगम अपार ॥
बिन खरचै किमिजानिहौ झूठाहै हंकार ४

औ खग जो है हंस तिहारोस्वरूप ताके खोजिबे को तुम चल्यो कि हम अपने आत्माको स्वरूपजानैं सो साहब अगमअपार जो धोखाब्रह्मसो लग्यो है वाहीको अपनो स्वरूप मानिलियो है जब कुछ संसार तुमको छूट तब अगम अपार जो धोखाब्रह्महै ताहीको अहं ब्रह्मास्मि मानिकै बैठ्यो सो वह अगम है काहू की गम्य नहीहैं अपारहै अर्थात् झूठा है भाव यह है कि जब साकेत लोकको जानौगे तब साकेत निवासी जे परमपुरुष श्री रामचन्द्र तिनको जानौगे तब वै हंसस्वरूप दै अपने धामको लैजायँगे तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीं जनम मरणते रहितहोउगे तब हंस स्वरूपपावोगे औरीभांति संसार ते न छूटौगे न सिद्धि प्राप्तभये न ब्रह्म भये तामें प्रमाण गोसाईं तुलसीदासजीको दोहा ॥ बारिमथे घृत होइबरु बरुसिकता ते तेल । बिनहरि भजन न भवतरैं यह सिद्धांत अपेल १ औ कबीरहू जीको प्रमाण ॥ राम बिनानर ह्वैहौ कैसा । बाटमांझ गोबरौरा जैसा ४ इतिसत्तावनवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ अट्ठावनवीं रमैनी ॥

चौ० तैसुत मानु हमारी सेवा । तोकहँ राजि देहुहो देवा १
गम दुर्गम गढ़ देहु छुड़ाई । अवरोबात सुनो कछुआई २
उत्पत्ति परलै देउ देखाई । करहुराजसुखबिलसहुजाई ३
एको बार जाइ हैं वाको । बहुरिजन्मनहिंहोइहैताको ४
जायपाय देहौ सुख धाना । निश्चयबचनकबीरकोमाना५

साखी ॥ साधुसंत तेई जना जिन माना बचन हमार ॥
आदिअंत उत्पत्ति प्रलय सबदेखा दृष्टिपसार ६

चौ० तैसुत मानु हमारी सेवा । तोको राजिदेहु हो देवा १
गमदुर्गमगढ़देहु छुड़ाई । अवरोवात सुनोकछुआई २

वही लोकके गये जनम मरण छूटैहै सो कबीरजी साहिबै की उक्ति कहैहैं साहब कहैंहैं हेसुत हेजीव तू हमारिही सेवा मानु जिन देवतन को तैं चाहैहैं किमैं इनको दासहौं तिन देवतन की राज्य मैं तोको देहुंगो अर्थात मेरोपार्षद जब होयगो तब सबकेऊपर ह्वैजायगो ते देवता तुम्हारही सेवा करैंगे १ औ गमजोहै जगत दुर्गम जोहै निर्गुण ब्रह्म ये दूनौ धोखाजे गढ़हैं ते तोको छोड़ाय देउगो अर्थात् मायाते रहित तोको करि देउगो औ वहधोखा ब्रह्म में न लगन देउंगो जो जीवनको संसारी करिदेइ हैं तब सगुण निर्गुण के परे जो और कछु बातहै सो मेरे पार्षद कहैहैंसो तेहू मेरे नगीच आइकै सुनैगो २ ॥

चौ० उतपतिपरलैदेहुदेखाई । करहुराज्यसुखबिलसहुजाई ३

अरु उत्पत्ति प्रलय जौनीभांति सो मेरे प्रकाशके भीतर समष्टि जीव ते होइहै सो मैं ऊंचेते तोको देखाइदेउँगो औ जगतमें आयकै जोमोको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानिकै मेरी भक्ति करैहैं सोसुखहै सोतैंहूं मेरीभक्ति करिकै संसार रूपी राज्यमें जाइकै सुखसों बिलसैगो तोको संसार बाधा न करिसकैगो जगतरूपी राजिके बिषयानंद ब्रह्मानंद आदिक जे सुखहैं ते सुखनहीं हैं जो कहो साहबके लोक जाइ फेरि कैसे आवैगो उहां गयेतो अपुनरावृत्ति कहि आयेहैं तो कबीरजी वीरसिंह देवको साहब के लोक लैगये लोक देखाइकै पुनि लैआइकै शिष्य करत भये औ श्रीकृष्णचन्द्र गोपन को आपनो लोक देखाइ पुनि लैआये हैं उनको जगत बाधा नहीं करि सकैहै वे साहब लोकही में हैं काहेते कि साहेबको लोकप्रकाश सर्वत्र व्यापकहै साहब की सकल सामग्री साहब के रूपई बर्णन करिआये हैं साहब लोकप्रकाश सर्वत्र पूर्णहै तौसाहबको लोक औ साहब सर्वत्रपूर्णई है जे साहेब को जानैहैं औ जगतऊमें हैं तौ साहबके लोकई में बनेहैं उनको संसार बाधा नहीं करिसकै ३ ॥

चौ० एकोबार न जैहै बांको । बहुरि जन्मनहिं होइहै ताको ४
जायपाय देहौसुखधाना । निश्चय बचनकबीरको माना ५

एकोबार न बांको जाइगो जन्म मरण तेरोछूटिही जायगो फेरि जन्म मरण न होइगो४औ संपूर्ण जे पापहैं ते रहैंगे औ सुखको धाना कहे समूह तोको देउंगो सोसाहब कहैहैं कि हेजीव कबीरजीको बचन तुम निश्चय मानिकै मेरेपास आवो ५ ॥

साखी ॥ साधुसंततेई जना जिन माना बचन हमार ॥
आदिअंत उत्पति प्रलय सबदेखा दृष्टिपसार ६

जे हमारो कह्योबचन प्रमाण मान्योहै तेई साधुहैं कहे साधन करण वारेहैं औ तेई संतहैं तिनहीके मनादिकशांत ह्वै गये हैं औ तेई आदिअंत उत्पत्ति प्रलय सब बात दृष्टि पसारिकै देख्यो है अर्थात् सब बातजानि लियो है ६ इति अट्ठावनवी रमैनीसमाप्तम्॥

अथउनसठवींरमैनी ॥

चौ० चढ़त चढ़ावत भड़हर कोरी । मन नहिंजानै को करि चोरी १
चोर एक मूसल संसारा । बिरलाजन कोइ जानन हारा २
स्वर्ग पताल भूमि लै बारी । एकैराम सकल रखवारी ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साखी ॥ पाहन ह्वै ह्वै सबचले अनभितियन को चित्त ॥
जासों कियो मिताइया सो धन भे अनहित्त ४

चौ० चढ़तचढ़ावतभड़हरफोरी । मननहिं जानैंकोकरिचोरी १
चोर एकमूसल संसारा । बिरलाजनकोइजाननहारा२
स्वर्गपताल भूमिलैबारी । एकैराम सकल रखवारी ३

गुरुवालोग आप प्राण चढ़ावैहैं अरु और को सिखै सिखै प्राणचढ़वावैहैं सो यही प्राण चढ़त चढ़त भड़हर जो ब्रह्म ताको फोरिकै वही धोखा ब्रह्म में लीनभये मनते या नहीं जानैहैं कि साहब के ज्ञान की चोरी को करैहै वही धोखाब्रह्महो तो करैहै यहनहीं जानैहैं वाही में लगेहैं १ सोचोर एकजो धोखा ब्रह्महै सो संसार भरको मूसिलियो अर्थात् ब्रह्महीं के ज्ञानको सबदौरे हैं परमपुरुषको नहीं दौरे हैं तेहिते कोई बिरला जन परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जानैहै २ जे श्रीरामचन्द्र एक स्वर्ग पाताल भूमिको बारीकेसम रखवारी कहे रक्षा करैहैं इहां एकैराम रखवारहै यहजो कह्यो ताते बांधनवारे धोखा देनवारे बहुत हैं पै बंधन ते छोड़ावन वारे एक श्रीरामचन्द्रई हैं दूसरो नहीं है स्वर्गते ऊपरकेभू-भूमिते मध्यके पाताल ते नीचेके लोक सब आये ३ ॥

साखी ॥ पाहनह्वैह्वैसबचलेअनभितियनकोचित्त ॥
जासोंकियो मिताइया सोधनभे अनहित्त ४

अनभितिया को चित्र जो धोखाब्रह्महै तौनेमें लगिकै संपूर्णजे जीव हैं ते पाहनह्वैगये कहेजड़वत् ह्वैगये वे धनते छोड़ावनवारे श्रीरामचन्द्र को नजानतभये जौन ब्रह्मते सबजीव मिताई कियो सो अनहितभये कहेसं-सारमें डारनवारो धोखईठहर्‌यो ४ इतिउनसठवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथसाठवींरमैनी ॥

चौ० छाड़हु पतिछाड़हु लवराई । मनअभिमान टूटितव जाई १
जनचोरी जो भिक्षाखाई । फिरिबिरवा पलुहावन जाई २
पुनिसंपति औपतिको धावै । सोबिरवा संसार लैआवै ३

साखी ॥ झुठा झुठैकै डारहू मिथ्या यह संसार ॥
तेहिकारण मैं कहतहौं जासों होय उबार ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौ० छाड़हु पतिछाड़हुलवराई। मन अभिमान टूटितव जाई १
जनचोरी जो भिक्ष्याखाई। फिरिबिरवा पलुहावन जाई २
पुनिसंपति औपतिकोधावै। सोबिरवा संसार लै आवै ३

कबीरजी कहैहैं कि नानादेवता जो पतिमानौहौ औलवराई जो धोखा ब्रह्महै ताको छोड़िदेउ न छोड़ागेतौ पुनिकै जब संसार आवोगेतबतो अभिमान दूरिहीजाय अर्थात् नानादेवतनहीं कीसुधि रहिजाइगी न धोखा ब्रह्महीकी सुद्धिरहिजाइगी १ काहेतेकहैहैं कि ब्रह्मको छोड़िदेउ सोआगे कहैहैं जीवयासनातनको साहबको है सोजेजन साहबते चोराइकै और देवतनते भिक्षामांगि खायहैं औफिरि फिरि बिरवा रूप देवतन को पलुहावैकहे प्रश्नकरे जायहैं पुनिउनहीं सों संपतिकहे नानाऐश्वर्यहोय सिद्धि होइ औपतिकहे राजाहोय इन्द्रहोय याकोधावैहैं सोवे बिरवा रूप जे देवताहैं तेफिरि फिरि संसारमें लैआवैहैं जनन मरणहोयहै ३ ॥

साखी ॥ झुठा झुठैकै डारहूं मिथ्या यह संसार ॥
तेहिकारणमैकहतहौंजासोंहोयउबार ४

सोझूठा जो ब्रह्महै ताको झूठसमुझिलेउ अरुदेवता संसारहीमें हैं सो यहसंसार जोहै ताको मिथ्यामानिलेउ औसबको कारण जौन सर्वत्र है जाकोपूर्व कहि आयेहैं कि एकै रामरखवारी करैहैं सोमैहौं हौं तिहारोपति तुम मोमेंलगौ जात तुम्हारो उबार ह्वै जाइ जिनकोतुमपति मानिराख्योहै ते तुम्हारे पतिनहीं हैं ये बांधने वारेहैं ४ इति साठवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथइकसठवीं रमैनी ॥

चौ० धर्मकथा जो कहतै हई। लवरी नितउठि प्रातैकहई १
लवरि बिहाने लवरीसांझा। यकलावरि बसहृदया मांझा२
रामहुकेर मर्मनहिं जाना। लैमतिठानी वेदपुराना ३
वेदहुकेर कहानहिं करई। जरतैरहै सुस्तनहिं परई ४
साखी ॥ गुणातीतके गावते आपुहिगये गमाय ॥
माटीतन माटीमिल्यौ पवनहि पवन समाय ५
धर्मकथा जो कहतैरहई। लवरी नितउठि प्रातैकहई १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मकीकथाजो कहतईरहैहैं कि स्त्री आपने पतिहीको जानैऔर दूसरेको पतिकरि न जानै परन्तु धर्मकछु जाननहीं है धर्मकहांहै कि जीवयह साहब कीशक्तिहै याके पति साहबहैं तामेंप्रमाण ॥ अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धिमेपराम् । जीवभूतां महाबाहो ययेदंधार्य्यते जगत् ॥ इतिगीतायाम् वासुदेवः प्रमाणैकःस्त्रीपाय मिदंजगत् ॥ दूसर कबीरकाप्रमाण।दुलहिनि गाऊमंगलचार । हमरेघरआयेरामभतार ॥ तनरतिकरिमैंमन रतिकरिहौं पांचौतत्त्वबराती।रामदेवमोहिंब्याहनएहैं मैंयौवनमदमाती ॥सरिरसरोवर वेदीकरिहौं ब्रह्मावेदउचारा। रामदेव सँगभावरिलेहौं धनिधनिभाग हमारा॥ सुरतैंतीसौ कौतुकआये मुनिवर सहस अठासी। कहैकबीर हमब्याहिचलेहैं पुरुषएक अबिनाशी ॥तेसाहेबको या जीवनहीं जानैहै और औरमें लगैहै बड़े प्रातःकालउठिकै लवरीकहैहै कि हमहीं रामहैं दूसरो नहीं है अथवा जब जीव जन्मलेइहै सो प्रातःकालहै जब गर्भमें रह्यो तब साहब ते कह्योहै कि तुम मोको गर्भ ते छड़ायो मैं तिहारो भजन करौंगो औ जब गर्भ ते निकस्यो जन्म लियो तब वह बात लवरी कै डारयो मैं कहा कह्यो है साहब को भजन न कियो कहांकहां करन लग्यो १ ॥

चौ० ॥ लवरीबिहानेलवरीसांझा । यकलावरिबसहृदयामांझा २
रामहुंकेर मर्म नहिं जाना । लैमति ठानी वेद पुराना ३

सो यहितरह ते लवरी बिहाने कहैहै औ सांझकै लवरी कहैहै कहे आपन औ गुरुकै औ देवताकै ऐक्यता मानैहै काहेते तीनिहैं कि एकलवरी जोहै मायासो हृदय में बसैहै सोई सब लवरी कहा वैहै २ सोभला ब्रह्म को मर्म न जानै तो न जानै काहेते कि वहतो धोखा है जो कछूबस्तु होइ तौ जानै परंतु सांच औ सर्बत्र पूर्ण औ सबते श्रेष्ठ ऐसेजे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जो या मर्म है कि जोकोई मेरे सन्मुख होइ ताको मैं छड़ाइ लेउं याजीवन जानतभये साहब छड़ाइ लेइहै तामेंप्रमाण ॥ अबहीं लेउ छड़ाय कालते जोघट सुरतिसम्हारो ॥ याही हेतु सुरति दियोहै मतिलैकै कहे ग्रहण करिकै वेदपुराण के अर्थ ठानै है कहे अपने सिद्धान्तनमें लगाय देइहै ३ ॥

चौ० ॥ वेदहु केर कहां नहि करई।जरतै रहै सुस्त नहिं परई ४

सिद्धान्त तौ एकै होइहै साहबको सिद्धांत जो तात्पर्य वृत्ति करिकै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद कहैहैं सो भला न जानै मुक्ति न होइ परन्तु वेदमें जो सुकर्म लिखेहैं सो करिकै नरकते तौ बचै सो वेदहू की कही जो विधिनिषेध है सोऊ नहीं करैहै ऐसोमूढ़ यहजीव शोकरूपी अग्निमें जरते रहैहै स्वस्त नहीं परैहै सुचित्त नहीं होयहै अर्थात् इहांकुछ छोड़्यो उहां धोखाजो ब्रह्म है तहौं कुछु न समझ्यो औ ईश्वरजेहैं तिनहूं को काहूकोनमान्यो औ सबके रखवार दयालु जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहूं छोड़्यो तेहिते मूर्ख ऊंटकेपाद ह्वैगयो न ज़मीनको न आसमान को वाको कौन बचावै जो कहो आत्मा को चीन्हिकै बचिजाय तौ जो आत्मामें एतो शक्ति होती तौ बंधन में न परतो आपही बचिजातो ताते सब के रखवार जे साहब हैं तिनहीं के बचाये बचैहै ४ ॥

साखी ॥ गुणातीत के गावते आपुहि गये गमाय ॥
माटीतन माटी मिल्यो पवनहि पवन समाय ५

गुणातीत जो साहब को लोक ताके गावते कहे पूकारते जहां समष्टि जीव रहैहै तहां आपुही रामनाम को साहबमुख अर्थ गमाय कै संसार मुख अर्थ करि संसारी ह्वैगयो शरीर धारण कियो पुनि माटीमें माटी मिलिगयो औ पवनमें पवन मिलिगयो अर्थात् तेपुनि जैसेके तैसे ह्वैगये औ जो गुणातीतके गावते यह पाठ होइतौ यह अर्थहै गुणातीत जोहैधोखा ब्रह्म ताको गावत गावत साहबको गवाँइ जातभये ५ इतिइकसठवीं रमैनीसमाप्तम्॥

अथबासठवींरमैनी॥

चौ० जो तोहिं कर्त्ता बर्ण बिचारा । जन्मत तीनिदंड अनुसारा १
जन्मत शुद्र भये पुनि शूद्रा । कृतिमजनेउ घालिजगदु द्रा २
जोतुम ब्राह्मण ब्राह्मणी जाये । और राह तुम काहेन आये ३
जो तू तुरुक तुरकिनी जाया । पैठे काहेन सुनति कराया ४
कारी पोरी दूहौ गाई । ताकर दूध देहु बिलगाई ५
छाड़ कपट नल अधिक सयानी । कहकबीर भजु शारँगपानी ६

चौ० जोतोहिंकर्त्ताबर्णबिचारा । जन्मततीनिदंडअनुसारा १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जे तोको ब्रह्मा वर्ण को बिचार कियो कि ये ब्राह्मण हैं क्षत्री हैं वैश्य हैं शूद्रहैं मुसल्मान हैं सो एतो शरीर के धर्म हैं तीन दंड जे हैं संचित क्रियमान प्रारब्ध तिनके कर्मके अनुसार ते जन्मतकहे जन्म लेइहैं १॥

चौ० जन्मतशूद्रभयेपुनिशूद्रा।कृतिमजनेउघालिजगदुंद्रा २
जोतुमब्राह्मणब्राह्मणीजाये। औरराहतुमकाहे न आये३

जब पूथम तेरो जन्म होइ है तबतैं शूद्रई रहेहै काहेते कि संस्कार कुछनही रहेहै औ जब मरैहै तब अशुद्धई रहेहै बिना जनेऊबूनीआगीमें जरिजाइहैं तबहू शूद्रैहै जाइहै सो कृत्रिम जनेऊ पहिरिकै तैं जगतमेंद्वन्द मचाइदियोहै कि हम ब्राह्मणहैं ये क्षत्रीहैं येबैश्यहैं येशूद्रहैं२ जोकहो हम जन्म करिकै ब्राह्मणहैं ब्राह्मणीते उत्पन्न हैं और राहद्वै काहे आये ब्रह्मांड फोरिकै आवते आंखीके राहद्वै आवते अशुद्ध राहद्वै काहे आये अर्थात् न ब्राह्मणी आपनी शक्तिते उत्पन्न करिसकै औ न तैं आपनी शक्तितेआइ सकै कर्महीते ब्राह्मणी उत्पन्न करैहै कर्महीते तैं आवैहै तेहिते जन्म तेतौ शूद्रहौ संस्कार ते द्विजभये वेद अभ्यास कियो तब बिप्र भये औ जब ब्रह्मको जानैगो तबब्राह्मण कहावैगो ताते कर्महीते ब्राह्मणत्व तोमें आवै है अहंब्रह्मतौ धोखहीहै परब्रह्मजे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहू को तैं न जान्यो सो तैं ब्राह्मणकैसेहोइगो जबतैं साहबको जानैगो तबहीं ब्राह्मणहोइगो३॥

चौ० जोतुतूरुकतुरुकिनीजाया। पेटैकाहेनसुनतिकराया ४
कारोपीरीदूहौ गाई। ताकर दूध देहु बिलगाई ५

औ जो तू कहैहै कि हम तुरुकिनी ते उत्पन्न हैं तौ पेटै काहे न सुरति करायो तेहिते तूरुकिनीके पेटते भयेते मुसल्मान नहीं है ४ कारीपीरी गाइको दूध मिलाइकै कोई बिलगावै तौ काबिलग होइहै ऐसे आत्मातो एकही जातिहै हिंदू तुरुक नहीं ह्वै सकै है ५॥

चौ० छाडुकपटनलअधिकसयानी।कहकबीरभजुशारँगपानीद्

आपनी सयानी अधिक करिकै जो कपट करिराख्योहै सो छोड़ि दे बिचारिकै देखु तैंतो आत्मा न हिंदू है न तुरुकहै तैंजाको अंशहै ऐसे शारंगपाणि जे साहब हैं ताको भजु ताकी सेवा करु शारंगपाणी जो कह्यो ताको यह हेतुहै कि धनषबाण लिये तेरी रक्षा करिबेको तैयार हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरै औरै में लगेहैं जो साहब में लागेहै सोई सबते श्रेष्ठ होयहैं तामें प्रमाण ॥ विप्रात्द्विषड्गुणयुतादरविंदनाभपादारविंदबिमुखात्श्वपचंवरिष्ठम् मन्येतदर्पितमनोवचने हितार्थप्राणंपुनातिसकुलंनतुभूरिमानः इति भागवते ॥ इति बासठवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथतिरसठवींरमैनी ॥

चौ० नाना वर्ण रूप यककीन्हा। चारिबर्ण उनकाहुन चीन्हा १
नष्टगये करता नहिं चीन्हा। नष्टगये औरहि मन दीन्हा २
नष्टगये जिन वेद बखाना। वेद पढ़ा पै भेद न जाना ३
बिमलषकरैनयननहिंसूझा। भोअयानतबककुव न बूझा ४

साखी ॥ नाना नाच नचाइकै नाचै नटके वेष ॥
घट घट अबिनाशी बसै सुनहुतकी तुमशेष ५

चौ० नानाबरणरूप यककीन्हा। चारिबरण उनकाहुनचीन्हा १
नष्टगयेकरता नहिंचीन्हा। नष्ठ गये औरहि मन दीन्हा २
नष्टगये जिनवेद बखाना। वेद पढ़ा पै भेद न जाना ३
बिमलषकरैनयननहिँसूझा। भोअयानतबककुवनबूझा ४

साखी ॥ नाना नाच नचाइ कै नाचै नट के वेष ॥
घटघट अबिनाशी बसैसुनहुतकी तुमशेष ५

बर्ण धर्मखंडन करि आये अब सब बर्णको एक मानि जे साहबको भूलैहैं तिनको खंडन करैहैं नानारूप जे जीवहैं तिनको एक बर्ण कहे एकरंग करिदेत भयो अहंब्रह्मास्मिकरिकै सब मानत भयो कि हमहीं सब हैं दूसरो नहीं है चारिउ बर्ण वहीको बर्णन करत भये यह न जानतभये कि यह धोखा ब्रह्मको खाइ लेइहै १ फिरिफिरि सबजीव नष्ट ह्वैगये कहे मरिगये उद्धार कर्ता जो साहबहै ताको न चीन्हत भये औ औरहिजोवा धोखाब्रह्महै तौनेमेंमनदैकै नष्ट ह्वै गये अर्थात् लीनह्वै गये साहबकोतो जाने नहीं फिर संसारी भये २ जे वेदको बखानि बखानि कै पढ़ि पढ़ि कै औरनको अर्थसुनावै हैं तेवेदपढ़ोपरंतुभेद न जान्योकहेवेदकोतात्पर्यजे साहब हैं तिनको न जान्यो तेहिते नष्ट ह्वै गये सब वेदको भेद साहब है तामें प्रमाण॥ सर्ववेदायत्पदमामनंति ३ बिमलषजो साहब मनबचन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के परे ताकोखंकहे आकाशवत् शून्य ज्ञानकरैहै कि वहनही है आकाशवत् ब्रह्मही पूर्ण है सो उनके ज्ञान नेत्रतौ हई नहीं हैं साहब कैसे सूझि परै जब न सूझि पर्‌यो तब अज्ञान ह्वैगये नेति नेति कहन लगे कि अकथ है कबीरका प्रमाण वेद बिचारि भेदजो जानै । सतगुरु मर्म शब्द पहिचानै ४ गुरुवा लोग कहैहैं कि वहीजो है अबिनाशी सो सबके घट घट में है सबको नाच नचावै है औ नटके वेष आपो नाचैहै सो कबीर शेषतकी सों कहैहैं कि हे शेषतकी जो सबको नाच नचावैगो आप नट के बेष नाचैगो सो अविनाशी कैसे होइगो काहे ते कि नट एकवेष लै आयो पुनि वह वेष छोड़िकै और वेषलै आयो याही भांति नाना बेषनट धारण करैहैं ते सब अनित्य हैं नाना बेष धरिबो तौ मायाके गुणहैं वह माया के परे कैसे होइगो औ जब मायातेपरे न होइगो तौ अबिनाशी कैसे होइगो सो हे शेषतकी तुम सुनौ वाहूबिचार करत करत जो शेष रहिजाय है सो तुम हौ वातो तुम्हारही अनुभव है अथवा तुम शेषहौसो कार निराकार के परेजो साहब है ताको तुम शेषहौ कहे अंशहौ ५ इति तिरसठवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथचौंसठवींरमैनी ॥

चौ० काया कंचन यतन कराया । बहुत भांतिकै मन पलटाया १
जो सौ बार कहौ समुझाई । तहिवो धरा छोड़िनहि जाई २
जनके कहे जोजन रहिजाई । नवो निद्धि सिद्धी तिन पाई ३
सदाधर्म तेहि हृदया बसई । राम कसौटी कसतै रहई ४
जोरि कसावै अंतै जाई । तौ बाउर आपुहि बौराई ५
साखी ॥ ताते परी काल की फांसी करहु आपनो शोच ॥
जहां संत तहँ संत सिधावै मिलि रहे पोचैपोच ६

चौ० काया कंचन यतन कराया। बहुतभांतिकै मनपलटाया १
जो सौबार कहौं समुझाई । तहिबो धराछोड़िनहिंजाई २
जनकेकहे जोजनरहिजाई । नवोनिद्धि सिद्धी तिन पाई ३
सदाधर्म तेहिहृदया बसई । राम कसौटी कसतै रहई ४
जोरि कसावै अंतै जाई । तौ बाउर आपुहि बौराई ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साखी ॥ तातेपरी कालकीफांसी करहु आपनो शोच ॥
जहां संततहँ संत सिधावै मिलि रहे पोचैपोच ६

कबीरजी कहैहैं कि ई जीवन के काया को हम बहुत यतन करवाया औ बहुत भांति ते मन पलटाया कि तूधोखा को त्यागि कंचन आपने स्वरूपको जानो१यावात यद्यपिमैं सौबारसमुझाऊ हौं ताहूपै ऐसो धोखाको धर्‌यो कि छोड़ि नहीं जाय सो जे जन गुरुवाजनके कहे रहिजाय हैं धोखा को नहीं त्यागैहैं २ ते नवो निद्धि पावैहैं औ निर्गुण सगुण के परे मैं जो बात कहौहौं ताको कहां बझैं ३ जेमेरो कह्योबूझैहैं कि हम साहब के हैं या धर्म जिनके हृदय मैं बसै है ते साहबके रूप कसौटी में आपनो कंचन स्वस्वरूप कसतई रहैहैं औ जे साहब नहीं कसैहैं गुरुवा लोगन के कसावै जाइ हैं तेवे बाउरऊ निराकार ब्रह्म तामें आपही बौराय जायहैं जोऔरको और कहैसोबाउरहै४।५ सोहे जीवौ तुम साहब के होइकै धोखा में लागे ताहीते काल की फांसीमें परेहौ सोआपनेकूटिबेको शोच करौ देखौतौ जहां संत रामोपासकहैं तहैं संत जाइ हैं आपनोस्वरूपजानि छूटि जाइहैं जे गुरुवालोगनकोउपदेश लेइहैं ते जीव पोचै पोच मिलि रहेहैं ६ इतिचौंसठवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथपैंसठवींरमैनी ॥

चौ० अपने गुणके अवगुणकहहू। इहै अभाग जो तुमन बिचरहू १
तुम जियरा बहुतै दुखपाया। जलबिनमीन कवनसचुपाया २
चातक जल हल भरेजोपासा। मेघ न बरसै चलै उदासा ३
स्वांग धर्‌यो भवसागर आसा। चातक जलहल आसै पासा ४
रामै नाम अहै निज सारू। औ सब झूठ सकल संसारू ५
किंचितहै सपने निधि पाई। हियनमाय कहँ धरै छपाई ६
हरि उतंग तुमजाति पतंगा। यमघर कियो जीवको संगा ७
हियन समाय छोड़नहिंपारा। झूठ लोभ तै कछु नबिचारा ८
स्मृति कहा आपुनहिं माना। तरिवर छलछागर ह्वै जाना ९
जिय दुरमति डोलै संसारा। तेहि नहिं सूझै वार न पारा १०
साखी ॥ अंध भया सब डोलई यह कोइनहिं करै बिचार ॥
हरिकि भक्ति जाने बिना भव बूड़िमुआसंसार ११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौ० अपने गुणके अवगुणकहहू । इहै अभागजोतुमनबिचरहू १
तुमजियराबहुतैदुख पाया । जलबिनमीनकवनसचुपाया २
चातकजलहलभरेजोपासा । मेघन बरसैं चलैं उदासा ३
स्वांगधर्यो भवसागरआसा। चातकजलहलआसैपासा ४

स्वतः सिद्ध तुम साहबके दासहौ या जो आपनोगुण ताको अवगुण कहौहौ कि हमब्रह्महैं सो यानहीं बिचारौहौ कि हमब्रह्महैं कि दासहैंयाही तुम्हारो अभागहै दासभूत प्रेतमान॥दासभूतास्वतःसर्बथात्मनः परमात्म में बहुत दुःखपायोहै जो छायापाठहोइ तौ बहुत दुखमें आयो सो जब बिना कौनौ सचुपायोहै नहीं पायो ऐसे बिनासाहब के जानेसचुन पावोगे १।२ जैसे जब मेघस्वातीको जलनहीं बरषैहैं तबचातक उदासैरहैहै कहे पियासैरहैहै जोनजीक समुद्रौ भरोहोइ तौकहाहोइ ऐसेस्वामी मेघसम रामोपासक पूरागुरु तुम नहीं पायो जो साहबको बताइदेइ तातेतुमउदा सईगया और औरमें लगावन वारे गुरुवालोग जो उपदेशऊ कियो पैजन- न मरण छूट्यो ३ भवसागरते पारहोबे की आशाकरि स्वांगजो धोखाब्रह्म तौनेको तुमधर्यो कि अहंब्रह्मास्मिमानि संसारते छूटिजाइंगे सो तुम्हारो आशाचातक की भई कि स्वातीतौ पायोनहीं जोबहुत जलहै पैबिना स्वाती चातककी आशाफांसहीं ह्वैगई अथवा स्वांग धोखाब्रह्मको जो तुम धरयोहै सो साहबकी आशाकहे दिशानहीं है भवसागरही की आशा कहे दिशाहै ४ ॥

रामैनामअहै निज सारू । औसब झूठ सकल संसारू ५
किंचितहै सपने निधिपाई । हियन माहँकहँ धरै छपाई ६
हरि उतंगतुमजाति पतंगा । यमघर कियोजीव को संगा ७
हियनसमायछोड़नहिंपारा । झूठ लोभ तैं कछुन विचारा ८
स्मृतिकहा आपुनहिंमाना । तरिवरछलछागरह्वै जाना ९
जिय दुरमति डोलैसंसारा । तेहि नहिंसूझैवार न पारा १०

हे जीवौ तुम यह बिचारतजाउ कि निजकहे आपनो सार रामैनामको साहबमुख अर्थ समुझिकै संसारते छूटोगे अर्थात् साहब को स्वरूप औ तुम्हारो स्वरूप रामनामहीमेंहै औसबकहे सबब्रह्मईहै यहजोमानिराख्यौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है सो धोखाहै झूठाहै औमायिक जो सकल संसारहै सो झूठाहै अथवासकल संसारमें और जेमतहैं तेसब झूठेहैं ५ जो अहंब्रह्मास्मि ज्ञान करैहै सो सपने कैसीहै अर्थात् झूठीहै तैतो किंचित्कहे अनुहै वाबिभुहै झूठलोभते कछुनबिचारा तुम्हारेहियेमें ब्रह्मनहीं समायहै कहे तुम्हारोब्रह्मद्वैबोनहीं संभवित होइहै याको छोड़िदेवओवाको पारनहीं है कहेलवरी औरनहोयहै यातेझूठ लोभकियेहै कि मैं ब्रह्महोइ जाउंगो सो कछु न बिचारा काहेते अच्छा बिचारनहीं कियेहै अथवाकछू न बिचारा कहे वा बिचार कछू नहीं है मिथ्या है८ जौन स्मृति बतावै है ॥ स्याज्जीवनेच्छायदितेस्वसत्ता-यां स्टहायदि । आत्मदास्यहरेःस्वाम्यं संभावंचसदास्मर १ सो तुम स्मृति को कहा आप कहे आपनोस्वस्वरूप न मान्यो धोखाब्रह्ममें लगिकै अपनेको ब्रह्ममानिकै तरिवर जो है संसार ताको छल जो है धोखाब्रह्म सोई है छागरकहे बोकरा ताही द्वैकै कहे वह ब्रह्मद्वैकै तुम जान्यो कि हम चरिलेइँ अर्थात् संसारते छूटिजाइँ सो येतो बड़ोसंसाररूपी वृक्ष कहा धोखाब्रह्म बोकरा चरोचरिजाइ है ९ जौन जीमें दुर्मतिकरिकै संसारमें डोलौहौ कहे फिरौहौ सो अहंब्रह्म माने संसारको वारपार न पावोगे वहतो धोखाहै १० ॥

साखी ॥ अंधभया सब डोलई यह कोइनहिं करै बिचार ॥
हरिकि भक्ति जानेबिना भव बूड़िमुआसंसार ११

श्रीकबीरजी कहैहैं कि मैं येतो समुझाऊंहौं परंतु सबसंसारकी आंखी फूटिगईहैं अंधभया सब डोलैहै कहे फिरैहै यहबिचार कोई नहीं करै है भक्तनको संसार दुःखहरै सो हरि जे हैं सबकेरक्षक परमपुरुष श्रीराम चन्द्र तिनकी अनुरागात्मिका भक्ति बिनाजाने भव जो है धोखाब्रह्म तौनै है भ्रमको समुद्र ताहीमें संसार बूड़िमुआ कहे संसारीजीव बूड़िमुये ११ इति पैंसठवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथ छाछठवींरमैनी ॥

चौ० सोईहितूबंधु मोहिं भावै । जात कुमारग मारग लावै १
सो सयान मारगरहिजाई । करैखोज कबहूं नभुलाई २
सोझूठा जो सुतकै तजई । गुरुकीदया रामको भजई ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किंचितहैयकजगतभुलाना । धनसुतदेखिभयाअभिमाना४
साखी ॥ जियजोनेकपयानकिय मंदिरभयाउजार ॥
मरे जे जियते मरिगये बाचेबाचनहार ५

चौ० सोईहितू बंधु मोहिंभावै । जातकुमारग मारगलावै १
सोसयान मारगरहिजाई । करैखोजकबहूंनभुलाई २
सोझूंठाजो सुतकै तजई । गुरुकीदया रामकोभजई ३
किंचितहैयहजगतभुलाना । धनसुतदेखिभयाअभिमाना ४
साखी ॥ जियजोनेकपयानकिय मंदिरभयाउजार ॥
मरेजे जियतेमरिगये बाचे बाचनहार ५

सोई हितू वा बंधु मोको भावैहै जो कुमारगमें जात जे जीवहैं तिनको सुमारगमें लैआवै कहे साहबको बतावै अथवा कुमार्गमें जात जो जीव हैंताकोसाहबकेमिलनके सुमार्गमेंलगावै १ अरुसोई जीवसयानहैजो सुमार्ग में आयकै रहिजाइहै कहे स्थिर ह्वैजायहै अरु और और मतनको खोज करिकै सबको सिद्धांत साहबहीमें लगाइदेइ सो कबहू न भुलाइ है २ ऐसो गुरुवा झूठाहै जोसुतकै कहे मूड़मूड़िकै आपनो चेला बनाइकै तजिदेइहै साहबको नहीं बतावैहै औरऔर देवतनको सौंपिदेइ है औ जाकीदयाते अर्थात्जाके उपदेशतेयह जीवश्रीरामचन्द्रकोभजनकरैहैसोई सांचो गुरूहै भाव यहहै किबिना परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके जाने यहजीव को शोक नहीं छूटैहै जे गुरूसाहबको बताइकै संसारते नहीं छड़ावैहैं औरऔरमतनमें लगाइकै संसारमें डारिदेइहैं ते अज्ञान दूरि करनवारे नहीं हैं वे नरकदेनवारेहैं औ आप नरकजानवारेहैं तामें प्रमाण ॥ सिधि धनहरै शोक नहिं हरई । सोगुरु घोरनर्कमें परई॥औ कबीरहूजी लिखि आयेहैं॥ छोड़ि देहु नरझेलिकझेला । बूड़े दोऊ गुरु अरुचेला ॥ इहैजीव तूतो अनुहै एकजो ब्रह्म औजगद्रूपजोहै माया तामें भुलाइरह्योहै याही ते तैं जगत्में उत्पत्तिभयोहै आपनेको मालिकमानि धन सुतादिको तोको अभिमान होइहै ३।४ हे जीवजो नेकहु पयान ते किये स्थूल शरीर मंदिर उजार होइजाइहै सो बिना परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके भजन जे मरे ते जीव तो मरिकै चौरासीलाख योनिमें भटकनलगे औबाचेबाचनहारकहे जे पांचौ शरीरते बचिकै पार्षदरूप पाचनद्वार रहे ते बाचे ५ इति छाछठवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथसतसठवींरमैनी ॥

गुरुमुख चौ० देहहलाये भक्ति न होई। स्वांगधरे बहुतैनर जोई १
धिंगाधिंगी भलो न माना। जो काहू मोहिं हृदयनजाना २
मुखककुऔर हृदयककु आना। सपन्योकबहूं मोहिंनजाना ३
ते दुखपावैं यहि संसारा। जो चेतौ तौ होहु निनारा ४
जो नर गुरुकी निन्दा करई। शूकर श्वान जन्म सो धरई ५
साखी ॥ लखचौरासीयोनि जीव यहि भटकि भटकि दुख पावै॥
कह कबीर जो रामहिं जानै सोमोहिं नीके भावै ६

गुरुमुख चौ० देहहलायेभक्तिनहोई। स्वांगधरेबहुतैनरजोई १
धिंगा धिंगी भलो न माना। जोकाहूमोहिंहृदयनजाना २

देह हलाये कहे पेटहलाय कुंडलनी उठावै है औ स्वांगधरे कहे कोई खाखलगावैहै कोई जटा नहीं बढ़ावैहै कोई टोपीदै अलफी पहिरि कुबरी लेइहै कोईकोई तिलकै नहीं देयहै कोई बेंड़ातिलक देइहै कोई नाकते तिलकदेइहै कोई काठ फल पाषाण अस्थि इत्यादिमाला पहिरैहै ऐसे स्वांगधरे नरनको देखैहै सोबिना साहबके जाने भक्ति होइहै नहीं होइहै १ धिंगाधिंगी कहे बड़बड़े मालपुवा मोहनभोग खाय मोटाइ कै बड़बड़े धिंगा ह्वैरहेहैं औ बड़ीबड़ी धिंगी ह्वैरहीहैं भलोजो सांच मतताको नहीं मानैहैं साहब कहैहैं जोकोई मोको हृदयते नहीं जानैहै सोमोको पावैहै नहीं पावैहै २ ॥

चौ० मुखककुऔरहृदयककुआना। सपन्यो कबहूंमोहिंनजाना३
ते दुख पावैं यहि संसारा। जो चेतौ तो होहु निनारा ४
जोनर गुरुकी निन्दाकरई। शूकरश्वानजन्म सोधरई ५

मुखमेंतोऔरहै कि हम संन्यासीहैं हमसाधुहैंहम ब्रह्मचारीहैं औहृदय में और है धनमिलै को उपाय खोजैहैं तेनर सपन्यो कबहूं मोको नहीं जानिसकैहैं ३ सो ऐसे जे प्राणीहैं ते यहि संसारमें दुःख नानाप्रकार के पावैहैं सो हेजीवो तुम चेतकरौ तो इनते न्यारा ह्वैजाउ ४ औ जेतात्पर्य्य वृत्ति करिकै मोको बतावैहैं ऐसेजे गुरुहैं तिनकी जोकोई निन्दाकरैहैं कि जोई वर्णन करैहैं सो सब मिथ्याहै ते मरिकै श्वान अरु शूकरको जन्म धारण करैहैं ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साखी ॥ लखचौरासीयोनि जीवयहभटकिभटकिदुखपावै ॥
कह कबीर जो रामहिंमानै सोमोहिं नीकेभावै ६

साहब कहैहैं कि मेरोभक्त कबीर कहैहै कि चौरासीलाखयोनिमें जीव यह भटकि भटकि दुख पावैहै सो तिनमें जोकोई श्रीरामचन्द्रको जानै सोई मोको भावैहै सोऐसो प्रगट कबीर बतावैहै ताहूको और और अर्थ करिऔरऔरलगैहैं सो मोकोनहीं जानैहैं ६इतिसतसठवीं रमैनीसमाप्तम्॥

अथअड़सठवींरमैनी ॥

चौ० तेहि बियोगते भये अनाथा । परि निकुंजबन पावनपाथा १
वेदौ नकलकहै जे जानैं । जो समुझै सो भलो न मानै २
नटवर बन्द खेल जो जानै । ताकर गुण जो ठाकुर मानै ३
उहै जो खेलै सब घट माहीं । दूसरको लेखी कछु नाहीं ४
भलो पोच जो अवसर आवै । कैसहुकै जन पूरा पावै ५
साखी ॥ जेकरे शरलागै हिये [तबसो जानैगा पीर ॥
लागैतौ भागैनहीं सुखसिंधु निहारु कबीर ६

चौ० तेहिबियोगतेभयेअनाथा ।परिनिकुंजबनपावनपाथा १
वेदौनकलकहै जोजानै । जोसमुझै सो भलो न मानै२

संपूर्ण जे जीवहैं ते परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनहीं के बियोग अनाथ ह्वै गये निकुंज बन जो बाणीको जालहै नाना मत जिनमें परिकै एक सिद्धांत मत परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के मिलनके पाथ कहे पंथ न पावत भये १ जिनको पूर्व कहिआये कि साहबको नहीं जानैं स्वांगभर बनावै हैं तिनको हे जीव जो तैं जानै तौ वेदहू वे मतवारेनको नकलई कहैहैं तौजो साहबकोसमुझैहैसोऊउनको नहीं मानैहै नकलईमानैहै २॥

चौ० नटवरबंदखेलजो जानै । ताकर गुणजो ठाकुरमानै ३
उहैजोखेलैसबघटमाहीं । दूसरको लेखी कछुनाहीं ४
भलोपोच जोअवसरआवै । कैसे कै जनपूरा पावै ५

अबयोगिनको कहैहैं नट कैसे जो बंटा जोकोई खेलै जानैहै कहे यह जीव आत्माको ब्रह्मांड में चढ़ाइकै फिरि उतारै जानैहै ताको गुण यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि समाधि लगि जाइहै कहे ब्रह्मरूपहै जाइहै सो वही ब्रह्मको जो कोईठाकुर मानैहै ३ अर्थात् जौन ब्रह्ममैं है जाउहौं तौनै घट घटमें है दूसरेकी कछु नहीं लगैहै अर्थात् दूसरो पदार्थ कछु नहीं है ४ सो जे यह मत करैहैं तिनको भलो पोचकहे नीको नागा अवसर आवत है अर्थात् जब जीवमें लीनहै ब्रह्मरूपहैजाइहै यातो भलो अवसर औ जब समाधिउतरिगई जैसेके तैसे ह्वै गई या पांच अवसर ह्वै सो कैसे कै जनपूरो ज्ञान पावै कि हमपूर्णब्रह्महैं तो सर्वत्रपूर्णहैं जो या ब्रह्महैजातो तोसमाधि उतरेहूमें वही वृत्ति बनी रहती ५ ॥

साखी ॥ जेकरे शरलागै हिये तबसो जानैगा पीर ॥
लागैतौभागैनहीं सुखसिंधुनिहारुकबीर ६

जे करे शरलागैहै सोईबाण लागे की पीर जानै सो जो कोई समाधि लगावै है सोई समाधि उतरे को दुःख जानैहै सो समाधितौ तोर लागै है ना भागु समाधिही लगाये रहु सो तेरो भागिबो तौ बनतई नहीं है समाधि उतरेही आवै है याते यह धोखा छोड़िदे कबीरजी कहैहैं सुख-सिंधु जे साहब हैं तिनको निहारु जिनको एकबार निहारे समाधिलगी रहैहै अर्थात् जो एकहूबार साहबके सन्मुखभयोहै सो फिरिनहीं संसार में बच्योहै तामेंप्रमाण ॥एकोपिकृष्णस्यकृतःप्रणामोदशाश्वमेधावभृथेनतुल्यः॥दशाश्वमेधीपुनरेतिजन्म कृष्णप्रणामीनपुनर्भवाय॥इतिअथवा जाके बाण लगैहैसोई पीर जानैहै सो जो साहबमें लागेहैं तेई धोखाकी पीर जानैहैं कि हमयोगमें यज्ञादिमें लगिकै नाहक जन्म गवाँये सो कबीर जी कहैहैं कि साहबको दुर्लभजानि तैंलागुतौभागु न साहबसुखसिंधुहै तिनकोतूनिहारु तौ येसबधोखनकी पीरदूरि करिदेयगेतबअपराध तेरोन गनैंगे तामें प्रमाण॥कथंचिंदुपकारेण कृतेनैकेनतुष्यते ॥ नस्मरत्यपकारा णांशतमप्यात्मवत्तया इतिवाल्मीकीये ६॥ इतिअड़सठवीं रमैनीसमाप्तम्॥

अथउनहत्तरवीं रमैनी ॥

चौ० ऐसा योग न देखा भाई। भूला फिरै लये गफिलाई १
महादेवका पंथ चलावै। ऐसोबड़ो महंत कहावै २
हाटबाट में लावै तारी। कंचनसिद्धन माया प्यारी ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबदत्तै मावासी तोरी । कब शुकदेव तोपची जोरी ४
कबनारद बंदूख चलाया । ब्यासदेवकब बंब बजाया ५
करहिं लड़ाई मतिके मंदा । ईहैंअतिथिकितर कसबंदा ६
भबे बिरक्त लोभ मनठाना । सेना पहिरि लजावै बाना ७
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा । गाउं पाय यश चलो करोरा ८
साखी ॥ तिय सुन्दरी न सोहई सनकादिकके साथ ॥
कबहुं क दाग लगावई कारीहांड़ी हाथ ९

चौ० ऐसा योग न देखा भाई । फूला फिरै लये गफिलाई १
महादेव को पंथ चलावै । ऐसे बड़े महंत कहावै २
हाट बाटमें लावै तारी । कच्चे सिद्धन माया प्यारी ३
कब दत्तै मायासी तोरी । कब शुकदेव तोपचीजोरी ४

श्री कबीर जी कहैहैं कि ऐसा योग हम नहीं देख्यो है कि साहबको तो जानै नहीं हैं गाफिल ह्वैकै भूले भूले फिरैहैं १ अरु महादेव को पंथ जो तामसशास्त्रहै सो चलावै हैं औ बड़े महंत कहावै हैं २ सबके देखावनको हाट में औ पहारन के बाटमें तारीलगायकै बैठेहैं औ सिद्ध कहावैहैं औ सबके देखावन को यह कहैहैं कि संन्यासी को धर्म नहीं है कि द्रव्यलेइ औ हाथ छुवै परंतु जो कोई चढ़ाइकै चलो जाइहैं ताको चिमटाते लेकै कमंडलुमें डारिलेइ हैं सो ऐसे कच्चे सिद्धन को माया बहुत प्यारी लगैहै ३ दत्तात्रेय कबै मवासिनको शत्रुन को तोरयो है औ शुकदेव कबै तोप खाना अपने साथ जोरिकै चलायो है ४ ॥

चौ० कब नारद बंदूख चलाया । ब्यासदेव कब बंब बजाया ५
करहिंलड़ाईमतिके मन्दा । ईहैंअतिथिकि तरकस बन्दा ६
भयेविरक्त लोभ मनठाना । सोनापहिरि जलावैं बाना ७
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा । गाउं पाय यशचलो करोरा ८

औ नारद मुनि कबै बंदूख चलायो है औ ब्यासदेव कबै नगारा दैकै काहूके ऊपर चढ़ेहैं ५ ई संन्यासी वैरागी मतिके मंद लड़ाई करैहैं ई अतिथि हैं तरकस बन्द सावत हैं ६ भये तौ विरक्त संन्यासी परंतु लोभ करिकै रोजगार करैहैं सोना पहिरिकै बानाको लजावैहैं ७ औ घोरा घोरी हाथी बहुत आपने संग लेतभये औ काहू राजाते गाउं पायो करोर पती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है या यश चलायो बड़े ज्ञानी हैं बड़े भक्त हैं या यश चलायो ८॥

साखी॥तिय सुन्दरी न सोहई सनकादिकके साथ ॥
कबहुंक दाग लगावई कारी हांड़ी हाथ ९

लाव लसगर में स्त्री साथ रहतई है सनकादिक जटाधारे वैष्णवन को कहैहैं अथवा सनकादिक कहे जिनकी पांच बर्ष की अवस्था बनी रहै है ऐसे ब्रह्माके पुत्र तिनहूं को या मजाहोय तौ कबीर जी कहैहैं कि स्त्रीनके साथ में सुन्दरी का सोहैहै नहीं सोहैहै कबहूं दाग लगावतई है जैसे कारीहांड़ी हाथमें लेइ तौ दागलागिही जायहै ऐसे जिनके जिनके संगमें स्त्री रहैहै ते पाषडिनको दागलगतैहै स्त्रिनते नहीं बचैहैं नामकेतो संन्यासी वैरागी हैं अखाड़ा गृहस्थी बांधेहैं तहां स्त्री आवई चाहैं सो दागलगावई चाहैं अथवा ऐसे पाषडी हैं ते माया रूपई ह्वैरहेहैं तेई मायारूपी सुन्दरी कहे स्त्री हैं तिनको संग न करै औ जो संग करै तौ दाग लगवई करै सो जीवते पाषंडिन को संग न करै तामें प्रमाण॥ पुंसांजटाधरणमोजवतांवृथैव मेधाविनामखिलशौचनिराकृतानाम्। तोयप्रदानपितृपिंडबहिःकृतानांसंभाषणादपिनराःनरकं प्रयांतिइतिविष्णुपुराण ९ इतिउनहत्तर हवीं रमैनीसमाप्तम्॥

अथसत्तरवींरमैनी॥

चौ० बोलानाकासों बोलिय भाई। बोलतही सब तत्व नशाई १
बोलत बोलत बाढु बिकारा। सो बोलिय जो परै बिचारा २
मिलैजोसंतबचन दुइकहिये। मिलै असंत मौन ह्वैरहिये ३
पडितसों बोलिय हितकारी। मूरख सों रहिये झखमारी ४
कह कबीर ईअधघट बोलै। पूरा होय बिचार लै बोलै ५

चौ० बोलाना कासों बोलियभाई। बोलतही सब तत्वनशाई १
बोलत बोलत बाढुबिकारा। सो बोलियजो परैबिचारा २

बैरागिन की संन्यासिन की दशा जैसी ह्वैरहीहै सो पूर्बकहिआये सो ऐसे पाषंडी संसारमें ह्वैरहेहैं बोलानाका सों बोलिये बोलतही में सब तत्व नशाइजाइहैं तत्व कहावैहै यथार्थ सो साहबके जे नामरूप लीला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धाम यथार्थहैं ते नशाइजाइहैंकहे भूलिजाइहैं १ बोलतबोलत बिकारई बाढ़ैहै ताते सो बात बोलिये जेहिते साहब के नामादिकन को बिचार ठीक परिजाइ कौनीतरहते सांच बिचार ठीकपरै सोकहैहैं २ ॥

चौ० मिलैजोसंतबचनदुइकहिये। मिलैअसंत मौन ह्वै रहिये ३
पण्डितसों बोलियहितकारी। मूरुख सों रहियेझखमारी ४

जो संत मिलै तौ द्वैबचन कहबऊ करिये द्वै वचन कह्यो ताको भाव यहहै कि थोरई आपने प्रयोजनमात्र बोलिये औ सत्संग करिये काहेते कि उनके सत्संग किये बिचार बाढ़ैहै औ असंत मिलै तौ मौन ह्वै रहिये बोलिये न काहेते कि उनकेसंगते अज्ञानबाढ़ैहै ३तेहिते पंडित सों बोलिये हितकारीहै काहेते कि पंडित जेहैंतेसारासारको बिचार करिकै सार पदार्थ जे साहबहैं तिनको ठीककरिकै असार जो है धोखाब्रह्म औ माया ताको छोड़िदियोहै वे साहब को बतावेंगे औ मूरुख सों बोलिबो झख मारीहै काहेते कि जो मूरुख सों बोलै तौ अपने स्मरण की हानिहोइ है वहतो समुझाये ते समुझैगो नहीं तब आपही झखमारिकै रहिजाइगो पीछे क्रोधहोइगो अरु मूरुख नहीं समुझैहै तामेंप्रमाणगोसाईंजी को॥ सोरठा ॥ फरैनफूलैबेत यदपिसुधा बरषैजलद ॥ मूरुखहृदय न चेत जो गुरुमिलैंबिरंचिसम १ पानीकोपान भीजैतौ बेधै नहीं त्योंमूरुख को ज्ञान बूझैतौ सूझैनहीं ४ ॥

चौ० कहकबीर ई अघघट डोलै। पूराहोय बिचार लै बोलै ५

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जे सत्संगऊ करैहैं औ मूरुखहू सों बोलैहैं शास्त्रार्थकरैहैं औ औरऔर मतको सिद्धांत जानो चाहैहैं कि हमारेमत ठीक है कि औरऊमत ठीकहै परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबते परैहैं यह सिद्धांत को निश्चयनहीं है ते अघघटजेहैं औरऔर मतवारे इनके समुझायेनहीं समुझैहैं औ असंत संगकरिकै बिचार की हानिहोइहै कहा हानि होइ है कि औरऊ को बिचार मनपर न लागैहै अपने मतमें भ्रम होनलगै है आपनो ठीकनहीं ठीकहै जैसे आधीगगरी जलसे भरीहोइ तौ वाको जल डोलैहै ऐसे साहबमें उनकोज्ञान तौ परोनहीं ताते डोलैहै औ जो पूरा सो बीचलैकै बोलैहै औरे प्रश्नसुनिकै वाकोबिचार लैलियो कहे समझिलियो कि यह बोलिबो अधिकारीहै हमारो कह्यो समुझैगो तब बोलै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जैसे भरी गगरीको जल नहीं डोलैहै और जल वामें नहीं समायहै ऐसे वेतो साहबके ज्ञानमें पूरहैं सो उनको ज्ञान डोलैनहीं है अरु और मतन की सिद्धांत के जे ज्ञानहैं ते उनके अंतःकरण में नहीं समायहैं ५ इति सत्तरवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथइकहत्तरवींरमैनी ॥

चौ० सोगबधावा सम करि जाना। ताकी बातइन्द्रनहिं जाना १
जटातोरि पहिरावै सेल्ही। योगयुक्तिकै गर्भ दुहेली २
आसनउड़ये कौन बड़ाई। जैसे काग चील्ह मड़राई ३
जैसी भिस्ति तैसि है नारी। राजपाट सब गनै उजारी ४
जैसे नर्क तसचन्दन माना। जस बाउर तसरहै सयाना ५
लपसी लौंग गनै यकसारा। खांड़ परिहरि फांकै छारा ६
साखी ॥ यहविचार ते बहगयो गयोबुद्धि बल चित्त ॥
दुइमिलिएकै ह्वैरह्यो काहि बताऊं हित्त ७

चौ० सोगबधावा समकरिजाना। जाकीबात इन्द्रनहिंजाना १
जटातोरि पहिरावै सेल्ही। योगयुक्तिकै गर्भ दुहेली २
आसनउड़ये कौन बड़ाई। जैसेकाग चील्ह मड़राई ३
जैसीभिस्ति तैसिहै नारी। राजपाट सब गनै उजारी ४

औरै पदको अर्थ स्पष्ट है १। २। ३। अब फिरि साहबके जनैयनको कहैहैं किभिस्तिकहे स्वर्गको मानैहैं तैसे नारीकहे दोजखको मानैहैं अरबी की किताबनमें भिस्तिको जनत औ दोजखकी नाईं अर्थके संबन्ध ते बहुत जगह कह्योहै अथवा नारकहे आगि सो जामें होय ताको नारी कहै हैं अर्थात् नरक औ भिस्ति पाठहोय तोजैसे भिस्तिकहे देवालको मानै हैं तैसे नारी को मानैहैं औ राजपाट जोहै जगतताको उजारई गनै हैं कि संसार हई नहीं है चित अचितरूप साहबईकेहैं नरक स्वर्गादिक तामें प्रमाण ॥ नरक स्वर्ग अपबर्ग समाना। जहँतहँ देखि धरे धनु बाना ४ ॥

चौ० जैसेनर्क तस चन्दन माना। जसबाउर तसरहै सयाना ५
लपसी लौंगगनै यकसारा। खांड़ परिहरि फांकै छारा ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जस नरककहे बिष्टाको तैसेचन्दनको मानैहैं औ हैंतौ सयान कहे साहब को जानैहैं परन्तु रहत बहुत बाउरहीके तरहहैं ५ औ जे साहबको नहीं जानैहैं आपहीको ब्रह्म मानैहैं तिनको कहैहैं लपसी लौंगको एकई मानैहैं खांड़ छोड़िकै छारको फांकैहैं अर्थात् ताहूको एकही गनैहैं सर्वत्र एकही ब्रह्म मानैहैं जो कहो समान दृष्टि करतईहैं साहबके गैर जनैयन कहे जाननवारे हैं ये आपहीको ब्रह्म मानैहैं औ खांड़ परिहरिकै छार फांकैहैं ताको भाव यहहै खांड़ साहबजे मिठाई ताके देनवारे तिनको छांड़िकै छारफांकैहैं जामें सारकछुनहीं है अहंब्रह्मास्मि ज्ञान करैहैं ६ ॥

साखी ॥ यहविचारते वहगयो गयोबुद्धिबलचित्त ॥
दुइमिलि एकैकै रह्यो मैं काहिबताऊंहित्त ७

श्रीकबीरजी कहैहैं बिचारत बुद्धिको बलजोहै निश्चयकरिकै अहंब्रह्म मानि सो येहूजातरह्यो औ चितजोहै सोऊ जातरह्यो मनोनाश बासना क्षयह्वै गई कछु बासना न रहिगई दुइ जेहैं ब्रह्म औ जीवते मिलिकै एकही ह्वैरहे जैसे जलमिलिकै एकैह्वैजायहै हितुवा वहकहावैहै जो रक्षा करैये तो दूनों एकई ह्वैरहे ब्रह्ममें लीनहोइहैं पुनिजब सृष्टिसमय भई तब माया धरिलैआवैहै तबतो दूसरोयह मानतै नहीं है मैं काको हितुवा बताऊं जो मायाते रक्षाकरिलेइ औ जो साहब हितुवामानै रक्षकमानै तौ साहब याको हंसस्वरूप दैकै आपने पास बोलाइलेइ इहां मायाकीगति नहीं है तौपुनिधरिकैजीवकोसंसारीकरै ७ इतिइकहत्तरवीं रमैनीसमाप्तम्॥

अथबहत्तरवींरमैनी ॥

चौ० नारि एक संसारै आई। माय न वाके बाप न जाई १
गोड़ न मूड़न प्राण अधारा। तामें भरमिरहा संसारा २
दिना सातलों वाकीसही। बुधअधबुध अचरजयककही ३
वाहिकिबन्दनकरसबकोई। बुधअधबुध अचरजबड़होई ४

चौ० नारिएक संसारै आई। माय न वाके बाप न जाई १
गोड़ न मूड़ न प्राणअधारा। तामेंभरमिरहासंसारा २
दिनासातलोंवाकीसही। बुधअधबुधअचरजयककही ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाहिकिबंदनकरसबकोई। बुधअधबुधअचरजबड़होई४

एक नारि जो यह मायाहै सो संसारमें आवतभई न वाके महतारी है औ न वह वापते उत्पन्नहै अर्थात् अनादिहै १ अरु न वाके गोड़हैं न मूड़है न प्राणहै न आधारहै अर्थात् निराकारहै भर्मईहै ताहीमें संसार भरमि रह्योहै २ औ सातो जे बारहैं दिन तिनमें वही मायाकी सहीहै अर्थात् कालमें वही अमिसीहै औसातौबार वोई फिरि फिरि आवैहैं वही मायाको चारोंओर बिस्तारहै बुधजेहैं पडित निर्गुणवारे जे सारासार के बिचार करिकै आपहीको ब्रह्म मानैहैं औ अधबुधजेहैं आधेपंडित सगुण उपासनावारे सो ये दूनोंमें आश्चर्य्यजोहै माया ताको एक कहैहैं दूनोंमें यह माया बरोबरि व्यात है ३ श्रीकबीरजी कहैहैं कि यह बड़ो आश्चर्य्यहै तौ कछुनहीं है औ वही मायाकी बन्दना निर्गुण सगुणवारे दोऊकरैहैं जो मन बचनमें आवैहै सोमायाहीहै ४ इतिबहत्तरवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथतिहत्तरवींरमैनी ॥

गुरुमुख चौ० चली जाति देखा यक नारी। तर गागर ऊपर पनिहारी १
चलीजाति वह बाटै बाटा। सोवनहार के ऊपर खाटा २
जाड़ न मरै सुपेदी सौरी। खसम न चीन्है घरणिभैबौरी ३
सांझ सकार दियालै बारै। खसमछोंड़ि सुमिरैलगवारै ४
वाहिके सँगमें निशिदिन राँची। पिय सों बात कहै नहिं साँची ५
सोवत छांड़ि चली पिय अपना। ईदुख अबधौं कहौं कयहिसना ६
साखी ॥ अपनीजाँघ उघारिकै अपनी कही न जाइ ॥
की जानै चित आपना की मेरो जन गाइ ७

चौ० चली जाति देखायकनारी। तरगागरि ऊपर पनिहारी १
चलीजात वह घाटैघाटा। सोवनहार के ऊपर खाटा २

सुरतिरूपी जो नारी सोईहै दूती ताको हम चलीजात देखा है हृदय जो गगरीहै सो तरेहै औ सुरति उठी सो ऊपर सुधा सरोवरमें जलभरन को गई शीशमें पहुंची १ वह सुरति जब चलैहै तब षटचक्र बेधिकै राह राह जायहै काहेते कि नाभीमें मणिपूरक चक्रहै तामें शीशदिये नागिनी बैठीहै सोई षट कहे पलँग है सो ऊपर है ताके नीचे सोवनहार जो है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा सो रहैहै तहांते सुरति उठैहै तहां ज्वाला साथ नागिनी उठावै ताही साथ प्राणजायहै २ ॥

चौ० जाड़नमरैं सुपेदी सौरी । खसमनचीन्है घरणिभैबौरी ३
सांझसकार दियालैबारै । खसमछोड़ि सुमिरैलगवारै ४

सुपेदी कहे रजाई जो है यहशरीर सो जाड़नमरैहै अर्थात् शीत उष्ण बहीको लगैहै सौरीकहे सुपेदीको सुमिरण करिकै जाड़नमरैहै अर्थात् जब लग देहाभिमानहै तबलग शीत उष्ण है आत्माको नहीं लगैहै साहब कहैहैं कि वह जो है आत्मामेरी घरणि कहे स्त्री अर्थात् जीवरूपा मेरीशक्ति सो मैं जो हौं याकोखसम ताको नहीं चीन्हैहै ह्यहिते बौरी कहे बौराय गई ३ साँझ सकार दियालैबारैहै कहे समाधिलगायकै ज्योतिको बारिकै कुंडलिनी उठाइ आत्माको लैजाइकै वही ज्योतिमें मिलायेहै औ याको मैं खसमहौं सो मोकोछोड़िकै लगवार जो है धोखाब्रह्म ताकोसुमिरैहै४॥

चौ० वाहीकेसँगमेंदिशिदिनराँची । पियसोंबातकहैनहिंसाँची ५
सोवतछांड़िचलीपियअपना।ईदुखअबधोंकहबक्यहिसना ६

सुरतिरूपी नारीजोहै दूती ताहीके साथ ह्वैकै वहीधोखाब्रह्ममें निशि दिनरचिरहीहै कहे प्रीति करिरहीहै पियजो मैंहौंतासोंसांचीबातनहीं कहै है सांचीबात कहाहै कि मैं तिहारोहौं यह जो कहै तौ मैं जीवरूपा शक्ति को छोड़ाइलेउँ साहबकी यहप्रतिज्ञाहै जो मोको जानैमोको गोहरावै तौमैं संसारतेछड़ाइलेउँ तामेंप्रमाण॥अबहू लेउँ छड़ायकालते जोघटसुरतिसम्हारै ५ सो जीवरूपाशक्ति मोको न जान्यो मोको न गोहरायो सोवत रहिगई जागत न भई सोवतमें मोकोछोड़ि स्वप्न देखनवाली संसारी ह्वैगई अर्थात् मोहरूपी निद्रा जब प्रातभई तब संसारमेंपरिकैनानादुःख पावैहै सो यहदुःख अपनो कासोंकहै सांच जो मैं ताकोतौ जानैनहीं है अरु औरसब स्वप्न ते झूठेहैं ६ ॥

साखी ॥ अपनीजाँघउघारिकै अपनी कहीनजाइ ॥
की जानै चितआपना की मेरो जनगाइ ७

साहब कहैहैं कि यहिभांति मेरी जीवरूपाशक्तिमोकोछोड़िकै संसारी ह्वैगई सो अपनीजंघा जो उघारिहोइ तौ कोई कहां अपनोगिल्ला करै है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करहै ऐसे मेरीभक्ति यहजीवसो जो और और लगवार जोहैं सो यह दुःखका मोसों कहिजाइहै नहीं कहिजाइहै कि तो मेरो दिलजानैहै या को उद्धार ह्वैजाइ याही चाहोहौं औ कि मेरे जन जेहैं ते मेरो सौशील्य-दया वात्सल्यादिक गुण गानकरिकै जानैहैं कि साहबमें निर्देह सौशील्यादिक गुणहैं जीवको उद्धारई चाहैहैं और तो अज्ञानीजीव अपनो भूल न जानैंगे याही जानैंगे कि जो साहब सबको मालिक है सब करिबे को समर्थ है ताकी जो इच्छा होती तौ हमसब जीवके बंधते तामेंपरम ॥ सोपरन्तु दुखपावत शिर धुनिधुनि पछिताय। कालहि कर्महिहैं दोहि मिथ्यादोष लगाइ ७ इतितिहत्तरवी रमैनीसमाप्तम् ॥

अथचौहत्तरवींरमैनी ॥

चौ० तहिया गुप्त थूल नहिं काया। ताके सोग न ताके माया १
कमल पत्र तरंग यकमाहीं। संगहि रहै लिप्त पै नाहीं २
आश ओस अंडन महँ रहई। अगणितअंडनकोई कहई ३
निराधार आधार लै जानी। रामनाम लैउचरी बानी ४
धर्म कहै सब पानी अहई। जातीके मन बानी रहई ५
ढोर पतंग सरे घरिआरा। गहिपानी सबकरैअचारा ६
फंद छोड़ि जो बाहर होई। बहुरि पंथनहिजोहैसोई ७
साखी ॥ भर्मक बांध लई जगत कोईन किया बिचार ॥
हरि कि भक्ति जाने बिना भवबूड़ि मुआससार ८

चौ० तहियागुप्तथूलनहिं काया। ताकेसोग न ताके माया १
कमलपत्र तरंगयकमाहीं। संगहिरहैलिप्त पैनाहीं २
आशओस अंडनमहँरहई। अगणितअंगनकोईकहई ३
निराधारआधारलै जानी। रामनाम लै उचरीबानी ४

जबजीव भूल्योहै तहिया कहै तब स्थूल शरीर नहीं रह्यो औ गुप्तकहे सूक्ष्म कारण महाकारण ये शरीर नहीं रहेहैं औ न तेहिजीव के सोग रह्यो औ न माया रहीहै १ जैसे कमल पत्रमें जल रहैहै पै कमल पत्रमें लिप्त नहीं रहैहै तैसेयह आत्मामें माया ब्रह्म यद्यपि सब कारण रहै हैं परंतु माया ब्रह्ममें आत्मालिप्त न रह्यो २ ब्रह्म ह्वैबेकी जो आशहै सोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पियासहै सो ओसचाटे कहूं पियास जाइहै नहीं जाइहै ओसके समजो है ब्रह्मानंद सो जीवरूप जे हैं अंड तिनमें रहैहै अर्थात् कारणरूपते जीव में बनोरहैहै जब समष्टि जीव रह्योहै तब रहेतो अगणित हैं अंड परंतु सब मिलि एकई कहावत रह्योहै अगणित कोई नहीं कहत रह्यो ३ निराधार जो निराकार ब्रह्महै जामें सबजीव भरेहैं ताको आधारलै जानिये कि साहब के लोकमें है अर्थात् साहब के लोकको प्रकाश है तब तो समष्टिरही याही रामनाम लैकैबाणी उचरीकहे प्रगटभई इहां राम राम लैकै बाणीप्रगट भई ताकोहेतु यहहै कि बाणीमें जगत् प्रगट करिबे की शक्ति नहीं रही रामनामको जगत् मुखअर्थ लैकैबाणी उचरीहै पांचोब्रह्म समेत जगत् उत्पत्ति कियोहै सोई इहां सिद्धांत करैहै ४ ॥

चौ० धर्मकहै सब पानी अहई । जातीके मन बानी अहई ५
ढोर पतंग सरैघरिआरा । तेहिपानीसबकरै अचारा ६
फंद छोड़ि जो बाहरहोई । बहुरि पंथनहिं जोहैसोई ७

वेदशास्त्र में आत्माको धर्म कहैहैं कि आत्मा चित्तहै याते चित्त धर्म है जैसेजलमें जलमिलै तो एकई होजाइहै ऐसे चिन्मात्र जो ब्रह्महै तामें मिलिकै चितजोहै जीव सो एकई ह्वैजाय काहेते कि दुहुनको चित्त धर्म एकईहै औ जातीकहे सब जाति जे जीवहैं ते आपने स्वस्वरूपको चीन्हैंहैं कि मैं साहबको अंशहौं जातिकरिकै वहीहौं कछुस्वरूप करिकै नहीं हौं भेद बनोई है वह सर्वज्ञ है मैं अल्पज्ञ हौं वह विभुहै मैं अणुहौं वहस्वतंत्र है मैं परतंत्र हौं यहजो कहैंहैं कि आत्मा ब्रह्मई है सोतौबाणी को विस्तार है सामान्य धर्मलैकै कहैहैं ५ ढोर पतंग घरिआर आदिक जामें सरैहैं ताही जलमें सब आचार करैहैं अर्थात् जौनीबाणी में सब मरि मरि समाइ हैं औ पुनि वहीते उत्पत्ति होइहै औ जौन सबजीवको फंदायेहैं तौनीही बाणीमें कहे सब आचार करैहैं अथवा वहीबाणीको आचरण करैहैं आपने को ब्रह्म मानैहै काहूको आचार ठीक नहीं है ६ यह बाणीके फंदते बाहर ह्वैकै परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनमेंजो लागैतो पुनि न जगत् के पंथको जोहै अर्थात् फिरि न जगतमें आवै ७ ॥

साखी ॥ भर्मकबांधलईजगतकोइनहिंकियाबिचार ॥
हरिकिभक्तिजानेबिनाभवबूड़िमुआसंसार ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहिभांति भर्म जो माया सबलितब्रह्म स्यहिकरिकै बँध्यो जो यह संसारहै ताको कोई नहीं विचारकियो हरिकहे सबके कलेश हरनहारे वेद तात्पर्यार्थ जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकी भक्तिके बिना जाने भर्मके समुद्र में संसार बूड़ि मुआ कहे संसारीजीव बूड़िमुयो ७ इतिचौहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथपचहत्तरवींरमैनी ॥

चौ० तेहिसाहबके लागोसाथा। दुइदुख मेटिकै होहु सनाथा १
दशरथकुलअवतरिनहिआया। नहिं लंकाके राय सताया २
नहि देवकिके गर्भहि आया। नहीं यशोदा गोद खेलाया ३
पृथ्वीरमनदमन नहिकरिया। पैठिपतालनहीं बलिछलिया ४
नहिबलिराय सो माड़ीसारी। नहिहिरणाकुशबधलपछारी ५
बराहरूप धरणीनहिधरिया। क्षत्रीमारि निक्षत्र न करिया ६
नहि गोबर्द्धन करते धरिया। नहीं ग्वालसँगबनबनफिरिया ७
गंडक शालग्राम न शीला। मत्स्य कच्छहै नहि जलहीला ८
द्वारावती शरीर न छांड़ा। लैजगनाथ पिंड नहिगाड़ा ९

साखी ॥ कहहिं कबीर पुकारिकै बाप थे मतिभूल ॥
जेहिराखेअनुमानकरि थूलनहीं अस्थूल १०

चौ० तेहिसाहबकलागोसाथा। दुइदुखमेटिकैहोहुसनाथा १

जिनको पूर्वकहि आयेहैं ते हरिकहे रक्षक मनबचनकेपरे परमपुरुष जे श्री रामचन्द्रहैं तिनकेसाथमें लागो दूनो जे दुःखहैं निर्गुण औ सगुण तिनको मेटिकै सनाथ होउ कहेनाथ जे साहबहै तिनतेसहित वह साहब कैसोहै कि धोखाब्रह्महै नहीं है औ कौन्यो अवतारमें नहीं है अर्थात् निर्गुण सगुणके परेहित वह साहब कैसोहै कि धोखा ब्रह्महै नहीं है औ कौन्योअवतारमें नही है अर्थात् निर्गुण सगुणके परेहै कबहूं जब कौन्यो कल्पमें बाणनके युद्धकी इच्छ होइहै तब आपही प्रगट ह्वैकै प्रतापी नामको रावण होइहै तासों बाणनको युद्धकरैहै औ फिर शरीरसहितको चलेजाइहैऔ बहुधा जे अवतारहोइहैं ते नारायण अवतारलेइहैं १ ॥

चौ० दशरथकुलअवतरिनहिआया। नहिंलंकाकेरायसताया २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहिंदेवकिके गर्भहिआया । नहींयशोदा गोदखेलाया ३
पृथ्वीरमनदमननहिंकरिया॥पैठिपतालनहींबलिछलिया ४

श्री कबीरजी कहैहैं कि वे श्रीरामचन्द्र कौन्यो अवतारमें नहीं हैं दशरथके इहां अवतार नहीं लियो दशरथके इहां अवतारलै नारायण रावण को मारैहैं २ अरु वेसाहब देवकीके गर्भमें नहीं आयो अरु वाकोयशोदा गोदमें नहीं खेलायो ३ अरु वेसाहबपृथ्वीरमनहूवैकै भिलछनको दवन अर्थात् बामनरूप नहीं धरयो ४ ॥

चौ० नहिंबलिरायसोंमाड़ीरारी।नहिंहिरणाकुशबधलपछारी ५
बराहरूपधरणीनहिंधरिया। क्षत्रीमारिनिक्षत्रनकरिया ६
नहिंगोबर्धनकरगहिधरिया॥नहींग्वालसँगबनबनफिरिया७

अरु वे साहब बलिराय सों रारिनहीं माड़यो कहे मोहनी अवतारलै देवतनको अमृत पिआय दैत्यनको बारुणी पिआय बलिसों युद्धकरि दैत्यनको विष्णरुप हूवै नहीं मारयो औ हिरण्यकश्यपकोपछारिकै नहीं बाध्यो कहेनहीं बध्यो अर्थात् नृसिंहरूप नहीं धरयो ५ अरु वेसाहब बाराहरूप धरिकै डाढ़में धरणी नहीं धरयो औ क्षत्रिनको मारिकै निक्षत्र नहीं कियो अर्थात् परशुरामको अवतार नहीं लियो ६ अरु वेसाहबकर गोबर्द्धनको नहीं धरयो अर्थात् गोबिन्दरूप नहीं धरयो औन ग्वालके संगबनबनमें फिरयोहै याते हलधर रूपनहीं धरयो ७ ॥

चौ० गंडकशालग्रामनशीला।मत्स्यकच्छहूवैनहिंजलहीला ८
द्वारावती शरीरन छांड़ा । लैजगनाथपिण्डनहिंगाड़ा ९

अरु वे साहब गंडकमें शालग्रामकी शिला नहीं भये औन मत्स्य कच्छ हूवैकै जलमें परेहैं ८ अरु वे साहिब द्वारावतीमें शरीर नहीं छोड़ेहैं अर्थात् कालस्वरूप नहीं धारणकियो जौन जौन फिरि द्वारावतीमें छोड़यो है औ जगन्नाथके उदरमें ब्रह्म जोइधामें तेजराख्योहै सो वे साहबको तेजनहीं है यहि तरहते सगुण जे नारायणहैं औ सब अवतार हैं ते वे नहीं हैं ९ ॥

साखी ॥ कहहिंकबीर पुकारिकै वापंथे मतिभूल ॥
ज्यहिराखेअनुमानकरिथूलनहींअस्थूल १०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री कबीरजी पुकारिकै कहैहैं कि वा पंथे मति भूलकहे न जाउ ज्यहि राखे अनुमानकरि कहे अनुमान करि राख्योहैब्रह्मको सोऊ वे साहबनहीं हैं औ औथूलनहीं अस्थूलकहे न थूलहोइसो अस्थूल कहावै अर्थात्निराकार नहीं हैं ताते सगुण निर्गुण साकार निराकारके परे श्रीरामचन्द्र हैं यहबतायोदशरथके इहां नारायण अवतार लेइहैं तिनको रामनाम होइहै तिनहीं नामरूपते सगुण निर्गुणके परेहैं १० इति पचहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथछिहत्तरवींरमैनी ॥

चौ० मायामोह कठिन संसारा । इहैबिचार न काहुबिचारा १
मायामोह कठिनहै फंदा । होय विवेकी सो जन बंदा २
रामनामलै बेराधारा । सो तैं लै संसारहि पारा ३
साखी ॥ रामनाम अतिदुर्लभै अवरे से नहिंकाम ॥
आदि अंत औ युगयुगै रामहिंते संग्राम ४

चौ० मायामोहकठिनसंसारा । इहैबिचारनकाहुबिचारा १

मायामोह रूपते संसारकोदेखैहै कहे नानापदार्थ भिन्न देखैहै याही ते संसार कठिन है यामें व्यंग्य यहहै कि जो संसारको भगवतचिद चिद बिग्रहरूप करिकै देखै तो संसार उतरिजायबेको सरलैहै सो यह बिचार कोई न बिचार्यो १ ॥

चौ० मायामोहकठिनहैफंदा । होयबिवेकीसोजनबंदा २

अरु यह संसारमें मायामोहरूप कठिन फन्दाहै जो संसारमें सब भिन्न भिन्न पदार्थ देखै है तौने संसार कोई भगवत्चिद चिदबिग्रहरूप देखै औ बिबेकीहोइ सोई जन साहबको बन्दाहै २ ॥

चौ० रामनाम लै बेराधारा । सो तैं लै संसारहिपारा ३

औ रामनाम जोहै बेरा ताको आधारलैकै जो कोई साहबको जान्यो है ताको उबार ह्वैगयोहै सो तैंहू रामनाम जोहै बेरा ताको आधारलेकहे रामनाममें आरूढ़हो साहबको जानु तौ तैं संसारसमुद्रको पारह्वैजायश॥

साखी ॥ रामनाम अतिदुर्लभै अवरेसे नहिं काम ॥
आदिअंतऔ युगयुगै रामहिंते संग्राम ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री कबीरजी कहै हैं कि यह रामनाम अतिदुर्लभ है मोको और से कामनही है आदि अन्तमें औ युगयुगमें मोसों रामैते सग्राम कहाहै कि शास्त्रार्थ करिकै रामनाममें जो जगतसुख अर्थहै ताको खंडन करिकै अति दुर्लभ जो साहबसुख अर्थ ताको ग्रहण करौ हौं अर्थात जब जगत् की उत्पत्ति नहीं भईहै तब औ युगयुगनमें कहे मध्यमें अन्तमें कहे जब मुक्त ह्वै गयो तबहूं रामनामहीते संग्राम कियोहै अर्थात् रामनाम को बिचार करत रहौहौं ४ इतिछिहत्तरवीं रमैनी समाप्तम् ॥

अथसतहत्तरवीं रमैनी ॥

चौ० एकै काल सकल संसारा। एकै नामहै जगतपियारा १
तियापुरुषकछुकथो न जाई। सर्वरूप जगरहासमाई २
रूपअरूपजायनहिंबोली। हलुकागरुवाजायनतोली ३
भूख न तृषा धूप नहिछाहीं। दुखसुखरहितरहैत्यहिमाहीं ४
साखी॥ अपरम परम रूपमगु रंगो नहिं त्यहि संख्या आहि॥
कहहिं कबीर पुकारिकै अद्भुत कहिये ताहि ५

चौ० एकैकालसकलसंसारा। एकैनामहैजगतपियारा १

एक जोहै लोकप्रकाश ब्रह्म ताको अनुभव करिकै जो ब्रह्म मानिलेइ है सोई माया सबलित ह्वै बोहै सोई काल सकल संसारमें है सो जगत् कोपियार एक जोहै रामनामताको बिनाजाने याहीते जन्ममरण होइहै १॥

चौ० तिया पुरुष कछु कथो न जाई। सर्वरूप जगरहा समाई २
रूप अरूप जायनहिं बोली। हलुका गरुवा जाइ नतोली ३
भूख न तृषाधूपनहिछाहीं। दुखसुखरहितरहैत्यहिमाहीं ४

वह माया सबलित ब्रह्मको स्त्री कहिसकै न पुरुष कहिसकै सर्व रूप ह्वै कै संसारमें समाइ रह्योहै २ वाको न रूप कहिसकै औ न वह हलका गरुवा तौलि जाइहै कि हलुकै गरूहै अर्थात् अहंब्रह्म मानिबो तो धोखाहै जो कछु होइ तो कहिजाइ औ तौलिजाइ ३ जौने लोकमें न भूखहै न तृषाहै न धूपहै न छाही है न दुख सुखहै तौने साहबके लोकमें प्रकाश रूप ब्रह्म रहैहै ४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साखी ॥ अपरमपरमरूपमगुरंगीनहिं तेहि संख्या आहि ॥
कहहिं कबीर पुकारिकै अद्भुत कहिये ताहि ५

वह साहबको लोक परमरूपहै ताको प्रकाश जोहै वह ब्रह्मसो परम रूपहै कहेपरम नहीं है तौनेको आपनेहीको मानिबो जोहै कि वह ब्रह्म हमहीं हैं सो धोखाहै तौनेके मगमें रँगे जीवहैं तिनकी संख्या नहीं है अर्थात् वही प्रकाशमें भरेरहे जे समष्टि जीवहैं ते व्यष्टि ह्वै गयेहैं तिनकी संख्या नही है सोकबीरजी पुकारिकै कहेहैं कि आपही कल्पना करिकैवह प्रकाशरूप ब्रह्मकोमान्यो किवह ब्रह्ममैंहौं सो वहतो लोकप्रकाश है जीव वह प्रकाश ब्रह्म नहीं ह्वैसकैहै यही धोखामें जीव बूड़ा जाइहै यह बड़ो आश्चर्यहै औ जोयह पाठहोइ॥अपरमपारैपरमगुरु ज्ञानरूप बहु आहि॥ तौ यह अर्थहै अपरम जोहै प्रकाशरूप ब्रह्म ताहूके पारजोहै परमलोक जाको प्रकाश वह ब्रह्महै ताको परम श्रेष्ठकहे मालिक जे परमपुरुष श्री-रामचन्द्रहैं तिनको नजान्यो वहजोहै प्रकाशब्रह्म ताको जोज्ञान कियो कि ब्रह्ममैंहौं वहैजोहै धोखा ब्रह्म तेहिते बहु आहि कहे जीव बहुत ह्वै गये काहेते कि ज्ञान बहुतहै ज्ञानी ज्ञान करिकै ब्रह्ममानैहैं औ योगी जेहैं ते ज्योति रूपमें आत्माको मिलाइकै ब्रह्ममानैहैं इत्यादिक नानारूप करिकै ऐक्य मानैहैं औ और सगुण उपासनावारे कोई चतुर्भुज कोई अष्टभुज कोई देवी कोई गणेश कोई सूर्य इत्यादिकनमें ऐक्य मानैहैं ज्ञान करिकै तेहिते ज्ञान नानाहैं औ साहब तो मन बचन के परे वह लोकमें एकही बनोहै ५ इति सतहत्तरवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथअठहत्तरवींरमैनी ॥

चौ० मानुषजन्म चुके जगमाँझी । यहितनकेर बहुतहैं साँझी १
तातजननिकहैहमरोबाला । स्वारथलागिकीन्हपूतिपाला २
कामिनि कहै मोरपिय आही । बाघिनिरूप गरासैचाही ३
पुत्र कलत्र रहैं लवलाये । जंबुक नाईं रह मुहँबाये ४
कागगीध दोउ मरणबिचारैं । शूकर श्वान दोउपथनिहारैं ५
धरतीकहै मोहिं मिलिजाई । पवन कहै मैं लेब उड़ाई ६
अग्नि कहै मैं ई तन जारौं । सोन कहै जो जरत उबारौं ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यहिघर को घरकहै गवारे। सो बैरी है गले तुम्हारे ८
सो तन तुम आपनकैजानी। बिषयस्वरूप भुलेअज्ञानी ९
साखी॥ यतनेतनके साझिया जन्मोभरिदुखपाय॥
चेततनाहीं बावरे मोरमोर गोहराय १०

चौ० मानुषजन्मचुके जगमाँझी। यहि तनकेर बहुतहैं साँझी १
तातजननिकहैहमरोबाला।स्वारथलागिकीन्हप्रतिपाला २
कामिनिकहै मोर पिय आही। बाघिनिरूप गरासैचाही ३

हेजीव तैंमानुष जन्म जगत्के बीचमें पायकै चूकिगयो साहबको भजन न कियो या तनके साझिया बहुतहैं १ औ माता पिता कहैहैं हमारो पुत्रहै आपने अर्थमें लगिकै प्रतिपाल करैहैं २ औ कामिनि जो परस्त्रीहैं सोकहैहै हमारो बड़ो प्यारो प्रतिहै बाघिनिरूप मरति समयमें गरासि-बोई चाहैहै अथवा वाके संगते मूड़हू काटो जायहै ३॥

चौ० पुत्र कलत्र रहै लव लाये। जम्बुक नाईं रह मुहँ बाये ४
कागगीध दोउमरनबिचारैं। शूकरश्वान दोउपंथनिहारैं ५
धरती कहै मोहिं मिलिजाई। पवन कहै मैं लेब उड़ाई ६
अगिनि कहै मैंई तनजारौं। सो न कहै जो जरत उबारौं ७

पुत्र कलत्र जो घर की स्त्री सो लालच लगाये रहैहैं धन लेबेकी औ वाको उनकी चिंतामें मांसभुखान जातहै जैसे सियार मांस खाबेको मुहँ-फारे रहैहैंतैसे वोऊहैं४औ कागजेहैं गीधजेहैं शूकरजेहैं श्वानजेहैं तेमरनको पंथ तेरो निहारैहैं या बिचारैहैं कि जोमरै तौहम मांसखायँ ५ औ धरती कहैहै किमोही में मिलिजाइ पवन कहैहै कि याको खाखमें उड़ाय लैजाउँ ६ औ अग्नि चाहैहै कि याकेतनको जारिडारों सोयाबात कोई नहीं कहैहै जाते जरतमें उबार होइ बचिजाय ७॥

चौ० जेहि घरको घर कहै गवारे। सो बैरीहै गले तुम्हारे ८
सो तन तुम आपनकै जानी। बिषय स्वरूप भुले अज्ञानी ९
साखी॥ यतने तनके साझिया जन्मो भरि दुख पाय॥
चेतत नाहीं बावरे मोरमोर गोहराय १०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेहि घरको शरीरको तू कहैहै किमेरोहै सोघर शरीर तेरे गलेकी बेरी कहे फांसीहै अथवा बैरीहै यमके यहांगलाकटावेंगे हेअज्ञानी तौनेशरीरको त आपनो मानिकै विषयन में परिकै भूलि गयोहै ६ सो यतने जेतने कहि आये ते यहि तनके साझीहैं तिनते जन्म भरि तैं दुख पायकै हेबावर कहेमूढ़ मोर मोर तैं गोहरावैहै कि यातन मेरोहै अजहूं चेत नहीं करैहै कि या तनै मोको फांसेहै १० इतिअठत्तरवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथउनासिवींरमैनी ॥

चौ० बढ़वतबाढ़ि घटावतछोटी। परखतखरपरखावतखोटी १
केतिक कहौं कहांलों कही। औरो कहौं परै जो सही २
कहेबिनामोहिं रहोनजाई। बेरहि लैलै कूकुर खाई ३
साखी॥ खातै खातै युगगया अजहुं न चेतो जाय॥
कहँहिं कबीर पुकारिकै जीव अचेतै जाय ४

चौ० बढ़वत बाढ़ि घटावत छोटी। परखत खर परखावतखोटी १
केतिक कहौं कहांलों कही। औरो कहौं परै जो सही २
कहेविना मोहिं रहो न जाई। बेरहि लैलै कूकुरखाई ३

यह मायाको प्रपंच जोहै सो बढ़ावत जाइ तो बढ़तई जायहै रंकते इंद्रहू ह्वैजाय तऊ चाह बढ़तई जायहै औ जो घटावैलगै तो घटिही जाइ है औ नाना मतमें लगि मनमुखी विचारै है तब तोपर कहे सांचै है औ जब काहू साधुते परखायो तब झूठही ह्वैजायहै १ औ मैं केतिको बात कह्यौ परंतु पाथरकैसो पानी बहिजाइहै बेधैतौ हई नहीं है मैं कहांलों कहौं औ औरऊ कहौं जो सहीपरै कहे जो तोकोसांच जानिपरै २ हेजीव तेरे येदुःख देखिकै मोको दया होइहै तातेबिनाकहे मोसों नहीं रहिजाइ है जौने बेरा रामनाम संसार सागरके उतरिबेको मैं बताइ देउँहौं तौने बेराको कूकुर जे तामस शास्त्र वारे गुरुवा लोग तेखाइ जाइहैं कहे मेरो कहो तामें नहीं लगन देइहैं औरे औरे मतमें लगाइ देइहैं जो यहपाठ होइ बिरहिनि लैलै कूकुर खाइ तौयह अर्थहै कि बिरहिन जेलोगहैं जिन को साहबकी अप्राप्तिहै तिनको गुरुवा लोग खाइ जाइहैं अथवा बीरजे साहबहैं तिनते हीनजे प्राणीहैं तिनको कूकुर खाइहैं ३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साखी ॥ खातेखाते युगगया अजहुं न चेतोजाय ॥
कहहिं कबीर पुकारिकै जीव अचेतो जाय ४

सो कबीरजी पुकारिकै कहैहैं कि खातखात केतन्यो युगबीतिगये याही ते जन्ममरण याको नहीं छूटैहै अज्ञान नहीं जाइहै सो अबहूं नहीं चेत करैहै सो यहजीव अचेत कहे बिना साहबके चेतकिये अर्थात् बिना साहबकेजाने नरकको चलोजाइहै ४ इतिउन्नासिवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथअसिवीं रमैनी ॥

चौ० बहुतकसाहसकरिजियअपना। सोसाहेबसोंभेटनसपना १
खराखोटजिन नहिंपरखाया। चहतलाभ सोमूरगमाया २
समुझि न परै पातरी मोटी। आछीगाढ़ी सबभोखोटी ३
कहहिंकबीर केहिदेहौखोरी। जबचलिहौंझिनआशातोरी४

चौ० बहुतकसाहसकरिजियअपना। सोसाहबसोंभेटनसपना १
खराखोटजिन नहिंपरखाया। चहतलाभसोमूरगमाया २

हेजीव आपहीते तुम ज्ञान योग बैराग्य तपस्यामें साहस करिकै बहुत क्लेश सह्यो परंतु इनते तेहि साहबसों भेट सपनहू नहीं है जौन छड़ावन वारोहै १ जिनजीव गुरुवा लोगनके समुझाये नानामतमें लागिकहूं सांच साधूते खराखोट नहीं परखायो तेजीव चाहत तो मुक्तिको लाभहै परंतु जिन सुकर्मनते अंतष्करण शुद्धद्वारा सांचे साधुको ज्ञान बतायोठहरै सोऊ सो मूरगमाय दियो २ ॥

समुझि न परै पातरी मोटी। आछी गाढ़ी सबभो खोटी ३
कहकबीरकेहिदेहौं खोरी। जबचलिहौ झिनआशातोरी ४

सोजिन मूर गमाय दियो तिनको पातरी कहे अरु मोटी कहे बिभुनहीं समुझि परैहै काहेते ओछी जो मतिहै तामें निश्चयरूप गांठी नहीं परैहै कि यतनोई बिचारहै नेति नेति कहैहैं याते सब खोटही ह्वैगयो ३ श्री कबीरजी कहैहैं सांचो जोहै साहब रक्षक ताको न जान्यो झिनकहे झीन आशा जोहै कि हम ब्रह्म ह्वैजायं तौनेको तोरि ब्रह्ममें लीनहोउंगे फिरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसारमें परोगे तब काको खोरीदेहुगो तुमहीं ब्रह्महौ ४ इति अस्सीवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथइक्यासिवींरमैनी ॥

चौ० देवचरित्र सुनौरे भाई । सो तो ब्रह्मा धिया नशाई १
ऊजेसुनी मँदोदरि तारा । ज्यहिघर जेठ सदा लगवारा २
सुरपतिजाइअहल्यहिछलिया । सुरगुरुवरणिचन्द्रमाहरिया ३
कहै कबीर हरिके गुणगाया । कुंती कर्ण कुंआरेहि जाया ४

चौ० देव चरित्र सुनौरे भाई । सोतो ब्रह्माधिया नशाई १
ऊजेसुनी मँदोदरि तारा । ज्यहिघर जेठ सदा लगवारा२

बड़ेबड़े जीव मायामें परिकै भूलिगयेहैं छोटे जीवनको कहाकहिये हे भाइउ देवचरित्र सुनौ ब्रह्मा अपनी कन्यासंग भूलिगये १ ऊजे मन्दोदरी तारा जेहैं तिनके घरमें जेठही लगवार होतआयोहै जो कहो सुग्रीव बिभीषणको कहतेहौ तौ तिनके घर न कहते तिनके कहते औ ई लहुरेहैं वे जेठ कहैहैं सोब्रह्माके हवाले कह्यो ब्रह्माके पुत्र आपुसैमें काज करतभये सो पुलस्त्य जेठेहैं ते लहुरेभाईकी कन्याको बिवाहे यामन्दोदरीके घरको हवाल भयो औ ऋक्षराज स्त्री भये तिन्हैं सूर्य औ इन्द्रगहे तिनते सुग्रीव औ बालिभये सो पूथम सूर्यग्रहण कीन्हो सो उनकी स्त्री भई औ सूर्यते जेठे इन्द्रहैं तेऊ पीछे ग्रहण कियो ताराके घरको हवाल भयो सो तारा मन्दोदरीके घर जेठही लगवार होतआयोहै जो लहुर पाठहोइ तौ सुग्रीव बिभीषण बनेहैं धकै नही है २ ॥

चौ० सुरपतिजाइअहल्यहिछलिया।सुरगुरुघरणिचंद्रमाहरिया३
कहकबीर हरिकेगुणगाया । कुंतीकर्ण कुंवारेहिजाया ४

सुरपति अहल्याको गमन करतभयो औ सुरगुरु जे वृहस्पतिहैं तिनकी स्त्रीको चन्द्रमा गमन करतभयो ३ औ कुन्ती जो है सो कंवारेहि मां कर्णको उत्पन्न कियोहै सो कर्मतो आ डौलके हैं जो नीचहू नहीं करैहैं परन्तु कबीरजीकहैहैं कि हरिके गुण गावतभये ताते इनहू की सज्जनहीं में गिनतीभई ऐसहुमें हरिरक्षा कैलियो सो हे जीव तैं केतो अपराधकियो४ इति इक्यासिवीं रमैनी समाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथबयासिवींरमैनी ॥

चौ० सुखकवृक्षयकजक्तउपाया । समुझि न परीबिषय कछुमाया १
छौक्षत्री पत्री युग चारी । फल द्वै पाप पुण्य अधिकारी २
स्वाद अनँद कछु बर्णि न जाही । कै चरित्र सो तेही माही ३
नटवर साज साजि या साजी । सो खेलै सो देखै बाजी ४
मोहा बपुरा युक्त न देखा । शिव शक्ती बिरंचि नहिंपेषा ५
साखी ॥ परदेपरदे चलिगया समुझि परीनहिं बानि ॥
जो जानै सो बाचिहै होत सकलकी हानि ६

चौ० सुखकवृक्षयकजक्तउपाया । समुझिनपरीबिषयकछुमाया १
छौ क्षत्री पत्री युगचारी । फलद्वै पाप पुण्य अधिकारी २
स्वादअनँद कछु बर्णि न जाही । कैचरित्रसो तेहीमाही ३

साहब को बिसराय कै सूखा जो वृक्षहै यह संसार माया कहे पावत भयो बिषय बिषरूप माया न समुझिपरी संसारी ह्वैगयो १ शरीर धारण कै छाउरमिनको धारण करनवाला जो जीवक्षत्री सो पत्री कहे पक्षीहै जौने वृक्षचारिउ युगमें पक्षी ह्वैगयो अथवा क्षयमान जे नवगुणहैं तिनको धारणकीन्हे जो जीव सोई पत्री कहे पक्षीहै नवगुण कौन हैं सुख दुःख इच्छा जल द्वेष धर्माधर्म भावना यहितरहको जीव जोहै पक्षीसो पापपुण्य फलताको खाइबेको चारिउ युगअधिकारी हैं २ तिन फलनमें बहुतस्वादहै कछुकहोनहीं जायहै तेहीवृक्षमें जीवरूपपक्षी चरित्रकरैहैसोआगेकहैंहैं ३॥

नटवर साज साजि या साजी । सो खेलैसो देखैबाजी ४
मोहा बपुरा युक्ति न देखा । शिवशक्तीबिरञ्चिनहिंपेखा ५

नटके बटा कैसो साज साजि कहे नाना रूप धारण करिकै आवै जाय है जो बाजीगर खेलखेलै है तौने देखैहै अर्थात् जे ब्रह्ममें लगेते ब्रह्मही देखै हैं जे जीवात्मा में लगेहैं ते जीवात्मै को देखैं हैं इत्यादि जो जौने मतमेंहै सो ताहीमें लगोहै सांचबताये लरै धावैहै काहेते उनकी बासना अनेकजन्म ते वहीहै ४ हुरुवा करिकै मोहा जो बपुरा जीव है सो साहब के जानिबे की युक्ति न देखतभयो शिवशक्त्यात्मक जगत पर्व कहिआयेहैं सो या शिवशक्ति बिरंचि मायारूप या बात न जानतभये ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साखी ॥ परदे परदे चलिगया समुझि परी नहिं बानि ॥
जो जानै सो बाचिहै होत सकलकी हानि ६

परदे परदे कहे बिना साहब के जाने संसारमें जीव चलिगया कहे संसारमें जातरहा बाणी जो है वेद शास्त्र सो तात्पर्यकरिकै साहबकोबतावै है सो जीवको न समुझिपर्‌यो जो कोई वेदशास्त्रादिमें तात्पर्यकरिकै परम पुरुष पर श्रीरामचन्द्र को जानै सोई बाचैहै अपरोक्ष अर्थ जगतमुख जानिकै सबकीहानि होतिहीजाइहै ६ इति बयासिवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथतिरासिवींरमैनी ॥

चौ० क्षत्री करै क्षत्रियाधर्मा। वाके बढ़ै सवाई कर्मा १
जिनअबधूगुरुज्ञानलखाया। ताकरमनतहँइँलैधाया२
क्षत्रीसो कुटुम्बसों जूझै। पांचोमेटि एककरि बूझै ३
जीवहिमारिजीवपूतिपालै। देखतजन्मआपनोघालै ४
हालैकरै निशाने घाऊ। जूझिपरे तहँ मनमतराऊ ५
साखी ॥ मनमत मरै न जीवई जीवहि मरन न होइ ॥
शून्य सनेही रामबिन चले अपनपौ खोइ ६

चौ० क्षत्रीकरै क्षत्रिया धर्मा। वाकेबढ़ै सवाई कर्मा १
जिनअबधूगुरुज्ञानलखाया। ताकरमनतहँइँलैधाया २
क्षत्रीसो कुटुम्बसों जूझै। पाचौ मेटिएककरि बूझै ३

जैसे क्षत्री क्षत्रियाधर्म करैहै तौ वाके सवाई कर्मबढ़ैहैं रणमें पैठिकै शत्रुनको मारिकै शूरतारूप कर्मबढ़ैहैं ऐसे जीव यहक्षत्रीहैं क्षत्री जे साहब हैं तिनकी जाति है सो संसार रणमें पैठिकै मनमाया धोखाज्ञानई शत्रु मारि साहबके मिलनरूप शूरताबढ़ैहै १ जे अबधूकहे बधू जो माया स्यहिते रहित रामोपासक जे साधु ते गुण जे साहब हैं तिनको ज्ञान जाको लखायोहै ताकोमन तहँइँ लै भयो मनोनाशबासनाक्षयह्वैगई जब मनो नाशभयो तब धायाकहे हंसरूपमें स्थितह्वै साहबकेपासको धावतभयो २ क्षत्री सो है जो कुटुम्ब सों जूझै कुटुम्ब याके कोहै पांचौ शरीर तिनको मेटिकै एक जो है हंसस्वरूप त्यहिकरिकै साहबको बूझै ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवहि मारिजीवप्रतिपालै । देखतजन्मआपनोघालै ४
हालै करै निशानेघाऊ । जूझि परे तहँ मनमतराऊ ५

जीवहि मारिकै कहे जो औरेऔरेकोजीवहै रह्योहै आपनेको ब्रह्ममानैहै आपनेको औरैऔरै देवताके दास मानैहै यह नाम मिटाइदेइ औ यह जीवको जीव नाम मिटाइदेइ औ हंसरूप में स्थितहै कै जीव को नाम रामदास धरावै तबही यहजीव को प्रतिपाल होइहै आपने देखते जन्म मरणको लैहै कहे छोड़िदेइ है ४ सो जो कोई या भांति साधनकरै सो हालै निशानेमें घाउकरै अर्थात् मनोनाशवासक्षय हालै है जाइहै औ जे मनमत राउहैं अपने मनमतमें अपनेको राजामानैहैं जूझिकै संसारमें परे अर्थात् कोई आपनेनको ब्रह्ममानैहै कोई आत्मैको मालिक मानैहैते जैसे मिथ्या वासुदेव अपनेको कृष्णमानि जूझिपरयो ऐसे येऊ मनमायाकरिकै मारे जायहैं ५ ॥

साखी ॥ मनमतमरै न जीवई जीवहि मरन न होय ॥
शून्यसनेही रामबिन चले अपनपौ खोय ६

मनमती न मरै है न जियै है काहेते जीवहि मरण न होय जीव को जीवत्व नही जाइ है जिअब तो तबकहिये जबसाहब को जानिकै साहब के लोकहि में जन्म मरण छूटिजाय मरिबो तबकहिये जब ब्रह्म में लीन होय जीवत्व छूटिजाइ जनन मरण न होइ सोशून्य जेहैं वे धोखा तिनके सनेही जे मनमतीहैं ते मरैहैं न जियै हैं जीवको तत्वनही जाइ है जीव सनातनको है तामेंप्रमाण ॥ ममैवांशोजीवलोके जीवभूतःसनातनः ६ इति तिरासिवीं रमैनीसमाप्तम् ॥

अथचौरासिवींरमैनी ॥

चौ० जोजिय अपने दुखै सँभारू । सो दुख व्यापि रहो संसारू १
माया मोह बंध सब लोई । अलपै लाभ मूल गो खोई २
मोर तोर में सबै बिगूता । जननी उदर गर्भ महँ सूता ३
ई बहुरूप खेलै बहु बूता । जन भौंरा अस गये बहूता ४
उपजै खपै योनि फिरिआवै । सुखकलेश सपनेहु नहिंपावै ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुख संताप कष्ट बहुपावै। सो न मिला जो जरत बुझावै ६
मोर तोर में जरजग सारा। धृग जीवन झूठो संसारा ७
झूंठे मोह रहा जगलागी। इनतेभागि बहुरि पुनि आगी ८
जेहित कै राखे सब लोई। सो सयान बाचे नहिं कोई ९
साखी॥ आपु आपु चैते नहीं औ कहौतौ सिंहा होइ॥
कहकबीर सपने जग निरस्थि अस्थि नहिं कोइ १०

चौ० जो जिय अपने दुखैसँभारू। सो दुख व्यापिरहोसंसारू १
माया मोह बंध सब लोई। अलपै लाभ मूलगो खोई २
मोर तोरमें सबै बिगूता। जननी उदर गर्भमहँ सूता ३
ई बहु रूप खेलै बहुबूता। जन भौंराअस गये बहूता ४

हे जीव जौन दुःखयह संसार में व्यापि रह्यो है तौने आपने दुःखको संभारु अर्थात् तौनेदुःखते निकसु १ मायामोहमें सब बँधेहौ सो अल्पतो लाभहै अर्थात् विषयसुखते थोरहीहै तिनसबकेमूल संपूर्ण दुःखके मेटन वारे जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं ते खोइजाइहैं कहेबिसरिजायहैं २ मोर तोर याहीमें सब जीव बिगूता कहे अरुझि रहे है याहीते जननी के उदर में सदा सूततहै अर्थात् गर्भवास नहीं मिटैहै ३ जैसे भौंरा फूलन में रसलेन को जाइहै संध्या ह्वैगई तब कमल संपुटित ह्वैगयो तब फँसिगयो तैसे येजीव बहुरूपते बहुतपराक्रम करिकै खेलखेलैहैं कहेबिषय रसलेनको जायहैं मायामें फँसिजाय हैं ४॥

चौ० उपजैखपै योनि फिरिआवै। सुखकलेशसपनेहुनहिंपावै ५
दुखसंताप कष्ट बहुपावै। सो न मिला जो जरत बुझावै ६

उपजै है औ खपै कहे मरैहै पुनि पुनि योनिमें फिरि आवैहै सुखको लेश सपन्यो नहीं पावैहै ५ दुःख संताप कष्ट बहुत पावैहै जो आगीते जरत बुझावै सो गुरुनहीं मिलैहै इहां दुःखसंताप कष्ट तीनबार जोकह्यो तामें कुछ भेदहै दुःखवह कहावैहै जो काहूमारे होइहै औ जो रोगादिकन करिकै होइ है सो संकष्ट कहावै है औ जोकोई हानिते होइहै सो संताप कहावै है ६॥

चौ० मोर तोरमें जर जग सारा। धृग जीवन झूंठो संसारा ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झूठेमोह रहा जगलागी । इनतेभागि बहुरि पुनिआगी ८
जे हितकै राखे सब लोई । सो सयान बाचे नहिं कोई ९

औ तोर मोर करिकै सब संसार जरजाइ है यह संसार साहब को चिद्रूप करिकै नहीं देखै वे यह संसार को संसार रूप करिकै देखैहैं यही झूठोहै सोऐसे झूठे संसार में जीवनको जीबेको धिक्कार है ७ माया को जो मोहहै सो सब संसारमें लगि रह्यो है सो झूठोहै इनते जो कोई भागिबेऊ कियो तौ फेरि वही झठे ब्रह्माग्निमें जरै है ८ जेजे सब लोई कहे लोगन को हित कै राखे हैं ते सयान कालसे कोई नहीं बचैहैं तू कैसे बचैगो ९ ॥

साखी ॥ आपु आपु चेतै नहीं औ कहौ तौ रिसिहा होइ ॥
कहकबीर सपने जगै निरस्थि अस्थिनहिंकोइ १०

आपु आपु कहै आपने स्वरूप को नहीं चेतैहै किमैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के हौं सो मैंजो समुझाऊं हौं तौ रिसहा होइहै सो कबीरजी कहैहैं कि जो सपने जागै सपन कहाहै देहको अभिमानी मनमुखी ह्वै जागे कहै अपने मनते यह बिचारि लेइ किमैं जाग्यो मैं ब्रह्म ह्वैगयो अथवा आपने को जान्यो महीं सबको मालिक हौं और कोई दूसरो छोड़ावन वारो नहीं है मैंअपनेको जान्यो सो छूटिगयो सो कोईसाहब को न मान्यो सो निरस्थि कहे नास्तिकहै सो अस्थिकहे आस्तिकन होइ है सोकहाजागैहै नहीं जागैहै अर्थात् वह ज्ञानतो धोखा है संसार समुद्रते तेरी रक्षा कहां करैगो तातेवह साहब को समुझिजाते तेरो संसार समुद्रते उबार करिदेइ १० इतिचौरासिवी रमैनीसम्पूर्णम् ॥

इति ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

अथशब्दलिख्यते ॥

संतोभक्ति सतोगुरु आनी । नारीएक पुरुषदुइजाये बूझोपंडितज्ञानी १ पाहनफोरिगंगयक निकरी चहुंदिशि पानीपानी । तेहिपानी दुइपर्वतबूड़े दरिया लहरि समानी २ उड़िमक्खी तरुवरके लागी बोलै एकैबानी । वहि मक्खीके मक्खा नाहीं गर्भरहा बिनपानी ३ नारीसकल पुरुषवहिखायो तातेरहेउ अकेला । कहै कबीर जो अबकीसमुझै सोईगुरु हमचेला ४ ॥

सन्तोभक्ति सतोगुरु आनी ।
नारीएक पुरुष दुइजाये बूझो पण्डितज्ञानी १

हे सन्तो हे जीवो तुमतो शांतरूपहो गुरुजेहैं सबते श्रेष्ठ परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनकी सतोकहे सातो जे भक्तिहैं तेआनीकहे आनई है अर्थात् सगुण निर्गुणके परे मनबचनकेपरेहै कौन सातभक्तिहैं तेकहैहैंशांत प्रथम ताकर द्वैभेद सूक्ष्मा सामान्या सो शांतके सूक्षा के सामान्या के जुदेजुदे लक्षण हैं ताते तीनिभक्ती ये हैं औदास्यसख्यवात्सल्य शृङ्गार चारि ये मिलाय सातभक्तिभई सोई जेहैं सातौरस हैं ते मन बचन ये नहीं आवैहैं जब प्राप्तिहोइहैं तबही जानिपरैहै कि ऐसेहैं सो याभांति साहब की जे सातोभक्तिहैं ते गुप्तह्वैगई काहेते कोऊ न जानत भयो सो कहैहैं नारी जो है कारणरूपामाया सो द्वै पुरुषको प्रगट कियो एक जीव दूसरोईश्वर सो पांच ब्रह्मईश्वर प्रगटभयेहैं सो आदिमंगलमें कहिआये हैं जनीप्रादुर्भावे धातुहै या जायेको अर्थ प्रगट करबोईहै औ माया ते जीव ईश्वर प्रगटभयेहैं तामेंप्रमाण ॥ मायाख्यायाःकामधेनोर्वत्सौजीवेश्वरावुभौ इति । जीवेशवाभासेनकरोतिमायाचाविद्याचेतित्रु तेः॥सो हे पंडित ज्ञानी तुमबूझौतौ सारासारके बिचार करनवारे सांचहौ यहबाणी जोहै सोई तुमको भरमाइ दियोहै १ ॥

पाहनफोरि गंगयकनिकरी चहुंदिशि पानीपानी ।
तेहिपानी दुइ पर्वतबूड़े दरिया लहरि समानी २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाहनकहिये कठिनको सो कठिन मनहै ताको फोरिकै गंगा निकसी नानापदार्थनमें जो रागहोइहै सोई गंगाहैं सो बही रागरूपामायामें परि कै जीव संसारमें रागकरि बूड़िगये औ ईश्वर उत्पत्ति प्रलयकरिकै दोनो जीव ईश्वर जे हैं तेई दुइभारी पर्बतहैं ते बूड़िगये औ दरिया जो धोखा ब्रह्महै तामें रागरूपी जोहै गंगा ताकी जो लहरिहै सो समाइजातीभई अर्थात् सब धोखही में रागकरत भये सांच बस्तु में जिनजाना तेई बाचे अथवा वही रागगंगा लहरि संसार सागर में समाइजाती भई सब जीव ईश्वर संसार में रागद्वेष करिकै बूड़िगये अथवा वहै जो बाणी गंगा सो पाहन जो मन है तौने को फोरिकै निकरी है सो चारिउ ओर पानीपानी ह्वैरहीहै तौने पानी दुइपर्बत बूड़े एकजीव एकईश्वर औ गंगासमुद्र में समानीहैं इहां बाणीरूप गंगाको पर जब सान दरिया जो ब्रह्महै ताहीमें होत भयो २ ॥

उड़िमक्खी तरुवरके लागी बोलैएकै बानी।
वहिमक्खीके मक्खानाहीं गर्भरहा बिनबानी ३

मक्खी जेहैं जीव ते तरुवर जोहै देहतामें उड़िकै आपने आपने बासनन ते लागतभये अर्थात् प्रलय जबभई तबवही ब्रह्ममें लीनभये पुनिजब सृष्टिभई तब पुनिशरीर पावतभये अथवा मक्खीजे हैं जीव ते संसार वृक्षमें लागतभये ते सब एकबाणी बोलैहैं कि एकब्रह्महीहै दूसरो नहीं है साहबको नहीं जानैहै सो वही मक्खी जो जीवहै ताके मक्खा नहीं है कहे प्रथम जीव जो हिरण्य गर्भ समष्टि जीवहै ताके पतिनहीं है परंतु बिना पानी गर्भरहतई भयो जीव ते संसार प्रगटे यह आपहीते नामको जगत् मुख अर्थ करिकै संसारी ह्वैगयो साहब तौ याको उद्धार करिबो रामनाम दियो ताकी मेरेनाम मेरो अर्थ जानिकै मेरे पासआवै संसार न होइ ३ ॥

नारीसकल पुरुष वहिखाया ताते रह्योअकेला।
कहैकबीर जो अबकी समुझै सोईगुरू हमचेला ४

नारी जोहै वहै कारणरूपामाया सो सब जीव ईश्वर जे पुरुषहैं तिन को खाइलियो कहे आपने पेटमें डारिलियो अर्थात् उनके काहूके ज्ञान न रहिगयो आपनोचेरो बनाइलियो तेहिते हेसंतो हे जीवो तमतोशुद्धहौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमको छोड़िदेउ तम साहब जेहैं तेई छोड़ाइ लेइंगे अकेला रहौ कहे अकेल जेसबकेसाहब परमपुरुष श्री रामचन्द्रहैं तिनके ह्वैके रहौ जोजीव ईश्वरनकोसंग करौगे तो तुमहूं को माया धरिलेइगी श्री कबीरजी कहैंहैं किजोअबकी समुझैकहे यह मानुष शरीर पाइकैसमुझैसोईगुरूहै तौनेजीव को हमचेला ह्वैजाइं अर्थात् ताकेहम सेवक ह्वै जाइं जो जो हमसों पूंछै सो सब वाको बताइ देइंकछू गोप्य न राखैं अथवा सो हम पूछि-लेइं कि ऐसे भ्रमजाल में परिकै कौनीभांति ते छूट्यो सो कबीरजी तो कबहूं बँधिकैछूटे नहीं हैंताते कबीरजी कहैंहैं कि जो अबकी या समुझि लेइतौहम पूछिलेइँबंधिकैछूटै कैसेसुखहोइ ४इतिपहिलाशब्दसमाप्तम् ॥

अथदूसराशब्द ॥

संतौ जागत नींद न कीजै । काल न खाय कल्प नहिं ब्यापै देहजरा नहिं छीजै १ उलटी गंग समुद्रहि सोखै शशि औ सूर गरासै । नवग्रह मारि रोगिया बैठे जलमें बिंब प्रकाशै २ बिनु चरणन को दुहुं दि-शि धावै बिन लोचन जगसूझै । ससासो उलटि सिंधुको ग्रासै अचरज कोऊ बूझै ३ औंधे घड़ा नहीं जल डूबै सूधेसों घट भरिया । जेहिकारण नर भिन्न भिन्न करु गुरुप्रसादते तरिया ४ पैठिगुफामें सबजगदेखै बाहर कछुवनसूझै । उलटाबाणपारथिव लागै शूराहोयसो बूझै ५ गायन कहैक-बहुं नहिं गावै अनबोला नित गावै । नटवर बाजी पेषनी पेषै अनहदहेतु बढ़ावै ६ कथनी बदनीनिजुकै जोहैं ईसब अकथ कहानी । धरती उलटि अकाशहि वेधै ईपुरुषहि की बानी ७ बिना पियालाअमृतअचवै नदीनीर भरि राखै । कहैकबीर सो युग युगजीवै राम सुधारस चाखै ८ ॥

संतौ जागत नींद न कीजै ।
कालन खाय कल्पनहिंब्यापै देहजरानहिंछीजै १ ॥

हे संतौ हे जीवौ तुमतो चैतन्य रूपहौ तुम काहेको सोवौ हौ अर्थात् काहे जड़ भ्रममें परेहो मायादिक तो जड़हैं औ तिहारो अनुभव जोब्रह्म है सोऊ जड़है काहेते कि तिहारो मनतो जड़है ताहीकी कल्पना ब्रह्म है जो कहो मनको बिषय ब्रह्म है यहतो कोई वेदांत में नहीं है तो जहां भर मन बचन में आवै तहां भर अज्ञान कल्पित है औ अहंब्रह्मास्मिमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्म है यह मानिबो तो मूलाज्ञान में है यह वेदांत को सिद्धांत है जैसे धूरि धूम बादर घटादिक के आकाशही रहिजाय है कबीरजी कहैहैं कि तैसे तीनों अवस्थामें तुमहीं रहिजाउहौ जहांभर ब्रह्म कहैहैं औ बिचार करैहैं सो मन बचनमें आइजाइ है ताते मनहीं कोकल्पित है ताते योऊ जड़हैं सो तुम नहीं हौ तुमतौ चैतन्य हौ तिहारे रूपको कालनहीं खाय है औकौनौ कल्पना नहीं व्यापैहै अर्थात्कौनौ तुम्हारे स्वरूपमें कल्पना नहीं उठैहै औ तेरोजो स्वरूपहै याते परमपुरुष श्रीरामचन्द्र के समीप रहैहै सो रूप जराजो बुढ़ाई है ताते नहीं छीजैहै अर्थात् कबहुं बुढ़ाई नहीं होइहै सदा किशोर बनो रहैहै १ ॥

उलटी गंग समुद्रहि सोखै शशि औसूर गरासै ।
नवग्रहमारिरोगिया बैठे जलमें बिंब प्रकासै २ ॥

रागरूपी जोहै गंगासो संसार मुख ब्रह्ममुखहै रहीहैसोजोउलटै साहब मुख होइ साहब में जीव अनुराग करै तो समुद्र जोहै संसार सागर औ धोखा ब्रह्मसागर ये दुहुनको सोखिलेइ औ शशि जोहै जीवात्मा मानिबो कि एक आत्महीहै दूसरो पदार्थ नहीं है यह ज्ञान औ शूरजो है नानानिरंजनादिक ईश्वरन के दास मानिबेको ज्ञान तौनेको गरासिलेइ है औ यह सांचो साहबकोहै जानयाको देइहैं संसारवालो जो रोगहै सोपारषही ते जायहै सो नवग्रह जब निबल होइहै तब रोग होइहै सो नवग्रह नौद्रव्यहैंनौद्रव्यके नाम पृथ्वी अपतेज बायु आकाश काल आत्मादिक मन तिनको मारिकै कहेमिथ्या मानिकै औ आपनी आत्माको साहबको दास मानिकैबैठे तब रागरूपी जलमें बिंबजोहै शुद्ध साहबको अंशयाको स्वरूप जाको प्रतिबिंब धोखा ब्रह्म है औ संसार है तौ न प्रकाशै कहे अपने स्वस्वरूपको जानै २ ॥

बिन चरणन को दशदिशि धावै बिन लोचन जग सूझै ।
ससासो उलटि सिंहको ग्रासै अचरज कोऊ बूझै ३ ॥

तब बिना चरणनको कहे संसारमुख चलिबो ब्रह्ममुख चलिबो याको छूटिगयो अर्थात् येई चरणहैं तिनतेहीन ह्वैगयो तब नवधाभक्तिको छोड़िकै बहु कहे दशौ जो साहबकी अनुरागात्मिका भक्तिहैं तौनेके दिशाको धावैहै अथवा नवद्वारको छोड़िकै दशौद्वारको जोहै मकरतार साहबके इहांकीडोरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगीहै तहांको धावैहै औ शरीरनको जे प्राकृत नयनहैं तेयाके न रहिगये साहबको दियो जो याको हंसस्वरूप है तौनेके नेत्रकरिकै साहबको चिद चिद रूप यह संसार सो सूझिपरनलग्यो कहे बूझिपरन लग्यो तब अरे मूढ़ भ्रमरूप जो है ससा खरहा अहंब्रह्म विचार सोतैं जोहै समर्थ सिंह ताको ग्रासैहै सो वहतो धोखाहै वही भर्म भूलिगयो सो हे जीवो यह अचरज कोऊ बूझौ औ जौनज्ञान मैं कहिआयों तौनकरि साहब में लगो जो कबहूं न होइ नईबात होय सो यह आश्चर्यहै ससा सिंहको कबहूं नहीं खाइहै जीवब्रह्म कबहूं नहीं होइहै सो तुम कबहूं ब्रह्म न होउगे वह ब्रह्मतुम्हारई अनुभव है ताहीमैं तुम भुलानेहौ ३॥

औंधेघड़ा नहीं जलभरिया सूधे सों घट भरिया।
जेहिकारणनरभिन्नभिन्नकरु गुरुप्रसादतेतरिया ४

औंधा घड़ा जो जलमें डारिदीजै तौ नहीं डूबैहै जलनहीं भरिआवै है सो तैं जो साहबको पीठिदैकै ब्रह्ममें औ संसार में लगे सोतौ धोखा है जैसे सूधे घटमें जलभरि आवैहै तैसे तैंहूसाहबकी ओर मुखकरु जब साहब तेरेऊपर प्रसन्नहोइगो तबहीं तैं ज्ञानभक्तिकरिकै पूराहोइगो जा कारण नर भिन्न भिन्न करैहै कहे भिन्न भिन्न पदारथ मानैहै औ सबपदार्थ साहब को चिद चिद रूपकरिकै नहीं देखै है सो यह भ्रम समुद्र गुरु सबते अज्ञअंधकारको दूरिकरनवारे परमपुरुष जे श्री रामचन्द्रहैं तिनके प्रसादते तरौगे अथवा साहब के बतावनवारे अंधकार के दूरिकरनवारे जब गुरुमिलैंगे तब तिनके प्रसादते तरौगे ४॥

पैठिगुफामोंसबजगदेखैबाहरकछुवनसूझै।
उलटाबाण पारथिवलागैशूराहोयसोबूझै ५

दुर्लभ मनुष्य शरीर रूपी जो गुफाहै तौने में पैठिकै कहे शरीरपाइकै चिद चित साहबको रूप सब संसार याको सूझिपरै औ साहबके रूपते बाहिरे औरकछु वस्तु न सूझिपरै सुरतिरूपी जो बाणहै सो जगत्मुख ब्रह्ममुख ईश्वर मुख जीवात्मा मुख हैरहा है सो उलटा कहे उलटिकै पार्थिवकहे राजाजे परमपुरुष श्री रामचन्द्रहैं तिनमें लगावै यहबात जो कोई शूराहोइ कहे ब्रह्मज्ञान ईश्वरज्ञान जीवात्माज्ञानकी एकआत्मैंसत्य है तिनको जीतिलेइ सो बूझै तबहीं जन्ममरण याको छूटै है ५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गायनकहैकबहुंनहिंगावै अनबोलानितगावै।
नटवतबाजी पेखनीपेखै अनहदहेतुबढ़ावै ६

गायनजोहै बाणी वेद शास्त्र पुराण सो तात्पर्य करिकै अनिर्वचनीय साहबको कहैहैं तौनेकोतौ कबहू नहीं गावैहै अनबोला जो निराकार धोखा ब्रह्महै जो कबहूं बोलतैनहीं है सोकैसे पूरपरै कौनीतरहते अनबोलाको गावैहैं सो आगे कहैंहैं वह जो धोखा ब्रह्मको पेखनोहै सो नटवत बाजीहै कहे झूंठैहै उहांकछू नहीं देखोपरैहै जो कहो अनहदको हेतु तो बढ़ावैहै कहे दशौ धुनि अनहद कीतौसुनिपरैहै ६॥

चौ० कथनीबदनी निजुकैजोहैईसब अकथकहानी।
धरतीउलटिअकाशहिवेधै ईपुरुषहिकीबानी ७

सोईतोसब कथनी बदनीहै जो विचारिकै देखौ तौ अनहद आदिदैकै ईसब अकथ कहानीहैं साहबके जाननवारे पूरेसंतनके कहिवेलायक नहीं है झूंठेहैं कछु इनमें है नहीं सबमनके अनुभवहैं पुरुषजेहैं तिनकी यह बाणिकहे सुभावहै धरती जो जड़मायाहै ताको उलटिदेइहै वाको मुख मुरकाइदेइहै वासों आपफिरि आवैहै औ आकाश जो ब्रह्महै ताको बेधै कहे ब्रह्मकेपार जाइहै तामेंप्रमाण ॥ सिद्धाब्रह्मसुखेमग्नादैत्याश्चहरिणाहताः॥तज्ज्योतिर्भेदनेशक्तारसिकाहरिवेदिनः॥औकुपुरुषजेहैं ते संसारमें लगैहैं कि धोखाब्रह्ममें लगैहैं उनकी बानीकहे यहैसुभावहै ७॥

बिनापियाला अमृत अचवै नदीनीरभरिराखै।
कहैकबीर सोयुगयुगजीवै रामसुधारसचाखै ८

स्थूल सूक्ष्मादिक जे पांचौ शरीरहैं तेई पियाला हैं स्थूल सूक्ष्म कारणकरिकै विषयानंद पियैहैं औ महाकारण कैवल्यते ब्रह्मानंद पियैहैं पांचौ शरीर पियाला बिना कहेते निकसिकै जे पुरुष साहबको दियो जो हंस स्वरूप है तामें स्थित ह्वैकै साहबको प्रेमरूपी जो अमृतहै ताको अँचवैहैं जाते जन्म मरणनहोइ तिनको जगत्के रागरूपी नीरकरिकै भरो जो नदीहै जाको आगे वर्णन करिआयेहैं नदियानीर नरकभरि आई सो तिनको राखैहैं कहेछारईहैं अर्थात् झूरहीहैं अथवा संसारमें जो रागकियेहैं सो नरकभरीहैं ताको निकारिकै रसरूपाभक्ति जो साहबकी नीरताक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरिराखै सो कबीरजी कहैहैं कि सोई युग युग जीवैहै कहे वहीको जनन मरण नहीं होय जो याभांति परमपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके प्रेम-रूपी सुधारसको चाखैहै ८ इतिदूसराशब्दसमाप्तम् ॥

अथतीसराशब्द ॥

संतौ घरमें झगराभारी । रातिदिवस मिलि उठिउठि लागैं पांचढोटा यकनारी १ न्यारो न्यारो भोजन चाहैं पांचौअधिक सवादी । कोइकाहूको हटा न मानै आपुहिआपुमुरादी २ दुर्मतिकेर दोहागिनि मेटे ठोटैचाप चपैरै । कहकबीर सोईजनमेरा घरकोरारिनिवेरै ३ ॥

संतौघरमें झगराभारी ।
रातिदिवसमिलि उठिउठिलागैं पांचढोटायकनारी १

आगे या कहिआयेहैं कि बिना पिआला अमृत अचवैहैं औ जे नहीं अचवैहैं तिनको कहैहैं हेसंतौ हे जीवौ या घर जो शरीरहै तामें भारी झगरामच्योहै पांचौ ढोटा जे पांचौ तत्वहैं औ नारी जो मायाहै सो उठि उठि लागैहैं कहे झगरा करैहैं यहै उपाधि रातिदिन जीवको लगीरहैहै १॥

न्यारो न्यारो भोजनचाहैंपांचौअधिक सवादी ।
कोउकाहूको हटा न मानै आपुहिआपुमुरादी २

अपने अपने न्यारे न्यारे भोजन चाहैहैं पांचौ बड़े सवादीहैं आकाश श्रोत्र इन्द्रीप्रधानहै सो शब्द चाहैहै वायुत्वच इंद्री प्रधान सो स्पर्श को चाहैहै औ तेज चक्षु इंद्री प्रधानहै सो रूपको चाहैहै औ जल रसनेंद्री प्रधानहै सो रसको चाहैहै औ धरतीघ्राणेंद्री प्रधानहै सो गंधको चाहैहै औ माया जीवहीको गासन चहैहै कोईकाहूकोहटको नहीं मानैहै आपही आपु मालिक ह्वै रहेहैं आपुही आपु आपनी मुरादिकहे बांछापूरकरैहैं २॥

दुर्मतिकेर दोहागिनि मेटेढोटैचाप चपैरै ।
कहकबीरसोई जनमेराघरकी रारिनिवेरै ३

दुर्मति जे हैं गुरुवालोग जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको छोड़ि आत्महीको सत्य मानैहैं औ या कहैहैं कि सबसुखकरिलेउ वहांकछु नहीं है ऐसे जेनास्तिकहैं तिनकी दोहागिनि कहे नहीं ग्रहण लायक बाणी तिनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेटिकै कहे छोड़िकै ढोटाजेहैं पांचौतत्व तिनको जोहै चाप कहे दबाउब ताको आपै चपेरै कहे दबाइलेइ अर्थात् वे न दबावन पावैं आपने आपने विषयनमें मनको खैंचि लैजाइहै तहां मन न जानपावै सो कबीरजी कहै हैं कि जो पारिख करिकै शरीर जो घरहै तौनेमें जो पांचौ इंद्रिनको झगड़ा है ताको निवेरै कहे सब तत्व जे पृथ्वी आदिकहैं तिनमें लीन जे पांचौ इंद्रीहैं तिनकी जे विषय हैं तिनको निवेराकरै कि भगवतकी अचिद विग्रहहै पृथ्वी आदिक तत्वरूप करिकै जो देखैहै इंद्रीरूप करिकै जो देखै औ विषय रूपकरिकै जो देखैहै सो न देखै औ यहमानै कि मैं जो हौं जीवात्मा तौनेकी एकौ नहीं हैं काहेते कि मैं चिद चित विग्रह हौं ये जड़ विग्रहहैं इनते भिन्नहौं सो ये जेहैं जड़ ते आत्मैकी चैनन्यता पाइकै आपुसमें लड़ैहैं सो इनते जब आत्मा भिन्नह्वैजाइगो तब सब शरीर एकौ कार्य करनको समर्थ न होइगो कैसे जैसे शरीरते जीव इनते अपनेको जुदोमानैगो हंस स्वरूपमें स्थित होइगो सो इनहीं को चपाइ लेइगो घरकी रारिनिवरि जायगी सो इस तरहते जोकोई अपने स्वरूपको जानि घरकीरारिनिवेरै परम पुरुष श्रीरामचन्द्रमें लगै सोईजन मेरोहै ३ इतितीसरा शब्दसमाप्तम् ॥

अथचौथा शब्द ॥

संतौ देखत जगबौराना। सांचकहौं तौ मारनधावै झूठेजग पतियाना १ नेमीदेखे धर्मीदेखे प्रातकरहि असनाना । आतम मारि पाषाणहिं पूजैं उनमें कछू न ज्ञाना २ बहुतन देखा पीर औलिया पढ़ैं किताब कुराना। कैमुरीद तदबीरबतावैं उनमें उहै जो ज्ञाना ३ आसनमारि डिंभ धरिबैठे मनमें बहुत गुमाना। पीतर पाथर पूजनलागे तीरथगर्व भुलाना ४ माला पहिरे टोपीदीन्हे छाप तिलक अनुमाना। साखी शब्दै गावतभूले आतम खबरि न जाना ५ हिंदूकहै मोहि रामपियारा तुरुक कहैं रहिमाना। आपुसमें दोउ लरिलरि मूये मर्म न काहूजाना ६ घरघर मंत्रजे देत फिरतहैं महिमाके अभिमाना। गुरुवा सहित शिष्य सबबूड़े अंतकाल पछिताना७ कहै कबीर सुनो होसंतो ईसब भर्म भुलाना। केतिककहौं कहा नहिं मानै आपहिआप समाना ८ ॥

संतौ देखत जगबौराना ।
सांचकहौं तौ मारनधावै झूठेजगपतियाना १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेसंतो यह जगत् देखत देखत बौराइ गयो यह जानैहै कियह कल्पना मनहीं कीहै एकनको दुखपावत देखैहै एकनको भूतहीत देखैहै एकनको रोगग्रसित देखैहै एकनको घोड़े हाथीचढ़े देखैहै एकनको राजा होत देखैहै औ एकनको मरत देखैहै आपही मरघट ज्ञान कथैहै कि ऐसेही हमहूं मरिजाइँगे सो यहि देखत देखत भुलाइ जाइहैं परम पर पुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको भजन नहीं करैहै जाते संसारतेछूटै जोसांच बताऊहौं कि सांचजे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं जो चित अचितमें व्यापकहैं सबठौर बनेहैं तिनमें लगौ जाते उबारहै तौ मारन धावैहै औ झूठे जेमाया ब्रह्महैं तिनके बिस्तारके जे नानामत हैं तिनमें जोकोई लगावै है तौ तिनको सांचमानिकै पतिआय जायहै १ ॥

नेमीदेखे धर्मी देखे प्रात करहिं असनाना।
आतममारि पषाणहिंपूजैं उनमेंकछू न ज्ञाना २

बहुत नेमी धर्मी देखेहैं बहुत प्रातःस्नान करनवालेन को देखे हैं स्वर्ग को जायहैं औ आत्माको मारिकै कहे भगवान को मंदिर शरीरमें साक्षात् सबके हृदयमें भगवान अंतर्यामी रूपते बसेहैं तौने शरीरको फोरिकै मेढ़ा महिषादिकनको मूड़लैके पीतर पाथर आदिक जे देवी की मूर्त्ति हैं तिनमें चढ़ावैहैं औ सबके उद्धार ह्वैबेको बतावैहैं तौ इनमें कौन ज्ञानहै कछू ज्ञान नहीं हैं काहेते कि साहबको सर्बत्र नहीं जानैहैं २ ॥

बहुतकदेखेपीरऔलिया पढ़ैंकितावकुराना।
करिमुरीदतदबीरबतावैं उनमेंयहैंजोज्ञाना ३

औ बहुते पीर औलियनको देखे किताब कुरानके पढ़नबाले तेजीवन को मुरीद कहे शिष्य करिकै मुरगी बकरीके हलाल करै को तदबीर बतावैं हैं औ आपौ हलाल करैहैं ३ ॥

आसनमारिडिंभधरिबैठे उनमेंबहुतगुमाना।
पीतरपाथरपूजनलागे तीरथगर्बभुलाना ४

औ कोई चौरासी आसनकैकै प्राण चढ़ायकै डिंभधरि बैठेहैं किहमारे बरोबरि कोई सिद्ध नहीं है यही मनमें गुमान करैहैं यह योगिनको कह्यो औ कोई पीतरकी मूर्ति कोई पाथरकी मूर्तिपूजैहैं औ सर्ब भूतमें व्यापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो भगवान् तिन भूतनको द्रोह करैहैं तेअज्ञानीहैं साहबको नहीं जानैं हैं तामें प्रमाण ॥ अहमुच्चावचैर्द्रव्यैः क्रिययोत्पन्नयानघे । नैवतुष्येऽर्चितोऽर्च्चायां भूतग्रामावमानिनः १ यस्यात्मबुद्धिः कुणपेत्रिधातुके स्वधीःकलत्रादिषुभौमइज्यधीः॥यत्तीर्थबुद्धिःसलिलेनकर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषु सएवगोखरः इतिभागवते॥ औ कोई तीर्थनमें वागैहैं इनहीके गर्वमें सब भुलानेहैं कि हम मुक्तिहैं जायँगे ४ ॥

माला पहिरे टोपीदीन्हे छापतिलक अनुमाना ।
साखीशब्दै गावतभूले आतम खबरिनजाना ५

अब कबीरपंथिनको नानापंथिनको कहैहैं कि मालापहिरेहैं टोपीदीन्हे हैं औ नाकतेलैकै अछिद्र ऊर्ध्वतिलकदीन्हेहैं ताहीकेअनुसार छापपायेहैं या कहैहैं हमको गद्दीकी छापभईहै हममहतहैं पानपायोहै औ साखीशब्द गावतहैं पै वाकोअर्थ भूलेहैं साखी शब्दमें जो साहब को रूप बतावै हैं जीवात्माको सो नहीं जानैहैं ५ ॥

हिंदूकहै मोहिंराम पियारा तुरककहैं रहिमाना ।
आपसमेंदोउ लरिलरिमूये मर्म कोइ नहिंजाना ६

सो हिन्दूतो कहैहैं कि वेदशास्त्र में रामही पियाराहै औ मुसल्मानकहैं हैं कि रहिमानही पियाराहै यहदुबिधा लगायराख्योहै या न जानतभये कि एकहीहैं आपसमें लड़िलड़िकै मरिगये मर्मकोई न जानतभये किवही राम है वही रहिमानहै साहब एकईहै दूसरो नहीं है सबनाम वहीकेहैं तामें प्रमाण ॥ सर्वाणिनामानिनिजमाविशंति इतिश्रुतिः ॥ सो सब नाम वही में घटित होय है ६ ॥

घर घर मंत्र जे देत फिरतहैं महिमा के अभिमाना ।
गुरुवा सहित शिष्य सबबूड़े अन्तकाल पछिताना ७

घरचर जे मंत्रदेत फिरतहैं अपनी महिमाके अभिमानते कि हमसिद्धहैं योगीहैं पीरहैं औलियाहैं ऐसेजे गुरुवाहैं ते यही अभिमानते सबकी रक्षा करनवारे जे परमपुरुष श्रीरामचंद्रहैं तिनको भुलाइकै सब जीवन को और और में लगाइदेइ हैं औ कहैहैं कि हम उद्धारकै देइहैं गुरुवा सहित सब शिष्य बूड़ि जाइगे औ जब यमकेरमोंगरा लगैगो तब पछिताइगो कि हम परम पुरुष श्रीरामचन्द्रको भजन न कियो जे सबके रक्षकहैं ७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहहि कबीर सुनो हो संतो ई सब भर्मभुलाना ।
केतिक कहौं कहा नहिं मानै आपहिआपसमाना ८

सो कबीरजी कहैहैं कि हेसंतोतुमसुनो एसबभर्मई भुलानरहैहैंमैंचारो युगमें केतनो समुझाऊहौं पै मानैनहो हैं यद्यपि माया ब्रह्मकी येती सामर्थनहो हैंकि यहजीवको धरिलैजाय काहेते कि वहजीवहीको अनुमानहै सो यह आपनेनते आपयह भर्ममें समाइ गयोहै किमैंब्रह्महौं आपआपही ते यह माया ब्रह्मसो आपस मानलियोहै अर्थात् संगतिकैलियोहै तेहिते संसारी ह्वै गयो ८ ॥ इतिचौथाशब्दसमाप्तम् ॥

अथपांचवांशब्द ॥

संतो अचरज यक भो भाई । यह कहौं तो को पतिआई १
एकैपुरुष एकहैनारी ताकर करहु बिचारा । एकैअंड सकल चौरासी भर्म भुला संसारा २ एकैनारी जाल पसारा जगमें भया अँदेशा । खोजत काहूअत न पाया ब्रह्मा बिष्णु महेशा ३ नाग फांस लीन्हे घटभीतर मूसि सकल जगखाई । ज्ञान खड्गबिन सब जगजूझै पकरि काहु नहिं पाई ४ आपुहि मूल फूलफुलवारी आपुहि चुनिचुनि खाई । कहैं कबीर तेईजन उबरे जेहिं गुरु लियो जगाई ५ ॥

संतो अचरजयकभो भाई । यह कहौं तोको पतिआई १
एकै पुरुष एकहै नारी ताकर करहु बिचारा ।
एकै अंड सकल चौरासी भर्मभुला संसारा २

हे संतो शुद्धजीवो भाई एक बड़ो आश्चर्यभयो जो मैं वाको कहौं तौ कोपति आय १ एकैपुरुषहै एकैनारीहैकहे वहीजीवात्मा पुरुषौहैनारिउ है ताकोबिचारकरोवाकौनहै एकैअंडमाकहे एकही प्रणव में उत्पन्न चौरासी लाखयोनितामे परिकै यहजीव संसारके भर्ममें भुलायरह्योहैअथवाएकही अंडकहे ब्रह्माण्डहि में २ ॥

एकै नारी जालपसारा जगमें भया अँदेशा ।
खोजत काहू अन्त न पाया ब्रह्मा बिष्णु महेशा ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहजीव शरीर धरयो तबएकै नारीजो बाणी सो नानापूकार कीजोहै कल्पना सोईहै जालताको पसारि देतभई तबजगमें नाना पूकारको अँदेशा होतभयो कहे नानापूकारके मतनकरिके जगत्के कारणको खोजतभये परन्तु ब्रह्माबिष्णुमहेश ये कोई अन्त नपावतभये थकिकै नेति कहिदियो आत्माको नानाबिचार कियो कि कौनकौहै ३ ॥

नागफांस लीन्हे घट भीतर मूसि सकल जग खाई ।
ज्ञानखड्ग बिन सब जगजूझै पकरि काहु नहिं पाई ४

सो ये कैसे अन्त पावै नागफांस कहे त्रिगुण की फांसी लिये घट के भीतर माया बनीरहैहै सोई सब संसारको मूसिकै खाइलेइहै मूसिकै खाइ जो कह्यो सो वै तो नानामतनमें परे यह जानैहैं कि यही सत्यहै माया जोहै सो परमपुरुषको जानिबो मूसिलियो कहे चोराइलियो सो परमपुरुषजे श्रीरामचन्द्रहैं तिनको औ अपने आत्मा को जानिबो कि साहबको हौं मैं औ मायादिकनको मिथ्यामानिबो यह जो ज्ञानखड्ग है ताकेबिना सब जग जूझोजाइहै वह मायाको कोई पकरि न पायो अर्थात्यथार्थ मायाहीकोई न जान्यो तबसाहबको अपनो स्वरूपकाजानै ४॥

आपुहि मूल फूल फुलवारी आपुहि चुनि चुनि खाई ।
कहहि कबीर तेई जनउबरे ज्यहि गुरुलिया जगाई ५

आपहि वह मायामूल अबिद्या ह्वै जगत् नानापदार्थ भई कहे कारण अबिद्या भई औ आपही फूल फुलवारीकहे कार्य अबिद्या ह्वैकै जगत् के नानापदार्थभई औ आपही कालरूप ह्वैकै चुनिचुनि खाइहै सो कबीरजी कहैहैं स्वप्न व जो माया तौने ते जगाय साहब को बताइदियो है जाको सद्गुरु तेई जन उबरैहैं अर्थात् जो साहबको जानैहैं औ अपनेस्वरूपको जानैहैं कि मैं साहबको हौं ताको माया स्वप्नवत्है अथवा गुरुजे सबते श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रहैं तेईजिनको मोहनिशामें सोवत जगाइदियोहै अर्थात् हंसरूप दैकै अपनेपास बोलाइलियोहै तेई जन उबरैहैं कहे बचैहैं ५ ॥
इतिपांचवांशब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथछठांशब्द।

संतो अचरज यक भोभारी पुत्रधरल महतारी १ पिता के संगहि भई बावरी कन्यारहल कुमारी। खसमहि छोंड़ि ससुर सँग गवनी सो किन लेहुबिचारी २ भाई संग सासुरी गवनी सासु सौतिया दीन्हा। ननँद भौज परपंच रच्योहै मोर नाम कहिलीन्हा ३ समधी के सँग नाहीं आई सहजभई घरवारी। कहहि कबीर सुनोहो संतो पुरुषजन्म भो नारी ४॥

संतौ अचरज यक भो भारी पुत्र धरल महतारी १
पिता के संगहि भई बावरी कन्या रहल कुमारी।
खसमहिंछोंड़ि ससुरसँग गवनी सोकिन लेहुबिचारी २

हे सन्तो एक बड़ो आश्चर्य भयो पुत्र जो यह जीवहै ताकी महतारी जो मायाहै सो धरतभई १ अरु पिताजो ब्रह्महै ताके संग बावरी ह्वैजात भई कहे जारपुरुष बनावतभई अर्थात् माया सबलित ब्रह्मभयो औकन्या जो बुद्धिहै सो पतिको निश्चय कहूं न करत भई बिचारै करत रहिगई कुवारिही रहतभई अर्थात् सबमतनमें खोजतभई परतु निश्चय न होत भई पहिलेपिता जो ब्रह्महै ताको खसम बनायो पुनि तौने खसम को छोंड़िके ससुरजोहै मन कहे मनैको अनुभवब्रह्महै ताके सँग गौनत भई सो हे जीवो अपनेते काहे नहीं बिचारिलेउहौ कि माया हमारे मनमें पैठिकै और औरमें बुद्धि निश्चय करावैहै २॥

भाई के सँग सासुर आई सासु सौतिया दीन्हा।
ननँद भौज परपंच रच्यो है मोर नाम कहि दीन्हा ३

पृथम याको भयभई तब या बिचारकियो कि द्वितीया द्वैभयं भवति॥ तबहीं माया लगी याते भाई भयो मायाको भय सोईभाईके साथ नाना-मतवारे जे गुरुवालोग तिनको जो मनहै सोई सासुरहै तहां आई औ तिन गुरुवनकी बाणीजोहै सोईसासुहै काहेते ब्रह्मकी उत्पत्ति बाणीहोति है सो गुरुवन की बाणीरूप जो मायाकी सासु ताकी सवति जो दिक्षा रूपसो मायाको देतभई सोमायाते दैवयोग छूटिउजाय परंतु दीक्षासवति ते नहीं छूटैहै सोमायाकी सवतिदीक्षा काहेतेभई मायातो ब्रह्मकीस्त्री है सोताही ब्रह्मको दीक्षाहूलगावैहै सोज्ञानबिद्या रूपहै सोब्रह्मके साथहीभई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मकीबहिनि भई मायाकी ननँदकहाई तौन अबिद्या ब्रह्मको पतिबनायो सो भौजी आपभई सो ये दोऊ भौजी ननँदमिलिकै परपच रच्योहै अरु जीवकहैहै मेरोनाम कहदियोहै कि जीवही सब करैहै ३ ॥

समधीके सँग नाहीं आई सहज भई घरवारी ।
कहै कबीर सुनोहो संतो पुरुष जन्म भो भारी ४

मायाकी कन्या बुद्धि कहिआये सो बुद्धिकुँवारहीमें नाना जीवनकोजार पति बनायो सब जीव साहब के अंशहैं ताते सब जीवनके बाप साहब ठहरे सोमायाके समधी भये तिनके घरवारी कहे आपही सब जीवन को बिवाहलेत भई अर्थात् बशकरलेतभई सो कबीरजी कहैहैं कि हेसंतौजीव जो पुरुषहै सो मायाके साथनारी ह्वैगयो ४ ॥ इतिछठाशब्दसमाप्तम् ॥

अथसातवांशब्द ॥

संतौ कहौ तो को पतिआई । झूठा कहत सांच बनिआई १ लौकै रतन अबेध अमौलिक नहिं गाहक नहिंसांई । चिमिकि चिमिकि चमकै दृगदुहुंदिशि अरबरहा छरिआई २ आपहि गुरूकृपा कछुकीन्हो निर्गुण अलख लखाई । सहजसमाधि उन मुनी जागै सहज मिलै रघुराई ३ जहँजहँ देखौ तहँतहँ सोई मन माणिक बेध्यो हीरा । परमतत्व यहगुरु ते पायो कह उपदेश कबीरा ४ ॥

संतौकहौतौ कोपतिआई । झूठाकहत सांचबनिआई १

हेसंतौ झूठा जोब्रह्महै ताको कहत कहत जीवन सांच बनिआई वही ब्रह्मको सांच मानलियोहै अबजो मैंसांच साहबको बताऊंहौं तो को पतिआय अर्थात्कोई नहीं पतिआयहै ब्रह्महीमें लगेहैं १ ॥

लौकैरतनअबेध अमौलिकनहिंगाहकनहिंसाई ।
चिमिकि चिमिकि चमकैदृगदुहुंदिशिअरबरहाछरिआई २

लौ लगनको कहैहैं सो वा ब्रह्ममाहीहौं या जोलौ कहेलगनताही ज्ञान कोरतनकै अबेधित अमोलिक मानिजामें गाहक औ साईं नहीं है अर्थात् दूसरातो हईनहीं है गाहक साईं कहाते होय सो वही ज्ञानको ब्रह्म मानि लियोहै तौने ब्रह्मउनके दृगनमें चमकि चमकि चमकैहै सर्वत्र देखो परै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जो कहौ लोकपूकाश ब्रह्महीदेखोपरैहै सो नहीं अरु जो या हठहै कि सर्बत्र ब्रह्महीहै याजो बरहाहै सो छरिआइ रह्योहै सर्बत्र ब्रह्मही देखाय हैजैसे बरहामें जलबढ़े सर्बत्र फैलिजायहै ऐसे अहंब्रह्मास्मि जोया ज्ञान सो जब बढ्यो तब याको हठही रूप ब्रह्म देखो परैहै २॥

आपुहिगुरूकृपाकछु कीन्होनिर्गुणअलखलखाई।
सहजसमाधि उनमुनीजागै सहजमिलैरघुराई ३

सो गुरुजेहैं सतगुरु ते जब आपही कृपाकरैहैं तब निर्गुण जो ब्रह्म है ताको अलख लखावैहैं कि वे कुछबस्तुही नही हैं अर्थात् अलखहैं धोखाहैं साहबकबमिलै जबसहज समाधि उनमुनी मुद्राकरि जो सर्बत्र ब्रह्म देखै है तौन उन मुनी रूपनिद्राते जागै अर्थात् सहजही समाधिकै चितअचित रूप विग्रह या जगत् साहबको है या देखै तौ सहजहीमें परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं ते मिलैं ३॥

जहँजहँदेखौ तहँतहँसोई मनमाणिक बेध्योहीरा।
परमतत्वयह गुरुते पायो कहउपदेशकबीरा ४

अबेधित अमोलिक आगेकहिआये ताको तो नेति नेति कहैहैं वामेंकाहू को मनहीनहीं वेध्यो अर्थात् धोखही है अवसाधुनको मनजो माणिकहै अनुराग पूर्वक लाले सो साहब जे हीराहैं तिनमें बेध्योहै ऐसेजे साहब चित अचितरूप जहांजहां देखौहौ तहांतहां सोईहै यह कबीरजी कहैहैं कि यहपरमतत्वको उपदेश मैं गुरुते पायोहै ४॥इतिसातवांशब्दसमाप्तम्॥

अथआठवांशब्द।

संतौ आवै जायसो माया। है प्रतिपाल कालनहिंवाके नाकहुं गया न आया १ क्यामकसूदमच्छकच्छहोना शंखासुरनसंहारा। अहैदयालु द्रोह नहिंवाके कहहुकौनकोमारा २ वेकरतानबराहकहावै धरणिधरैनहिंभारा। ईसबकामसहबकेनाहीं झूठकहैसंसारा ३ खंभफारिजोबाहरहोई ताहि पतिजसबकोई। हिरणाकुशनखउदरबिदारे सोनहिंकरताहोई ४ बावन रूपनबलिकोयांचेजोयांचैसोमाया। बिनाबिबेक सकलजगछहड़ेमायाजग भरमाया ५ परशुरामक्षत्रीनहिंमारा ईकलमायाकीन्हा। सतगुरुभक्तिभेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहिंजानै जीवअमिथ्यादीन्हा ६ सिरजनहार न ब्याहीसीता जलपषान महिंबंधा। बेरघुनाथ एककैसुमिरै जोसुमिरैसोअंधा ७ गोपीग्वालगोकुल नहिंआयेकरतैकंसनमारा। हैमेहरबानसबनकोसाहबनहिंजीतानहिंहारा८ वैकरतानहिंबौद्धकहावै नहीं असरकोमारा। ज्ञानहीनकरता सबभरमै मायाजगसंहारा ९ वेकरतानहिं भयेकलंकी नहीं कलिंगहिमारा। ईछल बलसब मायैकीन्हा यतिनसतिन सबटारा १० दशअवतार ईश्वरीमाया करताकैजिनपूजा। कहैकबीर सुनोहोसंतो उपजैखपैसोदूजा ११॥

अवतरण सबते गुरुश्रेष्ठ परम परपुरुषश्रीरामचंद्रको बर्णनकरिआये तिनकेद्वारमें नारायणादिक मत्स्यादिक रहेआवै हैं ते अमायिकहैं काहेते किआवै जाय नहीं है तिनहीको परात्पर ब्रह्म करिकै बर्णतहैं तामेंप्रमाण पूर्णमदःपूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदुच्यते॥ पूर्णस्यपूर्णमादायपूर्णमेवावशिष्यते इतिश्रुतेः॥औईमायाते परेहैं औ बहुधा निरंजनादिक जेनारायणहैं जिन को पांच ब्रह्ममें कहिआयेहैं ते उनकी उपासना करिकै उनको आपने ते अभेद मानिकै उनकी शक्तिको प्राप्तिह्वैकै जगतके कार्य सब करैहैं औजब मत्स्यादिक अवतार लेइ हैं तबजे साकेत मत्स्यादिकहैं तिनकी अभेद भावना करिकै उनते अवतारकी शक्तिपाइकै आपही मत्स्यादिक होइहैं येसब साकेतमें जेनारायणादिक सबहैं तिनके उपासकहैं उपासनामें देव को औ अपनो अभेद मानिबो लिख्योहै॥ देवोभूत्वादेवंपयेत्॥ तेहिते उन की शक्तिते येसब अवतार लेइहैं जोकहो यामें कहा प्रमाणहै कि येसब उनहीं के उपासकहैं तौ रामनामके साहब मुखअर्थमें मकारस्वतः सिद्ध सानुनासिकहै ताकोजोहै मात्रा तौनेमें साहबके जेसब पार्षद हैं तिनको बर्णन करिआयेहैं येसब नारायणादिक रामनामही की उपासना करैहैं सो जाकी जाकी उपासना कीनचाहै हैं ताकी ताकी उपासना रामनामही में ह्वै जायहै रामनामकी येसब उपासना करैहैं तामेंप्रमाण॥ नारायणस्त्वंभूश्चशिवश्चेन्द्रादयस्तथा। सनकाद्याश्चयेणिन्द्रानारदाद्यामहर्षयः॥सिद्धाः शेषादयश्चैवलोमशाद्यामुनीश्वराः। लक्ष्म्यादिशक्तयःसर्वाःनित्यमुक्ताश्च सर्वदा॥ मुमुक्षवश्चमुक्ताश्चऋषयश्चशुकादयः।तत्प्रभावपरंमत्वामंत्रराज मुपासते॥इतिवशिष्ठ संहितायाम्॥ जोकहो येसब रामनाममेंसाहब मुख अर्थतौ जान्यौ मायिक काहेभयो तौ बिना माया सबलित भये जगत् के कार्य नहीं ह्वै सकै हैं तेहिते येसब माया सबलितह्वैकै कार्यकरै हैं परंतु जैसे इतर जीवनके जन्म मरण होइहैं तैसे इनके नहीं होइ है जबमहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रलयभई तब सबजीव साहबके लोकप्रकाश में समष्टि रूप रहैहैं जब उत्पतिभई तब फिरि कर्म करिकै उत्पत्ति होइहै औयेसब नारायणादिक नकी उत्पति प्रलय नहीं होइहै काहेते कि ईश्वरहैं जब महाप्रलय भई तबजे साकेतलोकमें नारायणादिकहैं तेइनके अंशीहैं उपास्यहैं तहां लीन ह्वैकै रहेजाइ हैं उत्पत्ति समय में समष्टि जीव व्यष्टिहोन चाहै हैं तब रामनाममें जगतमुख अर्थको भावना करै हैं तब साकेतनिवासी जेनारायणहैं तिन्हैं तिनके अंशई सब पांच ब्रह्मरूपते प्रगट होइहैं साकेत में जेनारायणादिकहैं ते अमायिकहैं औ तिनके अंश नारायणादिक मत्स्यादिक अवतार लैकै आवै जायहैं तेमाया सबलितैहैं सो येसब मत्स्यादि अवतारनको मायिक कहिकै कबीरजी साहब को परत्व देखावैहैं कि साहब सबते भिन्नहैं ॥

संतौआवैजायसोमाया ।
हैप्रतिपालकालनहिंवाके नहिंकहुंगयानआया १

हे संतौ आवैजायहै सो तो मायाको धर्महै जे साहबहैं परमपरपुरुष श्रीरामचंद्रहैं ते सबको प्रतिपालही भरकरैहैं कहे उद्धारई भरकरैहैं और काम नहीं करैहैं उनके काल नहीं है अर्थात् प्रलय आदिक नहीं होइहै अथवा जोकोई वे साहबको जानैहै ताको कालको भय छूटिजायहै वैपरम पुरुष श्रीरामचंद्र ना कहीं गयेहैं न आयेहैं १ ॥

क्यामकसूदमच्छकच्छहोनाशंखासुरनसँहारा ।
अहैदयालु द्रोहनहिंवाके कहौकौनकोमारा २
वैकर्ता नबराह कहावैं धरनिधरै नहिंभारा ।
ईसबकाम सहबके नाहीं झूठकहै संसारा ३

अरु वे उद्धार कर्ता परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रको क्या मकसूदकहे क्या मकसदहै अर्थात् क्या प्रयोजनहै मच्छ कच्छ होनेका वै शंखासुरको नहीं संहारयोहै शंखासुर उपलक्षण याते जिनको जिनको मारयोहै अवतारते सब आइगये अरु सो दयालहैं सबकी रक्षा करैहैं उनके द्रोह नहीं हैं कहौ कौनको मारयोहै २ अरु वै उद्धार कर्ता साहब बाराह नहीं भये औ न पृथ्वीको भारा धरयो सो जौन सब कोई कहैहैं कि ई सब काम साहबहीकेहैं सो ये काम साहबके नहीं हैं यह संसार झूठई कहैहै सो साहबको बिनाजाने कहैहैं ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खम्भफारिजोबाहरहोई ताहिपतिजसबकोई।
हिरणकशिपुनखउदरबिदारेसोनहिंकर्ताहोई ४
बावनरूप न बलिकोयांचे जोयांचे सोमाया।
बिनाबिवेकसकलजगजहड़ेमायाजगभरमाया५

औ खम्भ फारिकै बाहर ह्वै कै नरसिंह रूप ह्वै नखते हिरणकशिपु के उदरको बिदारयोहै तौनेन ब्यापक ब्रह्मको सब कोई पतिआयहै सो वे उद्धार कर्ता परमपुरुष श्रीरामचंद्र नहीं हैं यह सब माया कियोहै ४ औ बावन रूपह्वै वै साहब बलिको नहीं यांच्योहै मांगिबो पाइबो तो सब मायाहै सब जगत्के जीवबिना बिवेक जहड़ेकहे भुलाय गयेहैं सब जीवन को माया भरमाइ लियोहै ५॥

परशुरामक्षत्रीनहींमारा ईछलमायहिकीन्हा।
सतगुरुभक्तिभेदनहिंजानै जीवअमिथ्यादीन्हा ६

अरु वै उद्धार कर्ता परमपरपुरुष श्रीरामचंद्र परशुराम ह्वै क्षत्रिनको नहीं मारयोहै यहसब मायाही कियोहै सतगुरु कहे सैकरनजे गुरुवाहैं ते साहबके भक्तिके भेदको जानै नहीं हैं जीवको ये जे नारायणहैं औ सबजे अवतारहैं तिनहीं को अमिथ्या कहे मिथ्या नहीं सांच कहिकै कि वै सांच साहब येईहैं तिनहीकी जीवनको दीक्षादेइहै सो मिथ्याहै ६॥

सिरजनहारनब्याहीसीताजलपषाणनहिंबंधा।
वैरघुनाथ एककैसुमिरे जो सुमिरै सोअंधा ७

औ वै सिरजनहार कहे ताके सुरतिदियो ते ब्रह्मा बिष्णु महेश आदिक अवतार लेइहैं औ जगत्की उत्पत्ति होइहै सो सीताको नहीं बिवाह्यो औ सेतुनहीं बांध्यो सो वै निर्बिकार उद्धार कर्ता रघुनाथको औ ये सब अवतारनको एक करिकै सबकोई सुमिरैहैं सो जो एक करिकै सुमिरैहैं ते अंधेहैं काहेते कि वेतौ रघुनाथहैं रघुकहिये सब जीवको तिनके नाथहैं वे काहेको काहूके मारनको अवतार लेइंगे वै निर्बिकार औ येमाया सबलित ह्वै कै सब अवतारलेइहैं जो कोई आवैजायहै सोमायिकहै सो वैनिर्बिकार साहब औ सबिकार ये सब अवतार एक कैसे होइँगे औ रघु जीवकोकहै हैंतेरघशब्दकै उत्पत्ति रंघंतेलोकल्लो कातरंगच्छति रघवोजीवास्तेषांनाथः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ लोकते और लोकजाइ ते जीवरघुहैं तिनके नाथजेहैं तेईरघुनाथहैं ७॥

गोपीग्वालगोकुलनहिंआये करतेकंसनमारा ।
हैंमेहर्बानसबनकोसाहब नहिंजीतानहिंहारा ८

औ गोपी ग्वाल गोकुलमें कबहूं नहीं आयेहैं वे उद्धार कर्ता साहब कंसको करते नहीं मारयो औ न मथुरागये काहेते कि ब्रह्म बैवर्तमेंलिखा हैं।वृन्दावनंपरित्यज्य पादमेकंनगच्छति॥ वे साहब तो सबके ऊपर मेहरबानी करनवारेहैं वे न काहूसो जीतेहैं न हारेहैं न काहूको मारेहैं अर्थात् युद्धई नहीं कियो वेतो रासई करत रहेहैं ८॥

वैकर्त्तानहिं बौद्धकहावैं नहींअसुरकोमारा ।
ज्ञानहीनकर्ता सबभर्मे मायाजग संहारा ९
वैकर्तानहिं भयेकलंकी नहींकलिंगहिमारा ।
ईछलबलसबमायेकीन्हा जतिनसत्तिसबटारा १०

अरु बौद्ध रूपहैकै दैत्यनको नास्तिक मतसिखै दैत्यनकोसंहार कराइ डारयोहै सो सब माया कियोहै वे मुक्तिकर्ता साहब नहीं कियो काहेते कि वे मुक्तिकर्ता साहब देवको निन्दा करिकै इनको अज्ञानी कैसे करैंगे लोक ज्ञानहीन जेहैं ते भर्मे यह कहैहैं कि यह सब उद्धार कर्ताजोहै सोई सब करैहै सो कर्ता नहीं करैहै यहमाया सब जगत्को संहार करैहै ९ अरु वे उद्धार कर्ता परमपरपुरुष श्रीरामचंद्र कलंकी अवतार नहीं लियो औ न कलिंग देशीजे म्लेक्षहैं तिनको मारयोहै यहछल बलसब मायेकियो है यतिनको जोहै सत्य सबताको टारिदियोहै अर्थात् यतीजे रहे संन्यासी गोरखादिक तिनकर सत्यजोहै साहबको जाननवारो मत तौनेको टारि दियो योगादिकनमें लगाइदियो १०॥

दशअवतार ईश्वरीमाया कर्ताकै जिनपूजा ।
कहहिकबीरसुनोहोसंतो उपजैखपैसोदूजा ११

नारायणै माया करिकै अवतार लेइहै ते सब ईश्वरी मायाहै कहे ईश्वर रूपही मायाहै तिनको जिन पूजाकहे रामचंद्र मानिकै न पूजो वैसेपूजो तोपूजो ईश्वरमानिकै न पूजो लोकबीरजी कहेहैं कि हेरे तौ जो उपजैहैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरऊपैहैं सो साहबते दूजो पुरुषहैं वै उद्धारकर्ता परम परपुरुष श्रीरामचंद्र साकेत तेकबहूं नहीं आवै जायहैं तामेंप्रमाण ॥पूर्णःपूर्णतमः श्रीमान्सच्चिदानंदविग्रहः अयोध्यांकापिसंत्यज्यसक्वचिन्नैवगच्छति ॥ इति बसिष्ठसंहितायाम् ॥ साकेतेनित्यमाधुर्य्येधाम्निश्वेराजतेसदा शिवसंहितायाम् ॥ जोकहो इनहूको तौ कौन्यो कल्पमें अवतारलिख्योहै सोईकबहूं आवैजाय नहीं हैं साकेतहीमें बने रहैहैं जब कबहूं बाणयुद्धकी इच्छा चलैहै तब यह अयोध्या साकेतई प्रगटहोइहै अरु उहांके सब परिकार जसके तस प्रकट होइहैं यह ब्रह्मांडमें तहां जैसे साकेतमें बिहार करैहैं तैसे बिहार करैहैं याहीहेतु तेज्ञानी अज्ञानी जड़ चेतन कीट पतंगादिको मुक्ति करिदियो सो श्रुतिमेंलिखैहै॥ ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः बिना ज्ञान मुक्ति नहीं होइहै सो जोवह साकेत केशव न होते तौमुक्ति कैसे होते जोकहो यह ब्रह्मांड वह साकेतई ह्वै गयो तौ साकेतको आइबो तौ आयो तौसुनो वह साकेत औ यह अयोध्या एकईहै इहां साकेत आवै जाय नहीं है जैसे साहब सर्वत्र पूर्णहैं तैसे साकेत तौ साहबके रूपईहै सोवहौ सर्वत्रपूर्णहै अयोध्या चपर ब्रह्म इत्यादिक प्रमाणते जब परमपरपुरुष श्रीरामचंद्र को प्रकट बिहार करनको होइहै तब प्रकट ह्वैजाइहैं औ जब गुप्तबिहार करनको होइहै तब गुप्त ह्वै जाइहैं तब साकेजो प्रकट औ गुप्तह्वै जाइहैं कैसे जैसेश्रीकबीरजीको जब प्रकट उपदेश करनकी इच्छाहोइहै तबप्रकट होइ उपदेश करैहैं औ जब देखैहैं औ जब गुप्तउपदेश करन होइहै तब गुप्त उपदेश करैहैं जाको उपदेश करैहैं सोई जानैहै वै साकेत निवासी श्रीरामचंद्र जैसे सर्वत्र पूर्णहैं तैसे उनको लोकऊ सर्वत्र पूर्णहै जोकहो उनके नामादिकतौ अनिर्वचनीयहैं वै कैसे प्रकट बचनमें आवैंगे तौनारायणजे रामावतार लेइहैं तेईहैं तिनके नामादिक तिनते उनके नामादिक व्यंजित होइहैं सोपीछे लिखि आयेहैं जब उद्धारकर्ता साहब प्रकट होइहैं तबजे देखनवारे सुननवारे हंस रूपमें स्थितहैं तेई वही रूपते देखैहैं सुनैहैं सच्चिदानंदात्मको भगवान् सच्चिदानंदात्मिका अस्पष्टव्यक्तिः यह श्रुतिकरिकै एकरूपता कहिआयेहैं याहीते लोकहूको व्यापक कह्यो औ नारायणजो रामावतारलै अशोक बाटिकामें लीलाकियो सो वर्णनकरि मन बचनके परेजे साहबहैं तिनके लीलाको व्यंजित करैहैं सो व्यंजित तो करैहैं परंतु मनबचनके परेजे साहबहैं तिनके नाम रूप लीला धाम मन बचनके परे साकल्प करिकै व्यंजितऊ नहीं करिसकैहै सो यहबात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोकोई साहब करिकै हंसरूप पायेहैं सो साहबके मनकरिकै साहबको नामादिक जानैहै औ जपैहै औ साहबके दियेरूपकी आंखीते साहबको देखिहै तामें बेदसारोप निषदकोप्रमाण ३७ जनकोहवैदेहो याज्ञबल्क्यमुपस्थपप्रच्छकोहवैमहान्पुरुषोयज्ञात्त्वेहविमुक्तोभवतीति१ सहोबाचकौशल्यो रघुनाथएवमहापुरुषः तस्यनामरूपधामलीला मनोबचनाद्यबिषयाः स पुनरुवाचेदशंकथमहं शक्नुयाम्विज्ञातुंज्ञापकाज्ञानादितिसपुनःप्रतिवक्तिअ थैतेश्लोकाभवंति॥ विरजायाःपरेपारेलोकोबैकुण्ठसंज्ञितः॥ तन्मध्येराजते योध्या सच्चिदानन्दरूपिणी २ तत्रलोकेचतुर्बाहू रामनारायणःप्रभुः अ योध्यायांयदाचास्य अवतारोभवेदिह ४ तदास्तिरामनामेद मवतारबिधौ बिभोः तन्नाम्नोनामरहितस्यामुनातंनामतस्यहि ५ दशकंठबधाद्यादि लीलाबिष्णोःप्रकीर्तितः सकदाचित्कल्पेस्मिन्लोकेसाकेतसंज्ञिते पुष्पय द्वंरघूत्तंसःकरोतिसखिभिःसह ७ कस्मिन्कल्पेतुरामोसौ बाणजन्येच्छया बिभुः तैरेवसखिभिःसार्द्धं माविर्भूयरघूद्वहः ८ रावणादिबधेलीला यथा बिष्णुःकरोतिसः तथायमपितत्रैव करोतिबिविधाःक्रियाः९ क्रियाश्चबर्णयि त्वाथ बिष्णुलीलाबिधानतः लीलानिर्बचनीयत्वंततोभवतिसूचितं १० किं सायोध्या योध्यापुरीनाम साकेतइतिसोच्यते इमामयोध्यामाख्याय सायोध्या बर्ण्यतेपुनः ११ अनिर्बाच्यत्वमेतस्या व्यक्तमेवानुभूयते रामावतारमाश्रत्य बिष्णुःसाकेतसंज्ञिते १२ तद्रूपंवर्णयित्वानिर्वचनीयप्रभोःपुनः रूपमाख्या यतेबिद्भिर्महतःपुरुषस्यहि १३ इत्यथर्वणवेदेवेदसारोपनिषदिप्रथमखंडे श्रीकबीरजी का यही मत है कि साकेत छोड़ि कहूं नहीं जाय है नित्य बिहारी है ११ इतिआठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथनवांशब्द ॥

संतौ बोले ते जगमारै । अनबोलेते कैसेबनिहै शब्दैकोइ न बिचारै १ पहिले जन्म पूतको भयऊ बाप जनमिया पाछे । बाप पूतकी एकै मायाई अचरजको काहे २ दुइ दुर राजा टीका बैठे बिषहर करै खवासी । श्वानबापुरा धनिठाकुनो बिल्लीघरमें दासी ३ कागज कारकारकुड़ आगे बैलकरै पटवारी । कहहि कबीरसुनोहो संतौ भैसैन्याउ निवारी ४ ॥

संतौ बोले ते जगमारै ॥
अन बोलेते कैसे बनिहै शब्दै कोइन बिचारै १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहिले जन्म पूतको भयऊ बाप जनमिया पाछे।
बापपूतकी एकै माया ई अचरज को काछे २

हेसंतौ जोबोलौहौ कहे जोमैं बताऊंहौं सोतो मानैनहीं है बोलेते जग मारैहै कहे शास्त्रार्थकरैहै औ जो न बोलौ तो बनैकैसे शब्दको कोईनहीं बिचारै १ अरुपहिले पूत जो जीवहै ताको जन्म ह्वै लेइहै तबपिताजोहै जीवको अनुमान ब्रह्म ताको जन्म होइहै पिताजीवको काहेते कह्यो कि जब शुद्धजीव एकते अनेक ब्रह्महो द्वारभयोहै वहमाया सबलित ब्रह्मपूत है औ जीव मायाहीमें परयोहै दोनो माया सबलितहैं सोबापजो है जीव औ पूतजोहै ब्रह्म तिनकी महतारी एकमायहीहै अर्थात् यहीते अनादिकालते दोनो प्रकटहैं यहीमें परेहैं सोतैं बिचारु तौ यह अचरजको काछेहै अर्थात्तैंही अपने अज्ञानते यह अचरजकाछेहै औ नानारूपधरैहै २ ॥

उंदुर राजा टीकाबैठे बिषहर करै खवासी।
श्वानबापुरा धरनि ठाकुरा बिल्ली घरमेंदासी ३

उंदुर जोहै मूस सोतौ राजाभयो टीकामें बैठ्यो औ बिषहर जोहै सर्प सोखवासीकरैहै औ श्वान बापुराजोहै सो धरनिठाकुराकहेबस्तुलैकै ढांकि कै धरैहै कहे भंडारीहै औ बिल्ली घरमेंदासीहै सो खान वालिनिहै अर्थात् उंदुरकहे वह साहबको ज्ञान जाको दूर कैदियोहै उंदुरमूसको संस्कृतमें कहैहैं सो उंदुरकहे मूसतो जीवहै सोशरीरको आपनोमानिलियोहै सोई राजाभयो अरु वाको खानवालो जोहै सर्पसोकालहै सोखवास भयोकहे क्षण पल घरी पहर वाको खातबीती तोहोत जायहै सो खवास ह्वैकै यह काल वाकीआयुर्दायको खातईजायहै औ नानापूकारकी जो बिषयहैं तेई बीराहैं ताको खवावतजायहैअरुश्वानकहे वह श्वानभवाननंद जोहैसोबापु राजो जीव ताको धरिकै ढाकि लियोहै कहे साहबको ज्ञाननहीं होन देइ है औ बिल्लीजोहै षट दर्शननको बाणी सोघरमें दासी ह्वैरहीहै कहेनाना मतनमें लगावैहै साहबकीभक्तिरसजोहै सोईहै गोरसताकोखाइ लेइहै३॥

कागज कार कारकुड आगे बैल करै पटवारी।
कहहिकबीरसुनो हो सन्तौ भैंसैन्याउनिवारी ४

कागज कार कहे लिखोकागज कारकुड जो बैलहै ताको आगे धरो है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोई बैल पटवारी करैहै सो कारो कागजकहे लिखो कागज जो गुरुवा लोगनकी बनाई पोथी तिनको आगेधरिकै बैलजे गुरुवा लोगनके चेलाहैं ते पटवारी करैहैं अर्थात् कायानगरीके बसैयाजे मन बुद्धि चित्त अहंकार पृथ्वी अप तेज बायु आकाश दशौ इन्द्री तिनको बिचारिकै कि कौन का के आधीनहै ज्ञानरूपी द्रव्य तहसील करैहै वा पटवारीकैकै द्रव्यराजा के इहां लैजाइहै या ज्ञानरूपी द्रव्य आत्मामें राख्योआइ अर्थात् काया नगरीके बसैया सब जीवात्मै ते चैतन्यहैं याते आत्मै मालिकहै यह निश्चयकियो सो कबीरजी कहैहैं हेसन्तौ तुमसुनौ वहां भैंसाजो है सोई न्याउनिवारैहै इहांभैंसाकहे गुरुवालोग जेहैं सो आप चहलामें परेहैं औ चहलामें परो जो जीव ताहीको मालिक बतावैहैं और चेलाजेहैं तिनहूं को मायाके चहलामें डारैहैं ऐसो न्याउ निवारैहैं भाउ यहहै कि भैंसा यम की असवारीहै सो यमहीपुरको लैजाइगो तहां जब यमके लट्ठा लगैंगे तब गुरुवाई निकसि आवैगी ४ ॥ इतिनवमशब्दसमातम् ॥

अथदशवांशब्द ॥

सन्तौ रामदुनौं हम डीठा। हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानै स्वाद सबनको मीठा १ हिन्दू ब्रत एकादशि साधै दूध सिंघाड़ा सेती। अनको त्यागै मन नहिं हटकै पार न करै सगेती २ तुरुक रोजा नमाज गुजारै बिसमिल बांग पुकारै। उनकी भिश्त कहां ते होइहै सांझै मुर्गी मारै ३ हिन्दू की दया मेहर तुरुकनकी दूनौं घटसों त्यागी। वै हलाल वै झटका मारैं आगि दुनौ घर लागी ४ हिन्दू तुरुककी एकराहहै सद्गुरु इहै बताई। कहहि कबीर सुनौहो सन्तो राम न कहेउ खोदाई ५ ॥

संतौ राह दुनौं हम डीठा।
हिन्दू तुरुक हटानहिं मानै स्वाद सबनको मीठा।

हेसन्तौ हम दूनोंकी राह डीठा कहे देखी दूनोंकी एकई राहहै सो हमारो हटको कोई नहीं मानैहै हम सबको समुझावतेहैं कि बिषयन को छोंड़िकै देखो तो दूनोंकी राह एकईहै सो दूनों दीनको बिषयन को स्वाद मीठोलग्योहै यहीकेमिलनकी उपायकरैहैंसाहबको नहीं खोजैहैं१॥

हिन्दूब्रत एकादशि साधै दूध सिंघाड़ो सेती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनको त्यागैमननहिं हटकै पार न करैसगेती २
तुरुक रोज़ानमाज़गुजारैं बिसमिलबांग पुकारैं।
उनकी भिश्तकहां सो होइहै सांझै मुर्गीमारै ३

हिन्दू जेहैं ते अन्नको त्यागिकै एकादशी ब्रत साधैहैं कहे उपासे रहैहैं औ फरहार करैहैं औ बिहानभये नानाप्रकारके व्यंजन बनाइकै सगे जे हैं गोती भाई तिनको लैकै पारन करैहैं औ मनको नहीं हटकै हैं कहे दशौ इन्द्री ग्यारहों मनको नहीं हटकैहैं अर्थात् यह एकादशी नहीं करैहैं अथवा जैसे सगौती में कहे सगाईमें अर्थात् जैसे बिवाहमें जाफत में खायहैं तैसे पारन करैहैं २ औ मुसल्मान रोज़ा रहैहैं औ नमाज़ गुजारैहैं औ बिसमिल्ला को बांगदैकै पुकारैहैं औ सांझकैमुर्गी मारिकै पोलाव बनाइ बनाइ खायहैं सो कहोतो उनकी भिश्त कैसे होइगी २॥

हिन्दूकीदयामेहरतुरुकनकी दूनोंघटसोंत्यागी।
वै हलाल वै झटका मारैं आगिदुनौघर लागी४

हिन्दू को दया तुरुककी मेहरहै जो हिन्दू दया करता तौ यमतेछूटत अरु जो मुसल्मान मेहर करता तौ यमते छूटत सो ये दोऊ दया औ मेहरको आपने घटते त्यागि दियोहै मुसलमान कहैहैं कि गलेकी रगसेभी अल्लाह नगीचहै औघट घटमें मौजूदहै औगला काटतईहै सोगौसै ऐकी गला काटतेहैं औहिंदू कहैहैं कि ब्रह्मसर्बत्र पूर्णहै औझटका मारैं हैं कह मूड़ काटिडारैहैं सोदूनौ घरमें आगिलगीहै यह अज्ञानरूपी आगि दूनोंकी बुद्धिको दाहेडारैहै ४॥

हिंदू तुरुक की ए कराहहै सतगुरु इहै बताई।
कहहि कबीर सुनोहो संतो रामन कहौ खोदाई ५

हिंदू मुसल्मान कीएकै राहहै राम न कह्यो खोदाइ कह्यो, रामकह्यो नामसब वही बादशाहकेहैं सोवह बादशाहको हिंदू तुरुककी, येतीबड़ी साखी कबनीक लगैगी अथवा हिंदू तुरुककी एकराहहै कहे एकरामनाम लियेते उद्धार होइहै सोकर्मते निवृत हवैकै न हिंदू रामकहै न मुसलमान खोदाकहै आपने आपने कर्ममें सबलगेहैं तेहिते माया कैसेछूटै अथवा न नारायण रामकह्यो कि तुमझटका मारौ न खोदाइ कह्योकि तुमहलाल करौ येदोऊ अपने अज्ञानते बनाइ लियोहै ५॥इतिद्वादशांशब्दसमाप्तम्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथअग्यारहवांशब्द ॥

संतौ पांड़े निपुण कसाई। बकरी मारि भैंसाको धावैदिलमेंदर्दन आई१ करि असनान तिलकके बैठै बिधिसों देवि पुजाई । आतम राम पलकमो बिनसे रुधिर कि नदी बहाई २ अति पुनीत उंचेकुल कहिये सभामाहँ अधिकाई । इनते दिक्षा सबकोइ मांगै हँसिआवै मोहिंभाई३ पाप कटनको कथा सुनावै कर्म करावै नीचा । बूड़त दोऊ परसपर देखा गहेहाथ यमघी चा ४ गाइ बधैतेहि तुरुका कहिये उनते वैकाछोटा। कहहि कबीर सुनौहो संतौ कलिके ब्राह्मण खोटा ५ ॥

संतौ पाड़े निपुण कसाई ।
बकरी मारि भैंसाको धावै दिलमें दर्द न आई १
करि असनान तिलक करिबैठे बिधिसों देवि पुजाई ।
आतमराम पलकमो बिनसे रुधिरकि नदी बहाई २

हेसंतौ पांड़े निपुणकसाईहै काहेतेकी कसाई अबिधितेमारैहैबह बिधिते मारैहै याते निपुणहै बोकराको मारिकै भैंसाके बलदान दीबेको धावैहै १ स्नान करिकै रक्त चंदनके बड़ेबड़े तिलक दैकै बैठैहै औबिधि सों देवीको पुजावैहै अरुयह कहैहै अंतर्यामी सर्बत्रहै औबोकरा भैंसाको मूड़काटि डारैहै रुधिरकी नदी बहन लगैहै तबवह आतम रामजोहै जीव कहे आत्माजोहै शरीर तेहिबिषेहै आरामजाको सोबिनसि जाय है कहे शरीरते जुदा ह्वैजायहै जैसे दूधपानी बिनसि जायहै मुरदाहवै जायहै २॥

अति पुनीत ऊंचेकुल कहिये सभामाहँ अधिकाई ।
इनते दिक्षा सबकोउ मांगै हँसि आवै मोहिंभाई ३

सोऐसे ऐसे दुष्ट कसाइनको अति पुनीत ऊंचे कुलके कहैहैं अरुसभा में उनहीकी अधिकाईहै कहे शास्त्रार्थ करिकै सभामें आपनिन अधिकाई राखैहै तेहिते सबकोई दिक्षा मांगैहैं कि हमको दिक्षादै संसारते उबारि लेउ सोयह देखिकै मोको हँसिहँसि आवैहै कि आपई नरकमें जाइहै तौ नरकते कैसे उबारिहै अर्थात् तोहूंको वहीनरकमे डारिदेइहै ३॥

पाप कटनको कथा सुनावै कर्म करावै नीचा ।
बूड़त दोऊ परसपर देखा गहेहाथ यमघांचा ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वोई गुरुवालोग पापकाटनको तो कथा सुनावैहैं रामायणादिक औवही कथामें वर्णनहै कि रघुनाथजी शिकार खेलैहैं सोगुरुवालोग कहैहैं कि तुम हूं शिकारखेलो यहनहीं जानैहैं कि रघुनाथजी तिरिजग् योनि वालेन परदया करीकिई ज्ञानभक्ति वैराग्य कैसेकरैंगे याते मारिकै मुक्ति करिदेइ हैं इनको मारैंगे तौपापते हम ई दोऊ नरकैजांयगे याहीते दोऊगुरू चेला को परस्पर नरकमें बूड़त देख्यो है तिनको नरकमें डारिबे को यम घींचही धरे हैं नरकमें डारि देहिंगे तब नरक में गुह मूत्र खाइगो औ मारो जाइगो औ जो जीवन को मारिकै मास खायोहै तेईवाक मास को खांइगे औ अपने अपने सींगन ते खुरन ते मारैंगे याते मास खायो है वै जीवतही मास खांयगे इहांते जोजीवनको वहमार्‌यो तिनको क्षणइ मात्रको कलेशहै औ उहां वैजीव वाको बारबार मारैंगे मरण को क्लेश क्षणमें होइगो औ यातना शरीर लाखनबर्ष न छूटैगो या कथा गरुड़पु राणादिकमें प्रसिद्धहै ४ ॥

गाइबधै तेहि तुरुकाकहिये उनतेवैकाछोटा ।
कहहिकबीरसुनोहोसंतोकलिकेब्राह्मणखोटा ५

जेगाइको मारैहैं ते मुसलमान कहावैहैं सो इनते वैका छोटेहैं तुरुक गाइमारैहैं अरु वै भेड़ा भैंसामारैहैं आत्मातो सब एकहीहै सो कबीरजी कहैहैं कि हेसंतो कलिके ब्राह्मण बहुतखोटहैं काहेतेकि जे शास्त्रको नहीं समुझैं तेतो मूढ़हीहैं वै खोटकर्म करोई चाहैं परंतु जे शास्त्रको समुझैहैं तिनहूं को समुझाइकै खोट कर्ममें लगाइ देइहैं अपनी पांडित्यकेबलते ब्राह्मण जोकह्यो ताको याअर्थहै सबको यही समुझावैहैं कोकाको मारैहै सर्वत्रतो एकई ब्रह्महै औ कोईया समुझावैहैं किबलदानदैदेवी को प्रसन्न करो तुमको ब्रह्मज्ञानदै ब्रह्मबनाइ देइगे ५॥इतिग्यारहवांशब्दसमाप्तम्॥

अथ बारहवांशब्द ॥

संतौमातेमात जनरंगी। पीवतप्यालाप्रेम सुधारस मतवालेसतसंगी१ अर्धउर्धलैभाठीरोपी ब्रह्मअगिनिउदगारी। मूंदेमदनकर्मकटकसमल संतत चुवैअगारी २ गोरखदत्तबसिष्ट व्यासकबि नारदशुकमुनिजोरी। सभाबैठि शंभसनकादिक तहँफिरिअधरकटोरी ३ अंबरीष औ जाग जनकजड़ शेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहससुखपाना । कहँलो गनों अनंतकोटिलै अमहल महलदेवाना ४ ध्रु व पृह्लाद बिभीषणमाते मातीशिवकीनारी । सगुणब्रह्ममातेवृन्दावन अजहुनछूटि खुमारी ५ सुरनरमुनिजेते पीरऔलिया जिनरेपियातिनजाम कहैकबीर गूंगेकोशक्कर क्योंकरकरैबखाना ६ ॥

संतौमतेमातजनरंगी ।
पीवतप्यालाप्रेमसुधारसमतवालेसतसंगी १

संतौ मतेकहे संतनके जेमतहैं तिनमें रंगीजेजनहैं तेईमातकहे मति रहेहैं रंगच्छतीतिरंगः रंगोस्यास्ति गुरुत्वेनेतिरंगी रकार बीजको जोकोई प्राप्त होइहै सो रंगकहावै सो रकार बीज रामोपासकन के होइहै ते रामोपासक जाके गुरुहोइ सो कहावै रंगी अथवा सुरति कमल बैठे जे परमगुरुहैं तेरकार बीजको उच्चार करैहैं सो रकार बीजको जो कोई वहां जाइकै सुने सो रंगी है सोई रंगी संतनके मतमें मातेहै औ कबीरऊ रकारई बीजको जपतरहैहैं सो बंशावली में लिख्योहै श्रीराजाराम सिंह बाबा कबीरजीते पूछ्यो कि आपका कौन सिद्धांत है तब कबीरजी कह्यो ॥ राअक्षरघटरम्योकबीरा । निजघरमेरोसाधुशरीरा ॥ सो पीछे लिखि आयेहैं अरु सुधाको मादकधर्महै सो श्री रामचन्द्रके प्रेमरूपी प्यालामें भर्यो जो है सुधारसरूपा भक्ति ताको जेपान करैहैं तिनके सत्संगीजेहैं तेऊ मतवाले ह्वैजायहैं कहे परमसिद्धांतवालो जो मतहै तेहिते युक्त ह्वै जाइहैं अथवा रसरूपाभक्तिको नशा चढ़ोरहै दिनराति अर्थात् रस आनंद को कहैहैं सो आनंदमें निमग्न रहैहैं तामेंप्रमाण ॥ रसोवैसःरसंह्येवाय लब्ध्वानंदीभवति इतिश्रुतेः ॥ उनकी कहाचली है इहां सुधारसको कह्यो ताको हेतुयहहै कि जे सुधारसको पीतेहैं तेई जननमरण छोड़िकै अमर होयहैं औरनको जननमरण नहीं छूटेहै अरु वहरसरूपाभक्ति मधि उत्पति भयोहै ताको रूपक करिकै समुझावैहैं १ ॥

अद्धऊर्ध्व लैभाठीरोपी ब्रह्मअगिनि उदगारी ।
मूंदेमदनकर्मकटिकसमल संततचुवैअगारी २

उहां समेटिकै कहिआये अबइहां रसरूपा भक्तिको मदको रूपकव रिकै कहैहैं अद्ध कहे नीचेके लोकऊर्ध्वकहे ऊंचेके लोक पर्य्यंत जो सारासारको विचार सारकहे चित अचितरूप साहबको या जगत मानिबो औ असार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहे नानात्व जगत मानिबो या जो बिचार सोई भाठी रोपतभये औ तेहितेभयो जो यथार्थ ज्ञान कि सबसच्चिदानंद स्वरूपहै काहेते चितौ अचित साहबको रूपहै यहहेतुते सोईब्रह्म अगिनि उदगारी कहे बारतभये महुवा नरमें धरैहै इहां मदन जो मनोज तौनिजोहै शरीरनर अर्थात् वीर्य्य ते शरीरहोइहै सो अंतःकर्णमें मूंदे जे साहब की जो अनेक प्रकारकी जोलीला तिनके जे ज्ञान ध्यान तेई महुआदिकद्रव्यहैं तिन्हैंजो कर्मनकी बरोबरि मानिबो जोयाभूम सोई जोकर्मरूप कसमल ताको काटिडारयो तब निश्चयात्मक बुद्धि जे पात्र तामें रसरूपाभक्ति रूपजो अगारी सो निरंतर चुवनलागी २॥

गोरखदत्तबसिष्ठव्यासकबि नारदशुकमुनिजोरी ।
सभाबैठिशंभूसनकादिक तहँफिरिअधरकटोरी ३

गोरख दत्तात्रेय बसिष्ठ व्यास कबि कहे शुक्र नारद शुकमनि कहे शुक्राचार्य तेई सब जोरि जोरि इकट्ठा करि धरतभये औ सभाके बैठैवाजे हैं शंभु सनकादिक तहां रसरूपा भक्तिजो सुधारस तेहिकरिकै भरीजोहै प्रेम रूपी कटोरी सो तिनके अधरहैं कहे मनकरिकै न कोई धरिसकै न बचन करिकै कोई धरिसकैहै अर्थात् न मनमें आवै न बचनमें आवै वाके पान करतमें छकि सब जायहैं रसवाच्यमें नहीं आवैहै यह सर्बत्र ग्रंथन में प्रसिद्धहै ३ ॥

अंबरीषऔयाग्यजनकजड़ शेषसहसमुखपाना ।
कहँलोंगनोंअनंतकोटिलै अमहलमहलदेवाना ४

अंबरीष औ याग्यवल्क्य औ जड़भरत औ शेष कहे संकर्षण औ सहस मुख कहे शेषनाग तेपान करतभये सो कहांलों मैंगनों परम परपुरुषश्री रामचंद्रके जे अमहलमहल अनंतकोटिहैं ताहीमें लीनभये औ देवानाहोतभये कहे मत्तहोतभये इहां अमहल महल जोकह्यो सोऊजे अयोध्याजीके महलहैं अमहलहैं कहे महल नहीं हैं अर्थात् प्राकृति पंचभौतिक नहीं हैं अरु महल जोकह्यो ताते आनंदरूप वेमहल वर्त्तमान बनेहैं अमहलकह्यो याते निर्गुणधर्म आयो औ महलकह्यो याते सगुणधर्म आयो सगुणनिर्गुण में नहीं होयहै निर्गुण सगुणमें नहीं होयहै उनमें दूनोंधर्म बनेहैं ताते वे निर्गुण सगुणके परे बिलक्षण महलमें हैं तिनमें जायकै देवाने भये माया ब्रह्ममें जो देवाने रहे सो छोड़िदिये अमहलमें देवाना ह्वैबोई मह-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लनमें साहब की अनेक प्रकारकी लीलनको ध्यानकैकै हंसरूपमें स्थित ह्वैकै रसरूपाभक्ति पानकैकै छकिरहे रसरूपा भक्ति शांत शतकके तीसरे खंडमें औ रामायणादिकमें हम लिखेनहै सो देखिलेहु ४॥

ध्रुवप्रह्लादबिभीषणमाते मातीशिवकीनारी।
सगुणब्रह्ममातेवृन्दाबन अजहुंनछूटिखुभारी ५

औ ध्रुव प्रह्लाद बिभीषण औ पार्वती मतिगई औ सगुण ब्रह्मजे साक्षात् नारायण श्रीकृष्णहैं तेऊ वृन्दाबनमें मतिगये अबहूं भरखुभारी नहीं छूटी की भाव यहहै कि जिनके शरीर छूटे तेतो साकेतही में जाय देवाने भये कहे प्रेममें छके औ जिनके शरीर बनेहैं तिनहूं की खुभारी नहीं छूटि कहे अबहूं भर श्रीरामचंद्रहीकी उपासना करैहैं तामेंप्रमाण॥ पूजितोनंदगोपार्यैः श्रीकृष्णेनापिपूजितः। भद्रयामहिषीभिश्चपूजितोरघुपुङ्गवः॥यह वह ब्रह्मवैवर्त्त को प्रमाणहैजौनेको प्रमाणसबआचार्यदियोहै५॥

सुरनरमुनिजेतेपीरऔलिया जिनरेंपियातिनजाना।
कहैकबीरगूंगेको शक्कर क्योंकरिकरै बखाना ६

औ सुरनरमुनिजेतेपीरऔलियाहैं तिनमें जेश्रीरामचंद्रकीउपासनाकियो है तेई रसभरी प्रेमकटोरी पियोहै औ तेई मन बचनके परेहैं जे साहबके नामरूप लीलाधाम तिनको जान्योहै सोजिन जान्योहै तिनको वर्णन करि बेको वह गूंगेको शक्करहै काहेते वह मन बचनके परेहै जबवही भांतिउहौं ह्वैजाइ तबवाको स्वाद पावै काहूसों वाको कोईबखान नहीं करि सकैहै सो कबीरजी कहैहैं कि जो कोई कहै यह अर्थ नहीं है वह प्रेमको पियाला कबीरजीव ब्रह्मको कहि आयेहैं वहीको पीपीकै सब मतवारहवैगये हैं सांच पदार्थ नहीं जान्यो तौहम यह कहैहैं जिनको कबीरजी आगे बर्णन करिआयेहैं तेई नहीं जान्यो तौ तुमहीं कैसे जान्यो जो कहो हम अपने गुरुवनके बताये जान्यो तो गुरुवनको कह्यो बाणीकोकह्यो तौ तुमहीं झूठ कहौहौ जोकहो पारिखकरिकै जान्यो तो पारिखकिये तौ मनबचनके परे औ निर्गुणसगुणके परेजे शुद्ध जीवात्मा सदा रघुनाथजीके निकटवर्तीते औ श्रीरामचन्द्र येई आवैहैं वेदशास्त्रमेंप्रमाणमिलैहैंतुमपारिख कहिकैमनबचन के परेकौन पदार्थ राखोहै जोकहो हमजीवात्माको मानैहैं औ कोईब्रह्म कोमानैहैं तौ आत्मा औ ब्रह्मयहू नामहैं बचनमें आइगयो औ तुम जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार करौहो सोमनमें आइगयो जोकहो तुमहीं कैसे श्रीरामचन्द्र को मनबचनके परेकहौहौ वोऊतो मन बचनमें आयजायहैं तौ हमपूर्वलिखि आये हैं कि नारायण राम अवतार लेइहैं तिनके नाम रूप लीलाधाम के वर्णनकरिकै वेजे परमपरपुरुषश्रीरामचन्द्रहैं तिनको सपरिकर लक्षितकरैहैं वे मनबचनकेपरेहैं औयहू आगेलिखिआयेहैं कि॥ऐसी भांतिजोमोकहँध्यावै। छठयेंमास दरशसोपावै ॥सो आपनीइन्द्रीदै आपैदेखेपरेहैं जो कोई उनके प्रसन्नकरिबेकी उपायकरैहै सो साहिबैके जनाये जानैहै तामेंप्रमाण कबीर-जीकी साखीसागरकी चौपाई॥जानैसो जो महीं जनाऊं । बांहपकरि लोकै लैआऊं॥ बीजकोमेंलिखीहैसाखी ॥ बहुबंधनते बांधिया एकबिचाराजीव। कावलछूटै आपनो जोन छुड़ावैपीव ॥ उनको वर्णनकोई जीवनहीं करसकै है तेहिते जोपारिख हमकियो सोईसांचहै जोतुम पारिखकरौहौ सोझुंठहै तुमश्रीकबीरजीकोअर्थजानतेनहीं हो भ्रममेंलगेहो अनामा उनहीं को नाम है अरुवोईहैं तामेंप्रमाण ॥ अनामासोप्र सिद्धत्वाद रूपोभूतवर्जनात् इति वायुपुराणे ६ इतिबारहवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथतेरहवांशब्द ॥

रामतेरी मायादुन्दि मचावे । गतिमति वाकी समुझि परैनहिं सुर नर मुनिहिं नचावै १ का सेमरके भरोसाबढ़ये फूलअनूपम बानी । केतिक चातक लागिरहे हैं चाखतरुवाउड़ानी २ कहा खजूर बड़ाईतेरी फल कोईनहिं पावै । ग्रीषमऋतु जबआयतुलानी छायाकाम न आवै ३ अपना चतुर औरको सिखवै कामिनि कनक सयानी । कहैकबीर सुनोहोसंतौ रामचरण रतिमानी ४ ॥

रामतेरी मायादुंदि मचावै ॥
गतिमति वाकीसमुझि परैनहिं सुरनर मुनिहिं नचावै १

श्री कबीरजी कहैहैं कि हे जीवो राममें जो तिहारी माया जो कपट सों दुन्दिमचावैहै कैसी मायाहै कि जाकी गति मतिनहीं समुझि परै सुर नर मुनिजेहैं तिनहूं को नचावैहै अर्थात् उनहूं को लागिहै सो साहब को न जानिबो रूप कारण जातको आदिमंत्र में कहि आयेहैं १ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कासेमरको साखा बढ़ये फूल अनूपम बानी।
केतिकचातृक लागिरहैहैं चाखतरुवा उड़ानी २

सोहेजीवो तुम द्वन्दमाया को त्यागौ साहबको जानो या संसार रूप सेमरको वृक्ष तामें नाना बासना नानादेवतन की उपासनारूप शाखा बढ़ाये कहाहै जौनेवृक्षमें अनूपम कहेसाहब के जाननवारे बिशेषकज्ञान बारे जो नहीं कह्यो ऐसी गुरुवनकी वाणी सोई फूलहै ताहीते भयो जो धोखा ब्रह्मको ज्ञान सोई फलहै तामेंकेतको चातकरूप जीवलागिरहैहैं इहां चातकै कह्यो और पक्षी न कह्यो सो चातक पियासोरहैहैं और इनहूं के मुक्तिकी चाहरहैहै पक्षी रस नहीं पावैहै इन मुक्ति नहीं पावैहै चाखत में रुवा उड़ैहै पक्षीके जीभमें लपटिजायहै जीभहु को रस सूखिजायहै इहां वाज्ञानको जब अनुभव कियो तब गुरुवालोग बतायो कि तुमहीं ब्रह्महौ तुम्हारई जीवात्मा मालिक है सबको राम सबको खाय लेइहै रामको भजो रामतौ मायिकहै सो जो कुछ उनकी श्रीरामचन्द्रमें बासनारही सोऊ छूटिगई यही गुरुवाहै पक्षी वारस नहीं पावैहै तबखेद होइहै औ या वही ज्ञानमें दृढ़ता करिकै उड़त उड़त नरकहीमें गिरै है नरकमें दुःख पावैहै २॥

कहाखजूर बडाईतेरी फलकोई नहिंपावै।
ग्रीषमऋतुजबआयतुलानीछायाकामनआवै ३

अब धोखा ज्ञानवालेनको खजूरको दृष्टांत दैकै कहैहैं खजूरकी बड़ाई लै कहां करै फलतो कोई पावतै नहीं है ग्रीष्म ऋतुमें छाया काहूके काम नहीं आवैहै वाके तरेही रहैहै आतप तपतै रहैहै ऐसे हेगुरुवा लोगो तुम्हारी बड़ी बड़ाई कि मैंही ब्रह्महौं मोते बड़ो कोई नहीं है आत्मै मालिकहै सो न कोई ब्रह्मैभयो न आत्मै मालिकभयो या फलो कोई नहीं पायो जो कोई तुम्हरे मतमें आवैहै सो जनन मरणरूप ग्रीष्म तापनहीं छूटैहै या तुम्हारो उपदेश रूप छाया काहूके कामनहीं आवैहै ३॥

अपनाचतुरऔरकोसिखवै कामिनिकनकसयानी।
कहैकबीर सुनोहोसंतौ रामचरण रतिमानी ४

गुरुवालोग कनक कामिनीके मिलिबे को आप चतर ह्वै रहेहैं कनक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुवर्ण कहावैहै सो आत्माको सुवर्ण जोहै स्वस्वरूप सो मायारूपी कामिनीमें लपट्योहै तेहिते शुद्ध नहीं है अथवा कनकजोहै सुवर्ण सो शुद्धहै औ सुवर्णके जेहैं भेद कुण्डलादिक भूषण तिनके भेद मिथ्याहैं ऐसे और सबको मिथ्या मानिकै एक ब्रह्मही को मानिबो औ कामिनीमें सयानी कहे ज्ञानकरिकै बिचारैहै कि कामिनी माया हई नहीं है मिथ्याहै यह सयानीकहे ज्ञान आपऊ सिखैहै औ औरहूको सिखवैहै जननमरण होतई जायहै मायानहीं छूटैहै सो कबीरजी कहैहैं कि हेसंतौ याहीते मैं ये बखेड़नको छोंड़िकै परम परपुरुषजे श्रीरामचंद्रहैं तिनके चरणनमें रति मान्यो है इहां संतन को सार्खीदैकै जो कह्यो ताको हेतु यहहै कि संत समुझैंगे कि सांच कहैंहैं कि झूठ कहैंहैं अथवा हेजीवो मेरो सिखापन सुनो श्रीरामचंद्रके चरणमें रतिमानिकै जैसे सब भयोहौ नानामत कियोहै तैसे एकबार मेरोबचन सुनि रामचरणमें रतिमानिकै सतहोउ व्यंग्य यहहै कि जो संत होउगे तौ जननमरणते रहित ह्वैजाउगे औरी भांति न छूटौगे अथवा अपना चतुर और को सिखवै कहे अपनो चतुर नहीं है मायाहीमें परेहैं और और को कनककामिनीमें सयानीकहे बिचारकरावैहै किकनक कामिनीरूप मायाको बिचारकै देख्यो या मिथ्याहै सो जो आप चतुरनहीं भये कनककामिनी नहीं त्यागे तौ उनके उपदेशमें कनककामिनी माया कब त्यागैंगे ४ ॥इतितेरहवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथचौदहवांशब्द ॥

रामरासंशय गांठि न छूटै । ताते पकरि पकरि यमलूटै १ ह्वैमसकीनकुलीन कहावै तुमयोगी संन्यासी । ज्ञानी गुणी शूर कविदाता ईमति काहुननासी २ स्मृति वेदपुराण पढ़ैसब अनुभवभाव न दरशै । लोह हिरण्य होयथौं कैसे जोनहिं पारस परशै ३ जियत न तरे मुयेकातरिहौ जियतैजोन तरै । गहि परतीति कीन जिन जासों सोईतहैंमरै ४ जो कछु कियो ज्ञानअज्ञाना सोई समुझु सयाना । कहै कबीर तासों का कहिये देखत दृष्टि भुलाना ५ ॥

रामरासंशयगांठिनछूटै ।
ताते पकरिपकरि यमलूटै १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह्वैमसकीनकुलीनकहावै तुमयोगीसंन्यासी ।
ज्ञानीगुणीशूरकबिदाता ईमतिकाहुननासी २

रामराकहे रकार जिनको मराहै अर्थात् रकार बीजको जिनको अभावहै रामोपासक नहीं हैं तिनकी संशयकी गांठि नहीं छूटैहै तेहिते पकरिपकरि कै यम लूटिलेइंहैं अर्थात् याकोमारिकै नरकमें डारिदेइहैं फिरिफिरि शरीर पावैहै फिरिलूटि जायहै मारो जायहै १ मसकीन कहे गरीब फकीर ह्वैकै कुलीन कहावैहै कहे भयेतौ फकीर परतु कुलाभिमान नहीं छूटैहै कहैहैं किहमफलाने गद्दीके मुरीदहैं सोतुम योगीहौ सन्यासीहौ ज्ञानीहौगुणीहौ शूरहौ कबिहौ दाताहौ इत्यादिक जो भेदकी मतिहैं सो कोई न नाश कियोकाहेते कि हेसंतौ येपरम परपुरुष श्रीरामचद्रके अंशहैं सो यह कोई नहीं जानैहै औ यह जगत् चित अचित बिग्रह करिकै साहबको रूपहै भेदकीबुद्धि लगाइ राख्योहै २ ॥

स्मृति पुराण पढ़ै सब अनुभव भाव न दरशै ।
लोह हिरण्य होयधौंकैसे जो नहिंपारस परशै ३

स्मृति वेद पुराण सबै पढ़ैहैं परंतु परम परपुरुष जे श्रीरामचन्द्रहैं सबके तात्पर्य तिनको अनुभव काहूको नहीं दरशैहै जो पारसको स्पर्श न होय तौ लोह हिरण्य कहे सोनकैसे होय न होइ तैसे स्मृति वेदपुराणनको तात्पर्य श्रीरामचन्द्रहैं तिनकेचरणको जौलौंन परशै तौलौं मुक्तिनहीं होइहै पार्षद रूपता वाको प्राप्ति नहीं होइहै ३ ॥

जियत न तरै मुये का तरिहौ जियतै जो न तरे ।
गहि परतीति कीन जिनजासों सोई तहैं मरै ४
जो कछुकियो ज्ञान अज्ञाना सोईसमुझ सयाना ।
कहै कबीरतासों काकहिये देखतदृष्टि भुलाना ५

सो जियतमें जो न तुमतरौगे तौमुयेकैसे तरौगे सो हे जीवो जियतैकाहे नहीं तरिजाउहौ जासोंकहे जौने साहबसों जाके स्पर्श किये जीव शुद्धह्वै जाइहै तौनेसाहबसों जोकोई जहैं साहबको मतगहिकै परतीति कहेबि-श्वासकीनहै सोजानतहै कहे संसारही में अमरह्वै गयोहै ४ सो कबीरजी कहैंहैं कि येजीवज्ञान करैं हैं कि अज्ञान करैं हैं ताहीको सब कुछ मानिकै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपनेकोसयानमानैहैं तिनसों कहाकहिये जोआपनी दृष्टिते देखत देखत भुलायदियो स्मृतिवेद पुराण चक्रवर्ती परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहीको कहैंहैं उनहीं के भक्त हनुमान् बिभीषणादिक अमर भयेहैं सो देखतैहौ औ यह नहीं समुझैहैं कि सबकेमालिक बादशाह श्रीरामचन्द्रहैं इनहीके छोड़ाये छूटैंगे औरके छोड़ाये न छूटैंगे ५ इतिचौदवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथपन्द्रहवांशब्द ॥

रामराचली बिनावनमाहो। घरछोड़ेजातजोलाहो १

गजनौगज दशगज उनइसकी पुरियाएक तनाई। सातसूत नौगाडबहतरिपाटलागु अधिकाई। तापट तूलन गजन अमाई पैसन सेरअढ़ाई। तामेंघटैबढ़ै रतिबोनहिं करकच करघरहाई ३ नितउठि बैठखसम सोंबर बग तापर लागतिहाई। भीनीपुरियाकाम न आवे जोलहा चलारिसाई ४ कहैं कबीर सुनोहोसंतौजिन्हयहसृष्टि उपाई। छाड़िपसार रामभजुबौरे भवसागर कठिनाई ५ ॥

रामराचली बिनावन माहो। घरछोड़े जात जोलाहो १

रामराकहेरा जिनको मराहै अर्थात् रकार बीजको जिनके अभावहै साहबको नहीं जानैं ऐसेजेसमष्टिजीव तिनकेइहांमाजोहैकारणरूपामायासो बिनावनको कहेबिनवावनकोचलीअर्थात्जगत्बनवाइबेकोचलीइहांबिनबो न कह्यो बिनवाइबोकह्यो सोबिना चैतन्यब्रह्म औ जीवकेलपेटे याको बनायो नहीं बनैहै काहेते कियह जड़है अर्थात् ब्रह्मजीवको संयोग करिकै बनवावनको चली ब्रह्मजीवके पाससों जो लाहजो यह जीवहै सोघरको छोड़ेजेयहै अर्थात् यहशुद्ध जीवात्मा आपनो जोघरहै साहब के लोकको पूकाएजहांशुद्ध रहैहैतौनेघरको छाड़िकै मायाकेलपेटमेंपरिक आपनेबंधन को आपनेमनकरिकै संसाररूपीपटको बनावैहै १ ॥

गज नौ गज दश गजउनइसकी पुरिया एक तनाई।
सात सूत नौ गाड बहत्तर पाटलागु अधिकाई २

प्रथम एक गजकी कल्पनारूप पुरिया तनावत भई प्रथमजीव बाणी पूर्णरूप एक गजकी पुरिया अनुमान ब्रह्मबनायो अर्थात् मनभयो पुनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तौ गजकी पुरिया तनावतभई सोनवो व्याकरण बनावत भई अर्थात् नवौ व्याकरणमें शब्द ब्रह्मको वर्णनहै सो शब्द बनावत भई पुनि दश गज की पुरिया तनावत भई सोचारवेद औ छः शास्त्र ई दश गजकी पुरिया तन भयो पुनि उनइस गजकी पुरियातनावतभयो सो अठारहौपुराण उनीसौं महाभारत ये उनइस गजको पुरिया बनावत भयो २ पुनि सातसत कहेसप्तावर्ण पृथ्वी अपतेजबायु आकाश अहंकार महतत्त्व अथवासातसौ सूतजाग्रत महाजाग्रत बीजजाग्रत स्वप्न जाग्रत स्वप्न औ सुषुप्ति ये सात अज्ञान भूमिका बनावत भयो पुनि नवगाड़ कहे नवद्वार बनावत भयो बहत्तर पाट कहे बहत्तर कोठा अथवा बहत्तर हजार नस बनावत भयो २॥

तापटतूल न गजनअमाई पैसनशेरअढ़ाई ।
तामेंघटैबढ़ै रतिवोनहिं करकचकरघरहाई ३

तापट कहे तौन जो है शरीर संसाररूपी पट तामें जब अहंब्रह्म भ्रम रूप तूलरह्यो तबतो गजमें नहीं अमातरह्यो कहे अप्रमेय रह्योहै औशेर कहे सिंहरूप रह्योहै संसारको नाशकै देनवारो रह्योहै सो संसारी ह्वैकै जैसे सूत पैसाको अढ़ाईसेर बिकाइहै तैसे यह जीवात्मा बिषयरूपपैसा को चाहिकै अढ़ाईसेर ह्वै गयो एकै पृथ्वीको बिषय सुख चाहैहैं एकै यज्ञादिक करिकै स्वर्गको बिषय सुख चाहैहैं आधे मुमुक्षू ह्वैकै ईश्वरन के लोकको सुख चाहैहैं औ ब्रह्ममें लीनह्वैबो चाहैहैं इनमें पूरी बिषय भोग नहीं है याते आधा कह्यो अहंब्रह्म तूलते नानाशरीर भ्रमरूप सत निकस्यो एकते बहुत ह्वैगयो जोपट संसारमें बिनिगयो सो पट जोहै संसार सो रत्तीभर न घटैहै न बढ़ैहै घरहाई जोहै जीवैकी नारी माया सो यही जीवको कच आपने करमें करिलियोहै अर्थात् यह जीवकी चुंदीगहि लियोहै मायाको भोक्ता जीवहै याते जीवहीकी स्त्री मायाहै ३॥

नितउठिबेठखसमसोंबरबश तापरलागुतिहाई।
भीनीपुरियाकामनआवै जोलहाचलारिसाई ४

खसम जो जीवहै तासों नित उठि उठिकै बरबश कहे जबरदस्ती बेठ कहे बेगारि लेइहै सो एकतो संसारमें माया सो बेगारि लेइहै दूसरोजो भागनते यह संसार उठो तौ आत्माको तिहाई लगी कहे त्रिकुटीमें धोखा ब्रह्मको ध्यान लगायो जौनैनें बिनिजाइहै तौन पुरिया कहावैहै सो जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीजि जायहै तब नहीं काम आवैहै ऐसे यहसंसार पुरियाहै नानापदार्थ तेजोहै राग तेहि करिकै जबशरीर भीज्यो तब यह संसार को आसार जानिकै कहे संसार कुछुकामको न जानिकै जोलाहा जोहै जीव सोरिसाइ-चल्यो धोखा ब्रह्ममें लगतभयो सोऊ ब्रह्मतो ताहीको अनुभवहै वह अनुभव ब्रह्ममें कछु न पावत भयो ४ ॥

कहै कबीरसुनोहोसंतो जिन्हयहसृष्टिउपाई ।
छाड़िपसाररामभजुबौरे भवसागरकठिनाई ५

सो कबीरजी कहैहैं कि जामेंतुम लग्योहै सोतौ तिहारोई मनको अनुभवहै अरु यह संसारऊको तुम्हारो मनही रच्योहै सो जिन ईष्टिवाली उपाय कियोहै तेहि माया ब्रह्मते छाड़ि पसार परम परपुरुष श्रीरामचंद्र को भजनकरु काहेते कि यह भवसागर परम कठिनहै उनहीं के भजनकिये छूटैगो औरी भांति न छूटैगो और तोसब याहीमें परेहैं अथवा यह कठिन भवसागर में आइकै श्रीरामचंद्रही को भजनकरि मनते छूटैगो ५ इति पन्द्रहवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथसोरहवांशब्द ॥

रामराझीझीजंतरबाजै । करचरणबिहूनाराजै १ करबिनबाजै श्रवणसुनै बिनश्रवणैश्रोतासोई । पाटनस्वबशसभाबिनुअवसर बूझौमुनिजनलोई २ इंद्रीबिनुभोग स्वादजिह्वाबिनु अक्षयपिंडबिहूना। जागतचोर मंदिरतहँ मूसै खसम अक्षतघरसूना ३ बिजबिनुअँकुर पेड़बिनुतरुवर बिनुफूलेफल फलिया । बांझकिकोखि पुत्रअवतरिया बिनपगतरुवरचढ़िया ४ मसिबिनु द्वाइत कलम बिनुकागद बिनुअक्षर सुधिहोई । सुधिबिनुसहज ज्ञानबिन ज्ञाता कहैकबीर जनसोई ५ ॥

पूर्वमायाको वर्णन करिआये तौने मायाते छूटिकै जौने उपायते साहब को पावैहै सो उपाय कहैहैं ॥

रामराझीझीजंतरबाजै।
करचरणबिहूनाराजै १

हेजीव रामकहे रकार तोको मराहै अर्थात् रकार बीजको तोको अभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है याहीतेतैं आपनेको ब्रह्ममानिकै संसारी ह्वैगयोहै झींझींकहावैझिंझिया जो कुवार शुक्लचतुर्दशी अनेक छिद्रकै जोमटुकी होइहै ताके मध्यमें दीप बारिकै धरैहै सो झिंझिया नाउढेढियाको कवि संप्रदायहू मेंहै॥ रंध्रजाल मगहै कहै तियतनदीपतिपुंज। झिंझियाके सोघटभयोदिनहूमें घनकुंज॥ सारीमूलामलसी फलकांति झरोखनकी झझरी झिंझियासीसोझिंझियारूप नवदुवारको अथवा रोमरोममें छिद्रहै जामें वोई छिद्रनहै पसीना निकसैहै यहि पूकारको झीं झीं जोहै शरीरतौनैजंतर बाजैहै कहे ताहीको यहसोहं शब्द है काहेते किश्वासा कहैहैं सो वही श्वासके कहेते करचरण बिहून जो निराकार ब्रह्महै सो तेरे आगे राजै कहे शोभित होनलग्यो अथवा आंखिन के आगे नाचनलग्यो सर्वत्र ब्रह्मही देखि परनलग्यो अथवा तैंही करचरण बिहूनकहे निराकार ब्रह्महैकै नाचनलग्यो अथवा राजैकहे शोभित भयो सो तुमतौ शरीरते भिन्नहो जैसे ढेढियाते दीप भिन्नरहैहै वह सोह शब्दतो शरीरकोहै वाकोकहे तुम काहे धोखामेंपरेहो तुमनिर्गुण सगुणकेपरे जोहै साहबताके हो तिनमेंलगौनिर्गुणसगुणकेपरे कैसेसाहबहैंसोकहैहैं १॥

करबिनुबाजैश्रवणसुनैबिन श्रवणौश्रोतासोई।
पाटनस्वबशसभाबिनुअवसरबूझैमुनिजनलोई २

साहबके लोकके जे बाजाहैं तेबिनकर बाजैहैं काहेते कि वहांके जे बाजा हैं ते पंचभौतिक नहीं हैं औ उहांके जे बासीहैं तिनके शरीर पंचभौतिक नहीं हैं अर्थात् मनबचनके परेहो औ प्राकृत जेहैंप्रकृति संबंधी पदार्थ साकार औ अप्राकृत जोहैं निराकार ब्रह्मलोकप्रकाश ताहूते बिलक्षणहै करबिना कह्यो याते साकारो नहीं है औ बाजैहै याते निराकारो नहीं है औ सोई श्रोताजेहैं लोकबासी ते श्रवणते सुनैहैं औ श्रवण नहीं हैं याते साकारो नहीं है औ श्रवणते सुनैहै याते निराकारो नहीं है माया ब्रह्मजीव को जो अरुझा लग्योहै सो जोजीव साहबको स्मरणकरै ताके पाटन कहे पटाइलीबेको साहब स्ववशहैं अथवा नौकर जाको राखैहैं ताको पट्टा लिखिदेइहैं सोपाटकहावैहै सोइहां पाटन बहुबचनहै सो जेजीव उनके शरण जाइहैं तिनको पाटनके लिखिदीबेमें अपनाइलीबेमें स्ववशहैं तामें प्रमाण॥ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते। अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतत् व्रतम्मम॥ औबिना अवसर कहे बिना काल उनकी सभा लागी रहैहै वहां कालकीगति नहीं है औ बाजन सदा बाजैहैं अर्थात् सदा रास उहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होतरहैहै सो हे मननशील मुनिलोगो तुम उनही को समुझौ औ उनही को मननकरो वह धोखाब्रह्मकेमननकीन्हेते तुम्हारो जननमरण न छूटैगो २ ॥

इंद्रिबिनुभोगस्वादजिह्वाबिनुअक्षयपिंडबिहूना ।
जागतचोरमँदिरतहँमूसै खसमअछतघरसूना ३

तुमवह साहबको कैसे समुझौ इंद्रियबिना ह्वैकै साहबकेलोकको जोहै भोग सुखहै ताकोलेउ औ बिना जिह्वाह्वैकै अनिर्बचनीय जो रामनामहै ताको स्वादलेउ औ पिंडबिहूनाकहे पांचौ शरीरते बिहीनह्वैकै कहे पांचौ शरीरनको छोड़िकै हंसस्वरूपमें स्थितह्वैकै अक्षयकहे अक्षयह्वैजाउ तुम्हारे अंतःकर्णरूपी घरको चोरजोहै धोखाब्रह्म सोमसलेइहै अर्थात् साहबको ज्ञानचोराये लेइहै तुमहीं अहंब्रह्म बुद्धिकराये देइहै काहेते कि खसमजे हैं साहब तेअछत बनेहैं औ तुम अपनो हृदय घरसून करि राख्योहै साहब को नहीं राख्यो अर्थात् साहबको नहीं जान्यो ३ ॥

बिजबिनु अँकुरपेड़बिनुतरुवरबिनफूलैफलफलिया ।
बांझकिकोखिपुत्रअवतरिया बिनपगतरुवरचढ़िया ४

इहांकाकुअर्थहै बीजबिना कहूं अंकुर होइहैं औ पेड़बिना कहे बिना जरकहूं तरुवरहोइहैं औबिनाफूल कहूं फलहोइहैं अरुबांझके कोखिमेंकहूं पुत्र होइहै औ बिना पग कोई तरुवरमें चढ़िहै सो बीजतौ वह ब्रह्मको कहौहैं सोतो शून्यहै कोई पदार्थ नहीं है अंकुर कैसे भयो कहे कैसे माया सबलित ब्रह्म भयो औ पेड़जरि मायाको कहौ सोतो मिथ्या है संसार तरुवर कैसेभयो औज्ञानरूप जोफूलहै ताहूको तो मूलाज्ञान कहौहो सोऊ मिथ्याहै कहोतो मुक्तिरूपी फल कैसे फर्‌यो औ मनको तो जड़ कहोहौ ताको अनुभव पूर्बोधरूपी पुत्र कैसे भयो औ आत्माको तौ अकर्त्ता कहौहौ मनबुद्धि चित्तते भिन्नहै सो बिनापांउ संसार वृक्षको चढ़िकै कैसे चैतन्याकाशको पहुंच्यो ४ ॥

मसिबिनुह्वैतकलमबिनुकागदबिनुअक्षरश्रुतिहोई ।
सुधिबिनुसहजज्ञानबिनुज्ञाताकहैकबीरजनसोई ५

बिना हुआइति मसिकैसे रहैगी अर्थात् मनको तौ मिथ्या कहौहौ मनको अनुभव कैसे रहैगो वह मिथ्यई होइगो औ बिनाकागज कलमकहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करैगी अर्थात् देहेंद्रियादि अंतःकर्ण तौमिथ्ये कहौहौं ज्ञानकेहिके आधार होइगो जहां बुद्धिरूपी कलमते लिखौगे निश्चय करौगे औ जो यह पाठ होइ बिनअक्षर सुधि होइ तौ यह अर्थहै कि जो एक आत्माहीको सत्य मानोगे तौ साहबको बिना अक्षर कहेबिना अनादिमाने सुधिकहे सुरति तमको कैसे होइगी औ कौन सुरति देइगो औ सुधिबिन कहेजो सुधि न भई तौ सहजकहे सोहंसो कैसे होइगो तेहिते बिना ज्ञाताको ज्ञानकरु कहे अबैते आपनेको ज्ञाता मानि रहेहैं किमैं आपनो बिचार करत करत औ सबको निषेध करत करत जो पदार्थ रहिजाइ हैं ताहीको मानिलेउ गो कि यही तत्वहै सोयह भ्रम छांडे तेरे जानेते साहब न जानि परैंगे साहब मन बचनके परेहैं सो जौन बिना ज्ञाताको ज्ञान कौनहै जोसाहब देइहैं काहेते कि वह ज्ञान काहूको नहीं जानोहै जब साहब आपनो रूप देइहैं तब वह रूपते जानिपरै साहबहीके रूपको जानोपरैहै वाकोज्ञाता कोई नहीं है सोज्ञान करु अर्थात् रकारधुनि श्रवणरूप साधन करु तब साहबई तोको हंसस्वरूप दैकै आपने नामरूप लीलाधामको स्फुरित कराइ देइगे तौने हंसस्वरूपकीआंखीते श्रवणते साहबको देखु औ साहब के गुणसुनु सो कबीरजी कहैहैं कि यहितरहते जाकेबिना ज्ञाताको ज्ञानहै सोई मेरो जनहै अर्थात् जौने लोकमें हमारी स्थितिहै तौनेही लोकको वह जनहै बिना ज्ञाताको ज्ञान कौन कहावैहै जो साहब देयहैं तामेंप्रमाण॥ तेषांसततयुक्तानांभजतांप्रीतिपूर्वकं । ददामिबुद्धियोगंतंयेनमामुपयांतिते इतिगीतायाम् ५ इतिसोलहवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथसत्रहवांशब्द ॥

रामगाइ औरेनसमुझावै हरिजानेबिनबिकलफिरै १ जामुखवेदगायत्री उचरै तासुबचनसंसारतरै । जाकेपांउजगतउठिलागै सोब्राह्मणजिउवद्ध करै २ अपनाऊंच नीचकरभोजन घृनकर्मकरिउदरभरै । ग्रहणअमावस दुकिदुकिमांगै करदीपकलियै कूपपरै ३ एकादशीव्रतौनहिंजानै भूतप्रेत हठिहृदयधरै । तजिकपूरगांठीबिषबांधे ज्ञानगमायेमुगुधफिरै ४ छीजैग्राहु चोरपूतिपालै संतजननकीकूटकरै । कहैकबीरजिहाकेलंपट यहिबिधि प्राणीनरकपरै ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामगाइऔरनसमुझावैहरिजानेबिनबिकलफिरै १
जामुखवेदगायत्रीउचरैतासुबचनसंसारतरै ।
जाकेपांउजगतउठिलागैसोब्राह्मणजिउबद्धकरै २

श्रीरामचंद्रको गावैहैं औ औरनको समुझावैहैं औ सबके कलेशहरन वारे जेसाहबहैं तिनको नहीं जानैं कियेई क्लेश हरिहैं हरि येईहैं सो या नानादेवता नानाउपासना खोजत बिकल फिरैहैं १ अरु जाके मुखते वेदगायत्री जो बचनहैं सोउचरैहैं वही को तात्पर्यार्थ जे श्रीरामचंद्रहैं तिन्हैं जानि संसार तरैहैं ताको अर्थ न जानिकै कि वेद गायत्री तात्पर्यार्थ ते श्रीरामचन्द्रहिकोकहैहैंतामेंप्रमाण॥सर्ववेदाःसघोषाश्च सर्ववर्णाःस्वराअपि। समात्रास्तुविसर्गाश्चसानुस्वाराःपदानिच। गुणसांद्रेमहाविष्णौमहातात्पर्य्य गौरवात् इतिमहाभारते॥जेब्रह्मादिकमें बिष्णुहैं तेबिष्णुहैं औ महाबिष्णुश्री रामचन्द्रही कहावैहैं तिनकोतो नहीं जानैहैं वेदगायत्रीपढ़ैहैं औवहीमुखते हिंसा शिष्यनते प्रतिपादनकरैहैं समुझावैं हैं औआपही हिंसाकरैहैं तिन-हीं के पाँयसब जगत् उठिलागैहैं अरुवाहीको कहा सबसुनैहैं २ ॥

अपना ऊंचनीचघर भोजन घ्रीन कर्मकरि उदर भरै ।
ग्रहणअमावस ढुकि ढुकि मांगै करदीपक लिये कूपपरै ३

आपतौ जातिमें ऊंचहैं परन्तु नीचकेघर भोजनकरैहैं औजौन कर्मअपने को उचितनहीं है तौन घिनहाकर्म कैकै पेटभरैहैं औ ग्रहणमें अमावसमें ढुकिढुकि मांगैहैं कि यहकुदान आन न लैजाय हमैंलेइं औ रामनाम मुंहते कहैहैं सोनामरूपी दीपक लीन्हे भ्रमकूपमें परैहैं ३ ॥

एकादशी ब्रतौ नहिंजानै भूतप्रेत हठि हृदय धरै ।
तजिकपूर गाठी बिष बांधै ज्ञानगमाये मुगुध फिरै ४

औएकादशी ब्रत उपलक्षणहै अर्थात् साढ़ेअट्ठाइस जेवृत्तहैं चौबीसएका-दशी औ रामनौमी कृष्णाष्टमी बामनद्वादशी नरसिंहचतुर्दशी आधाअनंत येजे बैष्णवीव्रतहैं तिनको नहीं जानैहैं अर्थात् बैष्णवी उपासना नहीं करैं औ मुंहते रामराम कहैहैं औ भूतप्रेत यक्षिणी आदिजे उपासनाहैं तिनको करैहैं तामेंप्रमाण॥अंतःशैवावहिश्शाक्ताः सभामध्येचवैष्णवाः । नानारूप धराकोला विचरन्तिमहीतले ॥ सोरामनाम जोकपूरहै ताकोछोड़िकैनान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाषंडमतजोविषयहैताकोधारणकीन्हेज्ञानगमायके मूर्खचारेंओरफिरैहैं४॥

छीजैशाहु चोर प्रतिपाले संत जननकी कूट करै।
कहैकबीरजिह्वाकेलम्पट यहिबिधिप्राणीनरकपरै ५

तेहिते शाहुजो आत्मा परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रको अंशसदाको दास याजीवकोस्वरूपहैं सोजेहैंते छीजैहैं अर्थात् वहज्ञान वाको भूलि जाइहै गुरु वनके बताये जेनाना पाषंडमत तेई चोरहैं तिनको प्रतिपाल कियो कहे संगकियो तेईजानको चोरायलेइहैं औजे साहबके ज्ञानके बतैया जेसंतहैं तिनहीं की कूट करैहैं कि ये मुड़ियनको मतवेदशास्त्रके बहिरेहैंसोकबीर जीकहैहैं ऐसे जिह्वाके लंपट प्राणीहैं तेनरकही में परैहैं ५ इतिसत्रहवां शब्दसमाप्तम् ॥

अथअठारहवांशब्द ॥

रामगुण न्यारो न्यारो न्यारो। अबुझालोग कहांलौं बूझैं बूझन हार बिचारो १ केतेरामचन्द्र तपसीसों जिनयह जग बिटमाया। केतेकान्ह भये मुरलीधर तिनभी अंतनपाया २ मत्स्य कच्छ बाराह स्वरूपी बामन नाम धराया। केते बौद्ध भये निःकलंकी तिनभी अंतनपाया ३ केतिक सिद्ध साधक संन्यासी जिन बनबास बसाया। केतेमुनिजन गोरख कहिये तिन भी अंतनपाया ४ जाकीगति ब्रह्मै नहिंपाई शिवसनकादिक हारे। ताके गुण नरकैसे पैहौ कहै कबीर पुकारे ५ ॥

रामगुण न्यारो न्यारो न्यारो।
अबुझा लोग कहांलौं बूझैं बूझन हार बिचारो १

परम पुरुषपर जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके गुण न्यारेन्यारेहैं इहां तीन बारज़ोकह्यो ताते या आयो कि साहबके गुण मायाके गुणते जीवात्माके गुणतेब्रह्मके गुणते न्यारेहैं कौनीरीतिते न्यारेहैं किमायाके गुणनाशमानहैं बिचारकिये मिथ्याहैं औ साहबके गुणनित्यहैं सांचहैं औ जीवात्माके गुण अणुहैं औ साहबके गुणविभुहैं औब्रह्मनिर्गुणत्व गुणब्रह्ममेंहै औसाहबनिर्गुण सगुणके परेहे सो यापूमाण पीछे लिखिआयेहैं ॥अपाणिपादोजवनोगृहीता इत्यादि औ ब्रह्मसंबंधी अनुभवानंदजीवकोहोइहै औ साहबअनुभवातीतहैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याते साहबके गुणसबतेन्यारेहैं सोबाबातअबुझालोग कहांलौं बूझैंकोईबूझ नहारतो बिचारतेजाउ १ ॥

केतेरामचंद्रतपसीसोंजिनयहजगबिटमाया।
केतेकान्हभयेमुरलीधरतिनभीअंतनपाया २

केतनो रामचंद्रहैं कौन रामचंद्रजे तपसी ब्रह्महैं तिनसों जगत् बिटमाया कहे बनायोहै अर्थात् जेनारायण रामावतार लेइहैं सोब्रह्माते कैसे जगबनवायो सोकथा पुराणनमें प्रसिद्धहै कि कमलमें ब्रह्माभये तबआकाशबाणीभई तपतप तब तपस्या कियो तब नारायण प्रगटभये ते ब्रह्माते कह्यो कि जगत् बनावो तब बनावतभये नारायण जे रामावतार लेइहैं तामें प्रमाण॥यदास्वपार्षदौजातौराक्षसप्रवरौप्रिये । तदानारायणःसाक्षाद्रामरूपेणजायते ॥ प्रतापीराघवसखाभ्रातावैसहरावणः । राघवेणतदासाक्षात्साकेतादवतीर्यते ॥ तेनारायण अंत न पायो तेनारायण रामचंद्र क्षीरशायीश्वेतद्वीपनिवासी बहुतहैं जिनके गुणको अंतकोई नहीं पावैहै अरु जिनके गुण सबके गुणते न्यारेहैं ते श्रीरामचंद्र एकईहैं औ केते कान्ह मुरलीधर भये तिनभी अंतनहीं पायो काहेते कि उनके अनंत गुणहैं २ ॥

मत्स्यकच्छबारहस्वरूपीबामननामधराया।
केतेबौद्धभयेनिकलंकी तिनभीअंतनपाया ३
केतिकसिद्धसाधकसंन्यासीजिन्हबनबासबसाया।
केतेमुनिजन गोरखकहिये तिनभी अंतनपाया ४

औ केतन्यो मत्स्य कच्छ बाराह बामन बौद्ध कलंकी रूपभये तिनभी अंतनहीं पायो सोई अवतार जो कहिआये तिनमें बामन नरसिंहआदिक अवतार आइगये तेऊअंत नहीं पायोहै ३ औ केतन्यो सिद्धसाधक संन्यासी भये जेबनमें बास करतभये औ केतन्यो मुनि गोरख इंद्रिनके रखवार भये तेऊ ताको अंतनहीं पायो ४ ॥

जाकीगतिब्रह्मैंनहिंपाई शिवसनकादिकहारे।
ताकेगुण नरकैसेपैहौ कहै कबीरपुकारे ५

औ जाकी गति ब्रह्मा शिव सनकादिक नहीं पायो काहेते कि तिनके अनंत गुणहैं सो हेनर तुमकैसे पावोगे जे गुरुवनके कहेकहौहौ कि नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामहैं सोमिथ्याहै वे रामके गुण न तुम्हारे गुरुवा पायोहै न तुम पावोगे व्यंग यहहै कि ते वेषाषंडी गरुवनको संग छांड़िकै रामोपासकनको संग करौ तब जैसी भजनक्रिया व करैहैं सो करिकै निर्गुण सगुणकेपरे साहब के लोकजाउ तब तिहारो जननमरण छूटै। वेगुरुवालोग जौनेमें सिद्धांत करि राखेहैं तेसब याही कैतीहै निर्गुण सगुण में है औ परमपुरुष पर साहबको लोक सबके पर है तामेंप्रमाण कबीरजीको रेखता झूलनाछंद पिंगलमें कहेहैं ॥ चलाजबलोकको शोकसबत्यागिया हंसकोरूपसतगुरु बनाई। भृंगज्यौंकीटको पलटिभृङ्ग किया आपसमरंगदै लैउड़ाई। छोड़ि नासूनमलकूतकोपहुंचिया बिष्णुकीठाकुरीदीखजाई। इंद्रकुब्बेरजहँरभ कोभृत्यहै देवतेंतीसकोटिकरहाई १ छोड़िबैकुंठको हंसआगेचला शून्यमें ज्योतिजगमगजगाई। ज्योतिपरकाशमें निरखिनिस्तत्व कोआपनिर्भयहुआ भयमिटाई। अलखनिर्गुण जेहिवेदअस्तुति करैतीनहू देवकोहैपिताई। भग वानतिनकेपरेश्वेतमूरतिधरे भागकोआनतिनकोरहाई २ चारमुक्तामपरखंड सोरहकहैं अंडकोछोरह्यांतेरहाई। अंडकेपरेअस्थानआचिंतको निरखिया हंसजब उहांजाई। सहसऔद्वादश रूहहैंसंगमें करतकिल्लोल अनहदबा जाई। तासुकेबदनकी कौनमहिमा कहौंभासती देहअतिनूरछाई ३ महल कंचनबने मणिकतामेंजड़े बैठतहँकलशआखंडछाजै। आचिंतकेपरेस्थानसो हंगका हंसछत्तीसतहंवांबिराजै। नूरकामहलऔनूरकाभुम्यहै तहांआनंदसो दुंदभाजै। करतकिल्लोल बहुभांतिसे संगयकहंस सोहंगकेजोसमाजै ४ हंस जबजातषट चक्रकोबेधिकै सातमुक्काममें नजरफेरा। सोहंगके परेसुरतिइ- च्छाकही सहसबामन जहँहंसहेरा। रूपकीराशिते रूपउनकोबनानहीं उप माहिदूजोनिवेरा। सुरतिसेभेटिकै शब्दकोटेकिचढ़िदेखिमुक्तामअंकूरकेरा ५ शून्यके बीचमें बिमल बैठक जहां सहज स्थानहै गैबकेरा। नवोमुक्तामयह हंसजबपहुंचिया पलकबेलंबह्वांकियोडेरा। तहांसेडोरिमक्रतारज्यों लागिया ताहिचढ़िहसगोदैदरेरा। भयेआनंदसे फंदसबछोड़िया पहुंचियाजहां सत लोकमेरा ६ हंसिनीहंससब गायबज्जायकै साजिकैकलश वहिलेनआये। युगनयुगबीछुरे मिलेतुमआइकै प्रेमकरिअंगसोंअँगलगाये। पुरुषनेदर्श जबदीन्हियाहंसको तपनिबहुजनमकी तबनशाये। पलटिकैरूपजब एकसे कीन्हियामनहुंतबभानुबोडशउगाये ७ पुहुपकेदीप पीयूषभोजनकरै शब्द कोदेहजबहंसपाई। पुहुपकेसेहरा हंसऔहंसिनी सच्चिदानंद शिरछत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाई । दिपैंबहुदामिनी दमकबहुभांतिकी जहांघनशब्दको घुमड़लाई। लगेजहँबरषने गरजघनघेरिकै उठततहँशब्द धुनिअतिसोहाई ८ सुनैसोइ हंसतहँ यूथकेयूथहै एकहीनूरयकरंगरागै । करतबीहारमनभामिनीमुक्ति मै कर्मओभर्म सबदूरिभागै । रकओभप कोइपरखिआवैनहीं करतकिल्लोलबहुभांतिपागे । कामओक्रोधमदलोभ अभिमानसब छांड़िपाषंडसत शब्दलागे ९ पुरुषकेबदनकी कौनमहिमाकहौं जगतमेंउभय कछुनाहिं पाई । चंद्रऔसुरगण ज्योतिलागैनहीं एकहीनरूप्यपरकाशभाई । पानपर वानजिनबंशकापाइया पहुंचियापुरुषकेलोकजाई । कहैंकब्बीरयहिभांति सोपाइहौं सत्यकीराह सोपूगटगाई १० औ वहलोकको बर्णन वेदसारार्थ जोसदाशिवसंहिताहै ताहूमेंहै श्रीसौमित्रिरुवाच ॥ महर्लोकःक्षितेरूर्ध्वमे ककोटिप्रमाणतः । कोटिद्वयेनविख्यातजनलोकंव्यवस्थितं १ चतुष्कोटि प्रमाणंतु तपोलोकोबिराजितः । उपरिष्टात्ततःसत्य मष्टकोटिप्रमाणतः २ आयुःपूर्व्यास्तकौमारं कोटिषोडशसंभवं । तदूर्ध्वेपरिसंख्यात मुमालोकंसुनिश्चित ३ शिवलोकंतदूर्ध्वंतु पूकृत्याचसमागतं । विश्वस्यपुरतोवृत्तिःशिवस्यपुरतोवहिः ४ एतस्माद्वहिरावृत्तिः सप्तावर्णसंज्ञका । तदूर्ध्वंसर्वतत्वानां कार्यकारणमानिनां ५ निलयंपरमंदिव्यंमहावैष्णवसंज्ञकं । शुद्धस्फटिकसंकाशंनित्यस्वच्छमहोदयं ६ निरामयंनिराधारं निरंबुधिसमाकुलं । भासमानं स्ववपुषावयस्यैश्चविजृंभितं ७ मणिस्तंभसहस्रैस्तु निर्मितंभवनोत्तमं । वज्रवैदूर्य्यमाणिक्य ग्रथितंरत्नदीपकं ८ हेमप्रासादमावृत्य तरवःकामजातयः । रत्नकुंडैरसंख्यात पुरुषैर्मलयवासिभिः ९ स्त्रीरत्नैःपरमाह्लादैःसंगीतध्वनिमोदितैः । स्तुतंचसेवितंरम्यं रत्नतोरणमंडितं १० कारुण्यरूपंतन्नीरंगंगायस्माद्विनिःसृता । अनंतयोजनोच्छ्रायमनंतयोजनायतं ११ यत्रशेते महाविष्णुर्भगवान्जगदीश्वरः । सहस्रमूर्द्धाविश्वात्मा सहस्राक्षःसहस्रपात् १२ यन्निमेषाज्जगत्सर्वंलयीभूतंव्यवस्थितं । इन्द्रकोटिसहस्राणां ब्रह्मणांचसहस्रशः १३ उद्भवंतिविनश्यंति कालज्ञानविदोजनैः । यदंशेन समुद्भूता ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः १४ कार्य्यकारणसंपन्ना गुणत्रयविभावकाः यत्रआवर्ततेविश्वं यत्रैवप्रलीयते १५ तद्वेदाःपरमंधाममदीयंपूर्वसूचितं। एतद्गुह्यसमाख्यानं ददातुबाछितंहिनः १६ तदूर्ध्वन्तुपरंदिव्यं सत्यमन्यदृव्यवस्थितं । न्यासिनांयोगिनांस्थानं भगवद्भावितात्मनां १७ महाशंभुर्मोदतेत्रसर्वशक्तिसमन्वितः । तदूर्ध्वन्तुस्वयंभातं गोलोकंपूकृतेःपरं १८ अरु सहस्रशीर्षा पुरुषजो लिख्योहै तहँ शुद्धजीव समिटेरहैहैं वेसमष्टिहैं ताके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोम रोममें अनंतकोटि ब्रह्मांडहैं तहँते अनेक ब्रह्मांड उत्पत्ति होइहैं औत-
हैं महाप्रलयमें लीन होइहैं औ दूसरे सत्यलोकमें जो महाशंभुको वर्णन
कियो सो परमगुरुको रूपहै तामेंप्रमाण ॥ वंदेशंभुंजगद्गुरुं ॥ औगुरूसों
औ साहबसों अभेद तामेंप्रमाण ॥ आचार्यमांविजानीयान्नावमन्येतकर्हि
चित् इतिभागवते ॥ औ महाशंभुसों औ महाविष्णुसों अभेदहैतामेंप्रमाण
शिवस्यश्रीविष्णोर्यइहि गुणनामादिसकलंधिया भिन्नंपश्येत्सखलुहरि-
नामाहितकरः इति स्कंदपुराणे औ नारायण जे वर्णन करि आये तेऊ
श्रीरामचंद्रईके रूपहैं तामेंप्रमाण सदाशिवसंहितायां॥वासुदेवोघनीभूतंतनु
तेजः महाशिवः॥औ गोलोकमें श्रीकृष्णरूपते रघुनाथजी बिहार करैहैं औ
गोलोकके मध्यसाकेतमें रामरूपते रघुनाथजी बिहार करैहैं तामेंप्रमाण
सदाशिवसंहिताके बिस्तारते वर्णन करिआये कि पश्चिम द्वार वृन्दाबन
है उत्तरद्वार जनकपुरहै पूर्वद्वार आनंदबनहै दक्षिणद्वार चित्रकूटहै ताकेआगे
यहलोकहै तेहितेइहां प्रयोजनमात्रलिख्योहै॥तेषांमध्येपुरंदिव्यंसाकेतमि
तिसंज्ञकं इति॥औ साकेतऊपर कछु नहीं है औ साकेत औ अयोध्या सत्या
सत्यलोक इत्यादिक नाम सब वहलोकके पर्य्यायहैं तामेंप्रमाण॥साकेता
न्नपरंकिंचित्तदेवहिपरात्परम् ॥ औ गोलोकजे श्रीकृष्णचंद्रहैं तेश्रीरामचंद्र
ईके महत्॥सीतारामात्मकंयुग्मंप्राविशन्नतिपूर्वकं १ श्रीजानकीजी रघुनाथ
जीसों कह्यो कि वृन्दाबनको बिहार करिये तब रघुनाथजी कह्यो जब
तुम कह्यो तैंएक दूसरा बिहार स्थल बनाइये तब हम वृन्दाबन बनायो
राधिका तुमभई कृष्ण हमभये सो बिहार करतेभये सो हमारई तुम्हार
रूप राधाकृष्णहै याकहिकै आकर्षण करिकै वृन्दाबन बोलाइलियो राधा
कृष्ण आइगये तब राधिकाजी जानकीजीमें लीनभई श्रीकृष्णचंद्र रामचंद्र
में लीनभये अरु पुनि बिहार कियो जब बिहार करिचुके तब जानकी
रघुनाथते निकसिकै वृन्दाबन समेत राधाकृष्ण चलेगये गोलोकको सो
यहकथा शुकसंहितामेंहै ताको एक श्लोक लिख्योहै औ बिस्तारसे देखि
लीजियो तेई श्रीकृष्णके नखको प्रकाश ब्रह्महै वही प्रकाशको मुसल्मान
लामकान कहैहैं औ जे दशमुकाम रेखतामें करि आये औ दश वोई
मुकाम सदाशिवसंहिता में वर्णन करि आये तिनमें पांचमुकाम मुस-
ल्मानन के कहैहैं औ पांचमुकाम छोड़ि देइहैं तिनको उनहीं में
गतार्थ मानिलेइहैं मुसल्माननमें वोई पांचमुकामके दुइनामहैं नासूतको
आलम अजसामकहे शरीरधारी याते यहलोकके सब आइगये औमलकूत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को आलम मिसाल फिरिस्तनके दुनिया देवलोक औ जब रूतको आलम अर्थात् कहे पृथ्वी अपतेज वायु तत्वरूपहै औ लाहूतको आलम कर्ब कहे नूर अर्थात् श्रीकृष्णको नरव्यप्रकाश जोहै ब्रह्म वहीको कही लोकप्रकाश लिख्योहै औ हाहूतको मुकाम महम्मदीकहे जहांभर महम्मद पहुंचैहै श्रीकृष्णके लोक अब इनके मंत्रऊ लिखेहैं॥ जिकिरना सूतलाइलाहइलाहू जिकिरमलकूतइल्लिलाहू जिकिरजबरूतअल्लाःअल्लाः जिकिरलाहूतअलाह जिकिरहाहूतहूं हूं॥सो इनको रातिदिन पांजहजार बारकरै जबपांच हजारहोय तब ध्यानकरै औ ध्यानमें गड़ै औ आपको भूलै फिरि जहान को भूलै पुनि जिकिरिकहे मंत्रको भूलै तबक्रमते मजकूरको पहुंचै अर्थात् अल्लाही जे श्रीकृष्णचंद्र हंसस्वरूप देइं तामें स्थितह्वैकै जिनको प्रकाश निराकारजोहैं ऐसे जे श्रीकृष्णहैं तिनके पास होत उनके बताये मनबचन के परे जे खुद खामिंद सबके बादशाह जे श्रीरामचंद्रहैं तिनके पास जाता है सो यहमत महम्मदजे साहबके बंदेहैं तिनको साहबभेजा तब जेसाहब के पास पहुंचनवारे रहे तिनको महम्मद भेद बताइदियो सोबिरलेकोई कोई यह भेद जानैहैं ते साहबके पास पहुंचे हैं अब याको क्रम बतावैहैं जौनीभांति साहबके पासपहुंचे तामेंप्रमाण॥ पीरानपीर साहबकेपासपहुंचे ऐसेजेहैं सलोलके मालिक पनाह अतातिनको कबित्त॥देहनसूतसुरैमलकूत औजीवजबूतकोरूहबखानै। आरवीमेंनिराकारकहैजेहिलाहुतैमानिकैमंजि लठानैं। आगेहाहूतलाहूतहैजादुति खुदखामिंदजाहूतमेंजानै। सोईश्रीराम पनाहसबैजगनाह पनाहअतायहगानै १ दोहा॥ तजैकर्मनासूलहि निरखै तबमलकूत। पुनिजबरूतौछोड़िकै दृष्टिपरैलाहूत २ इनचारोतजि आगेही पनाह आताहाहूत। तहां न मरै न बीछुरै जात न तहँयमदूत ३ औ जुलजलालअव्वल एकराम मुसल्मानोंकेकहैंहैं किताबनमेंपूसिद्धहै साहबबुजुर्गी का साहब बरबिशका अर्थात् वहसबते बुजुर्गी कहे बड़ाहै उससे बड़ा कोईनहीं है औवही गुनाहका बकसनेवालाहै औरेके छुड़ायें न छूटैगो जब श्रीरामचन्द्र जीवको छोड़ावेंगे तबही छूटैगो औखोदाके सौनामहैं निन्यानबे सगुणनामहैं औमुक्तिको देनवारो निर्गुणअल्लाह नामहीहै वहीहै वही खुद खामिंदका नामहै तौनैबात वेदशास्त्रमें सिद्धान्तकियोहै कोईकोई जे साहबके पहुंचेहैं ते वेग्रन्थ जानैहैं सो लिख्योहै कि और देवतनके नामते अधिक और सब नाम भगवान्केहैं औ भगवान्के सबनामते अधिक राम नामहै सोमहादेवजी पार्बतीजीते कह्योहै॥ सहस्रनामतातुल्यं रामनामवरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नने । सप्तकोटिमहामंत्राश्चित्तविभ्रमकारकाः ॥ एकएवपरोमंत्रो रामइत्य क्षरद्वयं । विष्णोरेकैकनामापि सर्ववेदाधिकंमतं । तादृग्नामसहस्रेण राम नामसमंस्मृतं ॥ इतिपाद्मे ॥ औ गोसाईंजीहू लिख्योहै ॥ राम सकल नामनते अधिका ॥ सोयही रामनामते अल्लाह नाम निकस्यो रामनाम के मकारको रकारभये आगेका पीछेआया तबअरभया सोअर राकेपीछेआया तब अरराम भयो रलके अभेदसे अल्लाभयो व्याकरण वर्णविकार वर्णकार वर्णविपर्यय पृषोदरादिपाठसे सिद्धशब्दको साधनके वास्तेपू सिद्धहै औ जो सदाशिव संहितामें दशमुकाम लिखि आयेहैं औ पहिले रेखतामें लिखि आयेहैं सोकबीरजी पुनिखुदखामिंदको दूसरे रेखतामें वहीबातलिख्योहै जुलमतनासूत मलकूतमें फिरिस्ते नूरजल्लाल जबरूतमेंजी । लाहूतमें नूरजम्माल पहिचानिये हक्क मक्कानहाहूतमेंजी ॥ बका बाहूत साहूत मु-र्सिदवारहै जोरब्बराहूमेंजी । कहतकब्बीर अबिगति आहूतमें खुदखामिन्द जाहूतमेंजी १ सोवेजे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनके गुणसबते न्यारे हैं औ उनको धामसबते परेहै वाकोकोई अंतनहीं पायो सोतिनके गुण ह्वै जीवो तुमकैसे पावोगे ५ ॥ इतिअठारहवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथउन्नीसवांशब्द ॥

एतत राम जपोहो प्राणी तुम बूझो अकथ कहानी । जाकोभाव होत हरिऊपर जागतरैनि बिहानी १ डाइनि डारे सोनहाडोरे सिंहरहे बनघेरे । पांचकुटुंब मिलि जूझनलागे बाजन बाज घनेरे २ रोहुमृगा संशय बन हांकैपारथबाना मेलै । सायरजरै सकल बनडाहै मछअहेरा खेलै ३ कहै कबीर सुनोहो संतो जोयह पदनिरधारै । जो यहिपदको गाय बिचारै आपतरै अरुतारै ४ ॥

एतत राम जपोहोप्राणी तुमबूझो अकथ कहानी ।
जाको भावहोत हरिऊपर जागत रैनि बिहानी १

एतत कहे ईजे निर्गुण सगुणके परे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जपो कैसे जपो कि अकथकहानी कहे मनबचनके परे जोहै रामनाम सो बूझअर्थात् रामनाममें साहब मुख अर्थबूझिकै जपो श्रीरघुनाथजीके ऊपर जाको भावहोयहै ताको यह संसाररूपी जोहै निशा बिहानई ह्वै जाय है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवतते जागिउठैहै तातें यह ध्वनितहोयहै जाको रघुनाथजीके ऊपर भाव नहीं है ताकोयहसंसाररूपी निशाबनीरहैहै विहान नहीं होयहै जागैनहीं हैं कहेज्ञान नहीं होयहै भ्रमरूपी निशामें सोवतें रहैहै यहि संसारमें जीव कैसेघेरे रहतेहैं सो कहैहैं १ ॥

डाइनि डारे सोनहाडोरे सिंहरहे बनघेरे ।
पांचकुटुंबमिलिजूझनलागे बाजनबाजघनेरे २

डाइनि जेहैं गुरुवा लोग छालाके डारनेवाली जे वाके कानमें अपनी क्रिया डारिदियो इहां गुरुवालोग डाइनिहैं जे सिंहको मंत्रते बांधि देयहैं वा बनत्यागि औरबननहीं जायहै औ सोनहाजो है सो हंसमंत्रतौनेमो डोराबांध्यो अर्थात्यह कह्यो कितहीं ब्रह्महै और कहांखोजैहै तैंवाहैवातैंहै यहमंत्रको अर्थबतायो सोसिंहजोहै जीवयासामर्थहै सोउनही बाणीरूपबननमें घेरिरह्यो कहे बधिरह्यो तब पांचौजे ज्ञानेंद्रीहैं पांचौजे कर्मेन्द्री हैं अथवा पांचो जेप्राणहैं प्राण अपान समान उदान ब्यान तेई कुटुम्बहैं तिन में मिलिकै जूझैलाग पांच कुटुम्ब सिंहके पंचआनन जब सिंहको मारन जायहै तब झुनका बाजा बजावैहै तैसे इहां गुरुवालोग अनहद सुननकी युक्ति बतावनलगे सोदशौ अनहदकी धुनि सुननलग्यो तेई बाजाहैं २ ॥

रोहुमृगासंशयबनहांकै पारथबानामेलै ।
सायरजरैसकलबनडाहेमच्छअहेरावेलै ३

रोह कौनकहावै कि जो कमरीमें आगीबारत जायहै झुनका बजावत जायहै तामें मृगा मोहि जायहैं सो वाहीकी छायामें पीछे धनुष बाणकी बांसकी बंदूकादि आयुधलिये खड़ो रहैहै शिकारी सोई मारैहै यही रोह है सो मृगराज जोहै जीव ताको गुरुवालोग जब योगाभ्यासकैकै धोखा ब्रह्मको प्रकाशबतायो तामेंरहिगयो कहे मोहि गयो जो कहौ हांकि कौन लायो तौ संशयरूप हँकवैयाहै जैसे आगीबरत देखिकै वा बाजा सुनिकै टेममें मोहिकै मृगमृगराज जायहै याकैसो बाजा बाजैहै या कैसी टेमहै या संशय जोहै ज्ञान मिलनकी चाह सोयाको हांकिलै आयो ऐसे गुरुवा लोगनकी जो बताई बाणी बनहै जौन अनहद सुनिबे की युक्ति बतायो तौन अनहदकी धुनि सुनिकै औ जौन ज्योति बतायो सोऊ योगाभ्यास करिकै ज्योतिरूप ब्रह्मदेखिकै जीव या संशयकैकै निकटजायहै औ यावि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारैहै कि या ज्योतिरूप ब्रह्म महीं हौं कि मोते भिन्नहै तब शिकारीजैसे ढुकोरहैहै ऐसे मूलाज्ञान रूप शिकारी अहंब्रह्मास्मि वृत्तिरूप बाण मारि वाजीवको अनुभवकरायदेयं कि महीं ब्रह्महौं वाके जीवत्वको नाशकैदेयहै यही मारिबोहै औजैसे बाणलागे मृगराजको अतष्करण जरउठैहै अधिक कोपैहै बनमें जोई आगे वृक्ष परैहै तौनेपर चोट करैहै जोमारनवालेको देखेहै तो वाहूको धरिखायहै ऐसे जब आपनेको ब्रह्ममान्यो तब सायर जो संसारहै सो जरैहै अर्थात् संसार याको मिथ्या जानि परैहै औ बन डाहैहै कहे वा दशामें बाणीरूप बन सोऊ भूलि जायहै ऐसे बधिकमार्‌यो बधिकको बाघमार्‌यो बधिकको जब मारिकै दोऊ गलिकै नदीमें मिल्यो तब मछरी खायो अथवा मरिकै दोऊ बहैरहे कीड़ापरे जब बाढ़को जल आयो तब मछरी खायो ऐसे ब्रह्महुमें लीनहूँ अठई अवस्थाको प्राप्तभये तब न जीवत्वरह्यो न मूलाज्ञान रह्यो ऐसेहूभये तथापि साहबको बिना जाने अच्छजो कालहै सो खायलेइहै फिरि संसारमें परैहै तामेंप्रमाण॥ ये न्येरे दोक्षबिमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः। आरुह्यकृच्छ्रेणप रंपदं ततः पत्यन्त्यधोनादृतयुष्मदंघ्रयः ॥ इतिभागवते ॥ कबीरजीको प्रमा ॥ कोटिकरमकटपलमें जोराचैयकनाम। अनेकजन्म जोपुण्यकरैं नहीं नामबिनुधाम ३ ॥

कहैकबीरसुनोहोसंतो जोयहपदनिरधारै।
जोयहिपदको गाइबिचारै आपतरैअरुतारै ४

सो कबीरजी कहैहैं कि हेसंतो जोयह पदको निरधारै कहे सारासार बिचार करै औ जौन ब्रह्मपद कहिआये तौनेको गाइ बिचारै कहे माया बिचारै सो आपु तरिहि और आनहूको तारैहै अर्थात् साहबको वा जानै औ औरहूको जनाइदेइ ४ इतिउन्नीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथबीसवांशब्द ॥

कोइरामरसिक रसपियहुगे पियहुगेसुखजियहुगे १ फलअमृतै बीज नहिंबोकला शुकपक्षीरसखाई। चुवैनबुन्द अंगनहिंभीजै दासभवँरसँग लाई २ निगमरसाल चारिफललागे तामेंतीनिसमाई। एकहैदूरिचहैसब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई यतनयतनकोइपाई ३ गयउबसंत ग्रीष्मऋतुआई बहुरिनतरुवर आवै। कहैकबीरस्वामी सुखसागर राममगनह्वैपावै ४ ॥

कोइरामरसिकरसपियहुगेपियहुगेसुखजियहुगे १

फलअमृतैबीजनहिंबोकला शुकपक्षीरसखाई ।
चुवैनबुंदअंगनहिंभीजै दासभवँरसँगलाई २

हेजीवौ कोई तुम रामरसिकनते रामरस पिऔगे अथवा रामरसिकह्वै कै रामरस पिऔगे जोराम रसिकनते रामरस पिऔगे तबहीं सुखते जिऔगे कहे जन्ममरणते छूटोगे अरु आनंदरूप होउगे १ वह रामरस कैसोहै अमृतको फलहै कहे वाके खायेते जन्ममरण नहीं होइहै औ तौनेफल में बीज बोकला नहीं है अर्थात् सगुण निर्गुणरूप बीज बोकला नहीं है औ न मीठो फल होइहै ताही फलमें सुवा चोंच चलावैहै यह लोकमेंप्रसिद्ध है यहां शुकाचार्य रामरसको मुक्तह्वै आस्वादन कियोहै ताते यहव्यंजित भयो कि रामरसते ब्रह्मानंद कमिहीहैं अर्थात् श्रीमद्भागवतमें है ॥वंदेमहा पुरुषतेचरणारविंदम् ॥ ऐसो कहि शुकाचार्य परमपरपुरुष श्रीरामचंद्रहीके चरणनको बंदना कियोहै औ श्रीरघुनंदनहीके शरण गयेहैं यह वर्णन श्रीमद्भागवतहीमेंहै ॥ तन्नाकपालवसुपालकिरीटयुष्टं पादांबुजंरघुपतेः शरणं प्रपद्ये ॥ इतिभागवते ॥ औ श्रीरामचंद्रहीको परतत्व तात्पर्यते वर्णन कियोहै सो कोई बिरला संतजन याको अर्थ जानैहै औ जोयह पाठहोइ फलअंकृतै बीजनहिं बोकला तौयह अर्थ है कि फलकीअंकृतिकहे आकृति तोहै परंतु बीजबोकला जेनिर्गुण सगुणहैं ते इनमें नहीं आवैहैं इनते भिन्नहै सो रामरसरूपी फलहै तो रस रूपईहै परंतु वाको रसबुन्दहू नहीं चुवैहै अर्थात् अंतकबहूं नहीं होइहै अनादि अनतहै औ काहूकेपांचौ शरीर के अंगनहीं भीजैहैं अर्थात् कोई पांच शरीरते भिन्न नहीं होइहै जब पार्षदरूप रामोपासक तेई भँवँर हैं तेवाके संग लगे रहैहैं अर्थात् रामरसपान करतई रहैहैं २ ॥

निगमरसालचारिफललागे तामेंतीनिसमाई ।
यकहैदूरिचहैसबकोई यतनयतनकोइपाई ३

सो कबीरजी कहैहैं कि निगम जोहै रसाल कहे आमको वृक्ष तामें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारिफल लागेहैं अर्थ धर्म काम मोक्ष तिनमें तीनफलत हैं समातहैं कहे नष्टहै जाइहैं अर्थात् तीनिऊं अनित्यहैं औ एक जोहै मोक्ष सोतो बहुत दूरिहै यत्नही यत्न करत कोई बिरला पावैहै अर्थात् निगमतौ रसालहै रसमयहै तात्पर्य वृत्तिकरिकै साहबईको बतावैहै सो बहतो कोई जानै नहीं है यह कहैहै कि चारिफल लागेहैं ३ ॥

गयउबसंतग्रीषमऋतुआईबहुरिनतरुवरआवै।
कहैकबीरस्वामीसुखसागररामममगनह्वैपावै ४

अरु जोकोई निगमरूपी वृक्षको मोक्षरूपी फलपायोहै वाको पायोहै ताको बसंतऋतु जाइरहैहै ग्रीष्मऋतु ह्वैजाइहै कहे आत्माको स्वस्वरूप भूलिगयो सुखको आस्वादन न रहिगयो कहन लग्यो कि मैंहीं ब्रह्महौं ग्रीष्मऋतुमें प्रकाश बढ़ैहै सोयहौ प्रकाशमें समाइगयो सोफेरि जोचाहै कि रामोपासना रूप ब्रह्मकी भक्तिरूप छायामिलै तौनहीं मिलै श्रीकबीर जीकहैहैं कि सुखसागर स्वामी जे परमपरपुरुष श्रीरामचंद्रहैं तिनके राम नाम रसमें जब मग्न होइहै तबहीं पावैहै जीवको स्वरूप ॥ आत्मदास्यं हरेस्वाम्यंस्वभावंचसदास्मर ॥ शुकाचार्य या फलको चाखिनहै तामें प्रमाण ॥ निगमकल्पतरोर्गलितंफलंशुकमुखादमृतद्रवसंयुतं। पिवतभाग-वतरसमालयंमुहुरहोरसिकाभुविभावुकाः ५ इतिभागवते ४ इतिबीसवां शब्दसमाप्तम् ॥

अथइक्कीसवांशब्द ॥

रामनरमसिकौनदण्डलागा । मरिजैहैकाकरिहैअभागा १ कोइतीरथ कोइमुण्डितकेशा। पाषंडभर्ममंत्रउपदेशा २ बिद्यावेदपढ़िकरहंकारा। अंतकालमुखफांकैछारा ३ दुखितसुखितसबकुटुंबजेंवइबे। मरनबेरयक-सरदुखपइबे ४ कहकबीरयहकलिहैखोटी। जोरहकरवानिकसलटोटी ५॥

रामनरमसिकौनदंडलागा। मरिजैहैकाकरिहैअभागा १

सबको दंडछोड़ाय देनवारे जेसबतेपरे परमपुरुष श्रीरामचंद्रहैं तिनमें जो तैंनहीं रमैहै सो तोकोगुरुवा लोगनको कौन दंडचवावमेंलगाहै यहतो सब यहीं के साथीहैं साहबके भलायदेनवारेहैं जेउपदेश करनवारेगुरुव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नके कहे माया ब्रह्म आत्मा को ज्ञानरूपी दंडचवाउमें जोते परे हैं सोहे अभागा जबतैंमरिजैहै तबवे गुरुवा तोको न बचासकैंगे तबक्याकरोगे १॥

कोईतीर्थ कोइमुंडित केशा। पाषंड भर्ममंत्र उपदेशा २

तीर्थनमें जाइकै कोई चहौहौ किबिनाज्ञानही मुक्तिह्वै जाइहै औकोई मूड़मुड़ायकै वेषबनाइकै संन्यासी ह्वैकै औ अपने आत्माहीको मालिक मानिकै चाहोहौ कि मुक्तिह्वै जायँ औ कोईनास्तिकादिकनके जेनानापाषंड मतहैं तिनमें लागिके जानौ कि मुक्तिह्वै गये औ कोई भ्रमजो धोखाब्रह्म है तामें लागिकै आपनेको ब्रह्ममानिकै जानौहौ कि हममुक्तिह्वै गये औकोई और और देवतनके मंत्रउपदेश पायकै जानौहौ कि हममुक्तिह्वै गये २॥

बिद्या वेदपढ़िकर हंकारा। अंतकाल मुखफांकै छारा ३

अरुकोई वेदबाह्य जे नानाबिद्या अपनेअपने गुरुवनकी भाषा तिनको पढ़िकै औकोई वेद पढ़िकै वेदमें शास्त्र औ चौंसठ कलादिक सब आइ गये अहंकारकरोहो कि हम मुक्तिह्वै गये सोमुक्तितो जिनको वेद तात्पर्य करिकै ऐसेजे परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनकेबिनाजाने न होइगी होय गो कहा कि जबअंतकाल तेरो होइगो तब यहौ मुखमें छार फांकैगो औ पुनिजब पुण्यक्षीण होइगो तब लोक आवोगे तबहूं मरबै करोगे छारई फांकौगे ३॥

दुखितसुखित सबकुटुंब जेंवइबे। मरणबेर यकसर दुखपइबे ४

दुःखसुखमें सबकुटम्बनको जेंवावैहै तेमरणसमय कोईकामनही आवैहैं तैं अकेलही दुःखपावैहैं परतु सहायतेरी कोईनही करिसकैहै ४॥

कहकबीर यहकलि हैखोटी। जोरहकरवा निकसलटोटी ५

कलिनाम झगड़ाकोहै सोकबीरजी कहैहैं यहमाया ब्रह्मकोझगड़ा बहुत खोटहै अथवा यह कलिकाल अतिखोटहै जोवस्तु करवामेंरहैहै सोईटोटी ते निकसैहै तैसे जोकर्म यहजीवकरैहै सोई दुःखसुख वह जन्मभोगकरैहै अरुनाना देवतनकी उपासना अबकरैहै ताहीकी बासना बनीरहै है तेहिते पुनिवोई देवतनमें लागैहै अरुजो ब्रह्मबिचार अबकरैहै सोईब्रह्मबिचार पुनि जन्म लैकै करै है अर्थात् बिना परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र के जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म मरण नहीं छूटैहै जो बासना अंतष्करण में बनीरहैहै सोई पुनि होयहै ५ इतिइक्कीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथबाईसवांशब्द ॥

अबधू छोड़ो मन बिस्तारा। सोपदगहहु जाहिते सद्गति परब्रह्मते न्यारा १ नहीं महादेव नहीं महम्मद हरिहजरत तबनाहीं। आदम ब्रह्म नहीं तब होते नहीं धूप नहिंछाहीं २ असी सहस पैगंबर नाहीं सहस अठासी मूनी। चन्द्रसर्य तारागण नाहीं मच्छकच्छ नहिंदूनी ३ वेदकिताब स्मृति नहिं संयम नहीं यमन परसाही। बांगनेवाज कलिमा नहिं होते रामोनहीं खोदाही ४ आदिअंतमन मध्य न होते आतश पवन न पानी। लषचौरासी जीवजंतु नहिं साखी शब्द न बानी ५ कहै कबीर सुनोहो अबधू आगे करहु बिचारा। पूरणब्रह्म कहांतेप्रकटे किरतमकिन उपचारा ६ ॥

अबधू छोड़ो मनबिस्तारा। सोपदगहहु जाहिते सद्गति पर ब्रह्मते न्यारा १ नहींमहादेव नहींमहम्मद हरिहजरत तबनाहीं। आदमब्रह्म नहीं तबहोते नहींधूप नहिंछाहीं २ असीसहस पैगं बरनाहीं सहस अठासीमूनी। चन्द्रसूर्य तारागण नाहीं मच्छ कच्छ नहिंदूनी ३ वेदकिताब स्मृति नहिं संयम नहीं यमन परसाही। बांगनेवाज कलिमा नहिंहोते रामोनहीं खोदाही ४ आदिअंतमन मध्य न होते आतश पवन न पानी। लषचौरासी जीवजंतु नहिंसाखीशब्द न बानी ५ कहैकबीरसुनोहोअबधूआगे करहु बिचारा। पूरणब्रह्मकहांते प्रकटेकिरतमकिनउपचारा ६ ॥

हेअबधू जीवौ तुम्हारे तो बधू कहे स्त्री नहीं है अर्थात् तुमतौ मायाते भिन्नहौ जेतनो तुमदेखोहो सुनोहौ ताकोमायामें मिलिकै तुम्हारेमनही बिस्तारकियोहै सो यहमनको बिस्तार छोड़िदेउ अरुजिनत सद्गतिकहे समीचीन गतिहै मनबचनके परे धोखाब्रह्मके पार ऐसो जोलोकःपूकाश ताहूते न्यारे ऐसे साकेतनिवासी परमपुरुष पर श्रीरामचंद्र तिनके पद गहौ कबीरजी कहैहैं कि हेजीवौ बिचार तौकरौ जोजो बात यह पदमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पष्ट बर्णन करिगये तेयेकोऊ तब नहीं रहे अरु वासों भिन्न जो तुमकहौ हौ कि पूर्ण ब्रह्महै कहे सर्बत्र ब्रह्महीहै वासों भिन्न दूसरो नहीं है सो यह धोखा कहांते प्रगट भयोहै औ किरितम जो मायाहै ताको किन उपचार कहे किन आरोपण कियो अर्थात् यह शुद्ध समष्टि जीवको मनहीं किरितम जोमायाहै ताको आरोपण कियोहै औ मनहीं वह ब्रह्मको अनुमान कियोहै ताहीको कियो राम खोदाय आदिजे मन बचनमें आवै हैं जे वर्णन करि आयेहैं तेई बिस्तार हैं सो पूरब मंगलमें औ पृथम रमैनीमें बर्णन करि आयेहैं औ यहां रामको औ हरिको जो कहेहैं सो नारायण जे रामावतार लेइहैं तिनको कहेहैं नहीं यमन परसाही कहे चौदहौ यमनके परेजे निरंजनहैं तिनहूंकी साही नहीं रही परम परपुरुष श्रीरामचंद्रको नहीं कहैहैं काहेते कि वेतौ मन बचनके परेहैं सो पूरब लिखि आयेहैं सोबांचि लेहुगे सोजब मनको त्यागो तब परमपुरुष श्रीरामचंद्र तिहारो स्वरूप देइँ तामेंप्रमाण ॥ मुक्तस्यविग्रहोलाभः ॥ यह श्रुति तौने स्वरूपते साहब को अनिर्बचनीय रामनाम नामादिक तुमको स्फुरित होइंगे तामेंप्रमाण वाङ्मनोगोचरातीतः सत्यलोकेशईश्वरः । तस्यनामादिकंसर्बं रामनाम्नाप्रकाश्यते ॥ इतिमहारामायणे ६ इतिबाईसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथतेईसवांशब्द ॥

अबधूकुदरतिकीगतिन्यारी। रंकनिवाजकरैवहराजा भूपतिकरैभिखारी१ येतेलवंगहिफलनहिंलागै चंदनफूलनफूलै । मच्छशिकारीरमैजंगलमेंसिंह समुद्रहिफूलै २ रेड़ारूखभयामलयागिरि चहुंदिशिफूटीबासा । तीनिलोक ब्रह्माण्डखण्डमें देखैअंधतमासा३ पंगुलमेरुसुमेरुउलंघै त्रिभुवनमुक्ताडोलै। गूंगाज्ञानविज्ञानप्रकाशै अनहदबाणीबोलै ४ बांधिअकाशपतालपठावै शेष स्वरगपरराजै । कहैकबीररामहैंराजा जोककुकरैंसोछाजै ५ ॥

जोपूर्ब यह कहिआये कि रामौनहीं खोदाइउ नहीं हैं जिनते समीचीन गति होइहै तिनके पदगहौ ते कौन पुरुषहैं तिनकी सामर्थ्य कहिकै खोलि कै बताबैहैं ॥

अबधूकुदरतिकीगतिन्यारी ।
रंकनिवाजकरैवहराजा भूपतिकरैभिखारी १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

येतेलवँगहिफलनहिंलागै चंदनफूलनफूलै।
मच्छशिकारीरमैजंगलमेंसिंहसमुद्रहिझूलै २

हेअबध जीवौ परम परपुरुषजे श्रीरामचंद्रहैं तिनकी कुदरति कहे सामर्थ्यकी गति न्यारीहै सुग्रीव जे पुत्र कलत्रते हीन भिखारीनाईं बनबन पहाड़ पहाड़ बागतरहे तिनको निवाजिकै राजा बनाइदियो औ सबराजन के जीतनवारे जेक्षत्री तिनको मारिकै पृथ्वी भूसुरन दैडारेउ नारायण के दशौ अवतार ऐसे परशुराम तिनको भिखारी करिदियो १ लवंगमें फल नहीं लागै सोऊलागै चंदनमें फूलनहीं फूलै सोऊ फूलैहै जाकी सामर्थ्यते सो बाल्मीकीयमें लिख्योहै जब श्रीरघुनाथजी अयोध्याजी आये हैं तबजे वृक्षफलै फूलैवाले नहीं रहे सूखे रहे तेऊ फल फूलि आयेहैं औ मच्छजो मत्स्योदरी सो शिकारीजो शंतनु ताके साथ भयते रमनलगी सिंह सामर्थ्य को कहै हैं सो समर्थ जे बड़े बड़े दानव थलके रहैया ते समुद्र में बसेजाय २ ॥

रेड़ारूखभयामलयागिरि चहुंदिशिफूटीबासा।
तीनिलोक ब्रह्माण्डखंडमें देखेंअंधतमासा ३

रेड़ा रूखजेहैं सवरी वारार निषादादिक जिनको वेदका अधिकार नहीं रह्यो तेऊ चंदनह्वैगये उनकीबास चारयोदिशा फूटीकहे उनकोयश सबकोई गावैहै चंदन औरौ वृक्षको चंदन करैहै ऐसे औरहू को साधुन बनावनवारे ये सब भये तामेंप्रमाण ॥ नजन्मनूनंमहतोनसौभगं नवाक्नवुद्धिर्नाकृति स्तोषहेतुः। तैर्यद्विसृष्टानपिनोवनौकसश्चकारसख्येवतलक्ष्मणाग्रजः इति भागवते ॥ औ अंधरजेहैं धृतराष्ट्र तिनकोकृष्णचन्द्र ब्रह्मांड भरेको तमाशा जिनकीसामर्थ्यते शरीरहीमें देखायदियो नारायण औकृष्णचन्द्र साहब की सामर्थ्यतेकरैहैं तामेंप्रमाण ॥ यस्यप्रसादाद्वेशममसामर्थ्यमीदृशंसंहरामिक्षणादेव त्रैलोक्यंसचराचरम् ॥ धातासृजतिभूतानि विष्णुर्द्धारयतेजगत्। इतिसारस्वततंत्रे ॥ कृष्णचन्द्रको अवतार बिष्णुहीते होइहै सो पुराणनमें प्रसिद्धहै ३ ॥

पंगुल मेरु सुमेरु उलंघै त्रिभुवन मुक्ता डोलै।
गूंगा ज्ञान बिज्ञान प्रकाशै अनहद बाणीबोलै ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औजिनके अघटितघटना सामर्थ्यते पंगुजेहैं अरुणते पृथ्वीकेकीला जेहैं सुमेरु कुमेरु तिनको रोज उलंघैहैं नाकैहैं अथवा पंगुजोहैं राहु जाकेशिर भरहै गोड़ हाथनही है सोसुमेरु कुमेरुका नाकतरहैहै औ मुक्तजेहैं नारद शुकबीर आदिक जे संसारते मुक्तह्वैके मनादिकनको छोड़िके साहबके पासगयेहैं औ यह शास्त्रमें लिखेहै कि उहांके गयेपुनि नहीं आवैहै परन्तु तेऊ साहबकी सामर्थ्यतेत्रिभुवनमें डोलैहैं संसारबाधानहीं करिसकैहै औ जब शुकाचार्य निकसेहैं तबव्यास पछुआनजात रहेहैं तबगूंगे जेवृक्षहैं तेऊ व्यासको समुझायोहै औमध्वाचार्य जब भिक्षाटनको निकसे तब शिष्यनके पढ़ाइबे को बरदाको कह्यो तब बरदाशिष्यनको पढ़ायोहै औ जे साहबकी सामर्थ्यते ऐसीसामर्थ्य उनके दासनकेह्वै गई कि वोई अनहद बाणीको बोलैहैं जाकीहद्द नहीं है ४ ॥

बांधि अकाश पताल पठावै शेषस्वरग परराजै।
कहै कबीर रामहै राजा जोकुछु करै सो छाजै ५

औ आकाश जोहै आकाशवत् ब्रह्मतौनेको जोमानैहै कि वह ब्रह्म मैंहीं हौं ताकोसाहब अपनोज्ञानकराइकै धोखाज्ञानको बांधिकै पाताल में पठै देइहै अर्थात् जेहि जीवको मूलाज्ञान निर्मूलई करिदेयहै जैसे लोकमें या बात कहैहैं कि या खनिकै गाड़देव ऐसे गाड़िदियो फिरि वा अज्ञान को अंकुर नहीं होयहै औ शेष कहे भगवत् शेषजोहै जीवसो जेसाहबकी सामर्थ्यते स्वर्गादिकन के परे जोहै साहबको लोक तहांराजैहैं स्वर्ग पदको अर्थ जो दुःखतेभिन्न स्थानहोयहै सोकहावै स्वर्गऔजोलोक प्रकाश ब्रह्म ताहूतेपरे जो साहब तहां राजैहै दुःखरहित स्थानको स्वर्ग कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ यन्नदुःखेनसंभिन्नं नचग्रस्तमनंतरं।अभिलाषोपनीतंच तत्प दंस्वःपदास्पदम् इति ॥ सोकबीरजी कहैहैं कि यह अघटित घटना सामर्थ्य परमपरपुरुषश्रीरामचन्द्रही हैं वेराजाहैं वेजोकुछ करैं सो सबछाजैहै चाहैरंकको राजाकरैं चाहैराजाको रंककरैं चाहैलौंगमें फल लगावैं चाहै चन्दनमें फलफुलाय देय चाहैमछरीकोबनमें रमावैं चाहैसिंहको समुद्रमें रमावैं चाहैरेंड़ारूखको चंदनकरैं चाहैअंधाको तीनउलोक देखायदेय चाहै पंगुको सुमेरु कुमेरु नँघायदेय चाहेगूंगाको ज्ञान कहवायदेइँ चाहैआकाश को बांधिके पताल पठावैं चाहै पातालबासी जे शेष तिनको स्वर्गपर राखैं या सामर्थ्य उनमेंहै श्रीरामचन्द्रतौ राजाहैं तामेंपमाण ॥ राजाधिराजस्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्वेषां रामएवनसंशयः ॥ औ उनहीं की भयते सूर्य चन्द्रमा अवसरमेंउये हैं औ मृत्यु जब समय आवैहै तबखायहै तामेंप्रमाण ॥ यद्वयाद्वातिवातो यं सूर्यस्तपतियद्वयात् वर्षतीं द्रोदहत्यग्नि मृत्युश्चरतिपंचमः इतिश्री मद्भागवते २५ इतितेईसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथचौबीसवांशब्द ॥

अबधूसोयोगी गुरुमेरा। जोई पदकाकरै निबेरा १ तरुवरएक मूलबिन ठाढ़ो बिनफूलेफल लागा। शाखापत्र कछूनहिंवाके अष्टगगनमुखजागा २ पौबिनु पत्र करह बिनु तुम्बा बिन जिह्वागुणगावै । गावनहारके रूप न रेखा सतगुरुहोइ लखावै ३ पक्षी खोजमीनको मारग कहैकबीर दोउ-भारी। अपरमपार पारपुरुषोत्तम मूरतिकीबलिहारी ४ ॥

अबधूसोयोगीगुरुमेरा । जोईपदकोकरैनिवेरा १
तरुवरएकमूलविनठाढ़ोबिनफूलेफललागा ।
शाखापत्रकछूनहिंवाकेअष्टगगनमुखजागा २

बधूजाके न होइ सो अबधू कहावै सो हे अबधू जीवो जो यह पदके अर्थको निवेरा करिकै जानै सो योगीगुरुकहे श्रेष्ठहै औ मेराहै कहे मैं वाको आपनो मानौहौं १ एक जो तरुवरहै सो बिनामूल ठाढ़ोहै अरु वामें बिनाफल फललागोहै सो यहां तरुवर मनहै सो जड़है अरु आत्मा चैतन्यहै शुद्धहै जो कहिये आत्मा उत्पत्तिहै सो जो आत्माउत्पत्तिहोतो तौ आत्माचैतन्यहै मनौ होतो ताते आत्माते नहीं उत्पत्ति भयो यह आपई आत्माते प्रकाशभयो जो विचारैतौ वाकोमूल भगवत् अज्ञान सत नहीं है बिनामूल ठाढ़ोभयो है अरु बिना फूलै फललागोहै कहे जगत उत्पादक क्रिया मननहीं कियो मिथ्या संकल्प मात्रते जगद्रूप फललाग-वई भयो अरु वाके शाखापत्र कछू नहीं है अर्थात् अंगनहीं है चित्तबुद्धि अहंकार येऊ मिथ्याहैं निराकार हैं अरु यह मनै के मुखते आठौ गगन जागतभये सातसप्तावर्णके आकाश अथवा चैतन्यकाश २ ॥

पौबिनुपत्रकरहबिनुतुम्वाविनुजिह्वागुणगावै।
गावनहारकेरूपनरेखा सतगुरुहोइलखावै ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब श्री कबीरजी जीवात्माको वृक्षरूप ह्वैकै बर्णन करैहैं पौबिनु कहे आत्माको जगत्को अंकुर नहीं है मनके संयोगते दुःख सुखरूप पत्रदुइ लागबेईकियो औ करहूजो कर्महै सो नहीं रह्यो आत्मामें जगतरूप तुम्बा लागबेईकियो यह जीवात्माकी दशा काहेतेभई कि बिनुजिह्वा जोहै निराकार ब्रह्म ताके जेगुणहैं देशकालबस्तु परिच्छेदते शून्यत्व सो आपने में लगावनलग्यो येगुणमोहीमें हैं मेरोस्वरुप यही है सोजो या आपनेको ब्रह्ममान्यो तौ आत्माके ब्रह्मकेरूपको रेखनहीं है काहेते याको देशबनो है समष्टि जीवलोक पकाशमें रहैहै औकाल बन्योहै जौने कालमें समष्टि ते व्यष्टि होयहै औ यो देशकाल बस्तुपरिच्छेदते सहित है काहेते अणुहै भगवद्दासाहै तामेंप्रमाण ॥ वालाग्रशतभागस्यशतधाकल्पितस्यच ॥ भागो जीवःसविज्ञेयः सचानंत्यायकल्पतेइतिश्रुतिः अंशोनानाव्यपदेशात्ते ३ ॥

पक्षीखोजमीनकोमारगकहकबीरदोउभारी।
अपरमपारपारपुरुषोत्तममूरतिकीबलिहारी ४

तातेमीनकी नाईं संसारते उलटीगति चलिकै पक्षी जो हंसस्वरूप आपनो ताको खोज कबीरजी कहैहैं ये दोऊ भारीहैं संसारते उलटीगति होइबो यहभारीहै आपनोहंसरूप पाइबो यहूभारीहै सोसंसारते उलटी गतिकरि हंसरूप पाइकै परमपरजो आत्मारूप पार्षदरूप ताहूते उत्तमजे परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र तिनकी बलिहारी जाय भाव यहहै तब तेरो जनन मरण छूटैगो ४ इतिचौबीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथपचीसवांशब्द ॥

अबधूवोत तुराबलराता। नाचैबाजन बाजबराता १ मौरकेमाथेदूलह दीन्हो अकथाजोरिकहाता। मड़ये के चारन समधीदीन्हो पुत्रबिवाहल माता २ दुलहिनि लीपिचौकबैठाये निरभय पदपरभाता। भातहिं उलटि बरातहिखायो भली बनीकुशलाता ३ पाणिग्रहण भयेभवमंडौ सुखमनि सुरतिसमाता। कहैकबीरसुनोहोसंतो बूझो पंडितज्ञाता ४ ॥

अबधूवोततुराबलराता। नाचैबाजनबाजबराता १

हे जीवौ आपतौ अबधू रहेहौ कहे आपके बधूजोहै मायासो नहीं रहीहै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंतु रौरेअबवह तत्त्वमेंरातेहैं अथवा हेअबधू यहशरीरको राजाहै जीवसो अब वहतत्त्वनमें रताहै कौन तत्त्वमें राताहै सो कहैहैं जहां बाजन नाचैहै बरात बाजैहै सो इहां शरीर बाजनहै सो नाचैहै कहे जागृत अवस्था में स्थूल स्वप्न अवस्थामें सूक्ष्म औ सुषुप्तिमें कारण तुरिया में महाकारण येई नाचैहैं तिनको जब इकट्ठाकियो अर्थात् एकाग्र मनकियो उनमुनी मुद्रा आदिक साधन करिकै तब पचीसौ जे तत्त्व हैं तेई बरात हैं तेई बाजे हैं कहे तिनको जो संघट्ट ह्वै बोहै इन्द्रिनमें तिनते जो ध्वनि निकसै है तेई दशौ अनहदकीध्वनि सुनिपरतीहैं तामेंप्रमाण ॥ उठतशब्दघनघोर शंख ध्वनिअतिघना । तत्त्वोंकी झनकार बजतझीनीझना १ ॥

मौरके माथे दूलह दीन्हो अकथाजोर कहाता ।
मड़येकेचारन समधीदीन्हो पुत्रबिवाहलमाता २

नाभीमें चक्रहै तामें नागिनीको बासहै चक्रके द्वारमें मूड़दिये परी है आत्मानीचेहै सोवहआत्मा दूलहहै ताहीकी नागिनी मौर ह्वै रहीहै सोजब पांचहजार कुंभक कियो तब नागिनी जागी सो ऊपरको चढ़ी तब चक्रको द्वारखुलिगयो तब आत्मातो दूलहहै सो चढ़िकै मौर जो नागिनीहै ताके माथेपर गैव गुफामें बैठ्योजाइ औबरातनमें जो नहीं कहिबेलायक झूंठी बातसो गारी में कहैहैं इहां शरीर में ब्रह्म ह्वैजैबो अकथहै कहिबे लायक नहीं है सो कहै हैं किहम ब्रह्मह्वै गये औ मड़ये के चारनको नेग समधी देइहै इहांमड़येके चारनके नेगनमें समधीही दीन्होहै मायाको पिताजो मनहै सो एक समधीहै औ मनके समधी साहबहैं काहेते कि यह जीव भगवद्दास्यको पात्र है जबयह आत्मा बिषयन में रह्यो है तब बेजाने कबहूं कहतहू सुनतरह्यो जबते ब्रह्मांड मड़वामें गयो तबते कबीर जी यहकूट करैहैं कि मड़ये के चारनमें समधीको दैराख्योहै कहे समधी जो साहबताको कहिबो सुनिबो मिटिगयो सो जानैतो यहहै किहम मायाते छूटिगये पै नागिनीको जैबुन्द सुधा देइहै तैबर्ष वहांसमाधि लागैहै सोनागिनीही वहां गहि राखैहै सो पुत्रजो जीवहै सोमाता जो मायाहै ज्योति रूप आदिशक्ति ताको बिवाहि लैयहै कहेवाहीके संग ज्योतिमें लीनह्वैके वहां रहैहै २ ॥

दुलहिनि लीपि चौक बैठाये निर्भय पद परभाता ।
भातहि उलटि बरातहि खायो भलीबनीकुशलाता ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौकलीपिकै दुलिहिन बैठावैहैं यहां दुलहिन जोहै माया जो जगतरूप करिकै नानारूपहै ताको लीपिकै एककरिडारयो कहे एक ब्रह्महीं मानत भयो ताकेऊपर चौकबैठायो कहे चौकदेतभयो अर्थात् अंतष्करणावच्छिन्न जो चैतन्य सो प्रमातृचैतन्य कहावैहै वृत्त्यवच्छिन्न जो चैतन्य सो प्रमाण चैतन्य कहावै है विषयावच्छिन्न चैतन्य प्रमेय चैतन्य कहावै है स्फूर्त्यवच्छिन्न चैतन्य फूल चैतन्य कहावै है सो ये चारों चैतन्य को चौकबैठायो कहे चौक पूरयो अर्थात् चारो चैतन्यको एक करिकै स्थिति कियो बिवाह होतहोत भिनसार होइजायहै तब यहमन भयो कि हम निर्भय पदको पहुंचिगये प्रभात ह्वैगयो मोहरात्री व्यतीत ह्वैगई नागिनीको जो अमृत सरोवरमें अमृत पिआवैहै सोईभातहै सोनागिनी जब अमृतपियो तब वहैभात बरात जोआगेबर्णन करिआये पांचतत्त्व पचीसप्रकृति ताको खाइलियो अर्थात् कुछ सुधिनरहगई सोकबीरजी कहैहैं कि भलीकुशला तबनीहै कि तबतो कुछसुधिहू रही अबकछू सुधिनहीं रहिगई ३ ॥

पाणिग्रहणभये भवमंड्यो सुषुमनि सुरति समाता ।
कहैं कबीरसुनो हो संतो बूझो पंडित ज्ञाता ४

यहां मंडवपरेपर पाणिग्रहण होयहै यहां पाणिग्रहण भये पर भवमंड्यो अर्थात् जब पाणिग्रहणमायाकोह्वै चुक्यो कहेनागिनो को जबसुधा पिआइ चुक्यो तबजैमुहँ नागिनीको पानीदियो एक मुंहदियो तौमहीना भरे की समाधि लगी औ दुइमुंहदियो तौ तीन महीनाकी समाधिलगी औ चारि मुंह दियो तौछः महीनाकी समाधिलगी औ पांचमुंह दियोतौ बर्ष दिनकी औ छःमुंहदियो तौतीनबर्षकी औ सातमुंहदियो तौ बारहबर्षकी समाधि लगीऔर जोहजारनबर्ष समाधि लगावाचाहै तौ और मुंहदेय सोजब नागिनीकोसुधापिआयो तबजैमुंहदियोतेतनेनदिन भरसुषुमनिसुरतिसमाता अर्थात् सुषुम्णामें जीवकी सुरति समाइहै पुनि जबसमाधि उतरी तबफिर भवमंड्यो कहे संसारीभयो अर्थात् पुनि ब्रह्मांडमंड्यो कि शरीरकी सुधि भई सोकबीरजी कहै हैं किहेसंतो हेज्ञातापंडितो तुम सुनौतौ बूझौ तौवे कहांमुक्तिभये नहीं भये फेरितौ संसारहीमें उलटिआवैहैं ४ इतिपचीसवां शब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथछब्बीसवांशब्द ॥

कोइबिरला दोस्तहमारा भाईरे बहुतका कहिये। गाठन भजन सवारै सोइ ज्योंराम रखै त्यों रहिये १ आसन पवनयोग श्रुति संयम ज्योतिष पढ़िबैलाना। छौदर्शनपाषंड छानबे येकल काहु न जाना २ आलम दुनी सकल फिरिआये कलि जीवहि नहिं आना। ताही करिकै जगत उठावै मनमेंमनन समाना ३ कहै कबीर योगी औ जंगम फीकी उनकी आसा। रामैरामरटै ज्यों चातक निश्चय भगति निबासा ४ ॥

कोइ बिरला दोस्त हमारा भाईरे बहुतका कहिये।
गाठन भजन सवारैसोई ज्योंराम रखै त्यों रहिये १

कबीरजीकहैहैं किहेभाइउ जीवौ और और बहुत मतवारे तौ बहुतजीव हैं तिनको कहा कहिये रामोपासकहमारो दोस्तजैसेहमगाठ भजन करिकै रामचन्द्रको देखरहेहैं ऐसे ऐसे वहगाठ भजन करिकै रामचन्द्र को देखै रहै औ जैसे हमको रामराखैहै तैसही रहैहैं ऐसे वहूरहै क्षणभरि न भूलै ऐसाकोई बिरलाहै १ ॥

आसन पवन योगश्रुति संयमज्योतिषपढ़ि बैलाना।
छौदर्शन पाषंड छानबे येकल काहु न जाना २

अबबहुत मतवारे जे बहुतहैं तिनकोकहैहैं कोईआसनदृढ़ करैहै कोई पवनसाधैहै कोईयोग करैहै कोई वेद पढ़ैहै कोई संयम करैहै कोई ब्रत करैहै कोई ज्योतिषपढ़ैहै सो येसब बैकलाइगये जोबैकल होइहै सोझूठ को सांचजानैहै औ सांचको झूठमानैहै सोछःदर्शन छानबे पाषंडवारे जे ये सबहैं एकल कहेएक स्वामीसबके परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको न जान्यो अथवा एकल कहे जौने करतेमैं उपासना करौहौं सोकोई नहीं जानैहै २ ॥

आलमदुनीसकलफिरिआये कलिजीवहिनहिंआना।
ताहीकरिकै जगत उठावै मनमें मनन समाना ३

आलमकहे सबजीव दुनियामें फिरिआये गुरुवा लोगनके यहां याकल जौनेकस्ते मैं उपासना श्रीरामचन्द्रकी करौंहौं सोआपने जियमें न आनत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भये जातेंसंसार छूटिजाय साहब मिलैं जेनानामत आगे कहिआये ताही करिकै जगत्को उठावैहै किजगत् उठिजाय मरिहि जाइ सो यहजगत्तो मनरूपहीहै सोउनके मनमेंमनरूप जगत्नसमान्यो अर्थात् उनकोमिथ्या कियो न करिगयो अथवा धोखाब्रह्म ताको मनकहे बिचार उनके मनमें समाइ रह्योहै ताहीकरिकै जगत् को उठावैहै कि जगत नरहिजाइ सोऊ न उठ्यो ३॥

कहैकबीर योगीओ जंगम फीकी उनकी आशा।
रामैनाम रटैज्यों चातृक निश्चय भक्तिनिवाशा ४

सो कबीरजी कहैहैं कियोगी जंगमनकी सबकी आशा फीकीहै काहेते धोखाब्रह्मके ज्ञानते संसार मिथ्यानहीं होइहै जीवनके ब्रह्महोबेकीआशा फीकीहै सोजो रामनाम निशिबासर लेवहै औ जैसे चातक एक स्वाती हीकी आशा करैहैं तैसे परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रकी आशाकरै है ताहीके हृदयमें उनकी भक्तिकोनिश्चयकै निवास होइहै भक्तिरसरूपहै यातेइनकी आशासरिसहै अर्थात्सफलैहै औ सोई संसार सागरते उबरै है सो आगे रमैनी में कहिआये हैं॥ कहै कबीरते ऊबरे जो निशिबासर नामहिलेव १ इतिछब्बीसवांशब्दसमाप्तम्॥

अथसत्ताईसवांशब्द॥

भाई अद्भुत रूप अनूप कथाहै कहोतो को पतिआई। जहँ जहँ देखो तहँ तहँ सोई सबघट रह्यो समाई १ लछिबिनु सुख दरिद्र बिनु दुख है नींदबिना सुखसोवै। जसबिनु ज्योति रूपबिनु आभिक रतन बिहूना रोवै २ भूमबिनुज्ञान मनैबिनुनिरखै रूपबिना बहुरूपा। थितिबिनुसुरति रहस बिनु आनँद ऐसो चरित अनूपा ३ कहै कबीर जगतबिनु मानिक देखो चित अनुमानी। परिहरिलाभैलोभकुटुम्ब सबभजहु न शारँगपानी४॥

भाईअदभुत रूपअनूप कथाहै कहोतोकोपतिआई।
जहँजहँ देखौ तहँतहँ सोई सबघट रहो समाई १

जाति करिकै सबजीव एकहीहै ताते जीवनको भाईकह्यो कि हे भाई जीवौ वेजेहैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको अद्भुतरूपहै अरुवह रूपकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनूपकथाहै सोमैं जोवाको दृष्टांत दैके समुझाऊहौं कियाकोरंग दूबादलकी नाईंहै अरसी कुसुमकी नाईं नीलकमलकी नाईं तौ येई सबमें भेदपरै एकएककी तरहनही है वहतो मनबचनके परेहै ऐसैनाम रूपलीला धाम सबहै वाकोतौ कैसे समुझाऊं काहेते जोमैंवाको समुझाइकै कहौं तौ कैसे कहौं औजो कहबऊकरौं तौ कोईपतिआयकैसे सो यहितरहको जोयाको रूपहै सो जहांजहां देखौहौ तहांतहां वहैरूप देखायहै काहेते कि सबघटमें समाय रह्योहै यहां सबघटमें समान्यो जोकह्यो ताते चितहू अचितहू में समाइ रह्योहै यह आयो जो व्यापपदार्थहैजीव ब्रह्ममाया कालकर्म सुभाव ताहीको सबदेखैहैऔ जोव्यापक पदार्थहै ताको कोईनहीं देखैहै जोचितहू अचितमें जोकहो वहीधोखा ब्रह्मको तुमहूं कहतेहो जो सर्वत्रफैलिरह्योहै तौ वाको कोईनहीं कहतेहैं काहेते कि अद्वैतबादीकहैहैं कि सबपदार्थ वही ब्रह्महीहै वातें भिन्न दूसरोपदार्थ नही है औहमकहैहैं किसब पदार्थचित अचित रूपते व्याप्यहै औ हमारो साहब सर्वत्र व्यापक है सोजाको बिश्वासहोइ ताको वे साहब साकेतनिवासी परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सहज ही प्रकटहै जायहैं सो जोमैं कहौहौं ताको नहीं प्रतीति करैहैं जितजोहै जीव औब्रह्मताहूमेंश्रीरामचन्द्रव्यापकहैं तामेंप्रमाण॥ ओंयोवैश्रीरामचंद्रस्य भगवान्द्वैतपरमानंदात्मायः परंब्रह्म तिरामतापिन्याम् ॥ जीवहूमें व्यापकहै तामेंप्रमाण ॥ यआत्मनितिष्ठन्यमात्मानवेदयस्यात्माशरीरमिति ॥ मायादिक सबमें व्यापकहै तामेंप्रमाण ॥ यस्यभासासर्वमिदंविभातीति श्रुतिः १ ॥

लछिबिनुसुखदरिद्रबिनुदुखहैनींदबिनासुखसोवै ।
जसबिनुज्योतिरूपबिनुआंखिकरतनबिहूनारोवै २

कैसो साहब सर्वत्र पूर्ण हैं सो बतावैहैं लछिबिनु सुखकहे जो पदार्थ प्रत्यक्ष नहीं होइ है तामें सुख नहीं होयहै देखो तोनहीं परै है साहब पै जो कोई स्मरण करैहै सर्वत्र ताको सुखहोयहै साहबको कौनो बातको दरिद्र नहीं है जोचाहै सो करिडारै समर्थ है परंतु नानाजीवनको अज्ञानमें परे देखिकै साहिबोको यहीदुखहै कि मेरे अंशजीव मायामें परिकै नरक स्वर्ग जायहैं काहे ते या दुखहै कि साहब अतिदयालुहैं तामें प्रमाण॥ तावन्निष्ठतिदुःखीवयावहुःखंननाशयेत्। सुखीकृत्यपराभक्तान्स्वयम्पश्चात्सुखी भवेत् इति ॥ ध्वनियहहै कि साहब दयालहैं ते सर्वत्र पर्णहैं या बिचारिकै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि जीवमोको जहँ स्मरणकरै मैंतहँ उबारिलेउं फिरिकैसो साहबहैकि मोह निद्रानही है सदाजगैहै अपनेभक्तनकी रक्षाकरिबेकोऐसेहूसाहबके सन्मुख जोजीव नहीं होइहै तिनकीओर सदा सुखमय साहबसोवैहै अर्थात्कबहूं नहीं देखैहै फिरि कैसो साहबहै जाकी ज्योति जो ब्रह्महै अर्थात् जाको लोकपूकाश जोहै ब्रह्म सोबिना कौनो कथैहै वा कौनो लीलैकियो अकथहै ऐसे साहब के बिना रूपमें आशिकभये साहबको ज्ञानरत्न बिहीना जीव संसारमें जनन मरण पाइपाइ रोवैहै २ ॥

भ्रमबिनुज्ञान मनैबिनुनिरखै रूपबिनाबहुरूपा ।
थितिबिनुसुरतिरहसबिनुआनँदऐसोचरितअनूपा३
कहै कबीरजगतबिनुमाणिक देखौचितअनुमानी ।
परिहरिलाभैलोभकुटुम्बसब भजहुनशारँगपानी ४

फिरिकैसोहै साहब भ्रमबिनाहै अर्थात् कबहुंमाया सबलितहैकै जगत् मैंही उत्पत्ति कियो सदाज्ञान गुणहै सदाज्ञान स्वरूपहै तौने साहब को मानै बिन निरखै कहे मन बिना हैकै हंसस्वरूप पाइकै तैं देखै कैसेहैं साहब कि चित् अचित् जेरूप हैं तेहि बिनाहैं अर्थात् ये स्पर्श नहीं करि सकैहैं औ चित् अचित्के शरीरीहै बहुत रूपौहैं सबउन्हीं के रूपहैं फिरि कैसेहैं जब साहब सुरति दीनहै तबजीवनकी स्थितिभईहै औ सुरति नहीं है साहबकी स्थिति वालोकमें बनीहै औ आनंदजो मनबचनमें आवैहै सो नहीं है वहां आनंद बनेाहै ऐसे साहबके अनूप चरितहैं अर्थात् जो रहस कहिआये सोऊमनबचनकेपरेहै सो कबीरजी कहेहैं कि जोचित्तमें अनुमान करिदेखौ तौ यावत् उपासना औ ज्ञान तुम करौहौ जगत् मुक्तिरूपमाणिक काहूते न मिलैगी ऐसी मुक्तिके लाभको लोभत्यागिकै औ सब कुटुम्ब जे गुरुवालोग तिनको त्यागिकै शारंगपानी कहे धनुषको लीन्हे साहब तिन को काहे नहीं भजौहौ अर्थात् भजौ ४ इतिसत्ताईसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथअट्ठाईसवांशब्द ॥

भाईरे गैयाएकबिरंचिदियोहै.भारअभरभोभाई । नौनारीकोपानिपियति है तृपा तऊ न बुताई १ कोठाबहत्तरिचौलोलाये बजूकेंवारलगाई । खुंटा गाड़िडोरीदृढ़बांधो तहिवोतोरिपराई २ चारिवृक्षछौशाखावाके पत्रअठारह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई । एतिकलैगैयागमकीन्हो गैयाअतिहरहाई ३ ईसातौअबरणहैं सातौ नौओचौदहभाई । एतिकगैयैखाइबढ़ायो गैयातौनअघाई ४ खूंटामेरातीहै गैया श्वेतसी गहैंभाई । अबरणबरण ककुवनहिंवाके भक्षअभक्षौखाई ५ ब्रह्माबिष्णुखोजकैआये शिवसनकादिकभाई । सिद्धअनंतवहिखोजपरे हैं गैयाकिनहुं नपाई ६ कहैकबीर सुनोहोसंतौ जोयापदअरथाई । जोया पदकोगाइबिचरिहै आगेह्वै तरिजाई ७ ॥

भाईरेगैयाएकबिरंचिदियोहैभारअभरभोभाई।
नौनारीकोपानिपियतुहै तृषातऊनबुताई १

हेभाई जीवौ एकबाणीरूप गैया तुमहीं सबको बिरंचि जेब्रह्माहैं तेदियो है सो गैयाको जो तात्पर्य दूधहै ताको तुम नपायो गैयाको भारा अभरह्वै गयो तुम्हारो सँभारो न सँभारिगयो अर्थात् जोजो बाणीमें बिधि निषेध लिखैहै सो तुम्हारो कियो एकौ नहीं ह्वै सकैहै सोये मायिक बिधिनिषेध तो तुम्हारेकिये ह्वै नहीं सकैहै बाणीजो तात्पर्य वृत्तिते बतावैहै सो तो अमायिकहै कैसेजानौगे वहगैयाकैसीहै सो बतावैहैंनौकहै नवौजे व्याकरण हैं तिनकी जोनारी कहे राहहै तिनकर जो शब्दरूपी जलहै ताको पियैहै अर्थात् वोहीके पेटते वेदशास्त्र सब निकसैहैं औ वोहीके पेटमेंहैं तेशास्त्र वेद वोही नवो व्याकरणके शब्दरूपी जलतेशोधे जायहैं अर्थात् वहीबाणी मेंजल समाइहै परंतु तृषा तबहूं नहीं बुझाइहै कहे वोही नवौव्याकरण करिकै शोधैहै शास्त्रार्थ करतही जायहै बोध नहीं होइहै कि शुद्ध ह्वै गयो पुनि प्रणीतनमें आर्ष कहिदेयहै १ ॥

काठाबहत्तरिओलौलाये बज्रकेंवारलगाई ।
खुंटागाड़िडोरीदृढ़बांधो तहिवोतोरिपराई २

पतंजलि शास्त्रवाले वही गायत्री गैयाको बांधन चह्यो बहत्तरिउ कोठाते लैलगाइकै कहे श्वास खैंचिकै खेचरी मुद्राकरि घेटीटीके ऊपर बज्र कपाट जो लग्योहै ताको जीभते टारयो तब वहां अमृत अवो तब नागिनी उठी श्वासाके साथ ऊपरको चढ़ी ताके साथ आत्मौ खूंटा जो ब्रह्माण्डहै ब्रह्मज्योति तहां पहुंच्योजाइ सो ज्योतिरूप ब्रह्मखूंटाहै तामें प्रणागिनी जो गैयाहै ताको बांध्यो तहिवो तोरि पराई कहे जब समाधि उतरी तब फिरि जसकोतस संसारी ह्वैगयो नागिनीशक्ति उतरिआई पुनि जीवनको संसारमें डारिदियो २ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारिवृक्षछौ शाखावाके पत्रअठारह भाई।
एतिकलैगैयागमकीन्होगैयातउनअघाई ३

पतंजलि शास्त्रमें योग क्रिया है सो कायाते होय है ताते अलग कह्यो अब सब मेटिकै कहेहैं चारि वेदजेहैं तेई वृक्षहैं औ छइउ शास्त्रजे हैं तेई शाखाहैं अठारहौपुराण पत्रहैं सो एकलैकहे यहांलगे गैयागमनकै जातभई कहे प्रवेश कैजातभई सो गैया बड़ी हरहाईहै अर्थात् जहां जहां आरोप कियो तौनि तौनि वह खायलियो अर्थात् जौनजौन आरोप कियोहै तौन वाके पेटते बाहर नहीं है भीतरहीहै ३ ॥

ईसातौअबरनहैं सातौ नौऔ चौदहभाई।
एतिकगैयाखायबढ़ायो गैयातउनअघाई ४

ईसातौ जे कहिआये छःचक्र औ सातौ सहस्रार जहां ब्रह्मज्योति में जीवको मिलावै है अरु सातौ आवर्ण जेहैं पृथ्वी अप तेज वायु आकाश अहंकार महत्तत्व अथवा सातौबार काल अरु नौखंड जेहैं अरु चौदहौ भुवन जेहैं सोई सबनको गैया खाइकै बढ़ाइ डार्यो तऊ न अघात भई अर्थात् सब वाणीमय ठहरे ४ ॥

खूंटा में राती है गैया श्वेतसींग है भाई।
अबरणबरणकछुवनहिंवाके भक्षअभक्षौखाई ५
ब्रह्माबिष्णुखोजकैआये शिवसनकादिकभाई।
सिद्धअनंतवहिखोजपरे हैं गैयाकिनहुंनपाई ६

सोवह गैया खूंटा जोधोखा ब्रह्महै तामें रातीहै अर्थात् ब्रह्ममाया सबलितहै अरु वहि गैयाके सींग श्वेतहैं कहेसतोगुणीहै सोई ब्रह्ममें बांधिबो है औ अबरण कहे असत औ बरण कहे सतई वाके कोई नहीं है अर्थात् सत असतते बिलक्षणहै अथवा अबरण कहे नहीं है बरण जाके ऐसो निरक्षर ब्रह्मनाम रूपादिक नहीं है जाके औ बरणकहे अक्षर ब्रह्मजीवईदोनों नहीं हैं वाके अर्थात् ईदोनों ते बिलक्षणहै औ भक्ष अभक्षौ खाइहै कहे जो कर्म करावन लायकहै सो करावैहै औ जोकर्म करावन लायकनहीं है सोऊ करावैहै अर्थात् विद्या रूपते शुभकर्म औ अविद्या रूपते अशुभकर्म करावै है सो वाको शिवसनकादिक ब्रह्मा बिष्णु महेश अनंत सिद्ध खोजमरे पै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया कोऊ न खोजे पायो कि सत है कि असत है तात्पर्यऊ न जाने ६ ॥

कहै कबीरसुनोहो संतो जो यापदअरथाई।
जोयापदकोगाइबिचरिहै आगेह्वैतरिजाई ७

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेसंतो सुनौ जो यह पदको अर्थ है कहे अर्थ बिचरिहै औ जौन पद हम बर्णन करिआये सब ब्रह्मांड सप्तावर्ण आदि दैकै जेपदहैं कहे स्थान तिनको जो कोई गाइकहे मायाको रूपही बिचारै गौ कि यहां भरतो मायाहीहै सो मायाके आगे ह्वैकै साहबको लोक बिचरैगो सोई तरैगो ७ इतिअट्ठाईसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथउनतीसवांशब्द ॥

भाईरेनयन रसिकजोजागै। परब्रह्म अबिगतअबिनाशी कैसेहुकैमन लागै १ अमलीलोग खुंभारीतृष्णा कतहुंसँतोषनपावै। कामक्रोध दोनों मतवाले मायाभरिभरिप्यावै २ ब्रह्मकलालचढ़ाइनिभाठी लैइंद्रीरसचाखै। सँगहिपोचह्वैज्ञानपुकारै चतुरहोइसोनाखै ३ संकटसोच पोचयाकलिमें। बहुतकव्याधिशरीरा। जहँवाँधोरगँभीरअतिनिर्मलतहँउठिमिलहुकबीरा ४

यहांमायाकेपरे जेसाहबहैं तिनकोबतावैहैं ॥

भाईरेनयनरसिकजोजागै।
परब्रह्मअबिगतअबिनाशी कैसेकैमनलागै १

हेभाइउ नयनरसिक जोहै संसारी चर्मचक्षुते भिन्न भिन्न देखि बिषय रसलेनवारो सो जो जागै कहे मुमुक्षू होइतौ ब्रह्मके पार औ अबिगतकहे बिगत नहीं सर्बत्र पूर्ण औ अबिनाशी कहे जाकोनाश कबहूं नहीं होइहै ऐसे जे परमपरपुरुष श्रीरामचंद्रहैं तिनमें कैसेकै मनलागै जो कैसेहुकै पाठहोय तौ या अर्थहै जो कैसेहुकै मन लगबो करै तौ बीचमें बहुत अवरोधहैं १ ॥

अमलीलोगखुंभारीतृष्णाकतहुंसँतोषनपावै।
कामक्रोधदोनोंमतवालेमायाभरिभरिप्यावै २

सबलोग अमलीहैं बिषय छाड़्यो पैतृष्णाकी खुंभारी लगीहै अरुकहूं संतोषको नहीं पावैहै फिरि काम मतजो कोकशास्त्रादिक क्रोधमत जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्राराक्षसादि ग्रन्थनमें प्रतिपाद्य जेमतहैं तेई प्यालाहैं तिनको कामक्रोध रूपजो मदसो माया भरिभरि उनको पिआवैहै २ ॥

ब्रह्मकलाल चढ़ाइनिभाठी लैइंद्रीरसचाखै ।
सँगहिपोचहोइज्ञानपुकारै चतुरहोइसोनाखै ३

प्रथमतो काम क्रोधादिकनते जागन नहीं पावैहै जो कदाचित् जाग्यो तौ ब्रह्मजो कलारहै जे अहंब्रह्म बुद्धि करैहैं गुरुवालोग ते भाठी चढ़ाइन ज्ञान सिखवैलगे कि तुहीं ब्रह्महै ताहीमें इन्द्रिनको लैकरिकै अहंब्रह्मास्मि को रसचाखन लग्यो अर्थात् ब्रह्मानंदको अनुभव करनलग्यो जो मद पियैहै ताको ज्ञान भूलि जायहै यहै कहैहै कि महीं मालिकहौं सो जो गुरुवालोगनको संगकियो ब्रह्मानंद पानकियो सो मैं साहबकोहौं यह अक्ल भलिगई वही गुरुवा लोगनको ज्ञानदियो पुकारन लग्यो कि महीं ब्रह्महौं जो चतुराहोइ सोबिघ्ननको नाकि जाइहै ३ ॥

संकटशोचपोचयाकलिमो बहुतकव्याधिशरीरा ।
जहँवाँधीरगँभीरअतिनिर्मल तहँउठिमिलहुकबीरा ४

पोचकहे अज्ञानी जेजीवहैं तिनको यह कलिमें कहे मायाब्रह्मके झगड़ा में बहुत संकट शोच औ व्याधिशरीर कोहै सो जहां अति धीरहै कहे चलायमान नहीं है निश्चलपदहै औ गंभीर कहे गहिरहै औ निर्मल कहे माया ब्रह्मकोलेश नहीं है सो हेकबीरकायाकेबीरजीवोमाया ब्रह्मके तुम परेहौ तहांते उठिकै कहे माया ब्रह्मके बिघ्ननते निकसिकै साहबको मिलो तबहीं तिहारो जनन मरण छूटैगो ४ इतिउनतीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथतीसवांशब्द ॥

भाईरेदुइजगदीशकहांतेआये कहुकवनेभरमाया ।अल्लारामकरीमकेशव हरि हजरतनामधराया १ गहनाएककनकतेगहना तामेंभावनदूजा । कहन सुननकोदुइकरिथापे यकनेवाजयकपूजा २ वहीमहादेववहीमहम्मद ब्रह्मा आदमकहिये । कोइहिंदूकोइतुरुककहावै एकजिमीपररहिये ३ वेदकिताब पढ़ैवेकुतुबा वेमोलनावेपांड़े । बिगतबिगतकैनामधरायो यकमाटीकेभांड़े४ कहैकबीरवैदूनौभूले रामहिंकिनहुंनपाया । वेखसियावेगाइकटावैं बादैजन्म गमाया ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब यहां यह बर्णन करे हैं कि दूसरो जगदीश नही है परमपुरुष जे श्रीरामचंद्रहैं तेई जगदीशहैं ॥

भाईरेदुइजगदीशकहांतेआये कहुकौनेभरमाया।
अल्लारामकरीमकेशव हरिहजरतनामधराया १
गहनाएक कनकतेगहना तामें भावनदूजा।
कहनसुननकोदुइकरिथापे यकनेवाजयकपूजा २

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेभाइउ दुइजगदीश कहांते आये तोको कौने भरमायोहै अल्ला राम करीम केशव हरि हजरत येतौ सबनाम भेदहैं कहत तो एकही कोहैं १ जैसे एक गहनाको सुबर्णते गहना कहे गहिलेइ कहे सुवर्ण बिचारिलेइ तामें भाव दूजा नही है वह सुवर्णहै जैसेकोई चूड़ा कोई बिजायठ इत्यादिक नामकहैहैं परंतुहै सुवर्णही तैसे कहिबे सुनिबे को दुइकरि थाप्योहै यकनेवाज यकपूजा परंतुहै सब साहबकी बंदगीही परमपरपुरुष श्रीरामचंद्रहीको सेवैहैं २ ॥

वहीमहादेववहीमहम्मद ब्रह्माआदमकहिये।
कोइहिंदूकोइतुरुकहावै एकजिमीपररहिये ३

वोही परम परपुरुष श्रीरामचंद्रको महादेव औ महम्मद औ ब्रह्मा औ आदम सब कहिये कहे कहतभये कोई रामकहिकै कोई अल्लाह कहिकै कुरानमें लिखैहै कि सब नामनमें अल्लाहनाम ऊपरहै औ यहां वेदपुराण में लिखैहै कि सब नामनमें रामनाम ऊपरहै तामेंप्रमाण ॥ सर्वेषामपि मंत्राणांराममंत्रंफलाधिकम्॥ इति ॥ सहस्रनामतातुल्यरामनामवरानने ॥ याते सबके मालिक परमपुरुष श्रीरामचंद्रही जगदीशहैं दूसरो जगदीश नही है उनही के अल्लाहनामको सबनामनतेपरेमहम्मदकुरानमें लिख्यो है औ उनही नामको महादेवने तंत्रमें लिख्योहै औ ब्रह्मा वेदमें कहतभये आदम किताबमें कहतभये अरु इहांतो एकजे परमपुरुष श्रीरामचंद्रहैं तिनहीं के जिमीमें कहे जगत्में रहतभये नामके भेदते कोई हिंदू कोई मुसल्मान कहावैहैं ३ ॥

वेदकिताब पढ़ैं वेकुतुवा वेमोलनावेपांड़े।
बिगतबिगतकेनामधरायो यकमाटीकेभांडे ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनके पोथी जमा होयहैं ते कहावैं कुतुवा वे वेदपुराण जमाकैकै पढ़ैं हैं वे किताब जमाकैकै पढ़हैं वै पंडित कहावैहैं ये मोलना कहावैहैं वेद पढ़िकै पंडित किताब पढ़िकै मोलना कहावैं बिगत बिगतकहे जुदा जुदा नामधरायलेते भयेहैं एकई माटीके भांड़ेकहैहैं सब पंचभौतिकहीहैं ४ ॥

कहकबीर वे दूनोभूले रामहिंकिनहुं न पाया ।
वेखसिया वेगाइकटावैं बादै जन्मगवाँया ५

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हिंदूतौ बोकरा मारिकै मुसल्मान गाइमारिकै नानाप्रकारके बाद बिवाद करिकै अथवा बादैकहेवृथाहीदोऊभूलिकै जन्म गवाँइ दियो परमपुरुषपर जेश्रीरामचन्द्र तिनको न पावतभये हिंदू तुरुक के खुदखाविन्द एकईहै कोई बिरलेजानैहैं ते वहां पहुचैहैं तामेंप्रमाण॥ छोड़ि नासूतमलकूत जबरूत लाहूत हाहूत बाजी। और साहूतगाहूतइहां डारिदेकूदि आहूत जाहूत जाजी। जायजाहूतमें खुदखाविन्द जहँवही मक्कान साकेत साजी। कहैकबीरहां भिस्त दोजख थके वेद कीताब काहूतकाजी ५ अथतीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथइकतीसवांशब्द ॥

हंसासंशय छूरी कुहिया । गैयापिअैबछरुवै दुहिया १ घरघर सावज खेलै अहेरा पारथ वोटालेई । पानी माहिं तलफिगै भूभुरि धूरि हिलोरा देई २ धरती बरसै बादलभीगै भीटभया पैराऊ । हंसउड़ाने तालसुखाने चहले बीधापाऊं ३ जौलगि करडोलै पगुचलई तौलगिआशनकीजै । कह कबीर जेहि चलत न दीखै तासुबचन का लीजै ४ ॥

हंसासंशयछूरीकुहिया । गैयापिअैबछरुवैदुहिया १
घरघर सावज खेलैअहेरा पारथवोटालेई ।
पानीमाहिंतलफिगै भूभुरि धूरिहिलोरादेई २

कबीरजी कहैहैं कि हे हंसा संशयरूप छूरीते मारिगयो तोको उलटो ज्ञान ह्वैगयो बछरुवा जोहै तैसो तेरोस्वरूप ज्ञानरूप जो दूध ताको गैया जो माया सो दुहिकै पीलियो १ सावज जो या मनहै सो घरघरमें कहे शरीर शरीरमें शिकारखेलैहै पारथ कहे शिकारीजो तैसो वोटालेइहै अर्थात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाना उपासना नानाज्ञान करत फिरैहै पै मन तोको नहीं छोड़ै है साउज ते नहीं बचैहै वाणीरूप जोहै पानी नानाशास्त्र तौनेमें भूभुरि जो सूर्यनके तापते तपित भूमिहोयहै सोभूभुरि कहावै है ऐसे संसार तापते तपितजो तेरा अंतष्कर्ण सो तलफिगयो अर्थात् अधिक अधिक शंका होतभई तिनते अधिक तप्त भयो शीतल न भयो काहे ते कि धूधुरि जो सूखा ब्रह्मज्ञान सो हिलोरा देनलग्यो कहे शास्त्रनमें वही धोखाब्रह्मही देखपरन लग्यो शास्त्रन को तात्पर्य्य जे साहब तिनको न जान्यो २ ॥

धरती बर्षै बादल भीजै भीटभया पैराऊ।
हंसउड़ाने ताल सुखाने चहले बीधापाऊ ३

बुद्धिजोहै सोधरतीहै काहेते सबमतनको आधारयहीहै बाणीरूप पानी बरसैहै कहेनानामतनको निश्चय कैकै प्रगट करैहै अरु यह बाणी जीवही ते प्रथमनिकसीहै सोजीवबादलहै सोभीजै कहेवोई मतनको ग्रहणकियो यह लोकोक्तिहै कि फलाने फलानेमें भीजिरहेहैं कहे आसक्त ह्वैरहेहैं भीट चार्‌यो वेदहैं मर्यादाते पैराउह्वै गये कहे उनकीथाह कोई न पावतभयो अर्थात् तात्पर्य्य करिकै जोपरमपुरुष श्रीरामचन्द्रको बर्णनकरैहै सोकोई न पावतभयो तालसूखे हंसउड़ैहै यहांहंसउड़े तालसूखेहैंजबहंस उड़ो कहे यहजीव निकसिगयो तब तालजो शरीरहै सोसूखि गयो तब बासना जेहैं तेईचहलाहैं तिनमें पाउँ बँधिरह्यो जैसेतलाउ जबसूखेउ औपुनिचौमासे में जब जल बरस्यो तब जसकोतसह्वै गयो तैसे बासनामें पाउ फँसिरह्यो है दूसर शरीर जब पायो तब फिर वही शरीरमें तलाउमें हंसजीव बूड़न उतरान लग्यो सोभाव यह कि उड़नको तोकरैहै शरीर तालते अतैनहीं जाइ सकैहै कोई योनिमें रहै ३ ॥

जौलगि करडोलै पगचलै तौलगि आशनकीजै।
कहकबीर जेहिचलत नदीखै तासुबचन कालीजै ४

जबलग पाउं चलैहै करडोलैहै कहे शरीर बनोहै तबलगि गुरुवालोगन की आश न करिये जो आशकरैगो तो याही भांतिबधिरहैगो सोकबीरजी कहैहैं जेगुरुवालोग नानापदार्थनमें आशलगाइदेइहैं तिनहीं तेनहीं चलत बनैहै तौ तिनकोकह्यो बचनकैसे लीजिये कहेकैसे मानिये अर्थात् उनके यहां न जाइये काहेते किवेसाहबको भुलाइकै औरमेंलगाइदेइंगे संसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीमें फँसो रहैगो यामेंधुनियहहै किजेसंसारतेछूटेहैं रामोपासकहैं तिनही को बचन मानिये तिनही के यहांजाइये ४ इतिइकतीसवांशब्दसमाप्तम्॥

अथबत्तीसवांशब्द ॥

हंसाहो चित चेतु सबेरा। इन्ह परपंच करल बहुतेरा १ पाषँड रूप रच्यो इन्हतिरगुण यहिपाषंडभूल संसारा। घरकोखसम बधिक भोराजा परजाकाधौं करै बिचारा २ भक्ति न जानै भक्तकहावै तजि अमृत बिषकै लियसारा। आगेबड़े ऐसहीभूले तिनहुंन मानलकहाहमारा ३ कहल हमारा गांठी बांधो निशिबासरहि होहुहुशियारा। येकलिके गुरुबड़परपंचीडारि ठगौरी सबजगमारा ४ वेदकिताब दोय फंदपसारा तेफंदेपर आप बिचारा। कह कबीरते हंस न बिकुड़े जेहिमें मिल्यो छोड़ावन हारा ५॥

हंसाहो चितचेतु सबेरा। इन्ह परपंच करल बहुतेरा १
पाषँडरूपरच्यो इन्हतिरगुण तेहिपाषंडभूल संसारा।
घरको खसम बधिकभो राजा परजाकाधौं करैबिचारा २

हेहंसा जीवौ सबेरेते कहे तबहीं ते चितमें चेतकरौ सबेरेते कह्यो ताको भावयहहै कि जब काल नियराइ आवैगो तबकछू न करत बनैगो तिहारे फांसिबेको यहमाया बहुत परपंचकियोहै १ पहिलेपाषंडरूपजोवह धोखाब्रह्महै ताको रच्यो तामेंमिलिकै तिरगुण जे सत रज तमहैं तिनको तिहारे फांसिबेको प्रकट कियो सोतीनों गुणाभिमानी जे तीनों देवताहैं अरु पाषंडरूप जो धोखा ब्रह्महै तामें सबभूलिगये घरको खसम जबस्त्री को बधिक कहे दुःखदेनलाग्यो मारनलग्यो तब स्त्रीकहाकरै तैसेजो राजा प्रजाको बधिक कहे मारनलग्यो दुःख देनलग्यो तब विचारे प्रजा कहा करैं सो यह मनतो सबको मालिक ह्वैरह्यो है सोयही जो सबको दुःख देनलग्यो तौ जीव कहाकरै २ ॥

भक्ति न जानै भक्तकहावै तजि अमृत बिषकैलियसारा।
आगेबड़े ऐसेही भूले तिनहुंन मानल कहाहमारा ३

भक्तिकोतो जानै नहीं हैं भक्तकहावैहैं अमृत जोहै परमपरपुरुष श्री रामचन्द्रकी भक्ति ताको छोड़िकै विषजोहै औरऔरकी भक्ति ताकोसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानिलियोहै सो आगेजे बड़ेबड़े ह्वैगयेहैं तेऊ ऐसेही भूलिगये हमारो कह्यो नहीं मान्यो साहबकी भक्ति छोड़िकै औरऔरकी भक्ति करिकै संसारहीमें परतभये ३ ॥

कहलहमारागांठीबांधोनिशिबासरहिहोहुहुशियारा।
येकलिकेगुरुबड़परपंची डारिठगौरीसबजगमारा ४

सो हमारो कहो गांठीबांधो जो अबहूं हमारो कह्यो न मानौगे साहब की भक्ति न करौगे तौ संसारहीमें परौगे कलियुगके जे गुरुवाहैं ते बड़े परपंचीहैं सब जगका ठगौरी कहे ठगिकै परमपुरुषपर जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी भक्तिको छोड़ाइकै औरऔर मतनमें डारिदेइहैं सो निशिबासर हुशियार रहो अर्थात् निशिबासर रामनामको स्मरण करतरहो साहब को जानत रहो गुरुवालोगनको कहा न मानो ४ ॥

वेदकिताब दोयफंदपसारा तेफंदेपर आपबिचारा।
कहकबीरतेहंसनबिछुरेजेहिमैंमिलोछोड़ावनहारा ५

वोई जे गुरुवालोगहैं ते आइ ये वेदकिताबको फंदा पसारिकै नानामत में करतभये सो वहीफंदमें आपपरतभये औ औरहूको वही फंदमें डारिकै नानामतमें लगायदेतेभये वेदकिताबको तात्पर्य्य न जानतभये सो कबीर जी कहैहैं कि जौने जीवको मैं फंदतेछोड़ाबनहारमिल्योहै औ परमपुरुष में लगाइदियो ते आजलौं नहीं बिछुरे न बिछुरैंगे सो तुमहूं पारिष करिकै मेरो कहो मानिकै हे हसजीवो तुमहूं फंदछोड़ि परमपुरुषपर जे श्री रामचन्द्रहैं तिनमें लगो ५ इतिबत्तीसबांशब्दसमाप्तम् ॥

अथतेंतीसवांशब्द ॥

हंसाप्यारे सरवरतेजेजाय । जेहिसरवर बिच मोतिया चुनते बहुबिधि केलिकराय १ सुखेताल पुरइनि जलछाड़े कमलगयोकुंभिलाइ । कह कबीर जो अबकी बिछुरै बहुरि मिलै कबआइ २ ॥

हंसाप्यारेसरवरतेजेजाय ।
जेहिसरवर बिच मोतिया चुनते बहुबिधि केलिकराय १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखेताल पुरइनि जलछोड़े कमलगयोकुंभिलाइ।
कहकबीरजो अबकी बिछुरै बहुरिमिलैकबआइ २

हेप्यारे हंस सरवर जो शरीरहै ताते जेजायकहे जिनकेशरीरछूटिजाइहैं जौने सरवर शरीरको प्राप्तहोइकै मोतिया चुनैहैं कहे ज्ञानयोगादिक साधन करिकै मुक्तिकी चाहकरैहैं औ बहुबिधिकी केलिकरैहैं जो स्याजे पाठ होयतौ या अर्थहै हे हंसाजीव प्यारो जो सरवर शरीरताको त्यागे जायहै जौन सरवर शरीरमें नानादेवतनकी उपासनारूप मोतीचुने नाना विषयनको भोग कीन्हे सो छोड़ेजायहै १ सो शरीररूपीताल जबसूख्यो कहेरोगकरिकै ग्रस्तभयो तब पुरइनि जलछोड़िदियो अर्थात् वह ज्ञान बुद्धि तुम्हारे न रहिगयो अरु अनुभव जो तुमकरतरह्यो सोई कमलहै सो कुंभिलाइगयो अर्थात् भूलिगयो सो कबीरजी कहैहैं कि यहि तरहते जो अबकी बिछुरै कहेशरीर छूटिजाइ तब पुनिकबै ऐसो शरीर पावैगो चौरासीलाख योनिभटकैगो तबफेरि कबहू जैसे तैसे मिलैगो शरीर छूटे ज्ञान योगादिक साधन भूलिजायहैं तेहिते मानुष शरीर पायकै साहबको जानै वहशरीरहू छूटेनहीं भूलैहै काहेते कि साहबही आपनो ज्ञान देइहै औ हंसस्वरूप देइहै २ इतितेंतीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथचौंतीसवांशब्द॥

हरिजनहंसदशा लियडोलैं। निर्मल नाम चुनीचुनिबोलैं १ मुक्ताहल लिये चोंचलोभावै। मौनरहै की हरिगुणगावै २ मानसरोवर तटकेबासी। रामचरण चित अंतउदासी ३ कागकुबुद्धि निकट नहिंआवै। प्रतिदिनहंसा दर्शन पावै ४ नीर क्षीरको करैनिवेरा। कहैकबीर सोई जनमेरा ५॥

जेसाहबको नहीं जानैहैं तिनको कहिआये अबजे साहबको जानैहैं तिनकीदशा कहैहैं॥

हरिजन हंसदशा लिय डोलैं। निर्मलनाम चुनीचुनि बोलैं १

हरिजे परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रहैं तिनकेजेजनहैं तेहंसदशा जोहैशुद्ध जीव पार्षदरूपता तौनी दशाके लिये सर्वत्र डोलैहैं कहे फिरैहैं यहांहरि जोकह्यो ताकोहेतु यहहै कि अपने भक्तनकी सिगरी बाधाहरै सोहरिकहावैहै सो परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र उनकी सिगरी बाधा हरिलेइहैं तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिनके जन सुखपूर्वक संसारमें फिरैहैं उनको संसार स्पर्श नहीं करैहै अरु जो नाम माया सबलितहै तिनको छोड़ि देइहै औ निर्मल जोनाम राम नामहै मन बचनकेपरे अमायिक ताको चुनिचुनि कहे साहबमुख अर्थ ग्रहणकरिकै औ संसारमुख अर्थ छोड़िकै बोलैहै कहे रामनाम उच्चारण करैहै यहां मनबचनके परे जोनामहै ताको कैसे बोलैहै ऐसोजोकहो तो ये हंसदशालिये डोलैहै कहे जबशुद्ध जीव रहिजाइहै तब साहब अपनी इंद्रीदेइहै तिनते तौनेनामको बोलैहै जैसे सूमा जरिजायहै तब वाकी ऐंठनभर रहिजाइहै तैसे यहशरीरकी आकृतिमात्र रहिजाइहै वहपार्षदही शरीरमें स्थितरहैहै जबशुद्ध शरीर ह्वैजाइहै तब आपनो पार्षदरूप पावैहै यह आगे लिखि आये हैं १ ॥

मुक्ताहललिये चोंचलोभावै। मौनरहै कीहरिगुण गावै २

हंस मुक्ताहल चोंचमेंलिये बच्चनकोलोभावै है जौनबच्चामांगैहै ताके मुंहमें डारिदेइहै ऐसे साधुनकेमुखमें पांचमुक्तिहैं सामीप्य सारूप्य सायुज्य सालोक्य सार्ष्ठ्य तिनतेजीवको लोभावैहै कहे सबयह जानैहै किइनही की दई दैजाइहै जो जौनमुक्तिकी चाहकरिकै उनके समीपजाइहै ताको श्रीराम नामके उपदेश करिकै तौनभावबताइकै मुक्तिदेइहैं औआप मौनही रहैहैं कि साहबके गुणगाइकै छके रहैहैं २ ॥

मानसरोवर तटके बासी। रामचरण चित अंत उदासी ३

औ हंसजेहैं ते मानसरोवरके तटकेबासीहैं अरु वे साधूकैसेहैं कि मन रूपी जो सरोवरहै ताकेतटके बासीहैं कहेमनते भिन्नह्वै रहेहैं जामें हंसकी दशाहै साहबकी दीन ऐसो जो चितमात्र आपनो स्वरूपहै ताकोपरमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनही के चरणमें लगाइ राखैहैं अरु अंतउदासीकहे जोवह धोखाब्रह्ममें अहंब्रह्मास्मि मानिकै आत्माको अंतह्वै जाइ है आपै ब्रह्म मानिलेइ है वहजो है आत्माके अंतह्वैबेको मतधोखा तेहिते उदासी कहे उदासह्वै रहेहैं अथवा अंतजोहै संसार ताते उदास रहैहैं ३ ॥

काग कुबुद्धिनिकटनहिंआवै। प्रतिदिन हंसादर्शनपावै ४
नीर क्षीरको करै निवेरा। कह कबीर सोई जन मेरा ५

तिनके निकट कागरूपी जोकुबुद्धि यहअज्ञानसो निकट नहीं आवैहैतौ और मतकैसे आवै सोकबीरजी कहैहैं कि यहभांति जोचलैहै सोहंसशुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीव प्रतिदिन श्रीरामचन्द्रको दर्शन पावत रहैहै सर्वत्र साहबको देखत रहैहै ४ जैसे हंसनीर क्षीरको निबेरा करैहैं तैसे हंसजे साधुहैं तेअसारजो है नाना उपासना नानाज्ञान तामें अमीसी जोवेद शास्त्र पुराणादिकन में साहबकी उपासना ताकोग्रहण करैहैं और सबअसारको छोड़ि देयहैं सो कबीरजी कहैहैं कि सोईजन मेरोहै अर्थात् जे रामोपासकहैं तेई कबीर पंथीहैं और सब पाषंडीहैं जौने स्वरूपमें हंसदशाहै तौनेस्वरूपमें साहबके स्फूर्तिकराय नामजपैहैं तामेंप्रमाण ॥ मालाजपौं न करजपौं जिह्वाजपौंन राम। मेरासाईं हरिजपै मैं पावौं विश्राम १ इतिचौंतीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथपैंतीसवांशब्द ॥

हरिमोर पीव मैं रामकी बहुरिया। राममोर बड़ामैं तनकी लहुरिया १ हरिमोर रहँटा मैंरतनपिउरिया। हरिकोनामलै कातल बहुरिया २ छःमास ताग बर्षदिन कुकुरी। लोगबोले भलकातल बपुरी ३ कहै कबीर सूत भल काता। रहँटा न होय मुक्तिकै दाता ४ ॥

हरिमोरपीवमैंरामकीबहुरिया। राममोरबड़ामैंतनकीलहुरिया १

मोर पीव हरिहैं पीवकहे वेमोको पियारहैं मैंउनकोऊ पियारहौं अरुमैं परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रकी बहुरिया कहे नारीहौं यहां नारीकह्यो सोयह जीवसाहबकी चितशक्तिहै तामेंप्रमाण कबीरजीके आदिटकसार ग्रन्थको॥ आतमशक्ति सुबसहै नारी। अमरपुरुष जेहिरची धमारी १ औदूसरो प्रमाण बीजकको ॥ दुलहिनिगाऊ मंगलचार। हमरेघर आये रामभतार॥ तनरतिकरि मैं मनरति करिहौं पांचौ तत्त्वबराती। रामदेवमोरेब्याहन ऐहैं मैं यौवन मदमाती ॥ सरिर सरोवर वेदीकरिहौं ब्रह्मावेद उचारा। रामदेवसंग भाँवरि लेहौं धनिधनि भागहमारा ॥ सुरतैंतीसौ कौतुकआये मुनिवर सहस अठासी। कहकबीर हमब्याहचलेहैं पुरुषएक अबिनाशी २ अरु श्रीरघुनाथजी मोर बड़ेहैं अरुमैं तनकी लहुरिया हौं कहे उनके शरीर सर्वत्र व्यापक विभुहैं औमैं अणुहौं तामेंप्रमाण ॥ अणुमात्रोप्ययंजीवः स्वदेहंव्याप्यतिष्ठति इतिस्मृतिः १ ॥

हरिमोररहँटामैंरतनपिउरिया। हरिकोनामलैकातलबहुरिया २

अस हरिजे परम परपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तेमोर रहँटा कहे चितशक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपते जगत्वोईहैं अरुमैं रतन पिउरियाहौं यहजगत् जीवहीकेवास्तेबन्योहै तामेंप्रमाण॥जीवसूतह्वैकै लपटि रहैहैं मैंरतनकी पिउरियाहौं तातेमैंनहीं लपटौ हौं हरिजे श्रीरामचन्द्रहैं तिनकोनाम लैकै बहुरियाकहे उलटिकै मैं काढ्यो अर्थात् जगत्को जगद्रूप करिकै नहीं देख्यो जगत्को चिदअचिद रूप करिकै देख्योहै रामनाममें बहुरिकै साहब मुखअर्थदेख्यो जगत्मुख अर्थ नहीं ग्रहण कियो २ ॥

छःमासतागबर्षदिनकुकुरी । लोगकहलभलकातलबपुरी ३

छःमहीनामें एक तागकाढ्यो छःमहीनामें एकताग औरकाढ्यो तबबर्ष दिनमा एक कुकुरीभै दोनों ताग मिलायकै अर्थात् छः महीनामें आपनो स्वरूप समुझ्यो किमैंसाहबकी नारीहौं औछःमहीनामें मैंसाहबकोस्वरूप समुझ्यो बर्षदिनमें साहबकोमिल्यो सोमैंतो इतनीदेर करिकैमिल्यो साहब तो हजूरहोरहैं ताहूमें लोग कहैहैं किबपुरी भलकाढ्यो जोअनंतकोटि जन्मते नहीं जानैहै सोसाहबको बपु आपनो वपु बर्षैदिनामें समुझ्यो ३॥

कहैकबीरसूतभलकाता । रहँटा न होयमुक्तिकोदाता ४

श्रीकबीरजी कहैहैं किजौने रहँटा जगत्ते सूतभल काढ्यो है कतवैया कबीरजीको बिबेकहै सोरहँटा न होय यह मुक्तिको दाताहै काहेते किजब शुद्धआत्मा रह्योहै याकोपरमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं न तिनको ज्ञानरह्यो औ न संसारको ज्ञानरह्यो यह शुद्धरूप भरो रह्योहै तामेंप्रमाण ॥ नित्यःसर्व गतस्स्थाणु रचलोयंसनातनः इतिगीतायाम् ॥ जब यह याकेमन भयो तब संसारको काढ्योहै औसंसारमें परिकै दुःखसुख भोगकियोहै औजब पूरा गुरू मिल्योहै तब परमपुरुष जेश्रीरामचन्द्रहैं तिनकोपाइकै संसारतेछूटि गयोहै औपुनि संसारमें नहीं आयो सो कबीरजी कहैहैं कि यहरहँटा कहे संसार न होय मुक्तिको दाताहै जोसंसार बुद्धि करिकै देखैहै सो संसार में रहैहै औजो संसारको साहबको चित अचित रूप करिकै देखैहै ताको मुक्तिहीदेइहैं यासंसारमें आयेमुक्ति भयोहै ४इतिपैंतीसवांशब्दसमाप्तम्॥

अथछत्तीसवांशब्द ॥

हरिठग जगत ठगौरी लाई । हरि बियोग कस जियहुरे भाई १ को काको पुरुष कौन काकी नारी । अकथकथा यमजाल पसारी २ कोकाको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्र कौनकाको बापा । कोरेमरै कोसहै संतापा ३ ठगिठगि मूल सबनको लीन्हा । राम ठगौरी बिरलै चीन्हा ४ कह कबीरठगसो मनमाना । गईठगौरीठग पहिंचाना ५ ॥

हरिठग जगत ठगौरी लाई । हरि बियोग कस जियहुरे भाई १

हरिठग कहे हरिरूप द्रव्यके चोरावनहारे गुरुवालोग ते जगत्में ठगौरी लगाइकै कहे उपदेश करिकै जीवको ठगिलेइहैं औरऔरमें लगाइकै सो हेजीवो हरिके बियोगते तुमकैसेजिओहौ १ ॥

कोकाको पुरुषकौन काकीनारी । अकथकथा यमजाल पसारी २
कोकाको पुत्र कौन काको बापा । कोरे मरै को सहै संतापा ३

यहसंसारमें जबसांचेसाहबको भूल्यो तबकोकाको पुरुषहै कोकिसकी नारीहै अकथकथा कहे कहिबेलायक नही है काहेतेकि जिनकी उपासना करैहैं आपन स्वामीमानैहैं तिनकेस्वामी कबहूं होयहै वोईयाकीनारीहोयहै दासहोइहै कबहुं स्त्री पुरुष होयहै पुरुष स्त्री होयहै सोया यमकहे दोऊ विद्या अविद्याके जालपसार्योहै २ कोकाकोपुत्रहै कोकाको बापहै कोमरैहै कोसंताप सहैहै तुमकोतो सुखैसुखहै तुमहीं साहबहौ तुमहीं भोगीहौ३ ॥

ठगि ठगि मूल सबनको लीन्हा । राम ठगौरी बिरलै चीन्हा ४
कह कबीर ठगसो मनमाना । गई ठगौरी ठग पहिंचाना ५

सोयह समुझाइ समुझाइ सब गुरुवालोग मूलजोहै साहबको ज्ञान सो ठगिलेतभये औजो यहपाठहोइ ठगिठगि मूड़ सबनको लीन्हा तौयह अर्थ है किसबजगको ठगिठगि मूड़िलियो कहे चेलाकरि लियोहै सोयहठगौरी जो रामकैपरीहै कि रामको ज्ञान सबजीवनको गुरुवालोग ठगेलेयहैं जैसे कोई रुपया को कपड़ा को घोड़ाको ठगैहैं तैस गुरुवालोग रामको ठगैहैं तामेंप्रमाण॥शास्त्रं सुबुध्वातत्त्वेनकेचिद्दाद्दबलाज्जनाः। कामद्वेषाभिभूतत्त्वा दहंकारवशंगताः ॥ याथातथ्यंचविज्ञायशास्त्राणांशास्त्रदस्यवः।ब्रह्मस्तेनानिर रंभादंभमोहवशानुगाः ४ सोकबीरजी कहैहैं कि तुम्हारो मनठगहै जे गुरु वालोग तिनहीं सो मान्योहै ते तुमको ठगि लीन्हेहैं सो जब तुमठगको पहिचानिलेउगे कि ये ठग हैं तब तुम्हारी ठगौरी जातरहैगी ५ इति छत्तीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथसैंतीसवांशब्द ॥

हरिठग ठगत सकल जगडोला। गवन करत मोसों मुखहु न बोला १
बालापनके मीतहमारे। हमैं छोड़िकहँ चले सकारे २ तम असपुरुषहौं
नारितुम्हारी। तुम्हरिचाल पाहनहुंतेभारी ३ माटिकिदेह पवनकोशरीरा।
हरिठगठगतसोडरलकबीरा ४ ॥

हरिठगठगतसकलजगडोला। गवनकरतमोसोंमुखहुनबोला १

जीवकहैहैं कि हरिको ठगजो गुरुवाहै सो ठगहारी करिकैं सब जीवन को ठगतकहे हरिते बिमुख करत जगडोलाकहे संसारमें फिरैहै अरु जब गवनकरनलगे यमवेरिलियो तब मोसों मुखहूते न बोले कि एतेदिन जौने जौनेमें लगेरहे ब्रह्ममें अथवा जीवात्मामें ते न बचायो यह खबरि कहि समुझाय न दियो कि हमको धोखा ह्वैगयो तुमहूं धोखामें न परौ १ ॥

बालापनकेमीतहमारे। हमैंछोड़िकहँचलेसकारे २
तुमअसपुरुषहौंनारितुम्हारी। तुम्हरिचालपाहनहुंतेभारी३

सो तुम बालापनके हमारे मीतहौ जब भररह्यो जियो तबभर हमको धोखाहीमें लगायेरहे अब हमैं छोड़िकै सकारे कहे हमहीं ते आगे कहां जाहुगे काहेते कि तुमतो काहूको रक्षक मान्यो नहीं वही धोखामें लगेरहे आपहीको मालिक मानेरहे अब तुम्हारी रक्षा कौनकरै सो जब तुम्हारी कोई न कियो यमलैहीगये तौ जौन ज्ञान हमको दियोहै तौनेते हमारी रक्षा कौन करैगो २ तुम ऐसो हमारे पुरुषहै तुम्हारी हम नारीहैं काहेते कि बीजमंत्र हमको उपदेश दियोहै सो तुम्हारी चाल पाहनौते भारीहै कहे पाहनौते जड़है तेहिते साहबको भुलाइदियो ३ ॥

माटिकिदेहपवनकोशरीरा। हरिठगठगतसोडरलकबीरा ४

माटीकी यह देहहै सो स्थूल शरीर नाशमानहै औ पवनको शरीर सूक्ष्म शरीरहै सो मनोमय चंचलहै ज्ञानभयें वहौ नाशमानहै तामेंस्थित जेकबीर कहे कायाके बीरजीवहैं ते हरिजे परमपुरुष श्रीरामचंद्रहैं सबके कलेशहरनवारे तिनकोठग नेगुरुवालोगहैं तिनके ठगतमें कहेरक्षकको छपायदेतमें जीवडरैहै कि हमारीरक्षा अबकौनकरैगो वहब्रह्मतो धोखईहै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातो गुरुवनहीं की रक्षा नहीं कियो औ तेई मालिक होतो तौ मायाके बश कैसे होते औ यम कैसे धरिलैजाते ४ इतिसैंतीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथअड़तीसवांशब्द ॥

हरिबिनुभर्मबिगुरबिनगंदा । जहँजहँगये अपनपौखोये तेहिफंदेबहुफंदा १ योगीकहैयोगहैनीको द्वितियाऔरनभाई । चुण्डितमुण्डित मौनजटाधरि तिनहुंकहांसिधिपाई २ ज्ञानीगुणी शूरकबिदाता येजोकहहिं बड़हमहीं । जहँसेउपजे तहँहिंसमाने छूटिगये सबतबहीं ३ बायेंदहिने तजोबिकारै निजुकैहरिपदगहिया । कहकबीरगूंगेगुरखाया पूंछेसोंकाकहिया ४ ॥

या पदमें जे जीवनको गुरुवा लोगनको उपदेश लग्योहै तिनको कहैहैं औ गुरुवा लोगनको कहैहैं ॥

हरिबिनुभर्मबिगुरबिनगंदा ।
जहँजहँगयेअपनपौखोयेतेहिफंदेबहुफंदा १

मलीनबुद्धि जाकी होइहै ताको गंदा कहैहैं सो गंदाजो यह जीवहै सो बिना जाने भर्मते बिगरि जातभयो ताते चिन्मात्र हरिको अंगजो यह जीव ताकी नीचबुद्धि होइगई जहांगयो तहां तहां अपनपौ कहे मैं सांचे साहबकोहौं यह ज्ञान खोयकै तौने फंदामें परिकै तौने मतमें लगिकैबहुत फंदाजे चौरासीलाख योनिहैं तिनमें भटकतभये १ ॥

योगीकहैयोगहैनीकोद्वितियाऔरनभाई ।
चुंडितमुंडितमौनजटाधरितिनहुंकहांसिधिपाई २
ज्ञानीगुणीशूरकबिदातायेजोकहहिंबड़हमहीं ।
जहँसेउपजेतहँहिंसमानेछूटिगयेसबतबहीं ३

जिनको जिनको यह पदमें कहिआये तेते आपने मतको सिद्धांत करत भये कि हमारही मत सिद्धांतहै परंतु रक्षकके बिनाजाने जहां ते उपजे तहैं पुनि समाइ जातभये अर्थात् जागर्भते आये तौनेही गर्भमें पुनिगये जननमरण नहीं छूटेहै जब दूसर अवतार लियो तब जौने जौने मतमें आगे सिद्धांत करिसक्यो तैं तेमत सब छूटिगये अथवा जहांते उपजे कहे जौने लोकपकाएते उपजेहैं तहैंसमाने महाप्रलयमें तबसबबिसरिगयो३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बायेंदहिनेतजोबिकारैनिजुकैहरिपदगहिया।
कहकबीरगूंगेगुरखाया पूछेसोंकाकहिया ४

सोमंत्रशास्त्र में जे बाममार्ग दक्षिण मार्गहैं तेदोऊ बिकारईहैं तिनको दुनहुनको छोड़िदेउ औ हरिजे परमपुरुष श्रीरामचंद्रहैं तिहारे रक्षा करनवारे तिनके पदको निजुकैकहे आपन मानिकैगहो अथवा निजुकैकहे बिशेषिकै तिनके पदको गहो जोकहो उनको बताइदेउ वे कैसेहैं तौ वेतौ मनबचनके परेहैं उनको कोई कैसे बताइसकै जो उनको जान्योहै ताको गूंगेकैसो गुरभयोहै कछू कहिनहिं सकैहै इसारहिते बतावैहै वेदशास्त्रको तात्पर्य्य करिकै जो सज्जनलोग साहबको समुझावैहैं सो तात्पर्य्यवृत्तिही करिकै बतावैहैं ऐसे तुमहूं जो भजनकरौगे तौ तुमहूं उनको जानिलेउगे कि ऐसेहैं ४ इतिअड़तीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथउनतालीसवांशब्द ॥

ऐसे हरिसों जगतलरतुहै। पंडुरकतहूं गरुड़धरतुहै १ मूसबिलारीकैसे हेतू। जम्बुककरकेहरिसोंखेतू २ अचरजयकदेखाससारा। सोनहाखेदकुंजरअसवारा ३ कहकबीरसुनोसंतोभाई। यहसंधीकोइबिरलैपाई ४ ॥

ऐसेहरिसोंजगतलरतुहै। पंडुरकतहूंगरुड़धरतुहै १

जैसे पूर्ब कहिआये ऐसे रक्षक हरिसों जगत लरतुहै कहे बिरोध करतु है औ जे उनकेभक्त उनको बतावैहैं तिनके मतको खंडन करैहै सोहेमूढ़ पंडुरकहे पनिहांपियरसर्पकहूं गरुड़कोधरतुहै जोडुंडुभ पाठहोयतेडुंडुभ पनिहासर्पका नामहै सो रामोपासना गरुड़है सो और मतजे सर्पहैं तिनको कहां खंडनकीनहोइहै वहीसबकोखंडनकरनवारीहै जोवाको रामोपासना को मत अच्छी तरहते जानो होइहै १ ॥

मूसबिलारी कैसेहेतू। जंबुककरकेहरिसों खेतू २

सोहेजीवो तुम्हारो ज्ञानतौ मूसहै औ गुरुवालोगनको ज्ञान बिलारीहै जे और औरमतमें लगावैहैं तुमको और और मतमें लगाइकै खाइलेइंगे तिनसों तुमसों कैसे हेतुभयो जंबुकजो सियार सो केहरिजो सिंहहै तासों खेत करैहै कहे लरैहै सो जंबुक अज्ञानहै सो सिंहजो तुम्हारो जीव सो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लरैहै वह सिंहजीव कैसोहै अज्ञानको नाशकैदेनवारोहै अर्थात् जबआत्मा को ज्ञानहोइहै तब अज्ञान नाश ह्वैजाइहै २ ॥

अचरजयकदेखासंसारा । सोनहाखेदकुंजरअसवारा ३
कहकबीरसुनोसंतोभाई । यहसंधीकाइबिरलेपाई ४

सोहम यहबड़ा आश्चर्य देख्योहै सोनहा जो कूकुर सोकुंजरके असवार को खेदैहै सो नानामतवारे जेहैं तेईकुत्ते हैं तेकांउंकांउं कहे शास्त्रार्थकरिकै कुंजरके असवारजेहैं रामोपासनाके साधक तिनको खेदैहैं कहे उनसों वे कलनहीं पावैहैं यहां कुंजरमनहै ताकोपरमपुरुष श्रीरामचद्र लगाइ दिये हैं औ आप असवारहैं ३ सो श्रीकबीरजी कहेहैं कि हेसंतो भाई तुमसुनौ मनते भिन्नह्वैकै साहबके मिलबेकी जोहै संधि भेद ताको कोई बिरला पायेहै अर्थात् जबभर मन बनोरहैहै तबभर वाको भूलिबेकी संधिबनीही रहैहै मनते भिन्नह्वैकै वाके भजन करिबेको उपायकोई बिरला जानैहै ४ इतिउनतालीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथचालीसवांशब्द ॥

पंडितबादबदौसोझूठा । रामकेकहेजगतगतिपावै खांड़कहेमुखमीठा १ पावककहेपावजोदाहै जलकहेतृषाबुझाई । भोजनकहेभूंख जोभाजै तौदु-नियातरिजाई २ नलकेसंगसुवाहरिबोलै हरिप्रतापनहिजानै । जोकबहू उड़िजायजँगलको तौहरिसुरतिनआनै ३ बिनुदेखेबिनुअरसपरसबिनु नाम लियेकाहोई । धनकेकहेधनिकजोहोतो निर्धनरहतनकोई ४ सांचीप्रीति बिषयमायासों हरिभगतनकीहांसी । कहकबीरयकरामभजे बिन बांधे यमपुरजासी ५ ॥

पंडितबादबदौसोझूठा ।
रामकेकहेजगतगतिपावैखांड़कहेमुखमीठा १

सो हेपंडितो जोबाद बंदौहौ सोझूठाहै काहेते कि पंडिततो वहकहावै है जाके सारासारबिचारिणी बुद्धि होइहै सो सारासार बिचारिणी बुद्धि तो तिहारे हैनहीं पंडित भरकहावोहौ काहेतेकि सारशब्दको झूठाकहौहौ यहवादबदिकै रामके कहेते जोगतिपावतोतौखांड़ोकहेमुखमीठ ह्वैजातो१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पावककहे पावजोदाहै जलकहे तृषाबुझाई ।
भोजनकहेभूंखजोभाजै तौदुनियातरिजाई २
नलकेसंगसुवाहरिबोलै हरिप्रतापनहिंजानै ।
जोकबहूंउड़िजायजंगलकोतौहरिसुरतिनआनै ३

जो पावकके कहे दाहपावतो तोजीभ जरिजाती औ जलके कहे तृषा बुझाइजाती औ भोजनके कहेते भूंख भाजिजाती तौरामके कहेते दुनियां तरिजाती २ नरके पढ़ायेसुवारामराम कहैहै औ श्रीरामचंद्रको प्रतापनहीं जानैहै काहेते किजब कबहूं जंगलमें उड़िजायहै तब रामकी सुरतिनहीं करैहै ऐसेजोतुम रामरामकहि हरिकोप्रताप जानाचाहौगेतोकैसेजानौगे३॥

बिनुदेखेबिनुअरसपरसबिनुनामलियेकाहोई ।
धनकेकहेधनिकजोहोतोनिरधनरहतनकोई ४

बिनादेखे बिना स्पर्शकिये नामलिये कहाहोइहै अर्थात् जोकोई दूर होइ औ देखैन स्पर्शनहोइ औ जोवाको नामलेइतौकाजानिलेइहै नहीं जानैहै धनके कहेते कोईधनिक ह्वैजातो तौनिर्धनी कोई न होतो ऐसे नाम लिये जो मुक्ति होत तौसब मुक्त होइजात सो हेपंडितौ तुम ऐसे असंगत दृष्टांत दैकै यहबाद बदौहै सो झूठाहै काहेते कि रामनाम तो मन बचनके परेहै औ येसब मन बचनमें आवैहैं औ वह रामनाम साहबके दियेते स्फुरित होइहै यहैरामनाम जपेते औ येसब अनित्य ह्वै जाइहैं ४॥

सांचीप्रीतिबिषयमायासोंहरिभक्तनकीहांसी ।
कहकबीरयकरामभजेबिनुबांधेयमपुरजासी ५

सोकबीरजी कहैहैं कि हे नास्तिक पंडितौ बिषय मायासों सांची प्रीति करौहौऔऐसेऐसे कुबादबदिकैहरिभक्तनकीहांसीकरौहौनामरूपलीलाधाम को खंडन करिकै सोएकजे परमपुरुष श्रीरामचंद्रहैं तिनके नामके बिना भजन किये बांधे मोगरन की मारसहत यमपुरहीको जाहुगे जे परमपुरुष परजे श्रीरामचंद्र तिनते बिमुखहैं तेसब लोकनमा निंदितहैं तामेंप्रमाण॥ यश्चरामंनपश्येत यंचरामोनपश्यति ॥ निंदितस्सर्वलोकेषुस्वात्माप्येनंविगर्हते ५ इतिचालीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथइकतालीसवांशब्द ॥

पंडितदेखौमनमोजानी । कहुधौंछूतिकहांतेउपजी तबहिंछूतितुममानी १ नादेबिंदुरुधिरयकसंतौघटहीमेंघटसज्जै।अष्टकमलकीपुहुमीआई यहछुति कहां उपज्जै २ लखचौरासीबहुतबासना सोसबसरिभोमाटी । एकैपाट सकलबैठारे सींचिलेतधौं काटी ३ छूतिहिजेंवनछूतिहिअचवन छूतिहिजग उपजाया । कहकबीरतेछूतिबिबर्जित जाकेसंगनमाया ४ ॥

पंडितदेखोमनमोजानी ।
कहुंधौंछूतिकहांतेउपजीतबहिंछूतितुममानी १

हेपंडित तुम मनमें जानिकै कहे बिचारिकै देखौ तौ औ कहौ तौ यह छूति कहांते उपजीहै जो छूति तुम आपने मनमें मान्योहै १ ॥

नादे बिंदुरुधिरयकसंगै घटहीमें घटसज्जै ।
अष्टकमलकीपुहुमीआई यहछुतिकहांउपज्जै २

नादते पवनबिंदुते बीर्य्य रुधिरके संगते घटही में घट सजैहै बुहुदा होइहै सो अष्टदलको कमलहै तामें अँटकिकै लरिका होइहै सोपुष्टपरैह सो लरिकौके वाहीभांतिको अष्टदल कमल होइहै तौने अष्टदल कमलके दलदलमें वाकोमन फिरत रहैहै ताते तैसे नानाकर्ममें लगिकै नानासुभाव वाके होइहैं और जहां जहांकी बासना करिकै मरैहै तौनी तौनी योनिमें प्राप्तहोइहै एकैजीव बाससनकरिकै सर्बत्रहोइहैं यहछूति कहांते उपजैहै२॥

लखचौरासीबहुतबासनासोसबसरिभोमाटी ।
एकै पाटसकल बैठारे सींचिलेतधौं काटी ३

यहजीव बहुत बाससननमें परिकै चौरासीलाख योनिनमें भटकैहै शरीर सरिकै माटीही ह्वै जायहै एकै पाटमें कहे जगत्में नाना बासना करिकै माया सबको बैठावतभई कहे शरीरधारी सबको करत भई अरु येशरीर सब माटिही आइँ औ माटीमें मिलिजाइँगे औ जीव सबके एकही है औ एकही पाटमें बैठेहैं सोवेजलको सींचिकै छूतिकाटि लेतहैंका जलसींचे छूति मिटिजातहै नहीं मिटै ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छूतिहिजेंवनछूतिहिअचवन छूतिहिजग उपजाया।
कहकबीरते छूति बिबर्जित जाके संग न माया ४

सोवही छूतिजोहै बासनासो जब उठी तबजेंवनकियो औ वहीबासना उठी तबअँचयो और कहांलौं कहैं वही बासनाते जगत् उपज्योहै सो श्री कबीरजी कहैहैं किजाके संगमाया नहीं है सोईबासनारूपी छूतिते बिबर्जितहै सोहेपण्डित मायाकोजोतुम छोड़योनहीं छूतितिहारे भीतरघुसीहै ऊपरके छूतिमाने कहाहोइ बड़ीछूति कियोहै बासनैते चित्तकी वृत्तिउठैहै तब यहमानैहै कि हम ब्राह्मणहैं क्षत्रीहैं बैश्यहैं शूद्रहैं ४ इतिइकतालीस वांशब्दसमाप्तम् ॥

अथबयालीसवांशब्द ॥

पण्डित शोधि कहहु समुझाई। जाते आवागमन नशाई ॥ अर्थ धर्म औ काममोक्ष फल कौनदिशा बसभाई १ उत्तरदक्षिण पूरब पश्चिम स्वर्ग पतालके माहे। बिनगोपाल ठौरनहिंकतहूं नरकजात धौंकाहे २ अनजाने को नरक स्वर्गहै हरि जानेको नाहीं। जेहिडरको सबलोग डरतहैं सोडर हमरे नाहीं ३ पाप पुण्यकी शंकानाहीं स्वर्ग नरक नहिं जाहीं। कहैं कबीर सुनोहो संतो जहँपद तहां समाहीं ४ ॥

तेबासना मायाके योगतेहोइहैं सोमाया जौनीपूकारतै छूटैहै सोउपाय कहैहैं अरु आचारको वहां खंडन करि आये सोअब जौनीदशामें आचार नहीं है सो कहैहैं ॥

पण्डित शोधिकहहु समुझाई। जातेआवागमन नशाई ॥
अर्थधर्म औकाम मोक्षफल कौन दिशा बस भाई १
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम स्वर्ग पतालके माहे।
बिन गोपाल ठौरनहिं कतहूं नरक जातधौं काहे २

हे पण्डित तुमतो सारासार को बिचार करौहौ सो तुम शोधिकै मोसों समुझाइ कहो जाते यह जीवात्माको आवागमन नशाइ अर्थ धर्म काम मोक्ष येफल कौनीदिशामें रहैहैं १ उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम स्वर्ग पाताल यहांसर्वत्रमैं ढूंढ़िडारयो परंतु बिनागोपाल कहूं ठौर न देख्यो गोपालकहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोजो इन्द्री जड़ मनादिक तिनके चैतन्य करनवारे जेपरमपुरुष श्रीराम चन्द्रहैं तिनही को सर्वत्र देखतभयो बिषय इंद्रिनते देवता मनते मनजीव ते जीवपरमपुरुष श्रीरामचन्द्रते चैतन्यहै सोजीव उनको चित्तशरीर अरु मायाकाल कर्मसुभाव उनकोअचित शरीरहै तेहिते बिनागोपाल कहूं ठौर नहीं है जीव नरक स्वर्ग जाइहै सो अब बतावैहैं २ ॥

अनजाने को नरक स्वर्गहै हरि जानेको नाहीं।
जेहि डरकोसबलोग डरतहैं सोडरहमरेनाहीं ३

श्रीकबीरजी कहैहैं कि अनजानेको नरक स्वर्गहै कहे जो कोई हरिको नहीं जानैहै ताको न स्वर्ग है न नरकहै औजो कोईहरिको सर्वत्र जानैहै ताको न नरकहै न स्वर्गहै जौन डरको सब लोग डेरायहै मायाब्रह्म नरक स्वर्गादिकनको तौनडर उनकोनही है काहेतेवेतो सर्वत्रसाहबैकोदेखैहैं३॥

पाप पुण्यकी शंका नाहीं स्वर्ग नरक नहिं जाहीं।
कहै कबीर सुनो हो संतो जहँपद तहां समाहीं ४

औ न उनको पाप पुण्यकी शंकाहै काहेते कि जो कोई बद्धहोइ सो न मुक्तहोइ तेहिते न वेबद्धहीहैं नमुक्तहीहैं तामेंप्रमाण श्रीभागवते॥बद्धोमुक्त इतिव्याख्या गुणतोमेनवस्तुनः। गुणस्थमायामूलत्वान्नमेमोक्षोनबंधन॥ हमतो सर्वत्र साहबहीको देखैहैं वेनरक स्वर्गको नहीं जाइहैं सोकबीरजी कहैहैं कि हे संतो सुनो ऐसीभावना जेनरकरैहैं तेनर जहाँपदतहांसमाहीं कहे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके अंशहैं सो तिनहीं के स्थानमें जाइहैं ४ इतिबयालीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथतेंतालीसवांशब्द ॥

पंडित मिथ्या करोबिचारा। नाहां सृष्टि न सिरजन हारा १ थूलस्थूल पवन नहिं पावक रबि शशि धरणि न नीरा। ज्योतिस्वरूपी कालन वहँवां बचन न आहि शरीरा २ कर्म धर्म कछुवो नहिं वहँवां नाकछुमंत्र न पूजा। संयम सहित भावनहिं एकौ सोतो एक न दूजा ३ गोरख रामएकौ नहिं वहँवां ना ह्वांभेद बिचारा। हरिहर ब्रह्म नहीं शिवशक्ती तिरथौ नहीं अचारा ४ मायबाप गुरुजाके नाहीं सोदूजाकि अकेला। कह कबीर जो अबकी समुझै सोईगुरू हम चेला ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित मिथ्याकरोबिचारा। नाहवांसृष्टि न सिरजनहारा १ थूलस्थूल पवन नहिं पावक रबिशशि धरणि न नीरा। ज्योति स्वरूपी काल न वहँवां बचन न आहिशरीरा २ कर्मधर्म कछुवो नहिं वहँवां ना कछुमंत्र न पूजा। संयम सहित भावनहिं एकौ सोतो एक न दूजा ३ गोरखराम एकौ नहिं वहँवां ना ह्वांभेद बिचारा। हरिहरब्रह्म नहीं शिवशक्ती तिरथौ नहीं अचारा ४ मायबाप गुरुजाकेनाहीं सोदूजाकि अकेला। कहकबीरजो अबकी समुझै सोईगुरूहमचेला ५ ॥

हेपंडित तुमतौ वह ब्रह्मको मिथ्ये बिचार करोहो जोयह पदमें बर्णन करिआये सो वहमें एकउनहीं है वहतो धोखहीहै सोकबीरजी कहेहैं कि सो वह आत्माते दूसरहै कि अकेल वह ब्रह्महै जो अबकी समुझै कहे यह ज्ञानभयेपर समुझै किमैं परमपुरुष श्रीरामचद्रकोहौं वहब्रह्म धोखाहै सोई गुरूहै मैं चेलाहौं काहेते कि मोही तो धोखई नहीं भयोहै जो आपने को ब्रह्ममानिकै औ साहबको समुझैहै औ वाको धोखा मानिलेइ सो मेरो गुरूहै औ मैंवाको चेलाहौं अर्थात् सोईमोसों अधिकहै काहेते कि वहधोखा मेंपरिकै निकस्योहै यहप्रशंसाकियो ५ इतितेंतालीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथचवालीसवांशब्द ॥

बूझहुपंडितकरहुबिचारी पुरुषअहैकीनारी १ ब्राह्मणकेघरब्रह्मणीहोती योगीकेघरचेली। कलिमापढ़िपढ़िभईतुरुकिनी कलिमेंरहैअकेली २ बर नहिंबरैव्याहनहिंकरई पुत्रजन्महोनिहारी। कारेमूड़ेयकनहिंछाड़ै अबहूं आदिकुवांरी ३ मायिकनरहैंजाइनससुरे साईसंगनसोवै। कह कबीरवेयुग युग जीवैं जातिपांतिकुलखोवै ४ ॥

यह मायाही सब जगतके जीवनको भरमायोहै सोकहैहैं ॥

बूझहुपंडित करहुबिचारी पुरुषअहैकीनारी १
ब्राह्मणकेरे ब्रह्मणीहोती योगीकेघर चेली ।
कलिमापढ़िपढ़िभईतुरुकिनीकलिमोंरहैअकेली २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहेपंडित तुमबूझौ औ बिचारिकै कामकरो यहमाया पुरुष रूपहै कि नारी रूपहै यहमाया सबको लपेटि लियोहै १ बिद्या माया ब्राह्मणके तौ ब्राह्मणीह्वैकै बैठीहै ब्राह्मण कहैहैं कि हम ब्रह्मको जानैहैं ॥ ब्रह्मजानाति ब्राह्मणः ॥ अरु घरमें ब्राह्मणी बैठाये रहैहैं वाको स्त्रीकोभाव करैहैं बेटीसों बेटीकोभाव बहिनीसों भगिनीको भाव मानैहैं सो कहोतो ब्रह्मभाव कब भयो जोकहो जिनके स्त्रीनहीं है तिनकोतो ब्रह्मभाव ठीकहै तौउनकेब्रह्म ज्ञान पत्नीरूप ब्राह्मणीकी गरूरी बनीहै संयोगिनके तौ चेलीह्वैबैठीहै औ योगिनके योगी रूपह्वै बैठीहै योगी महामुद्रा साधन करिकै बीर्यकी उलटी गति कैदेइहैं सो जबवृद्धभये तब षोडश कन्या एकघरमें रातिभरि राखिकै संभोग करिकै उनको बीर्य लिंग द्वारते खैंचिकै कपारमें चढ़ाइ लेइहैं तब आप तरुण ह्वैजाइहैं वे षोडशोकन्या मरिजाइहैं येतो बड़ो अनर्थकरैहैं जे प्राणायाम करिकै प्राण चढ़ाइ लैजाइहैं तिनके कुंडलिनी ह्वैबैठीहैं औ मुसल्माननके जब बिवाह होइहै तब निगाह सों निगाह पढ़िकै कलिमा पढ़िकै तुरुकिनी होइ है औ मुसल्मान होइहै सो ये उपलक्षणहैं अर्थात् ब्राह्मणमें स्त्रीके साथ कर्मरूपह्वैकै औ योगिनके दशमुद्रा रूपह्वैकै औ मुसल्माननमें निगाह कलमा आदिदैकै सरारूपह्वैकै अकेली मायही रहतभई साहबके काम ये एकौ नहीं हैं २ ॥

बरनहिंबरैब्याहनहिंकरई पुत्रजन्महोनिहारी ।
कारेमूड़े एकनहिंछाड़ै अबहूं आदिकुवांरी ३

वरकहे श्रेष्ठजेहैं साहबके जाननवारे भक्त तिनको नहीं बरयो अर्थात् उनको स्पर्श विद्या अबिद्या येदूनोंको नहीं हैं अरु खसम ब्रह्महै सो ब्याह नहीं करैहै काहेते कि धोखाकी भवँरी नहीं परै औ मायाको पुत्र जगत् है जाको गर्भधारण करैहै सो कारकहे जिनके शिखाहै हिंदूलोग औ मूड़े कहे जिनके शिखा नहीं है मुसल्मानलोग तिनको एकऊ नहीं छोड्यो अबहूं भर वह आदि कहे आद्या जो मायाहै सो कुवांरीही बनी है अर्थात् हिंदू मुसल्मानको आपही बशकै लियोहै इनके बश नहीं भई ३ ॥

मायिक नरहै जाइन ससुरे साईंसंग न सोवै ।
कहकबीरवेयुगयुगजीवैं जातिपातिकुलखोवै ४

अरु मायिकजोहै शुद्ध आत्मा जाके उत्पत्ति भईहै माया तहांतो रहतही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है वहांतौ जीवके साहबको अज्ञानरूप कारणमात्ररह्योहै औ सासुरजो है लोकपूकाश ब्रह्मजहां जीवमान्योहै किब्रह्ममैंही हौं सोधोखाहै तहांनहीं जाइहै औ वही साईं कहे पतिहै काहे ते कि वहीमाया सबलित होइहै तब जगत्होइहै ताके संगनहीं सोवैहै काहेते किवहतो धोखईहै औ वहमाया धोखाहै जोकछु वस्तु होइ तब न वाके संग सोवै श्रीकबीरजी कहैहैं कि सब जगत्को माया लपेटि लियोहै जेजीव साहब औ साहबकी जाति आपको मानैहैं औ अपनी जातिपांति कुल खोवै हैं सोई मायाते बचे हैं औ युगयुग जियैहैं और सबको माया खाइही लियोहै अर्थात् उनहीं को जननमरण नहीं होयहै ४ इतिचवालीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथ पैंतालीसवांशब्द ॥

कौनमुवाकहुपंडितजना । सोसमुझायकहौमोहिंसना १ मूयेब्रह्माविष्णु महेशा । पार्बतीसुतमुयेगणेशा २ मूयेचंद्रमुयेरविकेता । मुयेहनुमतजिनह बांधीसेता ३ मूयेकृष्ण मुयेकरतारा । यकनमुवाजो सिरजनहारा ४ कहै कबीरमुवानहिंसोई । जाकोआवागमननहोई ५ ॥

कौनमुवाकहु पंडितजना । सोसमुझायकहौमोहिं सना १
मूये ब्रह्मा बिष्णु महेशा । पार्बती सुत मुये गणेशा २
मूये चन्द्र मुये रबि केता । मुयेहनुमतजिनबांधी सेता ३
मूये कृष्ण मुये करतारा । यकनमुवा जोसिरजनहारा ४
कहैकबीर मुवानहिं सोई । जाको आवागमन न होई ५

जिनको जिनको यापदमें बर्णन करि आये तेतेसब महाप्रलयमें लीन होइहैं एककहे सम अधिकते रहित जो साहब नहीं मुवा औ सिरजनहार जो समष्टि जीव सोनहीं मुवाहै अर्थात् सो रहिजाय है और कौन नहीं मुवा तिनको कबीरजी बतावैहैं जीवतो मरै नहीं है शरीरही मरैहै सोजेजे देवतनको मुवा कहिआये तेजौन रूपते साहबके समीप रहैहैं सो स्वरूप उनको नहीं मुवैहै पार्षद शरीरते बने रहैहैं यहां अपने अंगनते जगत् कार्यकरै है सो पूर्व लिखि आयेहैं ५ इतिपैंतालीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथछियालीसवांशब्द॥

पंडितअचरजयकबड़होई। यकमरमुयेअन्ननहिंखाई यकमरसीझरसोई १ करिअसनानतिलककरिबैठे नौगुणकांधजनेऊ। हांड़ीहांड़हांड़थारीमुख अबषटकर्मबनेऊ २ धरमकथैजहँजीवबधैतहँअकरमकरमेरेभाई। जोतोहरे कोब्राह्मणकहिये तौकेहिकहियकसाई ३ कहैकबीरसुनोहोसंतोभरमभूलि दुनिआई। अपरमपारपारपुरुषोत्तम यहगतिबिरलैपाई ४॥

अबजे षट्कर्मी पंडितलोग बलिदानकरिकै मांसखाइहैं तिनकोकहैहैं॥

पंडितअचरजयकबड़होई।
यकमरमुयेअन्ननहिंखाई यकमरसीझरसोई १
करिअसनानतिलककरिबैठेनौगुणकांधजनेऊ।
हांड़ीहांड़हांड़ थारीमुख अब षटकर्मबनेऊ २

हेपंडित एक बड़ो आश्चर्य होइहै एक मरैहै ताके मरते कोई अन्न नहीं खायहै अरु वाके कुयेते अशुद्ध ह्वैजाइहै अरु एक जीवको मारिलै आवैहैं तौने मुर्दाको रसोईमें सिझवैहैं १ औ नौगुणको जनेऊ कांधेमेंडारिकै स्नानकरिकै बड़ो बेदना ऐसो तिलकदैकै बैठे हैं सो कबीरजी कूटकरै हैं कि अब षट्कर्म बनिपरयो कि हाड़ है थारीमें हाड़है मुखमें हाड़है वही षटकर्म ब्राह्मण के येहैं पढ़ै पढ़ावै दानदेइ लेइ यज्ञकरै यज्ञकरावै इहांये षट्कर्म करै हैं एक कहड़िया दूजे हाड़ तीजेथारी चौथे हाड़ पांचों मुख छठोंहाड़ अब ये षट्कर्म बनिपरयो २॥

धरमकथैजहँ जीवबधैतहँ अकरमकरमेरेभाई।
जोतोहरेकोब्राह्मणकहियेतौकेहिकहियकसाई ३
कहैकबीर सुनोहो संतो भरमभूलि दुनिआई।
अपरमपार पारपुरुषोत्तम यहगतिबिरलैपाई ४

जहां धर्मको कथै है कि या यज्ञहै देवपूजन पितर श्राद्धहै याधर्महै तहँ जीवनको मारैहै सो हेभाइउ जोकरिबे लायक कर्म नहीं हैं सोऊ करैहै ऐसेजे तुम्हारे कर्महैं तिनको तोब्राह्मण कहैंगे ब्रह्मके जनैया कहैंगे कसाई काको कहैंगे ३ श्रीकबीरजी कहैहैं किऐसे भ्रममें दुनिया भूलिरहीहै अप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमकहे परमनहीं ऐसीजो मायाहै ताते परब्रह्महै ताहूते पारपुरुष समष्टि जीवहैं जाके अनुभवते ब्रह्मभयोहै ताहूते उत्तम श्रीरामचंद्रहैं काहे ते कि वेबिभु सर्बज्ञहैं औजीव अणुअल्पज्ञहै ते श्रीरामचंद्रकी जोयहगतिहै ज्ञानसो कोईबिरलै पाईहै अर्थात् कोई बिरला जान्योहै कि सबते पर साहबईहै उनते सम औ अधिक कोई नहीं है तामेंप्रमाण ॥ सकारणकारणकारणा धिपोनचास्यकश्चिज्जनितानचाधिपः । नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते ॥ इतिश्वेताश्वतरोपनिषदि ॥ समोनविद्यतेतस्य विशिष्टःकुतएवतु इतिवाल्मीकीये । औकबीरौजीको प्रमाण॥साहबकहिये एकको दूजाकहोनजाइ । दूजासाहबजोकहै बादबिडंबनआइ ॥ जननमरणतेरहितहै मेरासाहबसोइ । मैंबलिहारीपीउकी जिनसिरजासबकोइ ४ इतिछियालीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथसैंतालीसवांशब्द ॥

पंडितबूझि पियोतुमपानी । जामाटीके घरमेंबैठे तामेंसृष्टि समानी १ छपनकोटियादवजहँबिनशे मुनिजनसहसअठासी । परगपरगपैगंबरगाड़े तेसरिमाटीमासी२मत्स्यकच्छघरियारबियानेरुधिरनीरजलभरिया । नदिया नीरनरकबहिआवै पशुमानुषसबसरिया ३ हांड़झरीझरिगूदगलीगलि दूध कहांतेआवै । सोतुमपांड़ेजेंवनबैठे मटिअहिछूतिलगावै ४ वेदकितावछोड़ि दिहुपांड़े ईसबमनकेकर्मा । कहैकबीरसुनोहोपांड़े ईसवतुम्हरेधर्मा ५ ॥

जेदंभकरिकै बड़ो आचार करैहैं जिनको चिद अचिद साहबको रूपहै यह बुद्धि नहीं है ॥

पंडितबूझिपियोतुमपानी ।
जामाटीकेघरमेंबैठेतामेंसृष्टिसमानी १
छपनकोटियादवजहँबिनशेमुनिजनसहसअठासी ।
परगपरगपैगंबरगाड़ेतेसरिमाटीमासी २

सा हेपंडित ज्ञानतो तिहारे हैनहीं आचार करौहौ सोतुम कहांको पानी पियौहौ भला बूझिकै कहे बिचारिकै तौ पानी पिओ जौने माटीके घरमें अर्थात् पृथ्वीमें तुम बैठेहौ तौनेमें सब सृष्टि समाइ रहीहै १ औ जौनी पृथ्वीमें छप्पनकोटि यादव औ अठासीहजारमुनि ये उपलक्षणहैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् सब जीवनके शरीर वही माटीमें मिलिमिलिकै सरिगये अरुपरग परगमें पैगंबर गाड़ेहैं तेसब सरिकै माटीह्वैरहेहैं तेहिते माटी मासीहै कहे मांसमें मिलिरहीहै औमाटी मासीकहे मधुकैटभके मांसकी आइ २॥

मत्स्यकच्छघरियारबिआनेरुधिरनीरजलभरिया।
नदियानीरनरकबहिआवै पशुमानुषसबसरिया ३
हांड़झरीझरिगूदगलीगलि दूधकहांतेआवै।
सोतुमपांड़ेजेंवनबैठे मटिआहिछूतिलगावै ४

अरु नदियाके जलमें मत्स्यकच्छ घरियार बियाने कहे होयहैं औ रुधिर नीरमल इत्यादिक वही नदियाके जलमें मिलिजाइहै औ पशु मानुष जे सरिजायहैं तेवही पानी पियोहौ औ आचार करोहो ३ दूधो हाड़तेझरि झरि गूदते गलिगलिकै लोहूभयो वही लोहूते दूधभयो ताहीको लैकै हे पंडित तुम जेंवन बैठौहौ औ माटी जो मांसहै ताको छूति लगावोहौ कि मांसबड़ो अपबित्रहै याकोजे खाइहैं तेबड़ो निषिद्ध कर्म करैहैं सोकहो तोवह दूध मांसते कैसे भिन्नहै ४॥

वेदकिताबछोड़िदिहुपांड़े ईसबमनकेकर्मा।
कहैकबीरसुनोहोपांड़े ईसबतुम्हरेधर्मा ५

सो हेपांड़े शुद्ध अशुद्ध तो वेद किताबते जानेजाइहैं तेवेद किताबको तुम छोड़िदियो ये जेसब कहिआये जेतुम धर्मकरौहौ तेतोसब तुम्हारेमन के कर्महैं आपने मनहीं ते येसब तुम बनाइलियोहै इनते तुम न निबहौगे श्रीकबीरजी काकुकरैहैं किहेपांड़े बिचारिकैदेखौ येसब तुम्हारेधर्महैं अर्थात् नहीं हैं तुमतौ साहबकेहौ अथवा कबीरजी कहैहैं एते सबकर्म करौहौ अपने मनके बनाये औ वेदकिताबौके कहेते येसब तुम्हारे धर्मकहे तुम्हारे शरीरैमाहैं तेहिते शरीरते भिन्नह्वैकै आपने स्वरूपको जानौगे तब आपने सांचे कर्मनको जानौगे यह व्यग्यहै ५ इतिसैंतालीसवांशब्दसमाप्तम्॥

अथअड़तालीसवांशब्द॥

पंडितदेखोहृदयबिचारी कौनपुरुषकोनारी १ सहजसमाना घटघट बोलैवाकोचरितअनूपा। वाकोनामकहाकहिलीजै नावहबरणनरूपा २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैंमैंकाहकरैनरबौरे क्यातेराक्यामेरा । रामखोदायशक्तिशिवएकै कहुधौं काहिनिवेरा ३ वेदपुराणकुरानकितेवा नानाभांतिबखानी । हिंदूतुरुकजैनिऔयोगी एकलकाहुनजानी ४ छःदरशनमेंजोपरवाना तासुनाममनमाना। कहकबीरहमहीं हैंबौरे ईसबखलकसयाना ५ ॥

पंडितदेखोहृदयबिचारी कौनपुरुषकोनारी १
सहजसमानाघटघटबोलै वाकोचरितअनूपा ।
वाकोनामकहाकहिलीजैनावहबरणनरूपा २

हेपंडित तुमतौ सारासारको बिचार करौहौ हृदयमें बिचारिकैदेखौ तो कौन पुरुषहै कौन नारीहै वह आत्मातो न पुरुषहै न नारीहै १ जो कहो घटघटमें सहजजीव ब्रह्म समाइ रह्योहै वाको चरित्र अनूपहै सोई हमारो स्वरूपहै तौवाकोनामकहांकहिलीजैवाकोतोनवर्णहै नरूपहैवहतोधोखाहै२॥

तैंमैंकाहकरै नरबौरे क्यातेरा क्यामेरा ।
रामखोदायशक्तिशिवएकैकहुधौंकाहिनिवेरा ३

औजोतैंमैं कहौहौ कि तैंमैं आह्यौ मैंतैं आह्यौ एकही ब्रह्मतौहै तैं मैं कहा करैहै बिचारिदेखु तौ क्यातेराहै क्यामेराहै सब साहबका तौहै जो तैंसाहबहोइ तब न तेरा होइ रामखोदाय औ शक्ति शिवजेहैं तिनमें कहुधौं तैं काको निवेरा कियोहै कि एक यहजगत्को मालिकहै औवही मैंहौं अर्थात् इनकी सामर्थ्य तोमें एकऊनहीं देखिपरैहै ताते इनमें तैं कोईनहीं है३॥

वेदपुराण कुरानकितेवा नानाभांति बखानी ।
हिंदूतुरुकजैनि औयोगी एकलकाहु नजानी ४

वही साहबको नाना नामलैकै कहैहैं सो वेदपुराण कुरान किताबमें वही साहबको सबते परे नाना भांतिते नाना नामलैकै वर्णन कियोहै यही हेतुते हिंदू तुरुक जैनियोगी एकलकहे एकनाम करिकै कोई नहीं जान्यो कि एक यही सिद्धांतहै यही सबको मालिकहै अथवा एकल कहे जौने करते जौने उपायते मैंमन बचनके परे साहबको जान्योहै सोकोई नहीं जान्यो ४ ॥

छःदरशनमेंजेपरवाना तासुनाममनमाना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहकबीरहमहींहैंबौरे ईसबखलकसयाना ५

छइउ दर्शनमें अरु जेते सब हिंदू तुरुक आदि बर्णन करिआये तिन सबमें जौने धोखा ब्रह्मको प्रमाण परैहै तौनेही को नाम सबके मनमें मानैहै कहततौ मनबचनके परेहैं परतु कोई ब्रह्म कहिकै कोई अल्लाह कहिकै कोई जीवात्मा कहिकै वाहीको सब मानैहैं सो कबीरजी कहैहैं कि सब खलक सयानाहै काहेते कि कहतेतौ यहबातहैं कि वहतो मनबचन में आवतैनहीं है औ जेमनबचनमें आवैहैं तिनही में फिरिलागैहैतातेहमहीं बौरहाहैं जो ऐसो कहैहैं कि साहब आपहीते कृपाकरिकै अनिर्बचनीय रामनाम स्फुरित करिदेइहैं ताहीके मिलनको उपाय बतावैहैं यह काकु करैहैं ५ इतिअड़तालीसवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथउनचासवांशब्द ॥

बुझबुझपंडितपदनिरबाना । सांझपरेकहँवांबसभाना १ नीचउँचपरबत ठेलानभीत । बिनगायनतहँवाँउठगीत २ ओसनप्यासमँदिरनहिंजहँवां । सहस्त्रौधेनुदुहावैतहँवां ३ नितैअमावसनितसंक्रांति । नितनितनवग्रहबैठे पांति ४ मैंतोहिंपूछौंपंडितजना । हृदयाग्रहणलागुकेहिवना ५ कहकबीर यतनौनहिंजान । कौनशब्दगुरुलागाकान ६ ॥

अबयोगिनकोकहैहैं ॥

बुझबुझपंडितपद निरबाना । सांझपरेकहँवांबसभाना १
नीचउंचपर्बत ठेलानभीत । बिनगायनतहँवांउठगीत २

हे पंडित तुम वह निर्बाणपदको बूझोतो जोत्रिकुटीमें ध्यान लगाइकै भानु कहे सूर्य देखौहौ सोसूर्य सांझपरे कहे जब शरीर छूटिगयो तबकहां बसैहै १ नीचेते ऊंचेकोकहे कुंडलिनीते गैबगुफामें जब आत्माजाइहै तौने पर्बतमें न ठेलाहै न भीतिहै औबिना गायन तहँवां गीतउठैहै कहेअनहदकी ध्वनि सुनि परैहै २ ॥

ओसनप्यास मंदिरनहिं जहँवां । सहस्त्रौ धेनुदुहावै तहँवां ३

ओसजो वहांपरैहै कहे अमृत जोवहांझरैहै ताको पान करिकै न प्यास बुझि जाइहै कहे पियास नहीं लगैहै अर्थात् ओसन पियास नहीं जाइहै जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानि राखेहैं कि अमृत पीकै हम अमरह्वै जाइँगे सोअमर न होउगे औ जोगैब गुफा पर्बतमें घरमानि राखेहैं सोवहां तेरो मन्दिर कहे घरनहीं है अर्थात् वहांतो शून्यहै तहां सहस्र दलमें धेनुदुहावैहैं कहेधेनुजोहै गायत्री ताको अर्थजोहै वहदूध ज्ञान स्वरूप ब्रह्म ताको बिचार करैहैं आपने को ब्रह्ममानैहैं जब शरीर सरिजाइ है तब गैबगुफौ जरिजाइ है औ फिरि शरीर धारण करैहैं ३ ॥

नितै अमावसनितसंक्रांति। नितनितनव ग्रहबैठेपांति ४

औ तहां नित अमावस रहैहै चंद्रमा सूर्यनके ओटह्वैजाइ सो अमावस कहावैहै सो यहांते आत्मा जाइकै ब्रह्मज्योतिमें लीनह्वैजाइहै ताते नित अमावस रहैहै औफिरि जब समाधि उतरी तबशंकामें परिगयो वहीवाको नित संक्रांतिहै औ नित नवग्रहपांति जोहै दुवार जामेंऐसो जोहैग्रह शरीर तौने की पांति बैठैहै कहे इतना योग साधैहै तऊ शरीर धारण करिबो नहीं छूटैहै ४ ॥

मैंतोहिंपूछौंपंडितजना। हृदयाग्रहणलागुक्यहिखना ५
कहकबीरयंतनौनहिंजान। कौनशब्दगुरुलागाकान ६

हेपण्डित तुमसों हमपूछैंहैं कि जबसमाधि उतरि आवैहै तबफिरि माया तुमको ग्रहण करिलेइहै औनिर्बाणपद कहतहौहौ सो निर्बाणपदजो जाते तौ कैसे उलटि आवते औकैसे नानाशरीर पावते सोदेखतेहौ बूझतेनहीं हौ यह अज्ञानरूपी राहुते तुम्हारे ज्ञानरूपी चन्द्रमाको कबग्रहण कियो ५ श्रीकबीरजी कहैहैं कि इतनौ नहीं जानतेहौ कि शरीरके साधन यह ज्ञान कियेते शरीर मिलैगो कि छूटैगो अर्थात् शरीरके साधन कियेते शरीरही मिलैगो तेरेकानमें लागिकै गुरुवालोग कौनसो हंसशब्दको उपदेशकियो है जातेपरमपुरुषश्रीरामचन्द्रको भूलिगये६ इतिउनचासवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथपचासवांशब्द ॥

बुझबुझ पंडित बिरवा न होई। अंधबस पुरुष अंधबस जोई १ बिरवा एक सकल संसाला। स्वर्गशीश जरगयल पताला २ बारह पखुरी चौबिस पाता। घनबरोह लागी चहुंघाता ३ फलै न फुलै वाकिहै बानी। रैनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवस बिकार चुव पानी ४ कहकबीर कछु अछलो न जहिया। हरिबिरवा प्रतिपालत तहिया ५ ॥

बुझ बुझ पंडितबिरवा न होई । अधबसपुरुषअधाबसजोई १
बिरवा एक सकल संसाला । स्वर्गशीशजरगयलपताला २

हेपंडित यह संसार रूपी वृक्षको जोतैंबूझि राखेहै कहेमानि राखेहै तैं बूझतौ जितने बिचार होइहैं तिनको यहमिथ्याहीहै हरिकेचिदअचिद रूप ते सत्यहै यहसंसार वृक्ष आधा पुरुषहै आधा प्रकृतिहै अर्थात् चितपुरुष जीव औअचित् मायादिक इनहीं ते संपूर्ण जगत्है १ पुनिकैसोहै ससार रूपी बिरवा याको स्वर्ग शीश कहे ब्रह्मांडको जो खपराहै सो शीशहै अरु याकी जर पातालमें गईहै २ ॥

बारह पखुरी चौबिसपाता । घनबरोह लागीचहुंघाता ३
फलै न फुलै वाकिहैबानी । रैनिदिवसबिकारचुवंपानी ४

औ बारह महीना जेहैं ते बारै पंखुरीहैं अर्थात् काल औ चौबिसतत्व वाके चौबिस पातहैं औ घनकहे नाना कर्मनकी बासना तेई घन बरोह चारोंओर लगीहैं ३ या संसाररूपी वृक्ष साहबको ज्ञानरूप फलनहीं फूलै औ साहबको भक्तिरूप फलनहीं लगैहै या संसारके बाहर भयेते होयहै औ रातिदिन बिकाररूप पानी चुवैहै ४ ॥

कहकबीरकछु अछलोनजहिया । हरिबिरवा प्रतिपालततहिया ५

सोकबीरजी कहैहैं कि जहांहरि परमपुरुष श्रीरामचंद्र जाके अंतःकर्णमें भागवत् धर्मरूपी बिरवनकीबाग प्रतिपालैहैं तिनको यह संसाररूपी बिरवा अच्छोनहीं है व्यंग यहहै कि मालीजो होइहै सो कांटावाला पेड़निष्काम अलग कैदेइहै इहां हरि संसाररूपी बिरवा अलगकै देइहैं भागवतधर्मरूप विरवा श्रीकबीरजी रेखतामेंकह्यो॥ धर्मकीबागफुलवारिफूलीरही शीलसंतोषबहुतकसोहाई । भक्तिकाफूलकोउसंतमाथेधरै ज्ञानमतभेदसतगुरुलखाई । बिबेकबिच्चारसोइबागदेखनचलेपै मफलपाइटोरैचखाई । पराहै स्वादजबऔरभावैनहीं तजैगाप्राणकीबहवई ५ इतिपचासवांशब्दसमाप्तम्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथइक्कावनवांशब्द ॥

बुझबुझपंडितमनचितलाय । कबहिंभरलबहैकबहिंसुखाय १ खनउबैखनडुबैखनअवगाह । रतननमिलैपावनहिंथाह २ नदियानाहिंसरसबहैनीर । मच्छनमरैकेवटरहैतीर ३ कहकबीर यहमनकाधोखा । बैठारहै चलाचह चोखा ४ ॥

बुझबुझपंडितमनचितलाय । कबहिंभरलबहैकबहिंसुखाय १

हेपंडित सारासारके बिचारकरनवाले तेतोबिबेकी कहावैहैं चितलगाइकै यह मनको बूझतौकबहूं भरलकहे कबहूं तो तैंआपनेको मानिलेइहै कि मैंही ब्रह्महौं आनंदते भरिजायहै औ कबहूं वहज्ञान बहिजाइहै तब सुखाइजाइहै अर्थात् वह आनंद नहीं रहिजाइहै १ ॥

खनउबैखनडुबैखनअवगाह । रतननमिलैपावनहिंथाह २
नदियानाहिंसरसबहैनीर । मच्छ न मरै केवट रहै तीर ३

तब क्षणमें संसारते मनऊबि उठैहै कहे बैराग्यहै आवैहै औ क्षणमें वही मनरूपी नदीहिलैहै बूड़िजाइहै अर्थात् संसारके बिषयमें बूड़िजायहै औ क्षणमें अवगाहहै कहे नानामतमें बिचार करैहै कि संसार छूटिजाइ सोमन रूपी नदीकीथाह नहीं पावैहै तेहिते रत्नजोहै स्वस्वरूप सोनहीं मिलैहै बिचारही करत रहिजायहै २ सो मनरूपी नदियाहैनहीं जो तैंबिचारकरै तूतो मनके बाहरहै परंतु सरसनीरसंकल्प बनैहै अब मच्छको मारनवालो केवटज्ञान तीरमें बनैहै परंतु काम क्रोधादिक मच्छतेरेमारेनहीं मरैहैं ३॥

कह कबीरयह मनकाधोखा । बैठा रहैचलाचह चोखा ४

सो कबीरजी कहैहैं कि नानामतमें परिकै संसारछूटिबेकोनहीं उपाय करौहौ औ चोखेकहे नीकेचला चाहौहौ परंतु हौ बैठे कहे साहबकेमिलिबेको उपाय ये एकऊ नहीं हैं काहेते कि पश्चिमको ग्राम जगीचऊ होइ औ तहांजाइबो चाहै औ जसजस पूर्बको मेहनत करिकै मंजिलकरै तौतस तस दूरिहो परंतु जाइहै यह संसार मनको धोखा मिथ्याहै सो मनते भिन्नहैकैसाहबमें लगैतबहीं साहबमिलैंगे ४ इतिइक्कावनवांशब्दसमाप्तम्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथबावनवांशब्द ॥

बूझिलीजैब्रह्मज्ञानी । घोरिघोरिबर्षाबरषावैपरियाबुंदनपानी १ चींटीके पगहस्तीबांधे छेरीबीगैखायो । उदधिमाहँतेनिकसिछांछरी चौड़ेगेहकरायो २ मेढुकसर्परहैयकसंगै बिल्लीश्वानबियाही । नितउठिसिंहसियारसों जूझैअद्भुतकथोनजाही ३ संशयमिरगातनबनघेरे पारथबानामेलै । सायर जरैसकलबनडाहै मच्छअहेराखेलै ४ कहकबीर यहअद्भुतज्ञाना कोयहि ज्ञानहिबूझै । बिनुपंखैउड़िजाहिअकाशै जीवहिमरणनसूझै ५ ॥

बूझिलीजैब्रह्मज्ञानी ।
घोरिघोरिबर्षाबरषावै परियाबुंदनपानी १

हेब्रह्मज्ञानी आप बूझिये तौ घोरिघोरि कहे नयेनये ग्रन्थनको बनाइ कै कहे माया ब्रह्मजीव एकैमें मिलाइडार्यो कि एकही ब्रह्महै वही बाणी शिष्यनके श्रवणमें बर्षा ऐसो बरषावौहौ परंतु तुम्हारे बानीरूप पानीको बुंदहून उनके पर्यो अर्थात् तनकऊ ज्ञान न भया वे ब्रह्म कबहूं न भयो सो तुम्हारो यह हवाल ह्वैरह्योहै १ ॥

चींटीकेपगहस्तीबांधे छेरीबीगैखायो ।
उदधिमाहँतेनिकसिछांछरी चौड़ेगेहकरायो २

चींटी कहिये बुद्धिको काहेते कि सूक्ष्म होइहै कुशाग्रवर्त्तीशास्त्रमें कहैहैं ताके पाइमें मतंगरूप जो मनहै ताको बांधिदियो मन बड़ाहै औ दुर्वार मतहै याते हाथीकह्यो तब छेरीजोहै माया सोबीगाजोहै जीव ताकोखाइ लियो जीवको बीगा काहेतेकह्यो कि जोजीव आपने स्वरूपको जानै तौ छेरीजोहै माया ताको नाशकैदेइ सोछेरी मायही बीगाजीवको आपनेपेट में डारिलियो अरु छेरी मायाको कहैहैं तामेंप्रमाण॥ अजामेकांलोहितशुक्ल कृष्णा इत्यादि सो लोकप्रकाश जो उदधि तहांते निकरिकै चौड़ी छांछरी जोसंसार तामें मच्छरूप जीवघरमायाते बनवायो अर्थात्संसारीह्वैगयो२॥

मेढुक सर्परहै यकसंगै बिल्लीश्वान बियाही ।
नितउठिसिंहसियारसोंजूझैअदभुतकथोनजाही ३

वह कैसो संसारहै जहां मेढुकजीव औ सर्पकाल एकैसंग रहैहैं नाना शरीरनको कालखात जाइहै पुनिपुनि शरीर होत जाइहै अरु बिल्ली जोहै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसीवृत्ति सो स्वानभवानंद ताको बिवाहीगई अर्थात् वाहीमें लगिगई वृत्तिको बिल्ली काहेते कह्यो कि बिल्ली जहैं गोरस देखैहै तहैं जाइहै औ यहवृत्तिजोहै सोऊ जहैं रसजोहै सुख सो देखैहै तहैं जाइहै सो स्वानभवानंदमें बहुत सुखदेख्यो याते वाहीको बिवाहीगई तब नितउठिकै सिंहजो ज्ञान सो सियार अज्ञानते मारो जाइहै जोकह्यो ज्ञानतो अज्ञानको नाश करनवारोहै अज्ञानते ज्ञान कैसे नाशहोइहै सो वहजो ब्रह्मज्ञान कियो कि हम ब्रह्महैं सो अद्भुतहै कहिबे लायक नहीं है नेति कहैहै अर्थात् कोई जीव ब्रह्मनहीं भयो यह कौनेहू शास्त्र पुराणमें नहीं कह्यो कि फलानोजीव ब्रह्महैगयो याहीते मूलाज्ञानमें ठहरायेहैं ३ ॥

संशयमिरगातनबनघेरे पारथबानामेलै ।
सायरजरैसकलवनडाहै मच्छअहेराखेलै ४

येई दुइतुक अधिकसे जाने परैहैं परंतु पोथीमें लिखोलख्यो अर्थकरि दियो सो शरीर बनको संशय जो मिरगाहै सो घेरे है औ पारथजेहैं गुरुवा लोग तेसंशयरूपी मृगाके मारिबेको बाणजोहै नानाप्रकारको उपदेशरूप बाणी ताको मेलैहैं सो उनको बाणीनते संशयतो नहीं दूरि होइहै कहाहै सो कहैहैं सायरजोहै बिबेकसागर सो जरिजाइहै औ नानाशरीर जेवनहैं तेलाय देइहैं अर्थात् गुरुवनकी बाणी सुनि सुनिकै शिष्यलोग जब और और जीवनको उपदेश कियो तब उनको सबको साहबको बिबेक जरि जरिगयो और और में लगिगये बिबेक करिकै साहबको ज्ञानजो ह्वै बेको रहै सो न भयो तब संसारसमुद्रमें मच्छजोहै कालसो अहेर खेलैहै अर्थात् जीवनको खाइहै ४ ॥

कहकबीरयहअद्भुतज्ञाना कोयहिज्ञानहिंबूझै ।
बिनुपंखेउड़िजाहिअकाशै जीवहिमरणनसूझै ५

श्रीकबीरजी कहैहैं कि यह संसार अद्भुतहै औब्रह्म अद्भुतहै इनदूनोंको ज्ञान जिनकोहै कियेधोखाहै ऐसोकोहैं अर्थात् कोईनहीं है परन्तु जोकोई बिरला बूझनवारो होइ औमनमाया येदूनोंधोखाहैं इनहीं तहैं उड़ैहै नाना पदार्थनको स्मरण होइहै नानायोनि पावैहै संसार में तिनको छोड़ि एक परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहीको ह्वै रहै तौब्रह्म जोहै आकाश ताते उड़ि कहे निकसिकै साहबके यहां पहुंचै जाइ जोकहो बिना पखना कैसेउड़िजाइ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो यहां उपासना दुइप्रकारकीहै एक बांदरकैसो बच्चा भजन करैहै कि बांदरको बच्चा अपनी माताको आपही धरेरहेहै सोयह जीव नानाप्रकार के शास्त्रादिकन ते बिचारकरिकै औ असांचमत खण्डन करिकै आपही अपने साहबको धरे रहेहै भूममें नहीं परैहै औदूसरी उपासना बिलारी के बच्चाकीसीहै बिलारीको बच्चा औरसबकी आशातोरे माताकीआशा किये रहेहै सोवह बिलारी अपने बच्चाको जहांसुपास देखैहै तहांआपही उठाइ लैजाइहै तैसे यहजीव वेदशास्त्रको छोड़िकै न काहूकेमतकेखंडन करिबेकी सामर्थ्यहैं न अपनेमतकेमंडनकरिबेकीसामर्थ्यहै साहबको जानै हैंकिमैंसाहबका हौं दूसरो मतसुनतहीनहीं है सोजब सब पक्षको छोड़िकै साहबको ह्वैरह्यो तबयाको साहबही हंसस्वरूप दैकै अपने लोकको उठाइ लैजाइ है ५ इतिबावनवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथतिरपनवांशब्द ॥

गुरुमुख ॥ वहबिरवा चीन्है जोकोई । जरामरण रहितैतनहोई १ बिरवा एकसकल संसारा । पेड़एक फूटल तिनडारा २ मध्यकी डारचारि फल लागा । शाखा पत्र गनतको बागा ३ बेलिएक त्रिभुवन लपटानी । बांधेते छूटिहि नहिं पानी ४ कह कबीर हमजात पुकारा । पण्डित होय सो करै बिचारा ५ ॥

वहबिरवा चीन्है जोकोई । जरामरण रहितैतनहोई १

जोबिरवाको आगे वर्णन करैहैं ताकोजो कोई चीन्है औ असार मानि लेइ औसारजो साहबहै तिनको जानै सोपार्षद स्वरूपह्वैजाइ औजन्म मरणते रहितह्वैजाइ १ ॥

बिरवाएक सकलसंसारा । पेड़एक फूटल तिन डारा २
मध्यकेडारचारिफललागा । शाखापत्रगनतको बागा ३

सोएक बिरवा सब संसारहै तौनेबिरवाको पेड़कहे मूल बिराट पुरुष है तौनेमें ब्रह्मा बिष्णु महेश तीनिडार फूट्योहै २ सोमध्यकी डारजे बिष्णुहैं तिनमें अर्थधर्म काम मोक्ष ये चारि फल लागत भये चारि फलके देवैया बिष्णुहैं सोजो कोई बिष्णुका उपासक होइ सोचारो फलकोपावै डारनजो डरैया कहैहैं तेशाखा कहावैहैं सोब्रह्मा बिष्णु महेश जे तीनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डारेहैं तिनते नाना देव नानामतभये तेई शाखाहैं तिनको कोऽनत बागाहै अर्थात् उनको अंतकोई नहीं पायो औ सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी जे नाना बासना होत भईं तेई पत्रहैं ३ ॥

बेलिएक त्रिभुवनलपटानी । बांधेतेछूटिहि नहिंपानी ४
कहकबीरहमजात पुकारा । पंडितहोयसोकरैबिचारा ५

वृक्षमें बेलि लपटैहै सो यहसंसाररूपीवृक्षमें आशारूपी बेलि लपटि गईहै तामें बंधिकै प्राणी छूटैनहीं है ४ साहब कहैहैं किहेकबीर कहेजीव तोको संसार जातमें हम पुकाराहै राम नामको सोपंडितहोइ तौ बिचार करिलेइ अर्थात् असार जोरामनाममें जगत्मुख अर्थ ताको छांड़ि राममें सारजो मैं ताको जानिकै रामनाम जपिकै मेरे पासआवै ५ इतितिरपनवां शब्दसमाप्तम् ॥

अथचौवनवांशब्द ॥

साईंके सँग सासुर आई । संगनसूती स्वाद न मानी गयो यौवन सपने की नाईं १ जनाचारि मिलि लगन शोचाई जनापांच मिलिमंडप छाई । सखी सहेली मंगलगावैं दुख सुख माथे हरदि चढ़ाई २ नाना रूप परी मनभावँरि गांठी जोरिभईपतिआई । अरधे दे दैचलीसुबासिनि चौकहिरांड़ भई सगसाईं ३ भयोबिवाहचलीबिनदूलह बाटजान समधीसमुझाई । कह कबीरहमगौनेजैबे तरबकंतलैतूरबजाई ४ ॥

यहजीव परमपुरुष श्रीरामचंद्रकी शक्तिहै सो जौनीभांतिते याको आपने स्वरूपको ज्ञानरह्योहै औ फिरि भयोहै सो लिखैहैं ॥

साईंकेसँगसासुरआई ।
संगनसूतीस्वादनमानीगयोयौवनसपनेकीनाईं १

परमपुरुष श्रीरामचंद्रके लोकको प्रकाश जोब्रह्महै ताको साईं मानिकै ताहीसंग सासुरजो यह संसारहै तहां आई सासुर संसार काहेते ठहरयो कि अहं ब्रह्मबुद्धि संसारहीमें होइहै जब संसारके बहिरे रहैहै तबतोयाको सुधिही नहीं रहैहै जब महाप्रलय ह्वै जाइहै तब सतजोहै साहबके लोक को प्रकाश ब्रह्म ताहीमें सब रहैहैं जब उत्पत्तिका समयभयो सरतिपायो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब आपनेको लोकप्रकाश ब्रह्ममान्यो तब मनभयो मनते इच्छाभई तब यह ब्रह्मकहैहैं कि मैं जीवात्मामें प्रवेश करिकै नामरूप करिकैहौं सोजीवात्मामें प्रवेशकरिकै नामरूप जीवात्माके करतभयो याहीते याको साईं मानिकै चित शक्ति जीव सासुरजो संसार तहां आवतभयो सोवह ब्रह्मको खसममानिलेबो धोखाहै कहेते कि वहतो निराकारहै सोवाके संगनसोवत भई न स्वाद पावतभई नानारूप धरतभई तेई यौवनहैं जे सपनेके नाईं जातभये सो जौनीभांति चितशक्ति जीव साईंकेसंग ससुरेमें आई सो लिखैहै अपनेको ब्रह्ममान्यो तब संसारकी उत्पत्तिभई तामेंप्रमाणकबीर जीके शब्दमंगलको ॥ सोउत्पत्तीबीजहै शून्यप्रलयकरठाउं । तनछूटेवह जाइहौअकहबसायोगाउँ १ ॥

जनाचारमिलिलगनशोचाईजनापांचमिलिमंडफछाई ।
सखीसहेली मंगलगावैं दुखसुखमाथे हरदिचढ़ाई २

जनाचारकहे मन बुद्धि चित्त अहंकार येजे अंतष्करण चतुष्टयहैं तेईमिलिकै लग्न शोचावतभे अर्थात् जीवको शरीरकी लग्न लगावत भये औ जना पांचकहे पृथ्वी जल अग्नि बायु आकाश येपांचौ तत्व मिलिकै मंडफ छावतभये शरीर बनावतभये औ सखी सहेलीजेहैं पांचकर्मेन्द्रीते मंगल गावैहैं गाइबो कहाहै कि रूप रस गंध स्पर्शशब्द येबिषयको लेनलगे औ नानाप्रकारकी जे पुण्य पापकीवृत्तिहैं तेई कुवांरीकन्याहैं सोनानाप्रकार के पुण्यपाप कराइकै दुःखसुखकी हरदीजीवरूप दुलहिनिके माथे चढ़ावैहैं२॥

नानारूपपरीमनभँावरि गांठीजोरिभईपतिआईं ।
अरघैदैचलीसुवासिनिचौकहिरांड़भईसंगसाईं ३

औ नानारूपकहे नानाभांतिकी जेबासनाहैं तिनहीं की याके मनमें भांवरि परिगईहै औ चित अचितकी गांठी परिगई ताहीते ब्रह्मको पतिआइ कहे पतिआय गईहै अर्थात् ब्रह्मको पति मानिलियोहै कि वहब्रह्ममही हौं हेतुयहहै किजब बिवाह ह्वै जाइहैतबस्त्री अर्द्धांगी ह्वै जाइहै औ सुवासिनि वे कहावैहैं जे याकुलकीकन्या अनत बिवाही रहैहैं सोजब संसारमें जीव ब्रह्मफांसमें फँसिगयो तब सुवासिनिजेहैं साहबके जनैया जिनकोब्रह्मसों बिवाह नहीं भयो तेअरघदैकै कहे उपदेश करिकै वाको लैचले सो यद्यपि याको चौका बनोहीहै मड़येकेतर बैठीहीहै अर्थात् यद्यपि संसारमें शरीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारण कियेहै परंतु तहैं रांड़ह्वै मई ब्रह्मको पतिमानि राख्योहै सोबिचार मरिगयो अर्थात् वाको धोखा समुझिलियो इहां रांड़ह्वै बो कहिआये औ सांच साईंको संग बनैहै यहजो कह्यो सो साहब सर्वत्र बनैहै वह अहं-ब्रह्मको बिचार मिटिगयो ३ ॥

भयोबिवाहचलीबिनुदूलहबाटजातसमधीसमुझाई ।
कहकबीर हमगौने जैबे तरबकंतलैतूर बजाई ४

सो इस तरहते बिवाहभयो कहे इसतरहते संसारी भयो औपुनिबिन दूलह चलत भई कहे अहंब्रह्म बुद्धि न रहिगई मुक्तिह्वै कै चितशक्ति जीव साहबके पास जाइबेकी गैललियो सोवह बाट जातमें समधी जोहै शुद्ध समष्टि जीवसो याको समुझावत भयो कि जैसेहम शुद्धहैं तैसेतुमहू शुद्ध हौ अर्थात् जबजीव साहबके लोक प्रकाशको बेधिकै साहबके लोक को चल्यो तबयह समुझत भयो किजैसे येशुद्ध रहेहैं तैसे हमहू शुद्ध रहेहैं यह बीचहीमें धोखाभयोहै उनको देखिकै यहज्ञानभयो यहीउनको समु-झाइबोहै यही समुझबोहै सोकबीर जोहै कायाकोबीर जीव सो कहे है कि मनबचनके परे जोसाहबके ऊपर दूसरो साहब नहीं है जासों हमारो बिवाह ह्वै बोको नहीं है वह हमारो सदाको कंतहै तहांहम गवने जाइहैं अर्थात् तहांको हमगवन करेंगे अरु वाहीकंतको लैकै कहेपाइकै तरिजाब औरे कंतको लैकै न तरैंगे औतहैं परममुक्तिरूपी तूरबजावेंगे अर्थात् और ईश्वरनमें लागे औ आपनेको ब्रह्म माने मुक्तिरूपी तूर न बाजैगो अर्थात् संसार औसब उपासना औब्रह्महू जाइबो ये सब तूरिकै साहबके पास जाइकै अर्थात् डंकादैकै जाइगो ४ इतिचौवनवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथपचपनवांशब्द ॥

नलको ढाढ़स देखोआई। कछु अकथकथाहैभाई १ सिंहशार्दुल यकहर जोतिनि सीकसबोइनिधाना। बनकी भलुइया चाखुर फेरै कागरभये किसाना २ कागा कपरा धोवन लागे बकुला किररैदांता। माछीमूड़ मुड़ावन लागी हमहूं जाब बराता ३ छेरी बाघहि ब्याह होतहै मंगल गावै गाई। बनके रोझधैदाइज दीन्हो गोहलोक दैजाई ४ कहै कबीरसनोहो संतो जोयहपद अर्थावै। सोइपंडित सोईहै ज्ञाता सोईभक्त कहावै ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनको सतगुरु मिले तिनको याभांति उद्धारहै गयो औजिनको सतगुरुनहीं मिले जे सतगुरुको नहीं मान्यो तिनको गुरुवा लोग और और मतमें लगाइदेइहैं वे साहबको नहीं जानैहैं सो कबीरजी कहैहैं॥

नलको ढाढ़स देखो आई। कछु अकथ कथाहै भाई १

साहब कहतेहैं किहे भाई हेसंतो ढाढ़सदेखो यहजीव मेरो अंशहै सो मोको नहीं जानैहै और औरमें लागिकै खराब होइहै नाना दुःख सहैहै मोको जानिकै दुःखनहीं त्यागकरैहै बड़ोढाढ़सीहै सोहेभाइउ ढाढ़सकरि कै जौनेके लिये जामें यहलागैहै सोब्रह्मअकथ कथाहै कहिबेलायक नहीं है वह ब्रह्मबिचार झूंठाहै वहांकछुप्राप्ति नहीं है सोअकथ कथा कहैहैं १॥

सिंहशार्दुल एकहरजोतिनि सीकस बोइनि धाना।
बनकीभलुइया चाखुरफेरै छागरभये किसाना २

यहां सिंहजोहै जीव शार्दूलजोहै मन येईदोऊ बैलहैं कर्म जोहै सोई हरसंसार सीकस भूमिहै कहेऊसर भूमिहै अजा कहावैहै माया सोईछेरी ताको पति बोकराहै सोछागर कहावै तेई मायामें लपटे किसान गुरुवा लोग सो जोतिकैउपदेशरूप धानबोवतभये औतौनेनवा नावके जेभलुइया कहे भुलावन हारे पंडित तेई चाखुर फेरैं कहे निरावैहैं अर्थात् ताते वृत्ति करिकै वेदजो साहबको बतावैहै ताको अर्थ फेरि डारैहै २॥

कागा कपरा धोवन लागे बकुला किररै दांता।
माछीमूड़ मुड़ावन लागी हमहूंजाब बराता ३

नाना पाषण्ड मतमें परेऐसे जेहैं मलिन पाषण्डी जीव तेई कागहैं ते कपरा धोवन लगे कहे सबको उपदेश करैहैं किहमारे मतमें आवो तौ हम तुम्हारो अंतष्करण शुद्धकरिदेइँ औरूपकपक्षमें जबबरात जाइहै तब सबुनी करिकै लोगजाइहैं ताते यहां सबुनी करिबो लिख्यो अरु जिनके अंतष्करण रूपी धोवनको वे उपदेश कियो तेई बकुलाभये कहेऊपरते तो वेष बनाये चन्दनटोपी दियेहैं औअंतष्करण मलीनहै बिषयमें चित्तलगा-ये रहैहैं जहांकोई संतमत कहनलगैहै ताको खंडन करिडारैहैं दांतकिररैहैं कहे कोप करैहैं जैसेबकुला ऊपरते तोस्वच्छहै औनदीके तीरमछरीखाइबे कोबैठहै भीतर बासना मलीन भरीहै हंस आवैहै तिनको डेरवायकै बैठन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं देइहै दांतकिररैहै तैसेबरात जबचलैहै तबकारिंदा कामकाजी सपेद कपरा पहिरि दांत किररैहैं कियह काम करो वह काम करो कहांबैठेहौ यह रिस करैहैं औ माछी कहे जो माया ते क्षीणहै बेको बिचार करैहैं ते माछी कहवावैहैं अर्थात् मुमुक्षूते नानामतके जेगुरुवालोगहैं तिनकेयहां मूड़ मुड़ावैहैं किहमहूं बरातजाब कहे हमहूं मुक्तिहोब सोवहां मुक्तितो पायो नामहि पर रूपी मीठी बाणीमें परिकै आपनेको ब्रह्ममानत भये तेहिते स्वस्वरूपको ज्ञान न रहिगयो मायामें फँसिगये औ रूपक पक्षमें दुलहा के संगती जेहैं ते बार बनवावैहैं ३ ॥

छेरी बाघहि ब्याह होतहै मंगल गावैं गाई।
बनके रोझ दाइज दीन्हो गोहलोकंदैजाई ४

अब ब्याहको रूपक कहैहैं गुरुवालोग जेहैं तेई पुरोहितहैं उपदे शकरन वारे ते छेरीजोहै माया ताको औ बाघजोहै जीव ताको ब्याह होतहै अर्थात् जीवको मायामें डारिदेइहैं औ छेरीजोहै माया ताको बाघजोहै जीव सो खाइलेनवारोहै अर्थात् जोजीव आपने स्वरूपको जानै तौ मायाको नाश करिदेइ अरु तहां गायरूपी जोगायत्रीहै सोमंगल गावैहै अर्थात् सब जीव को करतव्य गायत्री गावैहै वेदगायत्रीते कह्योहै औबनकहे बाणीको रोझ जोहै प्रणव ताकोदाइज दीन्हो यहां रोझको प्रणव काहेते कह्यो कि रोझग वेकहावैहैं काहेते कि गोकी सदृशहोइहै सोगैया जोहै गायत्री ताकेसदृश प्रणवहीहै अर्थात् वहगायत्री प्रणवहीते निकसीहै प्रणवब्रह्महै ताकोदाइ-जदीन्हो कहे ब्रह्ममैंहीं हौं यह प्रणवको अर्थसमुझाइ दीन्हो कन्याके साथ जो डोलहाई जाइहैं तेलोकंदी कहावैहैं सोयह लोकोक्तिहै मिथिला कैती कहैहैं सोगोहजोहै सोलोकंदैजाइहै कहेडोलाके साथजाइहै वहां गोहकहे गोजोइंद्रीहैं जबजीव मायामेंलपटै तबऔर चंचल ह्वैजाइहै नाना शरीर रूपडोलामें चढ़ा जीव ताहीके साथ साथ जाइहै ४ ॥

कहै कबीर सुनौहो संतौ जोयहपद अर्थावे।
सोई पंडित सोई ज्ञाता सोई भक्तकहावे ५

सोकबीरजी कहैहैं कियहसाहबको कह्यो जोयहपदहै ताको हेसंतौ तुम सुनौ इसपदमें जेभ्रम वर्णन कियो तिनको छोड़िकै यहपदको अर्थ सांच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोसाहब ताको जानै असांचको छोड़ै सोई पण्डितहै सोईज्ञाताहै सोई भक्तहै ५ इतिपचपनवांशब्द समाप्तम् ॥

श्रीकबीरजी साहब की उक्तिमें कहैहैं गुरुमुख ॥

अथछप्पनवांशब्द ॥

नलको नहिं परतीति हमारी । झूठे बनिज कियो झूठेसन पूंजी सबै मिलिहारी १ षट दर्शन मिलिपंथ चलायो तिरदेवा अधिकारी । राजादेश बड़ो परपंची रइअत रहत उजारी २ इतते उत औउतते इतरहु यम की साट सवारी । ज्योंकपि डोर बांध बाजीगर अपनेखुशी परारी ३ यहै पैठ उतपति परलयको बिषया सबैबिकारी । जैसेश्वानअपावन राजी त्योंलागी संसारी ४ कहकबीर यह अद्भुतज्ञाना मानोबचन हमारो । अजहूं लेहु छोड़ाय कालसों जोघट सुरति सँभारो ५ ॥

नलको नहिं परतीति हमारी ।
झूठे बनिज कियोझूठेसन पूजीसबै मिलिहारी १

सबते गुरु परम परपुरुषपर श्रीरामचन्द्र कहैहैं किनरको हमारी परतीति नही है सबलोग झूठेसों झूठीबनिज करतभये कहे झूठेब्रह्ममें जे लगावैहैं ऐसेजे गुरुवालोगहैं सौदागर तिनसों झूंठी बनिज करतभये कहे झूठे ब्रह्ममें लगावैहैं ऐसेजे गुरुवा लोगहैं सौदागर तिनसों झूंठी बनिज करत भये अर्थात् जोवे उपदेश कियो कि तुमहीं ब्रह्महौ सोझूठाहै तासों बनिज करिकै पूंजी सबहारिगयो कहे आपनी आत्माको ज्ञान भूलि गयो कौन ज्ञान भूलिगये कि यह आत्मातो मेरो सदाको दासहै बद्धहूमें मुक्तहूमेंहै तामेंप्रमाण ॥ दासभूताःस्वतःसर्वेह्यात्मानःपरमात्मनः । नान्यथा लक्षणन्तेषांविधेमोक्षेतथैवच इतिपद्मपुराणे॥ जोकहौभुलवाइकौनदियो १॥

षटदरशनमिलिपंथचलायो तिरदेवाअधिकारी ।
राजादेश बड़ेपरपंची रइअतरहत उजारी २

औ षटदर्शन जेहैं ते मिलिकै नानापंथ चलावतभयो कोई योगीहैकै योगधारण करनलग्यो औकोई अनुभव कथिकै शून्यज्ञान पंथ चलायो औ कोई नानाप्रकारके कर्म करनेलगे औकोई नानाउपासना करनेलग्यो औ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोईमैंब्रह्महौं यह कहनेलग्यो औ कोई कर्त्ता न्याराहै यह कहनेलग्यो औ कोई मतें छोड़िकै आत्मामें स्थितभयो या ब्रह्मांडमें ब्रह्मा विष्णु महेश अधिकारीहैं तेसब मतनके अधिष्ठाताहैं याहेतुते सतरजतमते कोई नहीं छूट्यो औ ओई राजाजेहैं ब्रह्मा विष्णु महेश औ उनको देशजोहै सतरज तम सोबड़ो परपंचीहै याहीते रइ अत जे सब जीवहैं तिनके अंतष्करण उजारि रहेहैं मोर जोहै भक्ति मोरे जोहै ज्ञान सो उनको अंतष्करण में नहीं होन पावैहै २ ॥

उततेइतरहु इततेउतरहु यमकी साटसवारी ।
ज्योंकपिडोरबांधिबाजीगरअपनेखुशीपरारी ३

तेहितेइतउतकहे कहूं स्वर्ग जाइहै कहूं नरकजाइहै कहूं आपने उपास्य देवतनके लोकजाइहै फिरिइहां आइकै उनहीं की उपासना करैहै औ पुनि जब उपासनाभूले तब पुनि पापकरिकै नरक जाइहै तिनके वास्ते यमकी सांटसवारी कहे यमकेदण्ड ते नहीं बचैहै जौने कपिकहे बांदरको बाजीगर आपनी डोरीते बांधेहै औवह बांदर बाजीगरके बशह्वैगयो तब अपनी खुशीते वाके बंधनमें परोरहैहै नानानाच नाचैहै प्रथम चित्रशक्तिमें जगत् को कारणरूप बनो रह्यो ताते याहीभांति सबजीव माया ब्रह्मके बशह्वै गये तब वही बंधनमें अपनी खुशीते परे रहैहैं वही ब्रह्मको ज्ञानकरैहैं मोको नहीं जानैहैं ३ ॥

यहैपेठउत्पत्तिप्रलयकोबिषयासबैबिकारी ।
जैसे श्वानअपावनराजी त्योंलागीसंसारी ४

यहै मायाब्रह्म उत्पत्ति प्रलयको पेठहै अरु संसारमें जे संपूर्ण विषयहैं तेई बिकारहैं याते मोहिते व्यतिरिक्तजे पदार्थ संसारमें ज्ञानयोग वैराग्य भक्तिआदिक जेहैं तेसब विषयहैं याहेतुते कि जामें जामें मनलगैहै तेसब मनकी विषयहैं तेसब बिकारईहैं औ जोयहै पेठ उत्पत्ति प्रलयको सौदास-बैबिकारी ऐसो पाठहोइ तौयह अर्थ पेठ नाउं हाटको यहदेशभाषाहै सो अनंतकोटि ब्रह्मांडनके उत्पत्ति प्रलयको माया ब्रह्म दोनों तरफकी पेठ कहे बजारहैं सो यह जगत् शहरहै विषयरूपी सौदाजोहै ताके संसारी जीव लगनवारेहैं सो जैसे श्वान कुत्तासों अपावनजो हाड़है ताको चाटैहै तब वोहीके दांतते लोहू निकसैहै सोहाड़में लगैहै सोऊचाटतै जायहै वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में राजी रहैहै तैसे यह आत्मा अपने भूममें पराहै यहीकोभ्रम नानाविषय में सुखरूप देखोपरैहै सोविषयतो जड़है विषयमें सुखनहीं है याहीको सुख विषयनमें जाइरहैहै आपने सुख विषयमें पावैहै अरुमानै यहहै याहीकोसुख विषयनमें जाइरहैहै आपनो सुखविषयमें पावैहै अरुमानैहै कि मैं विषयको सुखपाऊहौं अरु वह ब्रह्मको अनुभव कियो तहां वाके आत्मैको सुखमिलैहै जानैयहहै कि मोको ब्रह्मानंद भयोहै काहेते कि जब भर अहंब्रह्म बुद्धिरहैहै तबभर तो मूलाज्ञान ठहराइहै जब सबको निराकरणह्वै गयो एक आत्महीको ज्ञान रहिगयो सोब्रह्मानंद रूपहोइहै तेहिते वह ब्रह्मानंद आत्महीको आनंदहै सो जैसे श्वान आपनेही लोहूके स्वाद ते हाड़को चाटैहै तैसेयहौ आपनोसुख विषय ब्रह्ममें पाइकै भूलिरह्यो संसारी ज्ञान याके जगिरह्योहै ४ ॥

कहकबीर यहअद्भुतज्ञाना मानोबचन हमारो ।
अजहूंलेहुंछोड़ायकालसोंजोघटसुरतिसँभारो ५

सोहेकबीर कायाकेबीर जीवौ हमतुमसों यह अद्भुतज्ञान कहैहैं हमारो बचनमानौ जो अपने घटमें सुरति सँभारो औ वहसुरति मोमेंलगावौ तौ अबहूं कहे मायाब्रह्ममें तुमपरेहौ ताहूपर तुमको मैं कालते छोड़ायलेउं अथवा अजहूं को भाव यहहै कि कालकी डाढ़में तुम परिचुकेहौ सोकालते तुमको छोड़ाइ लेउंगो ५ इतिछप्पनवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथसत्तावनवांशब्द ॥

नाहरिभजैनआदतछूटी । शब्दैसमुझिसुधारतनाहीं अँधरेभयेहियोकी फूटी १ पानीमाहँपषानकोरेखा ठोंकतउठैभभूका । सहसघड़ानितहीजल ढारै फिरिसूखेकासका २ सेतेसेतेसेतअंगभो सैनबढ़ीअधिकाई । जोसन्निपातरोगिअहिमारै सोसाधुनसिधिपाई ३ अनहदकहतकहतजगबिनशे अनहदसृष्टिसमानी । निकटपयानायमपुरधावै बोलहिएकहिबानी ४ सतगुरु मिलेबहुतसुखलहिया सतगुरुशब्दसुधारै । कहकबीरसोसदासुखारी जो यहिपदहिबिचारै ५ ॥

नाहरिभजैनआदतछूटी ।
शब्दैसमुझिसुधारतनाहीं अँधरेभयेहियोकीफूटी १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ना तैं हरिभजैहै अरु ना तेरी आवागमनकी आदतछूटे स्वभाव छूट्यो यह अर्थ साहबके कहे शब्दको सुनिकै औ बिचारिकै जो आपनो नहीं सुधारैहै सो काहेनहीं सुधारैहै काहेते कि साहब कहतई जाइहै कि जो मोको अबहूं जीवजानै तौ कालते छोड़ायलेउं ताते आंधरभये हियौकी तिहारी फूटिगई कहे यहै आदत करत करत वृद्धावस्था पहुंची इंद्रियन जवाबदियो तामेंप्रमाण ॥ नेहगयेनैनागये गयेदांतऔकान । प्राणछरीदा रहिगये तेऊकहतहैंजान । अबहूं तौजानौ भजन करिकैछूटिजाउ १ ॥

पानीमाहँपषानकोरेखा ठोंकत उठै भभूका ।
सहसघड़ानितहीजलढारैफिरिसूखेकासूका २

हेजीवौ तुमबड़े जड़हौ जैसे पानीमें पाषाणको रेखाकहे छोटीशरवती पथरी डारिराखै तो और भभूका आगीको उठन लगैहै चकमकमें ठोंकेते तैसे जसजस साधुलोग उपदेश करत जाइहैं तसतस साहबको भजनतौ नहीं करोहौ और कामक्रोध आदिक जेआगीहैं ते तुमको जोर करतजाइहैं अर्थात् जब उपदेश करन लगैहै तब अधिक रिसकरन लगौहौ जैसे पाषाण में नित हजारनघड़ा जलडारै पैपाषाण भीतर सूखै रहैहै तैसे केतऊ ज्ञान उपदेशकरै परंतु हेजीवौ तुम जड़के जड़ही बने रहौहौ २ ॥

सेतेसेते सेत अंगभो शयनबढ़ी अधिकाई ।
जोसनिपातरोगिअहिमारैसोसाधुनसिधिपाई ३

सेतसेतजो ब्रह्महै तामेंलगेलगे तुम भीतरबाहर सपेद ह्वैगये अर्थात् बुढ़ाय गयेउपरौकेरोमाबुढ़ायगये ब्रह्ममें सोवत सोवत तोको आपनो स्वरूप भूलि गयो तबशयनमेंकहे सोवनमें अधिकाई बढ़ी कहे अधिक सोवनलगे अर्थात् समाधिकरनलगे अपनी आत्माकोज्ञान औ साहबको ज्ञान औ जगत् भूलि गयो पिशाचवत् मूकवत् जड़वत् उन्मत्तवत् बालवत् तेरीदशा ह्वैगई सोई लक्षण संनिपातमें होइहै सो तोको सन्निपात भयोहै संनिपात रोगियाको मारैहै औ उनको आत्माको ज्ञान भूलिजाइहै ब्रह्मह्वै बो साधुलोग सिद्धि पाईहैंकि हम सिद्धहैं यह मानि लेइ ही आत्माको ब्रह्मह्वै बो असिद्धहै सो आगेकहैहैं सीतेसीते पाठहोइ तौज्ञानकरतकरत कि संसारतापहमारोछूटि जाइ शीतअंग ह्वैगये कहे संनिपातको अधिकाई तुम्हारे अंगमें बढ़िआई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् संनिपातमें खबरि देहकी भूलिजाइहै औ रोगियनको मारैहै सोई साधुलोग सिद्धिपाईहै कि हमकोदेहकी खबरि भूलिगई हमसिद्धहैगये३॥

अनहदकहतकहतजगबिनशे अनहदसृष्टिसमानी।
निकटपयाना यमपुरधावै बोलहि एकैबानी ४

वहजो ब्रह्महै ताकी हद नहीं है ताको अनहद कहतकहत कहे नेतिनेति कहत कहत संसार बिनशिगयो अनहद जोब्रह्महै तामें स्टष्टिके सबलोग समाइगये औ स्टष्टिमें वह अनहद ब्रह्म समाइगयो सोमानत तो यहहै कि सब ब्रह्महीमें समाइहै कहे ब्रह्मै जाइहै परंतु निकट पयाना यमपुरही को धाइबोहै अर्थात् आपनेको ब्रह्ममानिकै ब्रह्मनहीं होइहै यमपुरहीको चले जायहैं तेऊ एकही बाणी बोलैहैं कि एक ब्रह्महीहै दूसरानहीं है तामें धुनि यहहै कि अरेमूढ़ एकतो ब्रह्महै नरकै कौन जायहै ४॥

सतगुरुमिलेबहुतसुखलहिया सतगुरुशब्दसुधारै।
कहकबीरसोसदासुखारी जोयहिपदहिबिचारै ५

हेजीवो तमको सतगुरु मिलै तौ वेरामनामरूपी पदमें साहबमुख अर्थ बताइदेइं तौनेको जोतुम बिचारौ तौबहुत सुखपावौ श्रीकबीरजी कहैहैं जेशब्दनको अनर्थअर्थ बताइकै गुरुवालोगन बिगारिडारयोहै तेशब्द सतगुरु सधारैहैं काहेते अनर्थ अर्थ खंडन करिकै वे वेदशास्त्रादिकनके शब्दके तात्पर्यार्थ छोड़ाइकै साहबमुख अर्थ बताइ देइहैं सोजो वा शब्द जोराम नाम ताको जगतमुख अर्थ बताइ देइहै सो जो कोई रामनामरूपी पदमें साहबमुख अर्थबिचारै सो सदासुखीरहैहै ५ इतिसत्तावनवांशब्दसमाप्तम्॥

अथअट्ठावनवांशब्द॥

नरहरलागीदवबिकार बिनईधनमिलनबुझावनहारा। मैंजानोंतोही ते व्यापैजरतसकलसंसारा १ पानीमाहँअगिनिकोअंकुरमिलनबुझावनपानी॥ एकनजरैजरैनौनारी युक्तिनकाहूजानी २ पहरजरैपहरूसुखसोवैकहैकुशल घरमेरा। कुरियाजरैबस्तुनिजउबरै बिकलरामरँगतेरा ३ कुबिजापुरुषगल यकलागीपूजिनमनकीसाधा। करतविचारजन्मगोखीसाईतनरहलअसाधा४ जानिबूझिजोकपटकरतहै तेहिअसमंदनकोई। कहकबीरसबनारिरामकी मोतेऔरनकोई ५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरहरलागीदवबिकारबिनईंधनमिलनबुझावनहारा।
मैंजानों तोहींते व्यापै जरत सकल संसारा १

हेनरहर दवलागीकहे तेरे स्वरूपकी हरनवारी मायारूपी दवारि लागी है तैंकैसाहै बिकार बिन तौ मायामोको काहेको लगीहै तौ बिना ईंधन को बुझावन वारो तोको नहीं मिल्यो जोतोको समुझाइ देइ कि तैं बिनबिकार कोहै जोमिलाहै सोनाना उपासना नानामत रूपईंधन डारनवारो मिलाहै साहबको ज्ञानरूप जलडारै मायारूप दवारि कैसे बुझाइ सो मैं जानौहौं यामाया रूपी दवारि तोहीं ते उत्पन्नभै अर्थात् मायादिक तोहीं ते भये ताहीमें सब संसार जरो जायहै १ ॥

पानीमाहँअगिनिकोअंकुरमिलनबुझावनपानी।
एकन जरै जरै नौनारी युक्तिन काहू जानी २

सो वह मायारूपी अग्निको अंकुर पानीमेंहै कहे नानावेद शास्त्रादिक बाणीमेंहैं ते वेदशास्त्रादिकनके अर्थकोबदलिकै साहबको छिपाइकै माया रूपी अग्निको प्रगट कियो औतोको और और में लगाइ दियो अर्थात् वे सब मतनको फल ब्रह्म ह्वैजाइबोबताइ दियो वह अग्निके बुझावन को वेदशास्त्रादिकनको जोसांच अर्थहै जलसो नहीं मिलैहै अथवा जेवेदशास्त्रा दिकनकेसांच अर्थ मुनिजनलोगबनाइगयेहैं बशिष्ठसंहिता शुकसंहिता हनु-मत्संहिता अगस्त्य संहिता सदा शिवसंहिता सुंदरीतंत्रादिक ग्रन्थ औ वेदशिरोपनिषद विश्वंभरोपनिषदादिक सांचे मतके कहनवारे ते जल नहीं मिलैहै सोजब वह आगिलागी तबअद्वैत करिकै बहुत समुझावैहै परन्तु एक वह आत्मा नहीं जरै औ साहबमें जेनवधाभक्तिहैं तेनवनारीहैं तेजरैहैं सोयहयुक्तिकोई नहीं जान्यो किआत्माब्रह्मनहीं होइहैऔसाहब को जानै तौ वे नवधा भक्ति न जरैं २ ॥

शहर जरे पहरू सुखसोवै कहैकुशलघर मेरा।
कुरियाजरैबस्तुनिजउबरै बिकलराम रँगतेरा ३

औ शहरकहे साहबके मिलिबेके जेतेज्ञानहैं जीवात्माके ते जरेजाइहैं औ पहरूजो आत्मा सो सुखसों सोवैहै कहे साहबके बतावनबारे संतनहीं ढुरैहै जे आपने बाणी रूप जलसों माया ब्रह्मरूपी आगीबतावै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवतै रहैहै औ यह कहैहै किमैं सच्चिदानंदहौं सो मेरोघर जोहै सच्चिदानंद सो कुशलहै यहनहीं जानैहै कि ये सबतो जरिहीगये सो मैहूं जरि जाउंगी एकमाया ब्रह्मरूपी आगिही रहिजाइगी वही आगिमें तेरी कृत्रिया जोहै स्वस्वरूप ज्ञानकी सोऊ जरिजायगी अर्थात् जब ब्रह्माग्निमें सुषुप्ति होयगी तबमैं सच्चिदानंद रूपहौं यहूज्ञान न रहिजाइगो याहीते तैंबिकल है सोयह करु जाते तेरी वस्तुजोहै साहबमें नवधाभक्ति सोउबरै औरऔरे रंगमें लगिबो तेरो रंग नहीं है श्रीरामचंद्रके रंगमेंरँगै यहीतेरो रंगहै३॥

कुबिजापुरुषगलेयकलागी पूजिनमनकीसाधा।
करतबिचारजन्मगोखीसा इंतनरहलअसाधा ४

कुबिजापुरुष कहे अंगभंग पुरुष जोवह ब्रह्महै नपुंसक ताको एकमानि कै कि एक ब्रह्महीहै ताके गलेमें हेसाहबकी जीवरूपा शक्ति तैं लागी सो जैसे नपुंसक पुरुषके संग स्त्रीकी साध नहीं पूजैहै तैसे वह ब्रह्ममें लगे तुम्हारी साधनहीं पूजैहै कहे वामें आनंद नहीं मिलैहै वही ब्रह्मको विचार करत जन्म खोसकहे वृथा जाइहै तनकहे यह मनुष्य शरीर पाइकै असाध रहैहै कहे साहबके मिलनको सुखनहीं पावैहै ४॥

जानिबूझिजोकपटकरतहैतेहिअसमंदनकोई।
कहकबीरसबनारिरामकी मोतेओरनकोई ५

सो जानिबूझिकै जेलोग कपट करैहैं कहे वह धोखा ब्रह्ममें लगैहैं तिन ऐसो मंदकहे मूढ़ कोई नहीं है सो कबीरजी कहैहैं कि जहांभर चितशक्ति जीवहैं तेसब श्रीरामचन्द्रकी नारीहैं सोमैं जानौहौं याते मोते और पुरुष साहबैहै सो जे परमपुरुष श्रीरामचंद्रको छोड़ि और पुरुष करैहैं तेछिनारिहैं सो जो छिनारिहैं तिनके ऊपर संसाररूपीमार परोईचाहै तामें व्यय यहहै कि जे परमपुरुष श्रीरामचंद्रको पतिमानैहैं तेईमाया ब्रह्माग्निते बचैहैं ५
इतिअट्ठावनवांशब्दसमाप्तम्॥

अथउनसठवांशब्द॥

मायामहाठगिनिहमजानी। तिरगुणफांसलियेकरडोलै बोलैमधुरीबानी १ केशवकेकमलाबैठी शिवकेभवनभवानी। पंडाकेमूरतिबैठी ती-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रथमेंभइपानी २ योगीकेयोगिनिह्वै बैठी राजाकेघररानी । काहूकेहीराह्वै बैठी काहूकेकौड़ीकानी ३ भक्तनकेभक्तिनिह्वै बैठी ब्रह्माकेब्रह्मानी । कहै कबीरसुनोहोसंतो यहसबअकथकहानी ४ ॥

मायामहाठगिनिहमजानी ।
तिरगुणफांसलिये करडोलै बोलैमधुरीबानी १
केशवके कमला ह्वैबैठी शिवके भवन भवानी ।
पंडाके मूरतिह्वै बैठी तीरथ में भइ पानी २
योगीके योगिनि ह्वैबैठी राजाके घररानी ।
काहूके हीराह्वै बैठी काहूके कौड़ी कानी ३
भक्तनके भक्तिनिह्वैबैठी ब्रह्माके ब्रह्मानी ।
कहैंकबीरसुनोहोसंतौ यहसब अकथकहानी ४

माया महाठगिनिहै हम जानी यहमाया माधुरीबानी बोलिकै त्रिगुण फांसते सब जीवनको बांधिलियो औ सबकेघरमें नानारूप करिकै बैठी है केशवके कमलाह्वैकै बैठीहै औ शिवके भवन भवानीह्वैकै बैठीहै औ पंडाके मूरतिह्वै बैठीहै औ तीरथमें पानी ह्वै रहीहै औ योगीके घरमें योगिनिह्वै बैठीहै औ राजाके रानीह्वै बैठीहै औ काहूके हीराह्वै बैठीहै औ काहूके कानीकौड़ीह्वैकै बैठीहै औ ब्रह्माके ब्रह्मानीहवैबैठीहै सो कबीरजी कहैहैं कि हेसंतौ सुनो यहसब मायाको चरित्र अकथ कहानी कहांलौं वर्णनकरैं यह माया सत असतते बिलक्षणहै कहिबेलायक नहीं है अरु याको अंत नहीं है ४ इतिउनसठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथसाठवांशब्द ॥

मायामोहहिमोहितकीन्ही । तातेज्ञानरतनहरिलीन्ही १ जीवनऐसो सपनाजैसो जीवनसपनसमाना । शब्दगुरूउपदेशदियोतैं ज्ञान्योपरमनिधाना २ ज्योतिहिदेखिपतंगहूलसै पशुनहिंपेखैआगी । कामक्रोधनलमुगुध परेहैं कनककामिनी लागी ३ सब्यद शेख किताब नीरखै पंडित शास्त्र बिचारै । सतगुरु के उपदेश बिनातुम जानिकै जीवहि मारै ४ करौ बिचार बिकार परिहरौ तरन तारनै सोई । कहकबीर भगवंत भजनकरु द्वितिया और न कोई ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मायामोहहिमोहितकीन्हा । तातेज्ञानरतन हरिलीन्हा १

पूर्वजोवर्णन करिआये सोमायाजीवको मोहित करतभई सांचमेंअसांच की बुद्धिहोयहै मोहको लक्षण सो यहआत्मा तोशरीरनते भिन्नसांचहै ताको शरीरकी बुद्धिभई कि शरीर मैंहौं मनादिक मेरेहैं यह असांच बुद्धि भई याहीते मायामेंपरिगयो तबयाको माया मोहते मोहित करिकै परम पुरुषपर श्रीरामचन्द्रहैं तिनको ज्ञानरतन जोरहै कि मैंउनको अंशहौं वे बड़े रतनहैं मैं कनीहौं अल्पज्ञहौं परंतु जाति उनहीकीहौं वेबिभु आनंदहैं जैसेउनमें मनादिक नहीं हैं तैसेमैंजोउनको जानौं तौ महू मनादिकनही हौं यहजीवको ज्ञान रत्नमाया हरिलीन्हो १ ॥

जीवन ऐसो स्वप्ना जैसोजीवन स्वप्न समाना ।
शब्दगुरूउपदेश दियोतैं छाड्योपरमनिधाना २

यहजीवन ऐसोहै स्वप्नहै यह शरीरते दूसरे शरीरमें गयो तबयह शरीर स्वप्नह्वैगयो औवहजीव स्वप्नजे सम्पूर्ण शरीरहैं तिनमेंनहीं समान्यो वह शरीरते भिन्नहै काहेते मरिबो जीबो शरीरको धर्महै सोअपने स्वरूपको नहीं जानैहै स्वप्न समान जे शरीरहैं तिनको सांच मानिलियोहै गुरू कहे सबतेगुरु परमपुरुष पर जे श्रीरामचन्द्रहैं तेशब्द जो रामनाम ताकोउप-देशदियो कि तैंमेरोहै सोमेरे पास आउ सो तौनेशब्द में परमनिधान कहैं तिनकेरहिबेकोपात्रजोसाहबमुख अर्थहै ताको शब्दछोड़िदियो औ संसार मुख अर्थकरिकैसंसारीह्वै गयो २ ॥

ज्योतिहि देखिपतंग हूलसै पशु नहिं पेखैआगी ।
कामक्रोध नलमुगुध परहैं कनक कामिनी लागी ३

जैसे दीपककी ज्योतिको देखिकै पतंग हूलसै कहेज्योतिमें मिलिबेको जायहै परंतुवहै पशुजोहै अज्ञानीपतंग सो नहीं देखैहै कि या आगीहै यामें जरिजैहैं सोवही धसिकै जरिजायहै तैसे काम क्रोधादिकनमें जीव मुगुध परेहैं यानहीं जानैहैं कि यामें जरिजायँगे ३ ॥

सय्यद शेख किताब नीरखै पंडित शास्त्रबिचारै ।
सतगुरुके उपदेशबिनातुम जानिकैजीवहिमारै ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो हे सय्यद शेखौ तुम किताब देखिकै नानाकर्म करौहौ औ हे पण्डितौतुम नानाशास्त्र पुराणपढ़िकै सुनिकै नाना कर्मकरौहौ सतगुरुको उपदेश तौ तमलियो न असतगुरुनके पासजाइजाइ उनहीं को उपदेश पाइकै जानिजानिकै तुम अपने जीवको मारौहौ कहे जनन मरन रूप दुःखदेउहौ साहबके जाननवारे जेहैं तिनके पास नहीं जाउहौ जे साहब को बताइदेइं औ जन्ममरणतुम्हारो छूटिजाइ जानिकै आपनी आत्माको मारौहौ तामें प्रमाण॥ नृदेहमाद्यं सुलभंसुदुर्लभं प्लवंसुकल्पंगुरुकर्णधारम्। मयानुकूलेननभस्वतेरितंपुमान्भवाब्धिंनतरेत्सआत्महाइतिश्रीभागवते४॥

करौविचार बिकार परिहरौ तरन तारनै सोई।
कहकबीरभगवंतभजनकरु द्वितियाऔर नकोई ५

सोबिचारकरौ औ संपूर्ण जे बिकार तिनको परिहरौ कहे छोड़ौ तरण तारण एक परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रहीहैं श्री कबीरजी कहेहैं कि तिनहीं को भजन करु उनते औ दूसरो तेरो छोड़ावनवारो नहीं है इहां तरण तारण दुइकह्यो सो तरण जेहैं मुक्तिह्वैबेकी इच्छा ताते तारणवारोकोई नहीं है वोईहैं वहीमुक्तिकी इच्छाकरिकै कोई ब्रह्मज्ञान कोई आत्मज्ञान कोई दहरोपासनादिक नाना उपासनाकरिकै तरनको चाहैहैं परंतु कोई तरैनहीं हैं जबतरनकीचाह छूटिजाइहै तब मुक्तिहोइ है सोयह तरणकी इच्छाते एक परमपुरुष श्रीरामचन्द्रही तारिदेइहैं अर्थात् उनहीं की दीन मुक्ति दैजाइहै औरकी मुक्तिनहीं दीनदैजाइ है जबभर तरणकी इच्छा होइहै तबभर मुक्तिनहीं होइहै तामें प्रमाण ॥ भुक्तिमुक्तिस्पृहायावत् पिशाचीहृदिवर्तते तावद्भक्तिसुखस्यात्र कथमभ्युदयोभवेत् इतिभक्तिरसामृतसिंधौ ५ इतिसाठवां शब्दःसमाप्तम् ॥

अथइकसठवांशब्द ॥

मरिहौ रेतन कालैकरिहौ। प्राणछुटे बाहर लैधरिहौ १ कायबिगुरचन अनवनि बाटी। कोइजारै कोइ गाड़ै माटी २ हिंदूलैजारै तुरुक लैगाड़ै ईपरपंच दुनौघर छाड़ै ३ कर्मफाँस यमजाल पसारा। ज्यों मकरी धीमर गहिमारा ४ रामबिनानल ह्वैहौ कैसा। बाटमांझ गोबरौरा जैसा ५ कह कबीर पाछे पछितैहौ। याघरसों जब बाघर जैहौ ६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरिहौरेतन कालैकरिहौ। प्राण छुटे बाहरलै धरिहौ १
कायबिगुरचनअनवनिबाटी। कोइजारै कोइगाड़ै माटी२

हेजीवो तुममरिहौ तौ फिर तनलेहौ तौनेकोलैकै काकरिहौ का यातनते कियो है कावातनते करिहौ जबप्राण छूटैगो तब वाहूशरीरको लैकै बाहरै धरोगे १ सोया काया जोहै ताको बिगुरचन कहेछूटैमें आनिआनिबाटिहै काहेते कोईतो याकायाको जारैहै औकोई माटीमें गाड़ैहै सोजोगाड़ैहै औ जारैहै तिनको अबकहै हैं २ ॥

हिंदूलैजारै तुरुकलैगाड़ै। ई परपंच दुनौ घर छाड़ै ३
कर्मफांसयमजालपसारा। ज्योंधीमरमछरी गहिमारा ४
रामबिनानलहोइहौकैसा। बाटमांझ गोबरौरा जैसा ५

सोहिंदूजेहैं तेतोजारैहैं औतुरुकजेहैं तेगाड़ैहैं सोईदूनौघरमें जोपरपंच हैताको तूछाड़ै ३ संसारमें यमराज कर्मफाँसरूपी जाल पसारि राख्यो है जाही शरीरमें जीवजायहै तहैं मारिडारैहै जैसेधीमर जौने डावरमें मछरी जायहै तौनेही डावरते खैंचिकै मारिडारैहै तबशरीरकी नानाबाटिहोइहै भस्म होयहै कीराहोयहै बिष्टा होय जायहै ४ सोहेजीवो बिना साहबके जाने तुमकैसे होउगे बाटमें जैसे गोबरौरा जोई आवैजाय सोई कचरि देइहै मरिजायहै ५ ॥

कहकबीर पाछे पछितैहौ। याघरसों जब वाघर जैहौ ६

सोकबीरजी कहैहैं किजब याघरसों वाघरजाउगे अर्थात् जबयह शरीर ते दूसरो शरीरधरौगे गर्भबास होइगो तब पछिताउगे गर्भबासमें साहब की सुधिहोइहै सोजब गर्भबासको क्लेश होइगो तब कहौगे किहे साहब अबकी बारजो छुड़ावो तौफिर न ऐसेकाम करैंगे सो गर्भस्तुति श्रीमद्भागवतादिकन में प्रसिद्धहै तेहिते यह व्यंगहै किपरम पुरुषपर श्रीरामचन्द्र कोजानो ६ इतिइकसठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथबासठवांशब्द ॥

माई मैं दूनौकुल उजियारी। बारह खसम नैहरे खायो सोरह खायो ससुरारी १ सासु ननँदि मिलि पटिया बांधल भसुरा परलौ मारी। जारौं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांग मैंतासु नारिकी सरिवर रचल हमारी २ जनापांच कोखियामें राखौं औ राखौंदुइ चारी। पार परोसिन करोकलेवा संगहि बुधि महतारी ३ सहजै बपुरी सेज बिछायो सूतल पाउँ पसारी। आउँ न जाउँ मरों ना जीवौं साहब मेटो गारी ४ एक नाम मैंनिजकै गहिल्यों तौछूटल संसारी। एक नाम मैं बदिकै लेखौ कहै कबीर पुकारी ५ ॥

माईमैं दूनौ कुल उजियारी।
बारह खसम नैहरै खायो सोरह खायो ससुरारी १

चितशक्ति कहैहै किहेमाई कहे हेमाया मैंदूनौकुल उजियार करनवारी हौंकहेमोही ते जीवकुल उजियारहै जीवछः प्रकार मुक्तिमुमुक्षू बिषयीबद्ध नित्यबद्ध नित्यमुक्त औ ब्रह्मकुल उजियारहै सब ईश्वर ब्रह्मकुलहीमेंहैं याते ब्रह्मकुल कह्यो महीं अनुभव करौहौं तब ब्रह्म होइहै औ महीं सब जीवकी चैतन्यताहौं सो बारह खसमको नैहरमें खायो तेबारह खसम कौनहैं तिनको कहैहैं अष्टप्रधानजेहैं काली कौशिकी बिष्णु शिव ब्रह्मा सूर्य गणेश भैरव औ नवौं परमपुरुष जिनकेई आठौप्रधान कहे मंत्रीहैं इनको महातंत्रमें बर्णनहै औ पांचब्रह्म आदि मंगलमें बर्णन करिआयेहैं तिनमें रेफरूपा जोहै सो मंत्ररूपहै औ पराशक्तिहै ताको शक्तिमानमें अंतरभावहै औ शब्द ब्रह्म प्रणवरूपहै सो उपास्य देवता नहीं है विचारकरिबे लायकै तेहिते पांचब्रह्ममें तीनिब्रह्म उपासना करिबे लायकहैं सो अष्टप्रधान औ नवौं परमपुरुष औ तीनिब्रह्म मिलाइकै बारह उपास्य भये तेई खसम भये तिनको शुद्ध समष्टि जोहै सोई नैहरहै जहांते व्यष्टि होइहै सो जहां समष्टि व्यष्टि भयोहै तहांमैं इनको खाइ लियोहै कहे पेटमें डारि लियोहै मोहिंते भिन्न नहीं है औ जबमैं अहंब्रह्म बुद्धि करिकै ब्रह्ममेंलग्यो वहीको खसम मान्यो तब षोड़श कलात्मक जो है जीव ताको खाइलियो कहे पेटमें डारिलियो १ ॥

सासुननँदमिलिपटियाबांधलभसुरापरलोगारी।
जारोंमांगमेंतासुनारिकी सरिवररचलहमारी २

सासुजोहै जगत्मुख सुरति ताके औ मनके संयोगते ब्रह्मको अनुभव होइहै तेहिते वासुरति ब्रह्मकी महतारीहै औ ननँदिजोहै बिद्या मायाकाहे ते कि पहिले जब बिद्या माया उत्पत्ति होइहै औ जब ब्रह्मको अनभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होइहै सो सासु जोहै जगत्मुख सुरति औ ननँदि जोहै बिद्या सो ये दूनौको संसाररूपी खटियाके पटिया जेहैं उत्पत्ति प्रलय तिनमें बांध्यो औ भसुर जेठको मिथिलामें कहैहैं सो भसुरजोहै ब्रह्मते जेठ बिज्ञान काहे ते कि बिज्ञान पहिले ह्वै लेइहै तब ब्रह्मको अनुभव होइहै याते ब्रह्म ते बिज्ञान जेठहै सो मोको गारीपर्‍यो कहे मैंतो साहब की चित शक्ति हौं सो मोको ब्रह्ममें लगाइदियो यही मोको गारीपरी सो जगत् कारण रूपाजो वह मायारूपी नारिहै तौनेकी मैं मँगुवा जारौंहौं तौ आप जड़ औ चितशुद्ध जीवको गहिकै हमारी सरिवर रच्यो है कहे जीवनको जड़को जड़कैदियो अर्थात् साहबको ज्ञान भुलाइदियो तेहिते जगत् मुख ह्वैकै चैतन्य मानैहै कि हम ब्रह्महैं औ आपको कर्ता भोगता मानैहै सो शुद्ध जीवको मिलिकै कारणरूपा साहबकी अज्ञानरूप मायाही मानैहै मायाही को खराबकियो शुद्धजीवहै ताकीमैं मंगुवाजारौं २ ॥

जनापांचकोखियामेंराखौं औराखौंदुइचारी ।
पारपरोसिनिकरौंकलेवासंगहिबुधिमहतारी ३

वही मायाको मिलिकै जना पांचजे पांचौ इंद्रीहैं औ पांचौ तत्वहैं औ पांचौ शरीरहैं तिनको कोखिमें राखौंहौं औ दुइजे निर्गुण सगुणहैं औ चारिजे अंतःकर्ण चतुष्टयहैं मनबुद्धि चित्त अहंकार तिनको कोखिमें राखौं हौं औ पारजोहै ब्रह्म अथवा मोक्ष ताके परोसीकहे बतवैयाजेहैं गुरुवालोग तिनको मैं कलेवा करौंहौं कहे उनकोमत खंडन करौंहौं शुद्धबुद्धि जो महतारीहै मेरी ताको संगह्वैकै अर्थात् शुद्धबुद्धि जब मोको होइहै तब उनको सब मिथ्या मानि लेउहौं एक साहबैकी ह्वै रहौंहौं ३ ॥

सहजैबपुरीसेजबिछायो सूतलपाउंपसारी ।
आउँनजाउँमरौंनाजीवौं साहबमेटौगारी ४

अब हेभाई तोको मैंछोड्यो मैंबपुरी गरीबिनिहौं मेरे निकट न आउ अबमैं सहज सेजबिछायो कहे सहज समाधि मैं साहबको कियो अरु पाउंपसारिकै सोऊहौं कहे मोको तेरोभय नहीं है यह जगत्मोको बिसरि गयो चित शक्तिमात्र रहिगई औ ब्रह्ममें मैंलगि रहिउं नानाउपासना में लगिरही तिनकी मैंनहीं हौं यहगारी मोको परीरही सो साहब मेरीगारी मेट्यो कहे अपनो हंसस्वरूप मोको दियो तौने स्वरूप ते अपनोरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखायो सो साहबकी मैंरहौं सो साहबकी मैंह्वै गई न आउंहौं न जाउँहौं जोकहौं मेरीगारी साहब कैसे मिटायो ४ ॥

एकनाममैंनिजकैगहिल्यो तौछूटलसंसारी।
एकनाममैंबदिकै लेखौ कहैकबीरपुकारी ५

औ एक रामनामको निजकै कहे आपन करिकै गहिलीन्ह्यो कि यही उद्धार कर्त्ताहै और सब नरकही डारन वारेहैं तब यह संसार छूटि गयो यह हेतुते कबीरजी कहैहैं कि मैंबदिकै लेखौहौं कहे पाउं रोपिकै मानौहौं कि यही एक रामनामको जोबिश्वास करिकै बिचार करिकै जपैगो तौ संसारते छूटिही जाइगो सोयह सबलोग सुनतजाउ मैंपुकारिकै कहौहौं तामें प्रमाण ॥ रामनजपौकहांभोमंदा। रामबिनायममेलैफंदा ॥ सुतदारा कोकियापसारा। अंतकेबेरभयेबटपारा ॥ मायाऊपरमायामाड़ी। साथन चलैखोखरीहांड़ी ॥ जपौरामजोजियतउबारै। ठाढ़ीबांहकबीरपुकारै ५ इतिबासठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथतिरसठवांशब्द ॥

मैंकासोंकहौंकोसुनैकोपतिआय। फुलवाकेछुवतभवँरमरिजाय १ गगन मँडलबिचफुलयकफूला। तरभोडारउपरभोमूला २ जोतियेनबोइयेसिचियेनसोइ। बिनडारबिनापातफूलयकहोइ ३ फुलभलफुललमालिनभल गूंथल। फुलवाबिनभिगयलभवँरनिरासल ४ कहकबीरसुनौसंतौभाई। पंडितजनफुलरहेलोभाई ५ ॥

मैंकासोंकहौंकोसुनैकोपतिआय। फुलवाकेछुवतभवँरमरिजाय १

कबीरजी कहैहैं कि मैंजासों कहौंहौं सोतो सुनतई नहीं है औ जोसुन्यो तौ शंकाकियो ताको समाधान करिदियो असांच निकारिडार्यो सांचेको स्थापित कियो सो यद्यपि वाको जवाब नहीं चलैहै तऊ यह कहैहै कि यह जोलहाको कह्यो वेदशास्त्रको सार अर्थ बिचार कैसे होइगो ताते कोई मोको पतिआय नहीं है येतो सब धोखामें अँटकेहैं मैंकासों कहों कोसुनै कौनबात कहौंहौं कि वहधोखा ब्रह्म आकाशको फूलहै ताकेछुवत में भवँर जोहै तिहारो जीवात्मा सो मरिजायहै कहे तुम नहीं रहिजाउहौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह धोखा ब्रह्मई रहिजाइहै वाके आगेकी बात तुम कैसे जानौगे यातेतुम परमपुरुष पर श्रीरामचंद्रको जानौ वेजब आपनी इंद्री देइंगे तब वह ब्रह्मके ऊपरकीबात जानि परैगी जौन हंसशरीरी देइ है सो याके नित्य स्वरूपहै सो नित्य स्वरूपता पाइकै ब्रह्म मायाके परे मनबचनके परे परमपुरुष पर श्रीरामचंद्रहैं तिनको जानैहै सो मेरोकह्यो कोई नहीं मानैहै वही धोखामें लगैहै जो धोखाते जगत् होइहै कैसोहोइहै कि १ ॥

गगनमँडलबिचफुलयकफूला । तरभोडारउपरभोमूला २

गगनमंडलकहे लोकप्रकाश चैतन्याकाशमें एकफूल फूलत भयो कहे वह ब्रह्ममाया सबलित होतभयो अर्थात् आकाशफूल को मिथ्या कहैहैं सो वह मिथ्यही फूल भ्रमते फूलतभयो जीवको भ्रमभयो ताके अनुमानते प्रकटह्वै जातभयो सो मूलतो वह ब्रह्महै सो ऊपरभयो औ तरेवाको डारै फूटतभई चौदहौलोक संसाररूप वृक्ष तयारभयो २ ॥

जोतियेनबोइयेसिचियेनसोइ । बिनडारबिनापातफूलयकहोइ ३

फुलभलफुलमालिनिभलगूंथल ।
फुलवाबिनशिगयोभवँरनिरासल ४

वह न जोतिगयो न बोइगयो औ न सींचिगयो बिना डारपातहै ऐसो बिरवा चैतन्याकाश जो लोकप्रकाशहै तामें धोखा ब्रह्मरूप फूल फूल्यो ताहीते संसाररूप बिरवा तैयारभयो ३ तब मालिनिजो मायाहै सो भलु गूंथतभई कहे फूलब्रह्मको त्रिगुणात्मिका नानाबाणीसों खूब बर्णनकरिकै वहीको आरोप करतभई तब यहजीव सबछोड़िकै वहीब्रह्ममें नानाबाणी सुनिकै लग्यो सोजब वहां कुछु न पायो वह धोखई ह्वैगयो तब भवँरजो जीव सो निराश ह्वैगयो ४ ॥

कहकबीरसुनोसंतोभाई । पंडितजनफुलरहेलोभाई ५

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेसंतो भाइउसुनो वहीब्रह्म फूलमें पंडितजन जेहैं ते लोभाय रहेहैं यह बिचार नहीं करैहैं कि जगत्को तोहम मिथ्यई कहैहैं औ वही ब्रह्मते जगत्की उत्पत्ति कहैहैं सांचतेसांच झूंठेतेझूंठा होइहै सोवह ब्रह्मरूपफूल जोसांचोहोतो तौवासों झूंठाजगत् कैसे उत्पत्तिहोतो औ वही ब्रह्मको निराकार अकर्त्ता निर्द्धर्मिक कहोहौ कहोतो वह ब्रह्मको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान्यो कौन अरुवाको निर्बस्तु कहौहौं किवह कुछु बस्तु नहीं है देशकाल बस्तु परिछेदते शून्यहै कहोतो वह धोखई रहिगयो कि कुछुबस्तु रहिगयो सो तिहारेहि बातमें वह धोखा जान्यो परैहै कि कुछुनहीं है शून्यहै तेहिते परमपुरुषपर श्रीरामचंद्रमें लागौ जाते मायाब्रह्मके पारहै उनहीं के पास पहुंचौजाइ औ आवागमनते रहितहै जाउ५ इतितिरसठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथचौंसठवांशब्द ॥

जोलहाबीनेहुहोहरिनामा जाकेसुरनरमुनिधरैंध्याना । तानातनैकोअउठालीन्होचखीचारिहुवेदा सरखूटीयकरामनरायण पूरणकामहिमाना १ भवसागरयककठवतकीन्हो तामेंमाड़ीसानी माड़ीकोतनमाड़िरहोहैं माड़ो बिरलाजाना । त्रिभुवननाथजोमंजनलागे श्याममुरतियादीना चांदसूर्य्य दुइगोड़ाकीन्हो मांझदीपकियताना २ पाईकरिकैभरनालीन्हो वेबांधैकोरा मा वेयेभरितिहुंलोकैबांधे कोइनरहैउबाना । तीनलोकयककरिगहकीन्हो दिगमगकीन्होतानै आदिपुरुषबैठावनबैठे कबिराज्योतिसमाना ३ ॥

श्रीकबीरजी रामानंदके शिष्यहैं सोआपनी संप्रदाय बतावैहैं ॥

जोलहाबीन्यहुहोहरिनामा जाकेसुरनरमुनिधरैंध्याना । तानातनैको अउठालीन्हे चखींचारिहुवेदा सरखूटीयक रामनरायण पूरण कामहिमाना १ ॥

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जोलहाजो मैंहौं सो हरिके नामको बिनौहौं वे हरिकैसेहैं कि जिनको सुर नर मुनि ध्यानधरैहैं कौनी तरहते बिनौहौं सो उपाइ कहौहौं कोरिनके यहां तानातनिबेको अउठाते नापिलेइहैं औइहां अउठाजो शरीरहै ताको साढ़ेतीनि हाथको नापिलियो अथवा अंगुष्ठमात्र लिंगशरीरहै सो मनोमयहै ताकोमैं हरिनाम बिनिबेको धारण कियोहै नहीं तौ मैंमनके परेरह्योहैं औ कोरिनके इहांचखींते सूतखैंचिकै कैड़ाकरि लेइहैं औ इहां चारो वेदजेहैं तेई चखीं हैं तिनके तात्पर्यते आत्माको स्वरूपकी तैं परमपुरुषपर श्रीरामचंद्रको है यहसूत जीवात्माको निकास्यो औ कोरिनके इहां सर औ खूटीते तानाको पूरैहैं अरु इहांश्री इहांवैष्णव है रूपकेमंत्र पावैहै रघुनाथजीको षडक्षर औ नारायणको द्वाष्य औ अष्टा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षर सोसर खूटी राम औ नारायण येदूनामहैं एक नामको सरबनायो एक नामको खूटीबनायो इनहीं को नामलिये हरिनामरूपी कपरा बिनिबेको मैंअधिकारीभयो यहमैंमान्यो किमैं पूरिदेहौं रामनाम दुइखूंटीहैं नारायण नाम सरहै १ ॥

भवसागरयककठवतकीन्होंतामेंमाड़ीसानी माड़ीकोतनमाड़ि रहोहै माड़ौबिरलाजाना । त्रिभुवननाथजो मंजनलागे श्याम मुररियादीना चाँदसूर्य्यदुइगोड़ाकीन्हो मांझदीपकियताना २ ॥

कोरिनके इहां माड़ी सानीजाइहै तबएक कठौतामें धरैहैं सोइहां भवसागर कठौताहै औ चारयो शरीर माड़ीहैं तामेंजीव सूतसनोहै इहांसाधन अवस्थामें चारयो शरीरमें वहनामको भावना करिकै जोजपिबोहै मुमुक्षु दशामें सोई सानिबोहै सोनाम उच्चारणकी बिधि कोईबिरला जानैहै सो रामानुजाचार्य आपने राममंत्रार्थमें लिख्योहै यहं नाम स्मरणको शरीर धारणकियो सोजब नामस्मरण नकियो सोईशरीररूपी माड़ी याके माड़ि रह्योहै कहे लपटि रहीहै औ कोरिनके जबवाको मांजैहैं तब माड़ीसम ह्वैजाइहै औ मैल छूटिजाइहै औ इहां त्रिभुवननाथजो मनहैं सो रेचक कुंभक पूरकजे कूंचाहैं तिनमें मांजनलग्यो कहे नामको जपनलग्यो औ जीवको माड़ीजोहै चारयो शरीर तिनको समकैदियो कहे एक करिदियो औ कोरिनके मांजतमें जब तागा टूटि जाइहै तौनेको मुररिकै जोरि देइहै सो मुररियाकहावैहै इहांनामके स्मरणमें जबबीचपरैहै तबकहीं श्याम कहीं गोपाळ कहीं कृष्णइत्यादिक नामलैकै धागाजोरि देइहै औ कोरिनिकेदुइगोड़ाकहे दुइघोरियाके बीचमें ताना तनैहैं औ इहां चांद सूर्यजे इड़ा पिंगला तिनके बीचमें दीपजो सुषुम्णा नाड़ीहै ताको तानाकियो ताना वाको काहेतेकह्यो कि वह साहबके लोकते लैमूलाधार चक्रलों रश्मिरूप तनीहै जीवही सुषुम्णा नाड़ीह्वै भक्तनको जी उतरै चढ़ैहै २ ॥

पाईकरिकैभरनालीन्हो वेबांधैकोरामा वेयेभरितिहुलोकैबांधै कोइनरहैउबाना। तीनलोकयककरिगहकीन्होदिगमगकीन्होतानै आदिपुरुषबैठावनबैठे कबिराज्योतिसमाना ३ ॥

कोरिनके इहां पाई साफ करिबेको कहैहैं औ कमठिनके बीचते सूत निकासि लेइहै सो भरना कहावैहै सो इहां चारयोशरीर माड़ीमांजिकै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कै कहे चारयो शरीर छोड़ायकै जीवको साफकरिक कहे सूक्ष्म बिचारते जीव को स्वरूपनिकस्यो कि रामही को और को नहीं है औ कोरिन के राक्षकी जोकमठीहै ताके छिद्र है सब सूतको निकासि लेइहै औ दुइ सूत बांधि देइहै सो वे कहावैहैं औ तीनि फेरीकरिकै सूतको गांसिदेइहै सो तिलोक कहावैहै औ उबान वह कहावै है जो बाहर सूत रहिजाइ है सो उबान नर रहिगयो सो इहां दूनो कुंभकमें रामजे दुइ वर्ण हैं रकार मकार तिनको बांधिदियो बहिरे जब श्वास जाइहै तब जहांते थंभिकै लौटैहै सोकुंभक कहावैहै तहां रकारजपैहै तब सूर्यके प्रकाशको भावना करैहै औजब भीतर श्वास जाइहै औ थंभिकै लौटैहै तहां मकार जपैहै तब चंद्रमाको प्रकाशको भावना करैहै सो जौन साधारण श्वास चलैहै नाशिकाते बारहअंगुर भीतरजायहै बारह अंगुर बाहर जायहै जहांजहां ते थँभि थँभिकै लौटैहै तहां रकार मकारको जपिकै वे अंगुरनको घटाइ बूझै दूनो कुंभकनको घटावनलगै इसतरहते वेजोहैं श्वास ताके बांधतमें जब सांसके क्रमते घटाइकै तिहुंलोकैबांधै कहेत्रिकुटीमें बांधिदेइ अर्थात् एक अंगुर भीतर जानपावै न एक अंगुर बाहर जानपावै औ एकअंगुर बीचमें राखै सो यहितरहते जो कोई करैहैं सोई उबान नहीं रहैहै कहे संकल्प बिकल्प मिटिजाइहै जप करतमें काहेको ऊबैगो ताको रामनामही तीनोलोक देखपरै है वोते बाहर नहीं देखपरै है जहां कोरी बीननको बैठैहै सोकरिगह कहावैहै जब कपराबीनिचुकै तब तहां तीनिघरीकरिकै कपरा धरि देइहै औ तानाको दिगमग कहे जहां तहां डारिदेइहै इहां तीनलोकमें फैली जोजीवकी वृत्तिहै ताको जहां अपने स्वरूपमें आत्माकी स्थितिहै तहांकैवल्यमें राख्यो तीनअंगुरश्वासाकरिकै जोस्मरण करतरह्यो सोमन पवनको एकघरकैदियो तबसंकल्प बिकल्प सबमिटिगयो यहताना शरीरमें तन्योरह्यो ताको दिगमग कियो कहेपृथ्वीको अंश पृथ्वी में जलको अंशजलमें तेजकोअंश तेजमें बायुकोअंश बायुमें आकाशको अंश आकाशमें मिलाइदियो येपंचभये औमनको बुद्धिमें बुद्धिको चित्तमें चित्तको अहंकार में अहंकारको जीवात्मामें मिलाइदियो येपांचभये येसबताना दशौदिशामें फैलाइ दियो तब याको सुधिभूलिगई एकजीवात्मा भर रहिगयो औ जब कपरा तयार ह्वैजाइहै तबकोरीके यहां मालिकको पयादा आवैहै तबपयादा के साथ मालिकके यहां कपराकोरी लैजाइहै औयहां आदिपुरुष जे परम पुरुषपर श्रीरामचन्द्रहैं तेबैठावन देइहैं कहे याको हंससरूप देइहैं सोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पयादाहै ताकेसाथ ह्वैकै कहे तामें स्थितह्वैकै कबीरजो मैंहौं सो वह जोहै कैवल्य रूप ताते छूटिकै पार्षदरूप पाइकै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के लोकको प्रकाश रूपजोहै ब्रह्म तौनेज्योतिमें समाइकै कहे वाकोभेद परम पुरुषपर श्रीरामचन्द्रके धामको गयो भावयहहै जैसेकोरी थान मालिकके नजरकै देइहै तैसेअपने आत्माको शुद्धकैकै परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको अरपि दीन्ह्यो जाइ ज्योति भेदिकै साहब में समाइ गयो तामें प्रमाण ॥ तज्ज्योतिर्भेदनेशक्ता रसिकाहरिवेदिनः इति ॥ औ श्रीकबीरहूजीकोप्रमाण॥ जैसे माया मन रमै तैसै राम रमाय । तारा मंडल भेदिकै तबै अमरपुर जाय ३ इतिचौंसठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथपैंसठवांशब्द ॥

योगिया फिरि गयो नगर मँझारी । जाय समान पांचजहँ नारी १ गये देशंतर कोइन बतावै । योगिया गुफाबहुरि नहिंआवै २ जरिगो कंथ ध्वजा गो टूटी । भजिगो दंड खपरगो फूटी ३ कहकबीर यह कलिहै खोटी । जो रह करवा निकसल टोटी ४ ॥

योगियाफिरिगयोनगरमँझारी । जायसमानपांचजहँनारी १

जौने ब्रह्मांडमें पांच नारीजे बयारिहैं नागकूर्म ककल देवदत्त धनंजयई जिनमें समाइहैं ऐसे प्राण अपान व्यान उदान समान ते जामें समाइ गयेहैं तौ न जोहै नगर ब्रह्मांड ताकेमांझते योगिया जोहैयोगी सोफिरजाइ है कहे फिरिफिरि ब्रह्मांडको प्राण चढ़ाइ लैजाइहै १ ॥

गयेदेशंतरकोइनबतावै । योगियाबहुरिगुफानहिंआवै २
जरिगोकंथ ध्वजागो टूटी । भजिगो दंड खपरगोफूटी ३

जब वह योगी शरीर छोड़्यो तबकोई नहीं बतावैहै कि कौन देशांतर को गयो कौनेलोकको गयो काहेते कि कौन्यो लोकको तौ मानतै नहीं है तेहिते यहीशरीर पुनिपावैहै तबवह योगकी सुधिबिसरिजायहै पुनिनहीं गुफामें आवैहै कहे पुनिनहीं प्राण चढ़ावत बनैहै २ कंथजोहै शरीररूपी गुदरी सोजरिगयो तब ध्वजाजोहै पवन तौनेकी धाराटूटिगई तबमेरुदंड भंजित ह्वैगयो कहेटूटिगयो औखप्परजोहै ब्रह्मांडकी खपरी सोफूटिगई ३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहकबीरयहकलिहैखोटी। जोरहकरवानिकसलटोंटी ४

श्रीकबीरजी कहैहैं कि यहकलिबड़ो खोटोहै अथवा यहकलिजोहै झगरा सो बड़ो खोटहै यहकोई नहीं बिचारैहै कि जबशरीरही नहीं गयो तब ब्रह्मांड कहां रहिगयो जहांब्रह्मांडमें लीनहैकै बनीरह्यो सोयह बात ऐसी है कि जे ब्रह्मांडमें प्राण चढ़ावैहैं तिनके जबशरीर छूटि जायहैं तब उनके गैवगुफा सब जरिजायहैं तब गैवगुफारूपी करवा में जो प्राण चढ़ो रहैहै सोजब दूसर शरीरधर्‌यो तबनाभिका जोहै टोंटी तहांते वहै पवननिकसै है वही बासना लगीरहैहै तेहिते फिरि गुरूसों पूछिकै अभ्यास करन लगै है ४ इतिपैंसठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथछांछठवांशब्द ॥

योगिया कि नगरी बसै मतिकोइ। जोरे बसै सोंयोगिया होइ १ वह योगियाको उलटा ज्ञाना। काराचोला नाहीं म्याना २ प्रकट सो कंथागुप्ता धारी। तामें मूलसजीवनि भारी ३ वायोगियाकी युगुतिजो बूझै। रामरमै सोत्रिभुवनसूझै ४ अमृतबेलीछिनछिनपीवै। कहकबीरसो युगयुगजीवै॥

योगियाकीनगरीबसैमतिकोइ। जोरेबसैसोयोगियाहोइ १

योगिया जोहै योगी ताकी नगरी जोहै ब्रह्मांड गैवगुफा तहांकोई न बसौ अर्थात् हठयोग कोई न करो काहेते कि जोकोई वह नगरीमें बसैहै अर्थात् हठ योग करैहै सो योगिये होइहै कहे फिरि फिरि वही बासना करिकै योगिया होइहै योग साधैहै जन्म मरण नहीं छूटैहै १ ॥

वहयोगियाको उलटाज्ञाना। काराचोला नाहींम्याना २

सो वह योगीको उलटा ज्ञानहै कहे उलटे पवन चढ़ावै है अर्थात् या शरीरको वेदांतशास्त्रमें निषेधकरैहैं कि यही शरीरनतेआत्मा भिन्नहै तौने ही शरीरको योगी प्रधान मानैहैं कियही शरीरते मुक्तह्वैजायँगे सो इनको चोला जोहै मन जौनते शरीर पावैहै औ मनै गैवगुफामें समाइ जाइहै नानाप्रकारके जे कुत्सितकर्महैं तिनते मलीन ह्वै रह्योहै याते ताको कारा कह्यो औ म्याना छोटाको फ़ारसीमें कहैहैं सोवह मनछोटा नहीं है बड़ोहै सबसंसार अरु चारो शरीर मनमें भराहै २ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकट सो कंथा गुप्ता धारी । तामें मूलसजीवनि भारी ३

अरुजो बहुत योग करिकै ब्रह्मांडमें प्राणचढ़ाइकै प्राणको गुप्त कियोहै सोप्रकटैहै तेवेयोगी कंथाजोहै शरीर ताकोधारण कियेरहैहैं बहुतदिनजियै हैं ताको हेतुयहहै किमूलसजीवनि अमृतहै सोभारी कहे बहुतहै सोचुवत रहैहै जैसे संजीवनी औषधि महाप्रलय भयेनहीं रहिजाइहै सोयाको वह जियावैहै सोऊनहीं रहिजायहै तैसेजोकोई मूड़काटिडारचो अथवा कोई शरीरको खाइलियो तब न वहअमृत रहिजाइ न वे रहिजाइं ३ ॥

वायोगियाकीयुगुतिजोबूझै । रामरमैसोत्रिभुवनसूझै ४
अमृतबेलीक्षणक्षणपीवै । कहकबीरसोयुगयुगजीवै ५

सो येजेहैं योगीते युगुतिकरिकै जियैहैं आखिरमें इनको जन्ममरणनहीं छूटैहै सो याजोगियाको हठयोग छोड़िकै जोकोई वा योगीकी यगुतिबूझै जे राजयोग करनवारेहैं सो रामरमै तब वाको त्रिभुवनमें रामई सूझिपरै ४ अरु श्रीकबीरजी कहैहैं कि अमृतबेलि जोहै रामनाम ताको क्षणक्षणमें पिये कहे श्वासश्वास में रामनाम स्मरणकरै है सोई हनुमान बिभीषणादिकके तरह युगयुग जियैहै औ जनन मरणते रहित ह्वैजाइहै ५ इतिछांछठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथसतसठवांशब्द ॥

जोपैबीजरूपभगवाना । तौपंडितकाबूझौआना १ कहँमनकहांबुद्धिओंकारा । रजसततमगुणतीनिप्रकारा २ विषअमृतकलफलैअनेका । बहुधा वेदकहैतरबेका ३ कहकबीरतेमैंकाजानो । कोधौं छूटलकोअरुझानो ४ ॥

जो आगे कहि आये कि जो कोई रामनाम लेइहै सोई जननमरणते रहित होइहै सो कहैहैं ॥

जोपैबीजरूपभगवाना । तौपंडितकाबूझौआना १
कहँमनकहांबुद्धिओंकारा । रजसततमगुणतीनिप्रकारा २

जीवजोहै रामनाम सोभगवन्तहै जनममरण छोड़ाइदीवेको तौहेपंडित तुम आन आन जगत्कारण ब्रह्म ईश्वर प्रकृति पुरुष कालशब्द परमाणु इत्यादिक काहे खोजत फिरौहौ यह नामही जगत्मुख अर्थ करि जगत्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारणहै १ सो रामनामै जो सबको बीज ठहरयो तौ मनको बुद्धिको प्रणव को कारण कहांरह्यो एते सत रज तम जेगुणहैं तिनके तीनितीनि प्रकार ह्वैकै जगत् कियोहै प्रथम मन बुद्धि ओंकार कहांरहे कोई नहीं रहे भाव यहहै कि प्रथम साहबते सुरतिपाइकै रामनामको जगतुमुख अर्थकरिकै जीव समष्टिते व्यष्टिह्वैकै संसारी भयोहै तबहीं येसब भयेहैं २ ॥

विषअमृतफलफूलअनेका । बहुधावेदकहैतरबेका ३

वोईं सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी उपासनाते बिष अमृत अनेकफल फलतभये कहे नानादुःखसुखजीव पावतभये कोई वे देवतनकी उपासना करिकै उनके लोकजाइकै सुखपायो औ कोई बिषयआदिक करिकै दुःख पायों येई वेगुणनमें फल फलेहैं सो सबके फल स्तुति बहुधा वेद तरिब को लिख्योहै ॥ शीतलेत्वंजगन्माता शीतलेत्वंजगत्पिता । शीतलेत्वंजगद्धात्रीशीतलायैनमोनमः इत्यादिकसब ३ ॥

कहकबीरतेमैंकाजानो । कोधौंछूटलकोअरुझानो ४

सो कबीरजी कहैहैं कि वेदतो फल स्तुतिमें तरिबेको कहैहैं कछू सांच नहीं कहैहैं येसब जीव आपने आपने उपासनामें लगे कहैहैं किहम मुक्ति ह्वैजाइंगे सोसब उपासना सतोगुण रजोगुण तमोगुण येतीन गुणमयहैं सो मैं कहाजानों को बद्धहै को छूटहै तुमहीं बिचार करिलेउ कि हमारी उपासना मायाके भीतरहै किमायाके बहिरेहै अर्थात् यहवेदमें यहदेखायो कि सबको मूल रकारबीजहै जो सबको परम कारणहै सबते परहै सो याहीरामनामको जोकोई साहबमुख अर्थकरिकैजपैगो सोईपरमपुरुषपर श्रीरामचंद्रके पासजाइगो औरनहीं तरैहैं ४ इतिसंतसठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथअठसठवांशब्द ॥

जोचरखाजरिजायबढ़ैयानामरै । मैंकातोंसूतहजारचरुखलानाजरै १ बाबाब्याहकरायदे अच्छाबरहितकाह । अच्छाबरजोनामिलै तुमहीं मोहिं बिघाह २ पृथमैंनगरपहूंचतै परिगोशोकसंताप । एकअचंभौ हौंदेखाबेटी ब्याहैबाप ३ समधीकेघरलमधीआया आयेबहूकेभाय । गोड़चल्हौनेदैरहे चरखादियोडढाय ४ देवलोकमरिजाहिंगे एकनमरैबढ़ाय । यहमनरंजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारनेचरखादियोदृढ़ाय ५ कहकबीरसंतौसुनौ चरखालखैनकोइ। जाको चरखालखिपरो आवागमननहोइ ६॥

नानाउपासनामेंलगेजीवसंसारतेनहीं छूटैहैंसोकाहेतेनहीं छूटैहैंसोकहैहैं॥

जो चरखा जरिजाय बढ़ैयानामरै।
मैंकातौंसूतहजारचरुखलानाजरै १
बाबाब्याहकराय दे अच्छाबरहितकाह।
अच्छाबरजोनामिलैतुमहींमोहिंबिवाह २

यह स्थूल शरीर चरखाहै सो जरिजायहै कहे छूटि जायहै औ बढ़इ-याजो मनहै सोनहीं मरैहै वह चरखा शरीर गढ़िलेइहै कहेबनाइ लेइहै सोजीव कहैहैं कि मैं हजार सूत कातौहौं कहे कर्म छूटनके लिये बहुत उपाय करौहौं बहुत उपासना बहुत ज्ञान इनहीं शरीरनते करौहौं परंतु चरुखला जे चारचो शरीरहैं तेनहीं जरैहैं १ जीव गुरुवनके इहां जाइकै कहैहै कि हेबाबा गुरूजी अच्छाबर हितकरनवारो तोहै तासों ब्याहकराय देउ अर्थात् हित करनवारो जो अच्छा देवताकी उपासना कराइदेउ अरु आछोदेवता जो तुम्हैं न मिलै कहेमुक्ति करिदेनवारो देवताजोतुम्हैं न मिलै तौ तुमहीं मोको बिवाहौ कहे ज्ञान उपदेश करिकै अपनो मेरो जोभेदहै ताको मेटवाइ देउ २॥

प्रथमैनगरपहूंचतैपरिगोशोकसंताप।
एकअचंभो हौंदेखा बेटीब्याहै बाप ३

पथम साधनबतायो गुरुवालोगकि ईश्वरकी उपासनाकरौ जामें अभेद ज्ञानहोय सो पृथम नगर पहूंचतैकहे जब गुरुवा देवताकी उपासना बताइदियो ताहो पृथमही शोक संताप परिगयोकहे तौने देवदेवताको बिरह भयो सो जरनलग्यो अरु दूसरोज्ञान उपदेश जोमांग्यो तामें बड़ोआश्चर्य भयो कि बेटी बापको बिवाह्यो जब उन उपदेशकियो कि तुमहीं ब्रह्महौ तुमहीं सर्वत्र पूर्णहौ सो जीवतौ कबहूं ब्रह्म होतई नहीं है सो ब्रह्मतो नभयो औ न वामें ब्रह्मके लक्षण आय भयोकहा कि आपनेको ब्रह्ममानि कर्मधर्म सब छोड़िदियो सोज्ञान अज्ञान जीवहीको होइहै सोमाया,जीवही तेभईहै सोई बेटीहै सोबाप जीवको बिवाहिलियो कहेबांधिलियो ३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समधीकेघरलमधीआयोआयोबहूकोभाइ ।
गोड़चुल्होनैदैरहे चरखादियोडढाइ ४

जीवको ब्याहीमाया जो होइहै सो मनते होइहै सोमन ससुरभयो अरु शुद्ध ते अशुद्धभयो सोअशुद्ध जीवको बाप शुद्धजीव ठहरयो सोई समधी ठहरयो तौने जीवके घरमें लमधीजोहै मनको भाईचित्त सो आयो नाना स्मरण देवायो तबहूं जो मायाहै ताको भाई कालआयो चूल्हाजोहै तामें दुइपल्ला होइहैं सो पुण्यपाप जेहैं बेदूनें पल्लाहैं तौने चूल्हामें गोड़दैके चरखाजो शरीरहै तिनको डढाइदीन्ह्यो कहे लाइदियो काहूको पुण्यकराय कै काहूको पापकरायकै शरीर खायलीन्ह्यो ४ ॥

देवलोकमरिजाहिंगे एकनमरैबढ़ाय ।
यहमनरंजनकारनेचरखादियोदृढ़ाय ५
कहकबीरसंतौसुनौचरखालखैनकोइ ।
जाकोचरखालखिपरोआवागवननहोइ ६

देवलोकको नरलोकको सबको काल खाइलेइहै यह बढ़ैया जोमनहै सोनहीं मारो मरैहै औ जबवह चरखा टूटैहै तबबढ़ैही बनाइदेइहै ऐसे वह बढ़ई जोमन सो कीलके रंजन करिबेको शरीररूपी चरखाको दृढ़करत जाइहै नानाशरीर कालको खवावत जायहै ५ श्रीकबीरजी कहैहैं किचरखा जेचारयो शरीरहैं तिनको कोईनहीं लखैहै जाको चारयोशरीर लखिपरयो अरु पांचौशरीर कैवल्यमें प्राप्तभयो कहे केवल चितमात्र रहिगयो तब वह चरखाको गढ़ैया जोमनहै तेहिते जीव भिन्न ह्वैगयो तब छठवां अंग स्वरूप साहब देइहै तामें स्थितह्वैकै साहबके लोकको जाइहै आवागवन नहीं होइहै ६ इतिअरसठवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथउनहत्तरवांशब्द ॥

यंत्रीयंत्रअनूपमबाजै । वाकेअष्टगगनमुखगाजै १ तूहीगाजैतूहीबाजैतुहीलियेकरडोलै । एकशब्दमेंरागछत्तिसौअनहदवाणीबोलै २ मुखकोनाल श्रवणकेतुम्बा सतगुरुसाजबनाया । जिह्वातारनाशिकाचरही मायामोम लगाया ३ गगनमँडलमाभाउजियारा उलटाफेरलगाया । कहकबीरजनभये विवेकी जिनयंत्रीमनलाया ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यंत्रीयंत्रअनूपमबाजै। वाकेअष्टगगनमुखगाजै १

यंत्रीजोहै जीव ताको यंत्रजो शरीरहै सो अनूपम बीन बाजैहै बीनमें सात स्वर बाजैहैं अरु अठवां जीवके तारमेंटीपको स्वरबाजैहै औ इहांयह शरीरमें सातचक्रहैं सहस्रारलों तिनके बीचबीचकोजोहै आकाश येसात गगनभये अरु अठवां सहस्रारके ऊपरको जो आकाश तामें सुरपति कमलमें बैठो जोगुरुनाम बतावैहै सोवह अठवां गगनमें जाइकै गाज्यो कहे रामनाम सुनिकै लेनलग्यो सोइहां सुषुष्णा जोनाड़ी सोई तारहै मूलाधार चक्र सुरति कमल येईतुम्बाहैं १ ॥

तूहींगाजैतूहींबाजैतुहींलियेकरडोलै।
एकशब्दमेंरागछत्तिसौअनहदबाणीबोलै २

सो याबीणाको तुही गाजै कहे सुरतिकमलमें तुही नामलेइहै औ तुही बाजै कहे तुही सुरति बोलैहै औ तुही सुरतिको लैकै डोलैहै कहे तुही सुषुम्णाद्वै चढ़ि जाइहै अर्थात् शरीरको मालिकतुही है औ बीणामें छत्तिस राग बोलैहैं औ इहां एकशब्द जोहै रामनाम तामें चौंतिसवर्ण औ पैंतीसौ नाद औ छत्तिसौबिंदु ई सबहैं बिंदुते आकारादिक स्वर आइगये वही अनहदहै कहे वहीको हद्द नहीं है तौने रामनामरूपी बाणी सुरति कमल में गुरू बोलैहै सो तहीं जपैहै या अंतर बीणा बतायो सोजानु अबबाहर को बीणा बतावैहैं २ ॥

मुखको नाल श्रवणके तुम्बा सतगुरुसाज बनाया।
जिह्वातार नाशिका चरही माया कोमल गाया ३

बीणाके बीचमें डांड़ीहैं यहां मुखै नालडांड़ीहै बीणामें दुइतुम्बा लगैहैं यहां दूनों जेश्रवणहैं तेईतुम्बाहैं बीणाको स्वरमिलावैहैं औयहां सतगुरुजेहैं तेसाज बनाइ जीवनको उपदेश करैहैं औवहांबीणामें तारलागैहैअरु यहां जीभजोहै सोई तारहै औ बीणामें चरहीकहे सार लागैहै औ यहां नाशिका चरही कहेसारहै सारमें मोमजमाया जाइहै यहांमाया जोहै गुरूकी कृपा माया दंभेरुपायांच॥सोई मोम जमायो जैसेबीणामें जौनस्वर बजावै तौन बाजैहै तैसे सुरति कमलते गुरूजो रामनामको उपदेश कियो सोईजीभ तेजपैहै ३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गगन मँडलमा भा उजियारा उलटा फेर लगाया ।
कहकबीर जनभये बिवेकी जिन यंत्री मन लाया ४

बीणा जब सुरते बाजैहै तब सबको रागनको उजियारा ह्वै जाइहै औ आछो लगैहै सबराग जानि जाइहैं औ दूसरे पक्षमें जीवको उलटो ज्ञान जगत् मुख ह्वै गयो तैं ब्रह्ममुखह्वै गयो तैं औआत्मा मुखह्वै गयो तैं किमहीं ब्रह्महौं ताको नानाशब्दमें समुझाइकै अठयें गगनमें जीवको साहब मुख करतभये तबजीव को ज्ञान ह्वै गयो सब धोखा छोड़िकै साहबमें लग्यो जगत् मुखरह्यो सो उलटारह्यो ताको सीधेमें गुरुवालोग फेरिलै आये औ लगायो पाठहोइतौ साहबमें लगावत भये श्रीकबीरजी कहैहैं कियंत्रीजोहै बीणकार उस्ताद तौनेते जोबीन बजावै मनलगाय सीखैहै तोवाको सुरन को रागनको वेब्यौरा आइजाइहैं ऐसै सुरति कमल में बैठेजेहैं परमगुरु जेराम नामको उपदेश करैहैं तिनसों जोकोई यंत्री जीवात्मा मन लगावै हैं सोबिबेकी होइहैं कहे जगत्को असांच जानिकै सांच साहब में लगि जाइ है ४ इतिउनहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथसत्तरवांशब्द ॥

गुरुमुख ॥ चातक कहा पुकारैदूरी । सोजलजगत रहा भरपूरी १ जेहि जलनाद बिन्दुका भेदा । षटकर्म सहित उपान्योवेदा २ ज्यहिजल जीव सीवका बासा । सोजल धरणि अमर परकासा ३ जेहिजल उपजे सकल शरीरा । सो जल भेद न जान कबीरा ४ ॥

चातक कहापुकारै दूरी । सोजल जगतरहा भरपूरी १
जेहिजलनादबिंदुकाभेदा । षटकर्मसहितउपान्योवेदा २

सबते गुरु परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र कहैहैं कि हे चातक दूरिदूरितैं कहा पुकारै है कि पियासोहौं पियासोहौं जौन स्वाती को जलतैं चाहैहै जाते पियास बंदह्वै जाइहै सोराम नामरूपी जलस्वाती को मुख्य मुक्ति को साधन जगत् में परिरह्योहै तैंकहां और और मुक्तिके साधनको खोजत फिरैहै १ औ जौने रामनामरूपी जलमें नादबिंदु को भेदहै अपने षट्मात्रनते वेदको उपान्यो कहे उत्पत्ति कियो है २ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेहिजलजीवसीवकाबासा। सोजलधरणिअमरपरकासा ३
जेहिजलउपजेसकलशरीरा। सोजलभेद न जानकबीरा ४

जौने रामनामरूपी जलमें जीवजेहैं सीवजे नाना ईश्वर तिनको बासहै औ सोई रामनामरूपी जब धरणिमें जो कोई जपै ताको अमर करैहै यापू-काश कहे जाहिरहै अथवा वा अवनीमें नाशमाननहीं होयहै या जाहिर है तैं पियासो काहे मरैहै ३ जेहि रामनामरूपी जलते सकल शरीर उपजैहै अर्थात्संसारमुख अर्थते अनंत ब्रह्मा उपजेहैं रामनामरूपी जलको भेद कबीराकहे कायाके बीरजेजीवहैं तेनहीं जानैहैं अर्थात् जोरामनाम मोको बतावै है सोजो बिचार करै तौ चिदबिग्रह करिकै सर्बत्र महीं देखो परैं तौ मेरीभक्ति जलपान करिकै मुक्तिहैजाइहै औ संसारताप बुताइजाइहै ४
इतिसत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथइकहत्तरवांशब्द ॥

जसमासु नलकी तसमासु पशुकी रुधिर रुधिर यकसाराजी।पशुकी मासु भखै सब कोई नलहि न भखै सियाराजी १ ब्रह्मकुलाल मेदनी भरिया उपजि बिनशि कितगइया जी । मासुमछरिया जोपैखैया जोखेतनिमें बोइयाजी २ माटीको करदेई देवा जीव काटिकटि देइयाजी। जोतेराहै सांचादेवा खेतचरत हिनलेइया जी ३ कहै कबीर सुनोहोसंतो रामनाम नितलैयाजी। जो कछुकियो जिह्वाके स्वारथ बदल परारादैयाजी ४॥

जसमासु नलकी तसमासुपशुकी रुधिररुधिरयकसाराजी।
पशुकोमासु भखै सबकोई नलहि न भखैसियाराजी १

जसनरकी मासुहोइहै तसपशुकी मासुहोइहै अरुरुधिर भी एक तरह होइहै परंतु पशुके मासुकेमासुको जे भक्षणकरैहैं ते सियारई हैं सो वे मनुष्य तेऔ सियारते यतनै भेदहै कि सियार मनुष्यकोमांस खाइहैं अरु नरपशुकीमांसखाइहै मनुष्यको मांसपशु नहीं खाइहै सो कहैहैं कि रुधिर मांसतोसब एकई तरहहै नरकी मांस काहेनहीं खायहैं १ ॥

ब्रह्मकुलालमेदिनीभरिया उपजिबिनशिकितगइयाजी।
मासुमछरिया जोपैखैया जोखेतनि में बोइयाजी २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौनेते सबसृष्टी जगत् भयोहै ऐसो जोहै ब्रह्माकुलाल जो कुम्हार औ सर्वत्र जगत्में भरैरहा अर्थात् सबवस्तु ब्रह्मईरह्यो तौ यहसबसृष्टीउपजी औ बिनशिकै कहांगई सो एक ब्रह्मही सर्वमानिकै जो मासुमछरी खाउ किसबतो एकईहै जो मनचलैगो सोकरैंगे नरकस्वर्ग कर्मसब मिथ्याहै ऐसो जो मानौगे तौ जो खेतमें बोवनको होइहै सो तुम मुर्देपशुकी मासुकीमासु खाउहौ अरु वे तुम्हारे जीतही यमपुरमें मांसखाइंगे जो कहोहम देवता को बलिचढ़ाइकै खाइहैं तौनेपर कहैहैं २ ॥

माटीको करिदेईदेवा जीवकाटिकटि देइयाजी ।
जोतेराहै सांचादेवा खेतचरत किनलेइयाजी ३

माटीकोतौ देवता बनावोहौ उसके आगेजीव काटिकाटिकै राखौहौ यह कैसी गाफिली तुमकोघेरीहै जोमाटीको देवता सांचहै तोजब बोकरीखेत मेंचरतीहै तबतुम्हारा देवता काहेनहीं खाता क्यादेवताको किसीकाडरहै भाव यहहै कितुम काहेको हत्यारी लेतेहो अँगुरिआय देउ जोसांच होयगो तौ खाइगो तेहिते तुम्हारो देवता मिथ्याहै खेतमें चरत बोकरीको न खाइ सकैगो ३ ॥

कहैकबीर सुनोहो संतौ रामनाम नित लैयाजी ।
जोकछुकियो जिह्वाकेस्वारथबदलपरारदैयाजी ४

सो कबीरजी कहै हैं कि जिनके जिनके गलाको तुम काटते हौ तेसब तुम्हारो नरकमें गलाकाटैंगे तेहिते रामनामको नितलेउ भाव यहहै जब नामापराध छोड़ि रामनामलेउगे औफिरि पातक न करौगे तबहीं तुम्हारे पातक जाइंगे तामेंप्रमाण ॥ हरिर्हरतिपापानिदुष्टचित्तै रपिस्मृतः । यदृच्छ यापिसंस्पृष्टोदहत्येवहिपावकः ॥ रामेतिरामभद्रेति रामचन्द्रेतिवास्मरन् । नरोनलिप्यतेपापै र्भुक्तिं मुक्तिं चविंदति॥ दशनामापराधमेंप्रमाण॥ सतांनिंदानाम्नः परममपराधंवितनुते यतःख्यातिंजातंकथमिहसहेद्ते लनमदः॥ शिवस्यश्रीविष्णोर्यइहगुणनामादिसकलं धियाभिन्नंपश्येत्सखलहरिनामाहित करः ॥ गुरोरवज्ञाश्रुतिशास्त्रनिन्दनंतथार्थवादोहरिनामकल्पनं । नाम्नोबला द्यस्यहिपापा बुद्धिर्नविद्यतेतस्ययमैर्हिविच्युतिः॥ श्रुत्वापिनाममाहात्म्यंयः प्रीतिरहितोधमः । अहंममादिपरमोनाम्नि सोप्यपराधकृत् ४ इतिइकहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवहत्तरवांशब्द ॥

चलहु का टेढ़ो टेढ़ो टेढ़ो । दशौद्वार नरकैमें बूड़े तू गंधीको बेठो १ फूटे नैन हृदय नहिं सूझै मतिएकौ नहिंजानी । कामक्रोध तृष्णाके मारे बूड़ि मुये बिन पानी २ जारेदेह भसम ह्वैजाई गाड़े माटी खाई । शूकर श्वान कागके भोजन तनकी यहैबड़ाई ३ चेतिन देखु मुगुध नरबौरे तूते काल नदूरी । कोटिन यतन करैबहुतेरे तनकि अवस्थाधूरी ४ बालूके घरवामें बैठे चेतत नाहिंअयाना । कहकबीर यकराम भजेबिन बूड़ेबहुतसयाना ५ ॥

चलहुकाटेढ़ोटेढ़ोटेढ़ो । दशौद्वारनरकैमेंबूड़ेतूगंधीकोबेठो १

तीनबार टेढ़ोटेढ़ोटेढ़ो जोकह्यो सो ज्ञानकांड कर्मकांड उपासनाकांड ये तीनों मार्ग अथवा सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी येतीनों कर्मते टेढ़ेहैं सो येमार्गमें कहा चलौहौ दशौद्वार जेदशौ इन्द्रीहैं ते नरकही में लगीहैं कहे बिषयनही में लगीहैं सोतेरे बिषयकी गंधिलगीहै ताते तैं गंधीहै सो तोही ऐसे गंधीको माया बेठिलियो कहे तेरो ज्ञान छोड़ाइ लियो अरुजो बेड़ो पाठ होइ तौ यह अर्थहै कि तोही ऐसे गंधीको जाके दशौद्वार नरक हीमें बूड़े हैं ताको बेड़ो नहीं है जातेसंसार सागर उतरिजाइ अथवा गंध जगत् जोहै गंधी शरीर ताको तैं बेड़ो कहे आधार कहाह्वै रहेहै टेढ़ो टेढ़ो चालचलिकै यहकहांतेरो पारकियो होइगो संसार सागरते नहोइगो बूड़िही जाइगो १ ॥

फूटेनैन हृदय नहिं सूझै मतिएकौ नहिंजानी ।
काम क्रोध तृष्णाके मारे बूड़िमुयेबिन पानी २
जारे देह भसम ह्वैजाई गाड़ेमाटी खाई ।
सीकरश्वान कागके भोजन तनकीयहै बड़ाई ३
चेति न देखु मुगुध नरबौरे तूते काल न दूरी ।
कोटिनयतन करै बहुतेरे तनकि अवस्था धूरी ४

अरु ये पदनको अर्थस्पष्ट है इनमें यही वर्णन करैहैं किमायाकी फौज तोको लूटिलियो अथवा शरीररूपी बेड़ो तेरो चलायो न चल्यो संसार सागर कामादिक तोको बोरिदियो कालदूरि नहीं है आखिर मरही जाहुगे तनकी अवस्था धूरिहीहै आखिरधूरिही में मिलिजाइगो ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालूके घरवामें बैठे चेतत नाहिं अयाना।
कहकबीरयकरामभजेबिन बूड़ेबहुत सयाना ५

श्रीकबीरजी कहेहैं कि यहीशरीररूप बालूके घरमें बैठिकै अरेमूढ़चेतत नहीं है परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको भजननहीं करैहै न जानैयह शरीर कब गिरिजाइ कहेछूटिजाइ सो बिषयछोड़ि बेगिही भजनकरु वे समर्थ तोको छोड़ाइलेइंगे साहबके भजनबिना बहुतसयान बहुत मतनमेंलगि कै बूड़िगयेहैं अर्थात् मायाते छोड़ायलीबे में समर्थ साहबही हैं औरकोई न छोड़ाइ सकैगो तेहिते परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रको भजनकरु वेतोको संसार ते छोड़ायही देइंगे ५ इतिबहत्तरवांशब्दसमाप्तम्॥

अथतिहत्तरवांशब्द ॥

फिरहुका फूलेफूले। जो दशमासउरध मुखझूले सोदिन काहेक भूले १ ज्योंमाखो स्वादैलहि बिहरै शोचिशोचि धनकीन्हा। त्योंही पीछे लेहुलेहु कर भूतरहनि कछुदीन्हा २ देहरीलौं बर नारिसंगहै आगे संगसहेला। मृतु कथान सँगदियोखटोला फिरिपुनि हंस अकेला ३ जारेदेह भसमहैजाई गाड़ेमाटी खाई। काचेकुंभ उदक जो भरिया तनकै इहैबड़ाई ४ रामनरमसि मोहमें माते परलोकाल बशकूवा। कहकबीर नल आपु बँधायो ज्यों नलनी भ्रमसूवा ५ ॥

फिरहुकाफूलेफूले। जोदशमासउरधमुखझूलेसोदिनकाहेकभूले १

औरे औरे मतनमें लगिकै कहांफूलेफूले फिरौहौ कि हमहीं मालिकहैं हमहीं मुक्तहैं दशमहीना उर्ध्वमुख गर्भमें झूलतरहे तहां कह्योकिहेसाहब मैं तिहारो भजन करौंगो मोको छोड़ावो सोदिन काहेको भूलिगये अब काहे भजननहीं करौहौ निकसतही कहांकहां करनलग्यो जो कहो जब हमगर्भमें रहे तब हमको साहबै दयालुता करिकै सुरतिलगायो अब काहे दयालुता करिकै सुरतिनहीं लगावैहैं सोहम कहाकरैं हमको साहबई भुलाइ दियो अरेमूढ़ साहबतो गोहरावत जाइहै सबशास्त्र वेदके तात्पर्य करिकै बीजकमेंकि जोमोको जानि भजनकरु तो मैंतेरो उद्धारकरौंगो सो गर्भबासमें जो तैं भजनकरिबेको कौलकियो सो भजन न कियो भुलाय दियो तामेंपूमाण कबीरजीको मुक्तिलीला ग्रन्थको॥गर्भबासमें रह्योकह्यो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंभजिहौं तोही । निशिदिन सुमिरौ नामकष्टसे काटौंमोही ॥ यतना कियो करार काढ़िगुरु बाहर कीना । भूलिगयो निजनाम भयो मायाआधीना ॥ सो साहबको कौनदोषहै तुहीं कौलते चूकिगयो साहबको भजननकियो १॥

ज्योंमाखीस्वादैलहिं बिहरै शोचिशोचिधनकीन्हा ।
त्योंहीं पीछे लेहुलेहुकर भूतरहनि कछुदीन्हा २

जैसेमाखी फूलनके रसके स्वादको पाइकै बिहारकरै है औ ताहीके सहतको धन जोरिजोरिकै धरै है तैसे तमहूं बिषयभोग करिकै धन जोरि जोरि धरौहौ सो जैसे कोलआइकै मछेहनको लाइकै सहतको लैजाइकै आपुसमें बांटिलेइहै तैसेतोहीं पीछेकहेजब तुम न रहिजाउगे तबतिहारे धनको स्त्री पुत्रादिक लेहुलेहु करिकै बांटिलेइंगे अरुतुमको भूतकीरहनि कहे दशदिन भूतकहैंगे मरघटामें बैठावैंगे २ ॥

देहरी लौबरनारि संगहै आगे संगसहेला ।
मृतुकथानसँगदियो खटोलाफिरिपुनि हंसअकेला ३
जारदेह भसमहवै जाई गाड़े माटीखाई ।
काचेकुंभ उदक जो भरिया तनकै इहैबड़ाई ४

ये चारोतुकन को अर्थ स्पष्टहै ४ ॥

रामनरमसि मोहमेंमाते परयोकाल बशकूवा ।
कहैकबीरनलआपुबँधावो ज्योंनलनीभ्रमसूवा ५

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे जीवमोहमें मातेरा ममेंनहीं रमैहै कालकेबश ह्वैकै संसार कूपमें परयोहै याते बारबार तेरोजनम मरण होइ है सोतौ अपनेही भ्रमते नानादुख सहैहै जैसे नलिनी को सुवा अपनेही चंगुलते धरि लियो छोड़ैनहीं है मारो जाइहै तैसे तैंहूं नानामतनमें लगिकै अरु बिषयन में लगिकै आपहीते यह संसारमें परिकै बँधिगयो संसारको धरैहै भाव यहहै संसार तोको बांधे नहीं है तैंछोड़ि काहेनहीं देइहै अरुजेहि साहबको तैं है जहां एकऊदुःख नहीं है तिनमें काहे नहीं लगैहै ५ इति तिहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथचौहत्तरवांशब्द ॥

योगियाऐसोहैबदकरणी । जाकेगगन अकाशनधरणी १ हाथनवाकेपांउ नवाकेरूपनवाकेरेखा । बिनाहाटहटवाईलावै करैबयाईलेखा २ कर्मन वाकेधर्मनवाके योगनवाकेयुगुती । सींगीपत्रकछुवनहिंवाके काहेकमांगे भुगुती ३ तैंमोहिंजानामैंतोहिजाना मैंतोहिंमाहँसमाना । उतपतिप्रलय एकनहिंहोती तबकहुकौनकोध्याना ४ योगियाएकआनिकियठाढ़ो राम रहाभरिपूरी । औषधिमूलकछुवनहिंवाको रामसजीवनिमूरी ५ नटवत बाजीपेखनीपेखै बाजीगरकीबाजी । कहैकबीरसुनोहोसंतो भाईसोराज बिराजी ६ ॥

योगियाऐसोहैबदकरणी । जाकेगगनअकाशनधरणी १
हाथनवाकेपांउनवाकेरूपनवाकेरेखा ।
बिनाहाटहटवाईलावैकरैबयाईलेखा २

योगियाकहे संयोगियाको ब्रह्मसंयोग करिके जगत् करैहै याते योगिया माया सबलित ब्रह्महै सो वह योगियाकी बदकरणीहै कहे निषिद्ध करणी है जौने चैतन्याकाशमें अहंब्रह्मास्मि बुद्धि करैहै तौन चैतन्याकाश मेरे लोकको प्रकाशहै तहां आकाश धरणी एकौ नहीं हैं १ वह चैतन्याकाशको जोमानिलियोहै कि सोमही हौं ऐसाजोसमष्टिजीव चैतन्यब्रह्मरूपसो वाके नहाथहै न पाउहै न वाके रूपरेखाहै जहां जीव नानाकर्म करैहैं अरुवही कर्मनकोफल पावैहै जहां यही लेनदेन ह्वै रह्योहै सो जोहै जगत् हाट वाके नहीं है कहे देशकाल बस्तु परिक्षेदते शून्यहै औहटवाई लगौतैहै कहेमाया सबलितहैकै जगत् करतै है अरु बया औरको अनाज और औरको नापि देइहै अरु ब्रह्मजोहै बया सोमाया सबलितहैं कै ईश्वर रूपते जीवनके किये जेकर्मके फलहैं तेजीवनको देइहै २ ॥

कर्मनवाके धर्मनवाके योगनवाके युगुती ।
सींगीपत्रकछुवनहिंवाकेकाहेकोमांगेभुगुती ३

अरु वह ब्रह्मको न कर्महै न धर्महै औ न वाके योग युगुतीहै औ सींगी जो योगीलोग बजावैहैं सो वाके नहीं है औ योगी तंबालिये रहैहैं अरु वाके पात्र नहीं है सो कबीरजी कहैहैं कि वह ब्रह्म तौन योगकरै न वेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनावै सिद्धांतमें तोकछू हई नहीं है सो हे योगिउ ज्ञानिउ वेष बनाइ कै जोकहौहौ कि हमहीं ब्रह्महैं तौ मुक्तिकहे ऐश्वर्य काहे मांगौहौ किहमहीं जगत्के मालिक औ ब्रह्महैं जाइ हेगुरू हमको यह युगुति बताइदेउ औ जो मुक्ति पाठहोइ तौतुम पहिलेहीते मुक्ति बनेरहे गुरुवा लोगनते काहे मुक्तिमांगौ हौ किजामें हम मुक्तिहैं जाइं सो युगुति बताइदेउ जोकहो हम आपनेभ्रम निवृत्ति करिबेकोहम मुक्तिकोज्ञान मागैहैं तौ अरमढ़ौ वहब्रह्मके तौ कुछुहई नहीं है वह निर्लेपहै वह ब्रह्मजो तुमहोते तौअज्ञानई तुम्हारे कैसे होतो ३॥

तैं मोहिंजाना मैं तोहिंजाना मैं तोहिंमाहँसमाना।
उतपतिप्रलयएकनहिंहोती तबकहुकौनकोध्याना ४

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेजीव ज्ञानजो तैंमानिलियोहै कि केते उपासना करैहै कि मैंईश्वरहौं ईश्वरमैंहौं ईश्वरमें समानहौं ईश्वर मोहीं में समान है तौ उत्पत्तिप्रलय जब कुछुनहीं है तबतोबताउ कौनकोध्यानहै अर्थात् काहूको ध्याननहीं करतरह्यो भावयहहै कि तबजो ब्रह्महोते तौ संसारी काहे होते ४॥

योगिया एकआनिकियठाढ़ो रामरहाभरिपूरी।
औषधिमूलकछुवनहिंवाके रामसजीवनि मूरी ५

सोतैंहीं यह योगिया माया सबलित ब्रह्म को अनुभव करिकै धोखा ब्रह्मही को साहब मानि ठाढ़कै लीन्ह्यो है फिरि कै सोहै ना कुछु औषधि है ना वाके मूल है ताको मानैं हैं परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र सजीवनि मूरि सर्वत्र पूर्ण ह्वैरहैहैं ताको नहीं जानैहैं सजीवनि मूरि याते कह्यो औ नाना ईश्वर जीवत्व मिटाय देनवारे हैं औ साहब जीवन को जियाय देनवारेहैं अर्थात् रूप देन वारेहैं ५॥

नटवतबाजी पेखनीपेखै बाजीगरकीबाजी।
कहैकबीर सुनोहोसंतो भईसोराजबिराजी ६

जौन तू धोखा ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण मानैहै सो तेरी या पेखनी नटवत् बाजी पेखनी है अर्थात् झठहै बाजीगर की बाजी है अर्थात् सांच असांच देखावै असांच सांच देखावै है सो कबीरजीकहैहैं कि हेसंतौ सुनौ उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज विराजी ह्वैगई कहे सर्वत्र पूर्ण सत्य जे साहब हैं ते उनको नहीं जानिपरै हैं वही धोखा ब्रह्ममें लगैहैं असत्यही सर्वत्र देखै हैं मन मायाको राज्य ह्वैरह्यो है साहबको राज्य नहीं है ६ इतिचहोत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथपचहत्तरवांशब्द ॥

ऐसो भर्म बिगुरचिनभारी । वेद किताब दीनऔ दोजख कोपुरुषाको नारी १ माटीको घट साजबनाया नादेबिंद समाना । घटबिनशे क्या नाम धरहुगे अहमक खोज भुलाना २ एकैहाड़ त्वचामलमुत्रा रुधिरगूद यकमुद्रा । एकबिंदु ते सृष्टिरच्योहै को ब्राह्मण को शुद्रा ३ रजगुणब्रह्मा तमोगुणशंकर सतोगुणी हरिसोई । कहैकबीर रामरमि रहिया हिंदू तुरुकनकोई ४ ॥

ऐसोभर्मबिगुरचिन भारी ।
वेदकिताबदीनऔदोजखकोपुरुषाकोनारी १

ऐसो कहे यहतरहते जैसो आगेकहैहैं तैसो चिन्मात्र जीवको बिगुरचिन कहे बिगरिवो भर्म ते बहुत भारी है काहे ते कि भर्मते दुबिधा कहिकै वह सार पदार्थको न जान्यो हिंदू मुसल्मान दोऊ बिगरिगये हिंदू वेदकीराह ते नाना मत बनाय लेत भये औ मुसल्मान किताबन की सरालैकै नाना मत दूसरो दीनको खड़ा करत भये हिंदू नरक स्वर्ग मुसल्मान बिहिस्त दोजख कहत भये जो वेद किताबके तात्पर्य तेदेखौतौ न कोई पुरुष जानिपरै न नारी जानिपरै सोजब पुरुषही नारीको भेदनहीं है तौ हिंदू मसल्मान कैसे भेदभयो १ ॥

माटीको घट साज बनाया नादेविंद समाना ।
घटबिनशेक्यानामधरहुगेअहमकखोजभुलाना २
एकैहांड़ त्वचामलमुत्रा रुधिरगूद यकमुद्रा ।
एकबिंदुते सृष्टिरच्योहै कोब्राह्मण कोशुद्रा ३

नाभीके तरेजोदशअंगुरकी ज्योतिहै औतौनेमें जब प्राणवायुको संयोग होइहै तबनाद उठैहै तामें बिंदुसमाइगयो तबमाटीको घटयह पिंडभयो ताहीकोनामधरावैहै जबयाको घटबिनशिगयो कहेशरीर छूटिगयो तबयाको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या नाम धरौगे अर्थात् नामरूपयाके सबमिथ्या हैं अहमकजो है जीवसो नामरूपके खोजमें भुलाइगयो येसब जीवात्माके नामरूप नहीं हैं २ सो एकै हांड़ादिकनते औएकैबिंदुते कहेबीर्यते सकलसृष्टि भईहै काकोहिंदू कहैं काकोमुसल्मान कहैं काकोब्राह्मणकहैं काकोशूद्रकहैं शरीरमेंयहीसाजु सबकेहै अरुबेदमें कर्म किताबमें सरायहीते नानाभेद लगैहैं जोबिचारिकै देखो तौ नामरूपहीको भेदलगि रह्योहै आत्मातोसबको चितहीहै औमासु चामसबके पंचभौतिकहीहै अबजे गुणाभिमानीहैं तिनको कहेहैं ३ ॥

रजगुणब्रह्म तमोगुणशंकर सतोगुणीहरिसोई ।
कहैकबीर रामरमिरहिया हिंदूतुरुकनकोई ४

वहीनामरूपके भेदते ब्रह्मारजोगुणी शंकरतमोगुणी बिष्णु सतोगुणी भये औ वही नामके भेदते मुसल्माननमें इनहीं को अजाजोलमें काईल इजराईल कबीरजी कहैहैं कि येतो सब नामरूपके भेदहैं इनको सबको आत्मा एकईहै तिनमें अंतर्य्यामी रूपते मनबचनके परे परमपुरुष पर श्रीरामचंद्रई रमि रहेहैं जोकहो रामनामौ तौ नाममें आवैहै तौ रामको नाम मनबचनमें नहीं आवैहै आपही स्फुरित होइहै तेहिते नामत्व नहीं है अरु श्रीरामचंद्र निर्गुण सगुणके परेहैं तिनको जानै औ जोआत्मा नाम रूपते भिन्नहै न हिंदूहै न तुरुकहै तामें येईराम रमिरहेहैं या हेतुते सबको आत्माइनहीं को दासहै तेहिते इनहीं को जोजानै सोई मुक्तहोइहै परमपुरुष पर श्रीरामचंद्र निर्गुण सगुणके परेहैं तिनहीं को रामनामजानै मुक्तिहोइहै तामेंप्रमाण ॥ रामकेनामतेपिंडब्रह्मांडसब रामकानामसुनि भर्ममानी । निर्गुणनिराकारकेपारपरब्रह्महैंतासुकानामरंकारजानी । बिष्णु पूजाकरैंध्यानशंकरधरैं भनैंसुबिरंचिबहुबिधिबानी । कहैंकब्बीरकोइपार पावैनहीं रामकानामअकहकहानी ४ इतिपचहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथछिहत्तरवांशब्द ॥

अपनपौआपुहीबिसरो । जैसेश्वानहांकांचमँदिलमें भर्मतभूंकिमरो १ ज्योंकेहरिबपुनिरखिकूपजल प्रतिमादेखिपरो । ऐसेहिमदगजफटिकशिला पर दशननिआनिअरो २ मर्कटमठीस्वादनाबिहुरै घरघरनटतफिरो । कहकबीरललनीकेसुवना तोहिंकवनेपकरो ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनपौआपुहीबिसरो ।
जैसेशोनहा कांचमँदिलमें भर्मत भूंकिमरो १
ज्योंकेहरिबपुनिरखिकूपजलप्रतिमादेखिपरो ।
ऐसेहिमदगजफटिकशिलापरदशननिआनिकरो२

अपनपौ कहे आपनेजे परमपुरुष पर श्रीरामचंद्रहैं तिनको आपही ते यह जीव बिसरिगयो जैसे कूकुर कांचकेमंदिरमें आपनो रूप देखिदेखि भर्मते भूंकिभूंकिमरैहै १ अरु जैसे केहरि कूपकेजलमें आपनी प्रतिमादेखिकै कूदि परैहै अरु ऐसेही प्रतिबिंब देखि फटिकशिलामें हाथी दांत टोरिडारैहै २ ॥

मर्कटमुठीस्वादनाबिहुरै घरघरनटतफिरो ।
कहकबीरललनीकेसुवनातोहिंकवनेपकरो ३

अरु जैसे मर्कट मूठीमें जोहै दाना ताके स्वादकेलिये फँसिगये बाजीगरके साथ नाचत बागैहै सो कबीरजी कहैहैं कि जैसे इनके सबके भ्रम होइहै तैसे हेजीव तैंहीं सबकल्पनाकरिलियोहै अपनी कल्पनाते तोही को भ्रमहोइहै नानाउपासना नानाठाकुर खोजत फिरैहै बिचारिकै देखु तौ जब तेरे कल्पना नहीं रही तबतैं शुद्धरहैहै जैसे सुवा ललनीको पकरि लेइहै तैसे तैंहीं येसब कल्पनाकरिकै कल्पनामें बंधोहै जैसे सुवाललनी को जोछोड़िदेइ तौवृक्षमें पहुंचैजाइ तैसे तैंहू जो कल्पनाको छोड़िदेइतौ तोको कौन पकरयोहै परमपुरुष पुर श्रीरामचंद्रके पास पहुंचैजाइ जबसब कल्पनाछोड़ि शुद्ध ह्वैजाइहै तब साहब अपनो बिग्रह देइहै तामेंस्थित ह्वै साहबके लोकको जाइहै तामें प्रमाण ॥ आदत्ते हरिहस्तेनहरिपादेनगच्छतिइतिस्मृतिः । अरुश्रीकबीरऊजीकोमंगलप्रमाण ॥ चलोसखीबैकुंठ बिष्णुमायाजहां । चारिउमुक्तिनिदानपरमपदलेतहां ॥ आगेशुन्यस्वरूपअलखनहिंलखिपरै । तत्वनिरंजनजान भरमजनिचितधरै ॥ आगेहैभगवंत तोअक्षरनाउहै । तौनमिटावैकोटिबनावैठाउहै ॥ आगेसिंधुबेलंदमहागहिरोजहां । कोनेयालैजायउतारैकोतहां ॥ करअजयाकीनावतोसरतिउतारिहै । लेइहौअज्जरनाउ तोहंसउबारिहै ॥ पारउतरपुरुषोत्तमपरख्योजानहै । तहँवांधामअखंड तोपदनिरवानहै ॥ तहँनहिंघातमुक्ति तोपदडारैफिरै । सुरतिसनेहीहंसनिरंतरउच्चरै ॥ बारहमासबसंतअमरलीलाजहां । कहैं कबीरबिचारि अटलह्वैरहुतहां ३ इतिछिहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथसतहत्तरवांशब्द ॥

आपनआशकियेबहुतेरा । काहुनमर्मपावहरिकेरा १ इंद्रीकहांकरैबिश्रा म । सोकहँगयेजोकहतेराम २ सोकहँगयेहोतअज्ञान । होयमृतकवहि पदहि समान ३ रामानंद रामरसछाके । कहकबीरहम कहिकहिथाके ४ ॥

आपन आशकिये बहुतेरा । काहुनमर्म पावहरिकेरा १

आपने स्वरूपके चीन्हिबेकी बहुतेराकहे बहुतआश किये कि हमारोआ-त्मैसबको मालिकहै यहीके जानेतेहम मुक्तिह्वैजाइंगे परंतु मुक्ति न भये अरु हरिजे परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्र सबके कलेश हारनवारे हैं तिनको मर्मनपायो अर्थात् उनको कोई न चीन्ह्यो १ ॥

इंद्री कहांकरै बिश्राम । सो कहँगये जो कहतेराम २

अरुयह कोईनहीं बिचार करैहै कि इन्द्रीकहां बिश्राम करैहै काहेतेकि इंद्रीके जे देवताहैं तिनते समेत इन्द्रीतो मनतेचैतन्यहै औमनजीवात्मा ते चैतन्यहै औ जीवात्मा परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रके प्रकाशते चैतन्य है सो जे आपनेस्वरूपको बिचारकरैहैं कि महीं रामहौं तेवेराम भर कहांगये अर्थात् नहीं गये ब्रह्ममें समानरहे अरु एकएकते चैतन्यहै तामें श्रीगोसाइं तुलसीदासको प्रमाण ॥ बिषय करन सुर जीवसमेता । सकल एकते एक सचेता ॥ सबकर परमप्रकाशक जोई । राम अनादि अवधपति सोई ॥ जगत प्रकाश्य प्रकाशक रामू । मायाधीश ज्ञानगुण धामू २ ॥

सोकहँगये होतअज्ञान । होयमृतक यहिपदहि समान ३ रामानंद रामरसछाके । कह कबीरहमकहिकहि थाके ४

जीवब्रह्ममें समानरह्यो शुद्धरह्यो जबमनकी उत्पत्ति भई अज्ञानभयो सो कहांगयो अर्थात् तब मृतकह्वै कै आपने स्वरूपको भुलायकै यहिपदहि कहे यहि संसारमें समान ३ श्रीकबीरजी कहैहैं कि हमचारो युगमें कहि कहि थकिगये कि रामानंद जेहैं तेई रामके रसमें छकेहैं अरुतेईपरमपु-रुषपर श्रीरामचन्द्रके धामकोगयेहैं औरकोई नहीं परममुक्ति पाईहै तुमहू रामानंद होतजाउ अर्थात् तुमहू रामहीं ते आनंद मानतजाउ यहहमचारो युगमें सबको समुझायो परतु कोई हमारोकह्यो न मान्यो गममें आनंद कोई न मान्यो सबवही माया ब्रह्ममें लगिकै संसारी होतभयो ४ इति सतहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथअठहत्तरवांशब्द ॥

अब हमजाना होहरिबाजीको खेल। डंकबजाय देखाय तमाशा बहुरि तीलेत सकेल १ हरिबाजी सुरनरमुनिजहंडे माया चेटकलाया। घर में डारिसबन भरमाया हृदयाज्ञान न आया २ बाजीझूंठ बाजीगर सांचासाधु-नकी मति ऐसी। कह कबीर जिन जैसी समुझी ताकीगतिभै तैसी ३ ॥

अबहम जानाहोहरि बाजीको खेल।
डंकबजायदेखायतमाशाबहुरिसोलेतसकेल १

हेहरि हेसाहब संसाररूप बाजीके खेलकोहेतु अबहम जान्यो अबजो कह्योतामें धुनियहहै कि तबयह बिचारतरहे कि साहबतो दयालुहै शुद्ध जीवको संसार रचि अशुद्धकाहे करिदिये यहअंकारही सो अब जब छूटी तब साहब को हेतुजान्यो साहबजो सुरतिदियो सो आपने पासलिवाय सुखलिये डंकाबजायकहे रामनाम शब्दसुनायकै तमाशा देखायकहेजगत् सुखअर्थ द्वारसंसार तमाशा देखायकै बहुरिसो लेतसकेल कहे जो कोई जीव साहब के सम्मुख भयो ताको साहबमुख अर्थ बताइकै चितअचित रूपबिगूहजगतदेखायकैसंसारसकेलिलेयहैअर्थात्संसारदेखिनहीं परै १॥

हरिबाजी सुरनरमुनि जहँडे मायाचेटक लाया।
घरमेंडारिसबन भरमाया हृदयाज्ञान न आया २
बाजीझूठ बाजीगर सांचा साधुनकी मतिऐसी।
कहकबीर जिनजैसीसमुझी ताकीगतिहै तैसी ३

हरि जे साहब तिनकी बाजीजो संसार तामें साहबको हेतु न जानिकै सुरनर मुनिजेहैं तेरामनामको संसारमुख अर्थ करिकैमायाके चेटकमेंजहँ-डिगयेअर्थात्भूलिगयेसोमायाइनकोघरजोसंसारतामें डारिकैभरमायदियो हृदयमें ज्ञान न होतभयो तौन हमजान्यो साहब सरतिदियो तैंआपनेपास बोलावै को जीवनको सो याजीव आपहीते संसारबाजी रचि भूलिगयो२ बाजीजो संसार सोझूंठ बाजीगर जोजीव सो सांचहै सो साधुनकी मति तो ऐसीहै और जेसबहैं बद्धजीव तेजैसे समुझिनिहै ताकीतैसिही गतिभई है सो गतिहू सब अनित्यहै ३ इतिअठहत्तरवांशब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथउन्नासीवांशब्द ॥

कहोहोअंबरकासोंलागा । चेतनहारेचेतुसभागा १ अंबरमध्येदीसैतारा यकचेतैदुजेचेतवनहारा २ जेहिखोजैसोउहवांनाहीं । सोतोआहिअमरपदमाहीं ३ कहकबीरपदबूझैसोई । मुखहृदयाजाकेयकहोई ४ ॥

कह्योहोअंबरकासोंलागा । चेतनहारेचेतुसुभागा १
अंबरमध्येदीसैतारा । यकचेतैदुजेचेतवनहारा २

तैंतो सुभागाहै साहबकोहै तैंकाहे मनमाया ब्रह्ममें लगिकै अभागा ह्वै रहैहै हेचेतकरनवारे तैंचेततो करु अंबरजोहै लोकप्रकाश रूपब्रह्म सोकहां लागाहै अर्थात् वह काको प्रकाशहै वह साहबके लोकको प्रकाशहै चेततो करु १ वह अंबरजोहै लोकप्रकाश ब्रह्म तामें तारा देखाइहै कहे जबतें उहां अहंब्रह्म बुद्धिकरैहै तबहीं जगत्रूप तारा उत्पत्तिहोइहै तौनेही जगत में एक गुरूहोइहै सो चेतावैहै अरु एक शिष्यहोइहै सो चेत करैहै २ ॥

जेहिखोजैसोउहवांनाहीं । सोतोआहिअमरपदमाहीं ३
कहकबीरपदबूझैसोई । मुखहृदयाजाकेयकहोई ४

सो जेहि आपने स्वरूपको तैंखोजैहै कि मैं आपने स्वरूपको जानिकै मुक्तिह्वैजाउं सो उहां वा गुरुवनको ज्ञानमें नहीं है औ न वहलोक प्रकाश में हैं काहेते कि जेजे देवतनमें वेलगावैहैं तेई अमर नहीं हैं तौ तोको कहां मुक्ति करैंगे अरु महाप्रलयमें जब लोकप्रकाशमें लीनहोइहै तबउहौंते उत्पत्तिहोइहै तेहिते उहौंगयेअमर नहीं होइहै तेहितेयहआयो कितैंतोअमर नहीं होइहै तेहिते यहआयो कितैंतो अमरपदमैंहै साहबको अंशहै साहब को जानिले तौअमर ह्वैजाइ ३ श्रीकबीरजी कहैहैं कियह अमरपद अपने स्वरूप कोई बिरला बूझैहै कौन जाकेसम अधिक नहीं है ऐसोजोहै एक रामनाम सोजाके मुखहृदयमें होइहै सोईबूझैहै ४ इतिउन्नासीवांशब्द समाप्तम् ॥

अथअसीवांशब्द ॥

बन्देकरिले आप निवेरा । आपु जियत लखु आप ठवरकरु मुये कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरतेरा १ यहि अवसर नहिं चेतौप्राणी अन्तकोई नहिंतेरा। कहै कबीर सुनो हो संतौ कठिन कालको घेरा २॥

बन्देकरिलेआपनिबेरा।
आपुजियतलखु आपठवरकरुमुये कहांघरतेरा १
यहि अवसरनहिं चेतौप्राणी अंतकोई नहिंतेरा।
कहै कबीरसुनोहो संतौ कठिनकाल को घेरा २

हेबंदे अपनेमंतो निबेरा करिले अपनेजियत अपनाठौर तौकरु मुयेते तेराघर कहांहै अर्थात् जोसत असत कर्मकरैगो सोसब नरक स्वर्गादिकन में भोगकरैगो तेतोकर्मके घरहैं तेरेघर नहीं हैं औ जोज्ञानकरिकै आपनेको ब्रह्ममानिकै ब्रह्म प्रकाशमेंहैकै शुद्धजीवनके रहैगो सोब्रह्महोना तौ धोखा है जबफेरि उत्पति समय होइगो तबमाया धरिलैआवैगी पुनिसंसारी ह्वै जाइगो अरु और और देवतनकी उपासनाकरिकै उनकेलोकजाइ जो ते ऊतेरेघर नहीं हैं जबमाया धरिलै आवैगी तबसंसारी ह्वैजाइगो जबमरैगो औ ये घरनमेंजाइगो तबबिचार करने की सुधि न रहिजाइगी तेहिते जीतहीआपनोघर बिचारु तेरोघरवहहै जहांकेगये फिरिनआवैसोतैंसाहब को अंशहै सो साहबकेपास घरकरु कहेठौरकरु जातेफिरि न संसारमें आवै १ सोकबीरजीकहेहैं किहेप्राणिउ यहिअवसरमें कहे मनुष्यशरीरमेंजो साहबको नहीं जानौहौ तौ हेसंतौसुनौ तुमको अंतकालमें यहकठिनजो कालकोघेराहै तातेकौनबचावैगो अर्थात् जहांजहां जाहुगे तहांतहांते काल तोकोखाइलेइगो साहब बचावनवारेखड़ेहैं ताकोप्रमाण आगेलिखिहीआ येहैं॥अजहूं लेहु छुड़ाइकालसों जो घट सुरतिसंभारै॥ सो साहबको जानि कै साहबके पासजाय जनन मरन छूटिजाइ २ इतिअसीवांशब्दसमाप्तः॥

अथइक्यासीवांशब्द॥

तूतोररामममाकीभांतिहौसंतउधारनचूनरी १ बालमीकिबनबोइया चूनि लियाशुकदेव। कर्मबेनौराह्वैरह्यो सुतकतौजयदेव २ तीनलोकतानातनो ब्रह्माबिष्णुमहेश। नामलेतमुनिहारिया सुरपतिसकलनरेश ३ बिनजिह्वा गुणगाइयाबिनबस्तीकागेह। सूनेघरकापाहुना तासोंलावैनेह ४ चारिवेद कैड़ाकियो निरंकारकियराम। बिनयकबीरासूनरी पहिरैहरिकोदास ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तूतोररामकीभांतिहौ संतउधारनचूनरी १

जोतुम मनमायाब्रह्ममें लगिरह्योहै सोतुम इनके नहीं हौ तुमतो रा ममाकीभांतिहौ अर्थात् रामजोमैंहौंतिनकी भांतिहौ जैसेमैं बिष्णुचैतन्यहौं तैसे तुम अनुचैतन्यहौ मेरे अंगहौ सो मेरोजो रामनामहै ताको उधारन नामकी चुनरी कबीरसंत मेरोबनायोहै यही रकारबीज मोंमकारहूहैयहि हेतुते साहब रकारहीको कहैहैं अर्थात् जब रामनाममें जपौगे तब यह जानिजाहुगे कि मकार मेरो स्वरूपहै रकार साहबको स्वरूपहै औ कबीर संत असारजोहै जगत्मुख अर्थ ताको त्यागिकै सारजोहै साहबमुख अर्थ ताको ग्रहणकरिकै चूनरी बनाईहै सो कहैहैं १ ॥

बालमीकि बनबोइया चूनिलिया शुकदेव।
कर्म बेनौरा ह्वैरह्यो सुतकातै जयदेव २

माटीकोहै बहुत छिद्रहैं याते शरीर वल्मीक कहे बे मौरिहै तामें जोरहै सो बाल्मीकि कहावै सो बाल्मीकि आत्माहै सो बाणीरूपी जो बन कहे कपासहै ताको बोवतभयो अर्थात् वहीके इच्छा शक्तिभईहै औ शुचगोके धातुहै तेहिते शुकशब्द होइहै ताको जो देव होइ सो शुकदेव कहावैहै सो शोच मनके होइहै अर्थात् संकल्प बिकल्प मनके होइहै सो शुकदेव मनहै सो आत्माते जो बाणीरूपी कपासके ढेढ़ाको अनुसारभयो ताकोचुनिलियो अर्थात्वाणीमनैतेनिकसीहै अरु जयकरिकैक्रीड़ाकरैअथवा जयबिषयक्रीड़ा करै सो जयदेवकहावै सो सबकोजीतिलियोहै अज्ञान सोमूलाज्ञानजयदेव है तौनेमें कर्म बेनौरा ह्वैरह्योहै बिद्या अबिद्या माया सोई सूतहै जाको मूलाज्ञान जो अहंब्रह्मबुद्धि तौनहै जाकेऐसो जोजीव जयदेव सो कातैहै अर्थात् अहंब्रह्म बुद्धिजब समष्टि जीवकियोहै तबहीं मनकी उत्पत्ति भई कर्म भयोहै संसार प्रकटभयो २ ॥

तीनलोक तानातनो ब्रह्मा विष्णु महेश।
नामलेत मुनिहारिया सुरपतिसकलनरेश३

तीनलोक जोहै सोई ताना तन्योहै ताको तीनि खूंटाहैं रजोगुण ब्रह्मा मृत्युलोकके सतोगुण बिष्णु आकाशके तमोगुण महेश पातालके अरु अनेक जे नामहैं अनेकजे मतहैं अनेकजे ज्ञानहैं वेदमें सोई कपरा तयार भयो तिनको नामलेत मुनि औ इंद्र औ सबराजा हारिगये यही ब्रह्मरूपी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपराके गठियामें कसे रहिगये बासों निकसिकै मुक्ति न पावतभये अर्थात् मोको न जानतभये ३ ॥

बिनजिह्वा गुणगाइया बिनबस्तीकागेह ।
सूनेघरका पाहुना तासों लावै नेह ४

कहतका भये कि बिन जिह्वाजो गुणगावैहै कहे अजपा जोहै सोहं तौने अजपाकोसाथ गाइकै कहे जपिजपिकै बिन बस्तीको गेहजोहै ब्रह्म झठा तौने कपराके गठियाके भीतर बँधिजातभये कहे यह मानतभये कि हमहीं ब्रह्महैं सोवह घरतो देखकाल वस्तु परिक्षेदते सूनहै सो जैसे सूने घरमें पाहुनाजाय औ कुछुनपावै तैसेजीव उहां कुछु न पावतभयो येतोरामनाम को जगत्मुख अर्थकरि सब यह कपराबिनो अरु श्रीकबीरजी साहबमुख अर्थ करि कौनकपरा बिनैहैं सो कहैहैं ४ ॥

चारिवेदकैंड़ा कियो निरंकार कियराछ ।
बिनै कबीरा चूनरी पहिरैं हरिके दाछ ५

चारिवेदको कैंड़ाकरिकै औ निरंकार को राछबनाइकै वही निरंकार के भीतरते निकासि लैजाइकै अर्थात् प्रकाशरूप ब्रह्मकौनको प्रकाशहै तब यहविचारयो साहबके लोकको प्रकाशहै लोककौनकोहै यही बिचार करिबो ब्रह्मते वेदकी तात्पर्य निकसिबो है सो चारिउवेद को कैंड़ाकरिकै ब्रह्म जोहै राक्षतौनेते वेदको तात्पर्य निकासि रामनामकी चूनरी श्रीकबीरजी कहैहैं कि मैं बिनौहौं ताको हरिके जानिबेमें दाक्षकहेदक्ष जेकोई बिरले दासहैं तेपहिरैहैं अर्थात् रामनाम जपिकै साहबको जानैहैं यहपदमें बाल्मीकिको शुकदेवकोजयदेवकोजो अर्थहम कियोहै सोईअर्थहै काहेतेकि जेयेई बाल्मीकि शुकदेवजयदेवको अर्थकरैहैं तिनको यहज्ञान नहीं रह्योकि तीनिलोक जब तानातनि गये हैं ब्रह्मा विष्णु महेश खूंटाभये हैं तब बाल्मीकि शुकदेव जयदेवनहीं रहेहैं ५ इतिइक्यासीवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथबयासीवांशब्द ॥

तुमयहि विधिसमुझो लोई गोरीमुख मंदिरबजोई १ एकसगुण षटचक्र हिबेधै बिनुतृष कोल्हूमांजै । ब्रह्मैपकरि अग्निमेंहोमै मक्षगगन चढ़िगाजै २ नितै अमावस नितै, हण होइ राहुग्रास नितदीजै । सुरभी भक्षणकरै वेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुखघनबरसैतनछीजै ३ पुहुमिकपानी अंबर भरिया यहअचरज काकीजै। त्रिकुटीकुंडल मधिमंदिरबाजै औघट अंबरभीजै ४ कहै कबीर सुनोहो संतो योगिनसिद्धिपियारी। सदारहै सुखसंयमअपने बसुधाआदिकुंवारी ५ ॥

तुमयहिबिधिसमुझौलोईगोरीमुखमंदिरबजोई १
एकसगुण षट्चक्रहि बेधैबिनु वृषकोल्हू मांजै ।
ब्रह्मैपकरि अग्निमें होमै मक्ष गगनचढ़िगाजै २

वहलोई जोहैलपटकहे ज्योतिसो ब्रह्मांडमेंहैताको यहिबिधिते तुमसमुझोअथवालोई कहेहेलोगो तुमयहिबिधिते समुझौगोरीजोहै कुंडलिनीशक्ति नागिनी ताहीके मुख शरीररूपीमंदिर कहे मृदंगअथवा मंदिर कहेघरबाजै है अर्थात् परावाणीउहैते निकसैहै सोई पश्यंतीते मध्यमा आइबैखरी में प्रगट होइहै षटचक्रको बेधिकै कुंडलिनीशक्ति नागिनी जायहै ताके साथ त्रिगुणते युक्तजो एकसगुणजीवहै सोजायहै सोवाकीविधि आगेलिखिआये हैं सोवृषभतो उहांनहीं चलैहै औ कोल्हूजो कुंडलिनीशक्ति सोमांजै कहे देहमांजिकै उठैहै सोपांचहजार कुंभक कियो तब श्वासनते तपित होइहै अथवा खेचरीते सुधाबिंदु वाके ऊपरपर्‍यो ताकी शीतलता पाइकै उठैहै सो ब्रह्मांडमें जाइकै अर्थात् जेतनेरोज समाधि लगायो तेतने दिन रही ताके साथजीवहूगयो सोकहैहैं कि ब्रह्मांडजो रजोगुणहै ताको योगानि में होमिदियो सो रजोगुण जर्‍यो तौ तमोगुण जरैहै अरु मक्षजो जीवहै सो नाभीके जलमें रह्यो तहांते चलिकै गगनजो ब्रह्मांडहै तहांगाजैहै कहेयह कहैहैकि महीं मालिकहौं २ ॥

नितैअमावस नितैग्रहण होय राहुग्रास नितदीजै ।
सुरभी भक्षण करै वेदमुख घनबर्षै तन छीजै ३
पुहुमिकपानी अंबर भरिया यहअचरजको कीजै ।
त्रिकुटि कुंडलमधि मंदर बाजैऔघट अंबरभीजै ४

खेचरीकीदृष्टितीनहै तामेंएकपूर्णिमाहै कहेसर्वत्रपूर्णदेखैहै औ ऊर्ध्वदृष्टि प्रतिपदाहै औ अंतरदृष्टि अमावस है सोजब अंतर खेचरीचढ़ी औ कालपूतरी आकाशमें बेधीकहे ऊर्ध्वदृष्टि प्रतिपदामें बेधी तब अंधकार अविद्या ग्रहणकैकै चैतन्यको छाइलियो अर्थात् पूथम अंधकार देखोपरो और कछु न देखिपर्‍यो पुनिबिजली ऐसीचमकी तबतारागण बीर्य है ताकी गति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालूमभई तब प्रथम सूर्यमंडलपुनि चंद्रमंडल देखोपर्‌यो सोवहीज्योति मेंलीनरहेहैं समाधिलगीरहेहैं जब समाधि उतरी तबजीवको अमावसभई तममें पर्‌योआइ तब सूर्य प्रकाश देखतरह्यो ताको मायारूपी राहुग्रसि लियो अथवाजब नागिनीको सुधापिआवैहै तबबहुतदिनकी समाधिलगै है अबजौन पुरुषरोज समाधि लगावैहै औ उतारैहै सोकहै हैं जब समाधि चढ़ाइलैगयो तबयाको अमावस ह्वैगयो पुनि तममें पर्‌यो औ नित ग्रहण होइहै वे चंद्रमा औ सूर्य दुइनाड़ीहैं तिनको सुषुम्णारूपी राहु ग्रास देइहै अर्थात् ग्रसन करावैहै वही सुषुम्णामें लीनकै देइहै जब समाधिलगी तब सुरभीजोहै गायत्री मायाकुंडलिनी शक्ति सो वेदमुख बाणीभक्षणकै लियो अर्थात् बाणीरहित ह्वैगयो औ तनछीजैहै कहे दूबर ह्वैजाइहै सोघन बरसै है कहे सुधा बरसैहै याते बनो रहै है पुहुमीका पानी जब अंबरमें भरन लगैहै कहे नीचेकोबीर्य ब्रह्माण्डमें चढ़ावन लगैहै तब शीशेकी सराई बनाइकै लिंगद्वारमें डारैहै पानी खैंचैहै जबराह साफ ह्वैजाइहै तब पवन केसाथ बीर्य चढ़ैहै तब पवन बीर्यके साथ जीवात्मा चढ़िजाइहै त्रिकुटी में त्रिवेणीको स्नानकरिकै दशौअनहद सुननलाग्यो तामें मंदिरकहे मृदगौ है सोबाजैहै औ घटते कहे बंकनालकी राहते जब जीवात्मा जाइहै तब अंबरजोहै गैबगुफाको आकाश सो भीजैहै अर्थात् उहां बीर्य पहुंचिजाइहै सो यह आश्चर्य का कीजै ४ ॥

कहैकबीरसुनोहोसंतो योगिनसिद्धिपियारी ।
सदारहैसुखसंयमअपने बसुधाआदिकुंवारी ५

सो कबीरजी कहैहैं कि हेसंतो यह तरहकी जोसिद्धिहै सो योगिनको पियारिहै सो प्रथमतो सिद्धिही नहीं होइहै जो घुनाक्षर न्यायते सदासुख संयममें रहै औ सिद्धिभई समाधिलगी तातें फेरि वैसहीयोनीभये अथवा पुहुमीपति भये योगकरिकै हम यहशरीरके मालिक ह्वैगये मनादिक हमारे बशह्वै गये परंतु जब यहशरीर छूटिजाइहै और शरीरहोइहै तब वहसुधि सबभूलि जाइहै अरु जब पुहुमीपतिभयो आपनेको राजामानिलियो सो जबमरिगयो तबपुहुमी आनहीकी ह्वैजाइहै पृथ्वी कुमारिही रहिजाइहै ५

इतिबयासीवांशब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथतिरासीवांशब्द ॥

भूलावेअहमकनादाना । तुमहरदमरामहिंनाजाना १ बरबशआनिकै गायपछारा गलाकाटिजिउआपलिया । जीताजिवमुरदाकरिडारै तिसकोकहतहलालकिया २ जाहिमासुकोपाककहतहैं ताकीउतपतिसुनुभाई । रज बीरजसोंमासुउपानी मासुनपाकजोतुमखाई ३ अपनोदोषकहतनहिंअहमक कहतहमारेबड़ेनकिया । उसकीखूनतुम्हारीगर्दन जिनतुमकोउपदेश दिया ४ स्याहीगईसपेदीआई दिलसपेदअजहूं नहुआ । रोजानेवाजबांग क्याकीजैहुजरैभीतरबैठिमआ ५ पंडितवेदपुराणपढ़ै औ मोलनापढ़ैसोकुररा ना । कहकबीरवेनरक गयेजिन हरदमरामहिंनाजाना ६ ॥

भूलावेअहमकनादाना । तुमहरदमरामहिंनाजाना १
बरबशआनिकैगायपछारागलाकाटिजिउआपलिया ।
जीताजिव मुरदाकरिडारैतिसकोकहत हलालकिया २
जाहिमासुको पाककहत हैं ताकी उतपति सुनुभाई ।
रजवीरजसों मासउपानी मासुनपाकजो तुमखाई ३
अपनोदोषकहतनहिं अहमककहतहमारेबड़ेनकिया ।
उसकीखूनतुम्हारीगर्दन जिनतुमकोउपदेशदिया ४
स्याहीगई सपेदी आई दिलसपेद अजहूं न हुआ ।
रोजा नेवाज बांगक्याकीजै हुजरै भीतरबैठिमुआ ५
पंडित वेदपुराण पढ़ै औ मौलना पढ़ै सो कुररान ।
कहकबीरवेनरकगयेजिन हरदम रामहिंना जाना ६

यहपदको अर्थ स्पष्टहैहै अंतकेतुकको अर्थ करैहैं सब समेटिकै जेहरदम कहे हरसाइत श्वास श्वासमें रामको नहीं जानतेहैं ते नादान कहे बेवकूफ भूले अथवा हरदम कहे हरएकके दमकहे प्राणमें अंतर्यामीरूपते व्यापक परमपुरुष पर श्रीरामचंद्रको जे बेवकूफ नहीं जानतेहैं तेमोलना पंडित भूलिगये जो वे आपने हजुरामें बैठिकै रोजा नेवाज किया औ कुरान किताबपढ़ा औ जोपंडित आपने घरकीकोठरीमें एकांतबैठिकै बहुत वेदशास्त्रको पढ़ा तौकाकिया आखिर नरकहीमें गये भावयहहैं किकाहूको नसुन्यो कि बिना रामकोजाने मुक्तिहैगये ६ इतितिरासीवांशब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथचौरासीवांशब्द ॥

काजीतुमकौनकिताबबखाना । झंखतबकतरहौनिशिबासर मतिएकौ नहिंजाना १ शक्तिनमानेसुनतिकरतहौमैंनबदौंगाभाई । जोखोदायतुव सुनतिकरतहै आपुकाटिकिनआई २ सुनतिकरायतुरुकजोहोना औरतको काकहिये । अर्द्ध शरीरीनारिबखानै तातेहिंदूरहिये ३ घालिजनेऊब्राह्मण होना मेहरीकोक्यापहिराया । वोतोजन्मकिशूद्रिनिपरुसा सोतुमपांड़ेक्यों खाया ३ हिंदूतुरुककहांतेआया किनयहराहचलाई । दिलमेंखोजखोजुदि लहीमेंभिस्तकहांकिनपाई ५ कहैकबीरसुनोहोसंतो जोरकरतुहौभारी । कबिरनओटरामकीपकरी अंतचलापचिहारी ६ ॥

काजीतुमकौनकिताबबखाना ।
झंखतबकतरहौनिशिबासरमतिएकौनहिंजाना १

हेकाजी तुमकौन किताबको बखानत रहौहौ निशिबासर वही किताब को बकत रहौहौ अरु वाहीमें झंखतकहे धंकाकरत रहौहौ सो कुरानकिताब तात्पर्यते जोएक साहबको वर्णन करैहै ताको जो तुम्हारी मति न जानतभई तौ तुम कुरान किताबकी एकऊ वस्तु न जानत भये १ ॥

शक्तिनमानेसुनतिकरतहौ मैंनबदौंगाभाई ।
जोखोदायतुवसुनतिकरतितौआपुकाटिकिनआई २
घालिजनेऊब्राह्मणहोना मेहरीकोक्यापहिराया ।
वोतोजन्मकीशूद्रिनिपरुसा सोतुमपांड़ेक्योंखाया ३

सुनतिकिये जो मानतेहौ किहम मुसल्मानहैं औ यानहीं मानतेहौ कि शक्ति जोमाया सोई करैहै सो हेभाई मैंनबदौंगा जो खोदाय तेरीसुनति करतो तौपेटहीते कटी आउती २ सो हेपंडित आपनी आत्माको साहबकी शक्ति न मान्यो अरु ब्रह्म साहबको न जान्यो जनेऊ पहिरिकै तुमतो ब्राह्मण भये औ अपनी मेहरीको कहापहिरायोहै जातेवह ब्राह्मणीभई सोतिहारी स्त्रीतो जन्मकी शूद्रिनिहै सो परुसैहै औ हेपांड़े तुमखाउहौ ताते तुमकैसे ब्राह्मण भये ब्राह्मणतौ ब्रह्मजाने ते कहावैहै ३ ॥

हिंदूतुरुककहांतेआया किनयहराहचलाई ।
दिलमेंखोजुखोजदिलहीमें भिस्तकहांकिनपाई ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्माती एकईहै हिंदू तुरुक येशरीरके भेदहैं यहशरीर कहांते आयोहै औ यहराह कौन चलायोहै अर्थात् बीचैते आयेहैं बीचैते जायगे सोदिल में तुम खोजौ उसका खोज दिलहीमें है औ कौन भिस्त पायोहै अर्थात् खोदायका बंदाजो तिहारो जीवात्माहै जोहिंदू तुरुकमें एकईहै सोतिहार दिलहीमेंहै उसको जानो तो जानिपरै उसके मिलनको खोजकहे राह वही आत्माहै जब आपने स्वरूपको जानौगे तबवाको पावोगे ४ ॥

कहैकबीर सुनोहोसंतौ जोर करतुहैभारी।
कबिरनओटरामकीपकरीअंतचलापचिहारी ५

कबीरजी कहैहैं कि हे संतौ सुनौ यहजीव आपने छूटि जाइबेको बड़ो जोरकरै है कहे बहुत उपाय करै है नानामतनकरिकै तेकबीर कायाकेबीर जेजीवहैं ते और और मतनमें लगिकै राम अल्लाहकै ओट पकरतभये कहे और और जेमतहैं तेराम अल्लाह के ओट कैदेनवारेहैं तिनको पकरिकै अथवा कबीर जेजीवहैं तेरामकी ओट न पकरतभये अर्थात् आपनेजीवात्मा को साहबको बंदा न जानतभये राम अल्लाहको बिसरिगये ताते अंतमें पचिकै कहे मरिकै अरु वेमतनते हारिकै चलेगये जोयह मानिराख्यो तैं कि हमको स्वर्ग बिहिस्त होइ हम ब्रह्महोइगे सोएकऊ न भये जौनकर्म करिराख्यो तैसोई कर्म नरक स्वर्गनमें भोग करनलग्यो ५ इतिचौरासीवां शब्दसमाप्तम् ॥

अथपचासीवांशब्द ॥

भूलालोगकहैघरमेरा । जाघरवामेंफलाडोलैसोघरनाहीं तेरा १ हाथी घोड़ाबैलबाहनोसंगूहकियोधनेरा। बस्तीमेंसेदियोखदेरीजंगलकियोबसेरा २ गांठीबांधीखरचनपठयो बहुरिकियोनहिफेरा। बीबीबाहरहरममहलमें बीचमियाकोडेरा ३ नौमनसूतअरुझिनहिसूझै जन्मजन्मअरुझेरा। कहै कबीरसुनोहोसंतौ यहपदकरोनिबेरा ४ ॥

भूलालोगकहैघरमेरा । जाघरवामेंफूलाडोलैसोघरनाहींतेरा १

साहबको पार्षदरूपजोहै हंसस्वरूप आपनो सांचशरीर ताकोभूलेलोग कहैहैं कि यह मिथ्याजो स्थूल शरीर सो हमाराहै सो जाघर स्थूल शरीर में तैंफूला डोलैहै मेरो शरीरहै सो तेरा घर कहे शरीर नहीं है १ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथीघोड़ाबैलबाहनो संग्रहकियोघनेरा ।
बस्तीमेंसेदियोखदेरी जंगलकियोबसेरा २
गांठीबांधीखरचनपठयोबहुरिकियोनहिंफेरा ।
बीबीबाहरहरममहलमें बीचमियाकोंडेरा ३

बहुत हाथीघोड़े बैल इत्यादिक बाहनको संग्रहकियो परंतुजब तैंशरीर रूपी बस्तीतें खदेरि जाइगो कहे शरीर छूटिजाइगो तब जंगलमें कहीं पीपरकेतर भूतहैकै बसेरकहे बासकरैगो अरु वहशरीरहूको बाहर खदेरि कै श्मशानमें जारि देइंगे तब वह हाथी घोड़े औरहीके ह्वैजाइगे २ गांठी बांधिधर्यो अरु खर्च न पठयो कहेपुण्य न कियो जोवह लोकमें मिलिकै बहुरिकै फेरा न कियो कहे यह शरीरमें नहीं पावैहै सो बीबीजोहै साहब कीदई सुरति सो बाहरहै कहे संसारमुक्त ह्वैरहीहै औ हरमकहे लौंड़ीजो है माया सो महलमेंहै कहे सब शरीरनमेंहै ताके बीचमें मियाजोहै जीव ताको डेराहै ताको वहमाया घेरेहै ३ ॥

नौमनसूतअरुझिनहिंसुरझै जन्मजन्मअरुझेरा ।
कहैकबीरसुनो होसंतो यह पदकरो निबेरा ४

सो नौमनकहे नित्यही नवीनजो मनहै अर्थात् मनके दिये नानाशरीर होयहैं सो नानाकर्म नानामत जेसूतहैं तिनमें अरुझिकै सुरझैनही है सो कबीरजी कहैहैं कि हेसंतौ यहपदको निबेराकरो कहे पांचौशरीरमें अरुझो जोहै मन ताते भिन्नहोउ तौतुम शरीरन ते भिन्नह्वैजाउ ४ इतिपचासीवां शब्दसमाप्तम् ॥

अथछियासीवांशब्द ॥

कबिरातेरोघरकँदलामें याजगरहतभुलाना । गुरुकी कहीकरतनहिंकोई अमहलमहलदेवाना १ सकलब्रह्ममेंहसकबीराकागनचांचपसारा । मनमत कर्मधरेसबदेही नादबिन्दुबिस्तारा २ सकलकबीराबोलैबानी पानीमेंघर छाया । लूटिअनंतहोतिघटभीतर घटकामर्मनपाया ३ कामिनिरूपीसकल कबीरा मृगाचरिन्दाहोई । बड़बड़ज्ञानीमुनिवरथाके पकरिसकैनहिंकोई ४ ब्रह्मावरुणकुबेरपुरन्दर पीपापूहलदचाखा । हिरणाकुशनखउदरबिदारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिनहुंककालनराखा ५ गोरखऐसोदत्तदिगम्बर नामदेवजैदेवदासा । उनकी खबरिकहतनहिकोईकहांकियेहैंबासा ६ चौपरखेलहोतघटभीतर जन्मके पांसाढारा । दमदमकीकोइखबरिनजानै करिनसकैनिरबारा ७ चारिविधा महिमंडरचोहै रूमसामबिचडिल्ली । ताऊपरकछुअजबतमाशा मारैहैंयम किल्ली ८ सबअवतारजासुमहिमडल अनतबडोकरजोरे । अद्भुत अगम अथाहरचोहैईसबशोभातोरे ९ सकलकबीराबोलैबीराअजहूं होहुंसियारा। कहकबीरगुरुसिकिलीदर्पण हरदमकरोपुकारा १० ॥

कबिरातेरोघर कँदलामें या जगरहत भुलाना ।
गुरुकीकहीकरतनहिकोइअमहलमहलदेवाना १

कबीरजी कहैहैं कि हेकबिरा कायाके बीर जीव तेरोघरतो कंदलामेंहै कहे आनदको कदकहे सारांगजोहै साहबको धाम तहांहै तेरोघर या जगत् में नहीं है तैंनाहक भुलान रहैहै यहां गुरुकहे सबते श्रेष्ठ जे परमपुरुषपर श्रीरामचद्र ते कहैहैं कि अबहूं जोमोको जानौ तौ मैं कालते छोड़ायलेउं तिनको कह्यो कोई न मानिकै अरु आनंदको कद उनको धाम छोड़िकै अमहलमहलकहे जोकुछवस्तु नहीं है ऐसो जोहै धोखाब्रह्म तामें अरुकोई मायाके प्रपचमें देवाना ह्वैरह्योहै १ ॥

सकल ब्रह्ममें हंसकबीरा कागनचोंचपसारा ।
मनमतकर्म धरैसबदेही नादबिन्दुबिस्तारा २

हेहंसकबीर कायाकेबीर जीवजे साहबकोब्रह्मही कहैहैं तिनकोकहिओ कागन कैसो चोंचको पसारिबोहैं जैसे कागनके आगेजो दूधभात औ आमिषधरिदेउतौ दूधभात न खाय आमिषहीखाय तैसेसाहब पुकारतईजायहैं कि तुम मेरेपास आयौ मैं तुमको हसस्वरूपदेउं ताको छोड़िकै जीवमाया ब्रह्मके धोखामेंलग्यो कागई होइहै नानाकर्मके बासननते शरीर छूटतमें जहांजहां मनको मतहोइहै कहे जहांजहां मनजाइहै तहां तहां सब देह धरैहै नादबिंदुके बिस्तारते सोनादबिंदुको बिस्तार लिखिआयेहैं २ ॥

सकलकबीराबोलैबानी पानीमोंघरछाया ।
लूटिअनंतहोतिघटभीतरघटकाममंनपाया ३

अरु ज्ञानीजे सब जीवहैं ते यह बाणी बोलैहैं कि यह शरीर पानीको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर छायाहै कहे पानीको बुल्लाहै न जानो कब बिनशि जाय कहे छूटि जाय सो मखते तो यह कहैहै अरु घटकहे शरीरके भीतर अनंतकहे बिना अंतको जोहै साहब ताकीलूटि होइजाइहै ताको नहीं देखैहै यह आत्मा साहबकोहै तोको भुलाइकै औरे औरे मतनमें लगाइ देइहै वाको मर्म नहीं पावैहै ३॥

कामिनिरूपीसकलकबीरामृगाचरिंदाहोई।
बड़बड़ज्ञानीमुनिवरथाके पकरिसकैनहिं कोई ४

सब कबीर जीवनके शरीर कामिनिरूपीहै कहे मृगीरूपीहै तामेंजोचलै सो चरिंदा कहावैहै सोचरिंदाकहे चलनवारो जोहैमन सोमृगाहै जबयह जीवात्माको यमदूत एकपुतरा देखावैहै तब वहपुतरामें मनोमय जोलिंग शरीरहै सो जातरहैहै अरु वहीकेसाथ जीवपूर्वेष करिजाइहै तब यमराज नानाकर्म भोगकरावैहै जौने शरीरमें मनलोभ्यो मरतमें वाको स्मरण भयो सोई शरीर कर्म भोगकरिकै धारणकियो सो मारितो यहभांतिते जायहै वह मंत्रको औ आत्माके स्वरूपको कोई न पकरिपायो अर्थात् कोईनजान्यो४॥

ब्रह्मावरुणकुबेरपुरंदरपीपाप्रह्लदचाखा।
हिरणाकुशनखउद्रबिदारातिनहुंककालनराखा ५
गोरखऐसोदत्तदिगम्बर नामदेव जयदेवदासा।
उनकीखबरि कहतनहिंकोई कहांकियेहैंबासा ६

येचारि तुकनमें जिनको कहि आयेहैं तिनको काल जब खाइलियोहै कहे इनके शरीरजब छूटिगयेहैं तब ये कहां बास कियोहै यहकोई खबरिन जानतभयो सोजहां गयेहैं अरु जहांकेगये नहीं आवैहैं तौनेलोककोमूढ़ जीव न जानतभये इहां नरसिंहोजीको लिख्यो तामेंधुनियहहै कि उपासक आपने आपने उपास्यनकेसाथ साहबहीके लोकजाइहै उपास्य उपासक दोऊ जहां परममुक्त अवस्थामें जाय सो वह साहबके लोकको ये वद्धबि-षयीजीव कैसे जानैं ६॥

चौपरखेलहोत घटभीतर जन्मके पांसाढारा।
दमदमकीकोइखबरिनजानैकरिनसकैनिरुवारा ७

मनबुद्धिचित्त अहंकार ये अंतःकरण चतुष्टयहैं सोई चौपरिहै ताकोखल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटकेभीतरह्वैरह्योहै इनहीं के योगते नानाजन्म होइहैं सोई पांसाढारिबो है सोऽहमकहेआपने श्वासश्वासकी खबरितोकोई जानैनहीं है किआवत जातमें रकारमकार विनाजपे कब अंतःकरण शुद्धह्वै सकैहै अरुको निरुवार करिसकैहै अर्थात्कोई निरुवारनहीं करिसकैहै अर्थात् या नहीं जानै है कि हमारो जीवात्मा कहांजपैहै रकारमकार जीवात्मा सदाजपैहै तामें प्रमाण ॥ रकारेणवहिर्याति मकारेणविशेत्पुनः । रामरामेतिवैमंत्रं जीवो-जपतिसर्वदा ७ ॥

चारिदिशामहिमंडरचोहै रूमसामबिचडिल्ली ।
ताऊपरकुछु अजबतमाशा मारेहैयमकिल्ली ८

महिमंडल जोहै शरीर तामें नाभिहृदय कंठ त्रिकुटी येचारिदिशा रचत भये अरुरूमकहे सहस्रदल कमलहै अरुसामसुरति कमलहै तौनेसुरति कमलके बीचमें डिल्लीहै परंतु गुरूको स्थान तास्थानके ऊपर अजब तमाशाहै सो कौनयोगी प्राण चढ़ाइकै सहस्रदल कमललों जाइहै कोई परमयोगी प्राणचढ़ाइकै सुरति कमललों जाइहै परमपुरुष स्थानकेऊपर जहां अजबतमाशाहै तहांकोई नहीं जाइसकैहै काहेते कि यमकिल्लीमारे है कहे दशवांदुवार बंदकियेहै अजबतमाशा वहकैसे देखै सो कहैहैं कियह ब्रह्मरंध्रते साकेतलोक जाको कहैहैं परमपुरुषपर श्रीरामचंद्रको धाम वही साकेत लोकको दशवां स्थान फकीर लोग जाहूत कहैहैं तहांलों ब्रह्म ज्योतिकी डोरि लगीहै वहीडोरीको मक्रतार कहैहैं सो वह मक्रतार सुषु-म्णामें लगीहै जब परमगुरु रामनामबताईहै तबवही सुषुम्णाह्वैकै मक्र-तारकी डोरीह्वैकै साहब के लोकजायहै तहां अजबतमाशा कौन है कि उहांके त्रिगुण गुल्म लतादेखे तो पंचभौतिकसे परेहै पैपंचभौतिक नहीं है आनंदरूपहै ८ ॥

सबअवतारजासुमहिमंडलअनँतखड़ोकरजोरे ।
अद्भुत अगम अथाह रचोहै ईसब शोभातोरे ९

सकल अवतार औ ईश्वर अनंतजिनके आगेकरजोरे खड़ेहैं वहसाहब लोककेसोहै अद्भुतहै कहेआश्चर्यहै बचनमें नहीं आवैहै औ अगमहै कहे उहां काहूकीगमनहीं है औ अथाहहै कोई वर्णनकरिकै थाहनहीं पायो कि यतनेहै सोहे जीव यह सब शोभा तोरे साहबकीहै तेरे देखिबे योग्यहै काहेतेकि साहबो दुभुजहै औतैंहूं दुभुजहै औरतोसब ईश्वर अवतार कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अष्टभुज कोई चतुर्भुज मत्स्यकूर्म इत्यादिकहैं अथवा साहबके लोक में जे ईश्वर अवतार आदिकहैं तेसबआपनीशोभाको मंडल तोरेहैं अर्थात्उनकी शोभा साहबकी शोभाते मंददेखी परैहै ६॥

सकल कबीराबोलैबीरा अजहूंहोहुशियारा।
कह कबीर गुरसिकिली दर्पण हरदमकरोपुकारा १०

हे सबकबीरौ कायाकेबीर जीवौ वही बीरालेउ अर्थात् परमपुरुषपर जे श्रीरामचंद्रहैं तिनको बीरालेउ अजहूं हुशियारहोउ जे मतनमेंगुरुवा लोग समुझाइसमुझाइ लगाइदियेहैं तिनमतनमें जबभर तुम्हरे रहौगे तबभर तुम्हारोजन्ममरणन छूटैगो ताते मतनको छोड़िदे सुरति कमलमें जे परमगुरुहैं तेसिकिलीगरहैं तुम्हारे अंतःकरण साफकरिबेको तेराम बतावैहैं सोरामनाम सुनिकै हरदम पुकारकरो तबसाहब के इहांपहुंचो अरुसबअवतार ईश्वरउनके दुवारे हाथजोरे खड़ेहैं तामेंप्रमाण शिवसंहितामें हनुमानजीप्रति अगस्त्यजी कहैहैं॥ आसीनंतमयोध्यायांसहस्रस्तम्भमंडिते। मंडपेरत्नसंज्ञेचजानक्यासहराघवम् ॥ मत्स्यकूर्मकिरिनैको नारसिंहोप्यनेकधा। वैकुंठोपिहयग्रीवोहरिःकेशववामनौ॥यज्ञोनारायणोधर्म पत्रोनरवरोपिच। देवकीनंदनःकृष्णोवासुदेवोबलोपिच॥हृषिकेशोमधून्मा धवोविदोमाधवोपिचावासुदेवोपरोनंतःसंकर्षणइरापतिः॥ प्रद्युम्नोप्यनुरु द्धश्चव्यूहास्सर्वेपिसर्वदारामसदोपतिष्ठ तेरामदेहाव्यवस्थिताः॥ एतैरन्यै श्चसंसेव्योरामोनाममहेश्वरः। तेषामैश्वर्यदातृत्वात्तन्मूलत्वान्निरीश्वरः॥ इंद्रनामासइंद्राणांपतिहसाक्षीगतिःप्रभुः। विष्णुस्स्वयंसविष्णूनांपतिर्वेदांत कृद्विभुः॥ ब्रह्मासब्रह्मणांकर्तृप्रजापतिपतिर्गतिः। रुद्राणांसपतीरुद्रोरुद्र कोटिनियामकः॥ चंद्रादित्यसहस्राणिरुद्रकोटिशतानिच। अवतारसह स्राणिशक्तिकोटिशतानिच॥ ब्रह्मकोटिसहस्राणिदुर्गाकोटिशतानिच। महा भैरवकालादिकोट्यर्बुदशतानिच॥ गंधर्वाणांसहस्राणिदेवकोटिशतानिच। सभांयस्यनिषेवतेसश्रीरामइतीरितः॥ इति॥ औकबीरहूजीकोप्रमाण॥ जहंसतगुरुखेलैं ऋतुबसंत। तहंपरमपुरुष सबसाधुसंत॥ वहतीनलोकते भिन्नराज। तह अनहदधुनि चहुंपासबाज॥ दीपक बरैजहं निराधार। विरलाजन कोई पावपार॥ जहंकोटि कृष्णजोरेहुहाथ। जहंकोटिविष्णु नावैंसुमाथ॥ जहंकोटिनब्रह्मापढ़पुरान। जहंकोटिमहादेव धरैंध्यान॥ जहंकोटिसरस्वती करैंराग। जहकोटिइंद्र गावनेलाग॥ जहंगणगंधर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनिगननिजाहिं । सोतहंवां प्रगटआपुआहिं ॥ तहंचोवाचंदनअरुअबीर। तहँपुहुप बासभरि अति गँभीर ॥ जहं सुरति सुरंगसुगंधलीन । सबवही लोकमें बासकीन ॥ मैंअजरदीप पहुंच्योसोजाइ । तहं अजर पुरुषके दरशपाइ ॥ सोकहकबीर हृदयालगाइ । यहनरकउधारन नामजाइ १० इतिछियासीवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथसत्तासीवांशब्द ॥

कबिरा तेरोघर कंदलमें मनैअहेराखेलै ।बपुवारी आनंदमीर्गा रुचीरुची शरमेलै १ चेततरावल पावनखंडा सहजहिमूलै बांधै।ध्यान धनुषधरिज्ञान वानबनयोग सारशरसाधै २ षट्चक्रबेधिकमलबेध्योजबजाइउज्यारीकीन्हा कामक्रोध अरुलोभमोह येहांकिसाउजन दीन्हा३ गगनमध्यरोंक्योसोद्वा । राजहांदिवसनहिंराती।दासकबीरजायसोपहुंच्योसबबिछुरेसंगसँघाती४ ॥

कबिरा तेरोघर कंदलमें मनै अहेराखेलै ।
बपुवारी आनंदमीर्गा रुचीरुची शरमेलै १

कबीरजी कहैहैं,किहे कबीर कहेकायाकेबीर जीवतेरो घरकंदलामेंहै कहे आनंदको कंदकहे सारजो साहबकोधामहै तहांहै जो कहोससारकैसे भयो तौ तेरो बपुशिकारी बपरीजोहैनानाशरीर तेईवारीहैशिकारीजहांहांकैहैसो वारीकहावैहै तहांजाइकै विषयानंद ब्रह्मानंदजेहैं मृगाको शिकार खेलैहैं कोई विषयानंदरूपमृगामें वृत्तिशरमारि भोगकरैहैंकोई शिकारी मनब्रह्मानंदरूप मृगाको वृत्ति शरमारि भोगकरैहैं १ ॥

चेततरावल पावनखंडा सहजहि मूलैबांधै ।
ध्यानधनुष धरिज्ञानवानबन योगसार शरसाधै २
षट्चक्रबेधि कमलबेध्योजब जायउज्यारी कीन्हा ।
कामक्रोध अरुलोभमोहये हांकिसाउजन दीन्हा ३

जोशिकार खेलिबो कैसे छूटै यामनको तौ रावल कहेसबकेराजा ताके पावन कहेपायनको चेतकरतकहे स्मरण करत अथवा पावन कहेपवित्रहै कैषंडकहे नपुंसक ब्रह्म तद्रूपजो जीवसो सहजसमाधि लगाइकै मूलबंध करै यहै ध्यानजोहै धनुषतौनेको धरिकै साहबमें आत्माको लगायदीबोजो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाणु यही योगसाररूप शरसाधे २ सोईयोग बतावैहैं जेहठ योगकरैहैं ते कुंडलिनी उठायके छइउचक्र बेधैहैं इहांकुछु कुंडलिनी उठाइबेको पूयो-जननहो है वहजो ब्रह्मज्योति कारकी मूलाधार चक्रतेलै ब्रह्मांडह्वै साकेतमें लगीहै सो छइउचक्र को बेधिकै लगी है सुषुम्णा नारीह्वैकै ताज्योतिरूपी डोरीमें गुरूजो युगुति बतावैहै तौनै युगुति ते सुरतिके साथजबजीव को साजिदियो तब छइउचक्र को आपही वह ज्योति बेधैहै सोवह ज्योति के भीतरह्वैकै षट्चक्र बेधिकै सहस्रदल कमलको बेध्यो तबउहां उजियारी देख्यो जाइ ब्रह्मप्रकाशकी तब कामक्रोध लोभमोह मदमत्सरईजेसावजहैं तिनको हांकिदीन्ह्यो कहे दूरिकै दीन्ह्यो ३ ॥

गगनमध्य रोंक्योसो द्वाराजहां दिवसनहिंराती।
दासकबीरजायसोपहुंच्यो सबबिछुरे संगसँघाती ४

जहां सुरति कमलमें परमगुरु रकारमकार कहैहैं औदशौद्वारबंदहैंतहां न दिवसहै न रातिहै वह प्रकाशरूपब्रह्मईहै सोउहां परमगुरुते रामनाम सुनिकैवहीनामते दशवौंद्वार खोलिकै वहीडोरीह्वैकै दासजो कबीरजीव है सो परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के लोक को पहुचेजाइहैं तब संग के संघाती जेहैं चारोशरीर अरु प्रकाशरूप ब्रह्मजोहै कैवल्य शरीर ताहूको बिछोहह्वैजाइहै अथवा कबीरजी कहैहैं कि मैं जो हौं साहबको दास सो अनिर्वचनीय पार्षदशरीर जोहै हंसशरीर ताको पाइकै वोहीडोरी ब्रह्म ज्योतिह्वैकै अनिर्वचनीयजोहै साहबको धाम तहांपहुच्योजाइ तहांहेजीवो तुमहू पहुचौ यहभ्रममें काहेपरेहो तुमतौ साहबके आनदकंद धामकेहौ साहबकेदास ताते रहित और जौन तुममानौहो सो तुमनहीं हौ ४ इति सत्तासीवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथअट्ठासीवांशब्द ॥

गुरुमुख ॥ सावजनहोइ भाईसावजनहोइ। बाकीमासु भखैसबकोइ १ सावजएक सकलसंसारा अबिगति बाकीबाता। पेटफारिजो देखियेरे भाई आहिकरेजनआता२ ऐसीबाकी मासुरेभाई पलपलमासुबिकाई। हाड़गोड़ लै घूर पँवारै आधिधुवांनहिंखाई ३ शिरओ सींग कछूनहिंवाके पूंछकहां वहपाई। सबपंडित मिलि धंधेपरिया कबिर बनौरीगाई ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावजनहोइ भाईसावजनहोइ। वाकीमासु भखैसबकोइ १

साहब कहैहैं कि जेहि शब्दब्रह्ममें तुम लगेहौ औ तुमको वही भुलाय दियो सोसाउजन होइ तौनेशब्दको तात्पर्य्य तुमनहीं बूझो वहीके मांस को तुम सबभक्षौहौ कहेबाणी सबकहौहौ औ वहीमांस सबजगत्है ताही को भक्षौहौ कहेभोग करौहौ अरुवाको तात्पर्य्य सत्यपदार्थ जोमैहौं ताको नहीं जानौहौ संपूर्णबाणीको बिस्तार असत्यहै मैंही सत्यहौं १ ॥

साउजएकसकलसंसारा अबिगति वाकीबाता।
पेटफारि जो देखियेरेभाई आहिकरे जनआता २

सोवाको पेटफारिकै जोदेखिये अर्थात् जोवाको बिचारिकै देखिये तात्पर्य्यतेतो जोतुम बिचार करिराख्योहै कि शब्दब्रह्मकेअर्थको सारांशकरेज निर्गुण ब्रह्महै सोनहीं है वेदतो तात्पर्य्यते मोको वर्णनकरैहै अरु त्रिगुण माया आंतहै सो वाकीबात अबिगतिहै कहे अव्यक्तहै काहूके जानिबेयोग्य नहीं है जोमोको जानैहै सोई वह साउजको जानैहै २ ॥

ऐसी याकीमासुरे भाई पल पल मासुबिकाई।
हाड़गोड़लै घूर पंवारै आगिधुवां नहिंखाई ३

पलकाकहांवैहै सो वह शब्दब्रह्मकी मासुजोहैबाणी सोहेभाइउ ऐसी है किपलपलकइ टकाटकाको बिकाइहै अर्थात् को बिकाइहै तामेंप्रमाण॥ कबीरजीको चौरासीअंगकीसाखी॥ गलीगली गुरुवाफिरैं दिक्षा हमरीलेहु। कीबड़ौ कोऊ बरौ टकापरदनीदेहु॥थोरेथोरे अक्षरकेमंत्र गुरुवालोग देइहैं औशिष्यनसों धनलेइहैं अरु केवल शब्दब्रह्मैतेमुक्ति नहीं होइहै तामेंप्रमाण॥ शब्देब्रह्मणिनिष्णातो ननिष्णायात्परेयदि। श्रमस्तस्यश्रमफलह्यधेनुमिवरक्षत इतिभागवते॥सो जबवेगुरुवामत्रदियो तबवाणीको जोहाड़गोड़ रहै ज्ञानकांड कर्मकांड ताकोघूरपवांरिदियो कहे ज्ञानकांडी कर्मकांडी घूर हैं तहांकेकिदियो उपासनाकांडी वहमत्रदैकै उपासनामें लगाइदियो तहां मंत्र•यो सोउन न जप्यो जातेज्ञानाग्नि उत्पन्नहोइ अरुभ्रमजरै औधुवां जेहैं कल्मष ते निकसिजाय सो बाणीरूपी वहमासु ज्ञानाग्निते पकाइनहीं गई अर्थात् न वह मंत्रको अर्थ न जान्यो औ न अभ्यासकियोबह अज्ञानरूपीधुवां गुँगुआते रह्यो निर्द्धूम न भई ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिर औसींग कछूनहिं वाकेपूछ कहां वहपाई ।
सबपंडित मिलिधंधेपरिया कबिर बनौरीगाई ४

औ शिरजेहैं नित्य शब्द औ कार्य शब्दतेवाकेनही हैं औचारि जे सींग हैं नाम धातु उपसर्ग निपात तेवाके नही हैं काहेते कि वाको अनिर्बचनीय कहेहैं तौ पूछ जोहै ब्रह्म है जैबोमोक्ष ताको कहांपावैगो अर्थात् जहां भर बचनैमें आवैहै सोसब मिथ्याहै जोकहो मोक्षऊको रहिजाइबो न कह्यो तौ रहिगयो तो शब्दतो तात्पर्य्य करिकै वर्णनकरैहैं कि निर्गुण सगुणके परे परमपुरुष जोमैं ताको सदाको अक्षयहजीवहै यह जोबिचार करै कि हैंउनकोहौं तोबद्धही नहीं है मुक्तकाहेते होइ मुक्तही बनोहो बद्ध मुक्ततो कथनमात्रहै तामेंप्रमाण ॥अज्ञानसञ्ज्ञौभवबंधमोक्षौ द्वौनामनान्यौस्तऋतज्ञ भावात् । अजस्रचिन्त्यात्मनिकेवलेपरे विचार्य्यमाणेतरणाविवाहनी इति भागवते॥अरुतात्पर्य्यकरिकै शब्दयहमोही को वर्णनकरैहै सोभागवतादि-कनमें प्रसिद्ध सुनैहै तऊमूढ़ नहीं मानैहै॥ शब्दब्रह्म परब्रह्ममभोभेणाश्वती तनू॥अपनेअपनेअर्थबनाइकै गाइरहेहैंमोकोनहीं जानैहैं सबपण्डितधंधेमें परिरहेहैं नानामत बनाइरहेहैं तिनकी बनौरीको कबीर जेहैं जीव उनके सब शिष्य ते गावैहैं अर्थात् अपने अपने आचार्यनके मतमें आरूढ़ ह्वैकै जोऔर कोई कहैहै तौलड़ैहैं अरुपारिष करिकै सबवेदनको तात्पर्य जो मैंहौं ताको नही जानैहैं शब्दब्रह्म तात्पर्य करिकै परमपुरुषपर जो मैंहौं ताहीको वर्णनकरैहैं ४ इतिअट्ठासीवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथनवासीवांशब्द ॥

सुभागे केहिकारण लोभ लागे रतन जन्मखोये । पूरबजन्म भूमिके कारणबीजकाहे को बोये १ पानीसे जिनपिंडसाजे अगिनिहिकुंड रहाया। दशमासमाताकेगर्भकढ़ि बहुरिलागिलीमाया २ बालकसेपुनिवृद्धहुआहै होनीरहीसोहोये । जबयमएहैंबांधिलैजैहैं नयनभरीभरिरोये ३ जीवनके जिनआशारख्यो कालगहेहैश्वासा । बाजीहैसंसारकबीरा चितचेतिठारो पासा ४ ॥

सुभागेकेहिकारणलोभलागे रतनजन्मखोये ।
पूरबजन्मभूमिके कारण बीजकाहेको बोये १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानीसेजिनपिंडैसाजे अगिनिहिकुण्डरहाया।
दशैमाससमाताकेगर्भकढ़ि बहुरिलागिलीमाया २
बालकसे पुन वृद्धहुआहै होनी रहे सो होये।
जबयम ऐहैं बांधिलजैहैं नयन भरी भरिरोये ३
जीवनकै जिन आशाराख्यो कालगहेहैश्वासा।
बाजीहैं संसारकबीरा चित चेति ढारोपांसा ४

हेसुभागे जीव तैंतो मेरोहै यह संसारमें जोतैंलोभ कियो सोकौने कारण कियो काहेते कि आपने दुखःपाइबेको कोई उपाइ नहीं करैहै जैसे मनादिक करिकै ससारमें परिगयो तैसेजो मेरो स्मरणकर तोमैं हसस्वरूप देहगें तामें स्थितह्वैकै मेरेधामको पहुचते सोतैं रत्न जो है यह मानव जन्म ताको धोइडारचो पुरुष जन्मके भूमिकाकेकारण कहे पूर्व जन्ममें जैसे कर्म करिराखेहैं तैसे सुखदुःख यहजन्म पावैहै अरुजोयहजन्म करैहै सो वहजन्ममें दुःखसुख पावैगो सो आंखिनतो देखिलियेओईसुखदुःख के कारणरूप बीजतैं काहेकोबोये और सब पदनको अर्थ स्पष्टईहै ४॥
इतिनवासीवांशब्दसमाप्तम् ॥

अथनब्बेशब्द ॥

गुरुमुख ॥ संतमहंतौसुमिरौसोई। जोकालफांससों बाचाहोई १ दत्तात्रेयमर्मनहिं जाना मिथ्यास्वादभुलाना। सलिलामथिकैघृतकोकाढ्योताहि समाधिसमाना २ गोरखपवनरखैनहि जानायोगयुक्तिअनुमाना। ऋद्धिसिद्धि संयमबहुतेरा पारब्रह्मनहिं जाना ३ वशिष्ठशिष्टविद्यासपूरण रामएसेसिव साखा। जाहिरामकोकरताकहिये तिनहुंकोकालनराखा ४ हिंदूकहैहमैंलै जरबैतुरुककहैमोरपीर। दूनौआयदीनमोंझगरैं देखैहंसकबीर ५॥

आगेकेपदमें कहिआये किकाल श्वासा गहेहै सो चेति पांसा ढारो कहे विचारि विचारि कामकरो सोईविचार बतावैहै॥

संतमहंतौसुमिरौसोई। जोकालफांससोंबाचाहोई १

साहबकहैहैंकिहेसंतमहंतौताकोसुमिरणकरोजोकालफांसतेबचोहोइ १

दत्तात्रेयमर्मनहिंजाना मिथ्यास्वादभुलाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलिलामथिकैघृतकोकाढ्योताहिसमाधिसमाना २

जोकहो दत्तात्रेय आपनेको ब्रह्ममानिकै ब्रह्महीह्वैगये तेतो वाके मर्मको कहे ज्ञानको जान्योहै सो प्रथम दत्तात्रेयऊनहीं जान्यो काहेतेकि वहतो धोखा मिथ्याहै सो तेऊ मिथ्यास्वादमें भुलाइगये यह न बिचार्योकिजौन बिचार करत करत रहिजायहै सो मेरो स्वरूप परमपुरुषपर श्रीरामचंद्रको दासहै जबवे बिग्रहदेइहैं आपनो तब उनके पास जाइहै सो यहतो न जान्यो पानीकोमथिकै घृतकाढ्यो वहीधोखा ब्रह्मकी समाधिमें समाइरह्यो लोकहूं पानिहूते घृत निकसैहै उनके हाथ धोखईलग्यो २ ॥

गोरखपवनरखैनहिंजाना योगयुक्तिअनुमाना ।
ऋद्धिसिद्धिसंयमबहुतेरा पारब्रह्मनहिंजाना ३
बशिष्टशिष्टबिद्यासंपूरणरामऐसेशिखशाखा ।
जाहिरामकोकरताकहिये तिनहुंकोकालनराखा ४

अरु योग युक्तिको अनुमान करिकै गोरख पवनराखै नहीं जान्यो कहे प्राणचढ़ावै नहीं जान्यो काहेते कि ऋद्धिसिद्धि संयममें लगिगये ब्रह्मके पारजे साहबहैं तिनको न जान्यो ३ औ बशिष्टजेहैं संपूर्ण बिद्यामें श्रेष्ठ तिनके राम ऐसेकहे श्रीरामचद्रहीके बरोबर रघुबंशी जिनमेंशिष्य शाखा भये तिनहूंको कालनहीं राख्यो अर्थात् यह शरीर उनहूंको न रह्यो औ राजनमें जिनको रामको कर्ता कहैहैं किश्रीरामचंद्रको जेउत्पत्ति कियोहै ऐसे दशरथौको काल न राख्यौ इहां गोरख आदिक योगी दत्तात्रेयादिक ज्ञानी बशिष्ठआदिक ब्रह्मर्षि ईसबते श्रेष्ठहैं याते संयोगी ज्ञानी ब्रह्मर्षि पृथ्वीके आइगये औ दशरथ महाराजको श्रीरामचंद्रके बिछोहहोत प्राण छूटिगयो सोयेसब राजर्षिते श्रेष्ठहैं ताते दशरथमहाराजके कहेसब राजर्षि पृथ्वीके आय गये तिनहूंको काल न राखतभयो अर्थात् शरीरधारी कोईनहीं रहिजाइहै कोई योगकरि जोजियो तो ब्रह्माके दिनभर जियो महाप्रलयमें जबब्रह्माको नाश ह्वैजाइहै तबब्रह्मांडई नहीं रहैहै औरकोई कैसेरहै सो हंस समाधि लैकै मिलतहै ४ ॥

हिंदूकहै हमैंलैजरबै तुरुक कहैमोरपीर ।
दूनौ आइदीनमोंझगरैं देखै हंसकबीर ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाको हंसस्वरूप साहबदेइहै सोहंसस्वरूपमें स्थितहैकै साहबके पास जाइहै सो साहब कहैहैं कि जो मोकोजानै तौमैं हंसस्वरूपदेउं तामेंस्थित ह्वैकै मेरेपास आवैसोमोकोतो जानैनही है हिंदूकहैहैंकि हमवहज्ञानाग्नि कैकै सबकर्म जारिदेइंगे ब्रह्महै जाइंगे औमुसल्मान कहैहैंकि पिरानजा-हिरजो मक्काहै तहां हमारोपीरहै हमारे खांमिंदहैं ते हमारे कर्मसबजारि देइंगे फिरिदोनौं आइदीनमें झगरैहैं वेकहैहैंकि तुम्हारा खोदाय झूठाहै वे कहैहैं कि तुम्हारा ईश्वरझूठाहै सो जीवात्माती मेरोबंदाहै सो आपनेस्व-रूपको जानिकै मोको जानैनही हैं आपने आपने अनुमानकरि आपने आपने खाबिंद बनाइलियेहैं तिनको झगरा देखताकौनहै जोसबकेऊपर होइहै सो साहब कहैहैं कि जिनको मैं हंसस्वरूप दियोहै मेरेपास पहुंचे हैं तेसबके ऊंचेह्वैकै उनको झगरादेखतेहैं औ हंसतेहैंकि सांच साहबतो एकईहैंताको जानैनही हैं आपुसमें झगरतेहैं ५ इतिनब्बेशब्दसमाप्तम्॥

अथइक्यानबेशब्द ॥

जोदेखासो दुखियादेखा तनधरि सुखीनदेखा। उदयअस्तकी बातकहत हौं ताकर करहुबिबेखा १ बाटेबाटे सबकोइ दुखिया क्यागिरही बैरागी। शुकाचार्य दुखहीके कारण गर्भमायात्यागी २ योगीदुखिया जंगम दुखिया तापसको दुखदूना। आशातृष्णा सबघटव्यापै कोईमहल नहिंसूना ३ सांच कहौतौ सबजगखीझै झूठकहो नहिंजाई। कहकबीर तेईभेदुखिया जिन यहराह चलाई ४ ॥

जोदेखासोदुखियादेखा तनधरि सुखीन देखा।
उदयअस्तकी बातकहतहौंताकरकरहु बिबेखा १

जाकोसंसारमें देखैहैंताकोसबको दुखियेदेखैं तनधरिकै सुखिया काहू को नहीं देखा काहेतेकि गर्भतेजोजीवनिकस्योतोमाया लपटिजातीहै सो उदयअस्तक हेसबसंसारकीबातकहौहौं अस्ताकरतुमबिबेककरतजाउ१ ॥

बाटेबाटे सबकोइ दुखिया क्यागिरही बैरागी।
शुकाचार्य दुखहीके कारण गर्भमायात्यागी २

आपने आपने बाटमें कहे आपनेआपने मतमें सबको दुखियादेखतेहैं क्यागिरही क्याबैरागी अर्थात् त्रिगुणके मतमें सबपरेहैं मायाको दुखकोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं छोड़ेहै जो जेतोपायोहै सोवहीको सांचमानिकै सांचपदार्थको नहीं जानेहै दुखहीको कारण शुकाचार्य गर्भमेंमायाको त्यागिदियो शुकाचार्य गर्भमें बारहबर्षके ह्वैगये सो गर्भतेननिकसैं कहैं कि जोहम निकसैंगे तौ हमको मायालगिजाइगी तबब्रह्मादिक देवता सबजुरे आय न निकसे तब भगवान आइकह्यो किबरदाके सीं गर्भ सरसौं धरिदेइजबभरसरसौंसी गर्भ रहैहै यतनेकाल भरमाया हमखैंचेलेइहै निकसिआवो सोशुकाचार्यनिकसे नारासहित बनको चलेगये साहबको मिलेजाइ २ ॥

योगीदुखिया जंगमदुखिया तापसको दुखदूना ।
आशातृष्णा सबघट व्यापै कोई महल नहिंसूना ३
सांचकहौं तौसबजग खीझै झूठकहो नहिंजाई ।
कहकबीर तेईभे दुखिया जिनयह राहचलाई ४

योगीजंगमसब दुखियाहै अरुतापसको तो दूनदुखहै काहेतेकि आशा तृष्णासबकेघटमें व्यापैहै कोईमहलसूननहीं है काहूको हृदयआशातृष्णा ते सूननहीं है सबके हृदयमें आशातृष्णाव्यापिरहीहै ३ श्रीकबीरजीकहैहैं कि अपने अपने मतमें जीवलगेहैं सांचमानिकै जो सांचकोहम कहैहैं कि सांचजे परमपुरुषपर श्रीरामचंद्रहैं तिनमेंलगौ जिनको तुमजानि राख्यो है तेअसांचहैं तो खीझैहैं औ मोसों झूंठकह्यो नहीं जाइहै सो जेजेगुरुवा लोग आपनी आपनी मतकी राह चलाईहैं तेदुखिया ह्वैगयेहैं तौ जिनको वेशिष्य बनायोहै तेदुखिया काहेनहोइं ४ इतिइक्यानबेशब्दसमाप्तम् ॥

अथबानवेशब्द ॥

गुरुमुख ॥ तामनकोचीन्हौरेभाई । तनछूटेमनकहांसमाई १ सनक सनंदनजयदेवनामा। अंबरीषप्रहलादसुदामा २ भक्तसहीमनउनहुंनजाना। भक्तिहेतुमनउनहुंनज्ञाना ३ भरथरिगोरखगोपीचंदा । तामनमिलिमिलि कियोअनंदा ४ जामनकोकोइजाननभेवा । तामनमगनभयेशुकदेवा ५ एकलनिरंजनसकलशरीरा । तामेंभ्रमिभ्रमिरहलकबीरा ६ ॥

जोकहिआयेकिनानाउपासनाकरि सांचसाहबकोनजान्योसोइहांकहैहैं॥

तामनकोचीन्हौरेभाई । तनछूटेमनकहांसमाई १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनकसनंदनजयदेवनामा । अंबरीषप्रहलादसुदामा २
भक्तसहीमनउनहुंनजाना । भक्तिहेतुमनउनहुंनज्ञाना ३

जामनते नाना उपासनाभई तामनको हेभाई चीन्हौ यह मनको के भयोहै अर्थात् जौनेमनते नानाउपासनाठाढ़ेकै लियोहै सो मनतो तुमहीं तेभयोहै सो यह बिचारतो करो जब सब शरीर छूटिजाइहै तब मन कहां समाइहै अर्थात् तुमहीं मेंसमाइजाइहै सो मनके मालिकतो तुमहौ मनैते जो नानाउपासना ठाढ़कै लियोहै ते तुम्हारी उपासना सांच कैसे होइगी १ सनकसनंदनसनत्कुमारनामदेवजयदेव अंबरीष प्रहलाद सुदामा येसब भक्तसहीहैं संसारते छूटेहैं परंतु मनको वोऊ न जान्यो जो मनको जानते तौ मनते भिन्नहैकै मन बचनके परे जोमेरो रामनामहै ताहीको जपते और और्रेकी भक्तिको कारणजोहै मन तेहि करिकै उनहूंको मेरो पूथम ज्ञान न होतभयो फेरि और और उपासननमें कुछु न देख्योतब साहब कहैहैं कि मोमें लगे काहेते कि वह मन आपैते होइहै अरु वह जीवात्माके परेमैंहौं काहेते कि यह मन आत्मैते होइहै अरु वह जीवात्मा के परे मैंहौं काहेते कि मेरो अंशहै अरु ध्यानादि ज्ञानादिक सब मनते अनुमान करैहैं ताते ज्ञानको अनुभव ब्रह्म औ ध्यानको अनुभव उपास्य देवता येमनके भीतर होवईचाहैं औ मनआत्माकोहै तातेमनमें आत्माको स्वरूप कैसे आइसकै वहतो मनते परेहै सोजब मनको छोड़ैहै तब चिन्मात्र रहिजाइहै याते मनबचनके परे आत्मा होवई चहै अरु जबमैं हंस-स्वरूप देउहौं तामें स्थितहैकै मेरेपास आवते कल्पना करिकै नानारूपमें म लगते ३ ॥

भरथरिगोरखगोपीचंदा । तामनमिलिमिलिकियोअनंदा ४
जामनकोकोइजाननभेवा । तामनमगनभयेशुकदेवा ५

भरथरी गोरख गोपीचंद जेहैं तेवही मनहीमें मिलिकै आनंद कियो अर्थात् जौने ब्रह्ममें मिलिकै आनंद कियो सोब्रह्म मनहीं को अनुभवहै ४ सो जौने मनको अनुभव ब्रह्म होइहै अरु वह ब्रह्म उपास्यकनमें अर्थ आपनी नानाईश्वर स्वरूप कल्पना करैहै तौने मनको भेद कोई नहीं जान्यो तौने मनके मगनमें कहे राहमें शुकदेवनाभये गर्भहीते मायाको त्यागिदियो औ सनकसनकादिक पृहलादादिक बहुत भ्रमकरिकै फेरिफेरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुझ्योहै सो साहब कहैहै कि मोकोजानिकै मेरेपास आये इहांरामोपासक शुकदेवको छूटिगये जोकह्यो तौ रामोपासक सब आइगये ५ ॥

एकलनिरंजनसकलशरीरा। तामेंभ्रमिभ्रमिरहलकबीरा ६

एकजोहै निरंजनब्रह्म सर्वव्यापी तिनहीं को नानाशरीर नारायणादिक महेशादिरूपहै तिनहीं में सिगरे कबीर कायाकेबीर भूमि भूमि रहतभये कहे उनहीं की उपासना करतभये अपनो रूप औ मेरो रूप न जानत भये अरु ब्रह्म नानारूप कल्पना करिलियोहै तामेंप्रमाण ॥ उपासकानांकार्यार्थं ब्रह्मणोरूपकल्पना ॥याकोअर्थमेरेसर्वसिद्धांतमेंहैऔरामोपासक शुकदेवको कहि आयेहैं सो शुकाचार्यई मुक्तह्वै गयेहैं तामेंप्रमाण ॥ शुको मुक्तोवामदेवोवा इतिश्रुतेः औ रामोपासकरहेहैं तामेंप्रमाण॥ पादांबुजं रघुपतेःशरणंप्रपद्ये इतिभागवते औ कबीरऊजी को प्रमाण ॥ आदिनाम शुकदेवजो पावा । पूर्वजन्मके कर्ममिटावा ६ इति बानबेशब्दसमाप्तम् ॥

अथतिरानबेशब्द ॥

बाबूऐसोहै संसारतिहारोयेकलिहै व्यवहारा । कोअबअनख सहै प्रति दिनको नाहिन रहनि हमारा १ सुमृति सुभावसबैकोइजानैहृदयातत्व न बूझै । निरजिव आगेसरजिव थापेलोचन कछुवनसूझै २ तजि अमृतबिष काहेकोअचवै गाठीबांधोखोटा । चोरनको दियपाट सिंहासनशाहुकोकीन्हो ओटा ३ कह कबीर झूठोमिलि झूठाठगहीठग व्यवहारा । तीनिलोकभरि पूरिरहोहै नाहीं है पतियारा ४ ॥

बाबूऐसोहै संसार तिहारोयेकलिहै व्यवहारा ।
को अबअनखसहै प्रतिदिनको नाहिंनरहनिहमारा १

बाबूकहेहेजीवो तिहारो यहसंसारऐसोहै कि एकजोहै मनताहीकेलिये यहसंसारको व्यवहारहै अरुवहीके छोड़ते संसार छूटिजाइहै तामेंप्रमाण मनएवमनुष्याणांकारणंबंधमोक्षयोः । तामेंकबीरकोप्रमाण॥ मुक्तिनहीं आकाशमें मुक्तिनहीं पाताल । जबमनकीमनसामिटै तबहीं मुक्तिबिशाल ॥ सोयहमनकी प्रतिदिनकी अनख कौनसहै अर्थात् अणुजोजीवहैताकोप्रति दिनखाइलेइहै कहेअपनेमें मिलाइलेइहै सो रोजरोजको याके स्वरूपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुलाइबो कौनसहै यहमनहमारे रहनिमाफिकनहीं है यहजड़हम चैतन्य यातेहम कैसेमिलैंगे १ ॥

सुमृति सुभाव सबैकोइ जानै हृदया तत्वनबूझै ।
निरजिव आगेसरजिव थापैलोचन कछुवनसूझै २

सोयहि तरहते मनको स्वभाव सुमृति जे स्मृतिहैं तामें बर्णन है सो सबैकोई जानैहै परंतुहृदयमें जोमनको तत्वकहेस्वरूपहै ताकोकोईनहीं बूझैहै कि हमयह मनते भिन्नहैं निर्जीव जो मनहै ताकेआगे सजीवजोहै आत्माताको राखिदेइहैं कहेमिलाइ देइहैआंधरनकोयहनहीं सूझिपरैहैकि चितजीवकोजड़नमें मिलाइजड़काहेकरैहैं औआत्मादेहकोएकहीमानैहैं २॥

तजि अमृतबिष काहेको अचवैगांठीबांधोखोटा ।
चोरनको दियपाटसिंहासन शाहुको कीन्होओटा ३

अमृतजोहै आपने आत्माको स्वरूपताको छोड़िकै बिषजोहै मनतामें लगिकै नानापदार्थनमें लागिबोतोहै ताकोकाहेते अंचवैहैं कि गांठीमेंखोट जोमनहै ताकोबांधैहै सो काहै सो काहेबांधेहै मनतेभिन्न नहीं ह्वैजाइ है आत्माके स्वरूपको भुलाइकै मनमें लगाइदेनवारे औ साहबको भुलाइ देनवारे औ संसारमें डारिदेनवारे ऐसेजे गुरुवालोगहैं तिनको पाटसिंहासनदेइहै कहेउनको गुरूकरैहै औ शाहुजे साधुजनहैं मनते छोड़ायदेनवारे जे साहबको बताइदेइंआत्माको स्वरूपजनाइकै तिनको ओटकीन्हे है कहेउनको दर्शनईनहीं लेइहै ३ ॥

कहकबीरझूठे मिलिझूठाठगहीठग व्यवहारा ।
तीनिलोक भरिपूरिरहोहै नाहींहै पतियारा ४

सोकबीरजी कहैहैं कि ऐसेजेलोगहैं ते झूठाजो मनकोअनुभव ब्रह्म है तामें मिलिकै झूठेह्वै रहेहैं ठगैठगको व्यवहारह्वैरह्योहै सोतीनलोकमें वही भरिपूरिरह्योहै सो पतिआइबेलायक नहीं है जोठगमें लगैहै सो ठगहीह्वै जाइहै जो कहो तीनलोकमें तौ साधुहूहै पतिआइबे लायक कोई न रह्यो यह कैसेतौ कबीरजी कहैहैंकि साधुजन तीनलोकके बाहरईहैं वेतीनलोक के भीतरनहीं हैंकाहेतेकितीनिलोकमनको पसाराहै अरुवेमनतेभिन्नहैं ४॥
इतितिरानबेशब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथचौरानबेशब्द ॥

कहौनिरंजन कवनीबानी। हाथपाय मुखश्रवण न जिह्वा काकहिजपहु ही प्रानी १ ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिये ज्योति कौन सहिदानी। ज्योतिहिज्योति ज्योतिदैमारै तबकहँज्योतिसमानी २ चारिवेद ब्रह्मानिज कहियातिनहुंन यागतिजानी। कहैकबीर सुनोहोसंतोबूझहुपंडितज्ञानी३॥ जोकहौ मनही ते यहससारहै औजबमनते छूटैगो तबब्रह्महीह्वै जाइगो तामेंश्रीकबीरजी कहैहैं ॥

कहौनिरंजन कवनीबानी।
हाथपांयमुख श्रवणनजिह्वा काकहिजपहु होप्रानी १
ज्योतिहिज्योतिज्योतिजोकहियेज्योतिकौनसहिदानी।
ज्योतिहिज्योतिज्योतिदैमारै तबकहँज्योति समानी २

कहौतौ निरंजन ब्रह्मको कौने बाणीते कहौहौ वाकोतौ मन बचनकेपरे कहौहौ तामेंप्रमाण॥ यतोवाचोनिवर्तंतेअप्राप्यमनसासह इतिश्रुतेः॥अरु वाकोतो बिनानाम रूपको कहौहौ वाको कैसे जपौहौ औकैसे ध्यान करौ हौ १ जोकहो वह प्रकाशरूप ब्रह्महै मो प्रकाशको ध्यान करैहै प्रकाश में अपने आत्माको मिलाइ देइहै ब्रह्महमहीं ह्वैजाइहैं सो ज्योतिस्वरूप जो ब्रह्महै तामें आपनेआत्माकी ज्योति ज्योतिकै कहे मिलाइकै जो कहिये वह ज्योतिकौन सहिदानी रहिजाइहै अर्थात् जबसबपदार्थ मिथ्या मानत मानत एक प्रकाशरूप ब्रह्ममान्यो ताकोमान्यो किवहब्रह्म हमहीं ब्रह्महैं सो जबभर यह मानेरह्यो किवह ब्रह्महमहीं हैं तबभरतो तिहारो अनुभव रहैहै औजब अनुभवऊ मिटिगयो तबतुमहीं रहिजाउहौ तब वह ब्रह्मको कौन सहिदानी रहिजाइहै अर्थात् कछुनहीं रहिजायहै तुमहीं रहिजाउ हौ यहीप्रकार जब ब्रह्मज्योति आत्माके ज्योति मिलायकै वहुज्योति को दैमारयो कहेछोड्यो अर्थात् सबको निराकर्ण कै कैवल्य शरीरमें प्राप्ति भयो अरुवहूको छोड़यो तबआत्माकीज्योति कहांसमाइहै सोकहैहैं जीव के मुक्तभयेपर परमपरपुरुष श्रीरामचन्द्र हसस्वरूप देइहैं तामें टिकिकै साहबकीसेवा जीव करैहै यहज्ञानतो जीवजानै नही है वहीब्रह्म प्रकाश कोजानिराख्योहैकिहमैंही ब्रह्महैं सोजबमनको निराकर्णह्वैगयो तबब्रह्महू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ह्वै जायहै तबआत्मै रहिजायहै याते मनैको अनुभव ब्रह्महै सोजौने हंस स्वरूपमें वा ज्योति समाइहै ताकोबिचार करो २ ॥

चारिवेदब्रह्मानिजकहियातिनहुंनयागतिजानी।
कहैकबीर सुनोहोसंतौ बूझहुपंडित ज्ञानी ३

ब्रह्मा चारिवेदकह्यो तिनमेंयहकह्यो कि मुक्तभयेपरबिग्रहको लाभहोय है।मुक्तस्यविग्रहोलाभः॥इत्यादिकश्रुति आखहीकह्यो तऊन जान्यो काहे ते जोजानते तौ जगत्की उत्पत्ति न करते हंसस्वरूप भें टिकिकै साहबके लोकको चलेजाते सोकबीरजी कहैहैं किहेसंतौ सुनौ जाके सारासार बिचारिणी बुद्धिहोइ सोपंडित कहावै सोई पंडितहै सोहेज्ञानिउ जिन संपूर्ण असारको छोड़िकै साश्जे साहबहैं तिनको ग्रहणकै लियो ऐसेजे पंडितहैं तिनसो बूझो वहगति वोईबूझैहैं तबही तिहारो धोखाब्रह्म छूटैगो३॥ इति चौरानवेशब्द समाप्तम् ॥

अथपंचानवेशब्द ॥

कोअसकरै नगरको तबलिया। मासु फैलायगीधरखवरिया १ मूसभो नावमँजरिकँडहरिया। सोवैदादुर सर्पपहरिया २ बैलबियाय गायभैबांझा। बछवै दुहिया तिनतिन साझा ३ नितउठि सिंहस्यारसों जूझै। कबिरकपद जनबिरला बूझै ४ ॥

कोअसकरैनगरकोतवठिया।मासु फैलायगीधरखवरिया १
मूसभोनावमँजरिकँडहरिया। सोवैदादुरसर्पपहरिया २
बैलबियाय गायभैबांझा। बछवैदुहिया तिनतिनसाझा ३
नितउठिसिंहस्यारसोंजूझै। कबिरकपदजनविरलाबूझै ४

साहब कहैहैं या संसाररूपी नगरकी कोतवाली को करै जौने नगरमें शरीररूपी मांसफैलाहै गीधजोनिरजनकाल सोरखवारहैऔजहांजीवकोस्वरूप ज्ञानजो मूसरूप नाव ताके बिलार कड़हरियाहै कहे गुरुवालोग औ दादूर जोजीवहै सो सोवैहै प्राण जोसर्प सोपहरीहैं पै ई नानाशरीरमें लैजायहैं औ गायजो गायत्री सोआपने तात्पर्य कृपाय राख्यो सो बांझभई औ बैलजो शब्द ब्रह्म सो बिआयहै कहे नानाग्रन्थ रूप बछवा भये तेई बछवाको तीनितीनि साझ दुहैहैं अर्थात् रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणीसब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाहीको दुहेहैं कहे पढ़े सुनेहैं औ सिहजो विवेकहै सो सियारजो कुमति तासों रोजही जूझैहै सोकबीर जोहै जीव ताको पदजोहै मेरोधाम ताको कोई बिरला बूझैहै जे मेरेधामको बूझैहैं तेसंसारते छूटिजायहैं ३ ॥
इतिपंचानबेशब्दसमाप्तम् ॥

अथज्ञानबेशब्द ॥

काकहिरोवौगेबहुतेरा । बहुतकगयेफिरेनहिंफेरा १ हमरोबातबतैंन सँभारा । बातगर्भकीतैंनविचारा २ अबतैंरोयाक्यातैंपाया । केहिकारणतैं मोहिंरोवाया ३ कहैकबीरसुनोनरलोई । कालकेवशहिपरौमतिकोई ४ ॥

काकहिरोवहुगेबहुतेरा । बहुतकगयेफिरेनहिंफेरा १
हमरोबातबतैंनसँभारा । बातगर्भकीतैंनविचारा २
अबतैंरोयाक्यातैंपाया । केहिकारणतैंमोहिंरोवाया३
कहैकबीरसुनोनरलोई । कालकेवशहिपरौमतकोई ४

का कहिकै रोवोहौ बहुत तरहते कि येहमारे भाईहैं ईबापहैं ईपुत्रहैं बहुत यही तरहते गयेहैं फेरिनहीं फेरेफिरैहैं १ सो जबजब हमको तेरो दुख देखिकै करुणाभई हमारो वा तोको उपदेशदियो सोतू न सँभारे जो करार कियेतैं कि मैं भजन करौंगो सो न विचारे साहबको भजन न कियो अबतैं गर्भमें जायजाय संसारमें आयआयकै रोवैहै कहे दुखपावैहै सो क्या तैंपाये अब हमको तैंकाहे रोवावैहै तेरो दुख देखिकै मोको दुखहोयहै सो कबीरजी कहैहैं कि हेनरलोगो साहबको जानौगे तबहीं कालते बचौगे सो साहबको भुलायकै काहे कालके वश परौहौ संसार दुखपावौहौ ४ ॥
इतिज्ञानबेशब्दसमाप्तम् ॥

अथसत्तानबेशब्द ॥

अल्लहरामजीवतेरीनाईं । जनपरमेहरहोहुतुमसाईं १ क्यामूड़ीभूमिहि शिरनायेक्याजलदेहनहाये । खूनकरैमसकीनकहावै गुणकोहैछिपाये २ क्यामोउज्जुमज्जनकीन्हे क्यामसजिदशिरनावे । हृदयाकपटनेवाजगुजारै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहाभोमक्काजाये ३ हिंदूएकादशिचौबिसरोजा मुसलमतीसबनाये । ग्यारहमासकहौकिनटारौ येकेहिमाहँसमाये ४ पूरुबदिशिमेंहरिकोबासा पश्चिमअलहमुकामा । दिलमेंखोजदिलैमेंदेखो यहैकरीमारामा ५ जोखोदायमसजिदमेंबसतुहै औरमुलुककेहिकेरा । तीरथमूरतिरामनिवासी दुइ महँकिनहुनहेरा ६ वेदकिताबकीनकिनझूंठा झूंठाजोनबिचारै । सबघट माहँएककरिलेखैभेदूजाकरिमारै ७ जेतेऔरतमर्दउपानेसोसबरूपतुम्हारा कबिरपेंगड़ाअलहरामका सोगुरुपीरहमारा ८ ॥

अल्लहरामजीवतेरीनाईं । जनपरमेहरहोहुतुमसाईं १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेश्रीरामचंद्र कोई तुमको अल्लाह कहैहै कोई राम कहैहै हिंदू मुसल्मान दोहुनमें शरीर भेदहै जीवतो एकईहै सबमें बिभ चैतन्य तुमहौ अणुचैतन्य जीवहै ज्योति तुम्हारी है हिंदूमुसल्मानको आत्मा तुम्हारीहै तुम दूनोंके साईंहौ ताते तुम्हारेजनजे हिंदूतुरुकदोऊहैं तिनके ऊपर मेहरवानगी करौ १ ॥

क्यामूड़ीभूमिहिशिरनायेक्याजलदेहनहाये ।
खूनकरैमसकीनकहावै गुणकोरहैछिपाये २

कबीरजी कहैहैं कि हिंदूतुरुक तुमको बिसराइकै औरऔर बिचारकरैहैं याचित्तमेंनदीजै मेहरकरियेकाहेतेकितुरुकमूड़ीभूमि जोगोरतामेंशिरनावैहै औ हिंदू बहुत जलसोंनहायहै यातेकाहभयो, आपकोतो जनबैनकियो औ जीवनके गरकाटैहै ऐसो खूनकरै तौन खनतो छिपावैहै आपतेजे सर्बत्रपूर्ण हैतिनकोनहीं जानैहै औ मसकीनजो फकीर सो कहावैहै यातेकहा भयो२॥

क्याभोउज्जूमज्जनकीन्हे कामसजिदशिरनाये ।
हृदयाकपटनेवाज गुजारै कहाभो मक्काजाये ३
हिंदूएकादशिचौबिसरोजामुसलिमतीसबनाये ।
ग्यारहमासकहौकिनटारौ येकेहिमाहँसमाये ४

हिंदू बहुत प्रकारके मज्जन करैहैं औ तुरुक उज्जू जो कुल्ला मुखारी करिकै हृदयमें कपट सहित नेवाज गुजारयो मसजिदमें माथनवायो मक्का गयो याते काहभयो आपको तो जनबै न कियो ३ हिंदूतोचौबिस ए कादश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे औ तुरुकतो तीसरोजारहे याते काहभयो काहेते यातो जनबै न कियो कि और दिन ये काहेमें समाइंगे ईसबदिन साहिबैके हैं ग्यारहमास ई काके हैं ४ ॥

पूरबदिशिमेंहरिकोबासापश्चिमअलहमुकामा ।
दिलमें खोजदिखै में देखौ यहैकरीमारामा ५
जोखोदायमसजिदमेंबसतुहैऔरमुलुककेहिकेरा।
तीरथमूरतिरामनिवासी दुइमहँकिनहुंनहेरा ६

हिंदूकहैहैं कि पूरुब औ उत्तरके कोनेमें सुमेरुहै ताहीमें बैकुंठहै वहैंते सूर्यउदय होइहै तहैं हरिको बासहै ताहीओर पूजाध्यान करैहैं औ पश्चिम कैत मक्काहै तहां अल्लाहको बासहै ताहीओर मुसल्मान नेवाज गुजारैहैं सो याते काहभयो आपने दिलमें खोजकैकै तौ देखबै न कियो कि करीम जे खोदाय रामजे रामचंद्रते दिलहीमेंहैं हिंदू तुरुक दोहुनमें वोईहैं येतो शरीर आय साहब एकईहै या न जानै तौ काहभयो ५ मुसल्मानलोग या मानैहैं खोदाय मसजिदमें बसतुहै औ रामचंद्र मूरति औ तीरथमें बसैहैं याते काहभयो काहेते दुइमें याबात कोई न बिचारे कि और मुल्कमें को बसैहैं सर्बत्र साहिबही पूर्णहै आपने आपने पक्षमें लगेहैं ६ ॥

वेदकिताबकीनकिनझूठा झूठाजोनबिचारै ।
सबघटएकएककरिलेखै भयदूजाकरिमारै ७

वेदवाले किताबको झूठा कहैहैं किताबवाले वेदको झूठाकहैहैं सो या कहा झठाहै इनको को झूठा करिसकैहै झूठावहीहै जोइनको नहीं बिचारै है कि वेदकिताबको यही सिद्धांतहै साहब सर्बत्र पूर्णहै हिन्दूके याहै कि सबनाम साहिबहीकेहैं॥सर्वोणिनामानियमाविशंति इतिश्रुतिः॥औ मुसल्मानके जामैजमीसिफात जामैजमीअसमात यहकलामुल्लाके किताबमें लिखैहै सो घटघटमें चित्तस्वरूप जीव एकहीहै सबके साहब रामचंद्रहीहैं तिनको एककरि लेखै भयदूसरे ते होयहै ताकोमारै सो यातो बिचारबै न कियो तौ काहभयो ७ ॥

जेतेऔरतमर्दउपाने सोसब रूप तुम्हारा ।
कबिरपोंगड़ाअलहरामको सोगुरुपीरहमारा ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो कबीरजी कहेहैं कि जेते औरत औ मर्द उपानेकहे उपजेहैं तेसब तुम्हारे रूपहैं काहेते कि चितजो तुम्हारो बिग्रहहैं ताहीते जगत्है औ कबिरकहे कायाकेबीर जेजीवहैं ते हेअल्लाह राम तिहारे जावनके पेंगड़ा हैं अर्थात् तुमहीं घटघटमें बोलतहौ तुमको जानिबेको इनके कुदरति नही है चाहौ तुम उपदेशकरि आपनेमें लगावो चाहौ गुरुपीर द्वाराउपदेश करिआपनेमें लगावो इनको बसनहीं है तामें प्रमाण ॥ यथादारुमयीयोषि-न्नृत्यते हुहकेछया।एवमीश्वरतंत्रोयमीहतेसुखदुःखयोः॥चौपाई॥उमादारु योषितकीनाईं। सबैनचावतरामगोसाईं ८ इतिसत्तानबेशब्दसमाप्तम् ॥

अथअट्ठानबेशब्द ॥

आवोवेआवोमुझेहरिकोनाम। औरसकलतजुकौनेकाम १ कहँतबआदम कहँतबहवा। कहँतबपीरपैगम्बरहुवा २ कहँतबजिमीकहांअसमाना। कहँ तबवेदकिंतावकुराना ३ जिनदुनियामेंरचीमसीद। झूठेरोजाझूठीईद ४ सांचएकअल्लाकोनाम। ताकोनयनयकरोसलाम ५ कहुधौं भिस्तकहांत आई। किसकेकहेतुमछुरीचलाई ६ करताकिरतिमबाजीलाई। हिंदुतुरुक दुइराहचलाई ७ कहँतबदिवसकहांतबराती। कहँतबकिरतिमकीउतपाती ८ नहिवाकेजातिनही वाकेपांती। कहकबीरवाकेदिवसनराती ९ ॥

आवोवेआवोमुझेहरिकोनाम। औरसकलतजुकौनेकाम १
कहँतबआदमकहँतबहवा। कहँतबपीरपैगम्बरहुवा २
कहँतबजिमीकहांअसमाना। कहँतबवेदकिंतावकुराना ३

श्रीकबीरजी कहेहैं कि जौने नाममें सब नामहैं तौनजो मन बचनके परे हरिको नामहै सो हेजीव ताको तैं विचारकरु किमोको आवै औरसब वस्तु झूठे छोड़िदे कौने कामकेहैं जब वहनाम रह्योहै आदिमें तब कुछ नहीं रह्यो १ येजे कहिआये ते कहांरहेहैं अर्थात् कोई नहीं रहे २। ३॥

जिनदुनियामेंरचीमसीद। झूठेरोजाझूठीईद ४
सांचएकअल्लाकोनाम। ताकोनयनयकरोसलाम ५
कहुधौंभिस्तकहांतोआई। किसकेकहेतुमछुरीचलाई ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरुजीव जिन संसारमें मसीद जोमसजिद शरीर रच्योहै ते करतारौ नहीं रहे ४ सांच एकमन बचनके परे अल्लाको नामहै ताको नय नयकै सलामकरो और सब झूठाहै जिसके बनाये भिस्त भईहै तेऊ वहीनामते प्रगट भयेहैं तुम किसके कहे जीव मारतेहौ ईसब झूठेहैं ५। ६॥

करता किरतिम बाजी लाई। हिन्दु तुरुक दुइ राह चलाई ७
कहँतब दिवस कहँतबराती। कहँतब किरतिमकी उतपाती ८
नहिंवाकेजातिनहींवाकेपांती। कहैकबीरवाकेदिवसनराती ९

सो कर्त्ताकै कृत्तिम जो मायाहै सोबाजी लगायकै दुइराह चलाईहै ७ जब पूथम साहब सुरति दियोहै तबकहां दिनरह्योहै कहांराति रहीकहां कृत्तिमजो मायाताकी उत्पत्तिरहीहै न वाके कछुजातिहै जोकहिये वा ब्रह्म मेंहै मायामेंहै सतचितहै तौ वा एकऊ में नही है न जातिहै वाके एकई साहब है दुइचारि साहब नही हैं न वाके दिवसहै न रातिहै कहे न ज्ञानहै न अज्ञानहै ताते साहबको सांचनाम जपौ ९ इतिअट्ठानबे शब्दसमाप्तम्॥

अथनिन्नानबेशब्द॥

अब कहंचल्यो अकेले मीता। उठिकिन करहु घरहुकी चिंता १ खीर खांड़घृत पिंडसमारा। सो तनलै बाहरकै डारा २ जेहिशिर रचिरचिबांध्यो पागा। सोशिर रतन बिडारहिं कागा ३ हाड़जरैं जैसे लकरी झूरी। केश जरैंजस तृणकै कूरी ४ आवत संग न जातको साथी। काहभयो दलसाजे हाथी ५ मायाको रसलेइ न पाया। अंतर यमबिलारहै धाया ६ कहकबीर नल अजहुं न जागा। यमको मोंगरामथिशिर लागा ७॥

अबकहँचल्योअकेलेमीता। उठिकिन करहुघरहुकीचिंता १
खीर खँाड़ घृतपिंड समाना। सो तनलै बाहरकै डारा २
जेहिशिररचिरचिबांध्योपागा।सोशिररतनबिडारहिंकागा३
हांड़जरैं जैसेलकरी झूरी। केशजरैं जस तृणकैकूरी ४
आवतसंग न जातकोसाथी। काहभयो दलसाजे हाथी ५
मायाको रसलेइ न पाया। अंतर यमबिलार ह्वैधाया ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहकबीरनलअजहुंनजागा यमकोमोंगरामधिशिरलागा ७

श्रीकबीरजी कहैहैं किहे जीवौ जैसो यापदमें कहिआये हैं तैसोतिहारो हवाल ह्वै रह्योहै जो तुम परमपुरुषपर श्रीरामचंद्र को न जानौगे तौ तिहारे शिरमें यमको मोगदर लगैगो ७ इतिनिन्नानवेशब्दसमाप्तम् ॥

अथसौशब्द ॥

देखौलोगौ हरिकी सगाई । मायधरै पुतधिय सँगजाई १ सासु ननँदि मिलि अदल चलाई । मादरियागृहबेटीजाई २ हमबहनोइ राममोर सारा । हमहिंबापहरिपुत्रहमारा ३ कहै कबीर हरीके बूता । रामरमै तैं कुकुरीके पूता ४ ॥

देखौलोगौहरिकीसगाई । माइधरै पुतधियसँगजाई १

हेजीवो सब संसारकी सगाई न देखो दुःखके हरैया जेहरिहैं तिनकी सगाईदेखो अर्थात् साहबमें लागोतो वेसंसारदुःखदूरिकरिदेइँगे औसंसारमें लागोगे तोमाईजो माया सोतुमको धरैगी तुमजीवो वा मायाके पुत्रह्वै रह्योहै समष्टिते व्यष्टिजीव मायाही करैहै याते मायाको माय कह्योहै अब जीवके बुद्धिउत्पन्न होयहै याते जीवकी धीकहे कन्याहै सो तैंबुद्धिके संग बिगरिगयो और औरमें बुद्धि निश्चय कराइ नरकमें डारिदियो १ ॥

सासुननँदिमिलिअदलचलाई । मादरियागृहबेटीजाई २

बुद्धिकर्मकी बासनाते उत्पत्तिहोयहै जौनेप्रकारकी बासना होयहै तैसी बुद्धिहोइहै सोबासना जीवकी सासुहै औ जीवकी सुरति बहिनीहै काहेते कि वहीसुरति पाइकै जीवचैतन्य भयोहै संसारीभयोहै औवह सुरति जब साहबमुख होइगी तब साहबको पावैगो सोयेई जेहैं बुद्धिकीसासु ननँदि हैं तेई अदलजोहै हुकुम सोचलाइकै शुद्धसमष्टि जीवको संसारमें डारिदेइहैं सोकैसे डारिदेइहैं सो कहैहैं जौनबांदरको नटनचावैहै सोमादरिया कहावै सोमनहै ताकी बेटी जोहै इच्छासो उत्पत्ति भई तब जीव संसारमें परयो २ ॥

हमबहनोइराममोरसारा।हमहिंबापहरिपुत्रहमारा ३
कहैकबीर हरीकेबूता । रामरमै तैं कुकुरीके पूता ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेजीव तैं यहविचारु कि यामेंपरिकै हम बहनोयहैं अर्थात् बहनबारेहैं तो बहीजायँगे अरुहमारेसारकहे सारांशरामैहैंऔहमारे बापरामैहैं औपुत्र रामैहैं तामेंप्रमाण ॥ रामोमातारामश्चिपतारामचन्द्रः स्वामीरामोमत्सखाराम चंद्रःसर्वस्वमेरामचन्द्रोदयालु र्नान्यजानेनैवजानेनजाने॥तामेंकबीरजीको प्रमाण॥रामहमारे बापहैं रामहमारेभ्रात। रामहमारी जातिहैं रामहमारी पांत ॥ सोयहविचारकै श्रीकबीरजीकहैहैं कि हरिकेबूता कहे हरिनकेबूत ते अर्थात् अपने बलते नहीं कुकुरी जोमायाहै ताकेपतौ जीवो सर्वनात रामै सों मानिकै रामैमेरमो अर्थात् जबतुम साहबके होउगे तब साहब हंसस्वरूपदैकैतुमकोअपनेधामकोबोलाइलेइँगे४॥इतिसबांशब्दसमाप्तम्॥

अथएकसैएकशब्द ॥

देखि देखिजिउ अचरज होई। यहपदबूझै बिरला कोई १ धरतीउलटि अकाशहि जाई। चींटीके मुखहस्ति समाई २ बिनुपवनै जहँ पर्बतउड़ै जीवजन्तु सब बिरछा बुड़ै ३ सूखे सरवर उठै हिलोल। बिनुजल चकवा करै कलोल ४ बैठापण्डित पढ़ैपुरान। बिनदेखेका करैबखान ५ कहकबीर जोपदको जान। सोईसंत सदापरमान ६ ॥

देखिदेखिजिउअचरजहोई। यहपदबूझैबिरलाकोई १
धरतीउलटिअकाशहिजाई। चींटीकेमुखहस्तिसमाई २

श्रीकबीरजी कहैहैं किमैंतो स्पष्टई कहौहौं पै यहपदजो साकेतलोक ताकोकोई बिरला बूझैहै सोयह देखि देखि मोकोबड़ो आश्चर्य होइहै १ जब महाप्रलय होयहै तबधरती उलटिकै आकाशको जातरहैहै कहे पृथ्वी जलमें जलतेजमें तेजबायुमें बायुआकाशमें समाइजाइहै अरु वहौजोहै आकाशसो अहंकारमें समाइहै अरु अहंकार महत्तत्वमें समाइहै सोमहत्तत्वमनहै काहेते कि यहसब बिस्तार मनहीं कोहै सोमहत्तत्व जोहै आदि कारण मन हाथीसो भगवत आपना रूपजोहै जगत्की मूलशक्ति सूक्ष्म चींटी ताके मुखमें समाइहै २ ॥

बिनपवनैजहंपर्बतउड़ै। जीवजंतुसबबिरछाबुड़ै ३

सोयहसाहबकै अज्ञानरूपा मल प्रकृति लोकप्रकाशमें जो समष्टिजीव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं तहां समानी रहैहे पृथ्वीआदिकतो समाइगयेहैं उहां पवननही है परन्तु वह चैतन्याकाशकहे ब्रह्मरूपी आकाशमें अनन्तकोटि ब्रह्मांडजे पर्वतहैंते उड़तईरहैहैं अरु वहांसरवरमें जीवजन्तु तेसहित जे संसाररूपी वृक्षहैंते बूड़हैं अर्थात् वहोब्रह्ममें सबसंसारकी लयहोयहै ३ ॥

सूखेसरवरउठैहिलोल । बिनुजलचकवाकरैकलोल ४
बैठापंडितपढ़ैपुरान । बिनदेखेकाकरैबखान ५

वहब्रह्मतो सूखासरोवरहै अर्थात् सो ब्रह्ममहीं हौं यहमानिबोमिथ्याहै लोकप्रकाशब्रह्मसत्यहै तौनेकेप्रकाशकी हिलोरउठैहै तहां वाणीरूपीजल तोहैनहीं औ चकवाजेजीवहैं ते कलोलकरैहैंकहे वहैंतेपुनि वाणीकोउत्पत्तिकरिकै संसारीह्वैजाइहैं ४ ॥ पंडितजेहैंते बैठेपुरान पढ़ैहैं अरु उत्पत्ति प्रलयको सब बखानकरैहैं यहतो नहीं समुझैहैं कि वहतो बिनदेखेकाहै कहेशून्यहै जोहमज्ञान उपदेशकरिकैवहब्रह्ममेंलगावैंगेतौभगवत्अज्ञानरूपीकारण शक्तितौ उहां बनिहीहै मायाफेरि न धरिलैआवैगी ५ ॥

कहकबीरजोपदकोजान । सोईसंतसदापरवान ६

श्रीकबीरजी कहैहैं किजोकोई यहपदकोकहे जौनेको प्रकाश यह ब्रह्म है ऐसोजोसाकेतहै तौनेपदकोकहेस्थानकोजोजानैतौप्रमाण संतवहीहै औ जेहिको प्रकाश या ब्रह्महै तौनै धाममें जायकै पुनि नहीं लौटि आवैहै तामें प्रमाण । नतद्भासयतेसूर्योनशशांकोनपावकः । यद्गत्वाननिवर्तंते तद्धामपरममम ॥ तामें कबीरऊजी को प्रमाण ॥ कालहि जीति हंसलै जाहीं अविचल देश पुरुषजहं आहीं ॥ तहां जायसुख होइअपारा बहुरि न आवैयहिसंसारा ६ इतिएकसैएकशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैदोशब्द ॥

होदारी किलैदेउ तोहिगारी । तुमसमुझु सुपथ विचारी १ घरको नाह जो अपना । तिनहू सों भेट नसपना २ ब्राह्मण औ क्षत्रीबानी । सोतिनहूं कहलन मानी ३ योगी औ जंगम जेते । वे आपुन वहैं तेते ४ कहैकबीर एक जोगी । तुम भूमीभूमी भोभोगी ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होदारीकिलैदेउंतोहिंगारीतुमसमुझुसुपंथबिचारी १
घरहूको नाहजो अपना। तिनहूंसों भेट नसपना २
ब्राह्मणक्षत्रीबानी। सो तिनहूंकहल न मानी ३

होदारी काहे बांदीकी बच्ची जीवशक्ति तोको गारीदेइहौं तैं यह माया की बच्चीहै कै मायाही में लगिरहीहै सो यह माया दारी है जो सबको दरिडारै सो दारी कहावैहै सो तोको दरेडारैहै यहीके पेपटते निकसे यही में लगे यहकुपथहै सो तैं सुपंथ बिचारु १ घरके नाहजे परमपुरुष पर श्रीरामचंद्र अपनाहै तासों सपनेहू नहीं भेटकरैहै तौ योग ज्ञान उपासनादिकन में जो नाहबर्णन कियेहैं तेतो जारहैं जो तोको मिलयो करैंगे दश दिनको तौ फेरि छाड़िदेइगे २ जो हमारो कहो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य न मान्यो जिनको वेदको अधिकारहै ते वेदको तात्पर्य परमपुरुष पर श्रीराम चंद्रको न जान्यो तौ शूद्रअंत्यजनकी कहबई कहाकरैं ३॥

योगी औ जंगम जेते। वेआपु गयेहैं तेते ४
कहकबीरयकयोगी। तुमभूमीभूमीभोभोगी ५

योगीजंगम जेतेहैं ते वही धोखाब्रह्ममें लगिकै आपने आपनें पौ खोइ दियो ४ श्रीकबीरजी कहैहैकि तुमएकके योगीभयो किहम आत्माकोएक जो ब्रह्महै तामें संयोग करिदेइहैं कहेमिलाइदेइहैं सो यहनहीं बिचार करतेहौ कि एकवही ब्रह्मजो जीवहोतो तौ वासों भिन्नका काहेहोतो औतुमको मिलाइबेको काहे परतो जोकहो यह ब्रह्महीको मायाते भ्रमभयोहै तब नानारूप देखन लग्योहै तौतुमहीं ब्रह्मको ज्ञानमय कहौ हौ सत्यंज्ञानमनंत इत्यादि तौवाको भ्रमही कैसेभयो अरुजो माया में एती सामर्थ्यहै कि तुमको फोरिकै नानारूप करिदियोहै तौजब तुम मिलिहू जाउगे तबतुमको फेरि फोरिकै संसारमें न डारिदेइगो का जनन मरण नछूटैगो तातेतुम फेरि फेरियह भवभ्रममें भ्रमिभ्रमिकै भोगीहोउगे अर्थात् जब वह ब्रह्ममें लगौगे फेरि फेरि ससारहौ में परौगे ५ इति एक सैदोशब्दसमाप्तम्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथएकसैतीनशब्द ॥

लोगोतुमहीं मतिकेभीरा । ज्यों पानीपानीमें मिलिगो त्योंदुरि मिल्यहु कबीरा १ ज्योंमैथिलको सच्चाबास । त्योंहिमरणहोइ मगहरपास२मगहर मरै मरन नहिंपावै । अंतैमरै तोरामलजावै ३ मगहरमरै सो गदहाहोई । भलपरतीति रामसोंखोई ४ क्याकाशी क्याऊसर मगहर हृदय राम बस मोरा । जोकाशीतन तजैकबीरा रामैकौन निहोरा ५ ॥

लोगोतुमहीं मतिकेभीरा ।
ज्योंपानीपानीमेंमिलिगो त्योंदुरिमिल्यहुकबीरा १

हेलोगो तुमबड़े मतिकेभीरहौ कहेडराकुलहौ काहेते जोमैं एतोउपदेश पशुको करत्यों तौपशुहुको ज्ञानहैजातो तुमपशुहुते अधिकहौ जैसेपानीमें पानी मिलि जाइहै ऐसे कबीरजी कहेहैं कितुमहूं दुरिकै मिलौ कहे हंस स्वरूपमें प्राप्तहोउ औसाहबके पासजाउ जोकहोपानीमेंपानी मिलेएकही ह्वैजाइहै तोएकनहीं ह्वैजाइहै काहेते कि लोटाभरे जलमें चुरुवाभरिजल नाइदेइं तोबाढिआवैहै जोवहीजल होतो तौ बढ़तो कैसे जोकहो समुद्र में तौनहीं बढ़ै तौसमुद्रौमें गंगादिक नदी जुदीही रहतीहैं देखबेको मिली हैं परंतुउनको पारिख मेघजानैहैं वहांते मीठे जल लैकै बर्षैहैं पुनि जब श्रीरामचन्द्र समुद्रपरकोपे तबसमुद्रआयोहै सबनदी चमरछत्र लीन्हेजुदी जुदी आईहैं औअबहूं जहाजवारे जे जानैहैं ते मीठाजल समुद्रको पाइ जाइहैं सोहेकबीरौ कायाकबीर जीवौ तुमहूं हंसस्वरूपमें स्थितह्वै साहब केलोकमें प्रवेशकरि साहबको मिलोजाइ १ ॥

ज्योंमैथिलको सच्चावास । त्योंहिमरणहोयमगहरपास २
मगहरमरैमरणनहिंपावै । अंतै मरै तोराम लजावै ३
मगहरमरै सोगदहा होई । भलपरतीतिरामसोंखोई ४

जो श्रीरामचन्द्रकोजानै तौजैसे मैथिलकहे मिथिलापुरमें मरेमुक्तिहोइ है तैसे मगहरमें मरे मुक्तिहोइहै २ जोमगहरमें मरैतौ मरण नहीं पावैहै यह सबकोई कहैहैं कि मगहरमें मरे मुक्तिनहीं होइहै अरुजो अंतेमरै तौ श्रीरघुनाथजीको लजावै कि तीर्थकी ओटलैकैमरयो ३ सोजाकी श्रीराम-चन्द्र में परतीति नहीं होयहै सोमगहरमें परे गदहै होइहै ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्याकाशीक्याऊसरमगहर हृदयरामबसमोरा ।
जोकाशी तनतजै कबीरा रामै कौन निहोरा ५

जोहृदयमें श्रीरामजन्द्र बासकियेहैं तोक्या श्रीकाशीहै क्याऊसरहै क्या मगहरहै जहैंमरै तहैंमुक्ति ह्वैजाइ तौ श्रीकबीरजी कहैहैं किश्रीरामचंद्रको कौन निहोरा तेहिते मैं श्रीरामचन्द्रको निहोरा करिकै मगहर मेंहीं शरीर छोड़्यो मोकोमगहर बाधा न कियो तेहिते हेजीवो तुमहूं परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको हृदयमें धरौगे औरामनाम जपौगे तौ तुमहूं को कुछुबाधान रहैगीजहैंमरौगे तहैंमुक्ति ह्वै जाउगेतातेऔर सबधोखाछोड़िकैपरमपरुषपर श्रीरामचंद्रको स्मरणकरौ मैं अजमाइकै कहौहौं जोकहो अपने शरीरछोड़िबे की कथा श्रीकबीरजी आपने ग्रन्थमें लिखैहैं यहअसंभव बातहै तौ मगहर में जो श्रीकबीरजी शरीर छोड्यौतौ आपनी रामोपासकता देखाइबेकी मैं मगहरमें शरीर छोड़ौहौं कैसे यममोको गदहा करैंगे औ कैसेमैं मुक्तनहोंगो सो मगहरमें मैं शरीर छोड्यो यमको कियो कछु न भयो मगहरमेंशरीर छोड़ि मथुरामें जायरतनाकंडुइनिको उपदेशकियोहै पुनिबहुतदिन प्रगट रहेहैं यातेयह देखायो कि नित्यवृंदाबनके रासमेंदेख्योजाइहै जहांसब मुक्त ह्वैकै जाइहैं परममुक्तह्वै नित्यवृन्दैबनके रासमेंजायहैं तामेंप्रमाण शुकाचार्यमुक्तह्वै गयेहैं तिनसों श्रीकृष्णचंद्रकी उक्ति ॥ सचोवाच प्रियारूपं लब्धवंतंशुकंहरिः।त्वंमेप्रियतमाभद्रेसदातिष्ठममांतिके॥ इतिपद्मपुराणे॥ सो सबकथा आपही धर्मदासते निर्भयज्ञानमें आपनेहीं मुखकमलतेकह्यो है सोस्पष्टई है ५ इतिएकसैतीनशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैचारशब्द ॥

कैसेकैतरो नाथकैसेकै तरो अबबहु कुटिलभरो १ कैसीतेरी सेवा पूजाकैसो तेरोध्यान। ऊपरउजर देखोबक अनुमान २ भावतो भुवंगदेखो अति बिबिचारी। सुरति सचानदेखो मतितौ मजारी ३ अतितोबिरोधी देखो अतिरेदेवाना। छौदरशन देखो भेष लपटाना ४ कहैकबीर सुनो नलबंदा। डाइनिडिंभपरे सबफंदा ५ ॥

अबगोरखनाथ के मतकेजे नाथकहावैहैं जे आपनेइष्टदेवता को नाथ कहैहैं तिनको कहैहैं कैसेहैं वे कि आपकालते नाथेगये अरुऔरऊको काल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते नथावैहैं जिनको अपने अपने मतमें लैआवैहैं तेऊकालते नाथे जायँगे अर्थात् नाथैसोनाथ कहावै अथवा नाथोजाइ सो नाथकहावै ॥

कैसेकैतरो नाथकैसेकैतरो अबबहु कुटिलभरो १

श्रीकबीरजी कहैहैं किहेनाथ तुमकैसे मुक्तिहोउगे गोरखनाथरहे तेतो योगऊकरतरहे अबतो योगको नामईरहि यो मुद्रापहिरिलियो भेषबनाइ लियो कपरारगिकैं अरु नानाप्रकारके मंत्रते भैरवभूतको वशकैकै सिद्धि देखावन लगे लोगन को ठगनलगे कोईमहत बनिबैठे कोईराजकाजकरन लगे कोईराजाके गुरूह्वैबैठे सो अबतुम बहुत कुटिलताते भरेहौ १ ॥

कैसीतरीसेवापूजाकैसोतेरोध्यान । ऊपरउजरदेखोबकअनुमान २

तिहारी सेवापूजा ध्यानकरिबो कैसोहै कि ऊपरते तो यहजानि परैहै बड़े पुजेरीहैं बड़ेध्यानीहैं बड़ेयोगीहैं औ भीतर कपटतेभरेहैं जैसे बकऊपर तेउजल रहैहै औ भीतर कुटिलईते भरे मछरी धरनको ताके रहैहै तैसे भीतर बासना भरीहै काहूको धनपावैतौ लैलेइ काहूके लरिकाको देखै तौमूड़िलेइ काहूराजाको ठगिजागापावै तौ लैलेइ जातेहमारीमहंतीचलै२॥

भावतो भुवंगदेखो अतिबिबिचारी ।
सुरतिसचान देखो मतितौमंजारी ३

भावकरिकै तौ भुवंगहै जाको सांपधरैहै ताकोबिषचढ़ैहै मरिजाइहै तैसे जो इनको संगकरैहैं ताहूके इनके मतको बिषचढ़िजाइहै इनके मतनमें चल्यो सो मारोपर्‌यो अरु वेबड़े बिबिचारी होतहैं शास्त्रके मतते जो कर्म हैं ताको छोड़ाइही देइहैं अरु परमपुरुषपर श्रीरामचंद्रको जानतेनही हैं जातेउद्धारह्वैजाइ सो कर्मकांडीतो भला कछू स्वर्गको सुखपाइ कै संसार में परैहैं येसीधे नरकहीको चलेजाइहैं सोइनकी सुरति सचानह्वै रही है जैसे सचान खोजतफिरैहै कि जो कौन्योजीवको पाऊं तौ धरिलेउं अरु उनकी मतिजोहै दुर्मति सो मंजारी ह्वैरहीहै तैसेमंजारी खोजत फिरै है कि जो काहू मूसको पाऊं तौ धरिलेउँ तैसे येऊ खोजत बागैहैं कि काहूको पावैं तौ चेलाकरिलेइँ औ धनलैलेइँ जैसे आप नरकमें जायहैं तैसे चेलो को नरकमें डारैहैं ३ ॥

अतितौबिरोधीदेखोअतिरेदेवाना। छौदर्शनदेखोभेषलपटाना ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहैकबीरसुनोनरबंदा । डाइनिडिंभपरेसबफंदा ५

योगी जंगम सेवरा संन्यासी दरवेश ब्राह्मण तिनसों अति बिरोध करैहैं अरु अपने मतमें अति देवानेह्वै रहेहैं अर्थात् वही पाषंड मतको सबते अधिक मानैहैं सोयाहीभांति छइउ दर्शनमेंदेखैहैं किभेष सबमें लपटान्यो है कुछु सार पदार्थ नहीं जानैहैं भेष बनाइलियो योगी जंगम सेवरादिक कहावन लगे ४ श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेनर तैंतो परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको बंदाहै सो उनको तो येषटदर्शनवारे जानै नही हैं आपने आपने मतमें डिंभकियेहैं कि हमारईमत ठीकहै और मतझूठेहैं ५ इतिएकसैचार शब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैपांचशब्द ॥

यहभ्रमभूतसकलजगखाया । जिनजिनपूजातिनजहड़ाया १ अंडनपिंड प्राणनहिंदेहा । काटिकाटिजियकेतिकयेहा २ बकरीमुर्गीकीन्होछेहा । अगिलजन्मउन्हअवसरलेहा ३ कहैकबीरसुनोनरलोई । भुतवाकेपूजेभुतवैहोई ४॥

यहभ्रमभूतसकलजगखाया । जिनजिनपूजातिनजहड़ाया १
अंडनपिंडप्राणनहिंदेहा । काटिकाटिजियकेतिकयेहा २
बकरीमुर्गीकीन्होछेहा । अगिलजन्मउन्हअवसरलेहा ३
कहै कबीरसुनो नरलोई । भुतवाके पूजे भुतवैहोई ४

दुलहादेउ भैरवभवानी ग्राम देवता ईसब भूमहैं ईसब जगतको खाये लेइहैं जिनजिन इनको पूजाहै तिनको तिनको जहड़ाइबो कहे वहकाल देइहै १ येई देय तिनके नाअंडहै नापिंडहै इनको अनेकजीव काटिकाटि दियो सोकाहजानिकै दियो तुमको बैकलाइ डारैंगे फल नादेइँगे२ बकरी मुर्गी दैकै जो तुम इनको पूजा कीन्हों सोई अगिलेजन्म तुम्हारो गर काटैंगे३सो श्रीकबीरजी कहैहैं हेलोगो तुमसुनोयेभूतनको जोतुम पूजौगे तौ तुमहू भूतहोउगे भूतके पूजेते भूतहोइहै तामेंप्रमाण ॥ यान्तिदेवब्रता देवान्पितृनयान्तिपितृब्रताः। भूतानियान्तिभूते ज्यायांतिमद्याजिनोपिमामितिगीतायां ४ इतिएकसैपांचशब्दसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथएकसैंछःशब्द ॥

भवँरउड़ेवकबैठेआय। रैनिगईदिवसौचलिजाय १ हलहलकांपैबाला जीव। नाजानैकाकरिहैपीव २ कच्चेबासनटिकैनपानी। उड़िगेहंसकाय कुम्हिलानी ३ कागउड़ावतभुजापिरानी। कहकबीरयहकथासिरानी ४॥

भवँरउड़ेवकबैठेआय। रैनिगईदिवसौचलिजाय १
हलहलकांपै बालाजीव। ना जानैकाकरिहैपीव २

यह जगत्में यहदशा ह्वैगई कि भवँरजेहैं रसिक संत जे परमपुरुष पर श्रीरामचंद्रके पे ममें छकेरहैहैं तेउड़िगये कहे उठिगये अरुबकजेहैं गुरुवा लोगते बैठेआय जैसे बकुला मछरी खायहै तैसे ठगि ठगिकै जीवको स्वस्वरूप खायलेइहै कहे भुलाइ देइहै वही ब्रह्ममें लगाइकै १ सोयहजीव तौ बालास्त्री कहे परमपुरुष श्रीरामचंद्रकी चितशक्तिहै सो ब्रह्मधोखामें लगिकै हलहल कांपैहै अर्थात् मैं आपने स्वामीको भुलाइकै धोखा ब्रह्ममें लग्यो सो हाथनलग्यो सो ना जानौं खफाह्वैकै मेरे पीउकहे स्वामी अब कहा करैंगे २॥

कच्चेबासनटिकैनपानी। उड़िगोहंसकायकुम्हिलानी ३
कागउड़ावतभुजापिरानी। कहकबीरयहकथासिरानी ४

सोउमिरितो वह ब्रह्ममें व्यतीतकै दियो औ हाथ कुछनलग्यो तबयह बिचारयो कि मैं अपने स्वामीजे परमपुरुष श्रीरामचंद्रहैं तिनमेंलगौं सो जैसे कच्चेबासनमें पानीधिदेइ तौ बासन कच्चाबिगसि जायहै तैसे यह शरीरतो रहैनहीं है जब हंसउड़िगयो शरीर कुम्हिलाइगयो कहेछूटिगयो भावयहहै तब पछितावई हाथ रहिजायहै ३ श्री कबीरजी कहेहैं कि जैसे नारी अपने पतिके आइबेको भुजाते कागउड़ावैहै जब पतिनहीं आवैहै तब भुजाको पिरावई रहिजाइहै तैसे ब्रह्मह्वैबेकेलिये उमिरिबिताइदियो अहंब्रह्म अहंब्रह्म करत करत वह सब कथा सिराइगई कहे जब जब ब्रह्मभये उनको ब्रह्मनमिल्यो तब मेहनतई हाथ रहिजाइहै जैसे बूसीके कांड़े कुछु हाथनहीं लगैहै मेहनतई हाथ रहिजाइहै तैसे इनको बिना परमपुरुष श्रीरामचंद्रके जाने ब्रह्मह्वैजाइबो बूसई कैसो कांड़िबोहैं उहां कुछुहाथ नहीं लगैहै तामेंप्रमाण॥ अथ यःस्तुतिर्भक्तिमुदस्यतेविभोक्लिश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्ति येकेवलबोधलब्धये ॥ तेषामसौक्लेशलएवशिष्यतेनान्यद्यथास्थूलतुषा वघातिनाम् १ इतिभागवते ४ इतिएकसैंछःशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैंसातशब्द ॥

खसमबिनतेलीकेबैलभयो। बैठतनाहिंसाधुकीसंगतिनाधेजन्मगयो १ बहिबहिमरैपचैनिजस्वारथ यमकेदंडसह्यो। धनदारासुतराजकाजहित माथेभारगह्यो २ खसमहिछोड़िबिषयरँगमाते पापकेबीजबयो। झूठमुक्ति नलआशजिवनकी प्रेतकोजूंठखयो ३ लखचौरासीजीवयोनिमेंसायरजात बह्यो। कहेकबीरसुनोहोसंतो श्वानकीपूंछगह्यो ४ ॥

खसमबिनतेलीकोंबैलभयो।
बैठतनाहिं साधुकीसंगति नाधेजन्मगयो १
बहिबहिमरैपचैनिजस्वारथयमकेदंडसह्यो।
धनदारासुतराजकाजहितमाथेभारगह्यो २

श्रीकबीरजी जीवको उपदेश करेहैं हेजीव तेरे मालिकजे रामचंद्रहैं तिनहीं बिना तैं तेलीको बैलभयो जेसाध तेरो स्वरूप बताइदेइँ ऐसे साधुनकी संगतिमें कबौनहीं बैठे तेलीके बैलनाईं नाधेनाधे जन्म व्यतीत भयो जन्मतै मरतरह्यो १ जब कांधे जुवांनाधि जायहै तब निज तेलीके निमित्त ढोइढोइ मरैहै जो नारेंगे तौतेली डंडा मारैहै तैसे यहजीव धन दारा सुत राजकाजके हित नानाकर्म करैहै इन्द्री सुखलिये बहिबहिकहे नानाकर्मनको भारा ढोइढोइके पचैहै अरु अंतमें यमदंड मारैहैं सोसहो हौ याहीरीति जन्मजन्म यमदंड सहौहौ २ ॥

खसमहिछोड़िबिषयरँगमाते पापकेबीजबयो।
झूंठमुक्तिनलआशजिवनकी प्रेतकोजूंठखयो ३

खसमजे साहब तिनको त्यागि बिषय रँगमें माह्यो औ पापको बीज बोवतभयो अर्थात् जोनारी आपने खसमको छोड़ि और पुरुषमें लगैहै तौवाको बड़ो पाप होयहै सोतैं खसमको छोड़िकै नानादेवतनकी उपासनामें लगिजातभयो मतिगयो सोतैं महापापके बीजबोयो औ नरनको ज्यावनवारी जो मक्तिकी जो हमको उपास्य देवता प्राप्त होयँगे तौ हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीतैरहैंगे हमारो जननमरण न होयगो सोवह मुक्ति झूंठीहै जौने शरीर ते उनके लोकको जायगो सोतन नाश ह्वैजाइगो जब फेरि सृष्टि समय होइगो तब वोई देवनके साथ फिरिआवैगो जननमरण न छूटैगो सोऐसी झूठी मुक्तिके वास्ते तैंपै तनको जूठ खायहै कहे भैरव भूत आदिकन के बलिदान खायहै उनकेदिये तपौना शराब पियेहै ३ ॥

लखचौरासीजीवयोनिमें सायरजातबह्यो ।
कहैंकबीरसुनोहोसंतौ श्वानकिपूंछगह्यो ४

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेसंतौ जीवौसुनौ तुमपरमपुरुष परजे श्रीरामचन्द्रहैं ते तुम्हारे रक्षक संसार सागरते पारकै देनवारे जहाज तिनको छोड़ि श्वान जेहैं ईसब क्षुद्रदेवता तिनकी पूंछगहे चौरासीलक्ष योनि समुद्र संसारमें बहोजायहै सो श्वानकी पूंछगहेते कैसे संसार समुद्रते पार जाउगे ४ ॥ इतिएकसैसातरुब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैआठशब्द ॥

अबहमभयल बहिरजलमीना । पुरुबजन्मतप कामदकीना १ तबमैंअक्षलोमनबैरागी । तजलोकुटुंब रामरटलागी २ तजलोकाणी भैमतिभोरी प्राणनाथ कहुकागतिमोरी ३ हमहिंकुसेवक तुमहिअयाना । दुइमहँदोष काहिभगवाना ४ हमचलिगैल तुम्हारेशरणा । कतहुंनदेखो हरिकोचरणा ५ हमचलिगैलतुम्हारेपासा । दासकबिर भलकैलनिरासा ६ ॥

अबहमभयलबहिरजलमीना । पुरुबजन्मतपकामदकीना १
तबमैंअक्षलोमन बैरागी । तजलोकुटुंब राम रटलागी २

श्रीकबीरजी कहैहैं किजबमैं साहबके पासगयो तब यह बिनती कियो कितबतो संसारके जलके मीनरहे अबजबते आपके पासआये तबतेहम संसारकेबहिरे तिहारे पूर्वजलके मीनभये पूथमहम पूर्वजन्ममें पंचांगीपासना तपस्याबहुतकरी पुनिजब जन्मलियो तबहमको पूर्वजन्मकीसुधि बनीरही वह तपस्याको मदकहे अहंकार हमको बहुतरहै सोवह तपस्या के प्रभावते १ तबहमको अच्छो मनमेंबैराग्य रहै रघुनाथजीमें भक्तिभईत तबकुटुम्ब को छोड़िकै रामरामरट लगावतभयो २ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तजलोकाशीभैमतिभोरी । प्राणनाथकहुकागतिमोरी ३

तब प्राणनाथमैं काशीको छोड़िदियो औमेरीमतिभोरीभई कहेपूर्वजन्म केतपके मदते निर्गुण रसरूपाभक्ति मोको न होतभई केवल ज्ञानैकरिकै रामनामकी रटनिलगाइकै विचरतभयो किमिलिहोजायँगे तबहेप्राणनाथ मेरीकहां गतिहोतभई सोकहौहौं ३ ॥

हमचलिगैलतुम्हारेशरणा । कतहुंनदेखोहरिजीकोचरणा ४

हमहिंकुसेवकतुमहिंअयाना । दुइमहँ दोषकाहिभगवाना ५

हमतुम्हारे शरणतो चलिगये कहे तुम्हारे नाममेंरट लगावतभयो पै तुम्हारे चरणको न देखतभयो अर्थात् दर्शन न पायो ४ सोहेभगवान षट् ऐश्वर्य्य संपन्न धौं हमहीं कुसेवकरहे जोतिहारोदरशन न पायो धौं तुमहीं अयानरहे हमको न जानतरहे जोहमको नहीं मिले दुइमें काकोदोषहै ५ ॥

हमचलिगैलतुम्हारेपासा । दासकबीरभलकयलनिरासा ६

अब दासकबीर जोमैंहौं ताको भली भांतिते जबनिराश करिदियो कि कौनिउभांति की जबआश न रहिगई न ज्ञानकरिकै नयोगकरिकै न भक्ति करिकै केवलसुधारसरूपा निर्गुणाभक्ति जबमोकोदियो तब हमतुम्हारेपा-सचलिआये यातेकबीरजी यादेखायो किजबसबबातते निराशह्वैजायहैं तब साहबकेपास जाइहैं ६ इतिएकसैआठशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैनवशब्द ॥

लोगबोलैदुरिगयेकबीरा । यामतकोइकोइजानैंधीरा १ दशरथसततिहुं लोकहिजाना । रामनामको मर्मैआना २ जेहिजियजानि पराजसलेखा । रजुकोकहै उरगजोपेखा३यद्यपिफलउत्तमगुणजाना । हरिहित्यागि मनमुक्ति नमाना ४ हरिअधारजसमीनहिंनीरा । और यतनकछु कहहिंकबीरा ५॥

लोगबोलैदुरिगयेकबीरा । यामतकोइकोइजानैंधीरा १

श्रीकबीरजी कहेहैं कि सबलोग बोलैहैं किकबीर बहुत दूरिगये बहुत पहुंचेहैं सो यामत कोई कोई जे धीरेधीरे साधनमें क्रियनमें समुझनेमें अभ्यास करैहैं सोजानैहैं कौनमत सो आगे कहैहैं १ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशरथसुततिहुंलोकहिजाना । रामनामकोमर्मैआना २

सो दशरथ सुतको तौ तीनोंलोक जानैहै पैरामनामको मर्म कोऊकोऊ जानैहै अर्थात् कबहूं दशरथसुत कबहूं नारायण कबहूं व्यापक ब्रह्मही अवतार लेइहैं नित्य साकेत बिहारी परमपुरुषपरजे श्रीरामचंद्रहैं जिनके नामतेब्रह्मईश्वर वेदशास्त्र सबनिकसैहैंतौने रामनामकोतौमर्म आनहै२ ॥

जेहिजियजानिपराजसलेखा । रजुकोकहैउरगकोपेखा ३
यद्यपिफलउत्तमगुणजाना । हरिहित्यागिमनमुक्तिनमाना ४

जाको यह रामनाम जैसो जानि परयोहै सोतैसै लेख्योहै कोई रघुनाथ जीको दशरथके पुत्रै मानैहै कोई नारायणके अवतार मानैहै कोई ब्रह्मको अवतार मानैहै तिनहीं को नाम रामनाम मानैहै सो जैसे रसरीको उरग कहैहैं बिना समुझे ऐसै रामनाम जी साहबकोहै सोभ्रम छोड़िकै बिचारै तौ साहिबैको बोध करैहैं ३ सो यद्यपि उत्तमगुण जानेके फल होयहै कि बिष्णुलोक प्राप्तिभये परंतु परमपुरुष परजे श्रीरामचंद्र तिनके प्राप्तभये बिना हम मुक्ति नहीं मानैहैं ४ ॥

हरिआधारजसमीनहिंनीरा । औरयतनकछुकहैकबीरा ५

सो जैसे मीनको आधार अंबुहै बिनाजल मीन नहीं रहिसकैहै तैसे श्रीरामचंद्र सबके आधारहैं सो तिनहीं को जोआधार मानै तौजैसे मीन सर्वत्र जलही देखैहै द्विभुजरूप श्रीरामचंद्रकोसर्बत्रदेखै औ उनहीं में रहै तौ श्रीकबीरजीकहैहैं कि औरयतन सबथोरईहै तामेंप्रमाण श्रीगोसाईंजी को ॥ दोहा ॥ सोअनन्यअसजाहिकेमतिनटरैहनुमंत । मैं सेवकसचराचर रूपराशिभगवंत१तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥ नैननआगेख्यालघनेरा । अरध उरधबिचलगनलगीहैक्यासंध्याक्यारैनिसबेरा । जेहिकारणजगभरमतडोलैसोसाहबघटलियाबसेरा । पूरिरह्योअसमान धरणिमें जितदेखो तित साहबमेरा । तसबी एकदियो मेरेसाहबकह कबीर दिलहीबिच फेरा ५ इतिएकसैनवशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैदशशब्द ॥

अपनोकर्म न मेटोजाई । कर्मकलिला मिटै धौं कैसे जो युग कोटिसि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राई १ गुरु वसिष्ठ मिलिलगन शोधाई सूर्यमंत्र यकदीन्हा । जोसीतारघुनाथ बिआहीं पलयक संचन कीन्हा २ नारदमुनिको वदनछपायोकीन्योकपि सों रूपा । शिशुपालहुके भुजा उपारे आपुन बौध स्वरूपा ३ तीनिलोक के करता कहिये वालिबध्यो बरियाई । एकसमय ऐसीबनिआई उनहूं अवसर पाई ४ पार्वतीको बांझनकहिये ईशनकहिय भिखारी । कहैकबीर करताकी बातैं कर्मकी बातनिनारी ५ ॥

अपनेाकर्मनमेटोजाई । कर्मकलिखामिटैयौंकैसेजोयुगकोटिसि राई १ गुरुवसिष्ठमिलिलगनशोधाई सूर्यमंत्रयकदीन्हा । जोसी तारघुनाथबिआहीपलयकसंचनकोन्हा २ नारदमुनिकोवदनछ पायोकीन्होकपिसोंरूपा । शिशुपालहुकेभुजाउखारेआपुनबौध स्वरूपा ३ तीनिलोककेकरताकहियेबालिबध्योबरियाई । एक समयऐसीबनिआईउनहूंअवसरपाई ४ पार्बतीकोबाँझनकहियेई शनकहियभिखारी ।कहकबीरकरताकीबातेंकर्मकीबातिननारी५॥

श्रीमन्नारायण बैकुंठते केतन्यो अवतार लियो तेऊकर्मकी मर्यादाराखि-बोई कियो सो जेसाइब उत्पति पालन संहार करैहैं तेतो कर्मकीमर्यादा राखिबोई कियो और की कहांगतिहै सो बिना परमपुरुषपर श्रीरामचंद्र के नामलिये कर्मकी गतिकाहूकी मेटीनहीं मेटिजाइहै श्रीरामनामतेकर्म की गति मिटिजाइहै साहबमेटि देइहै तामें दोऊप्रमाण ॥ रामनाम मणि बिषय ब्यालके । मेटतकठिन कुअंकभालके १ सर्वधर्मान्परित्यज्यमामे-कंशरणंब्रज । अहंत्वांसर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशुच इतिगीतायां ॥ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते । अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम ॥ इतिरामायणे ॥ औ कबीरऊजीको प्रमाण ॥ पहिलेबुराकमाइकै बांधी बिषकै मोट । कोटि कर्मभिट पलकमें आवै हरिकीओट ॥ और यापदको अर्थ स्पष्टहै ५ इतिएकसैंदशशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैंग्यरहशब्द ॥

है कोई पंडित गुरुज्ञानी उलटि वेदको बूझै । पानीमें पावकजरै अंधे आंखीसूझै १ गैयातो नाहरको खायो हरिनाखायो चीता । कागालगरैफा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिकै बटेरन बाजजीता २ मूसातोमंजारै खायोस्यारै खायोश्वाना। आदि के उपदेशजानै तासुवेसैबाना ३ एकै तो दादुर सो खायो पाचौजेभूवंगा। कहैकबीर पुकारिकै हैंदोऊयकसंगा ४ ॥

हैकोईगुरुज्ञानीपंडितउलटिवेदकोबूझै ।
पानीमें पावकजरै अंधेआंखी सूझै १

ऐसो गुरुज्ञानी पंडितकोईनही है जो उलटिकै वेदको अर्थबूझै अर्थात् गायत्रीते वेदभयोहै प्रणवते गायत्री भईहै प्रणव रामनामते उत्पत्तिभयो है सो कहैहैं पानीजोहै बानी तामें पावकबरैहै कहेब्रह्माग्नि बीज रामनाम है सो सर्वत्र पूर्णहै सो अंधेके आंखीमें कैसेसूझै उलटिकै वेदको बूझैतौ जानैकि सबको मूल रामनामईहै १ ॥

गैयातो नाहर को खायो हरिना खायोचीता ।
कागालगरै फादिकै बटेरन बाजजीता २

गैयाजो गायत्री तौनेके नानाअर्थ करि कहीं सूर्यमें लगावैहै कहीं ब्रह्ममें लगावै है सोई अर्थजो गैयासो सांच गायत्रीको तात्पर्यार्थ साहब तिनको ज्ञान जो नाहर ताको खायलियो औहरिना जो अद्वैतज्ञान की हरिनही है प्रणवकी अर्थकियो कि जीवनही है एक ब्रह्महीहै सो मैंहौं याजोहरिना सो साहबको ज्ञान जो चीता ताको खायलियो चीतासाहबके ज्ञानको काहेते कह्यो कि जब साहब को ज्ञानहोइहै तब अद्वैतज्ञाननहीं रहिजाइहै औ कागजो अज्ञान सो साहबको ज्ञानजो लगरशिकारी पक्षीकाकाको खानवारो ताको कागखायलियो औ असत शास्त्रके अनेक प्रकारके जे अर्थ तेईहैं बटेरते सतशास्त्रजे साहबके बतावनवारे तेईहैं बाज ताको जीतिलियो अर्थात् तामसी जेहैं तेतामसशास्त्रको प्रचारकरि सत्शास्त्र को लोप करिदियो २ ॥

मूसातो मंजारैखायो स्यारैखायो श्वाना ।
आदिको उपदेश जानै तासु वेसैबाना ३
एकैतो दादुर सो खायो पांचौ जे भूवंगा ।
कहैकबीर पुकारिकै हैं दोऊयकसंगा ४

मूसाजोहै बितंडाबादसो साहबकोउपदेश जो मंजार ताको खायलियो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री ह्यारजो माया सो जीवके स्वरूप ज्ञानतेजो होइहै श्वान भवानंदसोई है श्वान ताको खायलियो सो कबीरजी कहैहैं जो कोई आदिको उपदेश जो है रामनाम जानै ताहीको बेसबानाहै और सब पाषंडईहै ३ एकही दादुरजो मन सो दादुरके खायलेनवारो पांचभुवंगजे रतिनेष्ठा भावपूम रस ते ताको खायलियो सोई एकएकके बिरोधिरहे तिनको खायलीन्हे सो कबीरजी कहैहैं जीवसाहब एकै संगकेहैं आपने स्वरूपकोनसमुझ्यो ज्ञान बिचारयोकि मैं साहबकोहौं ताते संसारीह्वैगयोहै जो साहबमुख अर्थ बिचारतो तौ एकही संगकोहै ४ इतिएकसैग्यारहशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैबारहशब्द ॥

झगराएक बढ़ोजियजान । जोनिरुवारै सो निरबान १ ब्रह्मबड़ाकीजहँ ते आया । वेदबड़ाकी जिन उपजाया २ इहमन बड़ाकी जेहि मनमाना। रामबड़ाकी रामहिंजाना ३ भ्रमिभ्रमि कबिरा फिरैउदास । तीर्थबड़ाकी तीर्थकदास ४ ॥

झगराएक बढ़ोजियजान । योनिरुवारै सोनिरबान १
ब्रह्मबड़ाकी जहँतेआया । वेदबड़ाकीजिनउपजाया २
इहमनबड़ाकीजेहिमनमाना।रामबड़ाकीरामहिंजाना३
भ्रमिभ्रमिकबिराफिरैउदास । तीर्थबड़ाकीतीर्थकदास ४

हेजीवो यह झगड़ा बढ़ोहै ताको बिचारकरो जोकोई यहझगड़ा निरुवारै सोई निर्वाणकहे मुक्तहै सो कहैहैं भलाजौन ब्रह्मजीव आपने मनते अनभव करिलियोहै सो बड़ाहैकि जहांतेजीव आयोहै लोकप्रकाश तेसो बड़ोहै सोब्रह्म बड़ानही है वा लोकःप्रकाश बड़ा है जहांतेजीव आयो है औ जौने वेदकी आज्ञाते नानाई श्वरमानिलियोहैसो बड़ाहैकि रामनाम तेवेद उपजाहै सो बड़ाहै अर्थात् रामनाम बड़ाहै जातेवेदभयोहै औमन बड़ाहै कि जाको मन आपने ते बड़ा मान्योहै सो बड़ाहै अर्थात् जो मन वचनके परेहै सोई बड़ोहै जाकोमनमान्योहै औ श्रीरामचंद्रकाहूकोउपदेश करैनहीं आवें श्रीरामचन्द्रके जाननवारे रामको बतायकै जीवनको उपदेशकै उद्धारकै देइहैं यातेरामदासबड़ेहैं औ तीर्थबड़ोकि जे तीर्थको बिधि सहित न्हाइहै तेबड़े अर्थात् जे तीर्थके दासबनेहैं ते बड़ेहैं सो हे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कायाके बोरौ जीवोभूमिभूमि काहेको उदासफिरौहो याबातकोबिचारौ ४
इतिएकसैबारहशब्दसमाप्तम् ॥

अथएकसैतेरहशब्द ॥

झूठेजनि पतिआहुहो सुनसंत सुजाना । घटहीमें ठगपूरहै मतिखोउ अयाना १ झूठेका मंडानहै धरती असमाना । दशौदिशा जेहि फंदहैजिउ घेरेआना २ योगयज्ञ जपसंयमा तीरथब्रतदाना । नवधावेदकिताब है झूठे का बाना ३ काहूको शब्दैफुरै कहूकरमाती । मानबड़ाई लैरहै हिंदूतुरुक दुजाती ४ बातकथै असमानको मुहति नियरानी । बहुत खुदीदिल राखत बूड़े बिनपानी ५ कहै कबीरकासों कहों सिगरो जगअंधा । सांचे सों भाजे फिरैझूठे सों बंधा ६ ॥

झूठेजनिपतिआहुहोसुनसंतसुजाना। घटहीमेंठगपूरहैमतिखो उअयाना १ झूठेका मंडानहै धरती असमाना । दशौदिशाजेहि फंदहै जिउघेरेआना २ योगयज्ञ जपसंयमा तीरथ ब्रतदाना । नवधावेदकिताबहै झूठेका बाना ३ काहूको शब्दैफुरै कहूकरमाती । मानबड़ाई लैरहैहिंदूतुरुक दुजाती ४ ॥

हे संतसुजान जो तुम सुजानहोउ तौ वा झूठेसों न पतिआहु मेरीबात सुनौ वह ठगजोहै तिहारो अनुभव धोखाब्रह्मसो तेरेघटहीमेंहै धोखामें परि आपनो स्वरूपजो साहबको दासताको मतिखोउ १धरतीमें कहेनीचे के लोकन में औ असमान में कहे ऊपरके लोकनमें वहीझूठे ब्रह्मका मंडानहै औ दशौ दिशाजेहैं छः शास्त्र औ चारिवेद तिनमेंवहीको फंदहै वही के फंदते इनको जोहै यथार्थ अर्थसो कोई नहीं जानैहै जीउको आनिकै घेरिलियो है अर्थात् शास्त्रन वेदनमें अर्थ बदलिबदलि वहीझूठे ब्रह्मको उपदेशकैकै गुरुवालोग भुलाइदियोहै सबमें वहीधोखही ब्रह्मदेखावैहै २ योगयज्ञ जपसयम तीर्थब्रतदान नवधा सगुणाभक्ति औ वेदकिताब इन सबमें झूठेकहे वहीधोखा ब्रह्मका बाना कहे बिरदावली गुरुवालोग सब की मनावैहैं कि यासाधनकीन्हे अंतष्करण शुद्धहोयहै तबब्रह्मको प्राप्तहोइहै ३ औ काहूको शब्दैफुरैहै कहेवेद शास्त्र किताब कुरान पढ़िकै उनको अर्थ बदलि बदलिकै शास्त्रार्थ करिकै औरको हरावै है उनहीको हिंदू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुरुक दूनो जाति मानबड़ाई करैहैं औ वोईमान बड़ाई लैरहैहैं पंडित मौलवी लोग औ कोई जे वैरागीहैं संन्यासीहैं फकीरहैं औलियाहैं तेकाहू को बेटालियो काहूको जागादियोकहूं जलमेंहीठिगयो कहूं आकाशते उड़ि गये कहूं दशपांच बर्ष कोठरी चुनाइकै आयेकहूं भूतभविष्यवर्तमान जानि लियो इत्यादिक नानाप्रकारकी करामात देखाइकै हिंदूतुरुकदूनौदीनन तें मानबड़ाई लैकै रहैहैं ४ ॥

बातकथैअसमानको मुद्दतिनियरानो।
बहुतखुदीदिलराखते बूड़ेबिनपानी ५

औपरमपुरुष श्रीरामचंद्र अल्लाह साकेतजाहूतके रहनवारे तिनको तो जानैंनहीं हैं असमानजोहै शून्यधोखाब्रह्मतौनेको बातैकथैहैं कि हम हीं ब्रह्महैं औ हमहीं बेचून बचिगूनबेसुवाबेनिमूनहैं औ उनके जिंदगी की मुद्दति नियरेहीहै केतनो यहै कथतकथतमरिगयकेतौ मरैंगे के तौमरे जायहैंयहनहीं बिचारैहैं कि जो खुदाहोतोब्रह्महोते तौ मरिकैसे जाते सो बहुत खुदीदिलमें राखतेहैंकि खुदखाबिंदहमहीं हैंऔ जोबहुत खुबीपाठ होइतौ यहअर्थ कि हमहीं सबते खूबकहेअच्छेहैं पैबिनापानी झूरहीमें बूड़िगये अर्थात् मरिहीगये वह जो ब्रह्मखुदाको ज्ञानकियो कि हमहीं हैं सो ज्ञानझूरहीठहरयो वामेंकुछ रसनठहरयोमरतमें वहरक्षातनकऊनकियोजो कहो जेसाहब खुदा को जानै हैं तेकब जियै हैं तेऊतो मरिही जायहैंतो तुमहीं रामायणमें सुनेहोउगे कि जेतेभर प्रजाहैं जेतेभर भालु बांदरहैं तिन को श्रीरामचंद्र सदेह आपने धामको लैगये औ श्रीहनुमानजीको बिभी-षणको छोड़िगये तेअबलों बनेहैं औ कागभुशुंड नारद अगस्ति बसिष्टजी रामोपासकहैं तेअबलों बनेहैं जोकहो अबकेतो रामभक्तको मरत देखेहैं तौजे साधनमेंहैं औ परमपुरुष श्रीरामचंद्रको नीकीभांति नहीं जानैहैं औ श्रीरामचंद्रकी प्राप्ति नहीं भई तेशरीर छोड़िकै वह लोकको क्रमतेजाइहैं शरीर छोड़िके फिरि अवतार लेइहैं पुनि ज्ञान होइहै तब जाइहैं औ जे परमपुरुष श्रीरामचंद्रको अच्छीभांति जानि लियोहै औ तहांको प्राप्ति होइगयेहैं तिनको शरीर छोड़िबो ऐसो कियहां गुप्तह्वैगये पुनिकहूं प्रगट ह्वैकै उपदेशकरिकै जीवनको तारयो वेसाहबको प्राप्तईहैं जब चाहैहैं तब साहबके रहैहैं जब चाहैहैं तब प्रकटह्वैकै जीवनको उपदेश करिकै तारैहैं सो श्रीकबीरजी प्रगटई देखाइदियो कि काशीमें शरीर छोड्यो मथुरामें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपदेशकियो औ चारिउयुग उपदेश करतईहैं औ मुसल्माननके अली शरीर छोड्यो पुनि लौटिकै आयकै संदूकमें आपनीलास राखिकै ऊंटमें लादिकै लैगये सो द्वैपहरके बीचह्वै निकसेजाइ सोवहीमें अटकाइदियो सो अबलों वह संदूक अटकीहै सो इनको चोला छांड़िबोयहिभांतिकोहै जैसे सांप केचुरि छांड़ि देइहैं ५ ॥

कहैकबीरकासोंकहोंसकलौजगअंधा ।
सांचेसोंभाजेफिरैंझूठेसोंबंधा ६

सो कबीरजी कहैहैं कि मैं कासों कहों सिगरो संसार आंधरह्वै रह्योहै सांचजे परमपुरुष श्रीरामचंद्र सर्व्वत्र पूर्णहैं तिनसों भागो फिरैहै उनको नहीं देखैहै औ झूठाजोहै धोखा ब्रह्म ताहीमें बँधिरह्योहै औ यथार्थ अर्थमें चारयोवेद छइउशास्त्र तात्पर्य कैकै परमपुरुष श्रीरामचंद्रको बर्णन करैहैं सो मैंआपने सर्बसिद्धांतमें स्पष्टकरिकै लिखिदियोहै ६ ॥

इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुरश्रीसीतारामचंद्र कृपापात्राधिकारिबिश्वनाथसिंहजू देवकृततिलकशब्दसमाप्तम् ॥

इति ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

अथकहरालिख्यते ॥

सहज ध्यान रहु सहज ध्यानरहु गुरुके बचन समाईहो। मेलीसिष्ट
चराचित राखो रहो दृष्टि लौ लाई हो १ जो खुटकार बेगि नहिं लागो
हृदय निवारहु कोऊ हो। मुक्तिकी डोरि गांठि जनि खैंचो तब बांझीबड़
रोहूहो २ मनुवेकहौ रहैमन मारे खीझुबो खीझि न बोलैहो। मनुवोमीत
मिताइ न छोड़ै कबहूं गांठि नखौलैहो३ भूलौभोग मुक्तिजनि भूलौ योग
युक्ति तन साधोहो। जोयहि भांतिकरहु मतवारी तामतके चितबांधोहो ४
नहिंतौ ठाकुरहै अतिदारुण करिहै चालु कुचालीहो। बांधिमारि डारिसब
लेहैं छूटीसब मतवालीहो ५ जबहीं सामत आइ पहूंचे पीठिसांट भल
टूटैहो। ठाढ़े लोग कुटुम्ब सबदेखै कहे काहुकिन छूटैहो ६ एकतो अनिष्ट
पाउंपरि बिनवै बिनती किये न मानैहो। अनचिन्ह रहे कियोनचिन्हारी
सोकैसे पहिचानैहो ७ लेइ बोलाय बातनहिंपूछै केवटगर्भतन बोलैहो।
जेकरि गांठिसबल कछुनाहीं निराधारह्वै डोलैहो ८ जिन्हसम युक्तिअगमन
कै सखिन घरणि माँझ घर डेहरिहो। जेकरे हाथपाउं कछु नाहीं धरणि
लाग तन सेहरिहो ९ पेलनाअछत पेलिचलु बौरे तीरतीर कहटोवहुहो।
उथले रहौ परौजनि गहिरे मति हाथैकै खोवहुहो १० तरकै घाम उपरकै
भूभुरि छाँह कतहुँ नहिं पावहुहो। ऐसो जानि पसीजहु सीजहु कस न
छतरिया छावहुहो ११ जोकछु खेलकियोसोकीयोबहुरिखेल कसहोईहो।
सासु ननँद दोउदेत उलाटन रहहुलाज मुखगोई हो १२ गुरुभोढीलगोन
भोलचपच कहानमानेहुमोराहो। ताजीतुरकीकबहुं न साजेहुं चढ्योहुकाठ
केघोराहो १३ ताल झांझ भलबाजत आवै कहरासबकोइ नाचैहो। जेहि
रँगदुलहा ब्याहन आये तेहिरँग दुलहिनि राचैहो १४ नौकाअछत खेवै
नहिं जान्यो कैसे लागहु तीराहो। कहै कबीर रामरसमाते जोलहा दास
कबीराहो १५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहजध्यानरहु सहजध्यानरहु गुरुके बचन समाईहो।
मेलीसिष्ट चराचित राखौ रहौदृष्टि लौ लाईहो १

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेजीव तैंगुरुके बचनमें समाइकै सहज ध्यान तैंकरु गुरूके बचन जोआगे लिखिआयेहैं किसुरति कमलमें गुरूबैठे रकार मकार जपैहैं तामें समाइजाइ अर्थात् दलदलमें बाढ़िकै इक्कीसहजार छ-सै श्वासजेचलैहैं तिनमेंतेतनेरामनामजपै कौनी रीतितेजपै तामेंप्रमाण॥ श्रीकबीरजीकोपद॥ अतौयोग अध्यातम सोई। एकै ब्रह्मसकल घट व्यापै द्वितिया औरनकोई॥ प्रथमकमल जहँज्ञान चारिदल देवगणेशको बासा। रिधि सिधि जाकीशक्ति उपासी जपते होत प्रकाश॥ षटदलकमल ब्रह्म कोबासा साबित्री सँग सेवा। षटसहस्र जहँ जापजपतहैं इन्द्रसहितसब देवा॥ अष्टकमल जहँ हरिसँग लक्ष्मी तीजो सेवक पवना। षट सहस्र जहँजाप जपतहैं मिटिगो आवागवना॥ द्वादश कमलमें शिवको बासा गिरिजा शक्ती साराँग। षट सहस्र जहँजाप जपतहैं ज्ञान सुरतिलै पाराँग॥ षोडश कमलमें जीवकोबासाशक्तिअबिद्याजाने। एकसहसजहँजापजपतहैं ऐसा भेदबखाने॥ भवँर गुफा जहँदुइ दल कमला परम हंसकरबासा। एकसहस जाकेजापजपतहैं करमभरमकोनासा॥सहसकमलमें झिलमिल दर्शै आपुइ बसत अपारा। ज्योतिस्वरूप सकलजग व्यापी अक्षय पुरुषहै न्यारा॥ सुरतिकमल परसत गुरुबोलै सहजजापजप सोई। छासै इक-इस सहसहिजपिले बूझै अजपाकोई। यहीज्ञानको कोईबूझै भेद अगोचर भाई। जोबूझैसोमनका पेखै कहकबीरसमुझाई १ औ यहीरामनाम मन वचनकेपरहै सोआगे कहि आयेहैं और सब मनके भितरहै यही रामनाम सबकेऊपरहै ताहीमें मतौ तबही पारैजाउगे औ मेली सिष्ट कहे सिष्टजो संसारताको मेलिदेउ कहे छोड़िदेउ औ चराचितराखौकहे सहजसमाधि आगे कहिआयेहैं ताको चरचितराखौ कहे वही जानतरह्यो अथवा वाहीमें जोआपने चितकोचराकहे चलतरा खौ दलदलमेंचलतरहै औ वहीमें आपने दृष्टिकी लौलगायराखौ कहे ज्ञानदृष्टिते साहबको रूप देखतरहौ औ ऊपर की दृष्टिको नासाग्रमें लगायराखौ सो सांसके निकसतमें रकारके पैठतमें मकारको निशिदिन जपतरहो सुरति याहीमें लगायराखौ याजीव सदाका श्रीरामचंद्रही कोहै सदा सांस सांस प्रति रामनामको जपत रहैहै तामेंप्रमाण॥ रकारेणबहिर्याति मकारेणविशेत्पुनः। रामरामेतिवैमंत्र जीवोजपतिसर्वदा॥ रकार करिकै अग्निको पवनको संयोग होइहै तहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेनाद उठैहै अरु अकार करिकै शब्द होइहै औ मकार करिकै वाक्यहोइहै यहमें सुरति लगाइराखै यही परम अजपाहै तामेंप्रमाण ॥ रकाराज्जायते वायु रकाराच्छब्दउच्यते । वाक्तत्वंचमकारेण रामएवेतिवैभ्रुतिः ॥ दूसरोकबीरकोपद ॥ जागुरेजिवजागुरे अबक्यासोवैजियजागुरे । घोरन कोडरबहुतरहतहै उठिउठिपहरेलागुरे । रहौकरिखोलुमनोकर भीतरज्ञान रतनकरिखागुरे । ऐसैजोअजरायलमारै मस्तकीआवैभागुरे । ऐसीजागनि जोकोइजागै ताहरिदेइसोहागुरे । कहकबीरजागोईचहिये क्यागिरहीबैरागुरे २ सो याजीव आपनो स्वरूप भूलिगयो १ ॥

जोखुटकारबेगिनहिं लागो हृदयनेवारहुकोहूहो ।
मुक्तिकिडोरिगांठिजनिखैंचौतबबांझीबड़रोहूहो २

औ हृदयते काम क्रोधादिकनको निवारणकीन्ह्यो संयम नेमादिक करि कै औ मनमायाके खूट करनवारे ऐसेजे साहब तिनमें बेगि जो न लाग्यो मुक्तिकी डोरिकी गांठिकहे चितअचितकी गांठि जनिखैंचौ कहे न छोरचो तौ रोहजो मोहहैं सो तुमको बांझीकहे फदाइ लेइहै २ ॥

मनुवैकहौरहैमनमारे खिझुवाखीझिनबोलैहो ।
मनुवोमीतमिताईनछोड़ै कबहूंगांठिनखोलैहो ३

जाके मनमीत होय सो मनुवा कहावैहै कैसे जैसे जाके धनहोयहै सो धनिका कहावैहै जाके धन नहीं होयहै सो निर्धनिया कहावैहै सो मन जीवते भयोहै ताते मनुवाजो जीवहै ताको कहौ आपनो मनमारे रहै खिझुवाजो काम क्रोधादिक मनके खिझावनवारे तिनकीओर सपनहूं नाहरै हेसंतलोगो या बातकी यतनकरो काहेते मनुवा जो जीवहै मनमीतकी मिताई न छोड़ैगो औ कबहू जड़चेतनकी गांठि न खोलैगो ताते साहबको जानो जाते मनकी मिताई जीवछाड़ै ३ ॥

भूलौभोगमुक्तिजनिभूलौ योगयुक्तितनसाधौहो ।
जोयहिभांतिकरहुमतवारी तामतकेचितबांधौहो ४

सो हेसाधौ जीवनते कहो कि नानाविषयके जेभोगहैं ताको भुलाइदेउ औ मुक्तिको जनिभूलौ औ जो सहजसमाधि रूप योग पूथम तुकमें कहि आयेहैं ताकी युक्ति तनमें साधौकहे करौ औ नानामतमें परिकै यहिभांति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मतवारी जो करौहौ कि आस्मै मालिकहै हमहीं ब्रह्महैं याही मनमें चितको बांधौहौ सो न बांधौ जो बांधौगे तौ ऐसो होयगो सो कहैहैं ४ ॥

नहिंतौठाकुरहैअतिदारुणकरिहैचालकुचालीहो ।
बांधिमारिडारिसबलेहै छूटीसबमतवालीहो ५

तौ तिहारे शरीरको ठाकुर जोमनहै सोअतिदारुण है औ याकी नीच गतिहै सोतिहारी चालकुचाली कैदेइगो कहेविषयनमें लगायकै संसारही ओरलगाय देयगो तौने संसारमें जबतैं मरैगो तबतोको यमदूत बांधिकै पनहिनसों मारिकै डारिलेइगो कहे जोजो तैं कर्मकरैहै सोसब नरकनमें भुगताइ लेइगो तबसब मतवाली तेरीछूटि जाइगी ५ ॥

तबहीं सामत आइपहूंचे पीठिसांट भलटूटै हो ।
ठाढ़े लोगकुटुम्ब सबदेखैं कहे काहुकिनछूटैहो ६

जब यमराजके सामतजे दूत तेजब पहुंचैंगे तबसांटसो भल पीटैंगे मारत मारत केतनो सांटटूटि जायँगे औकुटुम्बकेलोग सबठाढ़े देखैंगे सो हेमूढ़ तैं यानहीं बिचारैहै कि सब छूटैको पुकारैहैं काहूके कहे काहेनहीं छूटैहैं जे गुरुवा लोग बताय कुमार्गमें लगायोहै तेजे यमदूतनते काहेनहीं छड़ाइ लेइहैं ६ ॥

यकतोअनिष्टपांयपरिबिनवै बिनतीकियेनमानैहो ।
अनचिन्हरहेकियोनचिन्हारीसोकैसेपहिचानैहो ७

एकजे साहबहैं सबके रक्षक तिनते ये अनिष्ट रहे कहे उनको इष्ट न मानतरहे औवहां यमदूतनसों पांयपरिपरि बिनवैहै सब देवतनते बिनवै है वेबिनतीहू किये नहीं मानैहैं काहेते कि दयाहीनहैं औसाहबजे दयालु छड़ावन वारे तिनसों अनचिन्हार रहे चिन्हारी न कियो सो कैसे अब पहिचानै भावयहहैकिजोअजहू स्मरणकरोतौसाहब छड़ाइहीलेइगो ७ ॥

लेइबुलायबातनहिंपूछै केवटगर्भतन बोलैहो ।
जेकरीगांठिसबलककुनाहींनिराधारह्वैडोलैहो ८

औ केवट जेगुरुवालोगहैं तेतबतो गर्भकहे अहंकार तनमेंकैके तुमको बोलाय आपने मतमें बोलाय लीन्हिन अबजब यमदूत मारन लगे तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमको बातनहीं पूछैहैं गुरुवा लोग सो जाकेसब कहेखर्च रामनाम रह्यो सोपार भयो औजाके रामनाम सबलकछु नहीं रह्यो सो निराधार कहे रक्षक रहित यमपुरमें डोलैहै अथवानिराधार जोब्रह्म ताहीमेंडोलैहै ८॥

जिनसमयुक्तिअगमनकैराखिनघरणिमांझघरडेहरिहो।
जेकरेहाथपाउं कछुनाहीं धरनलागुतनसेहरिहो ९

जौनेस्त्री पुत्रादिकन ते आगे न नानायुक्तिकैकै पालनकियोहै तौनघरणि कहे स्त्रीशरीर छूटे डेहरी भरिजायहै आगेनहीं जायहै समजो पाठहोयतौ जिनका अपने समबनाय राखिन तौनस्त्री डेहरीलौं पहुंचाई धुनिते या आयो किपुत्र चितालौं जायहै सो जेकरे हाथपाउं कछुनाहीं कहे जेकरे हाथपाउं नहीं है ऐसोजो जीवात्मा ताको जब यमदूत धरनलागु तबतन में सेहरि ह्वैआवैहै तनबिकल ह्वैजाइहै वेकोऊनहीं सहायकरैहैं तातेसाहब कोजानौ जोकहो यमदूतै कैसे धरैंगे तौ लिंग शरीरते ९॥

पेलनाअक्षत पेलिचलुबौरे तीरतीरका टोवहुहो।
उथलेरहौपरौजनिगहिरे मतिहाथेकै खेवहुहो १०

सोकबीरजी कहैहैंकि पेलना जो रामनामसो अक्षतबनैहै ताको संसार समुद्रमें पेलिकै हेजीव संसार समुद्र उतरिजा तीर तीरकहे नाना मतन को का टोवत फिरैहै उथलेमें रहौ अर्थात् साहबको ज्ञानकीन्हे रहौ गहिर जो धोखाब्रह्म कठिन तामें न जाउ वहांगये तुम्हार हाथहु को जीवत्व सो जातरहैगो ताते तुमन खोवौ उथले कहे साहब ज्ञानजानौ १०॥

तरकैघामउपरकैभूभुरि छांहकतहुंनहिंपावहुहो।
ऐसोजानिपसीजहुसीजहुकसनछतरियाछावहुहो ११

तरको घामकहे नानाकर्म जेनीकौनागा कियो ताकी जोताप संसारमें ऊपरकी भूभुरिकहे नरकमें गये तौ वहौं तपैहै स्वर्गमें गये तौ गिरनकी भय बनीहै काहूको अधिक ऐश्वर्य देख्यो तोईर्षा बनीरहैहै कि ऐसो कर्म हम न किये येदोऊ तापमें साहबको ज्ञान रूप छांह कतहूं नहीं पावैहै ऐसो तुम जानतैहौ पैवहींमें पसीजौहौ कहे श्रम करौहौ पसीना चलैहै औ छीजौहौ साहबकी ज्ञानरूप छतरिया काहे नहीं छावहुहौ ११॥

जोकछुखेलकियोसोकीयो बहुरिखेलकसहोईहो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सासुननँददोउदेतउलाटन रहहुलाजमुखगोईहो १२

जो कछु खेलकियो कहे जोकछु कर्म कियो सोई भोग कियो अथवा जौनखेल मायाब्रह्मकी साथकरिकै कियो सोई फल भोगकियो सोबिना रामनामलीन्हे इनको छोड़िकै फेर खेलकियो चाहौ मुक्तवाला सो कैसे होइगो सासु जोहै मूलप्रकृति औ ननँदिजोहै बिद्या माया सो येदूनें तुम को उलाटन कहे उलटिकै जवाब देइहैं कि बिद्या माया करिकै मुमुक्षुहै मुक्तिकी इच्छा करतरह्यो सो अबहम तुमहीं को लपेटिलियो तुम हमको त्यागत रह्योहै अबनहीं छूटि सकौहौ या जवाब सुनि तुम लाजिकै मुख गोइ रहौहौ लाचारहै छूटि नहीं सकौहौ १२ ॥

गुरुभोढीलगोनभोलचपच कहानमानेहुमोराहो ।
ताजीतुरकीकबहुंनसाजेहु चढ़ेनकाठकेघोराहो १३

जो गुरुवा लोग तुमको उपदेशकियो ते गुरु ढीलह्वैगये काहेते किजौन जौन उपासनाकी गोन तुम्हारे ऊपर लादिदियो तेते देवता लचपचह्वैगये कहे उनके छड़ायेते नाछूटे संसारमें परेजाय देवताके फुरते न उत फुर होइहै जब देवते नफुरे तब गुरुवा ढील परिगयो सो कबीरजी कहै हैं कि जोमैं कहतरह्यो सोतुमनामान्यो कि रकार मकारजपौ याहीते छूटौगे ताजी तुरकीजो रकारमकार ताको कबहूं न साज्यो कहे कबहूं रामनाम नालियो जो साहबके पास लैजाय काठको घोराजोहै मनजड़ तामेंचढ्यो सो कूदिकै संसार गाड़में डारिदियो जो ताजी तुरकी रामनाम तामेंचढ़त्यो तौ तुमको कूदिकै साहबके पास पहुंचावतो १३ ॥

तालझांझभलबाजतआवै कहरासबकोइनाचैहो ।
जेहिरँगदुलहाब्याहनआये तेहिरँगदुलहिनिराचैहो १४

गुरुवा लोगनकी ओठ झांझहै औ जीभ तालदेइहै वही ब्रह्महीमें ताल देयहै कहे नानाबाणीकरिकै नानामतन करिकै वहीब्रह्ममें चुवामैहै अथवा जाको जौन उपासना बतावैहै ताको तौन इष्टदेवताहै ताही को ब्रह्मकहैहैं ताहीको सबकुछ कहैहैं उहै तालको मानदेइहैं अर्थात् सब शास्त्रकोअर्थ वाहीमें पर्यवसान करैहै और गुरुवनमें लगिकै सुखबाचक जोकातौन हरागयो कहे परमपुरुष श्रीरामचंद्रको भूलिगये संसारमें सबजीव दुखि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याहि नाचनलगे कोई रजोगुणी उपासनामें राचतभये कोई तमोगुणी उपासनामें राचतभये कोई सतोगुणी उपासनामें राचतभये जेहि रंग दुलहा जेउपासनावारेजीव ब्याहनआये कहेगुरुवालोग जौनरंगमें लगायो तेहि रंगमें दुलहिनिबुद्धि रचतभई १४ ॥

नौकाअक्षतखेवैनहिंजान्यो कैसेहुलागहुतीराहो।
कहैकबीररामरसमाते जोलहादासकबीराहो १५

अक्षत नौका जो रामनामहै ताको खेवै न जान्यो कहे जौने बिधिते संसार सागरते पारकै देइहै सो बिधि रामनाम जपिबेकी नाजान्यौ सो कैसे संसारसागरते पारह्वैकै तीरलागौगे सोश्रीकबीरजी कहैहैं कि जोलहा कहे जोकोई रामरस लहाहै अर्थात् रामरसपाय मातोहै सोई संसार सागरको पारपायोहै सोई कायाको बीर जीव परमपुरुष श्रीरामचंद्रको दास भयोहै जो माते पाठहोय तौ याअर्थहै कि कबीरजी कहैहैं किजाति कोमैं जोलहा सोरामके रसमें मातेते मैं दासकबीर कहवावनलग्यो पार्षदरूप जो हंसस्वरूप याही शरीरमें पायगयो संसारको पारह्वैगयो परम पुरुष श्रीरामचंद्रको दासह्वैगयो तुम ब्राह्मणादिक जोरामरसमें मतौगे तौ कैसे संसार सागरते ना पारहोउगे पारही ह्वै जाउगे कबीरजी रामरसमें मतिकै बचिगये तामेंप्रमाण॥ सायरबीजकको ॥ हमनमरैंमरिहैसंसारा। हमकोमिलाजियावनहारा ॥ अबनामरौमोरमनमाना। तेईमुवाजिनराम नजाना ॥ साकतमरैसंतजनजीवै। भरिभरिरामरसायनपीवै १५ इतिपहिलाकहरासमाप्तम् ॥

अथदूसराकहरा ॥

मतिसुनुमाणिकमतिसुनुमाणिक हृदयाबंदिनिवारौहो १ अटपटकुम्हरा करैकुम्हरिया चमरागाउनब्रांचैहो। नितउठिकोरियाबेटभरतुहै छिपिया आंगननाचैहो २ नितउठिनौवानावचढ़तहै बरहीबेराबारिउहो। राउरकी कछुखबरिनजान्यो कैसेझगरनिवारिउहो ३एकगांवमेंपांचतरुणिबसैं तिन मेंजेठजेठानीहो। आपनआपनझगरपसारिनि प्रियसों प्रीतिनआनीहो ४ भैंसिनमाहँरहतनितबकुला तकुलाताकिनलीन्हाहो। गाइनमाहँबसेउ नहिंकबहूं कैसेकैपदचीन्हाहो ५पधिकापंथबूझिनहिंलीन्हो मूढ़हिमूढ़ग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाराहो। घाटछोड़िकसऔवटरेंगहु कैसेलगबेहुपाराहो ६ जतइतकेधन हेरिनिललइच कोदइतकेमनदोराहो। दुइचकरीजिनदरनपसारिहु तब पैहौठिकठोराहो ७ पूरे मबानयकसतगुरुदीन्ह्यो गाढ़ोतीरकमानाहो। दास कबीरकियो यहकहरा महरामाहिसमानाहो ८॥

मतिसुनुमाणिकमतिसुनुमाणिक हृदयाबंदिनिवारौहो १

श्रीकबीरजी कहेहैं कि हेजीव तैंतो माणिकहै माणिक लालहोयहैं सो तैं कहां संसारमें अनुराग करिकै लालह्वैरहे साहबमें अनुरागकरि लाल होइ गुरुवालोगनकीबाणीतैं मतिसुनु मतिसुनु आपने हृदयकी जोसंसार-रूपी बंदि ताको निवारु १॥

अटपटकुम्हराकरैकुम्हरिया चमरागाउनबाचैहो।
नितउठिकोरियाबेटभरतुहैछिपियाआंगननाचैहो २

काहेते कि अटपट कुम्हराजो या मनहै सो कुम्हरिया करैहै कहे नाना शरीर रचैहै जैसे कुम्हार नानाबासन बनावैहै ऐसे यामन नानाशरीर रचैहै सो शरीरजो गाउहै तौन चमरा कालके मारे नहीं बचैहै मन रचतजाइहै शरीर काल खातजाइ औ कोरियाजे मुनिलोगहैं सत रज तम ग्रन्थप्रवर्तन वारे ते बेट भरतिहैं कहे बनावत जाइहैं तेई ग्रन्थनको लैकै छिपिया जे गुरुवा लोगहैं तेआंगन आंगन नाचैहैं अर्थात् चेला हेरत फिरैहैं नानामतमें सोकै नानामतमें लगावत फिरैहैं २॥

नितउठि नौवा नावचढ़तहै बरहीबेराबारिउहो।
राउरकीकछुखबरिनजान्योकैसेकैझगरनिवारिउहो ३

नोवाजो संन्यासी जौन आपनो मूड़ मुड़ावैहै आनौको मूड़िकै चेला बनाइ लेइहै सो बेरमात्र जोनाव तामें चढ़िकै संसार समुद्रपार होवा चाहैहै औ नाना देवतन प्रतिपाद्यजे ग्रन्थ तेईहैं बरही कहे बोझा ताहीको बेरा रचिवारीजे नानाउपासना वारेहैं तेसंसार समुद्रको पारहोवा चाहैहैं राउरजो परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्रको घर ताको जानतही नहीं या झगरा कैसेकै निवारण होइ साहबते तो चिन्हारिमि नहीं है कबहूं माया पकरि लेइहै कबहूं ब्रह्म पकरि लेइहै कबहूं मनपकरि लेइहै इत्यादिक जेई पावैहैं तेई धरि लेइहैं सो कैसेकै झगहानिवारणहोइ ३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकग्राममेंपांचतरुणिबसैं तिनमेंजेठजेठानीहो।
आपनआपनझगरपसारिनि प्रियसोंप्रीतिनशानीहो ४

एक गाउँ जो यासंसार तामेंपांच तरुणिजे ज्ञानेंद्री ते बसैहैं ज्ञानेंद्री ते कर्मेन्द्रिउ आइगईं तिनमें जेठमन जेठानी मायाहै सोई दशौइंद्री आपन आपन झगर कहे अपने अपने बिषय ओर मनको खैंचतभईं सो मनके अधीनहै जीव सोऊ वहीकैत चलोगयो परमपुरुष परजे श्रीरामचंद्र प्रीतमहैं तिनसों प्रीतिनशाइगई ४ ॥

भैंसिनमाहँरहतनितबकुला तकुलाताकिनलीन्हाहो।
गाइनमाहँबसेहुनहिंकबहूं कैसेकैपदचीन्हाहो ५

सो भैंसीजे दशौ इंद्रीहैं तिनमें बकुला जोमन सो रहैहै जैसे भैंसी जब जलमें परैहैं तब बकुला वाके ऊपर बैठ रहैहै जो मछरी भैंसिन के किलनी खाबेको आई सो बकुला खायलीनो ऐसे इंद्री जब बिषयओर चली तब मनही भोग करैहै इन्द्री द्वारा ताते मनको बकुलाकह्योहै सो हेजीव तैंतो तकुलाहै कहे ताकनवारोहै काहे न ताकिलीन्हा औ साहब के गावनवारे जे संत तिन गाइन में कबहूं बसबैनकियो परम परुष पर श्री रामचन्द्र को पद कैसेकै चीन्हो ५ ॥

पथिकापंथबूझिनहिंलीन्हो मूढ़हिमूढ़गवांराहो।
घाटछोड़िकसऔघटरेंगहुकैसेकैलगिहौपाराहो ६

साहब जे श्रीरामचन्द्र तिन के पंथ के चलनवारे जे पंथी संत जन तिनसोंतौ पंथ बूझि न लीन्हेउ मूढ़ जे गुरुवालोग तिनकीबाणी में परिकै मूढ़ह्वै गयो गवांर ह्वै गयो सो साहब के पहुंचबे को जो घाट ताको छोड़ि औघट जो माया ब्रह्म तामें चलोहौ सो कैसे कै पार लागौगे ६ ॥

जतइतकेघनहेरिनिललइचकोदइतकेमनदोराहो।
दुइचकरीजिनदरनपसारेहुतहँपैहहुठिकठोराहो ७

जत इत के कहे जिन के जतवा चलैहै सो जतइत कहावैहै सो धोखा ब्रह्म है जो सब को दरि डारै है सब को मिथ्यै मानै है तहां ललइच जे लालची हैं ते धन जो मुक्ति ताको हेरिनि सो उहौं न पाइन तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोदइत जे गुरुवालोग जिनके नाना उपासना रूप को दौराजाय है तिनके इहांगये कि इहां मुक्तिधन मिलैगो सो कबीरजी कहैहैं कि जतइत के तो धनको ठिकानै न लग्यो तौ कोदइत जे माटीके दुइ चकरी बनाइ दरनापसारैहैं तहां ठीकठौर पैहौ अर्थात् नापैहो साहब को जानौगे तब हीं ठिकान लागैगो ७॥

प्रेमवाणयकसतगुरुदीन्होगाढ़ोखैंचिकमानाहो।
दासकबीरकियोयाकहरामहरामाहिंसमानाहो ८

श्री कबीरजी कहैहैं कि हे जीवौ तुमयामें पार न जाउगे जब ऐसो करौ तबपारै जाउगे प्रेमको तो बाणकरु औसतगुरु जोज्ञान दीन्हो है ताको कमान करि गाढ़ोखैंचि साहबरूप जो निशानाहै तामैं प्रेम बाण मारु अर्थात् प्रेम लगाउ हेसाहबको सदाको दास कायाकेबीर जीव या कहरामें संसारको कहरहै सोकहाकियोहै महरामाहिं समानाकहे जेसाहब के महरमीहैं तेहीमें समाय अर्थात् उनहीं को सत्संगकरु काहूगाढ़ो खैंचि कमाना यहीपाठहै अथवा हेकबीर कायाके बीरजीव मनमाया ब्रह्मकेदास ह्वै यहसंसारतैं किये सोकहरा कहे कहर करन वारोहै सोतैं आपनो रूपतौ बिचारु कहांमाया दासह्वैरहैहै तैंमहरा कहे मायाके हरन वारे जेहैं साधु तेहीमाहिं समाना कहे तैंतिनके बरोबरहै जोतैं आपने स्वस्वरूपको जानैहै ८ इतिदूसराकहरासमाप्तम्॥

अथतीसराकहरा॥

रामनामको सेवहुबीरा दूरिनहीं दुरिआशाहो। औरदेव का पूजहुबौरे ईसब झूठीआशाहो १ उपरके उजरे कहभोबौरे भीतर अजहूं कारोहो। तनको वृद्धकहाभो बौरे ईमन अजहूं बारोहो २ मुखकेदांत गयेका बौरे अंदर दांतलोहेके हो।फिरिफिरि चनाचबाउ विषयके कामक्रोध मदलोभे हो ३ तनकी शक्तिसकल घटिगयऊ मनहिं दिलासा दूनीहो। कहै कबीर सुनोहो संतो सकल सयानप ऊनीहो ४॥

रामनामकोसेवहुबीरा दूरिनहींदुरिआशाहो।
औरदेवका पूजहुबौरे ईसब झूठीआशाहो १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेकायाके वीरो जीवो रामनाम को सेवन करो रामनाम दूरिनहीं है तुम्हारी आशादूरिहै और देवको हेबौरे कापूजहु हौ इनकी आशा सब झूठीहै १ ॥

उपरके उजरेकहभो बौरे भीतरअजहूंकारोहो।
तनको वृद्धकहांभोबौरे यामनअजहूंबारोहो २
मुखकेदांतगयेकाबौरे अंदरदांत लोहेकेहो।
फिरिफिरिचना चबाउविषयके कामक्रोधमदलोभेहो ३

हेबौरे जो ऊपर बहुत ऊजरबनेरह्यो बहुतआचारकियो तौकहा भयो भीतर तो अजहूं करियैहौ औ तनकी बड़ीवृद्धता मान्यो तौ हेबौरे कहा भयो मनतो अजहूं बारो कहे लरिकवा बनाहै वहीचाल चलैहै २ औमुख केदांत गिरिगये तौहे बौरे कहाभयो अंतष्करणके जेबिषयके चना चाबन वारे ऐसे लोहेके दांततो गाबैन भये काम क्रोध मद लोभ बनेन हैं मिटबै न भये ३ ॥

तनकीशक्तिसकलघटिगयऊ मनहिंदिलासादूनीहो।
कहैंकबीर सुनोहोसंतौ सकल सयानपऊनीहो ४

हेबौरे तनकी सकल कहे रूपविषय करनवाली सामर्थ्य घटिगईऔ संगी मरिगये पै दिलकी दिलासा जो तृष्णा सोतौ घटिबै न भई सो कबीरजी कहैहैं कि हे संतो तुम सुनो या सबजीवनकी सयानपऊनी है अर्थात् तुच्छहै बिना रामनामके जाने जननमरन न छूटैहै तामें प्रमाण कबीरजीका ॥ जोतैंरसनारामन कहिहै। उपजतबिनशतभरम तरहि है ॥ जसदेखी तरुवरकी छाया। प्राणगये कहुकाकीमाया ॥ जीवतकछु न किये परमाना। मुयेमर्म कहु काकरजाना ॥ अंतकालसुखकोउनसोवैं। राजारंक दोऊमिलि रोवैं। हंससरोवर कमल शरीरा रामरसायन पिवै कबीरा ४ इतितीसराकहरासमाप्तम ॥

अथचौथाकहरा ॥

ओढ़न मेरोरामनाम मैंरामहिंको बनिजाराहो। रामनामको करौं बनिज मैं हरिमोरा हटवाराहो १ सहसनामको करौं पसारा दिनदिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होतसवाईहो। कानतराजू सेरतिनपौवा डहकिनढोल बजाईहो २ सेर पसेरीपूरा करिले पासक कतहुं न जाईहो। कहैकबीर सुनोहोसंतो जोरि चले जहडाईहो ३ ॥

ओढ़नमेरोरामनाम मैंरामहिंकोबनिजाराहो।
रामनामकोकरौंबनिजमैं हरिमोराहटवाराहो १

श्री कबीरजी कहै हैं कि पाषंडी लोग जेहैं ते कहै हैं कि हमारोओढ़न रामनामहीहै अर्थात् रामनामही के ओढ़रते ठगिलेहिहैं परमतत्व जोराम नामहै तौनेकेठगिबेको ओढ़रबनायेहैं काहे न मारेपरैं कौनी तरहतेकिबड़े बड़े टीका दैलिये माला जपैहैं न रामनामको तत्व जानैं न अर्थ जानैं ना जपैके बिधिजानैं ना नामापराधदश जानैं औया कहैहैकिहमरामनाम को बनिजारा है औ रामनामकी बनिज करैहैं औ हरिजेहैं तेईहमारेहट-वारेहैं कहे दलालहैं अर्थात् हम उनहीं केद्वारा सबरामनामको सौदालेहि हैं उनकी प्रेरणा ते हम मन्त्र देइहैं जो वाके भागमें होयगो सो होयगो हमारो पैसा धोतीतो हाथ को न जायगो जो कोई कहैहै कि शिष्यपरी-क्षाकैलेउ तो या कहैहै कि कहां को बखेड़ा लगायो है हममन्त्र दैदियो वा जो चाहै सो करै मुक्ति होइजाइगो १ ॥

सहसनामकोकियेपसारा दिनदिनहोतसवाईहो।
कानतराजूसेरतिनपौवा डहकिनढोलबजाईहो २

औ या कहैहै कि एकनामकेलीन्हेंते सर्बकर्म छूटिजाइहैं हमतोहजा-रन नाम को पसारा करैहैं कहे हजारन नाम लेइहैं कर्म कहां रहैंगे सब छूटि जायँगे हमारे सुकर्म दिन दिन सवाई बढ़ैंगे सो दोऊ गुरूचेलनको ऐसो हवाल है चेलनके कानजे हैं तेई फेरहातिरजुवाहैं औ तीनपावका सेरहै अर्थात् त्रिगुणात्मक मनहै सो मन बचन के परे जो रामनाम सो गुरुवालोग तौलिदियो अर्थात् मन्त्र दियो डहकिन ढोलबजाई कहेचेला लोग चारिउ ओर कहिआये कि हम मन्त्र लियोहैंकै डहकाइ गये ढोल बजाइ २ ॥

सेरपसेरीपूराकरिले पासँगकतहुंनजाईहो।
कहैकबीरसुनोहोसंतो जोरिचलेजहडाईहो ३

गुरुवन के उपदेशते सेरजो है मन पसेरी जो है ब्रह्मज्ञान सो पूरोक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहरा ।

लिं अर्थात् सर्वत्रब्रह्मको पूर्णमानै परन्तु पसंघा जो मूलाज्ञानसोकतहूं न जायगो वाही में परिकै अन्तकाल में जहडायकै कहे डहकाय चले जायँगे ३ इतिचौथाकहरासमाप्तम् ॥

अथपांचवांकहरा ॥

रामनामभजुरामनामभजु चेतिदेखु मनमाहिं हो । लक्षकरोरिजोरिधन गाड़े चले डोलावत बाहीं हो १ दाऊदादा औ परपाजाउइगाड़े भुइँहांड़े हो । अँधरे भये हियो की फूटी तिनकाहें सबछांड़हो२ ईसंसारअसारको धन्धा अन्तकाल कोइ नाहीं हो । उपजत बिनशत बार न लागै ज्यों बादर की छाहीं हो ३ नाता गोता कुल कुटुम्ब सब तिनकी कवनि बड़ाई हो । कह कबीर एक रामभजेबिन बूड़ी सब चतुराई हो ४ ॥

रामनामभजुरामनामभजुचेतिदेखुमनमाहींहो ।
लक्षकरोरिजोरिधनगाड़ेचलेडोलावतबाहींहो १

श्री कबीरजी कहैहैं कि हेमूढ़ परमपुरुष श्रीरामचन्द्रकोरामनामताको भजुभजुभजु सेवाधातु है सोयाहीरामनामको सेवाकरु रामनाममनवचन के परेहैं सो आगे लिखि आयेहैं आपने मनमें चेति कहे बिचारिकै देखु तो लाखन करोरिन धन जोरिकैगाड़िगाड़िधर्यो जब मरण लाग्यो यमदूतलैजानलगे तब बाहीं डोलावत चलौहो किवेधनहमारे नहीं हैं १ ॥

दाऊदादाऔपरपाजाउइगाड़ेभुइँभाड़ेहो ।
अँधरेभयेहियोकीफूटीतिनकाहेसबछांड़ेहो २

जो कहो वा जन्म कब देख्योहै तौ तेरे दाऊ दादा औ परपाजा वे भुइँमें केतौ भाँड़े गाड़िगाड़ि मरिगयेहैं उनही के साथ कबैधनगयोहै सो तैं अंधरे ह्वैगये तेरे हियो की फूटि गईहैं जैसे सबधन छोड़िकै वे चले गयेहैं धनको मालिक तुही भयो ऐसे तुहूँ धन छोड़िकै चलो जायगो तेरो धन औरही को होयगो तेरे हाथ कछु न लगैगो २ ॥

यासंसारअसारकोधन्धाअन्तकालकोइनाहींहो ।
उपजतबिनशतबारनलागैज्योंबादरकीछाहींहो ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या संसारअसारकहे झूठही को धन्धाहै अन्तकालमें कोईआपनोनही है जो कहो कि हम जावही नाकरैंगे बनेही रहैंगे तो शरीरके उपजत बिनशतमें बार नहीं लगैहै जैसेबादरकीछाहीं भई औ पुनिमिटिगई३ ॥

नातागोताकुलकुटुम्बसबतिनकीकवनिबड़ाईहो ।
कहकबीरयकरामभजेबिन बूड़ीसबचतुराईहो ४

बड़े गोत के भये बड़े कुलके भये बड़ीबड़ी जातिके नातभये तिनकी कौन बड़ाई है ये तो सब शरीरही के हैं जब तेरो शरीर छूटि जायगो तब तेरो शरीरही कोई न छुवैगो ताते ये सबनातगोत जबभरशरीर बनो है तबही भरके हैं शरीर छूटे येसब छूटि जाइहैं इनकी कौन बड़ाई है सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि एक जे परमपुरुषपर श्रीरामचन्द्रहैं तिनके रामनामके भजे कहेसेवा किये बिन सबचतुराई तिहारी बूड़िजायगी नरकही को जाउगो जेजे आपनी आपनी कल्पनाते नाना उपासनाकै लियेहो तिनते चाहोहो कि हमारी मुक्ति ह्वै जायगी ते एकहू काम न आवैगो तामें प्रमाण श्रीगोसाईंजी को पद ॥ रामकहतचलु रामकहतचलुरामकहतचल भाईरे । नाहिंतो भवबेगारिमें परिहौ पुनिछूटब अति कठिनाईरे । बांस पुरान साजु सब अटखटसरल त्रिकोण खटोलारे । हमहिं दिहलकरि कुटिल करमचँद मंदमोल बिनडोलारे । बिषमकहारमार मदमाते चलैन पाय बटोरेरे । मन्दबेलन्द अभेरादलकनि पाई दुख झकझोरेरे । काट कुराय लपेटन लोटन ठामहिं ठामबझाऊरे । जसजस चलियदूरि निज तस तस बांसन भेंटलकाऊरे । मारगअगम संग नहिं संबल नामगाम करभूलारे । तुलसिदास भवत्रास हरहुअब होहुरामअनुकूलारे १ राम कहतचलु रामकहतचलु रामकहतचलुभाईरे ॥ अब गोसाईंजी जीवन को उपदेश करैहैं इहां रामकहत चलु तीनिबार कह्यो सो मुक्त मुमुक्षुविषयी तीनों जीवनको कहैहैं सो गोसाईंजी आपनी रामायणमें कह्योहै चौ० ॥ बिषयीसाधकसिद्धसयाने । त्रिबिधिजीवजगवेदबखाने ॥ रामसनेहसरस मनजासू । साधुसभाबड़आदरतासू ॥ सिद्धिबिरक्तमहामुनियोगी । नामपू सादब्रह्मसुखभोगी ॥ यातेयह की रामबिना मुक्तहुनकी गति नहीं है अरु भाई जो कह्यो सो जीवके नाते कहै हैं कि हम सब यती हैं अरु इहां एक बचन कहैहैं सो प्रति जीव सो पृथक् कहै हैं कि हे भैया या दुःख मार्ग त्यागिदेउ यामें दुःख पायोगे ताते रामकहते चलो ॥ नहिं तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवबेगारिमें परिहो पुनि छूटब अतिकठिनाईरे ॥ नहीं तो भवजोसंसार है ताके बेगारि में परोगे बेगारिपरिबो कहा है जाते संसारते कबहूं न उद्धार होइ ऐसे कर्म माया तुमको धरिकै करावैगी जोशरीर रूप डोलाको गुमान किये होहु कि डोला चढ़ि बेगारि न परैंगे तो धनवारो समरथ है डोलामें चढ़ेहू धरिलेइगो तब कठिन ह्वैजायगो जैसे फिरङ्गी म्याना पालकिनवाले को बेगारि पकरैहै तब कोई कहैहै कि ये तो बड़े आदमी हैं इनको सड़क खोदाना चाहिये तब अँगरेज लोग कहैहैं कि हमारे इहां दस्तूरहै म्याना चढ़ेजाइ वहीमें फरुहा कुदारी धरेजाइ सो पालकिउ चढ़े बेगारिधरिजाइहै औ डोलहू तिहारो जर्जरहै सोकहैहैं ॥ बांसपुरानसाजुसबअटखट सरलतिकोन खटोलारे। हमहिं दिहलकरि कुटिल करमचँदमंद मोल बिनडोलारे ॥ प्रारब्धजो है सोई पुरानबाँसहै काहेते कि संचित तो प्रारब्धभैहै तेहिते महापुरानहै औ सबसाज अटखट कह्यो सो आठ औ खटकहे चौदह साजहैं शरीर-रूपी डोलाकी सो कहैहैं त्वचारुधिर मांसअस्थि मेद मज्जा शुक्रकेश रोम नस नख दंत मलमूत्र सो त्वचा डोलाको वोहारहै औ रुधिरवोहार को रंग औ मांस वोहारकी तुईहै औ अस्थिडोलाको काठहै औ मेद मज्जाडोलाको तकिया बिछौनाहै औ नस रसरीहै औ नख लोहेकीपतुरी है औ दांतखीलाहै औ मलमूत्र लघुतहै औ घुनकोकीराहै काहेते कि कीर-नहू में पानी होयहै अथवा साजु सब अटखट जो यहपाठहोइ तो पुरजा पुरजा जोरैहै यही अर्थहै औ सरल जो कह्यो सो सरोहै कहे रोगनते गूसितहै औ तिकोन खटोला जो कह्यो डोलामें सोशरीरकी तीनअवस्थाहैं जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति याहीमें परोरहैहै सोई तिकोन खटोलाहै अथवा बालापन युवापन वृद्धापन ईतीनौ पन तिकोनखटोलाहैं शरीररूपी डोलामें सो ऐसो डोला कुटिल करमचंदकहे कुटिल कलंकी करमकरिकै कहे बनायकै हम सबको दीन्होहै औ ऐसोनिबलडोलाहै औमंदमोल बिन जो कह्यो सो औरको मांस भोजनहू में कामआवै है यह मानुष शरीरको मांस बेचिबेहूते कोऊ नहीं लेइ याते मंदमोलकहे थोरहूमोल बिनाहै सो ऐसो डोलामें चढ़िकै हेभैया यासंसार मार्गमें न चलोगे तो कलंकी करमकोदियोहै डोलातुमहू को कलंकलागिजाइगो यह जर्जर डोलाजो संसारमार्गमें टूटैगो तौ फँसिजाउगे फिर ना निकसौगे जोनाम सड़क चलौगे तौ या सड़क रामघाटहोलगी है डोला टूट्यो दिव्यरूपते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंखीमूंदेहू चलेजाउगे अथवा दिव्यरूपते बिमान चढ़िचलेजाउगे कैसो है डोला सोकहैहैं॥बिषमकहारमारमदमाते चलहिंनपायबटोरेरे । मंदबि-लंदअभेरादलकनि पाईदुखझकझोरेरे ॥ बिषमकहे कहार जेहिको पाचो इन्द्री सो एकतो समनहो है दूसरे स्वभावईते बिषमहै तीसरे मार मद-मातेहैं सो मतवारेके पायं समनही परेहैं चलतमें पाय बगरिजाइहैं पाय बगरिबे कहे रूपरस गंध स्पर्श शब्द इनमें जाय रहैहै फिरि मार्ग कैसोहै मंदकहे नीचहै बिलंदकहे ऊंचहै अर्थात् कहूं अपमानते दीन ह्वैजाइहै अ-पनेको नीच मानैहै कहूं मानते अपनेको बड़ोऊंच मानैहै औकहूं अभेरा कहे धक्कालगि जायहै धक्का कहाहै कहूं पुत्रमरिगयो भाई मरिगयो चोर चोरायलियो सो यालोकमें लोगकहैहैं कि हमको बड़ो धक्कालगो दलकनि कहाहै कि विषय सुखदेतमें अच्छो लगैहै जबवामें परयो तब बिषयदल दलमें फँसिजायहै औ पाईदुख झकझोरे कहे डोलामें झकझोरा लगैहै सो इंद्रीरूप कहारगिरैहैंकहूं उठैहैं ताते विकलताई झकझोराका दुखपाइतहैं॥ कांटकुरायलपेटनलोटन ठामहिठावँबझाऊरे । जसजसचलियदूरिनिज तसतस बासनभेटलकाऊरे ॥ कहो कांटहैं कहे सुंदर रूपहै सो नयनरूपी कहारनके छेदि जायहैं तब गिरिजायहैं कहे आशक्त ह्वैजायहैं औ कुराय सजलहोइहै सोरसहै तामें रसनारूप कहार बूड़िजायहै औ लपेटनफूली लताहै तेईगंधहैं तामें नासिकारूप कहार लपटिकै गिरिपरैहै लोटनलोक में सर्पको कहैहैं सो स्पर्शहै त्वचारूप कहारनको डसिडारैहै कामिनीके एकअंग छुवतमें सर्वांग कामबिष चढ़िजायहै याते स्पर्शको लोटन सर्प कह्यो है औ ठांवहिं ठांव बझाऊकहे मोहरूप शिकारी सो नाना बिषय की कथा औ नानाभूत यक्षनादिक सेवन ते सिद्धि की प्राप्त तिनकी कथा औनाना तो सममत तिनकीकथा सो शब्दरूप बा गुरि ठामहिठां-वलगाय राख्यो है तामें श्रवणरूप कहार अरु झिकै डोला डारिदेइ है फिरि संसारमग कैसोहै ज्योंज्यों संसारपथ में चलियतु है त्यों त्यों दूरि रामपुर परतोजायहै भैया रामपुरकी गैलनही है औरराहहै फिरि कैसोहै यामें बास नहीं है अर्थात् कल नहीं रहैहै कर्म करतई जायहै शांत ह्वैकै कोईनहीं टिक्यो ॥ मारग अगम संगनहिंसम्बल नाम ग्रामकर भूलारे । तुलसिदास भवत्रास हरहु अब होहुराम अनुकूलारे ॥ सो यापूकार यह मार्गहै संसार सोईपृथ्वीहै तामें बिषयकेहेतु नानायतनकरिबो अरुराजस तामस शास्त्रमार्ग तदनुसार कर्म करिबो सोई चलिबोहै ताको गोसाईंजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहैहैं कि अगमहै कहे चलिबे मआफिक नहीं है औनाम मार्गमें संतनको संगहै तेरामपुरको बिघननाशिकै पहुंचाइदेइहैं यहांकैसोहै संगनहिं संबल कहे सम्यक् है बलजेहिके ऐसे सतसंगमें नहीं है अथवा नाना मार्गमें तो सात्विक श्रद्धा कलेवा मिलैहै या मार्गमें श्रद्धारूप कलेवा नहीं मिलैहै सो गोसाईंजी अपनी रामायण में लिख्योहै जेश्रद्धा संबल रहित इत्यादिक औजागाउको तुमको जानोहै ताकोनामही भूलिगयोहै भूलाजोकह्यो सोगर्भ में सुधि होयहै फिरिभूलि जायहै याते भूलाकह्योहै अथवा जीवनाम ग्राम कर भूलाहै नाना देवतनको नामलेइहै औतिनही के धाम जाइबेकी इच्छा करैहै सोतेरोतेनामनते भवबंधना छूटैहै न तेधामनमेंगये तेरो जननमरण त्रास छूटैगी सो अबगोसाईंजीकहैहैं कि हेभैया अबअपने अपने जीवनपै दयाकरि संसारकी त्रासहरो अब काहेते कह्यो कि अनेकजन्म भटकि कै अनेक शरीरपाइकै मनुष्यको शरीरपायोहै सोअबहूं नाममार्ग चलौ याते अब कह्योहै औ होहु रामअनुकूला जोकह्यो सोउपक्रममें नाममार्गबता-यो ताको चलिकै उपसंहार में होहु रामअनुकूला कह्यो सोएक उपलक्षण है छः प्रकारकी शरणागतीको सूचन कियोहै उपक्रममें नाम मार्ग बतायो उपसंहारमें शरणागती बतायो सोई श्रीगोसाईंजी कहैहैं किहे भैया रघु-नाथजीको नामजपौ औ शरण जाउ याहीमें उबारहै औरमें नहीं है षट विधि शरणागतकोलक्षण॥अनुकूलस्यसंकल्पः प्रतिकूलस्यवर्जनम्॥ रक्षिष्य-तीतिविश्वासो गोप्तृत्ववरणंतथा ॥ आत्मानिक्षेपकार्पण्येषड्विधाशरणा गतिः ४ इतिपांचवांकहरासमाप्तम् ॥

अथछठवांकहरा ॥

रामनामबिनु रामनामबिनु मिथ्याजनम गँवाईहो १ सेमरसेइ सुवाजो जहड़े ऊनपरे पछिताई हो। जैसे मंदिप गांठि अर्थदै घरहुकी अकिल गँवाईहो २ स्वादे उदर भरतधौं कैसे ओसैप्यास नजाईहो। द्रव्यक हीन कौन पुरुषारथ मनही माहँ तवाईहो ३ गांठीरतन मर्मनहिं जानेहु पारख लीन्ही छोरीहो। कहकबीर यहअवसर बीते रतन न मिलै बहोरीहो ४ ॥

रामनामबिनु रामनामबिनु मिथ्या जनमगँवाईहो १

उपासक जेहैं तेपंचोपासना करिकै औ कापालिकादिक मतवारे देवतनकी उपासनाकरिकै नास्तिमरबई मोक्षमानिकै व्याकरणी शब्दज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करिकै ज्योतिषीकालःज्ञानकरिकै सांख्यवाले प्रकृतिपुरुषः ज्ञान करिकै पूर्वमीमांसा वारे कर्महीकरिकै नैयायिक दुःखध्वंसही करिकै औ कणाद वाले नौगुणध्वंसही करिकै औशंकरवेदान्तवाले ब्रह्मज्ञानही करिकै इत्यादिकमुक्तहोव मानेहैं परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र तिनहीं बिना औतिनके रामनाम बिना मिथ्यै जनम गँवाइ दियो १ ॥

सेमरसेइ सुवाजो जहड़े ऊनपरे पछिताईहो ।
जैसेमदिपगांठि अर्थैदै घरहुकीअकिलगँवाईहो २

जैसे सेमरकेफलको सुवासेयो चोंचचलायो जबवामें घुवानिकस्यो तब भोजनते ऊन कहे खालीपस्यो भोजन न पायो तब पछितायकै कहे जहड़ कै भोजन डहकायकै चल्यो ऐसे जीव नानामतन में परिकै मुक्ति चाह्यो जबमुक्ति न पायो तबमुक्ति डहकाइकै संसारमें परयो औजैसेमदिपकहेमतवार गांठीको द्रव्यदैकै मदपियो घरौकी अकिलगँवाइ दियो तैसे गुरुवा लोगनको गांठिकी द्रव्यदैकै मंत्रलैकै और और मतनमें लगिगये घरौकी अकिल गँवाइदियो कहे साहबको सदाकोदासहै जीवसो अपने स्वरूपकोभूलिगयो २ ॥

स्वादेउदर भरतधों कैसेओसै प्यास न जाईहो ।
द्रव्यकहीन कौनपुरुषारथमनहींमाहँ तवाईहो ३

जौनेमतमें स्वादपायो सो तौनेहीं मतमेंलग्यो सोओसतेकहूं पियास बुझाइहै ओसपरोसो ओसको जलको स्वादमुखमें आयो सो कहां स्वादते पेटभरैहै नहीं भरैहै तैसेजीव नानामतमें लग्यो नानासाधन करनलग्यो औ वेदेवतनके लोकनगयो अथवा ब्रह्मज्ञान सिद्धभयो अथवा आत्मज्ञान सिद्धभयो इत्यादिक सबसिद्धिभयो किंचित् सुखपायो तेतो ओसकोचाटिवोहै कहामुक्तिहोइहै नहीं होय है औ द्रव्यकाहीनजो पुरुषारथहै सो कौन पुरुषारथहै मनमें बहुतबिचार करैहै कि वाको दशहजार देउँ वाको पांच हजारदेउँ जबद्रव्य की सुधिआई सोद्रव्यतो हईनहीं है तबमनै में तवाई होयहैकि हायकाकरौं ऐसेनानामतनमें लगे पाछेपछिताउहोयहै अंतकाल में मैंकहाकियो साहबमें न लाग्यो जाते मुक्तिहोती ३ ॥

गांठीरतन मर्मनहिंजानेहु पारसलीन्हीछोरीहो ।
कहकबीरयह अवसरबीते रतननमिलैबहोरीहो ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याजीव सदाको साहबको अंशहै सो या रतन तुम्हारे गांठीमेंहै ताको
वहरामनाम ते पारिख करिकै छोरिलेउ साहबके गुण जीवौमेंहैं वे वृहत
वैतन्यहैं या अणुचैतन्यहै वेघनरस रूपहैं यालघुरस रूपहै ऐसो जो शुद्ध
आपनो रूपजानैं तौ रतनतेरे गांठिमेंहै ताकोमर्म तुमरामनाम बिनानहीं
जान्यो कि वा साहब कोहै मनमाया ब्रह्मको नहीं है काहेते कि गुरुवालोग
तिहारी पारख छोरिलियो औरऔर तिहारो साहब बनाइदियो सो कबीर
जी कहैहैं कि जो ऐसो मनुष्य शरीरमें साहबको ज्ञाननभयो किमैं साहब
कोहौं तौ याअवसर बीतिगये कहे याशरीर छूटिगये फेरिरतन जोहै आपने
स्वरूपको ज्ञान कि मैं साहब को अंशहौं सो पुनि न मिलैगो औ साहबको
ज्ञानके देनवारो रामनाम न मिलैगो औआगे जे कहिआये पंचागोपा-
सनावारे कापालिकादिक मतवारे व्याकरणी सांख्यमीमांसावारे नैयायिक
कणादवारे शंकर वेदांती नास्तिक मतबारे जो या कहैहैं कि हमारे मतमें
काहे मुक्तिनहीं होयहै सो कहैहैं पंचागोपासना तौ सगुणहै सोसत-
रजतम ये गुणमाया केहैं सोमायाते मायानहीं छूटैहै या असंभवहै औ
कापालिकादिकव्याकरणादि भैरवकोमानैहैंसोवेदबिरुद्धहै ईमुक्तिदाताकोई
नहीं हैं तामेंप्रमाण॥मुक्तिदाताच सर्वेषांरामएवनसंशयः॥औवैयाकरणशब्द
ब्रह्मते मुक्तिमानैहैं सो केवल शब्दब्रह्मके जानेमुक्ति नहीं होयहै जबशब्द
ब्रह्मको जानिकै परब्रह्मकोजानै तब मुक्तिहोइहै तामेंप्रमाण॥ शब्दब्रह्मणि
निष्णातोननिष्णायात्परेयदि । श्रमस्तस्यश्रमफलोह्यधेनु मिवरक्षतः ॥
औ ज्योतिषीकालज्ञानते मुक्तिमानैहैं सो कालहूके कालजे श्रीरामचंद्र हैं
तिनके बिनाजाने मुक्तिनहीं होयहै तामेंप्रमाण ॥ यःकालकालोगुणीसर्ब
वेत्ता॥औ सांख्यवारे प्रकृति पुरुषते मुक्तिमानैहैं सो पुरुषोत्तमश्रीरामचंद्रहैं
तिनकेबिनाजाने मुक्तिनहीं होयहै तामेंप्रमाण ॥ वंदेमहापुरुष ते
चरणारविंदम् ॥ औपूर्वमीमांसावारे कर्मते मुक्तिमानैहैंसो कर्मते मुक्ति
नहीं होयहैकर्मत्यागेतेमुक्तिहोयहै तामेंप्रमाण॥नकर्मणानप्रजयाधनेनत्यागे
नैकेअमृतत्वमानशुःश्रुतेः॥औनैयायिकईश्वरश्रीरामचन्द्रहीहैंतामेंप्रमाण॥
तमीश्वराणांपरममहेश्वरं ॥ औ कणादवारेनौगुणध्वंस मुक्तिमानैहैं सो
नौगुणध्वंसही मुक्तिनहीं होय है नौगुण ध्वंसभये उपरांत जब भक्ति
होयहैतब मुक्ति होयहै तामेंप्रमाण ॥ ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मा नशोच-
तिनकांक्षति । समःसर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिं लभतेपरां ॥ औ शंकर वेदांती ब्रह्म
ज्ञानकरिकै मुक्तिमानैहैं सोजीव ब्रह्मकंधी होतही नहीं है तामेंप्रमाण ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यआत्मासत्योजीवःसत्यंभिदःसत्यंभिदः॥औ नास्तिक चारिप्रकार कहैं सौगत १ बिज्ञानबादी २ सौत्रांतिक ३ चार्वाक ४ सो सौगत नामके आत्माक्षणिक नाशमान मानैहैं जैसे घट सो आस्तिक मतते बिरुद्धहै काहेते कि आत्माको नित्यमानैहै १ बिज्ञानबादी पदार्थ मात्रका ज्ञान स्वरूप मानैहै सो आस्तिक मतमें बाधकहै काहेते किजोक्षणिक ज्ञानके बाहर दूसर पदार्थ नहीं मानैहै तौ ज्ञानाश्रय आत्माके हित रातेहोइ २ औ सौत्रांतिक गुणरूप आत्मा मानैहै कौन गुण सुख बिशेषगुण सो आस्तिक मतते बिरुद्धहै काहेते आस्तिक सुखरूप सुखाश्रय आत्माको मानैहै ३ औ चार्वाक शरीरैको आत्मामानैहै काहेते प्रत्यक्षहै सो आस्तिक मतते बिरुद्धहै काहेते शरीरते अभिन्न आत्माको मानैहै याहीरीति उदयनाचार्य बौधाधिकार ग्रन्थमें बहुत नास्तिकनको खंडन कियोहै ४ औ कछु हमहूं कहैहैं औ सौगतजो आत्माको क्षणिक नाशमान मानैंगे औ चार्वाकजो शरीरको आत्मामानैंगे तो जोक्षणिक नाशमान आत्माहोत तौ भूत कैसेहोत याते सौगत निराकर्णभयो औ जो शरीर आत्मा होयगो तौ मुर्दा कैसेहोइगो शरीर काटिहूडारै चैतन्यरहैगो औ बिंज्ञानबादीजो आत्माको ज्ञानस्वरूप मानैगो तौअज्ञान कैसेहोयगो औ सौत्रांत्रिक सुख गुणस्वरूप आत्मामानैहै तौगुणतो बिनागुणी रहतई नहीं है सो गुणीकोहै जोकहो अरहनको अथवा जिनको गुणमानैहै जीवात्माको तौगुणगुणीको समवायहै गुणगुणीको छोड़िकै नहीं रहैहै सो जीवजो अज्ञानीभयो सो जाकोगुणहै जीव सोऊ अज्ञानभयो जोचार्वाक कालैकै प्रत्यक्ष मानैहै गुणगुणीको नहीं मानैहै वेदशास्त्रको कहो मिथ्या मानौहौ सोग्रहणशास्त्र में लिखैहै सो परतहीहै सो वेदको कहो कैसे मिथ्यामानै तुम्हारे शास्त्रमें लिखैहै कि पृथ्वी नीचेको चलीजाइहै सो जोपृथ्वी चलीजाती तौपाथर फेकेते फेरिकैसे पृथ्वीमें मिलतो काहेसे कि पाथर हलुकहै बिलंब पूर्वक आवाचाही पृथ्वी गरूहै जल्दी जाबाचाही ताते तुम्हारे ग्रन्थ झूठेहैं वेद शास्त्र सांचेहैं सो श्रीरामचंद्र बिना तुम मिथ्या जन्म गमाइदिह्यो ४ इति छठवांकहरासमाप्तम् ॥

अथसातवांकहरा॥

रहहुसँभारेरामबिचारेकहतअहोंजोपुकारेहो १ मूड़मुड़ायफूलिकैबैठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रापहिरि मजूसाहो। ताहिउपरककुछारलपेटे भितरभितरघरमूसाहो २ गाउँबसतहैगर्वभारती मामकामहंकाराहो। मोहिनिजहांतहांलैजैहै नहिं पतिरहैतुम्हाराहो ३ माँझमँझरियाबसैजोजानै जनह्वैहैसोथीराहो। निर्भयगुरुकिनगरियातहँवांसुखसोवैदासकबीराहो ४॥

रहहुसँभारेरामबिचारे कहतअहौंजोपुकारेहो १
मूड़मुड़ाय फूलिकैबैठे मुद्रापहिरि मजूसाहो।
ताहिउपरककुछारलपेटेभितरभितरघरमूसाहो २

श्रीकबीरजी कहैहैं कि पुकारे कहौहौं कि श्रीरामनामको बिचारत हे जीवौ यहमनको सँभारेरहौ अनत न जानपावै मैंपुकारे कहौहौं अनत जायगो तौ मारो जायगो १ ऊपरते मूड़ मुड़ायकै कानेमें मुद्रापहिरिकै अंगमें छारलपेटिकै मजूसाकहे गुफामें बैठे औ प्राण चढ़ाइकै माननलगे कि हमहीं ब्रह्महैं सो ऊपरतेतो बहुत रंगनकियो पैभीतर भीतर उनको घर मूसिगयो कहे साहबको भूलिगये २॥

गाउँबसतहै गर्वभारती मामकामहंकाराहो।
मोहिनिजहांतहांलैजैहैनहिंपतिरहैतुम्हाराहो३

यह शरीररूपी जोगाउँहै तामें गर्बको जोभाराहै सो थिरभयो कहेयह मान्यो कि यहशरीरमेरोहै तबमामजोहै ममता औकामादिकजेहैं अहंकारतेहिते भरिगयो सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि मोहनिजोहै मोहिलेनवारी माया सो जहां रहैहै तहैं तोको येसब कामादिक लैजैहै जो यह मानिराख्योहै कि प्राणचढ़ाइकै ब्रह्मांडमें लैगये मायाते भिन्नह्वैगये सो यापति तिहारी न रहैगी जब समाधिते जीव उतरैगो तब पुनि मायामें परिजाउगे ३॥

मांझमँझरिया बसैजोजानै जनह्वैहै सो थीराहो।
निर्भयगुरुकिनगरियातहँवांसुखसोवैदासकबीराहो ४

सो मांझजोहै माया काहेते किजीव साहबके बीचमें मायाको आवणहै तौनेके मँझरियामें जोजनबसै जानैहै कि मायाके बीचमें बसोहै औमाया वाको गहण नहीं करिसकैहै जैसे जलमें कमल जल नहीं स्पर्श करिसकै है काहेते साहबको जानैहै सहज समाधि लगायेहै तेई जन थिर रहैहैं अथवा साहब औ जीवके मांझकहे बिचवादक रामनाम तौनै मँझरिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहे जामिनहै साहबके पास पहुंचाइबेको तौने रामनाममें जोकोई बसै जानैहै कि मकाररूप मैंहौं रकाररूप साहबहै मैंसदाको दासहौं औराम नाम सर्बत्र पूर्णहै ऐसो जोकोई जानै सोथिर रहैहै तामेंप्रमाण गोसाईं कीचौपाई ॥ अगुणसगुणबिचनामसुसाखी । उभयप्रबोधकचतुरदुभाखी॥ फिरिप्रमाणश्लोक ॥ रकारश्चेषलोकश्चअकारोमर्त्य संभवः । मकारश्चशून्य लोकश्चत्रयोलोकानिरामयाः ॥ तामेंप्रमाण कबीरजीका ॥ क्यानाँगेक्या बांधेचाम । जोनहिंचीन्हैआतमराम ॥ नांगेफिरैयोगजोहोई । बनकोमृग मुकुतिगोकोई ॥ मूड़मुड़ायेजोसिधिहोई । मूड़ीभेड़िमुक्तिक्योंनहोई ॥ बिदराखेजोखेलहिभाई । खुसरैकौनपरमगतिपाई ॥ पढ़ेगुनेउपजैहंकारा। अधधरबूड़ेवारनपारा ॥ कहैकबीरसुनोरेभाई । रामनामबिनकिनसिधि पाई ॥ औ थिरद्वैके गुरुकहे सबतेश्रेष्ठ श्रीरामचंद्रके नगरकहे साकेत में कबीर जेजीव तेउनके दासद्वै तहां सुखसों सोवैहैं वहां और देवके उपासनावारे अहंब्रह्मास्मिवारेजेहैं तेनहीं जाइसकैहैं वेमायाहीमें रहेआवैहैं४ इतिसातवांकहरासमाप्तम् ॥

अथआठवांकहरा ॥

क्षेमकुशलऔसहीसलामत कहहुकौनकोदीन्हाहो । आवतजातदुनौबिधिलूटे सरबसंगहरिलीन्हाहो १ सुरनरमुनिजेतेपीरऔलिया मीरापैदा कीन्हाहो । कहँलौंगिनैंअनंतकोटिलै सकलपयानादीन्हाहो २ पानीपवन अकाशजाहिगोचन्द्रजाहिगोसूराहो । वहभीजाहिगोयहभीजाहिगो परत काहुकोनपूराहो ३ कुशलैकहतकहतजगबिनशे कुशलकालकीफांसीहो । कहकबीरसबदुनियाबिनशल रहलरामअबिनाशीहो ४ ॥

क्षेमकुशलऔसहीसलामत कहहुकौनकोदीन्हाहो ।
आवतजातदुनौबिधिलूटैसरबसंगहरिलीन्हाहो १

श्रीकबीरजी कहैहैं क्षेमकहे कल्याण स्वरूप सदारहै औ कुशलकहे सब बातमें कुशलहोय अर्थात् सर्बज्ञहोय औ सहीसलामत कहे जेहिके सहो ते जीव सलामत द्वैजाय अर्थात् जेहिके अपनाय लीन्हेते जीवको जनन मरण छूटिजाइ ऐसेजे अपने गुणहैं ते साहब कौने जीवको अपने बिना जानेदीन्हहै अर्थात् काहूका नहीं दीन ऐसेजे साहबहैं सरब संगकहे सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अंतर्यामी तिनको याकाल जीवको आवतकहे जनन औजातकहे मरन दूनौबिधिमें लूट्यो अर्थात् जबआयो तब गर्भको ज्ञान नाशकैदियो औजब जाइगो तब वहीको नाशह्वैगयो साहबते चिन्हारी नाकरनदियो १ ॥

सुरनरमुनिजेतेपीरऔलिया मीरापैदाकीन्हाहो।
कहँलोंगिनैंअनंतकोटिलै सकलपयानादीन्हाहो २

औ सुरनर मुनिजेहैं औ पीरजेहैं औ औलिया जेहैं औ मीरजे पादशाहहैं तिनको पैदा करतभयो और कहांलौं गिनैंअनंतकोटि जीवनको पैदाकरि पयानाकराइ देतभयो २ ॥

पानीपवन अकाशजाहिगो चन्द्रजाहिंगेसूराहो।
यहभी जाहिगोवहभीजाहिगो परतकाहुकोनपूराहो३
कुशलैकहत कहतजगबिनशै कुशलकालकी फांसीहो।
कहकबीरसबदुनियाबिनशलरहलरामअबिनाशीहो ४

पानी औ पवन औ आकाश औ चंद्रमा औ सूराकहे सूर्यऔ यहभीकहे यहजगत् औ वहभी कहेब्रह्मसोये सबचलेजायँगे सबको कालखायलियो है काहूकी पूरनही परीहै ३ सोकुशलैकहत कहतकहे कुशलै मानेमानेजग सब मरिगयो कुशलकोई न रहे कुशलकालकी फांसीहै जाकी फांसीमेंसब परेहैं सो कबीरजी कहैहैं कि सब दुनिया बिनशि जायहै जो राम करिकै जन्मबिनाशीहै सोईरहिगे अर्थात् रामके दासई अबिनाशीहैं इनको नाश नहो होयहै सोयाबाल्मीक रामायणमें प्रसिद्धहै अंगद हनुमान आदिकन को नाशनहीं भयोहै ४ इतिआठवांकहरासमाप्तम् ॥

अथनवांकहरा ॥

ऐसन देहनि रापनबौरेमुयेकुवैनहिंकोईहो। डंडकडोरवा तोरिलैआइ निजो कोटिन धनहोईहो १ उरधश्वासा उपंगजगतरासा हँकराइनिपरि वाराहो। जोकोई आवैबेगि चलावै पलयक रहननहाराहो २ चंदनचूरचतुर सब लेपै गलगजमुक्ता हाराहो। चौंचनगीध मुयेतनलूटै जंबुकवोदरफारा हो ३ कहै कबीर सुनोहो संतो ज्ञानहीन मतिहीनाहो। यकयक दिनयह गतिसबहीकी कहारावकादीना हो ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसन देहनिरापनबौरे मुयेछुवैनहिं कोईहो।
डंडकडोरवा तोरिलैआइनिजोकोटिकधनहोईहो १
उरधश्वासाउपंगजगतरासाइंकराइनिपरिवाराहो।
जोकोईआवै बेगिचलावै पलयकरहनन हाराहो २
चंदनचूर चतुरसबलेपैं गलगज मुक्ता हाराहो।
चोंचनगीध मुयेतनलूटै जंबुकवोदर फाराहो ३
कहैंकबीर सुनोहोसंतौ ज्ञानहीन मतिहीनाहो।
यकयकदिनयहगतिसबहीकीकहारावकादीनाहो ४

ऐसीदेहनिरानपनीहै कहे आपनी नहीं है और सब अर्थ प्रगटईहै श्री कबीरजी कहैहैं किजे मतितेहीन मूर्खपरमपुरुष श्रीरामचंद्रके ज्ञानतेहीन रहैंतिनके शरीरकी दशाऐसे एकदिन सबकीहै चाहैरंकहोइ चाहैराउहोइ है ४ इतिनवांकहरासमाप्तम् ॥

अथदशवांकहरा ॥

हौं सबहिनमें हौंनाहीं मोहिं बिलगबिलग बिलगाईहो। ओढ़नमेरे एकपिछौरा लोगबोलहिं यकताई हो १ एकनिरंतर अंतरनाहीं ज्यों घट जलशशिझाईहो। यकसमान कोइसमुझतनाहीं जरामरण भ्रमजाईहो २ रैनिदिवस मैं तहँवो नाहीं नारि पुरुष समताईहो। नामैं बालक ना मैं बूढ़ो नामोरे चेलिकाईहो ३ तिरबिधिरहौं सबनमें बरतों नाममोर रम राईहो। पठयेनजाउं आनेनहिं आऊं सहजरहौं दुनिआईहो ४ जोलहा तानबान नहिंजानै फाटबिनैदशठाईहो। गुरुप्रताप जिनजैसोभाष्योजिन बिरले सुधिपाई हो ५ अनँतकोटि मनहीरा बेध्यो फिटिकीमोल न आई हो। सुरनरमुनि वाके खोजपरेहैं किछुकिछु कबिरन पाईहो ६ ॥

हौंसबहिनमें हौंनाहीमोहिंबिलग बिलगबिलगाईहो।
ओढ़नमेरेएकपिछौरा लोगबोलहिं यकताईहो १

गुरुमुख ॥ मैंसबमेंहौं औसब नहोउं ऐसेमोको बिलगबिलग कहेजुदा जुदाबिलगाइकै वेदकह्योहै इहांदुइबार बिलगबिलग कह्यो सो एकतो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चितकहे जीवब्रह्मईश्वर अचितकहे मायाकाल कर्म सुभावपृथ्वी आदिक मायाके कार्यसब सोये दोहुनमें अंतर्यामी रूपते व्यापकहौ सो जीवब्रह्म ईश्वरचिततत्वमें मैंव्यापकहौं तामेंप्रमाण ॥ विष्णवायुत्तमदेहेषुप्रविष्टोदेव ताभवत्।मर्त्याद्यधमदेहेषुस्थितोभजतिदेवता इतिश्रुतिः ॥ एकोदेवःसर्वभू तेषुगूढ़ःसर्वव्यापीसर्वभूतांतरात्माइतिश्रुतिः ॥ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहमितिगी तायाम् अचितौमें व्यापकहै तामेंप्रमाण ॥ विष्टभ्याहमिदकृत्स्न मेकांशेन स्थितोजगत् इतिगीतायाम् ॥सोचितअचित दोऊव्याप्यपदार्थहैं व्यापकमैं हौंसोचितअचितरूप पिछौराहुइछोरिया मेरोओढ़नहैसर्वत्रमहीं हौं सोवेद कोतात्पर्य न जानिकै लोगएकताई बोलैहैं कि एकई ब्रह्महै पिछौराओढ़ै याको एकहो कहैहैं दूसरानहीं कहैहैं लोगजो एकताई कहैहैं सो कौनीतरह तेकहैहैं सो कहैहैं १ ॥

एकनिरंतर अंतरनाहीं ज्योंघटजल शशिझाईहो।
यकसमानकोइसमुझतनाहींजरामरणभ्रमजाईहो २

वहीब्रह्मनिरंतरएकसर्वत्रहै यालोगबोलैहैंसोकहा अंतरनहीं है अर्थात् अंतरहै कैसे जैसेजलभरेघटनमें शशिकी छायावामें व्याप्यव्यापक बनोहै सोएकजोमैंसो समान कहेसबमें समव्यापकहौं ताकोकोई व्याप्यव्यापक कोईनहीं समुझैहैतौ कहाउनको जरामरण भ्रमजाइहै अर्थात् नहीं जाइ है सो अंतर्यामी रूपते व्यापक साहब कहिचुके अबनिज रूपते जह रहैहैं तहांकी बात कहैहैं २ ॥

रैनिदिवस मैंतहँवोंनाहीं नारिपुरुषसमताईहो।
नामैंबालक नामैंबूढ़ो नामोरे चेलिकाईहो ३

जहांमैं रहौहौं तहां न रातिहै न दिनहै औ सबनारी रूपहैं जो पुरुषहू जाइहै सो नारिनरूपतेरासमेंप्राप्तहोइहै पुरुषमहीं हौं औ समताईहै जैसे सच्चिदानंद रूपहौं ऐसे वोऊ सच्चिदानंद रूपहैं मैं न बालकहौं न बूढ़ हौं सदाकिशोर रूप बनोरहौहौंऔ न मोरेचेलिकाई कहे कोऊ वहउपदेश्य नहीं है अर्थात् अज्ञानीकोऊ नहीं है सबमेरे रूपको जानैहैं उहांरातिदिन नहीं हैतामेंप्रमाण॥नतद्भासयतेसूर्योनशशांकोनपावकः। यद्गत्वानिवर्तंते तद्धामपरमंमम ३ ॥

तिरबिधरहौंसबनमें बरतौं नाममोररमराईहो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पठयेनजाउँ आनेनहिं आऊं सहजरहौं दुनिआईहो ४

तिरबिधरहौं कहेजीव ब्रह्मईश्वरनमें जो अंतर्यामी रूपतेरहौं हौं औ सबनमें बरतौं कहेमाया कालकर्म सुभाव इनमें जो अंतर्यामी रूपतेरहौं हौं सोइनमें जो रमनवारो अंतर्यामी मेरोरूपब्रह्म ताहूको मैंराईहौं सो पठयेनहीं जाउँहौं न आनेते आऊंहौं अर्थात् जोकहूं न होउँ तौ ना आने आऊं पठयेजाउँ सर्वत्रैतौहौं सोयही रीतिते सहजही यादुनिया में अंतर्यामीके अंतर्यामी रूपते पूर्णहौं ४ ॥

जोलहातानबान नहिं जानै फाटबिनैदशठाई हो ।
गुरुप्रताप जिनजैसोभाष्यो जनबिरले सुधिपाईहो ५

जोलहाजेहैं जीव ते तानबान नहीं जानैं अर्थात् वाहंस स्वरूप पोसाक बनैनहीं जानैं जो पहिरिके मेरे समीपआवै फाटबिनैदशठाई कहेदश हैं छिद्रजिनमें ऐसो जो शरीरताहीको बिनैहै कहेनाना मतनमें परिकैवही कर्मकरैहै जामेंअनेक जन्मशरीर धारणकरत जायहै जो कहोकोऊ जानत हीनहोंह तौ गुरूकेप्रतापतेजोकोऊमेरो रूपभाष्योहै जैसो सोतौ कोई बिरलाजनसुधिपायोहै अर्थात् जाको सतगुरुमिल्योहै सोईपायोहै ५ ॥

अनंतकोटिमनहीराबेध्यो फिटकी मोलनआई हो ।
सुरनरमुनि वाकेखोजपरेहैं किछुकिछु कबिरनपाईहो ६

अनंतकोटि जे जीवहीराहैं तिनमें मनबेध्योहै सोयाहीरारूप जीवको फिटिकिरिउको मोल न रहिगयोसो सुरजेहैं मुनिजेहैं नरजेहैं तेवही अपने स्वरूपको खोजैहैं सोकिछुकिछु कहे थोरहूते थोर जीवपाइनहैं और कोई नहीं पायो जे आपनोरूप मेरोरूप गुरुप्रताप जानिशरीरको बिनैयामनको त्याग्योहै तेईपायोहैं अथवा किछुकिछु कबिरनपाई कहे साकल्य करिकै हमारो भेदतोकोई जानतही नहीं है जेअपनोरूप मेरोरूप जानतजे जीव तेकिछुकिछु भेदपायो है ६ इतिदशवांकहरासमाप्तम् ॥

अथग्यारहवांकहरा ॥

ननँदीगेतैबिषमसोहागिन तैंनिपले संसारागे । आवत देखिएकसँग सूती तैंअरुवसम हमारागे१ मोरे बापकिदोयमेहरियामें अरुमोरजेठानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गे। जबहम ऐलिरसिकके जगमें तबहिंबात जगजानीगे २ माईमोर मुवलपिताके संगहि सररचि मुवलसँघातागे। अपनोमुई औरलै मुवली लोग कुटुंबसँगसाथागे ३ जौलौं सांसरहैघट भीतर तौलगकुशल परैहैगे। कह कबीरजब श्वासनिसरिगे मंदिल अनल जरैहैगे ४ ॥

ननँदीगेतौबिषमसोहागिन तैंनिदले संसारागे।
आवत देखिएकसँगसूती तैंअरुखसमहमारागे १

कबीरजीजीवनपर दयाकैकै ज्ञानशक्तिते कहैहैं कि मगहमें मिथिलादेश में परस्परस्त्रीलोग बतातीहैं आदरकैकै तबगेसंबोधन देतीहैं सोयापदमें गेसंबोधनहै अथवा गेबिगरे जीवको कहैहैं हेगये जीव सो कबीरजी जीव जो चित शक्तिसाहबकीस्त्रीसो ज्ञानशक्तिजो साहबकीबहिनी तासोंकहैहै ननँदी यातेकहैहैं कि प्रथम साहबको ज्ञानप्रगटहोयहै पीछेसाहब प्रगट होयहै सो साहबकी बहिनीभईसो चितशक्ति जीवकहैहैंकि तैंहमते सब जीवहै तिनपरतैं बिषमह्वै गई औ पतिकी सुहागिनह्वैगई कैसीहै तैंकिनिदलेसंसाराकहेतैंतो संसारको निदरेनहै हमपरबिषमह्वैगईहै काहूकोज्ञान करिसाहबको मिलायदियो काहूको ज्ञानहरि संसारीकरिदियो गेजोकहैहै सो साहबको पतिमानिवाको ननँदिमानि गारीदै कहैहै कीन्हीतैं कहाकि समष्टिते व्यष्टिकरैवाली ऐसीमायाको आवत देखिकै हमार खसम जो साहबहैतिनके संगसूतीजाइतैं अपनेभाईको पतिबनायेतैं अर्थात् साहब को ज्ञानकाहू जीवके न रहिगयो साहबको ज्ञानसाहिबै को रहिगयो १ ॥

मोरेबापकी दोय मेहरिया मैंअरु मोरजेठानीगे।
जबहमऐलिरसिककेजगमें तबहिंबातजगजानीगे २

सोजौने धोखाब्रह्मकोमानिहमसंसारीभयेहैं सो जो हमारोबापहै धोखा ब्रह्म ताके दोयमेहरियाहैं जीवचित शक्ति कहैहैं किएकमैं औएक मोरजेठानी जौन साहब अज्ञानमूलःप्रकृति धोखाब्रह्मते जेठ समष्टिकरहीहै सो तव कारणरूपाहै अब कार्यरूपा भई अर्थात् चितशक्ति जीव कहैहै कि यहीमायामें परिकै अहंब्रह्मास्मि हमसब मानत भये जोकहो तुम यावात कसकै जान्यो तौ जबहम ऐलिरसिकके जगमें कहे जब हम रसिक जे साहब तिनके लोकमें आये तब हम या बात जान्यो कि अहंब्रह्मास्मि हम माने न रहे औसंसारमें परिबेही कियो साहबकोज्ञान हमारेनहीं भयो सो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब यालोकके मालिकजेहैं तेईहैं जिनकेजाने संसारछूटैहै ब्रह्म साहब नहीं है २ ॥

माईमोरमुवलपिताकेसंगहि सररचिमुवलसँघातागे ।
अपनोमुई औरलै मुवली लोगकुटुंब सँगसाथागे ३

सो पिताजो हमारोधोखाब्रह्म जौनेके द्वाराहम व्यष्टिभये सोजबमिट्यो तब मोर माई जो मूलःप्रकृति सो सरकहे चिन्ताबशीकार बैराग रचिकै पिताके साथ वाहू सती ह्वैगई अर्थात् जब धोखाब्रह्म मिट्यो तब रामा अज्ञानरूपी माया सोऊ छूटिगई साहबको ज्ञानह्वै गयो सो अपना मरी और जेतने नाता मानिराख्यो लोगकुटुम्ब तिनहूं को साथही लैजातभई अर्थात् अहंब्रह्म छोड़िदियो जगत्केनाते छोड़िदियो एकसाहबको जानि लियो उनहीं को नाता मानिलियो सोहे ज्ञानशक्ति जबतू यामोको जनायो तब मैं जान्यो ३ ॥

जौलौं सांसअहै घटभीतर तौलौं कुशलपरैहैगे ।
कहकबीरजबश्वासनिसरिगैमंदिरअनलजरैहैगे ४

सोजबलौं श्वासहै तबलौं कुशलहै तूकाहेबिषमह्वैगई जबलौं श्वास है तबलौं इनके आइकै साहबको प्राप्तिकरायकै इनको दुःख छड़ाइ देउ श्वास निसरि गये पर यम धरि लैजाइँगे अनेक योनिमें भट करत बागैगे शरीर जरिजाइगो सोहे ज्ञानशक्ति तब तू न आयसकौगी तेहिते ईजीवत परतुमआयसक्तीहौ साहबको ज्ञानह्वैसकैहै४ इतिग्यारहवांकहरासमाप्तम् ॥

अथबारहवांकहरा ॥

यामाया रघुनाथकी बौरी खेलनचली अहेराहो । चतुर चिकनिया चुनि चुनिमारै काहू न राखैनेराहो १ मौनीबीर दिगम्बरमारे ध्यानधरेते योगी हो । जंगलमेंके जंगममारे माया किनहुंन भोगीहो २ वेदपढ़ंता पांड़ेमारे पुजाकरंते स्वामीहो । अर्थ बिचारे पंडितमारे बांध्यो सकल लगामीहो ३ शृंगीऋषि बनभीतर मारे शिर ब्रह्माके फोरीहो । नाथमछंदर चले पीठदै सिंह लहूमें बोरीहो ४ साकठके घर कर्ताधर्ता हरिभक्तनकी चेरीहो । कहै कबीर सुनोहो संतो ज्यों आवै त्यों फेरीहो ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यामाया रघुनाथकी बौरी खेलनचली अहेराहो। चतुर चिकनिया चुनिचुनि मारै काहू न राखैनेराहो १ मौनीबीर दिगम्बर मारै ध्यानधरंते योगी हो। जंगलमेंके जंगममारे माया किनहुंन भोगीहो २ वेदपढ़ंता पांड़ेमारे पूजाकरते स्वामीहो। अर्थबिचारे पंडितमारे बांध्योसकल लगामीहो ३ शृङ्गीऋषि बनभीतरमारे शिर ब्रह्माके फोरीहो। नाथमछंदर चले पीठदै सिंहलहूमें बोरी हो ४ साकठके घर कर्ताधर्ता हरिभक्तनकी चेरीहो। कहै कबीर सुनोहो संतो ज्यों आवै त्यों फेरीहो ५ ॥

ज्ञानशक्ति कबीरको जवाबदियो मैं कहाकरौं मोको कोई जीवनके उदय होननहीं देइहै मायासबको बांध लियोहै सो कबीरजी जीवनसों कहैहैं यह माया छुइजान न पावे जबहीं आवै तबहीं यासोंमुंहफेरि लेउतबहीं बचौगे यासबको बांधिलियोहै तुमहूं को बांधि लेइगी औ इहांरघुनाथकी बौरीजो माया कह्यो सो रघुहै जीवताके नाथ जे श्रीरामचन्द्र तिनकी या मायाहै सोजीवनको धरिधरिकै शिकारखेलैहै सोजब अपनेनाथको याजीव जानैजिनकी या मायाहै तब तब यामायाते छूटैगो अपने बलते जीव न छूटिसकैगोअथवा यामाया रघुनाथकीबौरीहै रघुनाथकी बौरीकहे रघुनाथ को न जानिबो यहैयाको स्वरूपहै ५ इतिबारहवांकहरासमाप्तम् ॥

इतिकहरासम्पूर्णम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

अथबसंतलिख्यते ॥

जहँ बारहि मास बसंत होय। परमारथ बूझैबिरल कोय १ जहँबर्षै अग्नि अखंडधार। बन हरियरभो अट्ठार भार २ पनिया अन्दर तेहिधरे न कोय। वह पवनगहे कश्मलनधोय ३ बिनु तरुवर फूलोहै अकाश। शिव औ बिरंचितहँ लेहिंबास ४ सनकादिक भूले भवँरभोय। तहँलखचौरासी जीवजोय ५ तोहिं जो सतगुरु सतसो लखाव। तुमतासु न छाड़हु चरण भाव ६ वह अमरलोक फललगे चाय। यहकह कबीर बूझैसो खाय ७॥

जहँबारहिमास बसंतहोय। परमारथबूझै बिरलकोय १
जहँबर्षै अगिनअखंड धार। बनहरियरभो अट्ठारभार २

जाकेकहे जौने साहबके लोकमें बरहो मास बसंत बनो रहैहै सो या परमार्थ कोई बिरलाबूझैहै सोवा रूपकातिशयोक्ति अलंकार करिकहैहैं १ औबसंत ऋतुमें सूर्यते अग्नि बर्षैहै अखंडधार बनजोहै अठारह भारबनस्पती सो हरियर होतजाइहैं औसाहबके लोकमें कोटिन सूर्यको प्रकाश है परंतु सबको ताप हरि लेन वारोहै वहांके सबबन संतानक आदिक हरियर रहैहैं २ ॥

पनियाअंदरतेहिधरेनकोय। वहपवनगहेकशमलनधोय ३
बिनुतरुवरजहँफूलोअकाश। शिवऔबिरंचितहँलेहिंबास ४

औबसंत ऋतुमें वृक्षनके अंदरनमें कोईपानी नहीं धरैहै चन्द्रजोहै सो अमृत को अवैहै ताहीको गहे पवन वृक्षनके कश्मलन को धोयडारैहै औसाहबको लोक कैसोहै कि पनिया अंदरकहे वा रसरूपहै ताकोकोई नहीं जानैहै वहीरसरूप लोकको स्मरणपवनहै ताकेगहेकहे कि येतेकश्मल जेपापहैं तेधोयजातहैं अथवा कामादि जे कश्मलहैं ते धोय जातहैं ३ औ बसंत ऋतुमें जहां तरुवर नहीं हैं ऐसोजो आकाश सोऊ पुहपन के परागन करिकै फूलोदेखोपरैहै कैसोहै आकाश जहां शिवबिरंचि बासलेहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं अर्थात् बासकीन्हेहैं सुगंधित ह्वैरह्योहै औसाहबहि को लोककैसाहै कि जेहिका प्रकाश चैतन्याकाश बिना तरुवरै जगत्रूप फूलफूलैहै शिवबिरंचि आदिक बासलेहिहैं ४॥

सनकादिकभूले भवँरभोय। तहँलखचौरासीजीवजोय ५

बसंत ऋतुमें चौरासी लाखयोनि जीवनकी कौनगनती सनकादिक जे मुनिहैं तेऊ पुष्पमकरंद में भोयकै भवँरकी नाईं भूलि जाहिहैं औसाहब को लोकप्रकाश ब्रह्मकैसाहै कि सनकसनन्दन सनत्कुमार जाके भवँर में भोयकै कहे परिकै भूलैहैं चौरासीलाख योनि जीवनकी कौनगनतीहै ५॥

तोहिंजोसतगुरुसतकैलखाव।तुमतासुनछाड़हुचरणभाव६
वहअमरलोकफललगेचाय। यहकहकबीरबूझैंसोखाय ७

सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि ऐसो जोसाहबको लोक जहां बरहौ मास बसंत बनोरहैहै तौनजो सतगुरु कहे साहबके बतायदेनवारे तोकोसत्य कै लखायो होयतो तुमताके चरणको भाव न छाड़ो भावयहहै कि वालोक के मालिक जोसाहबहैं तिनहू को बताय देयँगे वह अमरलोक कैसाहै कि जहां चारिउफल अर्थ धर्म काम मोक्ष आनंदके फललगेहैं सोहे जीवो या बात जोकोई बूझैहै सोईखायहै साहबके धाममें बरहौ मास बसंतरहैहै तामेंप्रमाण कबीरकीसाखी ज्ञानसागरकी॥ सदाबसंत होततेहिठाऊं। संशयरहित अमरपुर गाऊं॥ जहँ वांरोग शोग नहिंहोई। सदाअनन्दकरै सबकोई॥चन्द्र सूर्य देवसनहिंराती। बरणभेद नहिं जाति अजाती॥ तहँवां जरामरण नहिंहोई। क्रीड़ाविनोद करैसबकोई॥ पुहुपविमान सदा उजियारा। अमृत भोजनकरै अहारा॥ कायासुंदरको परवाना। उदितभये जिमिकोड़ि भाना॥ येता एक हंस उजियारा। शोभित चिकुर उदय जनु तारा॥ बिमलबास जहँवांपौढ़ाही। योजन चारघ्रान जोजाही॥ सेत मनोहर छत्रशिरछाजा। बूझि नपरैरंक अरु राजा॥ नहिंतहँनरक स्वर्गकी खानी। अमृत वचनबोलै भल बानी॥ अससुख हमरे घरनमह कहैं कबीर बुझाय। सत्य शब्दकोजानै अस्थिर बैठैआय ७ इतिपहिला बसंतसमाप्तम्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथदूसराबसंत ॥

रसना पढ़िभूले श्रीबसंत । पुनिजाइ परिहौ तुमयमके अंत १ जोमेरु दण्ड परडंकदीन्ह । सोअष्टकमल परजारि दीन्ह २ तबब्रह्म अग्निकीन्हो प्रकाश । तहँअर्द्ध ऊर्ध्व बहती बतास ३ तहँ नवनारी परिमल सो गाव । मिलिसखी पांचतहँ देखनजाव ४ जहँअनहद बाजारहल पूर । तहँ पुरुष बहत्तरि खेलैंधूर ५ तेंमयादेखि कसरहसिभूलि । जस बनस्पती बनरहल फूलि ६ यह कहकबीर येहरिके दास । भगुवा मांगै बैकुंठबास ७॥

रसनापढ़िभूलेश्रीबसंत । पुनिजाइपरिहौतुमयमकेअंत १

श्री बसंत कहे ऐश्वर्य्यरूप जोबसंत ताको रसनामें पढ़िकै मनबचन केपरे जोसाहबके लोकको बसंत ताकोतुम भूलिगयो रसनामेंपढ़िजोकह्यो तामें धुनियहहै किऔरै देवतनकी उपासनामें बड़ो ऐश्वर्य्य प्राप्तिहोइहै यह पोथिनमें पढ़ि पढ़ि भुलाइगयो बाहूको जीभेभरते कह्यो कछुप्राप्ति नहीं भै सोतुमफेरियमके अंतकहे संसारमेंपरिहौ औ जोलेहू पाठहोयतौ रसनामें श्रीबसंतको पढ़िलेहु नहीं तो पुनियमके अंतकहे फंदमेंपरिहौ१॥

जोमेरुदंडपर डंक दीन्ह । सोअष्टकमलपर जारिदीन्ह २

औजो यागुमान करो कि हम योगवारेहैं हम यमके अंतमें नपरेंगे सो जो तुममेरुदंडमें प्राण खैंचिकै मेरुदंड परडंका दीन्ह्यो औ अष्टजोहैं आठौं कमल मूलाधार बिशुद्ध मनिपूरक स्वाधिष्ठान अनहद आज्ञाचक्र सहस्रारचक्र अठयें सुरति कमल जहां परम पुरुषहै तामें पहुंचि कै जारि दीन्ह अर्थात् योगो की खबरि भूलिगई २ ॥

तहँ ब्रह्मअग्निकीन्हो प्रकाश । तहँ अर्द्धउर्ध्व बहतीबतास ३ तहँनवनारीपरिमलसोगाव । मिलिसखीपांचतहँदेखनजाव ४

सोवा ज्योतिमें लीन भयो जीवतहैं ब्रह्म अग्नि प्रकाश करतभई औ बतासजो अर्द्ध उरध श्वास सोवहै बहतमें अर्थात् बाहिरे न आवतभै श्वास वहैंरहतभै याभांतिजीव तखतमें बैठिमालिकभयो गांउकारा बसंतदेखैहै ३ सोयहां परिमल कहे गँधका गांवहै शरीरमें पृथ्वी तत्व अधिकहै सोगंधका गांव शरीरहै तौनेमें नौनारीहैं कहे नौ राहहैं तहांपांचों जे ज्ञानेन्द्रीहैं तेई सखी देखनजायहैं अर्थात् वहैलीन ह्वै गईहै ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तहँ अनहदबाजार हलपूर। तहँ पुरुषबहत्तरि खेलैं धूर ५
तैंमयादेखिकसरहसिभूलि। जसबनस्पती बनरहलफूलि ६

बसंतमें बाजा बजैहै सोअनहद बाजा जहां पूरिरह्यो है तहां बहत्तरि पुरुष जे बहत्तरि कोठाहैं तेधूरिखेलैहैं अर्थात् चैतन्य तान रहिगै ५ सोबसंतमें बनस्पती फूलैहैं ऐसेयामाया फूलिरहीहै तामें समाधि उतरे फिरि काहेभूले अथवा जैसे बनस्पती फूलैहैं ऐसे गैवगुफामें सुधापीकै नागिनी फूलीहै तामें तैं काहे भूलिरहैहै कहा वा मायाके बहिरे है समाधि नागिनिहीके अधारतो समाधिउ है ६ ॥

यहकहकबीरयेहरिकेदास। फगुवामांगैंबैकुंठबास ७

सोया हठयोग करिकै जानै कि मैंमुक्ति होउँगो तौयासमाधि में माया हीते नहीं छूट्यो मुक्तिकहांहोइगो ताते श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेजी वाह्मा हरिके दास तैं बैकुंठबासको फगुवामांगे अर्थात् फगुहारफगुवा खेलाइकै फगुवामांगैहै सोतैंहठयोगकियो ताकोफल फगुवाराजयोग मांगु जाते बैकुंठबासहोइ ७ इतिदूसराबसंतसमाप्तम् ॥

अथतीसराबसंत ॥

मैंआयउँमेहतरमिलनतोहिं।अबऋतुवसंतपहिराउमोहिं १हैलंबीपुरिया पाइझीन। तेहिसूतपुरानाखुंटातीन २ श्वरलागैसेतीनिसाठितहँकसनबहत्त रिलागगांठि ३ खुरखुरखुरखुरचलैनारि। वहबैठिजोलाहिनिपलथिमारि ४ सोकरिगहमेंदुइचलहिंगोड़। ऊपरनचनीनचिकरैकोड़ ५ हैंपांचपचीसौदश हुद्वार। सखीपांचतहँराचीधमार ६ वेरंगबिरंगीपहिरेचीर धरिहरिके चरण गावैकबीर ७ ॥

मैंआयउंमेहतरमिलनतोहिं। अबऋतुबसंतपहिराउमोहिं १
हैलंबीपुरिया पाइझीन। तेहिसूतपुराना खुंटातीन २

जीवकहैहैं मेहकही बड़ेको औ जोबड़ाते बड़ाहोइ ताको मेहतरकहै हैं फ़ारसीमें सोईईश्वरनते ब्रह्म ते जोबड़े श्रीरामचन्द्रहैं तिनसों जीवकहै है किमैंतुमको मिलन आयोहैं सोजौनेलोकमें सदाबसंत रहैहै सोमोको पहिरायो अर्थात् मेरोप्रवेश कराइदीजे तानारूप जोमेरे। शरीरको बसंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तातेछड़ाइये १ सोलवीं पुरिया कौनकहावै जोताना तनैहै पूरैहै सोमैंवा-सननिकरिकै बहुतलंबाहै रह्यो है कहेवासननिकरिकैमैं संसारमें फैलि रह्यो हौं औपाई वा कहावैहै जोताना साफ करैहै सोया आत्माको साझ करिबोबहुत झीनहै कहे जबकोई बिरलेसंतमिलैं तब आत्माशुद्धहोइ काहेतेकि यह सूतजीव पुरान कहे अनादिकालते तीनखूंटा जोहैं सत रज तम तामेंबंधोहै २ ॥

शरलागैसैतीनिसाठि । तहँकसनिबहत्तरिलागगांठि ३
खुरखुरखुरखुरचलैनारि। वहबैठिजोलाहिनिपलथिमारि ४

पाईमें शर लागैहै सो शरीरमें तीनिसैसाठि हाड़हैं तेईशरहैं बहत्तरि जेकोठाहैं तिनमें बहत्तरि हजार नसनकीगांठि एकएक कोठनमें लाग हैं तेई कसनीहैं ३ औ बिनतमें जौन बीचहै चलावैहै सो नारि कहावैहै सो याशरीरमें नाड़ीजोहै सो खुरखुर खुरखुर चलैहै औ जोलाहिनिजोहै बुद्धि सो पलथीमारिकै बैठीहै अर्थात् देहहीमें निश्चय करिकै बैठीहै ४ ॥

सोकरिगहमेंदुइचलहिंगोड़ । ऊपरनचनीनचिकरैकोड़ ५

सो यह तरहको जो शरीरहै सो करिगहहै जहां जोलाहिनि बैठैहै धमारि महलमें होयहै सो शरीर महलहै सो करिगहमें जोलाहिनि दोऊ अंगूठा चलावैहै ऊपर तानामें नचनी कोड़करैहै कहेनाचैहै इहां शरीररूपी करिगहमें बुद्धिरूपी जोलाहिनि बैठिकै कहूं शुभकर्ममें निश्चयकरैहै कहूं अशुभ कर्ममें निश्चय करैहै यही दोऊ अंगुठाको लचाइबोहै औ वृत्ति बुद्धि की कहूं शुभमें कहूं अशुभमें जायहै यही नचनीहै सो नाचैहै औ धमारि पक्षमें नाचतमें नचनीको गोड़चलैहै ऊपरको डकरैहै कहे भावबतावैहै५॥

हैंपाँचपचीसौदशहुद्वार । सखीपाँचतहँराचीधमार ६

औ पांचजेहैं अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश औ पचीसौ जेतत्व हैं जीव माया महत्तत्व अहंकार शब्दरूप रस गंध स्पर्श दशौइंद्री एकमन पंचभूतई औ ताहीमें दशौद्वार ऐसे शरीरमें पांच सखीजेहैं पंचप्राण ते धमारि रचतभई औ ताना पक्षमें पांचपचीस तत्वकेकहे सबकोरीकै साजु आइगै औ धरिकहे सब अपने अपने धमारमें लगिगे कैड़ावारे माड़ीवारे पुरियावारे करिगहवारे तानासाफकरैवारे औ धमारि पक्षमें पांचसखी धमारिरचैहैं दुइ एक बार कियो एकदेखेयाभो ६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेरंगबिरंगीपहिरैंचीर। धरिहरिकेचरणगावैंकबीर ७

पांचौ जेसखीहैं पांचतत्वनका रंगबिरंग चीरपहिरें स्वरोदयमें लिखेहै श्वास तत्वनके रंग जुदेजुदे देखेपरेहैं औ कोरीके घरके अनेक रंगकेचीर पहिरेहैं औ धमारि पक्षमें केशरि कस्तूरी करिकै गुलाल भोड़र करिकै चीररंग बेरंगहोयहैं तेपहिरेहैं सो यहितरहकी धमारि यासंसारमेंहै ताते हरिको चरणधरिकै कबीर गावैहै कहैहै या धमारिको प्रथम या कहिआयेहैं जौने लोकमें सदाबसंतहै तहांप्रवेश करावो औइहां धमारिकहैहैं तात्पर्य यह कि याशरीरको तानावाना जननमरणमें परिरह्योहै या धमारि तुमको देखायो जो रीझेहोहुतौ मैं यहफगुवा यहीमांगौहौं कि जहां सदाबसंतहै वालोकमें प्रवेश करावो औ न रीझ्योहोहु तौतुम हरिहौ या तानाबीना धमारि हरिलेउ या कहो कि ऐसी धमारि तैं न रचु कबीर कहैहैं किहैजीव हरिके चरणधरि ऐसी बिनयकरु ७ इतितीसरावसन्तसमाप्तम् ॥

अथचौथाबसन्त ॥

बुढ़ियाहँसिकहमैंनितहिबारि। मोहिंऐसितरुणिकहुकौननारि १ वेदांत गयेमोरपानखात। औकेशगयलमोरगँगनहात २ औनयनगयलमोरकजल देत। अरुबैसगयलपरपुरुषलेत ३ औजानपुरुषवामोरअहार। मैंअनजाने कोकरशृङ्गार ४ कहकबीरबुढ़िअनँदगाय। पूतभतारहिबैठिखाय ५ ॥

बुढ़ियाहँसिकहमैंनितहिबारि। मोहिंऐसितरुणिकहुकौनिनारि १

बुढ़ियाजो मायाहै सोहँसिकै कहैहै कि मैंनित्यही बारीहौं मायाअनादि है याते बुढ़ियाकह्योहै तामेंप्रमाण ॥ अजामेकांलोहित इत्यादि औहँसिकै कह्यो याते या आयो कि साधन करिकै छोटे छोटे या कहैहैं कि हमको माया जीर्ण ह्वै गईहै अर्थात् अब छूटिजाइहै मैंनित्यही बारीहौं सबके कार्य रूपते उत्पन्न होतरहौंहौं औ मोहिंअस तरुणिकौनि नारिहै जोसब जीवन संगकरीहौं औ बुढ़ाउँ कबौनहीं हौं १ ॥

दांतगयेमोरपानखात। औकेशगयलमोरगँगनहात २

औ दांतगये पानखात जोकह्यो सोपानजोहै वेद ताकोतात्पर्य जोजानै है यहीखाबहै सोवेद तात्पर्यार्थ जानेते कामादिकजे मेरे दांतहैं जिनते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीव सज्जननको ज्ञानखाय लेइहै तेदांतमेरे जातरहे कामक्रोधादिक मायाके दांतहैं तामेंप्रमाण॥ रत्नयोगग्रन्थकबीरको॥ कामक्रोधलोभमोह माया। इनदांतनसोंसबजगखाया॥ औ साहबको जो कथा चरित्र रूप गंगा तामें जोनहायहै अर्थात् सुनैहै सोकुमतिरूप केशमेरे जातरहेहैं २॥

औनयनगयलमोरकजलदेत। अरुबैसगयलपरपुरुषलेत ३

साहबको ज्ञानरूप कज्जल जोकोई दियो तोमेरे नयनजो निरंजनहैं सोजात रहेहैं अर्थात् चैतन्यकै योगकरिकै मायादेखैहै औ नयनको निरंजनकहेहैं तामेंप्रमाण कबीरजीको॥ नयननिरंजनजानि भरममेंमतपरै॥ औ बैसजो मोरहै सो परमपुरुषजे श्रीरामचंद्रहैं तिनकोलेत अपने बशकै बैसमोर जातरहैहै अर्थात् चारिउ शरीर मोरनहीं रहते ३॥

औजानपुरुषवामोरअहार। मैंअनजानेकोकरशृँगार ४

औ जानपुरुषवा कहे जोयाकहैहैं कि हम ब्रह्मको जानिलियो हमहीं ब्रह्महैं तेतो हमार अहारहीहैं आपने आत्मैको भूलिगये औ अजानजेहैं तिनको शृंगारै कियेहैं नानाबिषदैकै लोभाय लेउहौं अर्थात् जानौ अज्ञानको विद्या अविद्या रूपीते बशकरि लियोहै धुनि याहै जिनको साहब आपनो हंसरूप दियोहै तेई बचेहैं याउपसंघार कियो ४॥

कहकबीरबुढ़िअनँदगाय। पूतभतारहिबैठिखाय ५

सो श्रीकबीरजीकहैहैं कि बुढ़िया जोमायाहै सो जैसो यापद कहिआये तैसो आनंदसों गावैहै वेद शास्त्रादिकन में वाणीरूपते सबजीव सुनैहैं परन्तु या नहीं जानैहैं किजीव औ ब्रह्म मायाके भितरैहै पूत जो जीवहै औ भतारजो ब्रह्महै ताको बैठि खायहै अर्थात् जबजीव संसारी भयो तब संसारमें डारिकैखायो जब ब्रह्ममें लीनभयो औ सृष्टिसमय आयो तब वा ब्रह्मज्ञानहू नहीं रहि जाइहै ब्रह्महू कोखायो ५ इतिचौथाबसंतसमाप्तम्॥

अथपांचवांबसंत॥

तुमबूझहु पण्डितकौननारि। कोइनाहिं बिआहलरहकुमारि १ यहिस बकेवनमिलि हरिहिदीन्ह। तेहिचारिहुयुगहरिसङ्गलीन्ह २ यहपृथमहिं प ह्मिनिरूपआय। हैसांपिनिसब जगखदिखाय ३ याबरयवसीवेबारनाह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति तेजतियाहै रैनिताह ४ कहकबीरसबजगपियारि। अबअपनेबलकबै रहलमारि ५ ॥

तुमबूझहुपण्डितकौननारि। कोइनाहिंबिआहलरहकुमारि १
यहिसबदेवनमिलिहरिहिदीन्ह। तेहिचारिहुयुगहरिसङ्गलीन्ह२

श्रीकबीरजीकहैंहैं कि हे पण्डिततुमबूझौतौ या शङ्खिनी हस्तिनी चित्रिणी पद्मिनी चारि प्रकारकी नारिनमें कौननारिहै या माया अर्थात् एकौकेलक्षण नहीं मिलत एकौके लक्षण जो मिलते तौ कुमारि न रहती बिआहि जाती याहीते अबतक कुमारि है १ जब समुद्र मथिगयो लक्ष्मी कढ़ी सो सबदेवमिलि हरि को देतभये सो हरिचारिहुयुग सङ्गही राखतभये २ ॥

यहप्रथमहि पद्मिनि रूपआय। हैसांपिनिसबजगखेदिखाय ३
या बरयुवती वे बार नाह। अति तेज तिया है रैनि ताह ४

प्रथमतो ब्रह्मजेहैंविष्णु तिनकेनाभिमें कमलिनीहै सोलक्ष्मी रूपहै सो आय अब धनरूप सांपिनिहै संसारको खेदिखायहै ३ या माया बरयुवती है कहेश्रेष्ठहै बारजेलरिका ब्रह्मा विष्णु महेश तेईयाके नाहहैं औ ताहकहे तौन जो संसार रूपी रैनिहै तौनेमें अति तेजहै ४ ॥

कहकबीरसबजगपियारि। यहअपनेबलकबैरहलमारि ५

सो श्रीकबीरजी कहैंहैं कि या माया सबजगतको पियारिहै आपन बालक जे जीव तिनको मारि रहीहै अर्थात् सबजीवनको बांधेहै जनन मरन करावैहै ५ इतिपांचवांबसंतसमाप्तम् ॥

अथछठवांबसंत ॥

माईमोरमनुषहै अतिसुजान। धंधाकुटिकुटिकरैबिहान १ बड़ेभोरउठि अँगनबहार। बड़ीखांचलै गोबरडार २ बासीभात मनुषलैखाय। बड़ घैलालै पानीजाय ३ अपनेसैंयां बांधीपाट। लैरेबैंचौ हाटैहाट ४ कहकबीर येहरिकेकाज। जीइयाकेढिंगर कौनहैलाज ५ ॥

माईमोरमनुषहैअतिसुजान। धंधाकुटिकुटिकरैबिहान १
बड़ेभोरउठि अँगन बहार। बड़ी खांचलै गोबरडार २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बासीभात मनुष लैखाय । बड़घैलालै पानी जाय ३
अपने सैंयां बाँधी पाट । लैरे बेंचौ हाटै हाट ४
कहकबीरयेहरिकेकाज । जोइयाकेढिंगरकौनहैलाज ५

जीवशक्ति कहैहै कि हेमाई माया मोरमनुष जो मन सो बड़ासुजान है धंधाजो बालु पोगंड किशोर ताहीको कूटिकूटि कहे कैकै बिहानकहे देहांत कैदेइहै सुजान याते कह्यो कि मोको नहीं जानदेइहै आपहीजानैहै बड़े भोरकहे जबदूसरभयो तब आँगनबहार कहे गर्भबासमें ज्ञानदियो अंतःकरण साफकियो यही बहारबोहै औ बड़ीखांच जो पूसूतबायु तौनेते गर्भरूप गोबरटारचो अर्थात् बाहरनिकारचो औ बासीभात जो पूर्वकर्मताको दुःख सुख आपही भोगैहै औ घैलाजो बुद्धिहै ताकोलैकै गुरुवनके इहां नानाधानीरूप पानीताको लेनजायहै अर्थात् बुद्धिते निश्चयकरैहै ऐसोजो मोरसैंयांहै ताकोपाट जो ज्ञान तामें बांधेपाऊं तौ हाटहाटमें बेंचौं अर्थात् साधुनकोसंग करिकै अपनो औ याकोसम्बन्ध छोड़ायदेउं सो श्रीकबीरजी कहैंहैं कि जोइयाजोजीवतौनेको ढिंगरा जोमन सो हरिजे श्रीरामचन्द्रतिन को काजमें जो नहीं लागै तौ याकोकौन लाजहै धुनि याहै जो साहबमेंलगै तौ यहू शुद्धहोइजाय ५ इतिछठवांबसंतसमाप्तम् ॥

अथसातवांबसंत ॥

घरहीमेंबाबुलबढ़ीरारि । अँगउठिउठिलागैचपलनारि १ वहबड़ीएकजेहिपांचहाथ । तेहिपचहुनकेपच्चीससाथ २ पच्चीसबतावैंऔरऔर । वेऔर बतावैंकईठौर ३ सोअंतरमध्येअंतलेइ । झकझेलिझुलावैंजीवदेइ ४ सब आपनआपनचहैंभोग । कहुकैसेपरिहैकुशलयोग ५ बीबेकबिचारनकरैंकोइ सबखलकतमाधादेखलोइ ६ मुखफारिहँसैंसबशवरंक । तेहिधरेनपैंहौएक अंक ७ नियरेबतावैंखोजैंदूरि । वहचहुंदिशिबागुरिरहलपूरि ८ हैलक्षअहेरीएकजीउ । तातेपुकारैंपीउपीउ ९ अबकीबारैंजोहोयचुकाव । ताकी कबीरकहपूरिदाव १० ॥

घरहीमेंबाबुलबढ़ीरारि । अँगउठिउठिलागैचपलनारि १
वहबड़ीएक जेहिपांचहाथ । तेहिपचहुनके पच्चीससाथ २

हेबाबूजीव तुम्हारेघटहीमें कहे शरीरहीमें रारिबढ़ीहै काहेते किहमेशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठिउठि चपलनारि जोमाया सो तेरेपीछूलगैहै १ तामें वहएक सबतेबड़ी काया जाकेपांचहाथकहे पांचतत्वहैं पृथ्वी अप तेज वायु आकाश पुनि एकएक तत्वनके साथ पांचपांच प्रकृतिहैं असकैके पचीस प्रकृतिहैंसो कहैंहैं मन बुद्धि चित्त अहंकार चौथ पांचौंअन्तःकरण जामें चारचोरहैहैं ये सबनिराकारहैं ऐसे आकाशके साथहै औ प्राण अपान समान व्यान उदान येकर्मकरावैहैं एतेवायुके साथहैं औ आंखी कान नाक जिह्वा त्वचा येऊ विषयको प्रकाशकरैहैं एते अग्निके साथहैं औ शब्द स्पर्श रूप रस गंध सो येऊ पांचौ तृप्ति कर्त्ताहैं एते जलपंचकहैं जलके साथहैं औ हाथपांव मुख गुदा लिंग येऊ आधार भूतहैं एते पृथ्वीके साथहैं यहीरीति पचहुन तत्वन कैं साथ पचीसौ प्रकृतिहैं २ ॥

पच्चीसबतावैंऔरऔर । वेऔरबतावैंकईठौर ३

सोये पच्चीसौ प्रकृतिजेहैं ते और और अपने विषयकोबतावैहैं सोकहैंहैं अंतःकरणको विषय निर्विकल्प मन व विषय संकल्प विकल्प चित्तको विषयबासना बुद्धिको विषय निश्चय अहंकारको विषय करतूति प्राणकोविषय चलब अपानको विषय छोड़ब समानको विषय बैठब उदानको विषय उठब व्यानको विषय पौढ़ब कानको बिषय सुनब आंखोंको विषय रूप नाकको विषय सूंघबो जीभको विषय बोलिबो त्वचाको विषय स्पर्श शब्दको विषय रागरस स्पर्शको विषय कोमलत्व कठिनत्व शीतलत्व उष्णत्व रूपकोविषय सुंदरत्व रसको विषय स्वाद गंधकोविषय सुबास इनको वेपचीसौ प्रकृति बतावैहैं ईसब कईठौर और बतावैहैं कहे चौरासीलक्ष योनि जीवको बतावैहैं ३ ॥

सोअंतरमध्येअन्तलेइ । झकझेलिझुलाउबजीवदेइ ४
सबआपनआपनचहैंभोग । कहकैसेपरिहैंकुशलयोग ५
बीबेकबिचारनकरैकोइ । सबखलकतमाशालखैसोइ६

सोये विषय कैसेहैं कि अंतरमें अंतलेइहैं कहे गड़िजातेहैं झकझेलिकैकहे जोरवारी झुलाउब जो आवागमनहै सोजीवको देइहै ४ सो येसब आपन आपन भोगचाह्यो तब जीवके कुशलको योग कैसेपरै अर्थात् कैसे कल्याण पावै ५ सोये बंधननको बिबेककहे बिचार कोईनहीं करैहै कि क्या सांचहै क्याझूंठहै सब खलककहे सब संसारकेलोग बाणी विषयनको तमाशा देखैहैं औ वहीमें अरुझि रहेहैं ६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुखफारिहँसैंसबरावरंक । तेहिधरननपैहौएकअंक ७
नियरेबतावैंखोजैंदूरि । वहचहुंदिशिबागुरिरहलपूरि ८
है लक्ष अहेरी एक जीउ । ताते पुकारै पीउपीउ ९

सोवही विषयमें परिकै मुखफारिकै राव रंक सब हँसैंहैं या दुखदाईहै विषय या अंक कोऊनहीं धरनपावैहै तेहिको ७ सो वेदशास्त्र पुराण साहबको तौ नियरेही बतावैहैं औ दूरि खोजैहैं काहेते कि मायारूप बागुरि सर्वत्र पूरिरहीहै ८ सो येतो सब शिकारीहैं औ लक्षकहे निशानाएक जोवहीहै तातेहेजीव तैं पीउपीउ पुकारै तबहीं तेरोबचाउहै ९ ॥

अबकीबारैजोहोयचुकाव । ताकीकबीरकहपूरिदाव १०

सो श्रीकबीरजी कहैंहैं कि अबकी बार जो मानुषशरीरमें चुकावहोयगो औसाहबको न जानैगो तौ ताकी पूरिदावहै काहेते कि अबकीदारके चूके फेरि ठिकाना नलगैगो चौरासीलाख योनिन में भटकैगो फेरिजो भागन शरीरपावैगो तबपुनि नानामतनमें लगिकै चौरासीलाख योनिमें भटकैगो उद्धार न होइगो ताते अबकी दार जो समुझै औ साहबको जानै तौ तेरो पूरोदावपरै तामेंप्रमाण कबीरजीकीसाखी ॥ लखचौरासीभटकिकै पौमें अटकोआय ॥ अबकीपौजोनापरै तौ फिरि चौरासी जाय १० इतिसातवां बसन्तसमाप्तम् ॥

अथआठवांबसंत ॥

करपल्लवकेबलखेलैनारि । पंडितजोहोयसोलेइबिचारि १ कपरानहिं पहिरैरहैउघारि । निरजीवैसोधनअतिपियारि २ उलटीपलटीबाजैसोतार । काहुहिमारैकाहुहिउबार ३ कहकबीरदासनकेदास । काहुहिसुखदैकाहुहि उदास ४ ॥

करपल्लवकेबलखेलैनारि । पंडितजोहोयसोलेइबिचारि १

सो श्रीकबीरजी कहैंहैं कि नारिजो माया सो पल्लव जो रामनाम सो करमें लैकै वाहीकेबल खेलैहै जब प्रथम यह जगतकी उत्पत्ति भई तब रामनामलैकै वाणी निकसीहै तामें प्रमाण ॥ रामनामलैउचरीवाणी ॥ ताही जगतमुख अर्थमें चारिउवेद ईश्वर ब्रह्म सबसंसार निकसेहैं तामें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमाणसायरको ॥ रामनामके दोईअक्षर चारिउवेद कहानी॥सोतौनेहीं के बलते सबसंसार बांधिलियोहै सो जोकोई पंडितहोइ सो बिचारिकै लै लेइ जगत्मुख साहबमुख यामें दोऊअर्थहैं सो साहबमुख अर्थ रामनाम में लेइ जगतमुख अर्थकेवल मायाखेलैहै ताको छोड़िदेइ १ ॥

कपरानहिंपहिरैरहउघारि। निरजीवैसोधनअतिपियारि२
उलटीपलटी बाजैसोतार। काहुहिमारै काहुहि उबार ३

सो वा नारि माया कैसीहै कि कपरा नहीं पहिरै उघारहीरहैहै अर्थात् वहमाया सबको मूंदेहै वाको मूंदनवारो कोई नहीं है जोकहो वाको ब्रह्म मूंदेहोइगो तौ निर्जीव जो ब्रह्म सो धन जो माया ताको अति पियारहै अर्थात् वाहूको सबलित कियेहै २ औ पुनि कैसीहै कि उलटी पलटीतार बाजैहै कहे काहूको अविद्यामें डारिकै नरक देइहै औ काहूको बिद्या रूपते स्वर्ग सत्यलोकादि देइहै ३ ॥

कहकबीरदासनकेदास। काहूसुखदैकाहूउदास ४

श्रीकबीरजी कहैंहैं कि दासनके दास कहे ब्रह्मादिक जे मायाके दास तिनहूं केदास जीव तुम्हारी मायाकैसे छूटै वे ब्रह्मादिकै मायातेनहीं छूटे यामाया कैसीहै काहूको तोसुखद है काहू कैति उदासहै कहे उनकोस्पर्श नहीं करिसकैहै अर्थात् जे साहबको जानैहैं तिनकी कैति उदासहै तिनहीं के दास तुमहू होउ तब उबार होइगो मायाब्रह्मजीवके परे श्रीरामचंद्रही हैं तामेंप्रमाण ॥ रामएवपरंब्रह्मरामएवपरंतपः। रामएवपरंतत्त्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकं ॥ इतिश्रुतेः ४ इतिआठवांबसंतसमाप्तम् ॥

अथनवांबसंत ॥

ऐसोदुर्लभजातशरीर। रामनामभजुलागैतीर १ गयेबेणुबलिगेहैंकंस। दुर्योधनगयेबूड़ेबंश २ पृथ्युगयेपृथ्वीकेराव। बिक्रमगयेरहेनहिंकाव ३ छौ चकवैमंडलीकेझार। अजहूं होनलदेखुबिचार ४ हनुमतकश्यपजनकौबार। ईसबरोंकेयमकेधार ५ गोपीचँदभलकीन्होंयोग। रावणमरिगोकरतैभोग६ जातदेखुअससबकेजाम। कहकबीरभजुरामैनाम ७ ॥

ऐसो दुर्लभ जातशरीर। रामनामभजु लागैतीर १
गये बेणुबलि गेहैंकंस। दुर्योधन गये बूड़ेबंश २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथुगये पृथ्वीके राव। बिक्रम गये रहेनहिंकाव ३
छौचकवेमंडलीकेझार। अजहूं होनलदेखुबिचार ४
हनुमत कश्यप जनकौबार। इंसबरोंके यमकेवार ५
गोपीचँदभलकीन्होयोग। रावणमरिगोकरतैभोग ६
जातदेखुअससबकेजाम। कहकबीर भजुरामैनाम ७

चौरासीलाख योनिनमें भटकतभटकत यहशरीरपायो दुर्लभ सोवृथाही जायहै सोरामनामको भजु सेवाकरु जाते तीरलगै देखु बलि कंस दुर्योधन पृथु बिक्रम ये छयो चक्रवर्ती भूमिमंडलके तेशरीर छोड़िकै जातभये सो नर अजहूं बिचारिकै तू देखु औ हनुमतकश्यप अदितिजनककहे बृह्मा बारकहे सनकादिक ते ये अबलौं रामनामकहि यमको धाररोकेहैं अर्थात्जे उनके मतमें जाय रामनाम कहैंहैं ते संसारतेछूटिही जायहैं उनपै यमको बल नहीं चलैहै औ गोपीचंद योगीरहे रावण भोगीरह्यो पै रामनामनहीं भजे ते दोऊ मरिगये सो श्रीकबीरजी कहैंहैं कि याहीभांति सबके जामाजे शरीर तेजात देखैंहैं ताते रामनामभजु भजसेवायांधातुहै ताते तहूं राम नामकी सेवाकरु तबहीं संसार समुद्रके तीरलगैगो नहीं तो बहिजायगो रामनामके जपैया नहीं मरैंहैं तामेंप्रमाण कबीरजीकोपद ॥ हमनमरैंमरि हैंसंसारा। हमकोमिलाजियावनवारा ॥ अबनामरैंमोरमनमाना। सोइ मुवाजिनरामनजाना। साकतमरैसंतजनजीवै। भरिभरिरामरसायनपीवै॥ हरिमरिहैंतौहमहूं मरिहैं। हरिनमरैंहमकाहेकोमरिहैं ॥ कहकबीरमनम-नहिंमिलावा। अमरभयेसुखसागरपावा ७ इतिनवांबसंतसमाप्तम् ॥

अथदशवांबसंत॥

सबहीमदमातेकोइनजाग। सोसँगहिचोरघरमुसनलाग १ योगी मद-मातेयोगध्यान। पंडितमदमातेपढ़िपुरान २ तपसीमदमातेतपकेभेव। संन्यासीमातेकरिहमेव ३ मोलनामदमातेपढ़िसोसाफ। काजीमदमातेकै निसाफ ४ शुकदेवमतेऊधोअक्रूर। हनुमतमदमातेलियेलँगूर ५ संसार मत्योमायाकेयार। राजामदमातेकरिहँकार ६ शिवमातिरहेहरिचरणसेव। कलिमातेनामदेवजयदेव ७ वहमत्यसत्यकहसुश्रितवेद। जसरावणमारे घरकेभेद ८ यहचंचलमनकेअपकाम। सोकहकबीरभजुरामनाम ९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबहीमदमातेकोइनजाग। सोसँगहिचोरघरमुसनलाग १ यो गीमदमातेयोगध्यान। पंडितमदमातेपढ़िपुरान २ तपसीमदमातेतपकेभेव। संन्यासीमातेकरिहमेव ३ मोलनामदमातेपढ़िसो साफ। काजीमदमातेकेनिसाफ ४ शुकदेवमतेऊधोअक्रूर। हनुमतमदमातेलियेलँगूर ५ संसारमत्योमायाकेधार। राजामदमातेकरिहँकार ६ शिवमातिरहेहरिचरणसेव। कलिमातेनामदेव जयदेव७ वहसत्यसत्यकहसुम्रितवेदाजसरावणमारेघरकेभेद ८ यहपंचलमनकेअधमकाम। सोकहकबीरभजुरामनाम ९॥

यहपदको समेटिकै अर्थकरैहैं यहसंसारमें सबकोई मदमें माततभयो जागतकोई न भयो सो जिनको जिनको यह पदमें गनायआये तेतेपूथम जैसे रावण घरके भेदते मारेगयो तैसे मनके भेदते मारेगये परंत इन सबमें जेरामनामको जप्यो तेई छूटैहैं हनुमदादि शुकादिजे कहिआये यह मनकेतो अधम कामहैं जेरामनामको नहीं जाने ते संसारहीमें परे ताते तैहूं रामनामकोभजु तबहीं तेरो उबार होइगो औरीभांति संसारहीमें परेरहैगो औ संसारसागरकोपारकरनवारो एकरामनामही हैतामेंप्रमाण॥ माधवदुखदारुणसहिनजाइ। मेरीचपलबुद्धितातेकावसाइ॥ तनमनभीतर बसमदनचोर। तवज्ञानरतनहरिलीनमोर॥ हौंमैंअनाथप्रभुकहौंकाहि। अनेकबिगूंचेमैंकोअहि॥ औसनकसनंदनशिवशुकादि। आपुनकमला पतिभोबूझादि॥ योगीजंगमयतिजटाधारि। अपनेअवसरसबगयेहारि॥ सोकहकबीरकरिसंतसात। अभिअंतरहरिसों करहुबात॥ मनज्ञानजान करिकरिबिचार। श्रीरामनामभजुहोउपार ९ इतिदशवांबसंतसमाप्तम्॥

अथग्यारहवांबसंत॥

शिव काशी कैसीभै तुम्हारि। अजहूं हो शिव देखहु बिचारि १ चोवा अरु चन्दन अगरपान। सबघरघर स्मृतिहोइपुरान २ बहुविधि भवननमें लगैभोग। असनगर कोलाहलकरतलोग ३ बहुविधि परजानिर्भयहैंतोर। तेहिकारण चितहै ठीकमोर ४ हमरे बालककरयहै ज्ञान। तोहीं हरिको समुझवै आन ५ जगजो जेहिसों मन रहललाय। सोजिवके मरेकछुकहँ समाय ६ तहँजोकछु जाकरहोय अकाज। हैताहिदोष नहिंसाहब लाज ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब हर हर्षित सोकहल भेव । जहँ हमही हैं तहँ दुसर केव ८ तुमदिना चारिमन धरहु धीर । पुनि जसदेखहु तस कहकबीर ९ ॥

शिवकाशीकैसीभै तुम्हारि । अजहूहोशिवदेखहुबिचारि १
चोवाअरुचंदन अगरपान । सबघरघर स्मृतिहोइपुरान २
बहुबिधिभवननंनमेलगैंभोगाअसनगरकोलाहलकरतलोग३
बहुबिधि परजानिर्भयहैंतोर । तेहिकारण चितहैंढीठमोर ४

श्रीकबीरजी कहैहैं किजब मैं बालापन में साधन करतरह्यो है तबहीं देवतनको दर्शनहोतरह्योहै सो मैंमहादेवजीते पूछ्यो कि यहकाशीतुम्हारी कैसीभईहै अजहूं तो बिचारि देखो तुम्हारी काशीमें चन्दन चोवा अगर लगावैहैं पान खायहैं घर घर स्मृति पुराण होइहैं बिबिधि भांतिके मेवा पकवान भोगलगावैहैं यहीरीतितेनगरमें कोलाहल लोगकरिरहेहैं ऐसेपरजा तम्हारे निर्भय होइरहेहैं तौनेकारणते मोरौ चित ढीठ होइगयोहै ४॥

हमरे बालक को यहैज्ञान । तोहींहरिको समुझवैआन ५
जगजोजेहिसोंमनरहललाया।सोजिवकेमरेकहुकहँसमाय६

सोहमजे सबबालकहैं तिनकर यहै ज्ञानहै तुमजेहौ महादेव औ हरिजे हैं श्रीरामचन्द्र तिनकोतो समुझवै काशीवाले आनहैं काहेते कि वेदद्वार यह कहतेहैं किजब संसार छूटैहै ज्ञानहोइ है तब मुक्तिहोइहै ये सब जोकाशीमेंमरैहैंसो मुक्तह्वैजाइहैंभोगकरैहैं सो यहूवेदद्वाराकहो हौंकी कहे बिलक्षण समुझवैहैंयूजगत्में जो जौनेमें मनलगावैहै सो शरीर छूटे कहो कहाँसमायहै अर्थात् जाहीमें मनलगावैहै ताहीमें समायहै यहूवेद में लिखैहै॥अन्तेयामतिःसागतिः॥ सो हमतुमसो पूछैहैं किबिषयमेंमनलगाये मरे जे काशीके लोगते कहाँ जायहैं ६ ॥

तहँजोकछुजाकरहोइअकाज । हैताहिदोषसाहबनलाज ७
हरहर्षितहर्षैतबकहलभेव । जहँहमहींहैंतहँदुसरकेव ८
तुमदिनाचारमनधरहुधीर।पुनिजसदेखेहुतसकहकबीर ९

सो जाकर अकाज होइहै, ताहीकोदोषहै काहेते वाके कर्महीते अकाज होयहै साहबजो आपहैं श्रीरामचन्द्र तिनको कौनलाजहै जोआप काशी के जीवन मुक्तिदेइहैं सो कौनेहेतुते कहाँ और संसारी जीवआपका न होइ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशी आपकाहै ७ तब हर्षितहैकै हरमोसे भेदबतायो कि जहाँहमहैं तहांदूसरकोहै काशीमें औसब संसारमेंजहांहमहैंअर्थात् हमकोजे जानैहैं तेके कर्म औ कालई कैसे जोरकैसकैंकाहेते कि जबहम ब्रह्मते रामनाम पायोहै तब जान्यो है ताहीते मुक्ति करैहैं रामनामको उपदेश करि श्री रघुनाथजीको ज्ञानदेइहै वाको तब मुक्तिहोइहै सो काशीहूमें रामनाम दै मुक्त करैहै औरहू देशमें रामनाम पाइकै मुक्तिहै जाइहै८ सोदिन चारतममनमें धीर धरौ पुनि जसदेख्यो तस हे कबीर तुमकह्यो अर्थात् जैसे हम रामनाम दैकै जीवनको उद्धार करतेहैं तैसे तुमहूं करौगे तब तस देखोगे कि रामनामते कैसो बिषयी होइ पैउद्धारईहोयजाइहै औकाशीमें रामनामहीं ते मुक्ति होइहै महादेव देइहैं तामेंप्रमाण॥पेयंपेयंश्रवणपुटकेरामनामाभिरामध्येयंध्येयंमनसिसततंतारकंब्रह्मरूपं। जल्पंजल्पंप्रकृतिविकृतौ प्राणिनांकर्णमूले वीथ्यांवीथ्यां मतिजलः कोपिकाशीनिवासीदइति स्कंदे इतिग्यारहवांबसंतसमाप्तम् ॥

अथबारहवांबसंत ॥

हमरे कहल करनहिं पतियार। आपु बूड़े नल सलिलैधार १ अंधा कहै अंधपतिआय। जस बिश्वाके लगनै जाय २ सोतो कहिये अतिहि अबूझ। खसम ठाढ़ढिगनाहीं सूझ ३ आपन आपन चाहहिं मान।झुठ परपंच सांचकै जान४झूठा कबहुंकरौ नहिंकाज। मैंतोहिंबरजौंसुनु निरलाज ५ छाड़हु पाषँडमानहुंबात। नहिंतौ परिहौ यमके हात ६ कहै कबीर नलचलै न सोझ। भटकि मुयेजस सबनके रोझ ७॥

हमरेकहलकरनहिं पतियार। आपुबूडेनलसलिलैधार १
अंधाकहै अंधपतिआय। जसबिश्वाके लगनैजाय २
सोतोकहिये अतिहि अबूझ। खसमठाढ़ढिगनाहींसूझ ३

श्रीकबीरजीकहैहैं कि हमरे कहे ये जीवकोई नहीं पतिआयहैं साहब मेंकोई नहीं लगतेहैं आप सुखीबानी रूप सलिलमें बूडेजातेहैं बानी को पानी आगे कहिआयेहैं १ आंधर जे गुरुवा लोगहैं ते नानामतन को बतावैहैं आंधर जे जीवते गृहण करैहैं साहबको नहीं जानैहैं जैसे बेश्या की लगन व नाना परुषते रमैहै एकको जनतही नहीं है ऐसे नानाउ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पासना मानैहैं सो साहबको मनतही नहीं हैं २ सो तेजीवन को हम अतिही अबूझ कहैहैं काहेते कि श्रीरामचन्द्र अंतर्यामी रूपते ढिगहीमें हैं तिनको नहीं सूझैहै ३ ॥

आपनआपनचाहहिं मान । झुठपरपंचसांचकरिजान ४
झूठाकबहुंकरौनहिंकाज । मैंतोहिं बरजौंसुनुनिरलाज ५
छाड़हु पाषँडमानहुंबात । नहिंतो परिहौयमके हात ६

आपन आपन मानजोहै बड़ाई सिद्धता तौनेको चाहैहैं झूठपरपंच जो धोखाब्रह्मआत्मैं मालिकहै याको सांचमानैहैं ४ सो जो तैया झूठा बिचार करिरावैहै कि हमही ब्रह्महैं आत्मा मालिकहै सोये झूंठेकाजतैंन करुहे निर्लज्जजीव केतो जन्म मारोगयोहै पुनिवही कामकरैहै सो मैंतो को बरजौहौं तूया काम न करु साहबको जानु ५ सो मेरीबात तू मानु पाषंडको छोड़िदे नहीं तो यम जेहैं तिनकेहात कहेगड़वामेंपरिहौयम-दूतडाढ़ी पकरिकै डारिदेयँगे ६ ॥

कहकबीर नलचलेनसोझ । भटकिमुये जसबनके रोझ ७

सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेनल सोझ कहेसूधो अंतर्यामी जे साहब समीप तिनको न जान्यो दूरिहैं जे नाना उपासना तिनमें बनकेरोझकी नाईं भटकिकै मरिगये अर्थात्रोझ औघटबागतोहै शिकारीसो भेट भई मारोगयो ऐसेनाना उपासना करतरह्यो यमदूत डाढ़ीपकरि नरकमेंडारि दियो तामेंप्रमाण ॥ होइहिस्साब तबज्वाबकादेहुगे पकरि फिरिस्तलै जायडाढ़ी ॥ औसाहिबैके जानेसेंकूटैगो तामेंप्रमाण कबीरजीकोपद ॥चेत नदेकैरे जगधंधा । रामनाम को मरमनजानै मायाकेरसअंधा ॥ जनमत तबहिंकाहलै आया मरतकाहलैजासी । जैसेतरुवर बसतपखेरूदिवसचा रिकेबासी ॥ आयाथापी और न जानैं जनमतही जरिकाटी ।हरिके भक्ति बिनायहिदेही फिरिलौटेहिय फाटी ॥ काम अरुकोह मोहमद मत्सर पर अपबादा सुनिये । कहै कबीरसाधुकी संगति रामनाम गुनभनिये ७ इति बारहवां बसन्त समाप्तम् ॥

इतिबसन्तसम्पूर्णम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंगणशायनमः ॥

अथचौतीसीलिख्यते ॥

ओंकारआदिहिजोजानै । लिखिकैमेटिताहिफिरिमानै ॥ वेओंकारकहै सबकोई । जिनहुं लखा सो बिरलासोई १ कका कमल किरणिमेंपावै । अग्निबिगसितसंपुटनहिंआवै ॥ तहांकुसुंभरंगजो पावै । औगहगहकै गगन रहावै २ खखाचाहै खोरिमनावै । खसमहिं छोड़िदशौदिशिधावै ॥ खसमहिं छोड़िक्षमा ह्वैरहई । होयअखीन अक्षयपदगहई ३ गगागुरुकेवचनै मानै । दूसरशब्द करैनहिंकानै ॥ तहांबिहंगकतहुंनहिं जाई । औगहगह कैगगनरहाई ४ घघाघटबिनघे घटहोई।घटहीमें घटराखु समोई ॥ जोघट घटैघटैफिरिआवै । घटहीमेंफिरिघटैसमावै ५ ङङानिरखतनिशिदिनजाई । निरखत नैनरहा रटलाई ॥ निमिषएकलौं निरखैपावै । ताहिनिमिषमें नैनछिपावै ६ चचाचित्ररचोबहुभारी । चित्रहि छोड़िचेतु चित्रकारी ॥ जिन यह चित्रबिचित्र उखेला। चित्रछोड़ितू चेतुचितेला ७ छछाआहि छत्रपति पासा । छकिकै रहसि मेटि सबआसा ॥ मैंतोहीं छिन छिन समुझाया । खसमछोड़ि कसआपु बधाया ८ जजा यातनजियत जारो। यौवन जारियुक्तिजोपारो ॥ जोकछु जानिजानि परजरै । घटहि ज्योतिउजियारीकरै ९ झझाअरुझिसरुझिकितजाना । हीटतढूढ़तजाहिपराना ॥ कोटिसु मेरुढूढ़िफिरिआवै । जोगढगढागढहिसोआवै १० ञञानिरखत नगरसनेहू करु आपन निरवारु सदेहू ॥ नहिंदेखी नहिंआप भजाऊ । जहां नहीं तहँतन मनलाऊ ११ टटाविकट बातमन माहीं । खोलि कपाट महलमें जाही॥रहैलटपटे जुटितेहि माहीं । होहिं अटलते कतहुं नजाहीं १२ठठा ठौरदूरिठगनीरे । नितकेनिठुरकीनमनधीरे॥ जेहिठगठगसबलोगसयाना। सो ठगचीन्हि ठौरपहिचाना १३ डडाडरकीन्हे डरहोई । डरहीमेंडरराखु समोई ॥ जोडरडरैडरैफिरिआवै । डरहीमेंपुनिडरहिसमावै १४ ढढाढूढ़तई कतजाना । ढीगरढोलहिजाइलोभाना ॥ जहांनहीं तहँसबकिछुजानी । जहांनदीतहँलेपहिचानी १५ णणादूरिबसौरेगाऊं । रेणणाटूटैतेरानाऊं ॥ मुयेएतेजिय जाहीघना । मुयेएतादिक केतिकगना १६ तता अतित्रियो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहिंजाई। तनत्रिभुवनमें राखुकृपाई ॥ जोतन त्रिभुवनमाहँ कृपावै। तत्वहिमिलि सोतत्व जोपावै १७ थथाथाहथहो नहिंजाई। यहथीरेवह थीर रहाई ॥ थोरे थोरे थिरहोभाई। बिनथंभे जसमन्दिल जाई १८ ददादेखौ बिनगनहारा। जसदेखौ तसकरो बिचारा ॥ दशौद्वारमें तारी लावै। तब दयालको दर्शनपावै १९ धधा अर्धमाहँ अधियारी। जस देखै तसकरै बिचारी ॥ अर्द्ध छोड़िऊरधमनलावै। अपामेटिकै प्रेम बढ़ावै २० ननावो चौथेमें जाई। रामकाग कहहिं बरषाई ॥ नाह छोड़िकिय नर्क बसेरा। अजौं मूढ़ चितचेतु सबेरा २१ पपा पाप करै सबकोई। पापके धरे धर्म नहिंहोई ॥ पपाकहै सुनौरे भाई। हमरेसे ये कछू न पाई २२ फफाफल लागो बड़दूरी। चाखै सतगुरु देवनतूरी ॥ फफा कहै सुनौरेभाई। स्वर्गपतालकी खबरिनपाई २३ बबा बरबरकर सब कोई। बरबरकिये काजनहिं होई ॥ बबा बातकहै अरथाई। फलका मर्म न जानेहु भाई २४ भभाभर्म रहा भरि पूरी। भभरे तेहैनियरेदूरी ॥ भभाकहै सुनौरेभाई। भभरे आवै भभरेजाई २५ ममासे ये मर्म न पाई। हमरेते इनमूलगँवाई ॥ ममामूल गहल मनमाना। मर्मी होहि सो मर्महि जाना२६ ययाजगतरहा भरिपूरी।जगतहुतेयया हैदूरी॥ ययाकहै सुनौरे भाई। हमरेसे ये जैजैपाई २७ ररारारि रहा अरुझाई। रामकहै दुख दारिदजाई ॥ रराकहै सुनौरे भाई। सतगुरु पूछिकै सेवहु जाई २८ लला तुतरे बातजनाई। तुतरेपावै परचैपाई ॥ अपनातुतुरऔर कोकहई। एकै खेलदुनो निरबहई २९ ववावह वहकह सबकोई। वहवह कहे काजनहिं होई ॥ ववाकहै सुनहुंरेभाई। स्वर्गपताल की खबरि न पाई ३० शशा शरद देखै नहिंकोई। सरशीतलता एकहिहोई ॥ शशाकहै सुनौरे भाई। शुन्य समान चला जगजाई ३१ खखा खर खर कह सब कोई। खर खर कहेकाज नहिं होई ॥ खखा कहै सुनहुंरेभाई। रामनाम लैजाहु पराई ३२ ससा सरारचो बरिआई। सरबधे सबलोग तबाई ॥ ससाके घर सुनगुन होई।यतनी बात न जानै कोई ३३ हहा होइहोत नहिं जानै। जबहो होइ तबैमनमानै ॥ हैतोसही लहै सबकोई।जबवाहो इतव या नहिं होई ३४ क्षक्षा कूनपरलै मिटि जाई। क्षेवपरेत बकोसमु झाई ॥ क्षेवपरे कोउअंत न पाया। कह कबीर अगमन गोहराया ३५ ॥

ओंकारआदिहिजोजानै। लिखिकैमेटिताहिफिरिमानै॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैउोंकारकहैसबकोई । जिनहुँलखा सोविरलासोंई १

ओंकारको आदि जो रामनाम ताको जोकोईजानै पिण्डाण्ड ब्रह्माण्डको वाहे लिखिकै कहे उत्पत्तिकै मेटैकहे नाशकरै फिरिमानैकहे पालनकरै सोवह ओंकार को तो सबैकोई कहैहैं परंतु जिन वाको लखाहै सो कोई विरलाहै ताके लखिबेको प्रकार हौं कहौहौं अकार लक्ष्मणको स्वरूप उकार शत्रुघ्नको स्वरूप मकारभरतको स्वरूप अर्द्ध मात्राश्रीरामचन्द्रको स्वरूप संपूर्ण प्रणव श्रीजानकी जीको स्वरूप यहिरीतिते जोकोई प्रणव को जानै सो बिरलाहै कौनी रीतिते जपकरै त्रिकुटीमें अकार कंठमें उकार हृदयमें मकारनाभिमें अर्द्ध मात्रा गैवगुफामें संपूर्ण प्रणव ऐसो एकएकमात्राको अर्थबिचारत घंटा नादकी नाईं जप करनवारो बिरलाहै साहबमुख यह अर्थ हम दिगदर्शन करदियोहै और बिस्तारते अर्थ हमाररहस्य त्रयग्रन्थ में है और सब जगतमुख अर्थहै १ ॥

ककाकमलकिरिणिमेंआवै । शशिबिगसितसंपुटनहिं आवै ॥
तहांकुसुम्भ रंग जोपावै । औ गहगहकै गगनरहावै २

काकहिये सुखको सोककाकहे सुखको सुख जो साहब तिनको किरणि जो अर्द्ध मात्राताको नाभि कमलमें ध्यानकरि जीवजानै औ शशिजोचंद्र नाड़ी तौनको अमृत सींचिकै बिगसित कियेरहै संपुटितन होन पावै औ तहं कुसुंभरंगजो प्रेमताको पावै तौ अगह जोसाहब जे मनबचन करिकै नहीं गहेजाईं तिनको गहिकै गगन जो हृदय आकाश तामेंराखै याके आवर्ण के मंत्र औ ध्यानको प्रकार हमारे शान्तशतकमें लिख्योहै ककार सुखको कहैहैं तामेंप्रमाण॥ कःप्रजापतिरुद्दिष्टःकोवायुरितिशब्दितः॥ कश्चात्मनिसमाख्यातःकस्सामान्यउदाहृतः १ कंशिरोजलमाख्यातं कंसुखेऽपिप्रकीर्तितम्॥पृथिव्यांकुःसमाख्यातःकुःशब्देऽपिप्रकीर्तितः२॥

खखाचाहैखोरिमनावै । खसमहिं छोड़िदशहुदिशिधावै ॥
खसमहिंछोड़िक्षमाहवैरहई । होइअखीनअक्षयपदगहई ३

खा जो चैतन्याकाश ताहूको चैतन्याकाश अर्थात् ब्रह्महू को ब्रह्म जो साहब ताको जो चाहै तौअपनी खोरि जो चूकसो मनावै कहेबकसावै कौन चूक जौन खसमझे साहबहैं तिनको छोड़िकै जो दशौदिशामें धावैहै कहे नानाउपासना करैहै सो या चूकबकसावै औखजो चैतन्याकाश सम कहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वत्रपूर्ण ऐसोजो धोखाब्रह्मताको छोड़िकै तैंक्षमाह्वैरहु ब्रह्मको वाद विवादनकरु होइ अखीनकहे आपनो स्वरूप जानिकै किमैंसाहबको हौं अक्षयहौं ब्रह्महू में लीनभये मेरोजीवत्व नहीं जायहै ऐसो हंसरूपह्वैकै अक्षयपदजे साहब तिनको गहु ३॥

गगागुरुके बचनैमानै। दूसर शब्द करैनहिंकानै॥
तहांबिहंगमकतहुंनजाई। औगहिगहिकैगगनरहाई ४

गाजोहै साहबको गीत ताकोगकहेतें गवैयाहै सोहेजीव तैं गुरुजेसाहब हैं तिनके बचनमानु कौनबचनकि॥अजहूं लेउछुड़ाइ कालसेंजो घटसुरति सँभारै॥और दूसर शब्द न कान करु जो घटसुरति सँभारैगो तौ बिहंगमजो जीवात्मा सो कतौं नजाइगो औगहकहे अवगाहजे साहबहैं तिनको गहिकै गगनजो हृदयाकाश ताहीमें रहैगो अर्थात् जो साहबको गुणगान करैगो तौ तेरो मनजो सर्वत्र डोलैहै सोकतौं न जाइगो तामेंपमाण॥गोगणपति रुद्दिष्टोगंधर्वागःप्रकीर्तितः। गंगीतेगातुगीताच गौश्चधेनुश्चसरस्वती ४॥

घघाघट बिनशे घटहोई। घटहीमेंघटराखुसमोई॥
जोघटघटै घटैफिरिआवै। घटहीमेंफिरि घटैसमावै ५

घजोघटहै ताको घाजोनाशहै सो करनवारो अर्थात् जनन मरनवारो हे घयाजीव घटजे पांचौशरीर ताके विनशे घटजोहै हंसशरीर सो होइहै कैसे होइहै ताको साधन कहैहैं घटहीमें घटराखु समोई कहे स्थूल सूक्ष्म में सूक्ष्म कारणमें कारण महाकारणमें महाकारण कैवल्यमें कैवल्य हंस स्वरूपमें समोइराखु अर्थात् एकएक में लीनकैदेइ जो यहीरीतिते घटजे पांचौ शरीर तिनको घटैघटै फिरिआवै तौ घटजोहै हृदयाकाश ताहीमेंघट जो हंसशरीर सो समावै अर्थात् जीते यहीशरीरमें हंसस्वरूपपाय जाय घघानको कहैहैं॥ घोघटेऽपिसमाख्यातःकिङ्किणीवाप्रकीर्त्तितः। हनुमते घासमाख्यातायमूर्द्धनिप्रकीर्त्तितः ५॥

ङङानिरखत निशिदिनजाई। निरखतनयन रहतरतनाई॥
निमिषएकलौं निरखैपावै। ताहिनिमिषमें नयनछिपावै ६

ङकहे भयानक डाकहे विषयबांका सो ङडा भयानक विषयबांका निरखत कहे बिचारत तोको दिनौरात जाइहै वाहीके निरखत में कहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारतमेंनयजो नीतिसो नहीं रहत रतनाई जो अनुराग विषयमें सोई रहिजाइहै कैसीहै यहविषयकी एकनिमिषलौं निरखै पावै कहेवामें लगै तौतौनेन निमिषमें भोगोपरान्त नयन छिपावैहै नहीं नीक लागैहै अर्थात् रूपको देख्यो फिरिनयन में नीरभरिआवै है नहीं नीक लागैहै सुगंधबहुत सुघ्यो उपरांत नाक बरिउठैहै अच्छोभोजनकियो तृप्तभयेपर बिरसपरि जाइहै गानबहुतसुन्यो फिरि बकवाधिलगैहै स्पर्शबहुत सुन्दरस्त्री कियो फिरि वीर्यपातभये नहीं नीक लागैहै गरम लागन लगैहै सोये सबतप्त के उपरान्त जो निमिषहै तौनै निमिष नहीं नीक लगैहै ङबिषयवांछाको कहैहैंतामेंप्रमाण॥ङकारोभैरवःख्यातोऽाध्वनावपिकीर्त्तितः॥ङकारस्त्वमर-णेप्रोक्तोङकारोविषयस्पृहा ६ ॥

चचा चित्ररचो बहुभारी। चित्रछोड़ि तूचेतु चित्रकारी॥
जिनयहचित्रविचित्रउखेला। चित्रछोड़ितूचेतुचितेला ७

चकहे मन काहेते कि मनको देवता चंद्रमा याते च मनको कही औ दूसर चाचोरको कही सो तेरोमनजो चोर सोतेरे स्वरूपको चोरायलीन्हो साहबको भुलायदीनो सोयह जगतरूप चित्रजो रच्योहै चित्रबिचित्र सोतू छोड़िदे हे जीव चित्रकारी जोमन ताको चेतकरु वही तेरे स्वस्वरूप को भुलाय दियोहै च चंद्रमाको चोरको कहैहैं ॥ चचंद्रश्चसमाख्यात स्तस्कर श्चउदाहृतः ७ ॥

छछाआहिछत्रपतिपासा। छकिकिनरहैछोड़िसबआसा॥
मैंतोहींक्षणक्षणसमुझाया। खसमछोड़िकसआपुबधाया ८

छकहेनिर्मल जीव तैं आपने स्वरूपको भूलिकै साहबको भूलिगयो ताते छाकहे खेदरूपही ह्वैगयो तेरेस्वरूपकी क्षयह्वैगई सोतैंतो छत्रपतीजे परमपुरुष श्रीरामचंद्र तिनको आहि तिनकेपास जायकै ईसब नानादेवन की आशाछोड़िकै छकिरहु याबात मैंतोको क्षणक्षण समुझायो परंतुतुम खसमजे साहबहैं तिनको छोड़िकै तैं काहेको जगतमें अपनपौ बधाया छनिर्मलको औ खेदको कहैहैं तामें प्रमाण ॥ निर्मलेछस्समाख्यातःतर णिःछःप्रकीर्त्तितः ॥ वेदेचछःसमख्यातो विद्वद्भिःशब्दशासने ८॥

जजाईतनजियतहिजारो। यौवनजारियुक्तिजोपारो॥
घटहिज्योतिउजियारीकरै। जोकछुजानिजानिपरजरै९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जकहिये वेगवंतको औ जाकहिये जघनको सो हेजीव वेगवारो जोमन है सोई तेरो जघनहै ताहीते वागत फिरैहै अर्थात् जननमरण होतरहैहै सो यातनको कहेमनरूप तनको तैंजीते मेंकहे यही शरीर को साधनकर के जारिदे मरेते न जरैगो दूसर शरीर देइगो यौवनकहे युवाअवस्थाको जारिकै वह युक्तिको पारो कहे धारणकरो फिरि वृद्धावस्थामें साधनकरिवे को सामर्थ्य नहीं रहैहै ताते युवै अवस्थामें इन्द्रिनको विषय साधनकरि जारु कौनीतरह ते जारु कि जो कछु पदार्थ जगतमें जानि राख्योहै ते जानिपरैं किजरिगये अर्थात् मनको संकल्प बिकल्प छूटिजाइ तबहीं ज्योतिजो मनहै सोघटमें साहबकीओर उजियारी करैहै ज्योति मनको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ जीवरूपएकअंतरवासा । अंतरज्योतिकीनपरगासा ॥ औ जकार वेगवारेको औ जघनको कहैहैं । वेगितेजःसमख्यातो जघनेजः प्रकीर्तितः ९ ॥

झझाअरुझिसरुझिकितजाना । हीठतढूढ़तजाहिपराना ॥
कोटिसुमेरुढूढ़िफिरिआवै । जोगढ़गढ़ागढ़हिसोपावै १०

झकहियेझंझापवनकोऔझाकहिये नष्टको सोतैं विषयझंझामें परिकैनष्ट होइगये सो यामें अरुझिकै तैंकहांसरुझिकै जैहै झकहिये पीठिको झाकहिये विषयबयारिको सो विषय बयारिमें अरुझिकै साहबको पीठिदैकै सरुझिकै कितजान चाहैहै हीठतढूढ़त तेरोपरान जाइहै नाना उपासना नानामतकरैहै अथवा हीठत ढूढ़त तेरोपरानजाइहै नानामतनमें पैतोको विषयबयारि न छाड़ैगीवाहीमें अरुझोरहैगो कोटिसुमेरुकहे कोटिन ब्रह्मांड भटकिआवो परंतु जौन मनशरीर गढ़कोगढ़ाहै कहेबनाव तौनेनको औ गढ़कहे शरीरको तपावैगो यातेतैं विषय बयारिकोछाडु साहबके सन्मुख होइ झ झंझावातको औ नष्टको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ झंझावातेझकारःस्या न्नष्टेझस्समुदाहृतः १० ॥

अआनिरखतनगरसनेहू । आपनकरुनिरवारुसदेहू ॥
नहिंदेखोनहिंआपुभजाऊ । जहांनहींतहँतनमनलाऊ ११

अकहिये सोइबेको आकहिये घर्घर धुनिको सो घर्घर नाक बजावत ऐसो सोवत कहे आपने स्वरूपको भलो जीव नानामतनमें वादविवाद करत नगर जो जगत औ शरीर ताही को निरखै है औ वाही में सनेह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करैहै आपने जो संदेहकी मैं साहबकोहौं कि और को हौं ताको तो निरवारुकरु नयबात तनही देखी जेहिमें साहब मिलैहैं औनआप भजाऊकहे न आपनपौ जाने कि मैं कौनकोहौं जिनजिन मतनमें न साहिब जानिपरै न आपनोस्वरूप जानिपरै तामें तैं तनमनको लगायहै औ अशयनको औ घर्घरध्वनिकोकहैहैंतामेंप्रमाण॥अकारःशयनेप्रोक्तोअकारोघर्घरध्वनौ११॥

टटाबिकट बात मनमाहीं । खोलिकपाट महलमें जाहीं ॥
रहेलटपटेजुटितेहिमाहीं । होहिंअटलतेहिकतहुंनजाहीं१२

एक टकहे जोनाभीमें रेफकी धुनि उठैहै औ दूसरो टाकहेंजो सुरति कमलमें गुरुरकार धुनिकरैहै सोदूनो धुनि जामेंहोइ सोटटाकहावैहै सो हेटटाजीव बिकटबातकी जेबासना तेरे मनमें तेईकपाटहैं ताकोखोलि कैदूनोंरकारकी धुनिएककै रामनामकी ह्रयउमात्रा जपत अर्थबिचारत महलजो साकेत तहांको जाइरहै लटपटे कहे जैसेहोय तैसे रामनाममें जुटिरहु तो साकेतमेंजाइकै तैंअटलह्वैहै अथवा बिकट बासननको तेरे मनमें टटाह्वैरहाहै सोटटाको खोलिकै महलमें जा हे लटपटे जौने संसार मेंलटपट ह्वैरहेहै कहे नरक स्वर्गमें तैंगिरे उठैहै सोतैं साकेतमें जुटिरहु जेसाकेतमें जुटिरहैहैं कहे प्रवेश करिरहैहैं तेईअटलह्वैरहैहैं उनकोजनन मरननहीं होय वेकतहूं नहीं जायहैं ट धुनिको कहैंहैं तामेंप्रमाण॥टःष्ठथिड्याचकटकेटोध्वनोचप्रकीर्त्तितः १२ ॥

ठठाठौर दूरि ठगनीरे । नितकेनिठुर कीन्ह मनधीरे ॥
जेहिठगठगसबलोगसयाना। सोठगचीन्हिठौरपहिचाना१३

ठकहिये वृहद्ध्वनिको औ ठाकहिये चंद्रमंडलको सो वृहद्ह्वै ध्वनिकहे कीर्त्ति जिनकी तीनोंतापके हरनहारे चंद्रमण्डलकी नाईं ऐसे परमपुरुष परजे श्रीरामचंद्रहैं तिनको ठौर दूरिहै औ ठगजो मनहै सोनेरेहै अथवा हेठट्ठहा मसखरा जीव साहबसों मसखरी करनवारो जातेजननमरणछूटै है वा साहबकोठौर दूरिहै ठगजे मन बुद्धि चित्त अहंकार तेनेरेहैं तैंनित्य कै निठुरहै म जोमाया ताको नाधीरे करतभे सोकहे तेज करतेभये ऐसो जोठगमन जौनसब सयाने लोगनको ठगतभो तौने ठगमनको चीन्हिकै साहबको ठौरको पहिचानो अथवाठगजेहैं गुरुवालोग तेसाहबसे छीड़ाय कै और और में लगायो तेकहां तेरे मनको धीरेकिये नाहीं किये औ ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृहद्ध्वनिको औ चंद्रमंडलको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ वृहद्ध्वनिश्चठःप्रोक्त स्तथाचंद्रस्यमंडले १३ ॥

ढडाडरकीन्हेडरहोई । डरहीमेंडरराखुसमोई ॥
जोडरडरैडरैफिरिआवै । डरहीमेंपुनिडरहिसमावै १४

एक ड कहिये धुनिको औ डा कहिये त्रासको सो मायारूप बाणीकी त्रासकहे डर सो याडर तेरेकीन्हेते होइहै अर्थात् येमिथ्याहैं तैंहीं बनाय लियोहै केसेमिटैं सोजिनको तैंडरैहै बिषयनको तिनको इन्द्रिनमेंसमोइ दे इंद्रिनको डरैहै सोमनजो महाडरहै तामेंसमोइदे औ मनको चितत-न्मात्रब्रह्ममें समोइदे यारीतिते डरको डरमें समोइकै तैंफिरिआउ साधन करि साहबको जानु डकार ध्वनिको औ त्रासको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ ड कारःशंकरेत्रासे डकारोध्वनिरुच्यते १४ ॥

ढढाढूढ़तईकतजाना । ढीगरडोलहिजाइलोभाना ॥
जहांनहींतहँसबककुजानी। तहांनहींजहँलेपहिंचानी १५

ढकहिये बाणीको ढाकहिये निर्गुणब्रह्मको सोहेजीव बाणीमें लगिकै निर्गुणब्रह्मकोढूढ़ततोको कहांजानाहै अर्थात् उहां कुछुनहीं है तैंतोसाहब कोहै वाढीगरहै जापुरुषकेहै तौनेको ढोल बाजा बानीरूप पानी तौने में लोभाने तैंजाइ अर्थात् या बाणीरूप ढोलबाजा है अहंब्रह्म बुद्धि बतावैहै सोदूरिकोढोल सुहावनहै वामें कछुनहीं देशकालबस्तु परिच्छेद तेशून्यहै हाथएकौ न लगैगो सोहेजीव जहांकहे जौनेसाधनमें साहबनहीं हैं तौनेन साधनको तैंसब ककुजानि लीन्हेहै सोजहांनहीं कहे जहांमाया ब्रह्म ये एकहू नहीं हैं तहां साहबको तैं पहिचानिले ढ निर्गुणको औध्वनि को कहैहैंतामेंप्रमाण ॥ ढकारःकीर्तितोढक्का निर्गुणेचध्वनावपि १५ ॥

णणा दूरि बसैरे गाऊं । रेणणा टूटैतेरे नाऊं ॥
मुयेयेतेजियजाहीघना । मुयेयतादिककेतिकबना १६

ण कहिये निष्फलको णाकहिये ज्ञानको सोहे जीव या धोखाब्रह्मको ज्ञान तेरोनिष्फलहै याज्ञानते साहब न मिलैंगे साहबको गाउं जोसाकेत है सोदूरि बसैहै सोरे निष्फल ज्ञानवारे मूढ़ जीवटूटै तेर नाउंकहे वाधो-खा ब्रह्ममें लगै तेरोजीवस्वको नाउं टूटि जाइगो अर्थात् तैंहूं धोखा ब्रह्म कहावनलगैगोसोयाज्ञानमेंकेतौमरिगयेहैं औघनाकहेबहुतजीव मुयेजाहिहैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औकेते गनै यहीरीति मरिजैहैं या धोखाब्रह्म निष्फलज्ञानते साहब न मिलैंगे ण निष्फलको औज्ञानको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ णकारःकीर्तितोज्ञाने निष्फलेऽपिप्रकीर्तितः १६ ॥

तताअतित्रियो नहिं जाई। तनत्रिभुवनमें राखुछपाई॥
जोतनत्रिभुवनमाहँछपावै। तत्वहिमिलेतत्वसोपावै १७

त कहिये चोरको ता कहिये सीगटको पूंछको सो हे जीव साहब ते चोराइकै आंखी छपाइकै सिंहजो साहब ताकी शरण छोड़िकै सीगटकी पूंछजो धोखाब्रह्म तौनेको तैंगहे सो अतित्रियो कहे आसमता ताते कहे अत्यंत चारिउ ओर व्याप्ति त्रिगुणात्मिका मायातौनो भरितेरी नहीं जाइ है मुक्तिहोबे की कहाकहिये सोतन कहे अणुमात्र जोतैहै ताको त्रिभुवन मेंछपाय राखतिभै माया सोयेजेतेरे पांचौतनहैं तिनको तैंत्रिभुवनमेंछपायदे अर्थात् चारिउ शरीरहैं तिनको संसारीमानिले औमैं इनतेभिन्नहौं वा शरीरको अभिमान जोतैं छाड़िदे तौ तत्व जो साहबको यथार्थज्ञान कि मैं साहब कोहौं तौन जबतोकोमिलै तबतत्वजे साहबहैं तिनकोपावै तत्व यथार्थको कहैहैं तामेंप्रमाण तत्वंब्रह्मणियाथार्थे॥औ साहब तत्वकहावै है तामेंप्रमाण॥रामएवपरंतत्वंरामएवपरंतपः॥ तचोरको औ सीगटकी पूंछ कोकहैहैं तामेंप्रमाण ॥ तकारःकीर्तितश्चौरःक्रोष्टुपुच्छेऽपितःस्मृतः १७ ॥

थथाथाहथहो नहिंजाई। इहथोरे वहथीर रहाई॥
थोरेथोरेथिररहुभाई। विनुथंभेजसमंदिलथँभाई १८॥

थकहिये शिला समूहको औ थाकहिये रक्षाको सोहेजीव शिलासमूह जो मन जौनेके भयते अपनी रक्षाकरु काहेते थाहहै अर्थात् बिचारकीन्हे कुछबस्तु नहीं है परन्तु काहूके थहायेनहीं थहाय जायहै शिलासमूहमन है सोआगेपदमें कहिआयेहैं ॥ पाहनफोरि गंगयकनिकसी चहुंदिशि पानी पानी॥सोयह मनथिर होइतौवहजीवहू थिररहै तातेतैं थोरेथोरे साधनकरु जाते मनथिरहोइ जो साधननकरैगोतौ मन न थिररहैगो कैसे जैसे बिना थंभकहे खंभादेवाल और जो कौनौ यशौवाली बात न करै तौ वहयशबनै रहतहै मन्दिलथँभैहै अर्थात् नहीं थँभैहै अथवा थोरेथोरे साधनकरि मन थिरकैले जबमन थिरह्वैजाइगो तबसाधन न करन परैगो कैसैजैसे कौनौ यशवाली बातकियो फिरिवा यशरूपमन्दिर बिनाथम्भैबनोरहैहै थ शिला-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समूहको औरक्षाको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ श्लिलोच्चयेथकारस्य यास्थकारोभ यरक्षणे १८ ॥

ददादेखोबिनशनहारा । जसदेखौतसकरोबिचारा ॥
दशौद्वारमें तारीलावै । तब दयालको दर्शनपावै १९

दकहिये कलत्रको औ दाकहिये दानको सोहेजीव यासबकहे यहलोक में जोकलत्रादि औ वहलोक स्वर्गादिक बिनशनहाराहै अर्थात् सबनाश-मानहै सो जसदेखो कहे जैसा नाशमान देखतेहौ तैसातुहूं आपनेको बिचारकरो किहमहूं नाशहैजैहैं दशौद्वारको महामुद्रा करिबंदकरि तारीलावै कहे समाधिकरै तब दयालुजे साहबहैं तिनको दर्शनतैंपावैगो दकलत्रको औदानको कहैहैं तामें प्रमाण ॥ दंकलत्रेबुधैरुक्तं छेदेदानेपिदातरि १९ ॥

धधाअर्धमाहँ अँधियारी । जसदेखै तसकरैबिचारी ॥
अर्धछोड़ि उरधमन लावै । अपामेटिकैप्रेमबढ़ावै २०

ध कहिये बंधनको औ धाकहिये धाताको सोहेजीव मायाके बंधनमें परिकै अपनेको धाताकहे ब्रह्मा मानिलियोहै सोहेजीव तैं अर्धकहे अधोगति की अंधियारीमें परोहै तोकोनहीं सूझिपरै अज्ञानमें परोहै सो जसदेखै है सुनैहै तैसही बिचार अज्ञान पूर्वकंकरैहै सोतैंनकरु अर्धजोहै अधोगति कीराह ताको छोड़िकै उर्धकहे साहबके इहां जावेकी जोराहहै तामेंमन लगाउ अपामेटिकै कहे जोआपन सबमानि राख्योहै सोसब साहबको मानिकै औआपनेहूं को साहबको मानिकै प्रेमको बढ़ावै धबंधनको औ धाताकोकहैहैं तामें प्रमाण ॥ धोबंधनेधनाध्यक्षेधाताधीर्मरुतावपि २० ॥

नानावो चौथेमें जाई । रामकोगदहहि वैखरखाई ।
नाहछोड़ि कियनर्क बसेरा । नीचअजौंचितचेतु सबेरा२१

न कहिये गुणको औ नाकहिये निंदाको सोहे जीव तत्रिगुणमें बँधिकै निन्दारूपहै गयो अर्थात् निंदाकरिबेलायक ह्वैकै मन बुद्धि चित्तमें अहं-कार जो चौथतामें परिकै अर्थात् आपनेको ब्रह्ममानिकै रामको तेहिकै अर्थात् तेंतो श्रीरामचंद्रकोहै परंतु अवरे अवरेमें गदहाहि खरखातफिरैहै अर्थात् झूरज्ञानमें परोहै सोनाहजे परमपुरुष श्रीरामचंद्रहैं तिनकोछोड़ि कै नरकमें बसेरा कियो सोहेनीच अजै सबेरोहै अजहूं चेतु नगुणकोऔ भिन्दाकोकहैहैं तामेंप्रमाण॥ नकारःस्याद्गुणेचंद्रेदुःस्तुतौचप्रकीर्तितः२१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पपापापकरै सबकोई। पापकेधरे धर्मनहिंहोई ॥
पपाकहै सुनहुरे भाई। हमरेसेये कछू न पाई २२

प कहिये श्रेष्ठको पा कहिये रक्षक को सो हे जीव तें साहबको छैकै और और देवतनको श्रेष्ठ मानैहै औ रक्षक मानैहै पापई करैहै पाप के कियेते धर्म नहीं होयगो अर्थात् और देवतन क किये तेरी रक्षा न होयगी काहेते पपा जे हैं श्रेष्ठ रक्षक जिनको तें मानैहै तेई कहैहैं हेभाई सुनो हमारे सेये कछू न पावैगो मुक्ति हमारी दीनि नहीं दैजाइ मुक्तिश्री रामचन्द्रहीकी दई दैजाइहै तामेंप्रमाण ॥ मुक्तिप्रदातासर्वेषांविष्णुरेवन संशयः ॥ विष्णु श्रीरामचन्द्रको नामहै सो हमारे सर्वसिद्धान्तमें लिखोहै प श्रेष्ठको औ रक्षकको कहै हैं तामेंप्रमाण ॥ परमेपःसमाख्यातो पापानेचैवपातरि २२ ॥

फफाफललागो बड़दूरी। चाखैंसतगुरु देइँ न तूरी ॥
फफाकहै सुनहुरेभाई। स्वर्ग पताल कि खबरि न पाई २३

फ कहिये फलको फा कहिये निष्फल भाषण को सो हे जीव जौने फलको तें भाषण करैहै कि ऐसोफल होइगो सो या तेरोभाषणो निष्फल है फल जे साहबहैं ते बहुत दूरिहैं सतगुरु जेहैं जे साहबको जानैहैं तेई चाखैहैं वा फल वेतूरिकै काहूको नहीं देइहैं काहे ते वे साहब मनबचन के परेहैं आपहीते आप जाने जाइहैं आपनी दई इन्द्रीते आप देखे जाइ हैं सतगुरु जे बतावैहैं ते साहबके प्रसन्नहोबेकी राह बतावैहैं सो हेभाई लोकनमें फलकी चाहकरिकै निष्फलके भाषणवाले जे गुरुवा लोगहैं ते कहैहैं कि स्वर्ग पातालमें साहब की खबरि हमहूं कहूं नहीं पाई अर्थात् साहब हई नहीं हैं फ फलको औ फा निष्फल भाषण को कहै हैं तामें प्रमाण ॥ फंफावातेफकारःस्यात्फःफलेऽपिप्रकीर्तितः । फकारेऽपिचफः प्रोक्तस्तथानिष्फलभाषणे २३ ॥

बबाबरबर करसबकोई। बरबरकिये काजनहिंहोई ॥
बबाबातकहै अरथाई। फलकेमर्मनजानेहुभाई २४

ब कहिये बरुणको बा कहिये घटको सो बरुण जलके भीतर रहै हैं ऐसे हे जीव तुहूं बाणीके भीतर ह्वैकै घटकी नाईं भकभकाइ बरबर सब कोई करौहौ सो बरबरके किये काजनहीं होइहै अर्थात् साहब नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलैहैं सो हे बबा घटकी नाईं भकभकानवारे बात तो बहुत अर्थात् यकै कहैहैं परन्तु हे भाई लोकनके फलको मर्मनहीं जानौहौ कि वा फल भोगकरि ककुदिनमें गिरही परैंगे ब बरुणको औ कलशको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ प्रचेताबःसमाख्यातःकलशोबउदाहृतः २४ ॥

भभाभर्मरहाभरिपूरी । भभरेतेहैंनियरेदूरी ॥
भभाकहैसुनौरेभाई । भभरेआवैभभरेजाई २५

भ कहिये आकाश शून्यको भा कहिये भ्रमणको सो हे जीव भभरिबो कहावैहै डेराबो धोखा या ज्यहि मतन में कल शून्य है तेही मतनमें तैं भ्रमण करि रहोहै कहे सो बिचारको भ्रमण तेरे पूरि रहोहै सो तोको गुरुवा लोग साहबते डेरवाइ दियो औ धोखामें लगाइ दियो सो तोको डरही डर सर्बत्र देखो परैहै जब आवैकहे जन्महोइहै तबहू भभरे आवै है कहे डरैमें आवैहै औ जब जाइहै तबहू भभरे कहे डरैमें जाइहै वोहू नानाप्रकारके दुःख होइहैं सो या भभरे ते नियरे जे साहबहैं ते दूरि ह्वै गये सो भभा जे हैं धोखा ब्रह्मके भ्रमणवाले तेईकहैहैं सो हेभाई सुनो भ्रमैतेआवैहै भ्रमतेजाइहै महाप्रलयमें लीनहोइहै पुनिसृष्टिसमयमें संसारमें आये भ आकाशको औ भ्रमणको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ नक्षत्रंभंतथाकाशंभ्रमणेभःप्रकीर्त्तितः । दीप्तिर्भाभूस्तथाभूमिर्भीर्भयकथिताबुधैः२५ ॥

ममासेयेमर्म न पाई । हमरेतेइन्हमूलगँवाई ॥
ममामूलगहलमनमाना । मर्मीहोइसोमर्महिजाना २६

म कहिये लक्ष्मी को मा कहिये बन्धन को सो हे जीव तैं लक्ष्मी के बन्धनमें परिकै ऐश्वर्य्यमें परिकै साहबको मर्म्म न पायो हमरे ते कहे यह सब हमारहै यह बिचारते यहसब साहबको पहन जानोइ है आप न मानते इन्हमूल जे साहबहैं तिनको गँवाइ दियो सो हे ममा मायाबन्धनमें बँधो जीव जौन तेरेमनमेंमानाहै ताहीको मूलमानिगहिलीन्हो है सो तैं मूल न पायो काहे ते कि मर्म्मीकहे जो कोई साहबकोमर्म्मी होइहै सोई साहबके मर्मको जानैहै म लक्ष्मी को औ बन्धनको कहै हैं तामें प्रमाण ॥ मःश्रिश्चन्द्रमावेधा माचलक्ष्मीप्रकीर्त्तिता। मश्चमातरि मानेच बन्धनेमःप्रकीर्त्तितः २६ ॥

ययाजगत रहाभरिपरी । जगतहुतेययाहैदूरी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथाकहैं सुनौरेभाई। हमरेसेये जयजयपाई २७

य कहिये त्यागको या कहिये प्राप्तको सो हेजीव त्यागते नामसंन्यास ते प्राप्त जे साहब होइहैं ते साहब जगत्में पूरिरहेहैं जौन भरिपूरिकह्यो सो साहबको सौलभ्यगुण दिखायो न जानै ताको जगत्ते दूरिहै अर्थात् बाहरहै ते यया जे साहबहैं ते कहैहैं कि हे भाई सुनो हमरे सेयेतेकहे हमरेनसेवाते सबको जय करनवाला जो काल ताहूते जय पावै औरी तरहते कालते जयनहीं पावैहै साहब त्यागहीते मिलैहैं तामें प्रमाण॥ दोहा॥बिगरीजन्म अनेककी सुधरै अबहीं आज। होय रामको राम जपि तुलसीतजि कुसमाज॥ य त्याग को औ प्राप्त को कहै हैं तामेंप्रमाण॥ यमोयःकीर्त्तितःशिष्टैर्योवायुरितिविश्रुतः। यानेपातरियात्यागेकथिताशब्द वेदिभिः २७॥

ररारारिरहाअरुझाई। रामकहे दुखदारिदजाई॥
ररकहैसुनौरेभाई। सतगुरुपूछिकैसेवहुआई २८

र कहिये कामको रा कहिये अग्निको सो हेजीव तैं कामाग्निमें अरुझि रहोहै तामें जरोजाइहै सो यामें दुःख दरिद्र न जाइगो रामनाम कहेते दुःख दरिद्र जाइ है सो हे भाई सुनो रराकहे रसरूप जे साहब तिनको ज्ञानाग्नितें कर्मलायकै सतगुरु जे साहबके जाननवारे तिनसों समुझिकै रामनामको सेवहु रामनाम के सेवनकी युक्ति बूझिकै र को कामअर्थ छोड़िकै रकामको औ अग्निको कहैहैं तामें प्रमाण॥ रश्चकामेनलेसू र्य्ये रुश्चशब्देप्रकीर्त्तितः २८॥

ललातुतरेबात जनाई। ततुरेपावैपरचै पाई॥
अपनाततुरऔरको कहई। एकैखेतदुनोनिरबहई २९

ल कही इन्द्रको ला कही लक्ष्मीको सो हे जीव तैं इन्द्रकी नाईं लक्ष्मी पाइकै तत्वकी बातें जनावै है सो तत्व तब पावैगो जब साधुन ते परचै पावैगो सो हे जीव तत्वंरातिगृह्णातीतितत्वरः॥ अपना तो तत्व जेहैं यथार्थ साहब तिनको नहीं जानैहै और औरको ज्ञान सिखवैहै सो एक खेत जोहै एक हृदय तेरो तामें दोनों निरबहई अर्थात् का दोनों निरबहैहैं नहो निरबहैहैं कि तैं अज्ञानी बनोरहैहै औरको ज्ञानकथैहै तौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का औरके ज्ञान लगैहै नहीं लगै है जो तैंहूं ज्ञानी होइहै तौ तेरो ज्ञानौ कथिबो औरको लगै औ जो ततुरे पाठहोइ तो या अर्थहै ला इन्द्रको औ छेदनको कहैहैं सो हे जीव जो यज्ञादिक करि इन्द्रादिक देवतनके संतुष्ट के वास्ते पशुछेदन करौहौ सो वेद या तुतरेबात जनाई है जैसे लरिका रोटीको टोटाकहैहै परन्तु माताताप्पर्य जानैहैकि रोटीही मांगैहै ऐसेवेद जो यज्ञादिक कहैहैं सो दुष्कर्म छुड़ाइकै यज्ञादिक में लगायो फेरिज्ञान दैके येऊकर्म छुड़ाइकै तात्पर्यते साहबको बतावैहै सोतुतरजोहै वेदतौने को अर्थतब पावैजब वाकेतात्पर्यकोपावै सो आपतो तुतरहैं वेदपरदाकैकै बातकहैहैं सबजीवन को ए कहैहैं कि जीव औरको औरई कहैहै मेरोतात्पर्यनहीं समुझैहै सो एकैखेतजो संसारहैतामेंदूनों निबहैहैं अथवासाहब के इहांवेदनहीं पहुंचिसकहै न प्रगट बर्णन करि सकैहै तात्पर्यही करिकै कहैहै जगत औकर्म याहीको प्रगट बर्णन करैहै औजीवजेहैं ते जगत्हीमें परेरहैहैं जे तात्पर्यजानैहैं तेईसाहब के समीप पहुंचैहैं ताते वेदौ जीवौएकखेतजो जगत् है ताहीमेंनिबहैहैं जोजगतन रहैतोबद्धबिषयीमुमुक्षुई नरहिजायँ मुक्तभरि रहिजाइँ औ चारिउवेदरकारमकार में रहिजाइँ लइंद्रको लक्ष्मीकोछेदनको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ लइन्द्रोलक्ष्मनो लश्चलाचलक्ष्मीप्रकीर्त्तितः २९ ॥

ववावहवहकह सबकोई । वहवहकहे काजनहिंहोई ॥
ववाकहै सुनौरेभाई । स्वर्गपतालकी खबरिनपाई ३०

वकहिये भक्तको वा कहिये बायुको सोहे जीवतेंतो साहबको भक्तहै बायुकी नाईं जगत्में बहतफिराहौ वहहै ईश्वर वहहै ईश्वर या कहासब कोई कहौहौसोवेनानाईश्वरनकेकहेकाजकहेमुक्तिनहोइहै सोहे ववाकहते वारे भाई सुनतेजाउ तुम स्वर्गपाताल की खबरिनहीं पाई अर्थात् सबक रखवार साहबको नहीं जानौहौतामेंप्रमाण॥स्वर्गपातालभूमिलौं वारोएकै रामसकल रखवारी ॥ वासात्वतको औबायुको कहैहैंतामेंप्रमाण॥सात्वते वरुणेवातेवकारःसमुदाहृतः ३० ॥

शशासरदेखैनहिंकोई । सरशीतलताएकैहोई ॥
शशाकहैसुनौरेभाई । शुन्यसमानचलाजगजाई ३१

शकहिये सुखको शाकहियेशेषको सोहेजीव तेंतो सुखसागरजेसाहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं तिनको शेषहै अर्थात् अंशहै सो सुखसरजे साहबहैं तिनको तुमकोई नहीं देखौहौ कैसोहै वा सर कि जाकी शीतलता एकईहै वा शीतलता पायेफिरि जनन मरननहीं होइहै सो शशाजे साहबके शेषसाधुहैं तेकहैहैं कि जिनको अंशजीवतिनको नहीं जानैहै शून्यजो धोखाब्रह्मताहीमें जगत् तमानजाइहै श शेषको औ सुखको कहैहैं ॥ वदन्ति बुधाःशेषेशःशांतश्च निगद्यते ॥ शश्चशयनमित्याहुःहिंसाशःसमुदाहृतः ३१ ॥

खखाखराकरैसबकोई । खरखरकहे काजनहिंहोई ॥
खखाकहैसुनौरेभाई । रामनाम लैजाहुपराई ३२

खकहिये अशेषको सो खा दूसरीहै सोहेजीव अशेषौतेअशेष जे साहबहैं तिनको खरखर सांचसांच संबैकहैहैं औरेको खोटा मानैहैं परंतु खरखर कहैते काजजो है मुक्ति सो न होइगी बिनाराम नामके साधनकीन्हे औ बिना नीकीप्रकार साहबके जानेकाहेते खखाकहे अशेषौतेअशेष जेसाहब हैं ते कहैहैं कि हेभाई सुनौ तुमराम नामको लैकैमाया ब्रह्मते पराइजाउ अर्थात् सबको छोड़िकै रामनाम जपौ खअशेषकोकहैहैं ॥ खकारःकीर्तितः अशेषे बूश्चगर्भविमोचने ३२ ॥

ससासरारचोबरिआई । शरबेधेसबलोगतबाई ॥
ससाकेघरसुनगुनहोई । यतनीबात न जानैकोई ३३

सकहिये लक्ष्मीको साकहिये परोक्षको सोहेजीव तेरो ऐश्वर्य परोक्ष मेंहै अर्थात् साहबकेइहांहे यादेखिबेकी लक्ष्मीतेरी नहीं है सोतें सराजो कर्महै ताको बरिआई रचिलियो सो वाही सशरूपी शरहै कहे कर्मरूपी शरमें लोगबेधेहैं तेसबतबाईमें परेहैं नरक स्वर्गमें जाय आवैहैं सो ससा जो जीवताके घरकहे हृदयमें काहूके शून्यकहे धोखाब्रह्मसमानहै काहूके गुण जोमाया सोसमानहै सो यतनी बातकोई नहीं जानैहै कियेईसाहब को चीन्हन न देइहैं स लक्ष्मीको औपरोक्षको कहैहैं ॥ सपरोक्षेसमाख्यातः सचलक्ष्मीप्रकीर्त्तितः ३३ ॥

हहाहोइहोतनहिंजानै । जबहींहोइतबैमनमानै ॥
हैतोसहीलहैसबकोई । जबवाहोतबयानहिंहोई३४

हकहिये बिष्कम्भको हाकहियेत्यागको सो हेजीव याबिष्कम्भशरीरको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्याग होत कोईनहीं जानैहै जबशरीर त्यागहै जाइ है तबहीं जानै है कि शरीर त्यागहैगयो जामेंजीव थंभारहेहे सो शरीरमें हंसरूप सहीहैता जीवको परन्तु सबकोई नहीं लखैहै कहेनहीं पावैहे जब वा हंसशरीरहोइ जब या शरीर नहीं होइहै वाहीहंस शरीरमें थँभारहैहैं ह बिष्कम्भको औ त्यागको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ हःकोपवारणेप्रोक्तो हस्स्यादपिचशूलिनी। हानेपिहःप्रकथितोहोविष्कम्भःप्रकीर्त्तितः ३४ ॥

क्षक्षाछनपरलयमिटिजाई। छेवपरेतबको समुझाई॥
क्षेउपरेकोउअंतनपाया। कहकबीरअगमनगोहराया३५

क्ष कहिये क्षत्रको क्षा कहिये वक्षस्थलको सोहे जीवतें क्षत्रपतिजे श्रीरामचंद्रहै तिनको बक्षस्थलमेंतौ ध्यानकरु तौतेरी परलय जननमरण क्षणै में मिटिजाइ जबछेवकहे तेरोशरीर क्षय ह्वैजाइगो तबतोको को समुझावैगो छेवपरेकहे शरीरक्षयह्वैगयेकोऊ अंतसाहबको नहीं पायोहै सोकबीरजी कहैहैं कि याहीते तोको हम आगेते गोहरावै हैं कि फिरि क्या करैगो क्ष क्षत्रको औ बक्षस्थलको कहैहैं तामेंप्रमाण ॥ क्षश्चक्षत्रंचाक्षवश्चस्यात् क्षोवक्षसिकथ्यते ॥ क्षत्रकहे क्षत्रपतीको बोधह्वैजाइ जैसेबलिकहे बलिराम को बोधह्वैजाइहै ३५ ॥

इतिचौतीसीसम्पूर्णम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

अथविप्रमतीसीलिख्यते ॥

सुनहु सबनमिलिविप्रमतीसी । हरिबिनु बूड़ीनाव भरीसी १ ब्राह्मण ह्वैके ब्रह्म न जानैं । घरमें यज्ञपतिगृहआनैं २ जेसिरजातेहिनहिंपहिचानैं । कर्मभर्मलै बैठि बखानैं ३ ग्रहणअमावस सायरपूजा । स्वातीके पातपरहु जनिदूजा ४ पेतकर्मसुखअंतरबासा । आहुतिसहितहोमकीआसा ५ कुल उत्तम कुलिमाहँकहावैं । फिरिफिरि मध्यमकर्मकरावैं ६ कर्मअशुचिउच्छ दैखाहीं । मतिभरिष्ठयमलोकहिजाहीं ७ सुतदारामिलिजूठोखाहीं । हरि भगतनकी छतिकराहीं ८ न्हायखोरि उत्तमह्वै आवैं । विष्णुभक्त देखेदुख पावैं ९ स्वारथ लागिरहेवेआढ़ा । नामलेत जसपावकडाढ़ा १० रामकृष्ण कीछो ड़िनिआशा । पढ़िगुनि भयेकलिमकेदासा ११ कर्मकरहिंकर्महिं को धावैं । जो पूछैतेहि कर्मदृढ़ावैं १२ निष्कर्मीकै निंदाकीजै । करैकर्मताही चितदीजै १३ असभगती भगवतकी लावैं । हरिणाकुशको पंथचलावैं १४ देखहु कुमतिनकरपरगासा । बिनुलखिअंतरकिरतिमदासा १५ जाकेपूजे पापन ऊड़ै । नामसुमिरितभवमेंबूड़ै १६ पापपुण्यकैहाथेहिपासा । मारि जगतको कीन्हबिनासा १७ येबहनी दोउ बहनिनछाड़ै । यहगृहजारैंवह गृहमाड़ै १८ बैठेतेवरशाहु कहावै । भितरभेद मनमुसहिलगावै १९ ऐसी बिधि सुरबिप्र भनीजै । नामलेत पंचासनदीजै २० ऊँचनीचकहुकाहिजो-हारा । बूड़िगयेनहिंआपुसँभारा२१ ऊचनीचहैमध्यमबानी । एकैपवनएक हैपानी२२ एकैमेटियाएककुम्हारा । एकसबनकासिरजनहारा२३ एकचाक बहुचित्रबनाया । नादबिंदुकेबीच समाया २४ व्यापीएकसकलकेजोती । नामधरे क्याकहिये मोती २५ राक्षसकरणीदेवकहावै । बादकरैभवपार न पावै२६ हंसदेहतजिन्यारोहोई । ताकीजातिकहैधौं कोई २७ सेतसुपेतकि रातापियरा । औरनबरनकीतातासियरा२८ हिंदूतुरुककिबूढ़ाबारा । नारि पुरुषमिलिकैबिचारा २९ कहियेकाहिकहानहिंमाना । दासकबीरसोई पहिचाना ३० वहा अहै बहिजातुहै करगहि ऐंचहु और । समुझायेसमुझै नहीं देधक्कादुहु और ३१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनहुसबनमिलिबिप्रमतीसी । हरिबिनबूड़ीनावभरीसी १
ब्राह्मणहवैकैब्रह्मनजानैं । घरमेंयज्ञप्रतिग्रहआनैं २
जेसिरजातेहिनहिंपहिचानैं । करमभरमलैबैठिबखानैं ३
ग्रहणअमावससायरपूजा । स्वातीकेपातपरहुजनिदूजा ४

विप्रके वर्णन मेंहमतीस चौपाई कहैं हैं सो सबन मिलि सुनते जाउ कैसेब्राह्मणहोतभये किजिनकोजन्महरिबिनाभरीनावऐसीबूड़िगई १ब्रह्म ईके जानेते ब्राह्मण कहावैहैं सो ब्रह्मको तो न जान्यो यज्ञादिकन के प्रति गृहघरमें लैआवैहैं आदिते दानौ आयो २ जौनउत्पत्ति कियोहैताको तो जानतईनहीं हैं कर्मकांडको भरम नानाप्रकार के बैठिकै बखानैं ह ३ सोहे दूजाकहे दुखगृहण में अमावसमें सायर कहे समुद्रादिक तीर्थ नमें जैसे स्वातीकेजलको पपीहादौरैहैऐसेतुम्हीं ग्रहण अमावसमेंसमद्रादिकतीर्थन में दानलेनको ताकेरहौहौ परन्तु आपनहीं पूजैहै ४ ॥

प्रेतकर्ममुख अंतरबासा । आहुतिसहितहोमकीआसा ५
कुलउत्तमकुलमाहँकहावैं । फिरिफिरिमध्यमकर्मकरावैं ६

मुवते प्रेतकर्म करावैहैं कि ऐसो पिंडदान करोतौ प्रेतत्व छूटिजाइ औ अंतष्करणमें या आशा बसैहै किजो याहोमकरै तौ हमदक्षिणापावैं ५ औ ब्राह्मण तो बड़े उत्तम कुलके कहावै हैं कि हमबड़े कुलके हैं परन्तु फिरिफिरि कहे बारबार मध्यम कहे नरकजाय वाके कर्मकरावैहैं ६ ॥

कर्मअशुचिउच्छिष्टैखाहीं । मतिभरिष्टयमलोकहिजाहीं ७
सुतदारामिलिजूठोखाहीं । हरिभगतनकीछूतिकराहीं ८
न्हायखोरि उत्तमहवैआवैं । विष्णुभक्त देखेदुखपावैं ९

नानाप्रकार के अपावनकर्म कैकै भैरवदुलहा देवादिकन को उच्छिष्ट खाय हैं सो मतिभ्रष्टहैके यमलोकहि जाइहैं ७ तौने प्रेतनको जूठ सुत दाराकहे स्त्री त्यहि समेत सब मिलि खाइ हैं औ हरि भक्तन की छूति मानै हैं ८ औ नहाय खोरिकै आपने जान पबित्र ह्वैआवैं औ जिनके दर्शनते पबित्र होयहैं ऐसे विष्णुभक्त तिनकोदेखिकै दुःखपावैहैं ईबड़ तिलकदिये शंख चक्र दीन्हें कहांरहे उनको मुख देखैंगे तो पापलगै है या कहै हैं ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वारथलागिरहैंवेआढ़ा। नामलेतजसपावकडाढ़ा १०
रामकृष्णकीछोड़िनिआशा। पढ़िगुणिभकिरतिमकेदासा ११

अपने स्त्री पुत्र यहीके स्वारथ में वे अर्थ आढ़ति लगाय रहेहैं जिनके अंधहैं ऐसे जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके नाम लेतमें मानों जीभ पावकमें जरी जाइहै १० रामकृष्ण जे हैं तिनकी आशाछोड़िके पढ़िगुणिकैकिरतिमकहे आपनी बनाई मूर्त्ति अथवा किरतम माया तिनको दास कहावैहैं ११॥

कर्मकरहिंकर्महिकोधावैं। जो पूछैत्यहिकर्महढ़ावैं १२
निःकर्म्मीकैनिन्दाकरहीं। कर्मकरैताहीचितधरहीं १३
असभक्तीभगवतकीलावैं। हिरणाकुशकोपंथचलावैं १४

कर्म नानाप्रकारके करैहैं औ कर्मफल जो स्वर्गादिकनको भोग ताही को धावे हैं औजो कोई मुक्तिहूकी बात पूछैहै ताको कर्महीं दृढ़ावैहैं १२ निःकर्मी जे साधु हैं तिनकी तौ निन्दा करैहैं औ कोई कर्मकरै हैं ताको सत्कार करैहैं १३ सो या रीति ते भगवत् की भक्ति करैहैं या कहैहैं कि ईश्वरतो अजागलथनकी नाईं है वातेकौन कामहोयहै औ कोई हिरणा-कुशको पंथ तामसीमत चलावे हैं कहैहैं कि हमहीं ब्रह्महैं ऐसो दैत्यनको ज्ञानहै तामें प्रमाण॥ ईश्वरोहमहं भोगी सिद्धोहंबलवान्सुखी॥ आढ्यो भिजनवानस्मि कोन्योस्तिसदृशोमया १४॥

देखहुकुमतिनकरपरगासा। बिनुलखिअंतरकिरतिमदासा १५

सोया कुमतिनको प्रकाश तो देखौ बिनु अन्तरके लखे कि हम कौन के हैं या बिनाजाने किरतिम जो माया ताके दास ह्वैरहेहैं रक्षक को न माने रक्षा कौनकरै १५॥

जाकेपूजेपापनऊड़ै। नामसुमिरितेंभवमेंबूड़ै १६
पापपुण्यकेहाथहिपासा। मारिजक्तसबकोनबिनासा १७
येबहनीदोउबहनि न छाड़ैं। यहगृहजारैं वहगृहमाड़ैं १८

औ जौने देवताकेपूजे न पापछूटै ना मुक्तिहोइ तेई देवतनको पूजैहैं उनहीं को नाम सुमिरि सुमिरि संसारमें बूड़ैहैं १६ औ नाना प्रकार के कर्म बताइ कै पाप पुण्य रूप फांसी डारिकै जगत को विनाश करि देत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भये १७ औ कोई विप्र जेहैं ते बहनीकहे संसारमें बहनवारी जो विद्या अविद्या माया पाप पुण्यरूप ताको बहनिन कहे ढोवनवारो जो विप्रसो ऊपर ते छाड़िकै यह गृह जारिकै कहे छाड़िकै वहगृह कहे वहांके महन्त भये ध्यान लगाय कै बैठे १८ ॥

बैठेतेघरशाहुकहावैं । भितरभेदमनमुसहिलगावैं १९
ऐसीबिधि सुरबिप्रभनीजै । नामलेतपंचासन दीजै २०
बूड़िगयेनहिंआपुसँभारा । ऊंचनीचकहुकाहिजोहारा २१
ऊंचनीचहैमध्यमबानी । एकैपवनएकहैपानी २२
एकैमटियाएककुम्हारा । एकसबनकोसिरजनहारा २३
यकैचाकबहुचित्रबनाया । नादबिन्दुकेबीचसमाया २४

सो ऊपरते ऐसोध्यानलगायकै घरमें बैठे बड़े साधुकहावैं औ अन्तष्करण में मन ते पराईद्रव्य मूसैको भेद लगाये हैं १९ सो यहि रीति विप्रनके सुरन की बिधिकहैहैं नामको लेइहैं कहे मन्त्रजपैहैं औ पंचासन कहे पंच आसन देइहैं अर्थात् पंचागोपासना करै हैं २० सो आपै माया के धारमें बूड़िगये न सँभारत भये तो ऊंचनीच कहे पांच देवतन में काको जोहारयो कहे काके भये अर्थात् काहू के न भये २१ सो विप्रनको उत्तम मध्यम नीच बाणी करिकै होइहैं वास्तव तो सबके शरीरन में एकैपानी है एकै पवन है २२ औ एकै सबकी माटीहै कहे सब पंचभौतिक हैं औ सबके सिरजनहार कुम्हार मन एकैहै २३ एक चाकजो जगत है तामें बहुत बिधिके चित्र बनावत भयो मन औ नादबिन्दु के बीचमें आपै समातभयो २४ ॥

व्यापीएकसकलमेंजोती । नामधरेकाकहियेमोती २५
राक्षसकरणीदेवकहावै । दादकरैभवपार न पावै २६
हंसदेहतजिन्याराहोई । ताकीजाति कहैधौंकोई २७
श्वेतसुपेदकिरातापियरा । अबरनबरणकितातासियरा २८

सो एकैज्योति जोआत्मा सो सबमें व्यापि रहीहै ब्राह्मण नाम धरयो सो ताही ते मोती कही अर्थात् न कही बिना ब्रह्म जाने ब्राह्मण नही कहावै है २५ औ करणी तो राक्षस की नाईं करै हैं औ जगत में ब्राह्मण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवता भूसुर कहावे हैं औ बादबिबाद नाना प्रकारके करैहैं परंतु संसार समुद्र को पार नहीं पावैहैं २६ सो हंस जो जीवहै सो देहको त्यागिकै न्यारो ह्वै जाइहै ताकी जाति कोईकहै तो वह कौन बर्णहै ब्राह्मण क्षत्री बैश्य शूद्र २७ औ वह आत्मा श्वेत कहे श्यामहै कि सुपेदहै कि लालहै कि पियर है कि अवर्ण है कि बर्ण में है कि गरमहै कि शीतल है २८ ॥

हिन्दूतुरुककिबूढ़ाबारा। नारिपुरुषमिलिकरहुबिचारा २९
कहियेकाहिकहानहिंमाना। दासकबीरस्वईपहिचाना ३०
साखी॥ बहिआहैंबहिजातुहै करगहिऐंचहुऔर।
समझायेसमझैनहीं देधक्कादुइऔर ३१

पुनि हिन्दू है कि तुरुक है कि बूढ़ा है कि लरिका है या नारि पुरुष मिलिकै सब जने बिचार करो २९ सो या बात कासों कहों कोई नहीं मानैहै सबके रक्षकजे परमपुरुष श्रीरामचन्द्र हैं तिनकोदास कबीर कहैहैं कि मैं सोई पहिचान्यों है कि उनको अंश जीव है वे स्वामी हैं ३० या जीव औरे औरे में लगिकै बहत आयोहै औ बहा जाइहै सो कर गहि कहे एकबेर उपदेश करिकै और ऐंचौहौं कि साहब में लागु समुझावत आयोहौं औ समुझावतहौं जो समुझाये न समुझै तो लाचार ह्वैकै दुइ धक्का औरमहूं दै देउँ कि वहां जाय ३१ ॥

इतिबिप्रमतीसीसम्पूर्णम् ॥

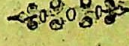

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

अथबेलिलिख्यते ॥

हंसासरवरसरिरहोरमैयाराम । जगतचोरघरमूसलहोरमैयाराम १ जो आगलसोभागलहोरमैयाराम । सोवतगैलबियोगहोरमैयाराम २ आजबसेरानियरेहोरमैयाराम । काल्हिबसेरादूरिहोरमैयाराम ३ परेहुबिरानेदेश होरमैयाराम । नयनमरैंगेढूरिहोरमैयाराम ४ आसमथनदधिकियोहोरमैयाराम । भवनमथ्योभरिपूरिहोरमैयाराम ५ हंसापाहनभयलहोरमैयाराम । वेधिनपदनिरबानहोरमैयाराम ६ तुमहंसामनमानिकहोरमैयारामरे । हटलनमानलमोरहोरमैयाराम ७ जलरेकियोतसपायोहोरमैयाराम । हमरदोषजनिदेहुहोरमैयाराम ८ अगमकाटिगमकीन्हो होरमैयाराम । सहजकियोवेपारहोरमैयाराम९ रामनामधनबनिजहुहोरमैयाराम । लादेहुबस्तु अमोलहोरमैयाराम १० नौबहियादअगोनहोरमैयाराम । पांचलदनवालादेसाथहोरमैयाराम ११ पांचलदनवांपरेहोरमैयाराम । खारखरिडारिनिखोरिहोरमैयाराम १२ गिरथुनिहंसाचलेहोरमैयाराम । सरवरभीतजोहारहोरमैयाराम १३ आगीसरवरलागिहोरमैयाराम । सरवरभोजरिझारहोरमैयाराम १४ कहैकबीरसुनो सन्तोहोरमैयाराम । परखिलेहु खरखोटहोरमैयाराम १५ ॥

हंसासरवरसरिरहोरमैयाराम। जक्तचोरघरमूसलहोरमैयाराम१
जोजागैसोभागैहोरमैयाराम। सोवतगैलबिगोयहोरमैयाराम२

सोहेरामनामके रमनवारे हंसा या शरीररूप सरवरमें तेरोज्ञानजागत में चोरमूसि लियो १ जो जागत है मोहनिशाते सोभागैहै संसार ते सो हेराममें रमनवारे मोहनिशामें सोवत सब बिगोय गयेहैं कहेनानायोनि में संसार स्वप्न में भटकत फिरैहैं २ ॥

आजुबसेरानियरेहोरमैयाराम। काल्हिबसेरादूरिहोरमैयाराम३
परेहुबिरानेदेशहोरमैयाराम। नैनमरैंगेढूंढ़िहोरमैयाराम ४

सो हेराममें रमनवारे आजु बसेरा नेरे है कहे मानष शरीरई में ज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होइहै सो पाये है काल्हि कहे जब या शरीर छूटि जाइगो तब मेरा
पूरि ह्वैजायगो अर्थात् अनेक योनिनमें भटकत फिरौगे तब मेरोज्ञान हो-
यगो तैंजागतै में लूटि गयोहै तैंकाजागत रहेहै नहीं जागत रहे ३ हेराम
मेंरमनवारे आपनो देश साकेत ताको छोड़िकै बिराने कहे मनके देशमें
परयोहै तैसो अनेक योनिनमें तेरीआंखीं आस ढारिढारिफूटिजायँगी ४॥
त्रासमथनदधिमथनहोरमैयाराम। भवनमथ्योभरिपूरिहोरमैया
राम५हंसापाहनभयलहोरमैयाराम। बेधिनपदनिर्बाणहोरमैया
रामह्तुमहंसामनमानिकहोरमैयाराम। हटलनमानेहुंमोरहोरमै
याराम ७॥

त्रासमथन जोहै रामनाम तौनैहै दधिमथन कहे मथानी तौनेतेहेराम
नामकेरमनवारे भवसमुद्र जो तेरे हृदय में भरिपूर है ताको कहे नहीं
मथ्यो ५ हेरामनामके रमनवारे तैंतो चैतन्य है मनके साथ तुहूं जड़
ह्वैगयेहै काहेते कि निर्बाण पदको नबेधिकै तैंजड़ह्वैगयेहै जो निर्बाण पद
को बेधते तो मेरे साकेत को जाते ६ हेहंसातुमहीं मनमें मानिकैकहो
तो जब तुम रामनामको जगतमुख अर्थ करन लग्योहै तब मैं हटक्यो
है सो तुम नहीं मान्यो है सो तुमतो रामनाम के रमैयाहो परंतु राम
नाम जो मोको बर्णन करै ताको अर्थ नहीं जान्यो संसारमें परयोहै७॥

जसरेकियोतसपायोहोरमैयाराम।हमरदोषजनिदेहुहोरमैयाराम
८अगमकाटिगमकीन्होंहोरमैयाराम सहजकियोबपारहोरमैया
रामहरामनामधनबनिजहुहोरमैयाराम। लादेहुबस्तुअमोलहो
रमैयाराम १०॥

हेरामनामके रमनवारे हंसा जस कियो तस पायो हमारो दोष जनि
देहु ८ अगम जो राम नाम ताको काटि गमकीन्हों अर्थात् साहब मुख
अर्थ छाड़ि जगत मुख अर्थ कियो फिरि वही रामनामको ब्रह्म मुख अर्थ
करि सहज व्यापारकहे सहजसमाधि लगावनलगे कि हमही ब्रह्म हैं ह
हे रामनाम के रमनवारे रामनाम धनको बनिजकरिकै रामनामअमोल
बस्तुलादेहु परंतु अर्थ न जान्यो जो बनिजहु लाददुपाठहोइ तोयहअर्थ
है अगम जो है रामनाम ताको काटिकै कहे बीजकमें बनाइकै तुमको
गमकै दियो कहेसुगमकैदियोसमुझन लगे रामनामको व्यापार तुमको
सहजकैदियो अर्थात् रामनाम की सहजसमाधि तुमकोकेउ बतायदियो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो रामनाम अमोल है ताको बनिज करो औ वही धनको लादो यह सांच है और सब झूंठ है १० ॥

पांचलदनवालादेहोरमैयारामनौबहियादशगोनहोरमैयाराम११ पांचलदनवा आगेहोरमैयाराम । खारखरिडारिनि खोरिहोरमैया राम१२शिरधुनिहंसाउड़िचलेहोरमैयाराम । सरवरमीतजोहार होरमैयाराम १३

ताही ते पांच लदनवालादे अर्थात् पंचभौतिक शरीर धारण कीन्हें जौने में दशौ गोन दश इन्द्री हैं तामें मन बुद्धि चित्त अहंकार पांचो प्राण तेबहियाहैं अर्थात् बहनवारेहैं चलावनवारे हैं ११ खारखरि जो शरीर तौन जब खोरिमें डारेनि अर्थात् नाश भयो तब पांच लदनवाकहे वहां पंचभौतिक शरीर आगे मिलैहै पांच लदनवा गिरि परे पाठ होइ तोयह अर्थ है कि जब इन्द्री गिरिपरी शक्ति न रहिगई तब शरीरौ छूटिजाइ है १२ सो हंसा जो जीवहै सो शिरधुनिकै सरवर जो शरीर मीत तौने को जोहारिकै उड़ि चलैहै १३ ॥

आगिलगीसरवरमेंहोरमैयाराम। सरवरजरिभोछारहोरमैया राम १४ कहैकबीरसुनोसंतहोरमैयाराम। परखिलेहुखरखोट होरमैयाराम १५ ॥

जब हंसा उड़ि चलैहै तब सरवर जो शरीर तामें आगि लगैहै सरवर जरिकै छारहै जाइहै सो हे रामनामके रमनवारे तुमसों संसारमुख अर्थ कैकै तुम संसार में परयो सो तुम्हारी यह दशा होत भई १४ श्रीकबीरजी कहै हैं कि हे संतो साहब जो कहैहैं ताको सुनते जाउ तुमतो रामनाम में रमनवारेहो सो रामनाम को जगतमुख अर्थ छाड़िकै साहब मुख अर्थ करिकै साहब में लागो साहब की बाणी गहो खरखोट परखिलेहु कौन खराहै कौन खोट है साहबमुख अर्थ खरा है काहेते साहिबै अपने मुख कहैहैं जगतमुख अर्थ खोटहै सोखोट छाड़िकै साहबमें लागो १५ इतिप्रथमबेलिसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथद्वितीयबेलि ॥

भलसुस्मृतिजहडायहुहोरमैयाराम।धोखाकियोबिश्वासहोरमैयाराम१ सोतोहैंबनसीकसिहोरमैयाराम । शिरकैलियोबिश्वासहोरमैयाराम २- ईतोहैंबिधिभागहोरमैयाराम। गुरुदीन्हो मोहिंथापिहोरमैयाराम ३ गो बरकोटउठायहुहोरमैयाराम। परिहरिजैहोखोतहोरमैयाराम ४ बुधिबल तहांनपहुंचैहोरमैयाराम। खोजकहांतेहोयहोरमैयाराम ५ सुनिमनधीरज भयलहोरमैयाराम। मनबढ़िरहललजायहोरमैयाराम ६ फिरिपाछेजनि हेरहुहोरमैयाराम। कालबूतसबआयहोरमैयाराम ७ कहकबीरसुनौसंतौ होरमैयाराम। मतिढिगहीफैलावहोरमैयाराम ८ ॥

भलसुस्मृतिजहडायहुहोरमैयाराम। धोखाकियोबिश्वासहों रमैयाराम १ ॥

साहब कहैहैं हे रामनामके रमनवारे जीव तुम भलीतरह ते स्मृति में जहडाय गयो स्मृति को तात्पर्यार्थ जो मैं ताको न जान्यो काहे ते कि धोखाब्रह्ममें बिश्वास कीन्हेते १ ॥

सोतोहैंबनसीकसिहोरमैयाराम। शिरकैलियोबिश्वासहोरमै याराम २ ॥

सोतौ है कहे सो धोखाब्रह्म बंशी की नाईं है जो मछरी बंशीमें लागैहै ताको प्राण छूटि जाइहै ऐसे तुहूं वामें लगैहै सो तेरोजीवत्व न रहैगो अर्थात् तेरोस्वरूप भूलिजाइगो मुरदाकी नाईं टँगोरहैगो तौनेधो- खा ब्रह्ममें शिरकै बिश्वास कैलियेहै अथवा जे गुरुवालोग तोको धोखा ब्रह्ममें बिश्वास कराइ दियेहैं स्मृतिन का अर्थ फेरिकै ते बंनके सीगट हैं उहांहैं वा जो ब्रह्महै सो तें आहे यही कहैहैं अथवा हुआहै हुआहै या कहैहैं कि तैंलगासो ब्रह्महुआ जैसे सीगटनकी बाणीमें अर्थ नहीं है ऐस गुरुवालोगनकी बाणीमें अर्थ नहीं है तें ब्रह्म कबहूं न होइगो तेरामना- ममें रमनवारेहै सो ताहीमें रमै तबही तेरोबनैगो २ ॥

ईतोहैंबिधिभागहोरमैयाराम। गुरुदीन्ह्योमोहिंथापिहोरमै याराम ३ गोबरकोटउठायहुहोरमैयाराम। परिहरिजैहौंखेतहो रमैयाराम ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब कहैहैं कि रामनामके रमनवारे यह स्मृति बिधि निषेध का भाग कहांबैहै तौने भागबश मोको गुरुवालोग बहँकाइदियो मैं काकरो मेरोदोष कौनहै तौ हमारो महलछोड़ि तहीं गोबरको कीट उठायहुहै जो तैंगुरुवालोगन के न जाते और उपासना न पूछते तौवे काहेको बतौते सो मोको परिहरिकै तं संसाररूपखेतमें जैहै जहांसब उत्पत्ति होइहै१॥

बुधिबलतहांनपहुंचैहोरमैयाराम । खोजकहांतेहोयहोरमैया राम ५ सुनिमनधीरजभयलहोरमैयाराम।मनबढ़िरहललजायहो रमैयाराम ६ ॥

सो धोखाब्रह्म में बुधिबल नहीं पहुंचैहै शून्यहै खोजकहांते होइ जो कहोकि अपैमैंतो बुधिबल नहीं पहुंचैहै तौ जो कोईमेरे रामनाम में रमैहै मोकोजानैहै ताकोमहीं बताइदेउँहौं नैनइन्द्री देउँहौं ताहीमेंमोहीं देखैहै ५ गुरुवनकी बाणी सुनिकै जोतेरे मनमें धीरजभयो कि हमब्रह्महै जाइँगे सो राममें रमनवारे वा ब्रह्ममें मनबढ़िकै कहेबिचार करत करत लजायगयो ब्रह्म न भयो मनआपनी गतिजब नहीं देखैहै तब सकुचिकै वाहीमें रहिजाइहै मनको नाशनहीं होयहै ६ ॥

फिरिपाछेजनिहेरोहोरमैयाराम । कालबूतसबआयहोरमैया राम ७ कहकबीरसुनोसंतहोरमैयाराम । मतिढिगहीफैलावहो रमैयाराम ८॥

तुमतो रामनाममें रमनवारे ईतो सबतुमते पाछेहैं तिनकीओर जनि हेरो मायाब्रह्मकालके पराक्रम आयजो इनके ओरहेरोगे तौ येकालके बूत आयकहेकालके पराक्रमहै अर्थात् मायेब्रह्मद्वारा कालनाश सबकोकैदेहै ७ सोश्रीकबीरजी कहैहैं कि हेसंतो साहबकहैहैं सो सुनतेजाउ तुमतो राम नाममें रमनवारेहौ दूरिदूरिकहां खोजौहौ मतिको ढिगहीमेंफैलावअर्थात् अपने स्वरूपको बिचारुकि मैं कौनकोहौं तौया जानिलेइ तेंकिमैं राममें रमनवारोहौं रामनाम स्मरणकरौगे तबहीं मुक्तिहोयगी तामेंप्रमाण॥ अस चरितदेखिमनभूमैमोर । तातेनिशिदिनगुणरमों तोर ॥ यकपढ़हिंपाठ यक भ्रमउदास । यकनहिंनिरंतररहनिवास॥यकयोगयुक्तिनहोहिंखीन।यक रामनामसँगरहललीन ॥ यकहोहिंदीन यकदेहिंदान । यककलपिकलपिकै हैंहरान॥यकतंत्रमंत्रऔषधीवान । यकसकलसिद्धिराखैंअपान॥यकतीरथव्रत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करिकयाजीति। यकरामनामसों करनप्रीति॥ यकधूमधोटितनहोहिंश्याम। तेरीमुक्तिनहीं बिनरामनाम॥ सतगुरूशब्दतोहिकहपुकार। अबमूलगहो अनुभवविचार॥ मैंजरामरणते भयउँथोर। भैरामकृपा यहकहकबीर ८॥

इतिबेलिसम्पूर्णम्॥

अथचाचरिलिख्यते॥

दोहा॥ खेलतिमायामोहनी जेरकियो संसार। कटिकेहरि गजगामिनी संशयकियोश्रृँगार १ रचेरंगकी चूनरी सुन्दरिपहिरैआय। शोभा अद्भुतरूप कीमहिमा बरणिनजाय २ चन्द्रबदनिमृगलोचनी बिन्दुक दियोउवालि। यतीसतीसब मोहिया गजगति वाकीचालि ३ नारदकोमुखमाड़िकै लीन्हों बदनछिनाय। गर्बगहेली गर्बते उलटिचलीमुसकाय ४ शिवअरु ब्रह्मादौरि कै दोनोंपकरेजाय। फगुवालीनछोड़ायकै बहुरिदियो छिटकाय ५ अनहद धुनिबाजाबजै श्रवणसुनतभोदाव। खेलनहारीखेलिहै जैसीवाकी दाव ६ आगेढालअज्ञानकी टारेटरत न पाव। खेलनिहारी खेलिहै बहुरिन ऐसी दाव ७ सुरनरमुनिभूदेवता गोरख दत्ताव्यास। सनकसनंदन हारिया और कि केतिक आश ८ छिलकतथोथेपूमसों धरि पिचकारीगात। करिलीनो बश आपने फिरिफिरि चितवतजात ९ ज्ञानगाड़लै रोपिया त्रिगुण लियो है हाथ। शिवसँग ब्रह्मालीनिया औरलियेसबसाथ १० एकओर सुरमुनि खरे एकअकेलीआप। दृष्टिपरे छोड़ैनहीं करिलीनोयकछाप ११ जेतेथेते तेलियो घूंघुटमाहँसमोय। कज्जलवाकेरेखहै अदृगगयानहिंकोय १२ इंद्रकृष्णद्वारेखड़ेलोचनदोउललचाय। कहकबीरतेऊबरेजाहिनमोहसमाय १३॥

खेलतिमायामोहनीजेरकियेासंसार। कटिकेहरिगजगामिनी संशयकियेाश्रृँगार १ रचेरंगकीचूनरीसुन्दरिपहिरैआय। शोभा अद्भुतरूपकीमहिमाबरणिनजाय २॥

जौन मायासब संसार को जेरकियोहै सोमोहिनी माया चारिखेलै है केहरि जोहै कालसबको खाइलेनवारो सोवाकी कटिहै कहेमध्यभाग है मध्यमें बैठिकै अर्धऊर्ध्वको खायहै औमनगजहै तेहीकरिकै चलैहै औसंशय रूपशृङ्गारकिये अर्थात् जहँबहुतसंशयहोइहैं तहँमायाबहुतशोभितहोइहै १ नारीलोग रचेकहे जो पीउको रुचै है सो चूनरी पहिरे हैं औमाया नाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय जो जीवनको नीकलगै ताकीचूनरी पहिरैहै अद्भुत शोभास्त्रियनहू की होइहै यहैमायाकी अद्भुतशोभा है २ ॥

चंद्रबदनिमृगलोचनीविन्दुकदियोउघारि । यतीसतीसबमोहियागजगतिवाकीचालि ३ नारदकोमुखमाड़िकैलीन्होबदनछिपाय । गर्बगहेलीगर्बतेउलटिचलीमुसकाय ४ ॥

औनारी चंद्रबदनी मृगनयनी बिंदुकदीन्हें घूंघुटउघारिगजकीनाईंचलि सबको मोहैहैं मायाकैसी है कि याहूचंद्रबदनी है आपने पदार्थते सब को आनंद देयहै मृगनयनीकहे यहू चचलहै बिंदुकदीन्हे उघारिकहेआपने रागको फैलायदेइहै गजगति कहे धीरे धीरे यती सती सबको मोहैहै ३ वै स्त्री नारदकहे जाके रदकहे दांतनही हैं ऐसे जे वृद्धपुरुष तिनको मुख माड़िकै बदनकहे बोलिबोछिनायलेतीहैं अर्थात्और बोलिबोसोछूटिजाइ है नारी नारी यहैकहैहैं चाचरि वोऊ गावैलगैहैं अथवामायाजोहैसोनारद ऐसे मुनिको बांदरकी नाईंमुखकैदियो शीलनिधिराजाकीकन्याको काज करैचले औ स्त्रीगर्बकोगहे लोगनके मोहिबेको चाचरिमें मुसक्यायचलैहैं औ मायाजोहै सोऊनारदके गर्बको गहिकै मुसक्यायकै चलीहै ४॥

शिवअरुब्रह्मादौरिकैदोनोंपकरेजाय । फगुवालीनछिनायकै बहुरिदियोछिटकाय ५ अनहदधुनिबाजाबजैश्रवणसुनतभोचावा खेलनिहारीखेलिहैजैसीवाकीदाव ६ ॥

औ स्त्रीजे हैं ते पुरुषनते चाचरिमेंपकरिफगुवालैकै आपुसमें छिटकाय कहे बांटिलेइहैं औ मायाजोहै सोऊब्रह्माशिव तिनको पकरिकै फगुवाजो नानामत सो लैकै अनेक ब्रह्मांडनमें छिटकाय दीन्ह्यो ५ चाचरिमेंबाजा बजैहै ताको सुनिकै चावहोइहै खेलनिहारी आपनोदाँवँ ताकि ताकि खेलैहै औ मायाजोहै सोऊअनहदबाजा योगिनके बजाइकैजोनेके सुनत में योगिनके चावहोइहै सोखेलनिहारीजो कुंडलिनीशक्तिसो जैसीवाको दाँवँहै तैसोखेलैहै जीवको चढ़ावै औ उतारैहै ६ ॥

आगेढालअज्ञानकीटारेटरतनपाव । खेलनिहारीखेलिहैबहुरिनऐसीदाव७ सुरनरमुनिभूदेवतागोरखदत्ताव्यासासनकसनंदनहारियाऔरकीकैतिकआस ८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाचरिमें स्त्रीभोडरकी ढाल आगेकरि पांवपीछेकोनहीं टारैहैं सोखेलनिहारीजेहैं ते जबपतिको पायजायहैं तबकहैहैं कि खेलिलेउ अब ऐसो दाँवँन मिलैगो औ मायाजोहै सोऊ अज्ञानकी ढालआगे लीन्हे है जाको पांव ज्ञानभक्ति बैराग्यकरि टारेनहीं टरैसो खेलनिहारीजोमायासो खेल बैकरी ऐसोदांवँवाको फिरि न मिलैगो अपने बशकरिपायोहै ७ औचाचरिमें स्त्रिनते पुरुषहारिजाइहैं सुखमानैहैं औमायाजोहै ताहूसों सुरजेहैं नरजेहैं मुनिजेहैं भूदेवजे ब्राह्मणहैं गोरखजेहैं दत्तात्रेयजेहैं व्यासजेहैंसनकसनंदनजेहैं तेसब हारिगये औरकी कौनगनती है ८॥

छिलकतथोथेप्रेमसों धरिपिचकारीगात। करिलीनोबशआपनेफिरिफिरिचितवतजात ९ ज्ञानगाड़लैरोपियात्रिगुणलियेहैहाथ। शिवसँगब्रह्मालीमियाऔरलियेसबसाथ १०॥

चाचरिमें नारी रंगकी पिचकारी गातमें सींचि आपने बशकरि फिरि फिरि चितवत कहे कटाक्ष करैहैं औ मायाजोहै सोऊ थोथे कहे झूठेप्रेम सो संसार राग सबको गातसींचैहैं आपने बशकरिलियोहै औफिरिफिरि चितवत जातैहै कहेसबको ताकेरहैहै किकोऊ बाच्योतौनहीं ९ औचाचरिमेंस्त्री लोग रंगकेहौदमें डारिदेइहैं औ फूलनके मालामें हाथबांधैहैं पुरुषनको औमाया जोहै सोऊज्ञानके गाड़में ब्रह्मादिक देवतनको डारिकै त्रिगुणकी फांसीमें बांधिलियो १०॥

एकओरसुरमुनिखड़ेएकअकेलीआप। दृष्टिपरेकोड़ैनहींकरिलियएकैछाप ११ जेतेथेतेतेलियोघूंघुटमाहँसमाय। कज्जलवारेरेखहैंअदगनकोईजाय १२ इन्द्रकृष्णद्वारेखरेलोचननिजललचाय। कहकबीरतेऊबरेजाहिनमोहसमाय १३॥

औचाचरिमें दुइपारा होयहैं एक ओरआप एकओरपुरुष होइहै ऐसे सुर नर मुनि सब एक ओर हैं एक ओर माया अकेली आपहै दृष्टि परे काहूको नहीं छोड़ैहै ११ औ स्त्री जेहैं ते आपनेघूंघुट में सब को मन समाय लेइहैं सबके काजर लगाइ देइहैं अदग कोई नहीं जायहै माया जोहै सोऊ आपनेमें सबको समाय लियोहै सबके एकदाग लगाइ दियो हैयदग कोई नहीं बच्यो १२ चाचरिमें स्त्रिनके द्वारे इन्द्र कृष्ण सबखड़े रहैहैं लोचन देखिबेको ललचाय है ऐसे माया जोहै ताहू के द्वारे में इन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण जेहैं उपेन्द्र ते खड़ेहैं मायाके देखिबेको लोचन ललचायहैं सो श्री कबीरजी कहेहैं कि तेई पुरुष उबरेहैं जेमोहमें नहीं समानेहैं १३ इति पहिलीचाचरिसमाप्तम् ॥

अथदूसरीचाचरि ॥

जारहु जगकी नेहरा मन बौराहो । जामेंशोक संतापसमुझ मनबौरा हो १ काल बूतको हस्तिनी मन बौराहो । चित्ररचो जगदीश समुझमन बौराहो २ बिना नेइको देवघरा मनबौरा हो । बिन कहगिलकैईंटसमुझ मन बौराहो ३ तन धन क्या सोगर्भ समुझमन बौराहो । भसम क्रीमको साजु समुझ मन बौराहो ४ काम अन्ध गजबसपरे मन बौराहो । अंकुश सहियाशीश समुझ मन बौराहो ५ ऊँचनीच जानेहु नहीं मन बौराहो । घर घर नाचेहु द्वार समुझ मन बौराहो ६ मरकट मूठीस्वादकी मन बौरा हो । लीन्हो भुजा पसारि समुझ मन बौराहो ७ छूटनकी संशय परीमन बौराहो । घर घर खायो डांग समुझ मन बौरा हो ८ ज्यों सुवना नलिनी गह्यो मन बौरा हो । ऐसा मर्म बिचारि समुझ मन बौरा हो ९ पढ़े गुने का कीजिय मन बौरा हो । अन्त बिलैया खाय समुझ मन बौराहो १० सूने घरका पाहुना मन बौरा हो । ज्यों आवै त्यों जाय समुझ मन बौरा हो ११ न्हाने का तीरथ घनो मन बौरा हो । पूजेका बहु देव समुझ मन बौराहो १२ बिन पानी नल बूड़िया मन बौरा हो । तुम टेकहु समजहा जसमुझ मन बौराहो १३ कह कबीर जग भर्मि या मन बौरा हो । तुम छोड़े हरिकासेव समुझ मन बौरा हो १४ इति दूसरीचाचरिसमाप्तम् ॥

जारहु जगकोनेहरामनबौराहो । जामेंशोकसंतापसमुझमन बौराहो १ कालबूतकीहस्तिनीमनबौराहो । चित्ररचोजगदीश समुझमनबौराहो २ बिनोनेइकोदेवघरामनबौराहो । बिनकह गिलकैईंटसमुझमनबौराहो ३

हेमन करिकै बौराजीव जौनेमें शोक सन्ताप अनेक पावैहै तैसबऐसी जगतकोनेहरा समुझिकै जारिदे १ औ या जगत कालबूत जो धोखा ताकी हस्तिनीहै अर्थात् झठोहै जौन रूपते देखै जगदीशजो साहबताको रचोयह चित्रहै सो बिचारिकै छाड़ो औ यादेह कैसीहै जैसेबिना नेहको देवाला औ धनकैसोहै जैसेबिना गिलावाकीईंट अर्थात् देवालाकी नाईं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यातन गिरिहीजाइगो इंटकीनाईं जैसेइंटखरकि जाइहै तैसे तन खरकिहीजाइगो ३ ॥

तनधनसोंक्यागर्बसमुझमनबौराहो । भसमकीमकीसाजुसमुझमनबौराहो ४ कामअन्धगजबशपरेमनबौराहो । अंकुशसहियाशीशसमुझमनबौराहो ५ ऊंचनीचजानेहुनहींमनबौराहो । घरघरनाचेहुद्वारसमुझमनबौराहो ६ ॥

सोऐसे नाशमान तनधनको क्यागर्बकरैहै भस्म औ कीश की साजुहै सोतैं जैसे कामतेआंधरहैकै हाथीहथिनीवास्ते बँधिकै अंकुश शीशमें सहै हैंऐसे तें बिषयकी बशपरिकै नानाप्रकारके दुःखसहैहै ऊँचनीच नपहिचाने द्वारद्वार बागत फिरैहै ६ ॥

मरकटमूठीस्वादकीमनबौराहो । लीन्होभुजापसारिसमुझमनबौराहो ७ छूटनकीसंशयपरीमनबौराहो। घरघरखायोडांगसमुझमनबौराहो ८ ॥

जैसे मर्कट स्वादकेलिये भुजापसारिचना लेइहै मूठीनहीं छाड़ैहै ऐसे तैं मुक्तिकेलिये नानामतनमें परिकै दृढ़कैलियोहै साहबकोनहीं जानैहै सोतोको संसारते छूटिबेकी संशय आइपरीहै यमकेघर लाठीखायहै पै मतनहीं छाड़ैहै सो हेबौरा जीव मनकरिकै समुझुतौ७। ८ ॥

ज्योंसुवनानलिनीगह्योमनबौराहो । ऐसाभर्मबिचारिसमुझमनबौराहो ६ पढ़ेगुनेकाकीजियेमनबौराहो । अंतबिलैयाखायसमुझमनबौराहो १० ॥

जैसेनलिनीकोसुवाभ्रमते गहेहैकोऊधरेनही है ऐसेतुहूं आपने भ्रमते बँधोहै सो साहबको जानै बिचारकरै तौ छूटिहीजायहैजो सुवा पढ़े गुने बहुतभयो तौ काभयो बिलैयातो अंतमें खायहैसो ऐसेतें बहुत पढ़िगुनि नानामतकीन्हे परन्तु जौनेमें मीचते बचै सोतो कर बहीनकियो ८।१०॥

सूनेघरकापाहुनामनबौराहो । ज्योंआवैत्योंजाइसमुझमनबौराहो ११ न्हानेकातीरथघनामनबौराहो । पूजैकाबहुदेवसमुझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनबौराहो १२ बिनपानीनलबूड़ियामनबौराहो । टेकहुरामज हाजसमुझमनबौराहो १३ कहकबीरजगभर्मियामनबौराहो । छोड़ेहरिकोसेवसमुझमनबौराहो १४ ॥

सोतैं शून्यधोखा ब्रह्ममें लगिकै सूनाघरको पाहुनाभयो जैसेआयोतैसे चल्यो मुक्तिनभईसो जोमुक्तिनभईतौ का बहुत तीरथ नहाये भयो का बहुतदेवपूजे भयोतौतो बिनापानीको जो संसार समुद्रतौनेनमें बूड़िगयो सोतैं श्रीरामनामरूपी जहाज समुझिकैधरु श्रीकबीरजी कहैहैं कि हेमन करिकै बौराजीवजगत्में भरमियाकहे भ्रमतफिरैहै हरिजे साहबहैंतिनकी सेवाछोड़िकै सोहेमन बौराअबहूं समुझ १४ ॥

इतिचाचरिसमाप्तम् ॥

अथ हिँडोलालिख्यते ॥

भर्महिँडोलना झूलै सबजगआय । जहँपापपुण्यकेखंभदोऊ मेरुमाया नाय । तहँकर्मपटुलीबैठिकै कोकोन झूलैआय १ यहलोभ मरुवा बिषय भमरा कामकीलाठानि । दोउशुभौ अशुभबनाय डाड़ीगह्यो दूनौपानि २ झूलेसो गणगन्धर्ब मुनिनरझुलेसुरगणइन्द्र । झूलतसुनारदशारदाहोझुलत व्यासफणिन्द्र ३ झूलत बिरंचिमहेशमुनिहोझूलतसूरजइन्दु । औआपुनिर गुण सगुणह्वैकै झूलियागोबिंद ४ छचारि चौदहसातयकइसतीनलोकबनाय । चौ वानिबानीखोजिदेखौथिरनकोइरहाय५ शशिसूरनिशिदिनसंधि औतहँतत्वपांचोनाहिं । कालहुअकालहुपूलयनहिँतहँसंतबिरलेजाहिं६ ॥ खण्डहुब्रह्मण्डहुखोजिषटदरशनयेछूटेनाहिं । यहसाधुसंगबिचारिदेखौजी उनिसतरिजाहिं ७ तहँकेबिछुरिबहुकल्पबीतेपरेभ्रमिभुलाय । अबसाधु संगतिशोचिदेखौबहुरिउलटिसमाय ८ तेहिझूलबेकीभयनाहिँजोसंतहो हिँगुजान । कहकबीरसतसुकृतमिलै तौफिरिनझूलैआन ९ ॥

भर्महिँडोलनाझूलैसबजगआय । जहँपापपुण्यकेखम्भदोऊमे रुमायानाय । तहँकर्मपटुलीबैठिकैकोकोनझूलैआय १ यहलोभम रुवाबिषयभमराकामकीलाठानि । दोउशुभौअशुभबनायडांड़ीग हेदूनौपानि २ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमपुरुष पर श्रीरामचन्द्र के बिनाजाने भरमको हिँडोला सबसंसा र झूलैहै कैसोहै हिँडोला जहां पाप पुण्य रूप दोऊ खम्भहैं माया जोहै सो मेरुकहे गोलाहै जौनेमेंकर्म्मरूपी पटुलीहै ताहीमें बैठिकै को नहीं झल्यो अर्थात् सबै झूलै हैं १ लोभ जोहै सोई मरुवालगो है बिषयजोहै सोई भमराहै काम जोहै सोई कील है औ शुभौ अशुभ जे उपसनाहैं तेई डांड़ीहैं ताको पाणिते गहिकै सबझूलै हैं को को झूलैहैं ताको आगेकहैंहैं २ ॥

झूलेसोगणगन्धर्बमुनिनरझुलेसुरगणइन्द्र । झूलतसुनारद शारदाहोझुलतब्यासफणिंद्र ३ झूलतबिरंचिमहेशमुनिहोझुलत सूरजइन्दु। औआपुनिर्गुणसगुणह्वैकैझूलियागोविन्दु ४ ॥

गन्धर्ब मुनि नर सुरगण इन्द्र नारद शारदाव्यासफणीन्द्र जेहैंशेषमहेश जेहैं बिरञ्चि सूर्य्य चन्द्रमा ये सब झूलैहैं और कहांतक कहैं सगुणनिर्गुण रूपते अर्थात्चितअचित के अन्तर्य्यामी ह्वैकै गोबिन्द जेहैंतेऊझूलैहैं ४॥

छचारिचौदहसातयकइसतीनलोकबनाय । चौखानिबानीखो जिदेखौथिरनकोइरहाय ५ ॥

छः जे शास्त्रहैं चारिजे वेदहैं चौदह जे बिद्याहैं सातजेद्वीपहैं औ इकी सौ जेहैं सात शून्य सातसुरति सातकमल यतनेमें परेजेतीनउ लोककी रचनाभई सो इनमें चारिउ खानि के परेजे जीव तिनकी हम चारिउ बानीते वेदशास्त्रादिकनते बिचारि खोजि देख्यो कोई थिरनहीं रहैहैंसबै झूलैहैं सो तैं इहांको नहीं है तैं तो बाहरको है जहां इहांकीसाजु उहां एकौ नहीं है ५ ॥

शशिसूरनिशिदिनसंधिऔतहतत्त्वपांचौनाहिँ । कालौअकालौ प्रलयनाहँतहँसंतबिरलेजाहिँ ६ खण्डौब्रह्मण्डौखोजिषटदरशन येछूटेनाहिं। यहसाधुसंगबिचारिदेखौजीउनिसतरिजाहिं ७ ॥

न उहां सूर्य्यहैं न चन्द्रहैं न दिनहै न राति है न सन्ध्या है न पांचौ तत्त्वहैं न कालहै न अकालहै न उहां प्रलयहै ऐसी जगहमें कोई बिरले सन्त जाइहैं पुनिकैसोहै जाको खण्ड जो शरीर ब्रह्माण्ड जो जगत तामें वाको छयउ दर्शनवारे खोजि खोजिहारे परन्तु पाये नहीं न संसारते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूटे सो ऐसे लोकको साधुजेहैं तिनको सङ्गकरिकै बिचारि कै देखै जाते जीव यहि संसारते निस्तरिजाइ ७॥

तहँकेबिछुरबहुकलपबीतेपरेभूमिभुलाय। अबसाधुसंगतिशो चिदेखौबहुरिउलटिसनाय ८ तेहिझूलबेकीभयनहींजासंतहोहिं सुजान। कहकबीरसतसुकृतमिलैतौफिरिनझूलैआन ९॥

सो ऐसेलोकते बिछुरे तो को केतनौ कल्प व्यतीत भये तें संसारमें भुलायकै परेआय सो तें अबसाधु सङ्गति करि बिचारिकै रामनाम को जानै जाते बहुरिकै वहैं समाय अर्थात् जहांते आयेहै तहँजाययासंसार हिँडोला छाडु जो कोई साहबके जाननवारे सुजान साधुहैं तिनको या हिँडोलामें झूलबेकी भयनही है तिनसों श्रीकबीरजी कहैहैं कि जो याको सत सुकृत रामनाम मिलै तो फिर आनीबार न झूलै को जपिबे जो है सोई सत्य सुकृत है वही बाङ् मनो गोचरातीत जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके और जे सुकृतहैं ते क्षयमान हैं औ रामनाम पास पहुंचबेहै तहांते नहीं लौटैहै तामें प्रमाण॥ सप्तकोटिमहामंत्राश्चित्तविभ्रमकारकः। एकएवपरो मंत्रो रामइत्यक्षरद्वयम्॥ इतिसारस्वततंत्रे॥ दूसरप्रमाण॥ इममेवपरं मंत्रं ब्रह्मरुद्रादिदेवताः। ऋषयश्चमहात्मानोमुक्ताजप्त्वाभवाम्बुधे रिति पुलहसंहितास्मृतिः ६॥

अथदूसराहिँडोला॥

बहुबिधिकेचित्रबनाइकैहरिरच्योक्रीड़ारासाज्यहिनाहिंइच्छाझूलबे अ सबुद्धिक्यहिके १ झूलतझूलतबहुकल्पबीतेमननछोड़ैआस। यहरच्योरह सहिँजेलज निशिचारियुगचौमास२कबहूँकऊँचेनीचकबहूँस्वर्गभूलौंजाय। अतिभ्रमतभ्रमहिँहिँडोलनासोनेकुनहिँठहराय ३ डरपतरहौं यहिझूलिबे कोराखुयादचराय। कहकबिरसुनुगोपालबिनतीशरणहौं तुवपाय ४॥

बहुबिधिकेचित्रबनाइकैहरिरच्योक्रीड़ारासाज्यहिनाहिंइच्छा झूलबेअसबुद्धिक्यहिकेपास १ झूलतझूलतबहुकल्पबीतेमननछो ड़ैआस। यहरच्योरहसहिँडोलनानिशिचारियुगचौमास२ कबहूं कऊंचेनीचकबहूंस्वर्गभूलौंजाय। अतिभ्रमतभ्रमहिंहिँडोलनासो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेकुनहिंठहराय ३ डरपतरहौंयहिझूलिबेकोराखुयादवराय। कह कबिरसुनुगोपालबिनतीशरणहौंतुवपाय ४ ॥

बहुतविधि चित्र बनाइके या जगतहरि जे हैं गोलोकबासी कृष्णचन्द्र आपनी क्रीड़ा बनाइ राख्योहै अर्थात् अन्तर्यामीरूपते आपही विहार करैहैं सो या जगतरूप हिँडोला में झूलिबे की बुद्धि क्यहिके नहीं आई अर्थात् सबैके है न झूलिबे की बुद्धि कोई बिरले सन्तनके है सो ऐसो हिँडोलना चारि युग जेहैं चौमास तामें रच्योहै जीवनको झूलत झूलत कोटिन कल्पव्यतीतभये तऊझूलिबेकी आशा मननहीं छोड़ै है हिँडोला के चढ़िया कहूँ नीचेआवैहैं कहूँ ऊँचे जायहैं ऐसेअतिभ्रमतजो जगतरूप हिँडोला तामे परे जे जीव तेकहूँ नरकको जायहैं कहूँ स्वर्गको जायहैं सो हे जीवो याजगतरूप हिँडोला झूलिबे को डरत रहौ राखु यादवराय या कहौ कि हे यादवराय कृष्णचन्द्र हमको बचायो सो हे कायाके बीरो जीवौ यहकहौ कि हे गोपाल गो जेहैं इन्द्री तिनके रक्षा करनवारे हमारी बिनती सुनो हम तुम्हारे चरणशरण हैं ४ ॥

अथतीसराहिँडोला ॥

जहँलोभमोहकेखम्भदोऊमनरच्योहैहिँडोर। तहँझुलहिँजीवज्ञानज हँलगिकतहुनहिँथितठोर १ चतुराझुलेंचतुराइयाझूलेंचौराजासेव। अरु चन्द्रसूरजदोऊझूलहिँनाहिँपायोभेव २ चौरासीलक्षहुजीवझूलेंधरहिँरवि सुतधाय। कोटिनकलपयुगबीतियामानेंनअजहूँहाय ३ धरणीअकाशहुदो ऊझूलेंझूलेंपवनहुँनीर। धरिदेहहरिआपहूझूलहिँलखहिँहंसकबीर ४ ॥

जहँलोभमोहकेखम्भदोऊमनरच्योहैहिँडोर। तहँझुलहिँजीव जहानजहँलगिकतहुनहिँथितठोर १ चतुराझुलेंचतुराइयाझूलें औराजासेव। अरुचन्द्रसूरजदोऊझूलहिँनाहिँपायोभेव २ चौरा सिलक्षहुजीवझूलेंधरहिँरविसुतधाय। कोटिनकलपयुगबीतिया मानेंनअजहूँहाय ३धरणीअकाशहुदोऊझूलेंझूलेंपवनहुँनीर। धरि देहहरिआपहूझूलहिँलखहिँहंसकबीर ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौन जगतमें लोभ मोहके खम्भ बनाइकै मनको रच्यो जो हिँडोल ताहीमें सब जहानके जीव झूलैहैं थिर नहीं कौनौ ठौरमें रहैहैं चतुर चतुराईते झूलैहैं राजा झूलैहैं सेवक झूलैहैं चन्द्र सूर्य तेऊ झूलैहैं हिँडोलाको भेद नहीं पावैहैं चौरासीलक्ष योनिके जीव झूलैहैं तिनको सब को रविसुत जे यमराज ते धरैहैं सो कोटिन कल्प बीतिगये जीवनको झूलत परन्तु अजहू नहीं मानैहैं औ धरणी आकाश पवन पानी ये सब वही हिँडोलामें झूलैहैं औ देहधरिकै कहे अवतार लैकै जौनी रीति सब झूलैहैं तौनीरीति हरि आपहू झूलैहैं जीवनको यह दिखाइबेको कि जैसे तुमहू झूलौहौ तैसे हमहू झूलैहैं सो देहधरेको फल यहहै इनको हेतुकोई जानिनहीं सकैहै कि जीवनपर दयाकरिकै उद्धार करिबेको हेतु दिखावै हैं कि देहको फल यह संसारई है ताते देहको अभिमान छोड़ि हमारे अवतारके नाम लीलादिकनमें लागि मनको त्याग करिकै चारो शरीरन को त्याग करिदेउ जबै तुम आपनेस्वरूपमें स्थित रहौगे तब हंसस्वरूप दै आपने धामको लै आवोगे यह बात कोईनहीं लखैहै कहे जानै है जे हंसस्वरूप पाये कायाकेबीर जीवहैं तेईजानैहैं याते साहबकी दयालुता व्यंजित भई ४ ॥

इतिहिँडोलासमाप्तम् ॥

अथबिरहुलीलिख्यते ॥

आदिअंतनहिंहोतबिरहुली। नहिँजड़पल्लवपेड़बिरहुली १ निशिवासर नहिँहोतबिरहुली। पानीपवननहोतबिरहुली २ ब्रह्मआदिसनकादिबिर हुली। कथिगयेयोगअपारबिरहुली ३ मासअसाढ़हिशीतबिरहुली। बो इनसातौबीजबिरहुली ४ नितगोड़ैनितसिँचैबिरहुलो। नितनवपल्लवपड़ बिरहुली ५ छिछिलबिरहुलीछिछिलबिरहुली। छिछिलरहीतिहुँलोकबिर हुली ६ फूलएकभलफुललबिरहुली। फूलिरहलसंसारबिरहुली ७ तेफुल बन्दैभक्तबिरहुली। बांधिकैराउरजाहिबिरहुली८ तेफुललेहीं संतबिरहुली। डसिगोबेतलसांपबिरहुली ९ बिषहरमंत्रनमानबिरहुली। गाड़रिबोलैआर बिरहुली १० बिषकोकियारीबोयोबिरहुली । लोरतकापछितायबिरहु ली ११ जन्मजन्मअवतरेबिरहुली। फलयककनयलडारबिरहुली १२ कह कबीरसचुपायबिरहुली। जोफलचाखहुमोरबिरहुली १३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदिअन्त नहिँहोत बिरहुली। नहिंजड़पल्लवपेड़बिरहुली १
निशिबासरनहिँहोतबिरहुली। पानीपवन न होत बिरहुली २
ब्रह्मआदिसनकादि बिरहुली। कथिगयेयोगअपारबिरहुली ३

बीकहे दुइबिद्या अबिद्यारूपते रहुलीकहे रहनवाली जोमाया ताको न आदिहै न अंतहै अर्थात्बिचारकीन्हे भ्रममात्रहै जीवकूटि मात्रजाइहै सोबिरहुली जोमाया ताके न जड़है न पेड़है न पल्लवहै अर्थात् बिचार कीन्हे मिथ्याहै १ जब निशिबासर नहीं होतहै तबहूं बिरहुली माया रहीहै जबपानी पवन नहीं रह्यो तबहूं बिरहुलीमाया रहीहै औब्रह्मा सनकादिककी आदि बिरहुली है औ जौनयोग अपार कथि गये हैं सोऊ बिरहुलीहै २। ३॥

मासअसाढ़हिशीतबिरहुली। बोइनसातोबीजबिरहुली ४
नितगोड़ै नितसिँचैबिरहुली। नितनवपल्लवपेड़बिरहुली ५

जबपृथम उत्पत्ति भईहै सोई आषाढ़मासहै काहेते चौमासको आदि आषाढ़है तैसे युगनको आदि सतयुगहै सो कैसाहै शीतकहे शुद्धसतोगुण है तौनेमें जीव सातो सुरति तेईहैं बीजतेके बोवत भयेते सब बिरहुलिन आइ सो मंगलमें लिखिआयेहैं कि॥ सातसुरति सब मलहैं पूलय हुइ-नहीं माहँ॥ सो जीव नित गोड़ैहै गुरुवनतेवोईकर्म्म पूछैहै खोदि खोदि नित सींचैहै कहे वोईकर्म्म करैहै जाते बिरहुलीकहे मायाबढ़तेजाइहै ५॥

छिछिलबिरहुलीछिछिलबिरहुली। छिछिलरहलतिहुँलोक बिरहुली ६ फूलएकभलफुललबिरहुली। फूलिरहलसंसारबिर हुली ७॥

कहूं विद्यारूपते छिछिलीहै बिरहुलीमाया कहूं अविद्यारूपते छिछिली है बिरहुलीमाया यही रीतिते तीनोंलोकमें बिरहुली छिछिलरही है सो यहीमाया बिरहुलीमें कहूं कर्म्मत्यागरूप एक फूल धोखा ब्रह्म फूलिरह्यो है ताहीमें सब संसार लगिकै फूलिरहे कहे आनन्द मानिलियेहैं ७॥

तेफुलवन्दैभक्तिबिरहुली। बांधिकैराउरजायबिरहुली ८
तेफुललेहीसंत बिरहुली। डसिगोबेतलसाँपबिरहुली ९

ते फुलकहे तौन जो धोखाब्रह्म सो भक्तन को बन्दै है अर्थात् खुलो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है वे धोखामें नहीं परेहे काहेते वाको बांधिकै कहे खण्डनकरिकैराउर जो साहबको महलहै तहांको जाहिहैं औ जे सन्त धोखाब्रह्मरूप फूल लेहिहैं अर्थात् ब्रह्मविचारमें जे शांतभे साहबको भूलिगे ते बेतल कहे बेताल भुतहा सांप ऐसो जो धोखाब्रह्म तौनेते डसिगे धुनि या है जाको साँप डसैहै ताको स्वरूप भूलिजाइहै सांपै बोलैहै ऐसे जे धोखा ब्रह्मवारे हैं तिनहूं को आपना स्वरूप भूलिगये कहेहैं हमहीं ब्रह्महैं ९ ॥

बिषहरमंत्रनमानबिरहुली। गाडुरिबोलैआरबिरहुली १०
बिषकीक्यारीबोयेबिरहुली। अवलोरतपछितायबिरहुली ११

जाको ब्रह्मरूप सर्प डस्यो सो ब्रह्मरूप सर्पको बिष हरनवारो जो राम नाम ताको नहीं मानैहै गाडुरि जे हैं ते आर बोलैहैं झारैहैं इहां सतगुरु जेहैं ते रामनाम उपदेशकरै हैं परन्तु नहीं मानैहैं सो बिषयकी कियारी जो या संसार तामें आत्मज्ञानरूप बीज बोयो सो वा बिरहुलीकहे मायै आय सो अवलोरतकहे काटतमें का पछितायहै अबका बिषय छांड़ैहै नहीं छांड़ैहैकहूं ब्रह्मानन्दकी कहूं बिषयानन्दकीचाह विद्यामें ब्रह्मानन्दकी चाह अविद्यामे बिषयानन्दकी चाह तो को नहीं छाड़ैहै ११ ॥

जन्मजन्मअवतरेउबिरहुली। फलयककनयलडारबिरहुली १२
कहकबीरसचुपाय बिरहुली। जो फलचाखहु मोर बिरहुली १३

सो हे जीव बिरहुली जो माया ताहीमें तुम जन्मजन्म अवतरयो जौने बिरहुलीको फल धोखाब्रह्म औ वह कर्मफल कैसोहै कि कनयल कैसो फलहै अर्थात् निरसहै रस नहीं है औ बिषधरहै सो कौनीतरहते सचु-पावोगे सो श्रीकबीरजी कहेहैं कि तब सचुको पावै जब फल मोर चाखै कहे जौने राममनाममें मैं जपौहौं ताही फलको चाखै तो सुचित्तईपावै या कनयलका फल न चाखै १३ ॥

इतिबिरहुलीसमाप्तम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

अथसाखीलिख्यते॥

जहियाजन्ममुक्ताहता तहियाहतानकोइ ॥
कुठौंतिहारीडाजगा तूकहँचलाविगोइ १

गुरुमुख ॥ जीव सों साहब कहेहैं जहियाकहेपूथमजबतुम जन्मते मुक्त ह्योहै कहें जन्ममरणते छूटरह्योहै तहिया कहेतब ये मनादिकनहीं रहे जो जहिया जन मुक्ता हता या पाठहोइ तो साहब कहेहैं कि हे जन हमरे पास जब तुम मुक्तरह्योहै तब ये मनादिक कोई नहीं रहे अगुणिज्वरगुणातीत चिन्मात्रमेरो अंश सनातनको या स्वरूपते रह्योहै कुठइँदेह हमारे पासहै तू कहां बिगरो जाइहै मनादिकनमें लगिकै त कैवल्यशरीर में टिकि कै हमारे प्रकाशमें स्थितरहै हमको नहीं जाने याहीते माया तोको धरिकै संसारमें डारिदियो सो तुम कैवल्यतनते महाकारणमें महाकारणते कारण में कारणते सूक्ष्ममें सूक्ष्मते स्थूलशरीरमें गयो सो जो अजहूं मनादिकन को त्यागिकै मोको जानै तो मैं तोको हंसशरीर देउँ तामें टिकि मेरेपास आवै पूथम साहब बरज्योहै ताको पूमाण आगे बेलिमें लिखिआयेहैं जो कोई कहै कि हंसस्वरूपईते माया तो धरि लेआईहै औ भूलिभईहै सो बिना बिचारे कहैहै पारिख करिकैदेखो तो जो हंसस्वरूपईते माया धरि लेआवती तो पुनि जब हंसस्वरूप पावैगो तबहूं न माया धरि लेआवैगी काहेते कि एकबार तो धरिही लेआई ताते हंसशरीरते माया नहीं धरि ल्यावैहै जीव कैवल्यशरीरमें सदा स्थित रहैहै तहां मनकी उत्पत्ति होइहै तब माया धरिल्यावैहै जीव संसारी ह्वैजाइहै पुनि जब महापूलय होइहै तब फेरि वही ब्रह्मपूकाशमें जाइकै एकरूपते सब रहैहै तामेंपूमाण ॥ परेच्यग्रेसर्वएकाभवति ॥ औ सब वहै उत्पत्ति होइहै तामेंपूमाण ॥ सदेवसौम्येदमग्रआसीत्एकमेवाद्वितीयम् । तदैक्षतएकोहंबहुस्यांइतिश्रुतेः ॥ औ जब जीव संसारते मुक्त ह्वैजायहै तब साहबहंसस्वरूप देइहैं तामें स्थितह्वैके साहबके पास जाइहै ताको पूमाण आगे लिखिआयेहैं साहब के पासजाय फेरि नहीं आवै ॥ नतद्भासयतेसूर्योनशशांकोनपावकः ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदगत्वाननिवर्त्तन्तेतद्धामपरममम इतिगीतायां ॥ औ जबजीव कैवल्य शरीरमें रहैहै सो सच्चिदानन्दरूप कासमें भरोरहैहै तहां जब मनको अंकुर वह चितहोइहै तब तुरीयअवस्थाको स्मरणहोइहै सोयाकोमहाकारण शरीरहै औ जब वह सुखके स्मरणते बासना उपजी तब सुषुप्ति अवस्थामें मगन होइहै जागै है तब कहै है कि आजखूब सोयो याको या कारण शरीरहै औ जब वह बासना संकल्प बिकल्परूप भयो या याको सूक्ष्म शरीरहै स्वप्न अवस्थाको सुखभयो औ जब संकल्प बिकल्पते नाना कर्मनके फलते पृथ्वी अपतेज बायु आकाशादिकते स्थूलशरीर पावैहै तहां जाग्रत अवस्था सों सुख होइहै तामें प्रमाण पंचदेहकीनिर्णयको ॥ एकजीवजोस्वतःपद बुद्धिभ्रान्तिसोकाल। कालहोइवहकालरचि तामेंभये बिहाल ॥ बीहालेकोमतोजो देउसकलबतलाय । जातेपारखपौढ़लहि जीवनष्टनहिँजाय ॥ करिअनुमानजोशुन्यभो सूझैकतहूं नाहिं । आपुआप बिसरोजबै तनबिज्ञानकहिताहि ॥ ज्ञानभयोजाग्योजबै करिआपनअनुमान । प्रतिबिंबितझाईंलखै साक्षीडूपबखान॥साक्षीहोयप्रकाशभो महाकारणत्यहिनाम । मसुरप्रमाणसोबिम्बभो नीलबरणघनश्याम ॥ बड्यो बिम्बअधपर्बभो शून्याकारस्वरूप । त्यहिकाकारणकहतहौं महँअँधियारी कूप ॥ कारणसों आकारभोश्वेतअँगुष्ठप्रमान । वेदशास्त्रसबकहतहैं सूक्ष्म रूपबखान ॥ सूक्ष्मरूपतेकर्मभो कर्महितेअस्थूल । पराजीवयारहटमें सहै घनेरीशूल ॥ सन्तौबटप्रकारकीदेही । थूलसूक्ष्मकारणमहँकारणकेवलहंस किलेही ॥ साढ़ेतीनहाथपरमानादेहस्थूलबखानी । रातावर्णवैखरीबाचा जागृतअवस्थाजानी ॥ रजोगुणीउकारमात्रुकात्रिकुटीहैअस्थाना । मुक्ति श्लोकप्रथमपदंगात्रीब्रह्मावेदबखाना ॥ पृथ्वीतत्वखेचरीमुद्रामगपपील घटकासा । क्षरनिर्णयबड़वाग्निदशद्वीदेवचतुर्दशबासा ॥ औरअहैऋग्वेदव तायूर्द्ध शुन्निसंचारा । सत्यलोकविषकाअभिमानीविषयनन्दहंकारा ॥ आदिअन्तऔमध्यशब्दयालखैकोईबुधिवारा । कहैकबीरसुनोहोसन्तौइति अस्थूलशरीरा १ सन्तौसूक्ष्मदेहप्रमाना । सूक्ष्मदेहअँगुष्ठबराबरस्वप्नअवस्थाजाना ॥ श्वेतबर्णउकारमात्रुकासतोगुणविष्णूदेवा । ऊर्ध्वओयजुर्वेदहैकण्ठस्थानअहैवा ॥ मुक्तिसमीपलोकबैकुण्ठपालनकिरियाराखी । मार्गविहंगभूचरीमुद्राअक्षरनिर्णयभाखी ॥ आवतत्वकोहंहंकारामन्दाअग्नीकहिये । पचप्राणद्वितियापदगात्रीमध्यमबाणीलहिये॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधमनबधिचितहंकारा । कहैकबीरसनोभइसन्तौयहतनसूक्षमसारा २ संतौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारणदेहसरेखा । आधापर्वप्रमाणतमोगुणकारावर्णपरेखा ॥ मध्याज्ञान्य प्रकारमात्रुकाहृदयासोअस्थाना। महदाकाशचाचरीमुद्राइच्छाशक्तीजाना॥ उदराअग्निसुषुप्तिअवस्थानिर्णयकण्ठस्थानी । कंपमारगततीयपदगात्री अहैप्राज्ञअभिमानी॥ सामवेदपश्यन्तीवाचामुक्तस्वरूपबखानी । तेजतत्व अद्वैतानन्दंअहंकारनिरबानी॥ अहैंबिशुद्धमहातमजामेंतामेंककुनसमाई। कारणदेहइतीसम्पूरणकहैकबीरबुझाई ३ सन्तौमहाकारणतनजाना । नी लबरणऔईसुरदेवाहैमसूरपरमाना ॥ नाखिस्थानबिकारमात्रुकाचिदाका शपरबानी। मारगमीनअगोचरमुद्रावेदअर्थनहिंजानी॥ ज्वालाकलचतुर्थ पदगात्रीआदिशक्तितुबाऊ। आश्रयलोकबिदेहानन्दमुक्तिसजोतिबताऊ॥ तृणेप्रकाशिकतुरीअवस्थाप्रतिज्ञातुअभिमानी । सीवन्हकारमहाकारणतन इवोकबीरबखानी ४ सन्तौकेवलदेहबखाना । केवलसकलदेहकासाक्षी भूमरगुफाअस्थाना ॥ निराकाशऔलोकनिराश्रयनिर्णयज्ञानवसेखा । सू-क्ष्मवेदहैउनमुनमुद्राउनमुनबाणीलेखा॥ ब्रह्मानन्दकहीहंकाराब्रह्मज्ञानको माना । पूरणबोधअवस्थाकहियेज्योतिस्वरूपीजाना ॥ पुण्यगिरीअरुचिरू मात्रुकानीरंजनअभिमानी । परमारथपंचमपदगात्रीपरामुक्तिपहिचानी ॥ सदासीवऔमार्गसिखाहैलहैसन्तमतधीरा । कालेतीतकलासम्पूरणकेवल कहैकबीरा ५ सन्तौसुनोहंसतनब्याना। अबरणबरणरूपनहिंरेखा ज्ञानरहि तविज्ञाना । नहिंउपजैनहिंबिनशैकबहूं नहिंआवैनहिंजाहीं । इच्छअ-निच्छनदृष्टअदृष्टी नहिंबाहरनहिंमाहीं । मैंतूरहितनकरताभोगता नहीं मानअपमाना । नहीं ब्रह्मनहिंजीवनमाया ज्यों कात्यो वहजाना । मन बुधिगुनइन्द्रियनहिंजाना अलखअकहनिर्बाना । अकल अनीह अनादिअ-भेदानिगमनीतिफिरिजाना । तत्वरहितरबिचन्द्रनतारा नहिंदेबीनहिं देवा । स्वयंसिद्धिपरकाशकसोई नहिस्वामीनहिंसेवा । हंसदेहविज्ञान भावयह सकलबासनात्यागे । नहिंआगेनहिंपाछेकोई निजप्रकाशमेंपा-गे । निजप्रकाशमेंआपअपनपौ भूलिभयेबिज्ञानी । उनमतबालपिशाच मूकजड़ दशापाँचइहलानी । खोयेआपुअपनपौसबरस निजस्वरूपनहिं जाने । फिरिकेवलमहाकारणकारण सूक्ष्मस्थूलसमाने । स्थूलसूक्ष्मकार णमहाकारण केवलपुनिबिज्ञाना । भयेनष्टयेहेरफेरमेंकतौं नहीं कल्याना । कहैकबीरसुनोहोसन्तो खोजकरोगुरुऐसा । ज्यहितेआपअपनपौजानोमेटो खटकारैसा ६ औ जब पांचोशरीर ते भिन्न अपने को मान्यो अरुआपने को ब्रह्मरूप न मान्यो यहमान्यो कि मैं साहबकोअंशहौं यह जान्यो तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब याको हंसशरीर देइ है सो जैसे साहब अनिर्वचनीय रस रूप है ऐसे जीवोहै रकाररूप साहबहै मकाररूप जीवहै न्यूनता येतीहै साहब स्वामीहै जीव सेवकहै साहब स्वतन्त्रहै यह परतन्त्र है साहब की मरजी ते सबकाम करैहै जैसेगुण साहबकेहैं तैसे याहूके हैं जैसे साहब नहीं आवैजाय है ऐसे यहो नहीं आवै जायहै साहब के पासते जैसे साहबकी सर्बत्रगतिहै ऐसे याहू की सर्बत्रगतिहै साहब के बराबरयाको भोगहै तामेंप्रमाणव्याससूत्र॥भोगमात्रसाम्यलिंगाच्च तामेंप्रमाण षट्दोहा वलीको शब्दकबीरका॥ तत्वमिन्ननिरततत्वनिरक्षर मनोपवनतेन्यारा। नादबिन्दुअनहदअगोचर सत्यशब्दनिरधारा॥ औ स्थूलशरीर पचीस तत्व को है पृथ्वी अप तेज वायु आकाश दश इन्द्री पञ्चप्राण मन बुद्धि चित्त अहंकार जीव सो जागृतअवस्था में अनुभव होइहै औ ऋग्वेद है प्रथमपद गायत्री औ सूक्ष्मशरीर सत्रहतत्वकोहै पञ्चप्राण दशइन्द्रीमन बुद्धि सो स्वप्न अवस्थामें अनुभव होइहै औ यजुर्वेदहै द्वितीयपदगायत्री औ कारण शरीर तीनितत्व को है चित्त अहंकार जीवात्मा सो सुषुप्ति अवस्था में अनुभव होयहै सामवेद है तृतीयपद गायत्री और महाकारण शरीर दुइतत्वको है अहंकार जीवात्मा सो तुरीयाअवस्थामें अनुभव होइहै अथर्वणवेदहै चतुर्थपदगायत्री वेदहै जीव सूक्ष्म वेद है नो ओंकार पञ्चमपद गायत्रीहै बचनमें नहीं आवैहै ४ छठौं पद गायत्रीनाम वेदहै तामेंप्रमाण॥ निद्रादौजागरस्यांतेयोभावउपपद्यते। तम्भावंभावयेन्नित्यमक्षयानन्दमश्नुते॥ औ कैवल्यशरीर एकतत्वकोहै चितमात्रहै औ जौन ब्रह्मको छठौं शरीर मानिराख्यो सो निरततवहै सो वाको भ्रमहै कुछवस्तु नहीं है सो जो कोई रामनामको स्मरण करत साहबको जान्यो औ पांचो शरीरको त्यागकियो तब साहब हंसशरीर जीवको देइहै मनवचन में नहीं आवैहै सो हंसशरीर अनिर्वचनीयहै रसरूप है वह निरतत्वहूसे परेहै सो जब प्राकृत रस जो है सोऊ व्यंजनावृत्ति करिकै जानो परै है तो अप्राकृत तो मनवचनके परेहै वाको कोई कैसे जान सो तौने हंसशरीरमें प्राप्त ह्वैके साहबके पासजाइकै फिरि नहीं आवैहै उहां मायामनादिकन की पहुंच नहीं है सो साहब कहैहैं कि हे जीव हंसस्वरूप जो छठौं शरीर तिहारो सो हमारेपास है तू कहां मनादिकन में लगिकै बिगरेजाउहौ तुम हमारेपास आवो और अर्थ इनको स्पष्ट है अन्त में कुछु अर्थ खोलेदेइ हैं सो श्री कबीरजी कहैहैं कि षट जे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छयो शरीर तिनको रैसा कहे झगरा है सो मेटो जौने ब्रह्मप्रकाश में तुम भरे रहेहौ सो वाको छठौं शरीर आपनो मानो हौ सो तिहारो शरीर नहीं है वामें परे तो पिशाचवत् उन्मत्तवत् ह्वैजाइहै जाको भूतलगैहै औ नो उन्मत्त होइहै ताको यथार्थज्ञान नहीं होइहै सो ऐसा गुरु करो जो साहबको बतावै तब आपनो छठौं शरीर हंसस्वरूप पावोगे लोकमें जो साहब देइहै तौने इहांसाहब कह्योहै कि छठो तिहारीहोजगा कहे छठौं-शरीर हंसस्वरूप हमारे जगहमें कहे हमारे है सो हमको जानोगे कि वही ब्रह्महै तब हमारे दिये पावोगे जौन छठौंशरीर तुम मानिराख्योहै औ खोजौहौ सो तिहारो नहीं है ताते तुम्हारो कार्य्य न सरैगो १ ॥

शब्दहमारातुमशब्दका सुनिमतिजाहुसरक्खि ॥
जोचाहोनिजतत्वको तौशब्दैलेहुपरक्खि २

साहब कहैहैं कि शब्द जोहै हमारा रामनाम तौजेही शब्दके तुमहौ सो रामनामको सरेखिकै कहे बिचारिकै मायाब्रह्ममें मतिजाहु जो निज तत्वको चाहो कि मैं कौन तत्व यथार्थहौं तो शब्द जो रामनाम ताको परखिलेउ अनादिशब्द यहीहै मेरे धाममें यहनाम मेरो सदा बनोरहै है जब आदि उत्पत्ति प्रकरण होइहै तब यही नामलैकै यहीको अर्थ वेद शास्त्र औ सब जगत् निकासिकै बाणी जगत्की उत्पत्ति करैहै रामनाम को अर्थ मोमें रूढ़है सो अर्थबाणी गुप्त कैदेइहै तौनअर्थ साधुजानैहै कि रकार जेहैं साहब तिनको अकार जोहै आचार्य्य सतगुरु सो मकारजोहै जीव ताको शरण करावैहै सो तुम मकार तत्वहो ताको जानो चाहो तो शब्दजोहै मेरो रामनाम ताको परखो जो ककारके समीपमकारहोइतो तो मकार कामरूप सजैहै औ जो दकारके समीप मकार होइ तो दाम रूप सजैहै इत्यादिक नाना शब्द सजैहैं तहां तौनै रूप ह्वैजायहै वतनी शुद्धता नहीं रहिजायहै जब वहैमकार रकारके समीप सजैहै तबही शुद्धता होइहै ऐसे तुम मेरे समीप सजौहौ सो मेरे पास आवो मोको जानो तो तुमहू शुद्ध ह्वैजाउ जैसे रकारके समीप मकार सदा रहैहै तैसे तुमहू सदाके मेरे समीपी हौ ताते मेरेसमीप आवो औरेऔरेमें न लगो रकार के शरण मकार को अकार करावे तामेंप्रमाण ॥ रकारोराम रूपोयंमकारस्तस्यसेवकः। अकारश्चीमकारस्यरकारेयोजनीमता ॥ इति शंभुसंहितायां २ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दहमाराआदिकाशब्दहिपैठाजीव॥
फूलरहनकीटोकनी घोराखायाजीव ३

साहब कहैहैं कि हमारा शब्द जो रामनाम सो आदिकोहै आदिही ते यहि शब्दमें जीव पैठाहै सो शब्द रामनाम जीव के रहिबे को पात्र है जैसे फूलके रहन की टोकनी पात्रहै सो रामनामको लैकै निर्भय सुखपूर्वक को बिचरै कछू भय न लगै तौने रामनामको सार जो अर्थहै सोई घी है ताको घोरे जे पशुहैं गुरुवालोग अज्ञानी ते खाइलियो अथवा पूर्व में छांछ को घोराकहैहैं जामें सारनही है ऐसे जे हैं छांछ गुरुवालोग ते साहबको यथार्थज्ञान जो घी ताको खायलियो कहे वाको और औ अर्थकरिकै नानामतनमें लगाइदियो जो रामनाम मोंको बतावै है सो अर्थ भुलायदियो गुरुवालोग बड़ेघोरहैं येई संसारमें तोकोडारिदियोहै ३

शब्दबिनाश्रुतिआँधरी कहौकहांकोजाय॥
द्वारनपावैशब्दको फिरिफिरिभटकाखाय ४

श्रीकबीरजी कहैहैं कि श्रुति जो है औ शब्द जो है रामनाम तो बिना आँधरी है काहेते कि रकार मकार श्रुतिकी आँखीहैं ताकेबिना कहां को जाय सो शब्द जो रामनामहै तौने को द्वार नहीं पावै अर्थात् अर्थ नहीं जानै राम नामतो साहबमुख अर्थमें मन बचनकेपरे पदार्थ बतावैहै यासुति नेति नेति कहि बतावैहै याते राम नामको साहब मुख अर्थ नहीं कहिसकैहै याते यामें परिकै जीव फिरि फिरि भटका खायहै ज्ञान भक्ति बिज्ञान योग बतावैहै फिरि फिरि नेति नेति कहि कहि देइहै याते जीव भटकाखाइहै उहां बस्तु कछुनहीं पावैहै जो रामनामको साहब मुख अर्थ जीव जानिकै लगावै तौ सब श्रुतीलागिजायँ औ सबकेपरे पदार्थ सो जानिजाहिं काहेते बिनाआँखी कोई नहीं देखै जौनी तरहते राम नामते सबश्रुतो लागिजायहैं औ अनिर्बचनीय पदार्थ मालूम होयहै सो पीछे लिखि आयेहैं ४॥

शब्दशब्दबहुअंतरहीमें सारशब्दमथिलीजै॥
कहकबीरजेहिसारशब्दनहिंधृगजीवनतेहिदीजै ५

जहांजहां अन्तर तहांतहां बहुत शब्द देखेहैं औ तुमरामनामको अनिर्बचनीयहैं श्रुतिकी आंखीहैं या कहौहौ सोकैसेहोइगो एकशब्दबोहू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होइगो सो या ऐसो नहीं है सारशब्दहै जब सबशब्दनको मथे तब वा जानिपरै सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि जेहिको सार जोरामनाम सो नहीं मथिलियोहै ताको जीवन संसारमें धृगहै सारशब्द मतलीजै जो यहपाठ होइतौ सारशब्द रामनाम ताको मतलेइ और जे मतहैं ते कुमतहैं तेहि को छोड़िदे रामनाम वर्णन सब श्रुतीकी आंखीहै तामें प्रमाण ॥ आखर मधुरमनोहरदोऊ। वरणविलोचन जनजियजोऊ १ मुक्तिस्त्रीकर्ण पूरैमुनिहृदयवयष्पक्षतीतीरभूमी संसारापारासिंधोः कलिकलुषतमस्तो मसोमार्कविम्बे। उन्मीलत्पुण्यपुंजद्रुमललितदलेलोचनेचश्रुतीनां कामं रामेतिवर्णौद्वयमिहकलयतांसततसज्जनानाम् ५ ॥

शब्दैमारागिरिगया शब्दैछाड़ाराज ॥
जिनजिनशब्दविवेकिया तिनकोसरियाकाज ६

श्री कबीरजी कहैहैं कि शब्दजो रामनाम तौनेको जगतमुख अर्थ में वेदशास्त्र पुराण नाना मतजे निकसेहैं तामेंजो परयो सो गिरगया अर्थात् संसारमें परयो औ जिन जिन शब्द विवेकिया कहे सब शब्दनते विचार करि सारशब्द जो रामनाम ताको जानिलियो सोई संसाररूप राजको छोड़िदियेहैं औ तिनहीं को काज सरियाकहे सिद्ध भयोहै ६ ॥

शब्दहमाराआदिका पलपलकरैजोआदि ॥
अंतफलैगी माहली ऊपरकी सबवादि ७

गुरुमुख साहबकहैहैं कि हे जीवो हमारा शब्द जो रामनाम सोई आदिकोहै अर्थात् याहीते प्रणव वेदशास्त्र बाणी सब निकसेहैं सो याको आदिकहे स्मरण जो पलपलकहे निरंतरकरैगो तौ अंतमें फलैगी साकेत जो हमारो महल ताको माहली होइगो बसैयाहोइगो अर्थात् तहांको जाइगो और ऊपरके जे सब नाना मतहैं ते बादिकहे मिथ्याहैं अथवा और सब ऊपरके मत वादविवादहैं ७ ॥

जिनजिनसंबलनाकिया असपुरपाटनपाय ॥
झालपरेदिनआथयेसंबलकियानजाय ८

श्री कबीरजी कहैहैं किअसपुरपाटन जो यामानुषशरीर तौनेकोपायकै जिन जिन पुरुष संबलन किया कहे सम्यक् पूकार बल न कियो अर्थात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनाड़िकन न जीतिलियो साहबको न जान्यो अथवा संबलकहे जमा सो परलोककी जमा रामनामको न जानिलियो अथवा संबलकहे कलेवा सो दिन अथये कहे शरीरछूटे झालिपरे अर्थात् चौरासीलाख योनिमें परयो अब सबल कियो नहीं जायहै ८ ॥

हंसासरवरतजिचले देहीपरिगैसुन्नि ॥
कहैकबीरपुकारिकै तेईदरतेईथुन्नि ९

हे हंसाजीव बिना साहबके जाने या सरवररूपी शरीर तजिकै जाऊंगे तब या देही सुन्नि परिजायगी अर्थात् मरिजायगी सो श्रीकबीरजीकहैहैं कि हम पुकारिकै कहैहैं बिनासाहब के जाने तेई दर तेईथूनी बनेहैं अर्थात् नयेतलायेमें लाठिगाड़िजाइहै सो जहैंजायगो तहैं देहरूपी सरवर में बासनारूपी दरमें कर्मरूपी थून्हि गाड़िलेउगे पुनिपैदाहोइगो जनन मरण न छूटैगो ९ ॥

हंसाबकयकरंगलखियचरैएकहीताल ॥
क्षीरनीरतेजानिये बकउघरैतेहिकाल १०

बकुला और हंस एकहीरंगहोइहैं औ एकहीतालमें चरैहैं परन्तु जब नीरक्षीर एक करिकै धरिदियो वै दूधपीलिये पानी रहिगयो तब जानि परो हंसहै औ नीर क्षीर जुदो कीन न भयो तब जान्यो कि बकुलाहै ऐसे टीका कंठीमाला टोपी सब बराबरै होइहैं जब बिचार करनलग्यो मनमाया बृह्मजीव इनते साहबको अलग मान्यो तौ जान्यो कि ये हंस हैं जो मनमाया बृह्मजीवते अलग न कियो साहबको तौ जान्यो किये बकुलाहैं १० ॥

काहेहरिणीदूबरी चरैहरियरेताल ॥
लक्षअहेरीयकमृगा केतिकटोरोभाल ११

जीव कहैहै कि हे हरिणीबुद्धि तें काहे दूबरी ह्वैरहीहै संसाररूपी हरियर तालमें चरिकै यह ससार तालमें लक्ष तौ अहेरी कहे मारनवारो हैं तो तें केतिक भार टारोगे मरिही जाइगो सो हरियरहै जौने तालमें तौनेमें काहें नहीं चरैहै साहब में निश्चय काहेनहीं करैहै औ भक्तिरस सरोवरमें रक्षक एक तेरो आर साहबैहै ताते साहबैके तालमें चरु यहसंसार तालको छोड़िदे यहि संसारताल में लाखन मरवैयाहैं ११ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीनिलोकभोपींजरा पापपुण्यभोजाल ॥
सकलजीवसावजभये एकअहेरीकाल १२

तीनो लोक जो पींजरा हैं तामें पाप पुण्य रूप जाल लगे हैं अर्थात् वाही में सब अटके हैं सो सबजीव सावज हैं तिनको काल जो है शिकारी सो मारिमारि खायहै १२ ॥

लोभैजन्मगँवाइया पापैखायापुन्नि ॥
आधीसों आधीकहै तापरमेराखुन्नि १३

लोभै करतकरत जन्म गवाँइदियो अर्थात् द्रव्य बिढ़वैके वास्ते नाना पाप किये सो जो प्राकृतन के पाप पुण्य रहैं ताहू को कहे पूर्वजन्म के खायगये सो ऐसी जो लोभवारी बुद्धि है सो आधी कहे मानसीव्यथा है सोवाऐसीबुद्धिको या सम तातभाव ते धी कहैहैं कि मैं बड़ी बुद्धिकैकै जटिल्यायो मैं हरायदयो इत्यादिक कहिकै अपनी बुद्धि को बुद्धि कहैहैं और की बुद्धि नहीं कहैहैं तौनेपर मेरी खूनहै कहे रिसहै १३ ॥

आधीसाखीशिरखडै जोनिरुवारीजाय ॥
क्यापण्डितक्यापोथिया रातिदिवसमिलिगाय १४

आधी साखी कबीरकी चारिवेदका जीव सो आगे आधी साखी राम नाम को कहिआये हैं सो आधी जो है रामनाम सो सबते शिरे खड़ै है कहै जहिरै है जो यह साखी निरुवारी जाय अर्थात् रामनाम निरुवारा जाइ औ जो खण्डै पाठहोइतौ अर्द्धचन्द्रविन्दु ते खडै कहे पण्डितौहोइ औ या रामनाम रूपी साखी निरुवारी जाइ अर्थात् साहब मुख अर्थ याको समुझै तो पण्डितलोग दिनराति पोथी देखि २मरै हैं रामनाम ते काम ह्वैजाय है तामें प्रमाण ॥ नामलियातिनसबलिया सकलशास्त्रको भेद। बिनानामनरकैगये पढ़िपढ़िचारोवेद १४ ॥

पाँचतत्वकापूतरा युक्तिरचीमैंकीय ॥
मैंतोहिंपूछौंपण्डिता शब्दबड़ाकीजीय १५

यह पाँचतत्व को पूतरा जो शरीरतामें तें यह युक्ति रचेहै कि मैं कीय कहे मही मालिक हौं सो हे पण्डित मैं तोको पूछौहौं कि वह शब्द जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनाम जाके बिनाजाने संसारी भयो है तौन बड़ाहै कि तें बड़ाहै जो आपनेको मालिक मानैहै १५ ॥

पाँचतत्वकोपूतरा मानुषधरियानाउँ ॥
एककलाकेबिछुरते बिकलभयासबठाउँ १६

पाँचतत्व को पूतरा जोतें है ताको मनुष्य यह नाम धर्‌यो है कलाजे ह साहब के नामरूप लीला धामादिक सब परीरही एक कला जो राम नाम तौने के बिछुरतमें सबठाउँमें बिकलह्वैगये कहे जौनै शरीर धारण करैहैं तहैं बिकल होइहैं मनुष्यनाममें यह व्यंग्य है कि है पाँचतत्व पूतरा को मनुष्यनाम धराइलियो है इहाँ को यह न होइ साहब के इहाँ को हैं द्विभुज सो आपनोरूप भूलिकै संसार में परयो है १६ ॥

रंगहितेरँगऊपजै सबरँगदेखैंएक ॥
कौनरंगहैजीवको ताकरकरहुबिबेक १७

रंगहि जो है संसार रँग तौने रंगजब जीवको लग्योहै तबही नानारंग उपज्योहै कहे नानारूपके भयेहैं ताको तौ हम एक देखैं कहे मायाही के रँगदेखैहैं यह जीवात्मा शुद्ध जो है ताको कौनरँगहै यह तौबिबेककरो १७॥

जाग्रतरूपीजीवहै शब्दसोहागाशेष ॥
जरदबुन्दजलकूकुही कहकबीरकोइदेख १८

यह जीव जो है सो जागृतरूपहै कहे सदा चैतन्य है जैसे साहब को रँग श्वेत चैतन्य आनन्द घनीभूत है ऐसे याहू अणुचैतन्य है शब्द जो रामनाम सोहागारूप साहबको मिलावनवारो ताकोशेषहै अन्तको वर्ण मकार है सो जरद बुन्द जलको जरदवीर्य स्त्री को जल पुरुष को ये दुनहुन के वीर्य ते शरीररूप कूकुही जीवके लगिगई जैसे खेतन में कूकुही लगिजाइहै सो कबीरजी कहैहैं कि याको भीतर बिचार करिदेखो यहि जीवको स्वरूप जानिपरै कूकुही छड़ाइबो जैसे कूकुहीते अन्नना ह्वैजाइहै ऐसे याहू शरीररूप कूकुही जीवके लगीहै सो एकरी शुद्धताको नाम कैदेइहै १८ ॥

पांचतत्वलैयातनकीन्हा सोतनलैकहकीन्ह ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्महिकेवशजीवकहतहैकर्महिकोजियदीन्ह १९

या पांच तत्वनको लैकै या शरीर कियो सो या शरीर लैकै तैं कौन कामकीन्ह्यो कर्मके वश ह्वैकै मेरो अंश जो जीव सो कर्महिको देतभयो मेरो ह्वैकै अर्थात् कर्मके वशह्वैकै संसारी भोजीव सो कौन बड़ो काम कियो जीव कहवावन लग्यो १९॥

पांचतत्वकेभीतरे गुप्तबस्तुअस्थान॥
बिरलममकोइपाइहै गुरुकशब्दप्रमान २०

पांच तत्वको जो या शरीर ताके भीतर जो गुप्तबस्तु जीवात्माहै ताको स्थानहै ताको मर्म कोई बिरला पावैहै कि यह नित्य कौनकोहै यामें गुरु जे साहबहैं तिनका शब्द जो रामनाम सोई प्रमाणहै तौनेको अर्थविचार करै तौ या जानिलेहि कि जीव साहबैको है २०॥

अशुनतखतअड़िआसनैपिण्डझरोखेनूर॥
ताकेदिलमेंहौंबसौं सैनालियेहजूर २१

अशुनकहे शून्य नहीं वा निराकारके परे अशून्य जो साहबको तख्त आड़िकै तामें आसन कैकै अर्थात् ध्यान में रत पिण्ड जोहै शरीर ताके झरोखा जेहैं नेत्र तिनते साहबको जो कोई नूरदेखै कि सब साहिबैको प्रकाश पूर्णहै सर्वत्र ताके दिलमें आपने परिकरते सहित बसौहौं २१॥

हृदयाभीतरआरसी मुखतौदेखिनजाय॥
मुखतोतबहींदेखिहौंजबदिलकीद्विबिधाजाय २२

हृदय भीतर जो आरसी है कहे तौन आपरन परिकर जेहैं जानकी लक्ष्मणादि तिनके मुख आपने रूपको जो सोनही देखोजायहै वो बिचार करिकै देखोजाइहै सो मुख जो तुम्हारो स्वरूप सो तबहीं देखिहौं जब मैं मोर या द्विबिधा जातरहो कि चित अचितरूप सब साहिबैकेदेखोगे२२॥

ऊंचेगांवपहाड़पर औमोटेकीबांह॥
ऐसोठाकुरसेइये उबरियजाकीछांह २३

जो गांव ऊँचेपर होइहै तहां बूड़ा की भयनहीं होइहै जाके जबरेकी बांह होइहै ताकी डरनहीं होयहै ऐसे ऊँचोगांव जो साकेत तहां साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेहैं तिनको जहां बांह ऐसे जे साहबहैं तिनकी छांहमेंटिकौ जाते उबरौ उहां मायाके बूड़ाको डरनहीं है कहा मन मायादिकन में परेहौ इनमें कालते न बचोगे २३ ॥

ज्यहिमारगगेपण्डिता तेहीगईबहीर ॥
ऊंचीघाटीरामकी त्यहिचढ़िरहेकबीर २४

जौने मार्गमें रामनाम जानेबिना पण्डितगये वही मार्गहै सूखौ जात भये अर्थात् पापी पुण्यी सब वही यमपुरी ह्वैगये कबीर जी कहैहैं कि ऊँची घाटी जो रामनाम तामें आरूढ़ह्वैकै मायाके बूड़ाते बचिगयों सबको तमाशा देखौहौं २४ ॥

हेकबीरतैंउतरिरहु सबलपरोहनसाथ ॥
सबलघटेऔपगथकै जीवबिरानेहाथ २५

गुरुवालोग मोको समझायो हे कबीर तैं ऊँची घाटी जो रामनाम तौनेते उतरि रहु न तेरे सम्बलकहे कलेवाहै न परोहनकहे वाहन साथ है सो सम्बल औ पगु जब थाकैगो तब जीवतो बिरानेहाथ ह्वैजाइगो जो हमारे पास आवोगे तो ज्ञान योगादिक सम्बल बतावैगे अहंब्रह्मास्मि बाहन देयँगे तामें आरूढ़ह्वैकै संसार समुद्रपार ह्वैजाइयो २५ ॥

घरकबीरकाशिखरपरजहांसिलिहिलीगैल ॥
पाँयनटिकैंपिपीलिका खलकनलादैबैल २६

श्रीकबीरजी कहैहैं कि हे गुरुवालोगौ हमारा घर शिखर जो रामनाम है तामें तहां गैल चिकनीहै चींटी जो बुद्धिहै ताहीके पांय नहीं टिकैहैं अर्थात् वा मन बचनके परेहै रामनाम और स्वरूप है ताते बिल्कुलन हरिहै गैल उहां नानामत नानाशास्त्र रूप लाद लादे बैलजे हैं गुरुवा ते नहीं जाइसकैहैं अर्थात् सूक्ष्मबुद्धिन नहीं जाइसकै हैं तौ तुम जे नाना मतनको लाद लादेहौ सो कैसे जाइसकौहौ जहां मैं टिकौहौं तहां भरि तुमहूं पहुंचि सकते नहीं हौ कहां कलेवा देउगे कहां वाहन देउगे २६ ॥

बिनदेखेवहदेशकी बातैकहैसोकूर ॥
आपैखारीखातहै बेचतफिरतकपूर २७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जौने शिखरमें हमचढ़ेहैं तौने देशको बिनासत-गुरु द्वारा देखे जे बात वहांकी कहैहैं ते क्रूरहैं अर्थात् तुमहमको उतरन शिखरते बिनाजाने कहौहौ सोतुमहीं क्रूरहौ कैसेहौ आपतोखारीजे नाना मत तिनको ग्रहण कीन्हेहौ स्वच्छ उज्वल कपूर जोहै ज्ञान ताको बेंचत फिरौहौ अर्थात् द्रव्य लैकै चेला बनावत फिरौ हौ भाव यहहै किनामको भेद नहीं जानौ हमारे इहां कैसे पहुंचौगे २७ ॥

शब्दशब्दसबकोइकहै वातोशब्दबिदेह ॥
जिह्वापरआवैनहीं निरखिपरखिकरलेह २८

शब्द शब्द सबकोई कहैहैं परन्तु वाशब्द जो रामनामहै सो बिदेहहै बिना शरीर काहै जिह्वा में नहीं आवैहै मन वचनके परेहै ताको ज्ञान दृष्टिते निरखिकै पारिख करिलेहु २८ ॥

परबतऊपरहरबसै घोड़ाचढ़िबसगांउ ॥
बिनफुलभौंरारसचखै कहुबिरवाकोनांउ २९

पर्वत आगे जीव ब्रह्मको कहि आयेहैं सो पर्वत जो ब्रह्म ताके परहर जोमाया सो जीतेहै अर्थात् सबलित ह्वैकै संसार की उत्पति करैहै सो घोड़ा जोहै मन तौनेमें गांउ जो संसारहै सोबसैहै अर्थात् मनै में सब संसारहै बिनफल कहे या संसार तरुको फूल विषयहै सो मिथ्याहै कछु बस्तु नहीं है तौनेको रस भौंरारूप जीव चाखैहै सोवा बिरवाको नांउँतो कहु सोबताउ हमको नाम संसार मिथ्याहै जौन याको सांचनामहै ताको कहु ताको तैं नहीं जानैहै २९ ॥

चन्दनबासनेवारहू तुझकारणबनकाटिया ॥
जिवतजीवजनिमारहू मुयेतेसबैनिपातिया ३०

हेचन्दन जीव अपनी वासना तू निवारणकरु काहेते कि मैं तेरेकारण जौने गुरुवनकी नाना बाणी नाना मतनमें तुमलाग्यो तिनकी बाणीरूप बनमें काटिडारयो अर्थात् खण्डन करिडारयो जाते तुमको ज्ञानहोय सो बासनामें परिकै जीवत जीव तुम अपनो न मारो जो वामें लागिजाहुगे तौ तुम्हारो जीवत्व जातरहै मरिजाहुगे वाही धोखामें लगिकै आपको ब्रह्म मानन लगोगे तब निपातिया कहे सब साहब के ज्ञान को निपात ह्वै जाहिगो ३० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्दनसर्पलपेटिया चन्दनकाहकराय ॥
रोमरोमबिषभीनिया अमृतकहांसमाय ३१

चन्दन जो जीवहै सो कहाकरै सर्प्प जे गुरुवालोग हैं ते लपटि रहेहैं सो उनकी बाणी को जोहै बिष सो रोमरोम बिषे भेदिगयोहैं हमारोउपदेश जो अमृत सो कहांसमाय ३१ ॥

ज्योंमुदादिसमसानसिलसबयकरूपसमाहिं ॥
कहकबीरसाउजगतिहि तबकीदेखिभुकाहिं ३२

जैसे मुदादि समसानसिल होइहै सो जोकोई देखैहै ताको मुरैलैरूप देखिपरैहै सो कबीरजी कहैहैं कि गुरुवा लोगन की बाणी रूप सिलमें तबकी कहे सृष्टि के आदिमें आपनी गति देखैहैं कि तबहू हम ब्रह्मरहे हैं या मानिकै भोकैहैं कि हमही ब्रह्महैं अथवा ज्यों मुदादिकहे मुदको आदि ब्रह्म ज्यों कहे कैसे जैसे मशानते सहित शिल पाथरके भूतहा चौरा जेई वा चौरामें बैठैहैं सो अभुआइहैं कहैहैं हमही ब्रह्महैं सोई कहैहैं मैं फलानो भूतहौं आपनो रूप भूलिजाइहैं ऐसे जे ई गुरु वा लोगनकी बाणी उपदेश में परैहैं ताहीके एकरूप ब्रह्म समाहिहै यही कहैहैं कि मही ब्रह्म औ सब ब्रह्महीहै एकरूप दूसरो पदार्थ नही है सो श्रीकबीरजीकहैहैं साउज जो जीवहै ताकी तबकी गति गुरुवा लोग कहैहैं तब तुम ब्रह्महो रहेहो आपने अज्ञानते तुम जीवत्वको धारण कीन्हेहो अबहू जो ज्ञानकरो तो ब्रह्म ही ह्वैजाहु या मानिकै उपदेश जीव भोकै है कि हम ही ब्रह्महैं अर्थात् जैसे वा पण्डा भूतनही ह्वैजाइहै जीवही रहैहै ऐसै न ब्रह्म रहेहैं न ब्रह्म होइगो भोकैपदके शक्तितें दूसरो दृष्टान्त ध्वनित होइहै जैसे कूकुर कांचके मन्दिरमें आपनो प्रतिबिम्ब देखि भोकै है ऐसे आपने भ्रमते गुरुवनकी वाणीरूप ऐनामें आपनो रूप ब्रह्मही देखैहैं भोकैहैं या नही जानैहैं कि हम साहबकेहैं या गुरुवा लोगनकी बाणीमें ब्रह्मदेखोपरै है सो हमारे मनहीं को अनुभवहै ३२ ॥

गहीटेकछोड़ैनहीं चोंचजीभजरिजाय ॥
मीठोकाहअँगारहै ताहिचकोरचबाय ३३

ब्रह्म वा दिनकी टेक कैसीहै जैसे चकोर को ओठ जीभ जरै है परन्तु अँगारैको चाबैहै ३३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झिलमिलझगराझूलते बाकीछुटीनकाहु ॥
गोरखअँटकेकालपुर कौनकहावैशाहु ३४

झिलमिल झगराकहे दृगमुद्रा करिकै बंकनालते खिरकीके राहलैजाइ कै वह ज्योति जो झिलमिलाइ है तामें आत्माको मिलाइ देइहै पुनि षट्चक्रते झिलिकै गैव गुफामें जो ब्रह्मज्योतिहै तामें मिलिकै औ झगरा करिकै कहे कामक्रोधादिकनको दूरिकरिकै पुनि संसारमें झूलिपरैहै अर्थात् जब समाधि उतरिआई तब फेरि वही झगरामें झूलिपरे सो कर्म की बाकी काहूकी नही छूटैहै सबकर्म भोग करैहै जो गोरखै कालपुरमें अटके अर्थात् उनही को जो काल खाइलियो तो और दूसरो कौनशाहु कहावैहै कौन कालते बच्योहै जो बहुत जियो योगी तो कल्पान्तमें कोई नहीं रहिजायहै जो कोई रहिगयो जलबह्यो तो जलमें मिलिकै रहिगये अग्निबढ़ीअग्निमेंमिलिकै रहिजाइहै तो महाप्रलयमेंनही रहिजाइहै३४॥

गोरखरसियायोगके मुयेनजारीदेह ॥
मासुगलीमाटीमिली कोरोमांजीदेह ३५

जोकहो गोरख तो बनेहैं तो प्रलयादिकनमें वोऊ न रहैंगे योगकेरसिया जेहैं गोरख ते ऐसो योग हजारनबर्षकियो कि मरयो ते देहको न जारयो मांस गलिकै माटीमें मिलिगयो तब कोरोकहे मई माजी कहे शुद्धचर्म देह गोरखकी कढ़िआई आखिर पर वहौ प्रलयादिकनमें न रहैंगो सो उनकी देह मुयोकहे ऐसो योगकियो कि जाते अज्ञान न रहिगयो संसार छूटिगयो संसारते मरिगये कै उनकी सूक्ष्मादिक देहौ मरयो पर न जरी जब देह न जरी तब पुनि२संसारमें आवतेभये कल्पांतरनमें सो कल्पान्तरमें गोरख आदि दैकै योगी सब आवैहैं सो आगे कहैहैं ३५ ॥

बनतेभगिबिहड़ेपरा करहाअपनीबानि ॥
वेदनकरहकासोंकहै कोकरहाकोजानि ३६

बन जोहै संसार तौनेते भागिकै बिहड़ जोहै अटपट गैल ब्रह्म तामें परयोजाइ सो यह जीवको सदा स्वभावईहै कि प्रलयादिकनमें ब्रह्ममें गयो औ पुनि करहाकहे करहिआयो संसारमें जन्मलियो शरीर धारण कियो सो यहजीव संसार योगादिक साधनकियो सो यह वेदनकहे पीड़ा जीव कासोंकहै औ शरीर काहेते करहिआयो यह कोजानै जैसे आत्मादिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृक्ष करहिं आवैहैं कहे फूलिआवैहैं फेरि फरैहैं आपनी ऋतु पाइकै तैसे जब महापूलयादिक भये तब लीनह्वैगयो जब उत्पत्ति प्रकरणभयो तब फेरि करहि आये कहे शरीर धारणकिये पुनि नानाकर्म करिकै नानाफल पावनलगे ३६ ॥

बहुतदिवससोहीठिया शुन्यसमाधिलगाय ॥
करहापरिगागाड़में दूरिपरेपछिताय ३७

जीव बहुतदिन समाधि लगाइकै शून्यमें हीठिया कहे भ्रमत भये कि हमारो जन्म मरणछूटैहै सो हजारन कल्प समाधि लगायेरहे जब समाधि उतरी तब पुनि जैसेके तैसे ह्वैगये अथवा हजारन वर्ष ब्रह्ममें लीन रहे जब सृष्टिभई तब पुनि संसाररूपी गाड़में परिकै पछितानलगे पछिताइबो कहाहै कि वही वासना लगीरही ताते पुनि नानासाधन करनलगे कि हमारो जन्म मरण छूटै ३७ ॥

कबिराभ्रमनभाजिया बहुबिधिधरियाभेष ॥
साईंकेपरिचयबिना अन्तररहिगोरेष ३८

कबीरजेहैं कायाके बीर यहजीव सो बहुतभांतिके भेष धरतभयो योगी ह्वैकै योगकरतभयो ज्ञानी ह्वैकै ज्ञान करतभयो भक्त ह्वैकै भक्ति करत भयो कर्मकाण्डीह्वैकै कर्म करतभयो पै जिनको यहजीव अंशहै ऐसे जेहैं साईं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनके बिनाजाने याको भ्रम न भाजत भयो जो मुक्तहू ह्वैगयो आपनेको ब्रह्महू मानतभयो तो मूलाज्ञानरेख याके रही गई काहेते कि जाकोहै ताको तो जान्योनहीं योगकियो ज्ञानकियो भक्ति कियो औ नानाकर्म कियो ताते पुनि संसारहीमें परयो कौन रक्षा करै रक्षकको तो बिसराइ दियो ३८ ॥

बिनडाँड़ेजगडाँड़िया सोरठपरियाडाँड़ ॥
बाटनहारालोभिया गुरतेमीठीखाँड़ ३९

यह संसारमें जीव बिना काहूके डाँड़े डाँड़ियाकहे सब डारिजाते भये अर्थात् आपनेही कर्मते साहबको ज्ञानभूलिगये औ सोरठ या देशबोली है सोरठै फलदेउ दशउ फलदेउ सो ये सोरठै उपाय बतायो चारि वेद छःवेदांग छःशास्त्र ई सोरठते ब्रह्मा साहबको उपदेश इनको कियो पै ये सब आपने आपने कर्ममें लगिगये उनको वा सोरठ कहे सोरठै जौन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मा उपाय बतायो तौन उनको डाँड़परयो डाँड़ वह कहावैहै जौन वन कटिकै मैदान ह्वैजायहै सो उनको चारि वेद छः वेदांग छः शास्त्र ई जे सोरठहैं ते डांड़परयोकहे वामें साहबकोखोज न पायो साहबको बिचार उनको दिखाई न परयो अनतही अनतही लगावैहै वेदशास्त्रका अर्थकरि काहेते न पायो कि बांटनहारो जो ब्रह्माहै सो लोभी रह्योहै कहें रजोगुणीहै सो बहुत चोराइकै कह्यो परोक्ष कह्यो जाते कोई न पावै औ जे जानतभये ब्रह्माको उपदेश ते गुरु जे ब्रह्माहैं तिनहू ते अधिक ह्वैगये अर्थात् गुरु गुरही रह्यो चेला खाँड़ह्वैगयो गुरतेमीठी खाँड़ होयहै काहे ते ब्रह्माते अधिक ह्वैगये कि ब्रह्मा गुणको धारणकियेहैं औ वै सगुण निर्गुणके परेकी बात जानैहैं ३९ ॥

मलयागिरिकेबासमें वृक्षरहासबगोइ ॥
कहिबेकोचन्दनभयामलयागिरिनाहोइ ४०

मलयागिरिचन्दनके वृक्षके बासमें सब वृक्ष गोररहे कहे मलयागिरिके बास सबमें ह्वैगई कछु मलयागिरि नहीं ह्वैगये ऐसे तिनको साहबको ज्ञानभयो तिनमें साहबको गुण आइगये शुद्धह्वैगये कछु साहब न ह्वैगये जो कहो ब्रह्मा तो चारिवेद छःवेदांग छःशास्त्र जे सोरठहैं तिनते सबको उपदेशकियो ताको गुप्तार्थ औरलोग काहे न समझ्यो एक साहबको जनैये काहेते जान्यो तौनेको अर्थ दूसरी साखीमें दिखावैहैं ४० ॥

मलयागिरिकेबासमें बेधाढाकपलास ॥
बेनाकबहुंनबेधिया युगयुगरहियापास ४१

मलयागिरिके बासमें ढाख पलाश सबबेधिगये औ बेना जो है बाँस सो युगयुग मलयागिरिके पास रहैहै पै वामें बास न बेधत भई अर्थात् और वृक्षनभीतर सारहयो तेहिते बास बेधिगई औ बाँसकेभीतर सार न रह्यो ताते बास न बेधतभई अर्थात् और जे अज्ञानिउरहेतिनके अन्तष्करण में शून्य नहीं रह्यो सो जो कोई उपदेशकियो तौ साँचमानिकै समझिलिये औ जिनके भीतर वह शून्य ब्रह्मबोध घुसोरह्यो ते और ऊपरत खण्डनकरनलगे औरऔर अर्थ वेद शास्त्रके बनाइलियो ते न बांतिगये कहे उनको साहबको रंग न लग्यो चारोयुगमें वेद शास्त्र सब पढ़तई रहे ४१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलतेचलतेपगुथका नगररहानौकोस ॥
बीचहिमेंडेरापरेउ कहौकौनकोदोस ४२

चलतचलत थकिगयो वहनगर नवकोश रह्यो सो नवकोशमें एकौकोश न चलिसक्यो तौ दशौ कोश जहाँ साहबको मुकामहै तहाँ कैसे जायसकै दशौकोश दशमुकामों रेखता में लिखिआयेहैं सो बीचे में याको डेरापरयो बीचहीमें रहिगयो ताते जन्म मरण होनलग्यो तो कौन को दोषहै साहबके पासभरतो पहुँचिबोई न कियो औ मुसल्माननके मत में बहत्तरहजार परदाकेऊपर जब गयो तब नवपरदा बाकीरहिजायहैं तौनै कोशहै दशयें में साहबहैं ४२ ॥

झालिपरेदिनआँथये अन्तरपरिगैसाँझ ॥
बहुतरसिककेलागते बेश्यारहिगेबाँझ ४३

यहिसाखी में अर्थ कोऊ यहकहैहैं प्रपञ्च करतेकरते औ बिषय रस लेते लेते बुढ़ाई आई औ वेद शास्त्र पुराण नानाबाणी पढ़तेपढ़ते औ कर्म्मउपासना तपस्या योग बैराग्य करते करते थके आखिर गुरुपद पारख की प्राप्ति नहीं भई एकदिन मौत आइपहुँची तब आँखिन पर झालि परी कहे अँधियारीपरी औ दिनकहिये ज्ञान सो गाफिली में डूबि गया औ हमारो अर्थ यहहै झालिपरे कहे जब दिन अँथवा कहे आयुर्दाय घटी तब गिरिपरे तब बीमारहुये इन्द्री शिथिलभई तब अन्तष्करण में अँधियार ह्वैगयो कहे कुछ न सूझिपरनलग्यो तब जैसे बहुत रसिक के सङ्ग ते बेश्या बाँझरहिजाइहै तैसे गुरुवालोगनकी नानाप्रकारकी बाणी को उपदेश सुनिसुनिकै शून्यह्वैगये ज्ञान भक्ति उत्पत्तिभई औ साहब न प्राप्तभये ४३ ॥

मनतोकहैकबजाइये चित्तकहैकबजाउँ ॥
छामासेकेहीठते आधकोशपरगाउँ ४४

मनसङ्कल्प बिकल्प करिकै आत्माको स्वरूपखोजैहै कि आत्माकैसो है औ चित्त स्मरण करैहै कि आत्माको स्वरूप कैसो है सो छामास जो हैं ऋग्यजुसाम तौने में हीठत कहे स्वरूप को खोजतई गये पै वह गाउँ आत्मा को स्वरूप मकार आधकोश में कहे अर्द्ध नाम रकार ताके निकटही रह्यो पै खोजे न पायो ४४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरहीतजिकैभयेउदासी बनखँडताकोजाय ॥
चोलीथाकीमारया बरइनिचुनिचुनिखाय ४५

घर छोड़िकै जगतते उदास भये बन पहारमें बैठेजाय साहबको तो न जान्यो शरीरऔटिकै तपस्या करनलगे सो या मार ते कहे कन्दर्प ते चोली थकिगई कहे बीर्य की हानिह्वैगई जब वृद्ध ह्वैगये तब जैसे चोली बरइनि की थकिगई तब बरइनि सरेसरे पान निकारिडारैहै नये नयेपान चुनिचुनिकै खायहै तैसे माया जो है बरइनि कहे ज्ञानभक्ति को बरायदेनवारी कहे दूरिकरनवारी सो पुरानपुरान जे शरीरहैं तिनको निकारिडार्‌यो नयेनयेसुन्दर शरीरदैकै स्वर्गादिकनको सुखदियो राजाबनायो धनवानबनायोभोगकराइकराइकै उनको मायामृत्युरूप खायलियो ज्ञानी भक्ति योगी तपस्वी कोईनहीं बचैहैं जे साहबको जानैहैं तेबचैहैं ४५ ॥

रामनामजिनचीन्हिया झीनेपिंजरतासु ॥
नयननआवैनींदरी अंगनजामैमासु ४६

जिन रामनामको चीन्ह्यो है तिनके पिञ्जर झीनेह्वैगयेहैं पाँचोशरीर उनके छूटिगये यह स्थूलशरीर कैसोबन्योहै जैसे सूमा जरिजाय ऐंठनि बनीरहै जब यहौशरीर छूटैगो तब हंसशरीरमें स्थित ह्वैकै साहब के पास जाइगो सो इनको शररूपी पिञ्जरा झीनह्वैगयोहैं औ नयनन में नींद नहीं आवैहै कहे सोवायदेनवारी जो मायाहै सो उनको स्पर्शनहीं करैहै औ अङ्ग में पुनि मांस नहीं जामै अर्थात् पुनि वै शरीर धारण नहीं करैहैं ४६ ॥

जेजनभीजेरामरस बिकसितकबहुंनरुक्ख ॥
अनुभवभावनदरशै तेनरसुक्खनदुक्ख ४७

जे जन श्रीरामचन्द्र के रसमें भीजेरहैहैं ते सदा बिकसित रहैहैं उन को हृदय कमल सदा प्रफुल्लितई रहैहै रूख कबहूं नहीं रहैहै औ रूख जो है अनुभव भाव यह धोखाब्रह्म सो उनको कबहूं नहीं दर्शैहै औ ते नर को न संसार को सुख होइहै न दुख होइहै वै रामरसही में मग्न रहै हैं ४७ ॥

काटेआँबनमौरिया फाटेजुरैनकान ॥
गोरखपदपरसेबिना कहोकौनकीसान ४८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबीरजी गोरख सों कहैहैं अथवा गो जो है मनादिक इन्द्री तिनको राखै कहे रक्षाकरै अर्थात् चैतन्यकरै सो गोरख कहावै जीव सो हे जीव जो आत्मा काटिडारै तो फेरि नहीं मौरैहै कहे नहीं फूलै है औ कान जो फाटिजाय तौ फेरि नहीं जुरैहै यहि जीवपर जे हैं साहब तिनकेपद बिना परसेई काहू की सान नहीं राखैहैं कहो कौन को सान रह्यो है अर्थात् योगी ज्ञानी ब्रह्मादिक सबको काल खायलियो है काहू की सान नहीं रही है ४८ ॥

पारसरूपीजीवहै लोहरूपसंसार ॥
पारसतेपारसभया परखभयाटकसार ४९

कबीरजी कहैहैं कि यहजीव पारसहै काहेते कि पारस जे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रहैं तिनको अंग है तौ यहू उन्हीं को रूपहै वै विभुहैं जीव अणु है सो जीव लोहरूपी संसार में मिलिकै लोहह्वैगयो सो जब पारस जेहैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र तिनको स्पर्श करै तब पारसहोइ औ अपने स्वस्वरूप को जानै कि मैं साहब को अंशहौं तब जानिये कि जौनटकसार मत हैं साँचाहै तौन याको परखभयो कहे जान्यो काहेते यहैमत टकसार है साँचाहै यहीके जाने जन्म मरण नहीं होइहै जो कहो पारसके परसे तो सोन होइहै तौ यह पारस के परसे सोन होइहै कहे औरजीव अशुद्ध ह्वैरहेहैं ते शुद्ध होइजायहैं वाके स्पर्श ते औ श्रीरामचन्द्रके चरणारविन्द पारसके परसे पारसई होइहै काहेते कि वह पारस सच्चाहै औ यहपारस कच्चाहै पाषाणहै जड़है ४९ ॥

प्रेमपाटकाचोलना पहिरिकबीरानाच ॥
पानिपदीन्ह्योतासुको तनमनबोलैसाँच ५०

कबीरजी कहैहैं कि हेजीव तैं साहबके प्रेमपाट का चोलना पहिरिकै नाचैहै संसारमें नहीं नाचता पानिपकहे शोभा साहब ताहीकोदेयहैं जो तनमन ते साहबसों सांचबोलै कहे साँचप्रेमकरैहै ५० ॥

दर्पणकेरीजोगुफा सोनहापैठोधाय ॥
देखतप्रतिमाआपनी भूंकिभूंकिमरिजाय ५१

दर्पणके गुफा कहे शीशमहलमें कूकुरपैठ्यो सो अपनीप्रतिमा देखिकै भूंकिभूंकिकै मरिजाय है अर्थात् यह जीवात्मा यह नहीं समुझै है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेराही अनुभव यह ब्रह्महै दर्पण की गुफा जो है ब्रह्मज्ञान तामें पैठिकै अहंब्रह्म भूंकिभूंकि मरै है जाको अंग यहजीव है ताको न जान्यो जैसे कूकुर नहीं जानै है कि मेराही प्रतिबिम्ब है ऐसेही यहभी नहीं जानै है कि मेराही अनुभव है ५१ ॥

ज्योंदर्पणप्रतिबिम्बदेखिये आपदुहूंघटहोई ॥
ऐसेवातत्त्वयाहीतत्त्वसोंहैयाहीपुनिसोई ५२

वह ब्रह्म को जो अनुभवकरैहै सो तेराही अनुभवहै वा तत्त्व औ तेरो तत्त्व एकहै अर्थात् दूनो चितईतत्त्वहैं भेद इतनाहो है वह विभुचितहै ते अणुचितहै परन्तु तेराहीअनुभवहै जैसे दर्पणमें अपनोई प्रतिबिम्बदेखि परैहै वह तेरई अनुभव है मैं वही ब्रह्महौं यही धोखाहै ५२ ॥

जोबनसायरमुज्झतेरसियालालकराय ॥
अबकबीरपाजीपरेपन्थीआवहिँजाय ५३

जौने बन कहे बाणीकरिकै सायर जो है समुद्र अगाध ब्रह्म तौने में मुज्झतेकहे मोहको तुम प्राप्तभयो औ वहीकेरसियाकहें रसिकहैकै लाल कहे दुलार करतभये अपनेको ब्रह्म मानतभये बाणी को प्रकाशरूप जो ब्रह्म है सो अगाहहै याकोपार कोई नहीं जायहै सो कबीरजी कहैहैं कि अब हमसबको जौन नहीं समुझिपरत रह्यो अगाधरह्यो शुद्धजीवन को सो ब्रह्म पाजीपरयोहै वहीप्रकाशितहैकै रामरसिकहैकै साहबकेलोक को चलोजायहै औ पुनि जीवनके उपदेश करिबेको चलोआवै है ब्रह्मप्रकाश हैकै साहब के लोक को चलेजायँ हैं तामेंप्रमाण ॥ सिद्धाब्रह्मसुखेम ग्ना दैत्याश्चहरिणाहताः । तज्ज्योतिर्भेदनेशक्ता रसिकाहरिवेदिनः॥ औ साहबके लोकमें जे हैं तिनकी सर्व्वत्र गतिहै तामेंप्रमाण॥ समृत्युन्तरति सर्वेषुलोकेषुकामचारोभवति इतिश्रुतेः ५३ ॥

दोहरातौनवतनभया पदहिनचीन्हैकोइ ॥
जिनयहशब्दबिबेकियाक्षत्रधनीहैसोइ ५४

सेव्य सेवकभाव मान्यो साहबको जान्यो तब दोहरा तौ तन भया कहे हंसशरीर पायो पराभक्ति पायो तौनेपद कहे साहब के लोक में प्रवेश करैहै सो वो लोकको नहीं चीन्हैहै जो कहो ब्रह्मरूपहैकै कैसेसेव्य सेवकभाव साहब ते कियो तुम बनायकै कहौहौ तौ श्रीकबीरजी कहै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं जिन यहशब्द बिबेकिया कहे जिनसाहब यह बिबेककरि शब्दबतायो सोई क्षत्रधनीहै अर्थात् साहिबै मैंको बतायोहै मैं बनायकै नहीं कहौं हौं तामेंप्रमाण ॥ ज्ञानोवेगिजाहुसंसारा । अमीशब्दकरि जीवउबारा ॥ पुरुषहुक्मजबजबमैंपावा । तबतबजीवकोआनिचेतावा ॥ गीतामेंभी लिखाहै ॥ ब्रह्मभूतप्रसन्नात्मा नशोचतिनकाङ्क्षति । समस्सर्वेषुभूतेषु मद्भक्तिं लभतेपरां ॥ भक्त्यामामभिजानाति यावान्यश्चास्मितत्त्वतः । ततोमांतत्त्वतोज्ञात्वा विशतेतदनन्तरम् ५४ ॥

कबिराजातपुकारियाचढ़िचन्दनकीडार ॥
बाटलगायेनालगैफिरिकालेतहमार ५५

श्रीकबीरजी कहैहैं कि जब मैं चन्दनकी डारमें चढ़िकै कहे वह ब्रह्मके परे ह्वैकै साहबकेलोकको जानलग्यों तब मैं पुकारयो औ अबहूं पुकारौं हौं सो पीछे लिखिआयेहैं कि बिरवा चन्दनते बासिजाइ है कछूचन्दन नहीं ह्वैजाइहै ऐसे ब्रह्मज्ञानकिये जीव शुद्धह्वैजाइहै कछु ब्रह्म न होइहै सो ब्रह्म जो है चन्दन तौने की डार चढ़िकै अर्थात् ब्रह्मज्ञानकरिकै शुद्धह्वैकै वाको जानिकै पुकारयो हौं कि साहबकेहोउ ब्रह्महीं में जनि अटकेरहो इतनाही नहीं है साहब ब्रह्मके आगे है सो सबको मैंबाट लगावोंहौं कि तुम साहबके होउ तुम हमारेलगाये उसराह में जोनहीं लगते हो तो हमारो कहा जायहै अथवा हम जौनचाल बतावैंहैं तौनैचाल नहीं चलतेहो औ हमारो फिर क्या लेतेहो कि हम कबीरपंथीहैं सो लम्बी टोपी दीन्हे औ बिनाछिद्रको चन्दन दिये औ बहुत साखी शब्दी कण्ठकरलिये हमारे फिर का न पावोगे मतको न पावोगे यमके धक्काते न बचोगे तामेंप्रमाण॥ हमारागायागावैगा । अजगैबीधक्कापावैगा ॥ मेराबूझाबूझैगा । सोतीनलोक मेंसूझैगा १ कबीरकी साखी शब्दी पढ़िकै और बितण्डाबाद अनर्थ करन लगे औ परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको वेदशास्त्रको झूंठकरनलगे आपनेजीवै को सत्य करनलगे ते यमको धक्का पावैचाहैं औ जे कबीर की साखी बूझिकै औ परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको अंशहै जीव श्रीरामचन्द्र याके रक्षक हैं ऐसो जे बूझ्यो ते तीनलोकमें सूझबूझ करैंगे काहेते उनके रक्षक परम-पुरुष श्रीरामचन्द्र तो बनेईहैं सर्वत्र रक्षा करिलेइहैं ५५ ॥

सबतेसांचाहैभला जोसांचादिलहोइ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साँचबिनासुखनाहिंना कोटिकरैजोकोइ ५६

जो आपना सांचादिलहोइ तो सबतेसांचे जेपरमपुरुष श्रीरामचन्द्र औ उनहीं को अंश जीवहै औ उन्हीं को मैं सांचो दासहौं यह मत सबते सांचहै सोई भलाहै सो यह सांचमत बिनासुख काहूको नहीं है कोटिन उपाय करै औ श्रीरामचन्द्र सत्यहैं औ जीव सत्यहै औ जीवको औ श्रीरामचन्द्रको भेद सत्यहै तामें प्रमाण ॥ सत्यंभिदःसत्यंभिदः ॥ इत्यादि औ कबीरजीकी साखिहूकोप्रमाण ॥ सत्यसत्यसमरथधनी सत्यकरोपरकाश । सत्यलोकपहुंचावहू छूटैभवकीआश ५६ ॥

सांचासौदाकीजिये अपनेमनमेंजानि ॥
सांचेहीरापाइये झूंठेमूरौहानि ५७

आपने मनमें पारिख कैलीजिये तब सांचा सौदा कीजिये कहे ऐसी खानि खुदाइये जाते सांचे हीरा पाइये वहीमें कच्चे हीरा निकसै हैं तिनको छाड़िदीजिये ऐसे वेद पुराण खानिहैं तिनमें साहबको मत निकासि लीजिये यह सांचो सौदा कीजिये और मतनको त्यागि दीजिये काहेते झूंठे मतमें लागे आपनो स्वरूप जोहै साहबको अन्तमूर ताकी हानि ह्वैजायहै अर्थात् भूलिजायहै ५७ ॥

सुकृतबचनमानैनहीं आपुनकरैबिचार ॥
कहैकबीरपुकारिकै सपन्योगोसंसार ५८

सुकृत साहब अथवा सुकृत सन्त अथवा सुकृत बचन जो मैं कहौहौं कि साहबको भजनकरो सो नहीं मानैहैं जो मनमें आवैहै सो बिचारकरैहैं सो कबीरजी पुकारिकै कहैहैं कि उनको स्वपन्योमें संसारगयो अर्थात् स्वपनेहूमें संसार नहीं गयो यह काकुहै ५८ ॥

लागीअग्निसमुद्रमें धुंआँप्रकटनहिंहोइ ॥
कीजानैजोजरिमुवाकीज्यहिलाईहोइ ५९

समुद्रमें आगिबड़वाग्नि लगीहै औ वाको धुंआँ नहीं प्रकट होइहै सो वाको सो जानैहै जो वामें जरिजाय कि जाको वह बड़वाग्नि लाई कहे लगाई होय सो जानै अर्थात् संसारमें मायाब्रह्मकी अग्नि लगिरहीहै ताको वहीजानै जाकोज्ञान भयोहोय या समझै कि मायाब्रह्मकी अग्निमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम जरेजायहैं अथवा सो जानै जाकी अग्निबनाईहै संसार रच्योहै ५८॥

लाईलावनहारकी जाकीलाईपरजरै ॥
बलिहारीलावनहारकी कुप्परबाचैघरजरै ६०

यह अग्नि किसकी लगाईहै ताके लाये ते सगुण निर्गुण जे दोनों परहैं ते जरेहैं औ घर जेहैं पांचो शरीर ते जरिजातहैं तामेंप्रमाण ॥ अबअनुभवअग्निलागी । घेरिघेरितनजारनलागी ॥ यहअनुभवहमकासोंकहियेबूझै कोउबैरागी । ज्यठरीलहुरीदोनोंजरिया जरीकामकीबारी ॥ अगमअगोचरसमुझिपरैनहिंभयोअचम्भौभारी । सम्पतिजरीसम्पदाउबरीब्रह्मअगिनि पसरी ॥ कहहैकबीरसुनोहोसन्तौबड़ीसोकुशलपरी ६० ॥

बुन्दजोपरासमुद्रमें सोजानैसबकोइ ॥
समुदसमानाबुन्दमें बूझैबिरलालोइ ६१

यह ब्रह्म ईश्वर माया आदि दैकै जो संसार सागरहै तामें बुन्द जो जीवहै सो परयो या सबै जानैहैं कि जीव संसारी ह्वैगयोहै वेदशास्त्रमें सर्वत्रलिखेहै अरु यह सिगरो संसार समुद्र बुन्दरूपजीवमें समायजायहै अर्थात् ईश्वर मायाब्रह्ममय जो संसार ताको जीवही अनुभवकरिलियो है सो जब जीव या भांतिते अनुभव त्यागै कि बिषय इन्द्रीमें इन्द्री मन में मन चित्तमें चित्त प्राणमें प्राण जीवात्मामें लीन कैदियो तब संसार सागर बुन्दरूप जीवमें समायजायहै अर्थात् संसार मिटिजायहै जीव साहबको जानिजायहै ६१ ॥

जहरजिमीदैरोपिया अमिसींचैसौबार ॥
कबिराखलकैनातजै जामेंजौनबिचार ६२

जिमीमें जहरको थलहा दैकै जो बीज बोवैहै सो तामें जो सैकड़ो बार अमृतौसींचै तो वहि बीजामें जहरको असर आयबोई करैगो तैसे यह खलक कहे संसारमें मायाकीजिमीहै बिषयको थलहाहै ताते केतिकौ कोई उपदेयकरै परन्तु मायाको असर कबिरा जे जीवहैं तिनके आपही आयहै जोई बिचार आवैहै सोई करैहैं सो संसार नहीं छोड़ैं ६२ ॥

दौकीड़ाहीलाकरी वाभीकरैपुकार ॥
अबजोजाउँलोहारघर डाहैदूजीबार ६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दावानलकी डाहीकहे जरी जो लकरीहै सोई लाईभई वहै पुकारिकै कहैहै कि अब जो लोहारके घर जाउँ तो दूजीबार लोहार मोको डाहैकहे जारै सो दाघाग्नि जोहै ब्रह्माग्नि तौने त जो सम्पूर्ण कर्म जरिहुगे तौ कोयलारहिजायहै कहे वहैकैवल्यशरीर रहिजायहै सो कहैहै कि जो अब लोहार जे सतगुरुहैं तिनके इहां जाउँ तो कैवल्यौशरीर छूटै मुक्त ह्वैजाउँ अर्थात् जो साहबको न जान्यो औ कर्म सब जरिगये तो कैवल्य शरीर रहिगयो अर्थात् सबसंसारहीमें आवैहैं जोकैवल्यशरीर छूटै तो हंसशरीर ते मुक्त ह्वैजाय काहेते कर्मनके जरे कैवल्यशरीर नहीं छूटैहै ६३ ॥

बिरहकिओदीलाकरीसपचैऔगुँगुआय ॥
दुखतेतबहींबाचिहौ जबसगरोजरिजाय ६४

बिरहकी जरी लाकरीहै अर्थात् याको साहबको बिरह भयोहै सो वह बिरहते ओदीहै याहीते सपचैहै औ गुंगुआयहै नानादुःख पावैहै सो जब पांचौशरीर जरिजायँहैं हंसशरीर पाय साहबकेपास जायहै तब दुःख ते बचैहै जो कहो इहां तो सगरो शरीरको जरिजायबो कह्यो हंसशरीर को जरिबो काहे न कह्यो तो हंसशरीर याको न होय वा साहबके दिये मिलैहै त्यहिते याहीके पांचौ शरीर जब जरैहैं तब सतई जगह भूमिका ते नाकिकै आठई भूमिकामें जायहै तब चितमात्र रहिजायहै तब साहब हंसशरीर देइहैं तामें टिकिकै साहबके पासजायहै सो पाछेलिखि आयेहैं ६४ ॥

बिरहबाणज्यहिलागिया औषधलगतनताहि ॥
सुसुकिसुसुकिमरिमरिजियै उठैकराहिकराहि ६५

साहबको बिरहरूपीबाण जाकेलग्यो अर्थात् जिनको यह जानिपर्यो कि हमते साहबते बिछोह ह्वैगयोहै ते बिरहवारनको ज्ञान योगादिक औषध नहीं लगैहै बिरह बाणाग्निते तप्तजरैहै मरिमरि जियैहै या जो कह्यो सो बिरहाग्निते जरैहै स्थूलशरीरको जब अभिमान छूट्यो तब सूक्ष्मशरीरमें जियो जब सूक्ष्मशरीर छूट्यो तब कारणशरीरमें जियो जब कारणशरीर छूट्यो तब महाकारण शरीरमें जियो जब महाकारण शरीर छूट्यो तब कैवल्यशरीरमें जियो यही मरिमरि जीवोहै औ तहीं कराहि कराहि उठैहै कहे एकौ शरीर नहीं आछे लगैहैं ६५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांचाशब्दकबीरका हृदयादेखुबिचार ॥
चितदैसमझैमोहिंनहिं कहतभयलयुगचार ६६

साहब कहैहैं कि सांचाशब्द जो कबीरका रामनाम ताको हृदयमें बिचारिकै देखु तो तैं चित्तदैकै नहीं समझै है मोको चारो युग वेदशास्त्रमें कहतभयो औ कबीरजेहैं तेऊ चारो युगमें कहत आयेहैं सतयुगमें सत्यसुकृत नामते त्रेतामें मुनीन्द्रनामते द्वापरमें करुणामयनामते औ कलियुगमें कबीरनामते एक रामनामैको उपदेश कियो सो जो तैं वह राम नामको जानते तो तेरे समीप मोको आवन परतो हंसशरीर दै अपने पास लैआवतो ६६ ॥

जीतूसांचाबानियां साँचीहाटलगाउ ॥
अन्दरमेंझारूकोदैकैकूरादूरिबहाउ६७

हे जीव जो तैं अपने स्वरूपको चीन्है तो तैं सांचा बानियांहै सो सांची हाटलगाउ कहे सांचे जे साहब तिनको जानु औ उनके नामरूप लीला धाम सब सांचेहैं तिनकी हाट लगाउ कहे स्मरणकरु औ अन्दरमें झारू दैकै विषय बासना औ नानामत जे कूराहैं तिनको दूरि बहायदे तू सांचा है साहबको है असांचे न मानलागु ६७ ॥

कोठीतोहैंकाठकीढिगढिगदीन्हींआगि ॥
पण्डिततोझोलाभयेसाकठउबरेभागि६८

कोठी जे हैं चास्योशरीर तेतो काठकी हैं जरनवारी हैं ज्ञानाग्नि ढिग ढिग उनके लगीहै वेद शास्त्र पुराण साहबको बतावैहैं सो जे पण्डितरहे ते सारासारको बिचारकर साहब जे सार तिनको जान्यो ते उसअग्निमें परिकै झोलाह्वैगये कहे उनके सबशरीर जरिगये अर्थात् संसारते मुक्तह्वैगये औ साकठ जे हैं शाक्त ते भागिकै उबरे कहे जो वेद शास्त्र साहबको प्रतिपादनकरैहै ताके डांड़े नहीं गये खण्डन करनलगे उनसों भागिकै संसारमें परे मायामें लपटेहैं माये को स्मरण करनलगे ६८ ॥

सावनकेरामेहराबुन्दपराअसमान ॥
सबदुनियावैष्णवभईगुरूनलाग्योकान ६९

जैसे श्रावणकेमेहको आसमान बुन्दपरैहै तैसे सबदुनिया वैष्णवहोत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भई सब बीजमन्त्र लेतभये जैसे लोकमें को गुरु हजारनचेला एकैबार बैठायकै मन्त्र सोहरायदेयहैं याहीभांति श्रावणकै सो मेह सबको मन्त्र देइहैं चेला मन्त्रलेइहैं याहीरीति गुरुवालोग उपदेश करत भये कोटिन वैष्णव होतभये गुरु कबै कानलग्यो अर्थात् नहीं लग्यो अरु गुरु तो वाको कहैहैं जो अज्ञानको नाशकरै सो जो चेलाको अज्ञान न नाशभयो तौ गुरु चेला दोऊ नरकको जायहैं तामेंप्रमाण ॥ शिष्यधनहरैंशोकनहिंहर हों। तेगुरुघोरनरकमेंपरहीं ॥ सो जो वो चेलाको अज्ञान दूरि न कियो तो कौन गुरु हैं औ जौन गुरुते ज्ञानलै अज्ञान न नाशकियो तो वह कौन चेलाहै अर्थात् वह गुरु नहीं है कायर क्रूरहै औ वह चेलानहीं है टूट मसखराहै औ जो अज्ञानको नाशै सोई गुरुहै तामेंप्रमाण ॥ अज्ञानति-मिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितयेन तस्मैश्रीगुरवेनमः ॥ औ जो संसार दूरिनहीं करैहै सो गुरुनहीं है ॥ तामेंप्रमाण ॥ गुरुर्नस-स्यात् स्वजनोनसस्यात् पितानसस्याज्जननीनसास्यात् ॥ दैवन्नतत्स्या न्नपतिश्चसस्या न्नमोचयेद्यस्समुपेतमृत्युम् ॥ श्रीकबीरजीकी गुरुपारख अंग की साखी ॥ गुरू सीख देवैं नहीं चेलायहै न खूट। लोकवेदभावे नहीं गुरुशिष्य कायर टूट ६६॥

ढिगबूड़ाउसलानहींयहैअँदेशामोहिं ॥
सलिलमोहकीधारमेंक्यानिंदआईतोहिं ७०

साहब कहैहैं कि हे जीवो तुम सब संसार सागर के तीरहीमें बूड़िगये एकहूबार न उसले यहै मोको अंदेशाहै या संसार सागरके मोहरूपी स-लिल धारमें क्या तोको नींद आईहै भलाएकबारतो मूड़निकासि उसलि मोको पुकारतो तौमैं तोको पारही लगावतो सर्वत्र पूर्ण मैं बनोहौं तैंमेरे ढिगही बूड़ोजातो है अबहूं जो जान तो मैं पारही लगायदेहुँ ७०॥

साखीकहैंगहैंनहींचालचलीनहिंजाय ॥
सलिलमोहनदियाबहैपांयनहींठहराय ७१

कबीरजी कहैहैं कि साखीतो कहैहैं औ जो मैं साखी कहोहै ताको गहैं नहीं हैं वाको बिचारै नहीं हैं औ जोमैं चाल लिख्योहै सोऊ नहीं चली जाय संसाररूपी नदियामें मोहरूपी सलिल बहैहै तामें पांवैं नहीं ठह-राय जीव बिचारक्याकरै यासाहबसोंअर्जकै जीवको क्षमापनकरावैहै ७१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहतातोबहुतामिला गहतामिलानकोइ ॥
सोकहतावाजानदे जोनहिंगहताहोइ ७२

साहब कहैहैं याही भांति कहतातो बहुत मिल्यो गहता कोई नहीं मिलैहै सोजोकोईगहता नहोय ताकोतैंबहिजानदे तोकोकहापरीहै ७२॥

एकएकनिरवारियाजोनिरवारीजाय ॥
दुइदुइमुखकोबोलनाघनेतमाचाखाय ७३

तामें पुनि कबीर जी कहैहैं कि हे साहब याको जीवको दोषनहीं है एक २ जो निरवारतो तौ वेद शास्त्र ते याको निरवार है जातो अर्थात् जो एक मालिक आपही ठहराय देतो तौ जीव गहिलेतो दुइदुइ मुखको बोलना वेद शास्त्रको अर्थात् कहीं ब्रह्मको कहीं ईश्वरको कहीं जीव को कहीं कालको कहीं कर्मको कहीं मालिक बतायो सो या दुइ मुख के बोलेते जीवघने तमाचा खायहै तुमको नहीं जानिसकै ७३ ॥

जिह्वाकोदैबन्धनै बहुबोलनानिवारि ॥
सोपरषीसोंसंगकरुगुरुमुखशब्दबिचारि७४

सो कबीरजी कहैहैं किहेजीवो मैं साहबसोंबिनती करिलियोहै सोतुम यह राह चलो तुम्हरो उबार साहब करिलेइगो आपनी जिह्वा बंधनको असत बाक्य न बोलने पावे एक रामनामहीं कहो औ नाना मत जो कहौहौ सो कहिबो निवारि देउ औ जौन सब मतन ते पारिख करिकै साहब को ठहरायो होय ऐसे पारिखी को संग करु औगुरुमुख जोशब्द है ताको तू बिचार करु काहेते साहब या कह्योहै ॥ अबहू लेहुँ छुड़ाय कालसों जो घटसुरति सँभारै ॥ सो तैं सुरति सँभारि साहबमें लगायदे अनत न जानदे साहब तोको संसार सागर ते उबारिही लेइँगे ७४ ॥

जाकी जिह्वा बंदनहिं हृदयानाहींसाँच ॥
ताके संगनलागिया घालै बटियाकाँच ७५

जाकी जिह्वा बंद नहीं है जौने मतको चाहैहै तौनेन मतको प्रति पादन करैहै औ जिनके हृदयमें साहबके नाम रूपादिक नहीं हैं तिनके संगकबहूं न लागिये वे कच्चेहैं उनके संगलागेते संसारमें परौगे७५ ॥

पानीतो जिह्वैंढिगै क्षणक्षणबोलकुबोल ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनघालेभरमतफिरैकालदेतहिंडोल ७६

पानीरूप जो बानीहै सो याके जीभके ढिगैहै छिन छिनमें कुबोलई बोलबोलैहै असतबाणी बोलि २ बानीरूप पानीमें बूड़ियो अथवा ब्रह्म मायाकी आगीबुझावनवारो पानी याके जीभहीके ढिग है सो नहीं कहैहै छिनछिनकुबोलही बोलैहै सो मनके घालेकहे फेरिसंसारमेंभरमत फिरैहैं कालजोहै सो याकोहिंडोलरूप शरीरदियाहैसो झलतफिरैहैकबहूं मानुष होयहै कबहूं पशुपक्षी इत्यादिक शरीर धारण करैहै ७६ ॥

हिलगैभालशरीरमेंतीररहीहैटूटि ॥
चुम्बकबिननिकसैनहींकोटिपहनगयेफूटि ७७

जिन मतनमें श्रीरघुनाथजी नहीं मिलैहैं तेई मतन के बाण याके लगैहैं नाना कुमति रूपी गाँसी याकेअटकीहैं सोरामनाम चुम्बकबिना वे नहीं निकसैहैं ७७ ॥

आगेसीढ़ीसांकरीपाछेचकनाचूर ॥
परदातरकीसुन्दरीरहीधकादैदूर ७८

साहबके यहां की गैल बहुत सांकरीहै कोईकोई पावैहै औपाछेसंसार में गिरै तौ चकनाचूर ह्वैजाय परदातरकी सुन्दरी जो माया सो जो कोई साहबसों लगनलगावन लागैहै ताको धक्का देइहै औ जो कोई साहबके सन्मुखभयो वहराहचल्यो तेहिते दूरि रहैहै धुनि याहै कि जोवाके जायगी तौ गैल सांकरीहै दूसरे की समाई नहीं है पीसिजायगी यहडरैहै ७८ ॥

संसारीसमयबिचारियाक्यागिरहीक्यायोग ॥
अवसरमारेजातहैचेतुबिरानेलोग ७६

क्या गिरही कहे गृहस्थ औ क्या योगवारे कहे योगी ज्ञानीते श्रीरा म चन्द्र को छोड़ि छोड़ि और और साहब बिचारैहैं ते सब संसारी समय बिचारतेहैं परमारथ कोईनहीं बिचारैहैं अर्थात् संसारहीमेंरहैहैं अर्थात् आपने इष्ट देवतन के लोकगये अथवा ब्रह्म में लीन भये ज्योतिमें लीनभये पुनि संसारमें आयगये सो हे जीव तैं बिरानाहै साहब कोहै और काहूको नहीं है औरे मतनमें लागे तें न छूटैगो जौन जाको होयहै तौन ताहीके छुड़ाये छूटैहै सो या मानुष शरीर पायके अवसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारो जायहै चेतुतो तें परमपुरुष श्रीरामचन्द्र कोहै तिनहीं के छड़ाये संसार ते छूटैगो औ संसारी देवतनको कहा परीहै जो आपनेते छुड़ाय कै संसारते छुड़ावेंगे वेतौ और संसारहीमें डारैंगे ७६ ॥

संशयसबजगखंधियासंशयखँधैनकोय ॥
संशयखंधैसोजनाजोशब्दविवेकीहोय ८०

संशयजोहै मनको सङ्कल्पविकल्प सो सब जगको खँधाइ लियोहै कहे फँदाय लियोहै औ संशय जोहै मनको सङ्कल्प विकल्प ताको कोई नही खँधि सकैहै अर्थात् मनको सङ्कल्पविकल्पकाहूको नहीं छूटै है जो साहबके शब्द रामनामको अर्थ बिचारत रहैहै सोई संशय को खँधि सकैहै अर्थात् ताहीके मनको सङ्कल्प विकल्पछूटैहै संशय छूटिबे की उपाय याहीमें है ८०

बोलनाहैबहुभांतिको नयनकछूनहिंसूझ ॥
कहैकबीरबिचारिकैघटघटबाणीबूझ ८१

सो बोलना तो बहुतप्रकार के हैं कहे बहुतप्रकारके शब्दहैं बहुतप्रकार के मतहैं तिन मतनमें ज्ञान नयनते सारपदार्थ जो जनन मरणछड़ावे सो कछू न सूझतभयो सो कबीरजी कहैहैं कि तें बिचारिकै तौ देखु येजे बाणी ते नाना मत घटघटते निकसैहैंते मनके सङ्कल्पविकल्पतेहैं सोतौने ते सङ्कल्प बिकल्प मनको कैसे छूटैगो येतो मनबचनमेंहै वह घटघटकी बाणी तो झझकी कहाँ ते निकसी है वह बाणीको मूल औ मनबचनके परे ऐसो जो रामनाम ताको बिचारकरि जानैगो तबहीं छूटैगो यहसब बाणीको मूल रेफहै सो नाभिस्थान में है तहाँ ते बाणी उठैहै सो जो मूलहै सो तो साहबको बतावैहै रामनामही प्रथम प्रकटकरैहैं औ मूलाधार चक्रमें मूल जो रामनामहै मनबचनकेपरे त्यहिते जो अनुसारभयो बाणीको ताहीको आभास पराबाणी प्रकटभई रेफ ताहीते अकार जब जोरयो तब रकाररूप हृदयमें पश्यन्ती प्रकट होइहै औ फेरि जब एक अकार और आयो तब कण्ठमें मध्यमाप्रकट होइहै औ पुनि जब बैखरी में एकअकार और प्रकटभयो जब ओठलग्यो तब व्यञ्जन मकारभई तब वहै मनबचनके परे रामनाम सो आपनेरूप को आभास बैखरीमें प्रकट करै है सोई प्रथम कबीरलिख्यो कि॥रामनामलैउचरीबाणी ॥ सोपथम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याको प्रतिलोम क्रमते जपकरत चारिउबाणी को स्वरूप जानै औफेरि अनुलोमक्रम ते रामनामको उच्चारकरै घण्टानादवत् या भाँति ते जो जपकरै तौ मनबचनके परे जो रामनाम ताको आभास जो रामनामहै सो प्रथम याहीकोलैकै बाणीउचरी है फेरि प्रणवादिक मन्त्र भयेहैं यही घटघटबाणी को मूल तें बूझ औ मनबचन ते परे जे साहब हैं तिनको पायजाय सो या भाँतिते बाणीकोमूल जो तें घटघटमें बिचारै तो येसब बाणी ऊपरते नाना मत नाना सिद्धान्त कहैहैं याको मूल सिद्धान्त तौ साहिबैको बतावैहै त्यहिते चारोवेद छःशास्त्र तात्पर्य्य करिकै श्रीरामचन्द्रही को बतावैहैं सो मेरे सर्व्व सिद्धान्त ग्रन्थ में प्रसिद्ध है ८१ ॥

मूलगहेतेकामहै तूमतिभर्मभुलाय ॥
मनसापरमनलहरिहै बहिकतहूंमतिजाय ८२

मन जो है सोई समुद्रहै मनसाकहे मनोरथ ताकी लहरिमेंबहिकै तें मति जा अर्थात् मनको सङ्कल्प विकल्प छोड़िदे नाना बाणी नाना मत में तें न भूलिजाय मूल जो रामनाम ताहीको ग्रहण करु यहीके गहे ते तेरो उबारहोइगो संसार छूटैगो ८२ ॥

भँवरविलम्बेबागमें बहुफुलवनकीआश ॥
जीवविलम्बेविषयमें अन्तहुचलैनिराश ८३

जैसे भँवर बागमें बहुतफूलनकी आशकरिकै विलँबैहै तैसे जीवसंसार में बहुत विषयकी आश कै परयो सो ऐसोफूल न भ्रमरपायो कि एकैफूल सूंघेते सन्तोषह्वैजाय औ न ऐसेविषय जीवहीपायो कि जामें सन्तुष्टह्वैजाय अर्थात् विषयसुख जीव कियो परन्तु अन्तमें निराशहीह्वैजाय है सो प्रकटही है वह सुख नहीं रहिजाय है परन्तु मूढ़जीव नहीं छोड़ै है ८३ ॥

भँवरजालबगुजालहै बूड़ेजीवअनेक ॥
कहकबीरतेबाचिहैं जिनकेहृदयबिबेक ८४

भ्रमरजाल जो है संसारसागरके विषयको भोता ते कैसेहैं कि बकुला जे जीव हैं तिनके बोरिबे को जालहै तामें बहुतजीव बूड़िगये सो कबीरजी कहैहैं कि जिनकेहृदयमें विवेकहै असारबाणीको छोड़िकै सारजो रामनामरूपी जहाज ताको विवेककरि गहिलियो है तेई संसारसागर के पार जाइहैं ८४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीनिलोकटींड़ीभई उड़ियामनकेसाथ ॥
हरिजनहरिजानेबिना परेकालकेहाथ ८५

टींड़ीके जब पखनाजामा तब जहँजाइहैं तहँ मरिहीजायहै सोतीनि लोकके जीवन के मनरूपी पखनाजामे सो जहाँ जायहैं तहाँ मरिहीजाय हैं सो हैं तो ये हरिकेजन हरिके अंश पै अपनोस्वामी औ रक्षक हरि जे हैं परमपुरुष श्रीरामचन्द्र सबके क्लेश हरनेवाले तिनके बिनाजाने कालके हाथमें परे औ मनके साथ उड़हैं सो मरतमें जहँ मनजायहै तौनैरूपहै जायहै तामेंप्रमाण ॥ अन्तेयामतिःसागतिः ॥ औ कबीरहू को प्रमाण ॥ जाकीसुरतिलागिहैजहँयाँ । कहैकबीरसोपहुँचैतहँवाँ ८५ ॥

नानारंगतरंगहै मनमकरन्दअसूझ ॥
कहैकबीरपुकारिकै अकिलकलालैबूझ ८६

सङ्कल्प विकल्परूप नानारङ्ग की हैं तरंग जामें ऐसो जो मनतामें काहे तेतरङ्ग उठैहै कि मकरन्द जो विषयरस ताको पानकरिकै मतवालो ह्वैगयो है सो जो मतवालो होयहै सो औरको और करैचाहै सो कबीरजीपुकारि कै कहैहैं कि अकिल जो बुद्धि तामें निश्चयकरिकै कला जो है रेफ अर्द्ध मात्रा ताको लैकै बूझ अर्थात् वही अर्द्धमात्रा में स्थित की विधि पावे लिखिआये हैं अथवा नानारङ्ग की जामें तरङ्ग उठतीहैं ऐसा जो मकरन्द पुष्परस कहावैहै सो महुवाके फूल का रस मदिरा समुद्र मन सो असूझ कहे अपार है वारपार नहीं सूझिपरैहै सो कहाँ ते मनरूपीमद भर्योहै सो अपनीअकिलते कहे बुद्धिते वह कलाल कहे कलार को तो बूझ ८६ ॥

बाजीगरकाबन्दरा ऐसाजिउमनसाथ ॥
नानानाचनचायकै राखैअपनेहाथ ८७
येमनचंचलचोरई ईमनशुद्धठगार ॥
मनकरिसुरमुनिजहड़िया मनकेलक्षदुवार ८८
विरहभुवंगमतनडसा मन्त्रनमानैकोइ ॥
रामबियोगीनाजियै जियैसोबाउरहोइ ८९

येदूनोंसाखिनकोअर्थस्पष्टईहै८७।८८बिरहभुवङ्गम कहे जिनको साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की अप्राप्तिहै तिन जीवनको अज्ञान भुवङ्गमडस्योहै ताते ज्ञानभक्ति वैराग्य योग ये मन्त्र नहीं मानैहैं काहेते कि जिनमें साहबको ज्ञानमही है तें भक्ति वैराग्य ते बिमुखहै सो कबीर जी कहै हैं कि रामकेबियोगी जे जीवहैं ते जिये नहीं हैं बिषय में लागेहैं काल उनको खायलेइहै औ जे योग करिकै वैराग्य करिकै भक्ति करिके जिये हैं विषयछाड़िकै संसार को छोड़े हैं ते बाउर ह्वैजाय हैं कहे बहुतदिन जीवोकिये ब्रह्महू में लीनभये तौ पुनि संसारमें तो आवहीकरैंगे काहेते कि अपनेस्वामीको तो चीन्हवही न किये अर्थात् बैकल ह्वैगयेहैं जो बैकलाय है सो औरको और करैहै यथार्थबात नहीं करैहै ८६॥

रामबियोगीबिकलतन जनिदुखवोइनकोइ॥
छूवतहीमरिजायँगे तालाबेलीहोइ ६०

श्रीकबीरजी गुरुवालोगन ते कहै हैं जे साहबके बियोगीजीव ह्वैरहे हैं तिनको तुम काहे दुखावतेहो अर्थात् नानामतन में नाना उपासना में काहे भटकावतेहो जरेमें लोनमाँ जतेहो इनके भीतर आपही ते ताला बेली परिरही हैं नानामत खोजैहैं ये छुवतही मरिजायँगे अर्थात् धोखा ब्रह्म उपदेशदेते में गहिलेइँगे सो अबैतौ भला बद्धै भरिहैं नित्य बद्ध नहीं हैं जो कहूं साधुते भेंटह्वैजाय तो उबारहू ह्वैजाय जब धोखाब्रह्ममें लागैगो तब वाको न छाड़ैगो साहब को मत खण्डनकरैंगो सो तुम ऐसे मरेनको काहे मारौहौ ६०॥

बिरहभुवंगमपैठिकै कीनकरेजेघाव॥
साधुनअंगनमोरिहै जबभावैतबखाव ६१

बिरहरूपी भुवङ्गम कहे साहब की अप्राप्तरूपी जो भुवङ्गम है सो पैठिकै करेजेमें घाव करतभयो अर्थात् साहब ते विमख संसारी ह्वैगये अथवा गुरुवालोग नानामत नानाउपासना बताय करेजमें घाव करिदिये हैं अर्थात् साहब ते बिमुखकरिदिये सो जेतो असाधुरहे तेतो मारेपरेऔ जे कौनेहूजन्ममें साहबको पुकारयो है उपासना कियोहै सो साधु कबहूं न अङ्ग मोरैंगो वाकी पूर्वबासना साहब में बढ़तही जायगी आखिर साहब को जानि साहबके पास पहुँचैंगो वे गुरुवनके लगाये धोखा में कबहूं न लागैंगो काल उनको जब चाहै तब खाय वे जब जन्म धरैंगे तब साहिबै की उपासना करैंगे उपासना सिद्धकरि साहबकेपास पहुँ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैंगे तामें प्रमाण ॥ भक्तिबीजपलटैनहीं जोयुगजाहिंअनन्त ॥ नीचऊंच घरअवतरैं होयसन्तकोसन्त इतिचौरासीअङ्गकीसाखीसमाप्तम् ६१ ॥

करककरेजेगड़िरही बचनवृक्षकीफाँस ॥
निकसायेनिकसैनहींरहीसोकाहूगाँस६२

सब जीवको साहबके अप्राप्त की करककहे पीड़ा गड़िरहीहै कहे गुरुवन के बैन वृक्षकी फाँस को लगोड़ छोलिकै काठके बाण बनावैहै ताकी फाँस अथवा वृक्षते सरइउ आयगई ताकी फाँस करेजे में गड़िरहीहै सो निकासे ते नहीं निकसैहै अर्थात् जिनको गुरुवालोग धोखाब्रह्ममें लगायदियेहैं ते पलटाये नहीं पलटैं हैं वाहीको गहैहैं काहू के तो बाण सहित गाँसी अटकीरहैहैं ते वही ब्रह्मको प्रतिपादन करैहैं सतमत को खण्डन करैहैं औ वेजे ऊपर ते बेषबनायेहैं भीतर धोखाब्रह्मही घुसो है तिनके भीतर करेजे में गाँसिही भर अटकी है तामेंप्रमाण ॥ अन्तश्शाक्तावहिश्शैवाः सभामध्येचवैष्णवाः । नानारूपधराःकोला विचरन्तिमहीतले ॥ अथवा गुरुवालोग जो औरऔर देवतन को मत सुनायो है सोई उनके अन्तष्करण में जाइकै अज्ञानरूपी वृक्ष जाम्योहै तौनेकी कुमतिरूपी फाँस याके करेजे में गड़िरहीहै सो वह करक कहे जनन मरनरोग नहीं जायहै अर्थात् वा फाँस काहूकी निकासी नहीं निकसै केतो उपदेश कोई करै सो कबीरजी कहैहैं कि काहू गुरुवनकी यह जीव के कहा गाँस कहे बैर रह्यो है जो ऐसी फाँस मारयोहै जो अबलौं निकासी नहीं निकसै ६२ ॥

कालासर्प्पशरीरमेंसबजगखाइसिझारि ॥
बिरलैजनबचिहैजोईरामहिंभजैबिचारि६३

कालरूप जो सर्प्प सो सबजीवन के शरीरमें बसैहै शरीर के साथै उत्पन्न भयोहै जेती अवस्थाजायहै तेती काल खातोजायहै जब आयुर्दाय पूजिगई तब सबकाल खायलियो याहीभाँति सब जगतको काल झारदै खायलेइहै जे सबमतको छोड़ि परमपुरुष श्रीरामचन्द्रको बिचारकै भजैहैं तेई बिरलैबचैहैं तामेंप्रमाण कबीरजीको पद ॥ सन्तोराम नामजोपावैं । तौबहुरिनभवजलआवैं ॥ जङ्गमतोसिद्धिहीकोधावैं । निशि बासरशिवध्यानलगावैं ॥ शिवशिवकरतगयेशिवद्वारा । शामरहेउनहूं ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यारा ॥ पण्डितचारिउवेदबखानैं। पढ़ैंगुनैंकछुभेदनआनैं ॥ सन्ध्यातर्पण नेमअचारा। रामरहेउनहूं तेन्यारा ॥ सिद्धएकजोदूधअधारा। काम क्रोध नहिंतजैंविकारा ॥ खोजतफिरैंराजाकोद्वारा।रामरहेउनहूं तेन्यारा ॥ वैरागीबहुवेषबनावैं। करमधरमकीयुगुतिलगावैं ॥ घण्टबजायकरैंझनकारा। रामरहेउनहूं तेन्यारा ॥ जनीजीवकबैंनहिंमारैं। पढ़ैंगुनैंनहिनामउचारैं॥ कायहिकोथापैंकरतारा। रामरहेउनहूं तेन्यारा ॥ योगीएकयोगचितधरहीं। उलटपवनसाधनाकरहीं ॥ योगयगुतिलैमनमेंधारा। रामरहेउनहूं तेन्यारा ॥ तपसीएकजोतनकोदहई। बस्तीत्यागिजँगलमेंरहई ॥ कन्दमूलफलकर अहारा। रामरहेउनहूं तेन्यारा ॥ मौनीएकजोमौनरहावैं।और गाउँमेंधनीलगावैं ॥ दूधपूतदैचललवारा। रामरहेउनहूं तेन्यारा ॥ यती एकबहुयुगुतिबनावैं। पेटकारणेजटाबढ़ावैं ॥ निशिबासरजोकरहङ्कारा। रामरहेउनहूं तेन्यारा ॥ फक्करलैजियजबेकराहीं। मुखतेसबतरखुदाकहाहीं ॥ लेकुतकाकहैंदम्ममदारा। रामरहेउनहूं तेन्यारा ॥ कहैंकबीर सुनोटकसारा। सारशब्दहमप्रकटपुकारा ॥ जोनहिंमानहिंकहाहमारा। रामरहेउनहूं तेन्यारा ६३ ॥

कालखड़ाशिरऊपरे जागुबिरानेमीत ॥
जाकोघरहैगैलमें क्यासोवैनिश्चीत ६४

जाकोघर गैलमें होइहै सो बेगारि धरिहीजायहै सो हे जीव तेरेऊपर कालखड़ाहै तैं कैसे निश्चितहैकै बेखबरि सोवैहै तुहूँ बेगारि धरीजायगो ताते चेतकरु तैंतो बिरानामीतहै अर्थात् तैंतो साहबको मीत है सो जागु बेगारि न धरिजायगो ६४ ॥

कायाकाठीकालघुन यतनयतनसोंखाय ॥
कायामध्येकालबस मर्म्मनकोऊपाय ६५

यह कायारूपी काठ में काल रूप घुन लग्योहै सो यतन यतन सों लवनिमेष परिमाण युगबर्ष कल्प करिकै पिण्डाण्डहूको ब्रह्मांडहूको खाय लेइहै सो जे शरीर धारण कियेहैं तिनके शरीर होमें काल बसैहै कहैहैं कि हम दशबर्ष के भये बीसबर्ष के भये यह नहीं जानैं हैं कि यह काल हमारी एती अवस्था खायलियो ६५॥

मनमायाकीकोठरीतनसंशयकाकोट ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिषहरमंत्रनमानैकालसर्पकीचोट ९६

मन मायाको कोठरी तन संशयका कोट है तामें परोजोहै जीव ताको काल सर्पकी चोट भई है कहे कालरूपी सर्प शरीरको डस्योहै सो बिषहर कहे बिषके हरनवारेजे ज्ञान योग बैराग्य मंत्रहैं तिनको नहीं मानैहैं अर्थात् मणिते बिष उतरि जायहै सो रामनाम जोहै बिषहरनवारी मणि ताको नहीं जानैहैं जाते कालरूपी सर्पको बिष उतरिजाय तामेंप्रमाण गोसाईंजीको॥मंत्रमहामणिबिषयव्यालके। मेटतकठिनकुअङ्कभालके९६॥

मनमायातोएकहैमायामनहिंसमाय ॥
तीनिलोकसंशयपरीकाहिकहौंबिलगाय ९७

यह माया मनमें समानीहै मन माया एकही ह्वैगई है सो यहमन माया साहबको भुलाय दियोहै ताते तीनलोक में कालकी संशय परीहै कालके छूटिबेकी सब उपाइ करैहैं परन्तु छूटै नहीं हैं मैं काको विलगायके कहौं कि यह मनमाया को छोड़िकै साहबको जानो कालतेछुड़ावनवारे कालहूकेकाल साहिबहूी हैं उनहीं को काल डेरायहै तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥ कहकबीरकालहुकरकाला । हैदारुणबड़कालकराला ॥ यह ज्ञानसागर की साखीहै ॥ औ साहिबहीको काल डेरायहै तामें प्रमाण॥ यद्भयाद्वातिवातोयं सूर्य्यस्तपतियद्भयात् । वर्षतीन्द्रोदहत्यग्निर्मृत्युर्द्धावति यद्भयात् ॥ इतिभागवते ९७ ॥

बारीदीन्ह्योखेतमेंबारीखेतहिखाय ॥
तीनिलोकसंशयपरीकाहिकहौंसमुझाय ९८

खेतकी रखवारीवरे बारीरूँधिजायहै सो जो बारिही खेतको खाय तौ काकरै तैसै ज्ञानयोग वैराग्य ब्रह्मभावना जीवकेरक्षाकरिबेको बतायो सो जो ब्रह्महीमें लीनहै संसारमें परे तौ जीव कहाकरै सो यह संशयरूप जो धोखाब्रह्म सो तीनोंलोक में है मैं काको काको समुझाऊं कि तुम धोखा में न जाउ संशय जो है धोखाब्रह्म सोई खेत चरेलेहै तामें प्रमाणकबीरजीकी परिचय की साखी ॥ शब्दविषयकहिब्रह्मऊ गुरुवन कीन्ह्योफेर ॥ मातुसुतैविषदेइजो काबग्रबालककेर ९८ ॥

मनसायरमनसालहरिबूडेबहैअनेक ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहकबीरतेइबाचिहैंजिनकेहृदयबिबेक ९९

मनसायर जोहै मनको समुद्र तौने में मनसा की लहरि जोहैं मनको अनुभव धोखाब्रह्म सो ये दुनहुनमें परिकै केतौ बूड़िगये केतौ बहिगये सो कबीरजी कहैहैं कि जिनके हृदयमें बिबेकहै साहब में लगैहैं तेई बाचैहैं ९९ ॥

सायरबुद्धिबनायकैबाइबिचक्षणचोर ॥
सारीदुनियाजहड़िगैकोईनलाग्योठोर १००

सायरजोहै संसार समुद्र तामें बुद्धिबनायकै कहे बुद्धिको निश्चय करिकै बायबिचक्षण जोहै बैहर ताहूते चंचल जो चोररूपी मन ताकोसङ्गकरिकै सबदुनिया जहड़िगई कहे बिगरिगई कोई न ठौरमें लागतभये अर्थात् कोई न साहब के पास पहुँचत भये मन बायुते चञ्चलहै तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥ पानीतेअतिपातलाधूवाँतेअतिझीन ॥ पवनहुँतेअतिऊतला तेहिमित्रकबीराकीन १०० ॥

मानुषहूवैकैनामुवामुवासोडाँगरढोर ॥
एकौजीवठौरनहिंलाग्योभयासोहाथीघोर १०१

जो कोई साहबकेपास पहुँचै सोई मानुषहै अर्थात् साहब द्विभुजहैं यहौ द्विभुजहूवैकै साहब के पास जाइहै औ कबहूं मरैनहीं है सो साहब के जाननवारे नहीं मरैं या पीछे लिखि आयेहैं औ जेसाहबको नहीं जानैं हैं तेई मरैहैं तेवे डाँगरढोरहैं ते मानुष नहीं हैं अर्थात् पशुहैं एकौठौर में नहीं लागैहैं कहे साहब के पास नहीं पहुँचे हैं हाथी घोर इत्यादिक नानायोनिमें भटकैहैं १०१ ॥

मानुषतेंबड़पापिया अक्षरगुरुहिनमानि ॥
बारबारबनकूकुही गर्भधरेचौखानि १०२

हेमानुष तैंतो श्रीरामचंद्रको अंशहै तेरो स्वरूप मानुषकोहै सो तैंबड़ो पापी ह्वैगयो काहेते किसाहब तोको बारबार गोहरायो कि तैं मेरोहै मेरे पास आउ सो उनके कहे अक्षर न मान्यो आज्ञाभंग कियो तौने पापते बारबार जो बनकी कुकुही कहे मुर्गी तिनके कैसो गर्भ चारिउ खानिके जीवनमें परिकै परिवारके पालन पोषणमें लगिकै पुनि पुनि जन्म धरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयो नानादुःख सहतभयो इहां मुर्गी याते कह्योहै कि बच्चा बहुत होयहैं १०२ ॥

मानुषबिचाराक्याकरैकहेनखुलेकपाट ॥
श्वानचौकबैठायकै पुनिपुनिअँपनचाट १०३

वेद शास्त्र पुराण इनके कहे जो कपाट नहीं खुलैहै अर्थात् ज्ञान नहीं होयहै तौ मानुष बिचारा कहा करै पूथम साहबको कह्यो नहीं मान्यो याते मानुष पशुवत् ह्वैगये अज्ञान घेरेहै सो जोकूकुर कुकुरियाको बिवाह करै चौकमें बैठाइये तौ वे पुनि पुनि अँपने चाटैहैं तैसे जीवनको पशुवत् ज्ञान ह्वैगयोहै फेरिफेरि वहीबिषयमेंलागैहैं साहबकीओर नहीं लागैं १०३॥

मानुषबिचाराकाकरै जाकेशून्यशरीर ॥
जोजिउझांकिनऊपजैकाहिपुकारकबीर १०४

या मानुष बिचारा क्या करै जाके शरीरमें शून्य जो धोखाबृह्म सो समाय रह्योहै सो धोखाबृह्मको झांकिउ कहे देखिउ चुक्यो कि इहां कछु बस्तु नहीं है औ साहबको ज्ञान न उपज्यो तौ कबीरजी कहैहैं कि मैंकाको पुकारौं वहतो बड़ो अज्ञानीहै बूड़िगयो जो प्रत्यक्ष देखो नहीं मानैहै कि यह शून्यहीहै यामें कछू न मिलैगो तौ मेरो कह्यो कैसे सुनैगो १०४ ॥

मानुषजन्महिं पायकै चूकेअबकीघात ॥
जायपरैभवचक्रमें सहैघनेरीलात १०५

चौरासीलाख योनिमें भटकत भटकत ऐसो मानुष शरीरपाइकै अबकी जो घातचूक्यो साहबको न जान्यो तौ संसार चक्रमें परैगो और यमकी घनेरी लातैं सहैगो १०५ ॥

ज्ञानरतनकोयतनकरु माटीकाश्रृङ्गार ॥
आयाकबिराफिरिगया झूठाहैहंकार १०६

साहबके ज्ञानरतनको यतनकरु जाते साहबको ज्ञानहोय यहजो माटी कहे शरीरको श्रृंगार करैहै सो अनित्यहै कबिरा कहे कायाके बीर जीव यह संसारमें आया और फिरिगया तब शरीर पराय जाताहै यहजो अहंकार करताहै कि हम शरीरहैं हम ब्राह्मणहैं क्षत्रीहैं बैश्यहैं शूद्रहैं सो सब झूठेहैं औ जो फीकाहै संसार या जो पाठहोय तौ यह अर्थहै कि साहबके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानरतनको जो यतन करैहै ताको या संसार फीकै लगैहै जो कोई दाख को खानवारोहै ताको महुवा फीकै लगैहै १०६ ॥

मानुषजन्मदुर्लभअहै होयनदूजीबार ॥
पक्काफलजोगिरिपराबहुरिनलागैडार १०७

यह मानुष जन्म तिहारो बड़ो दुर्लभहै जौन अबैहो तौन फिरि न होउगे पक्काफल गिरिपरैहै तौ पुनि वह डारमें नहीं लगैहै अबै साहबके जानिबेको समयहै सो साहबको जानिलेउ १०७ ॥

बाँहमरोरेजातहौं मोहिंसोवतलिह्योजगाय ॥
कहैकबीरपुकारिकै यहिपैंड़ेहैकैजाय १०८

मुसल्माननमें जेसाहबके भक्तहोयहैं तेजब भजन न करैहैं तब उनको पीर दस्ततेदस्त मिलावैहैं सो दस्तमिलायके साहबको बताइ देइहैं पास पहुंचाय देयहैं तिनसों जीव वे कहैहैं कि हमारी बांह मरोरे चले जाउहौ हम संसारमें सोवतरहे सो जगायलियो तब उनके पीर जेहैं कबीर ते कहैहैं कि यहिपैंड़ेहैकैजाउ या कहिकै साहबके जायबेको राह बताय देइहैं तब उनके परमगुरु जेहैं महम्मद आदि दैकै पैगम्बर तिनके इहां पहुंचाय देयहैं तब उनके चेला वह राह चलि महम्मदके पास पहुंचैहैं तब महम्मद साहबके पास पहुंचावैहैं औ हिंदुनमें जे श्रीरघुनाथजीको स्मरण करैहैं ते गुरुद्वारा हैकै सुमिरन करैहैं तेगुरू परमगुरुको मिलावैहैं परमगुरु आचार्यको मिलावैहैं ते साहबको मिलाय देइहैं जैसे रामानुज मतवारे आपने गुरूको प्राप्त भये औ गुरु सठकोपाचार्यको प्राप्तभये औ वे बिष्वक्सेनको प्राप्तकियो जीवको औ वे संकर्षणको प्राप्त कियो औ वे जानकीजीको प्राप्तकियो जानकीजी श्रीरामचन्द्रको प्राप्तकियो कबीरजी रामानंदके संप्रदायकेहैं तेहिते यह संप्रदाय संक्षेपते लिखिदियोहै ऐसे सब आचार्यलोग आपने आपने चेलनको साहबमें लगाय देइहैं १०८ ॥

बेराबांधिनसर्पकोभवसागरकेमाहिं ॥
छोड़ैतोबूड़तअहैगहैतोडसिहैवाहि १०९

पंचमुखी सर्प अहंकार ताके पांचमुखनमें पांचप्रकारकी वाणी निकरी हैंप्रथममुख विश्वहै ताते कर्मकांड निकरा औ दूसरामुख तैजस ताते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगकांड निकरा औ तीसरामुख प्राज्ञ ताते उपासनाकांड निकरा औ चौथामुख प्रत्यगात्मा ताते ज्ञानकांड निकरा औ पांचौंमुख निरञ्जन ताते अद्वैतबिज्ञान निकरा सो ऐसे पंचमुखी सर्पमें बेराको बांध्यो आपने मनसे कल्पिकै भवसागर अनुमान कियो ताको मान्यो तब ये नरदेहमें पंचमुखी सर्प अहंकार उठा तौने अहंकारको पहिरिकै वामें सब जीव बढ़े भवसागर पारके वास्ते सो अब जो बिचार करिकै छोड़ा चाहै तौ भवसागरकी भय लागैहै कि बूड़िजायँगे औ धरे रहैहैं तौ सर्प डसैहै सो पंचशरीरा हंकार सर्पको बेराबने पर सब वाहीमें आरूढ़हुआ बेरा समुद्र के पारनहीं जाय सकैहै तीरहीमें रहिगये सो न बेराको गहिसकै न बेराको छोड़िसकै संसार सागरमें बूड़ते उतरातेहैं १०९॥

करखोराखोवाभरामगजोहतदिनजाय॥
कबिराउतराचित्तसोंछांछदियोनहिंजाय ११०

गुरुमुख जेसाहबके जनहैं तेकौनो भांतिते जानेजायहैं किपूरहैं सर्बत्र साहबको देखैहैं हाथमें खोवाभरा कटोरालीन्हे राहजोहैहैं कि कोई आवै खाय सो सर्बत्र तो साहिबैको देखैहैं ताते जोई आयकै खायहै ताको साहिबै जानैहैं औ साहिबै मानिकै आदर करैहैं औ खोवा खवावै हैं औ कबहूं परुष बचन नहीं बोलैहैं तेजीव साहबकेप्यारेहैं औ जिनसों छाँछहू नहीं दैजाय लाठीलै मारैदौरैहैं तेकबीर कायाकेबीर जीव साहब के चित्तते उतरि जायहैं अर्थात् वेमुक्ति कबहूं नहीं पावैहैं संसारहीमें परैहैं अथवा यहसाखी गुरुमुखहै तातेयह अर्थहै साहब कहैहैं कि खोवाभरा कटोरा हाथमें लियेहौं रामनाम उपदेश करौहौं यह कैसोहै कि कहतमें सरलहै फिरि कायाको कलेश कौनो नहीं करनपरै औ सबको अधिकार है जैसे खोवा खातमें न कौनो अरसाहै न कौनो श्रमहै ऐसे रामनाम रूपी खोवा उपदेश रूप लियेहौं जोकोई याको खाय अर्थात् स्मरणकरै तौ मैं वाको संसारते छोड़ायदेउँ सो मेरेपास आवै तौनेको कायाके बीर कबीर जी नहीं ग्रहण करैहैं ते मेरे चित्तमें उतरि जायहैं उनको छाँछऊ मोसों दियोनहीं जाय अरु ज्ञानादिक कर्मादिकके फलतौ मैं देउहौं सो उनके उत्तम कर्महूं के फल मोसों नहीं दियो दैजायँ अर्थात् मेरो चित्त नहीं चाहैहै कि छांछजेहैं ज्ञानादिक ते उनके उत्तम कर्मादिकके फलदेउँ सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि अबै साहब समुझावैहैं सो मानिकै रामनाम कहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कै संसार छोड़िदे फेरिजब यमके सोंटा लगैंगे तब न कहो कहिजायगो तामेंप्रमाण ॥ बहुरिनबनिहैकहतकछु जबशिरलगिहैचोट ॥ अबहीं सब बकठौरहैदूबरटोराटोट ११० ॥

एककहौंतौहैनहीं दोयकहौंतोगारि ॥
हैजैसातैसारहै कहैकबीरबिचारि १११

साहब कहैहैं कि हेजीव जोमैं तोको एक कहौं कि ब्रह्मईहै सब तेंही है तौ वेदमें लिखैहै कि ॥ सत्यंज्ञानमनंतब्रह्मइतिश्रुतिः ॥ ब्रह्मतो ज्ञान मयहै सो जो ब्रह्महोतो तौ मायामें बद्धहैकै कैसे संसारीहो तो औ जो दोयकहौं कि तैं काहू ईश्वर को दासहै तौ गारी तोको परैहै काहेते कि तैंतो मेरोअंशहै सो हेकबीर कायाके बीर जीव बिचारिकै देखुतौ तैं सनातनको मेरो अंशहै दासहै और को नहीं है तामेंप्रमाण ॥ ममैवांशोजीव लोकेजीवभूतःसनातनः ॥ औ मैंमालिक एकईहौं दूजोनहीं है तामेंप्रमाण चौरासीअंगकीसाखी ॥ सोईमेराएकतू औरनदूजाकोइ ॥ जोसाहबदूजा कहै सोदूजाकुलकोहोइ १११ ॥

अमृतकेरीपूरिया बहुबिधिलीन्हेछोरि ॥
आपसरीखाजोमिलैताहिपिआऊंघोरि ११२

साहब कहैहैं कि अमृत पूरिया जो या रामनाम सो मैं बहुतभाँति ते छोरे लीन्हे हौं और जो दीन्ही पाठहोय तौ यह रामनाम की पुरिया छोरि दीन्ह्यो है कहे बहुतबिधि ते प्रकट करिदीन्ह्योहै कि यहीसंसार ते छोड़ावनवारो है दूसरो नहीं है सो आपसरीखा जो मोको मिलै ऐसी भावना करतहोय कि मैं साहब को अंश हौं दासहौं सखाहौं दूसरे को नहीं हौं ताको मैं रामनामकी पुरियाघोरिकै पिआइदेउँ कहे अर्थसमेत बतायदेउँ औ पुरिया रामनाम की दैकै संसाररोग मिटायदेउँ औ राम नाम औषध है तामेंप्रमाण ॥ रामनामयकऔषधी सतगुरुदियाबताय ॥ औषधखायेकुपथकरै ताकीवेदनजाय ११२ ॥

अमृतकेरीमोटरी शिरसेधरीउतारि ॥
जाहिकहौंमैंएकहौं मोहिंकहैद्वैचारि ११३

साहबकहैहैं कि अमृतकीमोटरी जो रामनाम ताको तौ शिरतेउतारि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरचो कहे वाको तौ कोई बिचारकरैहै नहीं जासों मैं कहौहौं कि एक मालिक महीं हौं सो मोंको दुइचारि बतावै हैं कहे छः बतावैहैं अर्थात् पञ्चागोपासना औ छठौं ब्रह्म सबको मालिक जो मैं हौं ताको भूलिगये कोई देवी को कोई सूर्य्यको कोई गणेशको कोई विष्णुको कोईमहादेव को मालिक कहैंहैं ११३ ॥

जाकोमुनिवरतपकरैं वेदपढ़ैंगुणगाइ ॥
सोईदेउसिखापना नहिंकोइपतिआइ ११४

जाकेहेतु मुनिवर तपस्या करैंहैं परन्तु नहीं पावैंहैं औ जाको चारों वेद गावैंहैं परन्तु गुणको पार नहीं पावैंहैं तौनेन साहबको श्रीकबीरजी कहैंहैं कि मैं सिखापनदैकै बताऊं हौं कि उनहीं के रामनाम को जपो तबहीं संसारते छूटौगे ताहूमें मोंको कोईनहीं पतिआयहै अथवा कोई जौन सिखापन दियो है कि मेरोनाम जपै तौ संसार ते उद्धार है जाय तौनैमैंसिखापनदै बताऊंहौं परन्तु पतिआयनहीं है सो महामूढ़है ११४॥

एकशब्दगुरुदेवका ताकोअनँतबिचार ॥
थाकेपण्डितमुनिजना वेदनपावैंपार ११५

एक शब्द जो है रामनाम ताको अनन्त बिचारहै अर्थात् ताहीते वेद शास्त्र पुराण नानामत सब निकसेहैं सो हमारे राममन्त्रार्थ में लिखोहै तौने रामनामको अर्थ करतकरत पण्डित मुनि वेद थकिगये पार न पाये अर्थात् अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में वेद शास्त्र सब याहीते निकसे हैं ये कैसे पारपावैं ११५ ॥

राउरकोपिछवारकै गावैंचारोसेन ॥
जीवपराबहुलूटमें नाककुलेननदेन ११६

राउर जो है साहबकोधाम ताको पिछवारेकैदियेहैं चारोंसेन जे चारों वेद तिनके श्रुतिनको नानाउपासनामें नानामतमें लगायकै तिनहीं मतन को उपासनाकरि जीव लूटमें परचो न कछु लेनहै न कछु देनहै अर्थात् कछूवस्तु हाथ नहीं लगैहै ११६ ॥

चौगोड़ाकेदेखते व्याधाभागाजाय ॥
अचरजहोयकदेखौसन्तौमुवाकालकोखाय ११७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौगोड़ा जो है जीवात्मा ताके चारिगोड़ जे हैं मन बुद्धि चित्त अहङ्कार इनहीं ते जीवचलैहै तौनेके देखतैकहे जब अपनेस्वरूपकोचीन्ह्यो कि मैं साहबको अंश हौं तब व्याधा जो है काल सो भागिजायहै निकट नहीं आवै हैं सो हे सन्तौ एक बड़ो अचरजहै जब जीवात्मा स्वरूपको जान्यो तबतौ काल भागतहीभरहै औ मुवा कहे मन बुद्धि चित्त अहङ्कार जे चारो गोड़ तिनको औ पाँचोंशरीर छोड्यो तब कालखायही जाय है कहे कालको भय नहीं रहिजायहै हंसशरीर में बैठिकै साहब के पास जायहै उहाँ कालकी भय नहीं है तामेंप्रमाण ॥ नयत्रशोकोनजरामृत्युर्नो त्तिर्नचोद्वेगऋतेकुतश्चित्। यश्चिन्तितोदःखपयानिदंविदां दुरन्तदुःखप्रभवानुदर्शनात्॥ इतिभागवते॥ यस्यब्रह्मचक्षत्रञ्च उभेभवतओदनः ॥ मृत्युर्यस्योपसेचनंकईत्थावेदयत्रसः॥ औ वा लोकमें कौनौशोक नहीं हैं तामें प्रमाणधर्म्मदासको पद नामलीलाग्रन्थको ॥ जहाँपुरुषसतिभाव तहाँ हसनकोवासा । नहीं यमनकोनामनहीं ह्वांतृष्णाआसा ॥ हर्षशोकवाघर नहीं नहीं लोभनहिंहानि । हंसापरमअनन्दमें धरैपुरुषकोध्यान ॥ नहिं देवीनहिंदेव नहीं ह्वांवेदउचारा । नहिंतीरथनहिंबर्त्त नहीं षटकर्म्मअचारा ॥ उतपति परलय ह्वांनहीं नहीं पुण्य नहिंपाप । हंसापरम अनन्द में सुमिरै सत गुरु आप ॥ नहिं सागर संसार नहीं ह्वां पवनहु पानी । नहिं धरती आकाश नहीं ह्वां और निशानी ॥ चांद सूर वा घरनहीं नहीं कर्म नहिं काल । मगन होय नामै गहै छूटि गयो जञ्जाल ॥ सुरतिसनेही होइ तासु यम निकट न आवै । परमतत्व पहिचानि सत्य साहब मन भावै ॥ अजर अमर बिनबैनहीं परम पुरुष परकास । केवल नामकबीर का गाय कहै धर्मदास ११७ ॥

तीनिलोकचोरीभई सबकासरबसलीन्ह ॥
बिनामूड़काचोरवा परानकाहूचीन्ह ११८

तीनिलोक में चोरी होत भई सबको सर्वस्व लै लियो सो ऐसो जो बिना मूड़को चोर निराकार ब्रह्मसो काहूको न चीन्हि पर्‌यो अथवाबिन मूड़को चोर छिन्नमस्ता देवी के उपासकते आपनेहूं को भावना करै हैं कि हमारो मूड़नहीं है काहेते कि ॥ देवोभूत्वादेवंयजेत ॥ यह लिखै है ते शाक्त काहूको नहीं चीन्हि परैहैं मायामें डारिकै सब जीव को भरमाइ देइहैं ११८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्कीचलतीदेखिकै नयननआयारोइ ॥
दोपटभीतरआयकै साबितगयानकोइ ११९

पुण्य औ पाप दूनों चक्कीहैं कहे चकरीहैं तामें द्वैत जोहै हम हमार सो किल्ली है तौनै चक्कीके दूनोंपटके भीतर आयकै साबित कोईनहीं गया है पीसिहीगयो है जो कोई साहबको सर्वत्रचितचितरूपते देखैहै सोई बाचै है तामेंप्रमाण ॥ पापपुण्यदुइचक्कीकहिये खंटाद्वैतलगायाहै। तेहिचक्कीतरसबैपीसिगे सुरनरमुनिनबचायाहै ॥ और प्रमाण सायर बीजकको ॥ चक्कीचलीरामकी यासबजगपीसाझारि ॥ कहकबीरतेऊबरे जे किल्लीदियोउखारि ११९ ॥

चारिचोरचोरीचले पगपानहींउतारि ॥
चारोदरथून्हीहनी पण्डितकहहुबिचारि १२०

चारिचोर जे हैं विश्व तैजस प्राज्ञ तुरीय ते चोरीको चले आपनीआपनी पनहीं जो है बिचार ताको उतारिकै कहे छोड़िकै औ चोरचलै है तब पनहीं उतारिकै चूपाजाय है तैसे येऊ चलैहैं सो विश्वाभिमान कर्म्मकाण्ड की थून्ही गाड़ी औ तैजस अभिमान उपासनाकाण्डकीथून्हीगाड़ी औ प्राज्ञाभिमान योग की थून्हीगाड़ी औ प्रत्यगात्मा तुरीयअभिमान ते ज्ञानकाण्डकी थून्हीगाड़ी सो ताहीको बिचार पण्डितजन करनेलगे अथवा चोर जो है मन बुद्धि चित्त अहङ्कार ते बिचाररूप पनहीं को उतारिकै चोरीको चले सो मन सङ्कल्प बिकल्प की थून्ही गाड़ी औ चित्त अनुसन्धान की थून्हीगाड़ी औ बुद्धि निश्चय की थून्ही गाड़ी औ अहङ्कार अहंब्रह्म की थून्हीगाड़ी सो ताही को सबपण्डित बिचार करनेलगे सो कहैहैं मनतो सङ्कल्प बिकल्प करनेलग्यो कि संसार कौनीभाँति त छूटै औ चित्त अनुसन्धान औरे औरे ईश्वरनपर करनेलग्यो औ बुद्धि औरे औरे ईश्वरनपर निश्चय करनलागी औ अहङ्कार अहंब्रह्म को बिचार करनेलग्यो कि मैं ब्रह्महौं सोहे पण्डितो बिचार तो करो ये चारो जे हैं ते चारो दरमें थून्ही गाड़िदिये बिचाररूप पनहीं उतारिकै कहे साहब को बिचार न करतभये साहबके बिचारको पनहीं काहेते कह्यो कि पनहीं पदत्राण कहावै हैं पाँयकी रक्षाकरैहैं सो बिचाररूप पनहीं उतारिडार्यो ताते जैसेकाँटा बेधिजायहै तैसे नानामत नानाप्रकारके भ्रमबेधिगये १२०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलिहारीवहदूधकी जामेंनिकसैघीव ॥
आधीसाखिकबीरकी चारिवेदकाजीव १२१

वह दूध जो है चारोवेद अथवा और जे भक्तिशास्त्रतिनकी बलिहारीहै जामें घीव रामनाम निकसैहै आधीसाखी जो है कबीर की रामनाम सो चारोवेदका जीवहै काहेते जीवहै कि चारोवेद याहीते निकसेहैं औ आधी साखी रामनामै को कह्योहै तामेंप्रमाण ॥ रामनामलैउचरीबाणी। सब की आदि रामनामही है १२१ ॥

बलिहारीतेहिपुरुषकी परचितपरखनहार ॥
साईदीह्योखाँड़को खारीबूझगवाँर १२२

कबीरजी कहैहैं कि परचित्त कहे सबतेपरे चिद्रूप जो साहबहै ताको परखनहार जो अणुचित्तपुरुषहै ताकीबलिहारीहै औ जे साईं कहेबयाना तो खाँड़को दीन्ह्यो कि वेदनमें श्रीरामचन्द्रको बूझै ताको छोड़ि खारी जो हैं नानामत तिनको वेदनमें बूझै हैं वोई मतन की उपासना करैहैं तेगवाँरहैं खारीजो बहुत खाय तौ पेटकाटिदेइहै सो नानामतनमें परिकै नानादुःख सहैहैं १२२ ॥

बिषकेबिरवाघरकिया रहासर्पलपटाय ॥
तातेजियरैडरभया जागतरैनिबिहाय १२३

बिषकोबिरवा जो है संसार तामें जीव घरकियो जामें कालरूपी सर्प लपटाय रह्योहै तेहिते जाके हृदयमें डरभयोहै जागिकै साहबको जान्यो ताको मोहरूपी निशा बिहाय जायहै औ जे नहीं जानैहैं तिनको काल डसिखाय है सो तिनको रामोपासना सिद्ध है गईहै ऐसे जे भक्तहैं तिनके शरीर नहीं छूटैहैं सो हनुमान कबीरजी प्रगटैहैं १२३ ॥

जोईघरहैसर्पका सोघरसाधुनहोइ ॥
सकलसंपदालैभई बिषभरलागीसोइ १२४

जो घर सर्पकोहै सोघर साधुको न होइ अर्थात् सर्पको घर बेमौटहै तामें बहुतछिद्र होइहैं सो या शरीरौ बहुत छिद्रकी बांबीहै तामें काल बसैहै सो बेमौटमें जो जीव जायहै तिनको सर्प खायलेइहै औ जे या शरीरमें कौनौ जीव बसैहै तिनकी काल खाइ लेइहै १२४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनभरकेबोयेकबौंघुंघुचीभरनाहोइ ॥
कहाहमरमानैनहींअन्तहुचलाबिगोइ १२५

शरीरमें जो घुँघुची भर जो बासना उठै तौ मनभरकी ह्वैजातीहै कहे मन सङ्कल्प बिकल्पकरिकै और बढ़ाइदेइहै मनमें वही भरिरहती है औ मनभर उपदेशकरै तौ घुँघुचीभर ज्याननहीं रहै या मन नीचैमेंजायहैऊंचे को नहीं जाय सो श्रीकबीरजीकहैहैं कि हम केतौ उपदेशकरैं परन्तुकोई नहीं मानैहैं तातेअन्तमें बिगोइकैकहे बिगरिकैमरिकैनरकमेंजायहैं १२५॥

अपातज्जोहरिभजोनखशिखतजोबिकार ॥
सबजिउतेनिरबैररहुसाधुमताहैसार १२६

श्रीकबीरजीकहैहैं कि जबभरतें यहिशरीरको आपनो मानैगो तब भर तेरो जनन मरन न छूटैगो ताते अहंशरीरः मैं शरीरहौं यह जो है आप ताको छोड़िदे तैंतोसाहबको पार्षद स्वरूपहै तामें टिकि तिनको भजन करु औ नख शिखमें तेरे काम क्रोधादिक बिकारई देखेपरे हैं तिनको छोड़दे औ चिद चिद विग्रहते सर्वत्र साहिबहीहैं यह भावनाकरिकै सब जीवनते निर्बैर रहु साधु मत को यही सारांश है सब साहब के शरीरहैं तामेंप्रमाण ॥ खवायुमग्निसलिलंमहीञ्च ज्योतींषिसत्वानिदिशोद्रुमादीन् । सरित्समुद्राश्चहरेःशरीरं यत्किञ्चभूतंप्रणमेदनन्यः ॥ चित जो है जीव सोऊ शरीरहै तामेंप्रमाण ॥ यश्चात्मनितिष्ठन्यमात्मानंवेदयस्य आत्माशरीरम् १२६ ॥

पक्षापक्षीकारणेसबजगरहाभुलान ॥
निरपक्षैह्वैहरिभजैसोईसंतसुजान १२७

और तो सबमायेमें भुलानहैं जिनकेकछूसामुझहै ते आपनेआपनेमतकी पक्ष कीन्हेहैं आनको पक्ष खण्डन करिडारैहैं सो जे पक्षापक्षी छोड़िकै साहबको भजैहैं तेईसुजान सन्तहैं १२७ ॥

मायात्यागेक्याभयामानतजानहिंजाय ॥
जेहिमानेमुनिवरठगेमानसबनकोखाय १२८

सन्तलोग जोमायाकोछोड़िउदिये तौ कहाभयौ मानबड़ाई तौ छोड़वै न किये याही चाहैहैं कि हमारो मान होय सो जौने मान में मुनिवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठगि गयेहैं सोई सबको खायेलेइहै सो हम पूछेहैं कि जो तिहारो बड़ो मान भयो बड़ी बड़ाई भई कि फलानेके समान उपासनामें कोईनहीं है ज्ञानमें विद्यामें कोईनहीं है तौ यासों कहा भयो जाके निमित्त घर छोड़्यो सोतो मिलबई न भयो तेहिते जो कोई साहबके मिलिबे की संसार छूटिबेकी बातकहै तौ मानिलेइ चाहै आपने मतको होइ चाहै बिराने मतको होइ काहेते कि साधुकोमत यहीहै कि संसारछूटै साहब मिलैं औ मानै प्रतिष्ठा भये साध कहावै या कौने शास्त्रमें लिखाहै तेहिते साधु वहीहै जो साहबकोजानै १२८॥

घुंघुचीभरजोबोइयाउपजपसेरीआठ॥
डेरापराकालघरसांझसकारेबाठ १२९

यह शरीररूपी क्षेत्रकैसोहै कि जोघुंघुची भरबोइजाय अर्थात् उठै तौ आठ पसेरी कहे मन उत्पत्ति होयहै कालके घरमें डेरा परोहै तेहिते यह शरीरको कहूँ साँझ होइहै कहूँ सकार होइहै अर्थात् कबहूँ मरिजायहै कबहूँ उत्पत्ति होइहै औ बाठ कहावै बरेठ सो मनमायामें मिलो जो आत्मा सो बरेठ ह्वैगयो बरेठमें तीनलहर होयहैं यामें त्रिगुणात्मिका माया बरिगई है सो एककैति पुण्यकी गैलहै जप यज्ञ दानते खैंचिकै स्वर्ग को लैजायहै औ एककैति पाप की गैलहै काम क्रोधादिकतेखैंचिकै नरकमें डारिदेइहै जब बरेठ टूटि जायहै तब ख्याल गुल्ल ह्वै जायहै अर्थात् मुक्ति ह्वैजायहै १२९॥

बड़ेतेगयोबड़ापनो रोमरोमहंकार॥
सतगुरुकीपरिचयबिनाचार्योबरणचमार १३०

सबते बड़े कोहैं साधु जे संसारको त्यागकीन्हे हैं तिनमें औरदोष तो हईनही हैं काहेते कि संसारको छोड़े हैं परन्तु जे चित अचितरूप साहबको नहीं देखैंहैं सर्व्वत्रते आपने बड़ापनही ते गये कि हमारी बरोबरी को साधु कोईनही है या अहङ्कार रोमरोम बेधिगयो सो सतगुरुतो पायो न जो रामनामको बताय देइ जाते साहब याकी रक्षाकरैं सो साहबके जाननवारेजेसाधु तिनके बिनापरिचय चारिउबर्ण चमारकेतुल्यहैं १३०॥

मायाकीझकजगजरै कनककामिनीलागि॥
कहकबीरकसबाचिहौरुईलपेटीआगि १३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झक वाको कहैहैं कि जैसे या कहैहैं कि भूतकी झक लगीहै सो कनक कामिनी में लपि मायाकी झकमें बैकलायकै जरैहैं सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि कनक कामिनी रूप रुईमें लपटि कै विषय अगि सेवन करैहैं सो कैसे बाचिहौ अर्थात् जरिहीजायगो १३१ ॥

मायाजगसाँपिनिभई बिषलैबैठीबाट ॥
सबजगफंदेफंदियागयाकबीराकाट १३२

संसारमें माया साँपिनिभईहै सो बिषलैकै संसार की जे हैं सबराहे तन धन कर्म्म तिनमें बैठीहै सो सम्पूर्ण जे गवाके फन्देमें फँदिगयो जोई कबीर कहे जीव वेराहनमें चलैहै सोई काटा जायहै अथवा कबीरजी कहैहैं कि मैं जौनेजौने राहनमें वह साँपिनि बैठीरहीहै तौनेतौने राहन को काटिकै कहे बरायकै मैं औरे राह ह्वै चल्लेगयो १३२ ॥

सांपबीछीकोमंत्रहै माहुरझारेजाय ॥
बिकटनारिकेपालेपराकाटिकरेजाखाय १३३

साँप बीछी को बिष मन्त्रनते झारे जायहै औ वह बिकटनारि जो मायाहै ताके पाले जो पस्यो ताको करेजा काटिकै खायलेइहै अर्थात् साहबके ज्ञानादिक जे अन्तष्करणमें हैं तिनको खायहै सोई मायाको रूप कहैहैं १३३ ॥

तामसकेरेतीनगुणभौंरलेइतहँबास ॥
एकैगरीतीनफलभांटाऊँखकपास १३४

आदितामस जोहै अज्ञान मूल प्रकृतितामें रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणी तीनफल लगे हैं सो सतोगुणीऊँखहै जो ऊँखचुस्यो तौ पहिले रस पान कियो कहे यज्ञादिक कर्म्म कियो स्वर्ग में जायकै अप्सरनकेसाथ सुखकियो जब पुण्य क्षीण भयो तब फेरिसंसारमें परे छोइये हाथमेंलगी फिरि चौरासीमें भटकनलग्यो औ रजोगुणी कपास है कपास को लियो कपरा बिनायो पहिरयो ह्याँई फटिगयो तैसे रजोगुणी कर्म्मकियो तामें राजाभयो सबभोगकियो दियो लियो बड़ोयज्ञ कियो फेरि फेरि मरिकै जैसो कर्म्म कियो तैसो भयोजाय औ तमोगुणी कर्म्मभांटाहै टोरयो तब कांटा लग्यो औ जबखायो तब पुरुष शक्ति की हानि ह्वैगई अखाद्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लवैहैं द्वादशी त्रयोदशी इत्यादिकदिनमें जो खायो तो नरक को गयो सै तमोगुणी कर्म्मते काहूको मार्यो तौ मरिगयो औ पापलाग्यो राजा धिकै शूलीदियो मारोगयो दुःखपायो सो इहां दुःखपायो औ उहां रकमें दुःखपायो १३४ ॥

मनमतंगगैयरहनै मनसाभईसचान ॥
यंत्रमंत्रमानैनहीं लागीउड़िउड़िखान १३५

मनरूपी जो हाथीहै मतवार सो गैयरकहे आपने अरतेकहे हठते गवा होहै जीव अर्थात् साहबको भूलिगयो जोहैजीव अथवा गैयर कहे बड़ा होहैजीव ताकोहनैहै सो जबजीव मारोपर्यो तब मनसा जोहैमनोरथ सोई सचानभयोहै कहे शार्दूल भयो सो उड़िउड़ि याको खायहै अर्थात् जब मरनलागैहै तब जहैं मनोरथजायहै तहैं जीवजायहै सोई खायबोहै औ यन्त्र मन्त्रजो नानाउपदेश वेदशास्त्र कहेहैं सो नहीं मानैहै १३५ ॥

मनगयंदमानैनहीं चलैसुरतिकेसाथ ॥
दीनमहावतक्याकरै अंकुशनाहींहाथ १३६

मनरूपी जो मतङ्ग है सो नहीं मानै है सुरतिरूपी जो हाथिनी है ताके साथ चलैहै महाउत जोहै जीव सो कहा करै अंकुशजोहै नामका ज्ञान सो याके हाथई नहीं है १३६ ॥

यामायाहैचूहरी औचूहरकीजोइ ॥
बापपूतअरुझायकै सँगनकाहुकीहोइ १३७

यामाया चूहरीकहे चाण्डालिनीहै औचूहरकी जोइहै कहे जीवकीजोइ कै जीवचूको चूहर बनायलियो अर्थात् आपने वशकैलियो सोयहमाया काहूकी सग नहीं है मनजोहै बाप पूत जोहै ब्रह्म ताको पतिजोहै जीव तासों अरुझाय दियोहै १३७ ॥

कनककामिनीदेखिकै तूमतिभूलसुरंग ॥
बिछुरनमिलनदुलेहराकेचुलितजैभुजंग १३८

साहब कहैहैं कि यह कनककामिनीरूप मायाको देखितू मतिभुलाय तो सुरङ्गहै साहबकहैहैं कि मेरेअनुरागमें रङ्गनवारोहै सो आपनेस्वरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोबिचारु यह कनककामिनीरूप जो मायाहै तौनेमें जो रँग्योहै ताकोजो छोड़िदे तौ जैसे भुजङ्ग केचुलिछोड़ि देइहै तब वाको स्वरूपनिकसि आवै है तैसे तेरे चारोशरीरछूटिजायँ तब हंसशरीरपाय मेरे पासआवै १३८॥

मायाकेबशसबपरे ब्रह्माबिष्णुमहेश ॥
नारदशारदसनकओ गौरीसुतगन्नेश १३९
पीपरएकजोमहँगेमान ताकरमर्मनकोऊजान ॥
डारलफायनकोऊखाय खसमअकृतबहुपीपरजाय१४०

अर्थ याको स्पष्टहीहै १३९ एकपीपरकेवृक्षको सबैमहंगे मानिलियो है सोवह ब्रह्महै अनुभवगम्यहै वाकोमर्म कोईनहीं जानै है कि पीपर को डारलफायकै कोईनहीं खायहै अर्थात् वा अलखहै कैसेमिळी वातो कथन मात्रहीहै सोसाहबकहैहैं कि जीवनको खसम अकृतमें बनैहां ताकोतोनहीं प्राप्ति होयवहपीपरजो ब्रह्मताहीमें सबचलेजातेहैं सोवहब्रह्मझाँईहै तामें प्रमाण॥मूल रमैनीको ॥ निर्गुणअलखअकहनिरबाना। मनबुधिइन्द्रीजा हिनजाना ॥ बिधिनिषेधजहँवाँतनहोई। कहकबीरपदझाँईसोई॥पहिले झाँईझाँकतेपैठीसन्धिककाल। झाँईकीझाँईरहीगुरुबिनसकैकोटाल१४०॥

शाहूतेभोचोरवा चोरनतेभोजुज्झ ॥
तबजानैगोजीयरा मारपरैगोतुज्झ १४१

प्रथम शाहुरहे कहे शुद्धरहेहौ सो ब्रह्ममाया मन चोरहैं तिनमेंलगिकै तैहूं चोरहैगये अर्थात् उपदेशकरिकै जीवनके साहब को ज्ञान चोराय लियो काहूको कह्यो कि ब्रह्म तहीं है काहूको कह्यो कि आदिशक्ति को भजु जगतको कर्त्ता वहीहै काहूको कह्यो जो मनमें आवै सो कस बन्ध मोक्ष को कारण मनै है याहीरीति गुरुवाचोरन ते जुज्झ भयो सो तुज्झ कहे तोहीं तबहीं समुझिपरैगो जब यमको सोंटा शीशमें लगैगो तब तब जानैगो कि रक्षकको भुलायदियो १४१ ॥

ताकीपूरीक्योंपरै गुरुनलखाईबाट ॥
ताकोबेराबूड़िहै फिरिफिरिअवघटघाट १४२

जाको गुरूने साहब के पास पहुँचिबे की बाट नहीं लखाई ताकी पूरि कैसेपरै ताको बेरा जो है ज्ञान सो अवघटघाट में बूड़िजाइगो अ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्थात् जब उनकेशरीर छूटिजायँगे पुनिपुनि जननमरन होयगो तब वा ज्ञान भूलिजायगो १४२ ॥

जानानहिंबूझानहीं समुझिकियानहिंगौन ॥
अन्धेकोअन्धामिला राहबतावैकौन १४३

मनमायादिक जो जगतहै ताको न जान्यो कि यह जड़है मैं इनको नहीं हौं इनते भिन्नहौं वा ब्रह्मको न बूझ्यो बिचारई करत रहिगये अपने स्वरूपको न जान्यो कि मैं साहब को अंशहौं समुझिकै नानामतन मेंगौननकिये कि ये नरक लैजानवारेहैं सो आँधर जे जीव तिनको आँधरे गुरुवालोग मिले साहबके यहांकी राह कौनबतावै १४३ ॥

जाकोगुरुहैआँधरा चेलाकहाकराय ॥
अन्धेअन्धाठेलिया दोऊकूपपराय १४४
मानसकेरीअथाइया मतिकोइपैठैधाय ॥
एकुइखेतेचरतहैं बाघगदहागाइ १४५

याको अर्थस्पष्ट हीहै १४४ या संसारमें मनुष्यकी अथाईहै तामें धायकै कोई मति पैठै काहेते कि एकुइ खेत जोहै संसार तामें बाघ जोहै जीव औ गदहा जोहैं मन औ गाइ जोहै माया सो एकई सङ्गचरैहैं गदहा मन को कह्यो सो कर्मकोबोझा याहीमें लादिजायहै औजीव बाघहै समर्थजो साहबकोजानै तौ गाइजोहैमाया ताको खायजाइ अर्थात् नाशकैदेइ १४५॥

चारिमासघनबरसिया अतिअपूर्बशरनीर ॥
पंहिरेजड़तरबखतरीचुभैनएकौतीर १४६

कबीरजी कहेहैं कि घनजोहौंमैं सो चारि मास जेहैं चारियुग तामें अति अपूर्ब जोहै शरकहेवाणरूपी नीर ज्ञान ताको बरसत भयो कहे उपदेश करतभयो सबजीवनको परन्तु ऐसोजड़तरकहे जड़ौतेजड़ बख्तर पहिरे हैं कि तीरकहे एकौज्ञान नहीं चुभैहै अथवा चारिमासजेहैं चारिउ वेदते घनकहे बहुत ज्ञानकी बर्षा कियोकहे सबजीवनको उपदेश कियो परन्तु साहबको कोईनसमुझतभये वेदको अर्थ औरईमें लगायदियो सबशब्दको सार रामनाम न जानै सब नरकको चले गये तामेंप्रमाण ॥ नाम लिया सोसबकिया वेदशास्त्रकोभेद॥बिनानामनरकैगयेपढ़िपढ़िचारोवेद १४६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकेभेलाजिउडरै कायाछीजनहार ॥
कुमतिकमाईमनबसै लागुजुवाकीलार १४७

कबीरजी कहैहैं कि गुरु के भेलेमें जिउडरैहै वहगुरुकी भेली कैसीहै कि कायाजेहैं पांचौ शरीर तिनको छीजन कहे छोड़ाय देनवारीहै सो ये संसारी जीवन के मनमें कुमति की कमाई लगीहै ताते जुवाकी लार मानुष शरीर में लागहै न कर्म करत बन्यो तो नरक गयो कर्म करत बन्यौ तो स्वर्ग गये कर्म छूटनको उपाय नहीं करैहैं लार सङ्गको कहैहैं पश्चिम की बोली है १४७॥

तनसंशयमनसोनहा कालअहेरीनित्त ॥
एकैडाँगबसेरवा कुशलपूछौकामित्त १४८

साहब कहैहैं संशय जो मन सोई तन में सोनहाहै जीवनको शिकार खेलैहै औ एक यह काल अहेरीहै अर्थात् जब काल मारैहै तब मनकी सुरति जहां मरतमें जायहै तहां आत्मा जात रहैहै तौनै शरीर धारण करैहै सोमन सोनहा काल अहेरी जीव सावज ये तीनों एकै डांग जो शरीर तामें बसैहैं सो हे मित्र तुमतौ हमारे सखाहौ भूलिकै यहडाँग जो शरीर तामें कहां बसे हौ चारो शरीरन को छोड़ि हंस शरीर में बैठि मेरे पासआवो १४८॥

शाहुचोरचीन्हैनहीं अन्धामतिकाहीन ॥
पारखबिनाबिनाशहै करिबिचारहोभीन १४९

हे अन्धा हे ज्ञाननयनको हीन तैंतो शाहु रह्योहै चोरजोहै मन ताकोतैं नचीन्हे ताते मैंहू चोरहैगये सो बिचार न कियो कि पारिखबिनाविनाशहै सो पारिखतो करु तैंतो चितहै औयह मनजड़है तेरो वाको साथ नहीं बनि परैहै सो जैसे तैं अणुचितहै तैसे साहब विभुचितहैं चितचितको साथ होइहै सो बिचारकरियहि मनते भिन्नहै मेरेपास आउ १४९॥

गुरुसिकिलीगरकीजिये मनहिमसकलादेइ ॥
शब्दछोलनाछोलिकै चितदर्पणकरिलेइ १५०

जो कहो मनते हम कौनी भांति ते भिन्न होइँ तौ गुरु सिकिलीगर है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा तरवारिहै मनादिकनकी काटनवारी है तामें साहबको ज्ञानरूपी मसकलादै रामनाम झोलनाते अज्ञानरूपी मुरचा छोलि प्रेमकीबाढ़ि धरि मनादिकनके काटिबेको समर्थ करिदेइ अर्थात् चारिउ शरीरको छोड़िस्वरूपरूपी दर्पण में आपनो हंसशरीर जानिलेइ कि मैं साहब कोअंशहौं १५० ॥

मूरुखकेसमुझावते ज्ञानगाँठिकोजाय ॥
कोइलाहोइनऊजरो नौमनसाबुनखाय १५१
मूढ़करमियामानवा नखशिखपाखरआहि ॥
बाहनहाराकाकरै वाणनलागैताहि १५२

यहसाखी को अर्थ प्रसिद्धै है १५१ मूढ़कर्मी कहे मूढ़है औ कर्मी है कर्म्मत्याग को उपाय नहीं करैहै ऐसो जो है मानुष्य सो नखशिखलौं अज्ञानरूपी पाखर पहिरेहै औ जो मूढ़कर्मी पाठ होय तौ बानरकीनाईं बाँध्यौ है हठ नहीं छाड़ै १५२ ॥

सेमरकेरासूवना सिहुलेबैठाजाय ॥
चोंचचहोरैशिरधुनै यहवाहीकोभाय १५३

सेमर का सुवा जो सिहुले कहे मदारे में बैठिकै चोंच मारयो जब घुवा निकरयो तब शिर धुनैहै या कहैहै कि या वहीको माईहै अर्थात् जीव संसार सुख लागिरह्यो जब कुछु न पायो तब ब्रह्म सुखमें लगो कि मोको ब्रह्मानन्द होयगो सो वहौ विचार करत जब अठईं भूमिका में गयो तब अनुभवौ न रहिगयो तबजान्यो कि जैसे संसारीसुख मिथ्या है तैसे ब्रह्मसुखौ मिथ्याहै कुछु नहीं रहिजाय है अथवा घरछोड़िकैबैरागी भये महन्तोलिये मठबाँधे चेलाभये सो घरमें एकैमेहरी रही एकैबेटारहो इहां बहुत चेली भईं बहुत चेलाभये बहुत घर भये न गृहस्थीमें बन्यो न बैराग्यमें बन्यो तामेंप्रमाण चौरासीअङ्गकीसाखी ॥ घरहुतजिनितौअ स्थलबाँधिनिअस्थलतजिनितौफेरी ॥ फेरीतजिनितौचेलामूड़िनियहिबिधि मायाघेरी १५३ ॥

सेमरसुवनाबंगितजु घनीबिगुर्च्चनपाख ॥
ऐसासेमरजोसेवे हृदयानाहींआंख १५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे सुवाजीव संसाररूप सेमर को तैं छोड़िदे तैंतो पक्षीहै तेरे मेर पास आवन को पक्ष है कहे तेरे स्वरूपमें मेरेपास आवनको ज्ञानबनोहै जो संसारी ह्वैजायगो मायाब्रह्म में लगैगो तौ मेरेपास आवने को तेरे पखना बिगुर्च्चन ह्वैजायगो कहेघुवा ऐसो चोथिडारैंगे नाम नाना ज्ञानमें लगायदेइँगे वा ज्ञान न रहिजायगो सो ऐसे संसाररूपी सेमरकोसेवैहै जाके हृदयमें आँखी नहीं हैं मेरो ज्ञान नहीं है १५४ ॥

सेमरसुवनासेइये दुइढेढीकीआस ॥
ढेढीफुटीचटाकदै सुवनाचलेनिरास १५५

हे सुवनाजीव संसार सेमर की दुइ ढेढीकी आश सेवैहै सेमर दुइढेढी कौनिहैं एकफूलकी है एकफलकी है औ या संसारमें एक तौ संसारीसुख है एक परलोक सुख है सो सेमरमें रसकी चाह कियो जब चोंचचहोर्‍यो तब ढेढी चटाक दै फूटिगई घुवा निकस्यो सुवा निराशह्वैकै चलेगयो रस कीप्राप्ति न भई तैसे तैं संसारमें पर्‍यो जननमरण छुटावैकेवास्ते धोखा-ब्रह्ममें लाग्यो परन्तु जनन मरण न छूट्यो १५५ ॥

लोगभरोसेकौनके जगबैठिरहेअरगाय ॥
ऐसेजियरैयमलुटै जसमेढ़लुटैकसाय १५६

अरेलोगौ यहि संसारमें कौनके भरोसे अरगायकै कहे चुपायकै बैठिरहे हौ ज्ञानकरिकै कि महीं ब्रह्महौं अथवा या मानिकै कि महीं जीवकामालिकहौं अथवा योग करिकै कुण्डलिनी के साथ प्राणको चढ़ायकै ज्योति में मिलायकै औ चुपह्वैकै बैठिरहे सो हम पूछैहैं कि तुम कौनके भरोसे बैठिरहे साहबको तौ जानिबोई न कियो जब उत्पत्ति भई तब ब्रह्म ने माया तुमको धरिलैआई औ पुण्य क्षीणभई तब स्वर्गादिकनते उतरि आये औ जब समाधिछूटी तब जीव उतरि आयो पुनि जसके तस ह्वैगये औ आपनेही को मालिक मान्यो तौ जब शरीर छूट्यो तब यम खूबलूट्यो जैसे मेढ़ाको कसाई लुटैहैं तैसे बिनारक्षक कौन बचावै १५६ ॥

समुझिबूझिजड़ह्वैरहे बलतजिनिर्ब्बलहोय ॥
कहकबीरतासन्तको पलानपकरैकोय १५७

सर्व्वत्र साहब को समुझिकै औ साहबको रूप बूझिकै कि या भांति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की है जड़वत् ह्वैरहे कि जो करैहै सो साहब करैहै ऐसे साहबको जो जानैहै ताके बहुत सामर्त्थ ह्वै जायहै जो चाहै सो करिलेइ तौने आप ने बलको छपायकै आपको निर्व्वलै मानै है कि हमकहा करै हैं जौन कामकरैहै तौन साहिबै करैहै वे समर्थहैं सो श्रीकबीरजी कहैहैं कि ऐसे संतको पला कोईनहीं पकरैहै कहे बाधा कोईनहीं करिसकैहै सबसाहिबै करैहैं तामेंप्रमाण कबीरजीके ज्ञान संबोधन की साखी ॥ पापपुण्यफल दोय सबैसमर्पैसमर्थै ॥ निजमनशक्तिनहोय मनसाबाचाकर्मणा १५७ ॥

हीरावहीसराहियेसहैघननकीचोट ॥
कपटकुरंगीमानवापरखतनिकसाखोट १५८

हीरा जोहै साहबका ज्ञान सोई सराहा जायहै जो घन चोट सहै कहे नानामत करिकै कोई बादीखंडन न करिसकै औ मानुष जे कपट-कुरंगी कहे हरिणी ह्वैरहेहैं अर्थात् चंचल ह्वैरहेहैं सोजब घनकी चोट लगी कहे गुरुवालोग आपनो मत समुझायो तब हृदय फूटि गयो साहबको ज्ञान तो जानो न रहै तामेंप्रमाण कबीरजी की परिचयकी साखी ॥ झूंठजवाहिरकोबनिज तबलगिपरिहैपूर। जबलगिमिलैनपारखी घनेचढ़ा नहिंकूर॥सोया मायाके रंगवारे मानुष परिखतमें खोटही निकसैहैं१५८॥

हरिहीराजनजौंहरीसबनपसारीहाट ॥
जबआवैजनजौंहरीतबहीरौकीसाट १५९

हरि जेहैं तेई हीराहैं औ जन जेहैं तेई जौंहरी हैं कहे जाननवारे हैं सो सब जीव हाट लगावन लगे कहे साहबको जानन लगे ज्ञान कथन लगे गुरुवालोग आपने मतमें खैंचिगये सो जब साहबके जाननवारे साहबके जनाय देनवारे साहब जन जौंहरी आये तब सबके मत खंडन करि हरि हीराके समीप कनी जे जीव तिनको पहुंचाय देतभये अर्थात् जीवनको या जनाय दिये कि तुम साहबके हौ साहबमें लगौ या हीराके साटको अर्थहै और मतनमें परे जनन मरन न छूटैगो ये कनफुका संसा-रही को लैजायगो तामेंप्रमाण ॥ कनफुकागुरुहद्दका बेहदका गुरुऔर॥ बेहदकागुरुजोमिलै तबपावैनिजठौर १५९ ॥

हीरातहांनखोलियेजहँकुंजरोंकीहाट ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहजैगांठीबांधिकैलगीआपनीबाट १६०

जहांकुंजरौं की हाटहै तहां हीरा न खोलिये काहेते कि वे भांटा खीराके बेंचनवारे हीराको भेद कहांजानैं अर्थात् जहां आपने आपने मतमें काउ काउ करि रहेहैं तहां साहबके ज्ञानरूपी हीरा न खोलिये साहबमें मन लगाये एकान्त बैठिरहिये यहीआपने बाटमें लगेरहिये १६०॥

हीरापराबजारमेंरहाछारलपटाय ॥
बहुतकमूरखचलिगयेपारिखलियाउठाय १६१

हीरा जोहै रामनाम सो बजारमें पराहै कहे सबसंसारके लोग कहैहैं छारमें लपटाय रह्योहै अर्थात् नानामत रामनामहीते निकसेहैं औ सब मत रामनामही ते सिद्ध होयहैं या नहीं जानैं ऐसे जे मूरख ते संसार बजारमें चलिगये न लीन्हे सो जाते साहबको ज्ञान होयहै ऐसो राम नाम हीरा ताके जे पारखी रहे ते राम नामको जानिकै साहबको पहिँचानिकै मुक्त ह्वैगये सो येही रामनामको लैकै सब साहबको जान्योहै तामेंप्रमाण॥रामकोनामचौमुक्तिकामूलहै निगमनिच्चोररसतत्त्व छानी। रामकोनामषट शास्त्रमेंमथलिया रामषटदर्शमेंहैकहानी। रामको नामलैध्यानब्रह्माकिया ररंकारैधुनिसुनीमानी। कहैंकबीरअबगाहलीला बड़ी रामकोनामनिर्बानबानी। रामकोनामलैबिष्णुपूजाकरैं रामकोनाम शिवयोगध्यानी। रामकोनामलैसिद्धसाधकजियो जियोसनकादिनारदहु ज्ञानी। रामकोनामलैरामदिक्षालिया गुरूबासिष्टमिलिमंत्रदानी। रामको नामलैकृष्णगीताकथी पथीपारत्थनहिमर्मजानी १६१॥

हीराकीओबरीनहींमलयागिरिनहिंपाँति ॥
सिंहनकेलेहड़ानहींसाधुनचलैजमाति १६२

सबको मालिक साहब एकहीहै औ साहबके जाननवारे बिरलेसाधु हैं जे राम नामको जपैहैं वे सब साधुनके शिरमौरहैं तामेंप्रमाण॥ साधु हमारेसबखड़े अपनीअपनीठौर। शब्दबिबेकीपारखी सोमाथेकोमौर॥ तामें या दृष्टान्तहै जैसे मलयागिरिचन्दन एकहै सिंहएकहै तैसे हीराजो राम नामहै तेहिते साहबको ज्ञान होयहै सो एकही है औ ताके जाननवारे साधु एकहीहैं वे जमातिमें नहीं चलैहैं ऐसेतो सब साधुही कहावैहैं औ रामनाम बस्तुखोयकै औरमेंलागेहैं तेगवाँरहैं तामेंप्रमाण॥ वहहीरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मतिजानिये जेहिलादैबनिजार ॥ यहहीराहैमुक्तिकोखोयेजातगवाँर १६२॥

अपनेअपनेशीशकी सबनलीनहैमानि ॥
हरिकीबातदुरंतरी परीनकाहूजानि १६३

जौनजाको मतनीक लाग्यो सोतौनेन मतको शीशचढ़ाय मानिलीन्ह्यो हरिकी जो दुरन्तरी बातहै सबतेदूरकहे परे सो काहूको न जानिपरी कि सबके रक्षक साहबैहैं १६३ ॥

हाड़जरैंजसलाकरी तनवाजरैंजसघास ॥
कबिराजरैसोरामरस जसकोठीजरैकपास १६४

कबीर जे जीवहैं तिनके रामरस जोहै रामभक्ति सोकैसे उनके अन्तष्करणमें जरैहै जैसे कोठीमें कपास भितरैजरैहै याहीते उनके हाड़बार लकड़ी घासकी नाईं जरैहैं १६४ ॥

घाटभुलानाबाटबिन भेषभुलानाकानि ॥
जाकीमाड़ीजगतमा सोनपरापहिचानि १६५

घाट कहे सत्संगबाट जोहै बिचार ताकेबिना भूलिगयो अर्थात् साहब को तौ जान्यो न अपनेहीको ब्रह्म माननलग्यो बिचार भूलिगयो सत्संग काहेकोकरै आपने गुरुवनकी कानिमानि भ्रमवारे मतन छाड़त भये भेष वारे साधु सब भुलायगये सो जाकी माड़ी कहे माया जगत्में पूरि रही ऐसेजो साहब सो न पहिचानिपरयो माड़ी मायामें भूलिगये १६५ ॥

मूरुखसोंक्याबोलिये शठसोंकहाबसाय ॥
पाहनमेंक्यामारिये चोखातीरनशाय १६६

मूरुख कौन कहावैहै कि साधुनके समुझायेते सूझै परन्तु बूझै नहीं है तासों क्याबोलिये शठकौन कहावैहै कि चाहैनीकौ कोऊबतावै परन्तु छाड़ै न हठकीन्हे वाहीमें लागरहै जौन गुरुवालोग पहिले बतायनि है चाहै कूपौमा गिरिपरै पैछाड़ै न सोऐसे लोगनते कहांबसाय उनको ज्ञानदीन्हे ज्ञानौ खराब होयगो पाहनके मारे तीरही टूटैगो शठ मूरुख नहीं समुझै तामेंप्रमाण ॥ पानीकोपाषाण भीजैतौबेधैनहीं ॥ त्योंमूरुखकोज्ञान सूझै तौबूझैनहीं १६६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसेगोलीगुमजकी नीचपरेदुरिजाय ॥
ऐसेहृदयामूरखके शब्दनहींठहराय १६७

जैसे गुम्मजमें जो गोली मारिये तौ ऊंचेपरे ढरकि जायहै ऐसेमूरुख के हृदयमें शब्द रामनामकेतौ उपदेश करिये परन्तु ठहराय नहीं है एक घरीभरतो ज्ञानरह्यो फिरि ज्योंको त्यों ह्वैगयो १६७ ॥

ऊपरकीदोऊगईं हियकीगईंहेराय ॥
कहकबीरचारिउगईं तासोंकहाबसाय १६८

ऊपरकी आँखिनते यादेखैहैं कि साहबको भजिकै हनुमानादिक अजर अमरह्वैगये जिनकी पूजादेवता करैहैं सबसिद्धिको प्राप्तहैं कालचक्रबिष्णु सबते अधिकहैं औ हियेकी आँखिनते देखैहैं कि हाथिनको पति ऐरावतहै पक्षिनकोपति गरुड़है भक्तनमें महादेव पतिहै मनुष्यनमें भूपति है ऐसे सब ईश्वरनका मालिक श्रीरामचन्द्रहै तिनको नहीं भजनकरैहै सो श्री कबीरजी कहैहैं कि जाकी भीतरौबाहरकी आंखि फूटिगईं तासों कहांबसाय १६८ ॥

केतेदिनऐसेगये अनरूचेकोनेह ॥
बोयेउसरनऊपजै जोघनबरसैमेह १६९

जैसे ऊसरमें बोवै घन बहुतौ बरसैं परन्तु जामै नहीं है तैसैं निराकार धोखामें लग्यो फलकछू न हाथलग्यो वातो कुछ बस्तुहीनहीं है अनरुचेको नेहहै अर्थात्यावड़ी प्रीतिकियो वातोप्रीतिही नहीं करै १६९॥

मैंरोयोंसबजगतको मोकोरोवैनकोइ ॥
मोकोरोवैसोजना जोशब्दबिबेकीहोइ १७०

साहब कहैहैं कि मैं सब जगतपरदयाकरिकै रोऊहौं कि मेरो अंश जीवमोको भूलिगयो ताते जगतमें जननमरनरूपी दुःख सहैहैं औ जीव मोको नहीं रोवैहैं कि हम अपने मालिकको भूलिगये नाना मालिक मानि नानादुःखपावैहैं सोमोको सो जनरोवैहै जोशब्द जोरामनामताको विवेकीहोय किरकारकेसमीपमकारशोभितहोइहै मैं साहबको हौं १७०॥

साहबसाहबसबकहैं मोहिंअँदेशाऔर ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहबसोंपरिचयनहीं बैठेगाकेहिठौर १७१

कबीरजी कहैहैं कि साहबसाहब तो सबजीव कहैहैं अर्थात् आपने आपने इष्टदेवताको सबतेपरे कहैहैं कि येई सबकेमालिकहैं सो येतो सब एकएकमालिक बनायेहैं पै मोको या औरअन्देशहै कि जौनरामनाम साहबकोबतावैहै तौनेरामनामकोजानि साहबते परिचयतोकरिबैनकिये ये कौनेठौर बैठेंगे काकेपास जायँगे अर्थात् जननमरन न छूटैगो १७१ ॥

जिउबिनजिउबाचैनहीं जिउकाजीउअधार ॥
जीउदयाकरिपालिये पण्डितकरहुबिचार १७२

या जीव बिनाजीवकहे सतगुरुबिना नहीं बाचैहै जीवकोजीवजो सतगुरुहै सोई आधारहै सो जीवपर दयाकरि अर्थात् सतगुरुके शरणह्वै जीव उद्धारकरो हेपण्डित तुम बिचारकर देखो तो बिनासतगुरु संसारपार न होउगे १७२ ॥

हमतोसबहीकीकही मोकोकोईनजान ॥
तबभीअच्छाअच्छाअबभी युगयुगहोहुनआन १७३

साहबकहैहैं कि हमतो सबकेअच्छेकी कही जाते कालते बचिजायँ परन्तु मोको कोई न जानतभयो सो तबभीअच्छाहै अबभी अच्छाहै काहेते कि युगयुगमें मैं आननहीं होउँहौं वहीवही बनोहौं जो अबहूं मोकोजानै तौ मैं कालते बचायलेउँ तामेंप्रमाण गोसाईंजीको दोहा ॥ बिगरीजन्मअनेककी सुधरैअबही आज॥ होयरामकोरामजपितुलसीतजि कुसमाज१ औ कबीरजीने कह्योहै ॥ कहकबीरहमयुगयुगकही। जबहीं चेतोतबही सही १७३ ॥

प्रकटकहौंतौमारिया परदालखैनकोइ ॥
सहनाछपापयारतर कोकहिबैरीहोय १७४

श्रीकबीरजीकहैहैं कि जो मैं प्रकटकहौहौं कि तुम साहबकेहौ और के नहीं हौ तौ मारनधावैहै अर्थात् बादबिबादकरैहै औ जो परदे सों कहौ हौं तौ कोईसमुझतैनहीं है काहेते नहीं समुझैहै कि सहना जो है मन जौन संसारको रचिलियोहै सो शरीर जो पयार तामें छपाहै साहबकोनहीं जाननदेइहै पयारशरीर याते कह्यो कि सारजोसाहबकोज्ञान सो निकसि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयोहै सो याकोकहिकै बैरीहोइ ब्रह्मबादिनते औ सहना वो कहावैहै जो सरकारते पयादा आवैहै सो ब्रह्ममायाके साथ या मनआयो है साहबको ज्ञान छीदेहै साहबको जाननन्हीं देइहै या मनहीं सबसंसार रचिलियो है तामेंप्रमाण कबीरजीकोपद ॥ सन्तौयामनहैबड़जालिम । जासोंमनसों कामपरोहै तिसहीहैहैमालुम ॥ मनकारणकी इनकीछाया तेहिछायामें अटके । निरगुणसरगुणमनकीबाजी खरेसयानेभटके ॥ मनहीं चौदहलोक बनाया पाँचतत्त्वगुणकीन्हे । तीनिलोकजीवनबशकीन्हे परेनकाहूचीन्हे ॥ जोकोउकहैहममनकोमारा जाकेरूपनरेखा । छिनछिनमें केतनौरँगल्यावै जेसपनेहुनहिंदेखा ॥ शासातलयकईशब्रह्मण्डा सबपरअदलचलावै । षट रसमें भोगीमनराजा सोकैसेकैपावै ॥ सबकेऊपरनामनिरक्षर तहँलैमन कोराखै । तबमनकीगतिजानिपरैयह सत्यकबिरमुखभाखै १७४ ॥

देशबिदेशनहौंफिरा मनहींभरासुकाल ॥
जाकोढूंढ़तहौंफिरौं ताकोपरादुकाल १७५

अदेशकहे संसार बिदेशकहे ब्रह्म तौने में फिराहै सो ये दूनों मायाको सुकालभराहै अर्थात् वहब्रह्म मनहीं कोअनुभवहै औ संसार मनहीं को कल्पनाहै जौनबस्तुको मैं ढूंढ़तफिरौंहौं जो मनबचनके परेहै ताको दुकालपर्‍यो वा न ब्रह्ममेंहै न संसारमेंहै १७५ ॥

कलिखोटाजगआँधरा शब्दनमानैकोइ ॥
जाहिकहौंहितआपना सोउठिबैरीहोइ १७६

जगत तो आँधराहै ज्ञानदृष्टि याके नहीं है कुछ समुझै नहीं है तौनेमें या कलि खोंटा प्राप्तभयो सो जाको शब्द जो रामनाम मैं बताऊँहौं सोई बैरी होइहै कहे शास्त्रार्थ करैहै मानै नहीं है १७६ ॥

मसिकागदतोछुयोनहिं कलमगहीनहिंहाथ ॥
चारिहुयुगनमहात्मजेहि करिकैजनायोनाथ १७७

गुरुमुख ॥ चारिउ युगमें है माहात्म्य जिनको ऐसे जे नाथ रघुनाथहैं तिनको कबीरजी सबको जनायो न कलमगही न कागद लियो न मसि लियो मुखहीते कह्यो येतो सरल करिकै कह्यो कि जामें एकौसाधन न करन परै सो साहबकहैहैं कि जो मोको जानिलेइ तौ संसारते तरिजाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो कहो कबीरजी मुखहीते कह्योहै ग्रन्थ कैसे भयेहैं तौ कबीरजी कहते गये हैं शिष्यलोग लिखतेगये हैं १७७ ॥

फहमैआगेफहमैपाछे फहमैदहिनेडेरी ॥
फहमैपरजोफहमकरतहै सोईफहमहैमेरी १७८

गुरुमुख ॥ फहम जोहै ज्ञानस्वरूप ब्रह्म सोई आगेहै सोई पाछेहै सोई दहिनेहै सोई डेरी कहे बाँयेंहै अर्थात् सर्व्वत्र पूर्णहै सो यह जो फहम है ज्ञान स्वरूप ब्रह्म तौनेके ऊपर ब्रह्म याहूके परे साहबहै फहम करैहैं कि वह ज्ञानरूप उनही को प्रकाशहै याहूके परे साहबहै तौन फहम मेरीहै कहे वहज्ञान मेरोहै १७८ ॥

हद्दचलैसोमानवा बेहदचलैसोसाध ॥
हदबेहददोनोंतजै ताकोमताअगाध १७९

हदजो चलैहै सो मानवाहै कहे उनको मान कहे प्रमाण है अर्थात् जो जौने देवता की उपासना कियो सो तौने देवताके लोक गये वाको वहैभर प्रमाण है वतनै ज्ञान होइहै औ जे बेहद चलैहैं ब्रह्म में लगैहैं ते साधु हैं जो ब्रह्मको साधन करिकै सिद्धि करिलेइ सो साधु सो हद जो है सगुण संसार औ बेहदजोहै निर्गुण ब्रह्म ये दोनों को जे तजिकै निर्गुण सगुणके परे परमपुरुष श्रीरामचन्द्रके सेवक ह्वैरहेहैं ऐसेजेरामोपासक हैं तिनही के मत अगाधहैं १७९ ॥

समुझैकीगतिएकहै जिनसमुझासबठौर ॥
कहकबीरयेबीचके बलकहिऔरैऔर १८०

जेरामोपासक निर्गुण सगुणको समुझिकै ताहूते परे साहबकोजान्यो तिनकी गति एकहै कहे एक साहबहीको सबठौर निर्गुण सगुणमें समुझैहैं कबीरजीकहेहैं कि जे बीचकेहैंते और और उपासना करैहैं औरऔर ज्ञानकरैहैं औआपनेआपनेदेवतनमें बलकैहैं कि येईसबकेमालिकहैं १८० ॥

राहबिचारीकाकरै पथिकनचलैबिचारि ॥
आपनमारगछोड़िकै फिरहिंउजारिउजारि १८१

पथिकजो विचारिकै न चलै तौ राहबिचारी कहाकरै वेद पुराण शास्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

येई सब राहै हैं तिनको तात्पर्य्य यहीहै यहजीव साहबको अंशहै उन हीं के जाने संसारते छूटैहै सो रामनाम को जपिकै साहबको हैरहै यह जोहै आपनो मारग तौनेको छोड़िकै उजारि उजारि कहे कोईब्रह्ममें कोई ईश्वरमें कोई नाना देवतनकी उपासनामें फिरैहैं सोउनके जन-नमरण रूप कण्टक लागिबोईचाहै नरकरूप खोह गिरैचाहै औ जीव साहबको अंशहै तामेंप्रमाण ॥ ममैवांशोजीवलोके जीवभूतःसनातनः ॥ औ ब्रह्ममाया ईश्वर जगत इनको बिचारकरै तौ भ्रममात्रहै कछू इनते जीवको उद्धार नहीं होयहै तामेंप्रमाण ॥ ब्रह्मजीवईश्वरजगतईसबअन मिलसैन ॥ निरबाहेठहरैनहीं भाषतझाईबैन १८१ ॥

मूआहैमरिजाहुगे बिनशरथोथेभाल ॥
परेकल्हारैवृक्षतर आजुमरैकीकाल १८२

अरेजीवा तम केतनौबार मरत आयेहौ औ मरिजाउगे बिनाशर काहेते कि तुम्हारे भालैमें थोथे लिखेहैं बिना फलके बाणसों तुम यहि संसार वृक्षतरे जो बोलते बतातेहौ सो परे कल्हारतेहौ आजु मरिजाउ कि काल्हि मरिजाउ वादा कछूनहीं है १८२ ॥

बोलीहमारीपूर्व्वकी हमैंलखानहिंकोइ ॥
हमकोतोसोईलखै घरपूरुबकाहोइ १८३

हमारी जो पूर्व्व कहे पहिलेकी बोली जो साहबकोरूप उपदेशकरि आये जीवको स्वरूप बतायआये सो कोईनहीं लखैहै न हमको लखैहै सो हमारीबाणीको तो सोई लखैहै जो कोई पूरुबको कहे शुद्धजीव ह्वै जाय जस पूर्व्वही रह्योहै १८३ ॥

जेहिचलतेरवदेपरा धरतीहोइबिहार ॥
सोइसावजघामेंजरै पण्डितकरोबिचार १८४

जेहिजीवके चलतकहे निकसतमें यहशरीर रवदेकहेधूरिमें मिलिजाय है पुनि वहैजीव जो कहूं अवतरै है तब यहै शरीर को पाइकै धरती में विहारकरैहै औ वहै साउज जो है जीव सो शरीरनकोपायकै आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक जे तीनोंतापहैं तेईघामहैं तिनहीं में जरैहै सो हेपण्डित तुम बिचारकरिकै असारकोत्यागकरायकै सार जे साहबश्रीराम-चन्द्रहैं तिनको बताओ तौ तीनोंताप ते जीवछूटै १८४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पायनपुहुमीनापते दरियाकरतेफाल ॥
हाथनपरबततौलते तेहिधरिखायोकाल १८५

जे हाथनते पर्वत तौलतेरहे औ पायनते पुहुमी नापतेरहे औ समुद्र को एकफाल करतेरहे हिरण्याक्षादिक तिनहू को काल धरिखायो१८५ ॥

नवमनदूधबटोरिकै टिपकेकियाबिनाश ॥
दूधफाटिकाँजीहुआ भयाघीउकानाश १८६

नवमन कहे नवीननवीन जामें होतेआये मन ऐसो केतौ देहधरे अब यह दूध मनुष्यशरीरपायो सो काँजीका टिपका जो धोखाब्रह्ममेंलागिबो ताते दूध जो मनुष्यशरीर सो काँजीभया कहे पशुतुल्य भया घीउ जो साहबको ज्ञान रहै ताको नाशह्वैगयो १८६ ॥

केत्योमनावैंपाँयपरि केत्योमनावैंरोइ ॥
हिन्दूपूजैंदेवता तुरुकनकाहुकहोइ १८७

श्रीकबीरजी कहैहैं कि केतन्यो हिन्दू ते देवतनके पाँयपरि मनावैंहैं कि हमारी मुक्ति ह्वैजाय औ नानादेवतनको पूजतेहैं औ केतनों जे मुसल्मान तिनकोहाल आवतीहै औ साहबके इश्कमें रोवते हैं औ मानतेहैं कि साहब बेचूनबेचिगूनबेसुवा बेनिमून निराकारहैं सो जे देवतनको मनावतेहौ पाँयपरिकै तिनहीं की मुक्ति नहीं भई तिहारी मुक्ति कैसे होयगी देवतातो सब सगुणहैं बिष्णु सतोगुणीके ब्रह्मा रजोगुणीके रुद्र तमोगुणीके अभिमानीहैं मुक्त नहीं भये तौ तुमको कैसे मुक्त करेंगे सो जौन तीनों देवतनको अधिकार दियेहैं सबकोमालिक श्रीरामचन्द्र तिनको भजनकरु तब मुक्तिपावैगो औ हे मुसल्मानो तुम निराकार तौ मानौहौ इश्क काकेपर करौहौ सो जो साहबकोरूप न मानौगे तौ इश्क तुम्हारा झूठा ठहरिजायगा ताते बिचारौतौ साहबरूप न होता तौ मूसा पैगम्बरको छिगुनी कैसे देखावता ताते उसकेरूप हैं परन्तु मायाकृत पञ्चभौतिक नहीं हैं दिव्यरूप हैं याते निराकार कहैहैं सो सगुण निर्गुण के परे जो साहब श्रीरामचन्द्र ताको बन्दाहोउ आपनेको जो मालिक मानौगे तौ बड़ी मारसहौगे तामेंप्रमाण ॥ स्वामीतोकोईनहीं स्वामी सिरजनहार ॥ स्वामीह्वैजोबैठिये घनीपरैगीमार १ औ साहब निर्गुण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सगुण के परेहैं तामेंप्रमाण॥ सगुणकीसेवाकरो निर्गुणकाकरुज्ञान ॥ निर्गुणसगुणकेपरे तहँहमारान्यान १८७॥

मानुषतेरागुणबड़ा मांसनआवैकाज॥
हाड़नहोतेआभरण त्वचानबाजनबाज १८८

हेमानुष जो तैं देहको अभिमान करैहै सो नाहककरैहै यहदेह तेरी कौनेकामकीहै तेरोमांस कामनहीं आवै कोई नहीं खाय है हाड़न के आभरण नहीं होते हैं त्वचाके बाजन नहीं बाजतेहैं सो तेरे एकगुण है या देहते साहब मिलतेहैं सो मिलिबेकी यतनकरु १८८॥

जौलगिढोलातबलगिबोला तौलगिधनव्यवहार॥
ढोलाफूटाधनगया कोईनझाँकैद्वार १८९
सबकीउतपतिधरणिमें सबजीवनप्रतिपाल॥
धरतीनजानैआपगुण ऐसागुरूदयाल १९०

एकको प्रकटैहै एकको कहैहैं दुःख सुख नीक नागा सबकी उत्पत्ति धरतिहीतेहै कहे शरीरहीतेहै जौनेज्ञानते सबजीवनको प्रतिपालहै ऐसे ज्ञानको तूजान अपनेगुणको धरती जो शरीर ताको न मानु तेपांचो शरीर ते बाहिरेहैं ऐसे गुरु दयालहैं साहब छड़ावन वारे ताको जानु तैं अंशहै साहब अंशीहैं १८९। १९०॥

धरतीजानतआपगुण तौकधीनहोतअडोल॥
तिलतिलहोतोगारुवा क्वैरहतठिकौकीमोल १९१

धरतीजो शरीर ताको धरैया जो जीव धरती सो आपनो गुण नहीं जानत कि मोमें साहबकीप्राप्तिहोय वो यहीगुणहै उत्पत्ति जोकरौहौ सो साहबकी शक्तिते मेरीशक्ति नहीं है तौकधी डोलनहोतो अर्थात्मनादिकन को उत्पत्तिकरि संसारी न होतो शुद्धै बनोरहतो धरतीजीव आपनो गुण कहाजानै जो आपनोगुण साहबको प्राप्तहोइबोजानतो तौ तिलतिल में गरुई होतजातो कहे तिलतिल वहज्ञान बाढ़तो औठीकजोहै शुद्धसाहब केजनैया जीवात्मा ताके मोलह्वैजातो कहेयहौ अमरह्वैजातो जेसाहबसों मेलकिये रहैहैं शरीरहू सांचह्वैजायहै तामेंप्रमाण ॥ जाकीसांचीसुरतिहै सांचीसाखीखेल॥ आठपहरचौंसठघरी हैसाहबसों मेल १९१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहिया किरतिमनाहता धरतीहताननीर ॥
उतपतिपरलयनाहती तबकीकहीकबीर १९२

कबीरजी कहैहैं कि जब येरहबै नहीं भये तबकी कहैहैं १९२ ॥

जहांबोलअक्षरनहिंआया। जहँअक्षरतहँमननहिंदृढ़ाया॥
बोलअबोलएकहैसोई। जिनयालखासोबिरलाहोई १९३

जहां बोल जो शब्दभया तहां अक्षर आपही जायहै जब अक्षर भया तबमन दृढ़ावही क रैहै कहेमनकी उत्पत्ति होतहीहै सोतबतो आकाशही नहीं रह्यो शब्द कहांते निकसा सो पृथम जोवाणी रामनाम लैकै उचरी सो अबोलहै कहे अनिर्बचनीयहै सोईकहे तौनैजोहै रामनाम सोईबोलहै कहे वहीते सब अक्षर निकसेहैं सोवही अबोलहै कहे अनिर्बचनीयहै सो यहबात कोई बिरलाजानैहै काहेते किजबकुछु नहीं रहे तब एकसाहबही रहेहैं तिनहीं ते सबकी उत्पत्ति भईहै वहतो सबको मूलहै वाको कोई कैसेकहिसकैजबयहसाहबकोह्वैजाय औरआशाछोड़देइतबसाहबहीप्रसन्न ह्वैकै सबबनायलेइहैं तामेंप्रमाणसाहबकीउक्ति ॥ जानैसोजोमहीं जनाऊं बाँहपकरिलोकैपहुँचाऊं ॥ यहैप्रतीतिमानुतैंमेरी । यहसुयुक्तिकाहूनहिं हेरी ॥ सत्यकहौंतोसोंमैंटेरी। भवसागरकीटूटैबेरी १९३ ॥

जौलौंतारागगमगै तौलौंउगैनसूर ॥
तौलौंजियजगकर्मबश जौलौंज्ञाननपूर १९४

जौलौं सूर्यनहीं उगैहैं तौलौं तारा जगमगायहै ऐसै जौलौं साहब को पूरो ज्ञान नहीं होयहै तौलौं जीव नाना कर्मनके बशह्वै नानामतनमें लागैहै जबजीव साहबको जान्यो औ साहबको ह्वैगयो तब साहबैअपनो ज्ञान देयहैं कर्मछूटि जायहै १९४ ॥

नामनजानैग्रामको भूलामारगजाय ॥
कालगड़ैगाकाटवा अगमनकसनखोराय १९५

अरे साहबके तो नगरको नामही नहीं जानैहै औरे मतन मारग में काहे भूलाजायहै यहकाल रूप कांटा तेरे गड़ैगा कालतोको मारिडारैगा तेहिते अगमन कहेआगे वह खोरिकहे राहमें आवै जेहिते कालते बचिजाय १९५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगतिकीजैसाधुकीहरैओरकीव्याधि ॥
ओछीसंगतिक्रूरकी आठौंपहरउपाधि १९६

जोसाधुकी संगति करिये जे साहबको जनाय देनवारेहैं तौ साहबको जानिकै औरकी व्याधिहरै औजो क्रूरजे असाधु तिनकी संगति करै तौ आठौ पहर उपाधिहो लगी रहैहै १९६ ॥

जैसीलागीओरकी तैसीनिबहैथोर ॥
कौड़ीकौड़ीजोरिकै पूज्योलक्षकरोर १९७

और ते जो थोरहूथोर साहबमेंलगै भक्तिकरै औ तैसै छोरलौंनिबहि जाय है तौ जो थोरऊ थोर साहब में लगै औ साहब की भक्ति करै तौ जैसे कौड़ीकौड़ी जोरे केतो करोरि ह्वैजायहै ऐसे वाकी भक्तिहू ह्वैजाय है अनेक जन्मके संसिद्ध ते मुक्त ह्वै जायहै १९७ ॥

आजुकाल्हिदिनएकमें अस्थिरनहींशरीर ॥
केतेदिनलौंराखिहौ काचेबासननीर १९८

आजु काल्हि यहि कलिकालमें एकौ दिनमें शरीर स्थिर नहीं है केतनी बेर धो शरीर छूटिजाय आगेतो प्रमाण रह्यो है कि येती आयुर्दाय मनुष्यकी है अबतो कछू प्रमाण नहीं है केतो बेर शरीर छूटिजाय तेहिते साहब को भजन करो कच्चे बासन शरीरमें केतेदिन नीरराखौगे १९८॥

करुबहियाँबलआपनी छाड़ुबिरानीआस ॥
जाकेआँगननदीहैसोकसमरैपिआस १९९

अरे औरेऔरे मतनमें जो लगैहै तिनमें न लागु बिरानीआशा छोड़िदे तें काहूके छड़ाये न छूटैगो आपनी बाँहियाँको बल करु तेरे उद्धारकरिबेको तेरी बहियाँ श्रीरामचन्द्र हैं सो आगे कहिआयेहैं कि मोटेकी बाँह ले औ जाके आँगनमें नदियाहै सो का पिआसन मरैहै तेरातो साहब ऐसो रक्षकबनोहै तेंकाहे साहबकोभूलि औरेऔरे मतनमें लगैहै १९९॥

बहुबन्धनतेबाँधिया एकबिचाराजीव ॥
काबलछूटैआपने जोनछड़ावैपीव २००

कबीरजी कहैहैं कि ये बिचारेजीव ते बहुत बन्धनते बाँध्योहै बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरीबहैं सो जो तैं आपनेबिचारते छूटाचाहै तौ तैं न छूटैगो बिना श्री रामचन्द्रके छोड़ाये वोई तेरे पीउहैं उनकी या प्रतिज्ञा है कि जो एकहू बार मोको जीव गोहरावै तौनैं वाको छड़ाय लेउहौं ताते तैं साहब की शरण जाय जाते संसारते छूटिजाय जे साहबकी शरण जायहैं ते कालहू के माथ पै लातदै चलेजायहैं तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥ कालकेमाथेपग धरी सतगुरुकेउपदेश ॥ साहबअङ्कपसारिकै लैगेअपनेदेश १ गगनमँडल दृगमहलमें ह्वैघाटीकेईश ॥ नामलेतहंसाचले कालनबाचैशीश २ औ जे रामनाम नहीं लेइहैंते नहीं मुक्तहोयहैं तामेंप्रमाण ॥ यहऔतारचेतोनहीं पशुज्योंपालीदेह॥रामनामजान्योंनहीं अन्तपरामुखखेह२००॥

जिउमतिमारहुबापुरा सबकाएकैप्राण ॥
हत्याकबहुंनछूटिहै कोटिनसुनैपुराण २०१
जीवघातनाकीजिये बहुरिलेतवहकान ॥
तीरथगयेनबाचिहौ कोटिहिरादेदान २०२
तीरथगयेतुतीनजन चितचञ्चलमनचोर ॥
एकौपापनकाटिया लादेदशमनऔर २०३
तीरथगयेतेबहिमुये जूड़ेपानीन्हाय ॥
कहकबीरसन्तौसुनौ राक्षसह्वैपछिताय २०४

याकोअर्थस्पष्टईहै ॥ तीर्थमेंजे जायहैं ते तीर्थके जड़ेपानीमें नहायकै बहिमुये कहे खराबह्वै मुये काहेते कि जौन तीर्थजाब नहाबेकी बिधिहै सो एकौनकिये काहूकोधक्कामारयो काहूपै कोपकियो सो कबीरजीकहैहैं कि हे सन्तौ सुनौ ते नरराक्षस होइकै पछितायहैं कि हमसोंनबनी२०४॥

तीरथभैबिषबेलरी रहीयुगनयुगछाय ॥
कबिरनमूलनिकन्दिया कौनहलाहलखाय २०५

तीरथकहे तीनहैं रथजाके सत रज तम ऐसीजो त्रिगुणात्मिका माया. सो विष बेलरीभै चारिउयुगमें छायरही है कबिरन मूलनिकन्दिया कहे मूलजो रामनामहै ताको कबिरा जे जीवहैं ते निकन्दिया कहे न ग्रहण करते भये जो कोई कहबौकियो ताहूको खण्डि डारत भये सो या नाना कुमतिरूप हलाहल खाय जीव क्यों न नरकै जाय जाबेही चाहै २०५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेगुणवन्तीबेलरी तूगुणबरणिनजाय ॥
जरिकाटेतेहरिअरी सींचेतेकुँभिलाय २०६

हेगुणवंती बेलरी माया बाणी तेरोगुण बरणि नहीं जायहै कहालौं बर्णन करैं जबतेरी जरकाटन चलैहैं तीर्थ करिकै अहंब्रह्मास्मि कैकै तौ अधिक हरिअरी होयहै महीं ब्रह्महौं या अभिमान बढ़्यो अधिक हरिअरी भई तामेंप्रमाण ॥ कुण्डलाब्रह्मवार्तायांवृत्तिहीनाःसुरागिणः ॥ तेपि यांतितमोनूनंपुनरायान्तियान्तिच २०६ ॥

बेलिकुठंगीफलबुरो फुलवाकुबुधिबसाय ॥
मूलबिनाशीतूमरीसरीपातकरुआय २०७

यह मायारूपी जो बेलिहै सो कुठंगीहै काहेते कि याको दुःखरूपी फल बुरोहै औ कुबुधि जोहै सोई फूलहै वाकी नानाबासना जेहैं सोई बास बसायहै सो यामूल बिनाशीहै अर्थात् मिथ्याहै याको मूल नहीं है आपहीते उत्पत्ति भईहै औ जेते भर मायिक पदार्थहैं ते पातहैं तिनमें सबमें करुआईहै अर्थात् सांचे सुख नहीं हैं २०७ ॥

पानीतेअतिपातलाधूंवातेअतिझीन ॥
पवनहुंतेअतिऊतलादोस्तकबीराकीन २०८

पानिहुंते पातरधूमौं ते झीन औ पवनौंतेचंचल ऐसो जो क्षुद्रमनताको कबीराजे जीव ते दोस्त कियेहैं सो चौरासी लक्षयोनिमेंडारिदियो २०८॥

सतगुरुबचनसुनौहोसन्तौमतिलीजैशिरभार ॥
होहजूरठाढ़कहौंअबतैंसमरसँभार २०९

साहब कहैहैं सतगुरु जो कबीर तिनको बचन सुनिकै हेसंतौ आपनेमें मनको भारा मति लेहु तुमसों समर है रह्योहै सो मनको जीतिलेहु मैंहजूरमें ठाढ़कहौंहौं अर्थात् दूरि नहीं हौं जो तुम मनको जीतौ तौमैं अपनायलेहुं २०९ ॥

येकरुआईबेलरीओकरुवाफलतोर ॥
सिंधुनामजबपाइयेबेलबिछोहाहोर २१०

हेकल्पनारूपबेलि तेराफल बहुत करुवाहै जोकल्पना करैहै सोमरकही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को जायहै सो तब सिंधुनाम पावैगो जौने जगतमुख अर्थ वेदशास्त्र माया ब्रह्मजीव सब जगतभरोहै तौनेको जबपावैगो तब साहबमुखअर्थ जानिकै साहबरत्नको पावैगो तब कल्पनाबेलिको बिछोह ह्वैजायगो२१०॥

परदेपानीढारियासंतोकरहुबिचार ॥
सरमीसरमापचिमुयाकालघसीटनहार २११

गुरुमुख॥परदेते पानी ढारिया कहे गुरुवालोग नयेमंत्र बनायकै परदे परदे उपदेश कियो औ सिखापन दियो कि काहूसों कहियो न ई सब वेदशास्त्र झूठेहैं जीवात्मै सत्यहै ताहीमानो या समुझाय दियो सोवही धरे धरे जीव नरकको गये जो सांचो रामनामहै ताको न जान्यो वही गुरुवनको बतावो मंत्र ताहीके भरोसे सब पूजापाठ धर्मकर्म सब छाड़ि दियो कहैहैं हमनिःकर्महैं सो याबात पूछोतो कि भगवान पूजादिक ये कर्मनमें नहीं हैं तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥ औरकर्मसबकर्महैं भक्तिकर्मनिःकर्म। कहैकबीरपुकारिकै भक्तिकरौतजिभर्म ॥ सो देखोतो भाजीके लिये तोबाजारमें मूड़फोरैहैं भगवानकी भक्ति करिबेको कहैहैं हम निष्कर्महैं पिसानके चौकडारि मालपुवा धरिकै चौकाकरैहैं आरती करैहैं औ भगवानकी आरती करिबेको कहैहैं हमही मालिकहैं हमारी आरती सबजने करतेजाउ सो हेसंतो बिचारते तौजाऊ यह आपने सरमा सरमीमें पचिमुवाहै याकहैहैं किहम गुरुवनको उपदेश न छाड़ैंगे या नहीं जानैहैं कि यासरममें हमको औ हमरे गुरुवौको यम घसीटि डारैंगे नरकमें डारिदेयहैं तब मालिक ह्वैकै न बचौगे तब कौनरक्षा करैगो साहबकोतौ जानबै न कियो औ जिन साहबको जान्योहै हनुमान अंगद कबीरते अबलौं बनेहैं तेहिते साहबको भजनकरो जेहिते कालते बचि जाउ नहीं तो सरमा सरमीमें नरकमें पचि मरौगे औ तुम भगवानको नहीं मानोहौ भगवानके पाछे नहीं चलोहौ सो ब्रह्मराक्षस होइगो तामें प्रमाण॥ नानुव्रजतियोमोहात् व्रजन्तजगदीश्वरान्ज्ञानाग्निदग्धकर्मांपिसभवेत्ब्रह्मराक्षसः ॥ इति पुरुषोत्तम माहात्म्ये ॥ औ सबझूंठाहै साहब को भजनसांचाहै तामेंप्रमाणकबीरजीको॥ कञ्चनकेवलहरिभजन दूजोकथा कथीर॥ झूंठायाजआलतजि कपरासाँचकबीर १ जोरक्षकहैजीवकोनाहिं करोपहिचान॥रक्षककेचीन्हेबिना अन्तहोइगीहान २ त्यहितेतुमसाहबको भजनकरोजाते साहबकेलोकिजाउ जहांकालकी गम्यनहीं है तामेंप्रमाण॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहांकालकीगमिनहा मुआनसुनियेकोइ॥जोकोइगमिताकोकरैअजरअमर सोहोइ १ साहबते बिमुख करनवाले गुरुवालोग यमदूतहैं तामेंप्रमाण॥ नानारूपधरादूताजीवानांज्ञानहारकाः ॥ कालाज्ञांसमनुप्राप्य विचरन्ति महीतले २ औ कबीरजी चौकामें रघुनाथजीकी पूजा षोड़शही प्रकारकी लिख्यो है तामेंप्रमाण॥ अगरचँदनघसिचौकपुरावासतसुकृतमनभावा। भरझारीचरणामृतकीन्हाहंसनकोबरतावा । परनमौजऔररखवारासत गुरुशब्दलखावा। लौंगलायचीनरियलआरतीधोतीकलशलेसावा । श्वेत सिँहासनअगमअपारासोअतिबरठहराया। छाड़ेलोकअमृतकीकायाजगमें जोलहकहाया । चौरासीकोबन्दिछोड़ाया निरअक्षरबतलाया । साधुसबै मिलिआरतिगावैंसुकृतभोगलगाया । कहैकबीरशब्दटकसारा यमसोंजीव छड़ाया ॥ पूरणमासीआदिजोमङ्गलगाइये । सतगुरुकेपदपरसिपरमपद पाइये । पृथमैमँदिलझरायकैचँदनलेपाइये । नूतनबस्त्रअनेकचँदोवातना इये । तबपूरनगुरुकेहेतुतौअसनबिछाइये । गुरुकेचरणपरक्षालितहाँबैठा इये । गजमोतिनकीचौकसुतहांपुराइये । तापरनरियरधोतीमिष्टानधराइ ये । केराऔरकपूरतौबहुबिधिल्याइये । अष्टसुगन्धसुपारीलोपानमँगाइये। पलौसहितसोकलशसँवारिकैज्योतिबराइये । तालमृदङ्गबजायकैमङ्गल गाइये । साधुसङ्गलैआरतीउतारिये । आरतिकरिपुनिनरियरतबहिभराइ ये । पुरुषकोभोगलगाइसखामिलिखाइये । युगयुगक्षुधाबुझाइतौपाइअ घाइये । परमअनन्दितहोयतौगुरुहिमनाइये । कहैकबीरसतभायसोलोक सिधाइये ॥ इहां पूजाकेमंत्र नहीं लिख्यो सो पुरुष सूर्यनके मंत्रहैं ताते नहीं लिख्योहै॥ दशौदिशाकरमेटौधोखा । सोकड़हारबैठहीचोखा ॥ दशौ दिशाकरलेखाजानै । सोकड़हारआरतीठानै ॥ दशइन्द्रीकैपारिखपावै । सोकड़हारआरतीगावै ॥ जोनहिंजानैएतिकसाजै । चौकायुक्तिकरैक्यहि काजै ॥ हिसकारणकरहीं गुरुआई । बिगरैज्ञानजोपंथपराई ॥ पदसाखी अरुग्रन्थदृढ़ावै । बिनपारिखउत्तमघरपावै ॥ शब्दसाखीलिखिपारसकर हीं । होयभंतपुनिनरकहिपरहीं॥ बिनाभेदकड़हारकहावै । आगिलजन्म श्वानकोपावै ॥ पदसाखीनहिंकरहिबिचारा । भूंकिभूंकिजसमरैसियारा॥ पदसाखीहैभेदहमारा । जोधूझैसोउतरहिपारा ॥ जबलगपूरागुरूनपावै । तबलगभवजलफिरिफिरिआवै ॥ पूरागुरूजोहोयलखावै । शब्दनिरखिपर गददिखलावै ॥ एकबारजियपरचौपावै । भवजलतरैवारनहिंलावै ॥ शब्द भेदजोजानहीं सोपूराकड़हार ॥ कहकबीरधूमक्षहैसोहंशब्दहिपार२११॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्तिकहोतोकोइनपतीजै बिनाआस्तिकोसिद्ध ॥
कहैकबीरसुनोहोसन्तौ हीरैहीराबिद्ध २१२

कबीरजी कहेहैं कि आस्तिकमत जो मैं सबको बताऊ हौं तो कोई नहीं पतिआयहैं काहेते कि गुरुवालोगनकी बाणी मानि उनको सिद्धजानै हैं या नहीं जानैहैं कि ये आस्तिक नहीं हैं साहबको नहीं जानैहैं इनते संसार न छूटैगो साहबके जाननवारे जे साँचे साधुहैं तिनहीं ते संसार छूटैहै काहेते हीरा हीरैते बेधिजायहै २१२ ॥

सोनासज्जनसाधुजन टूटिजुरैसौबार ॥
दुर्जनकुम्भकुम्हारके एकैधकादरार २१३

सज्जन साधुजन जेहैं ते सोनाहैं जो सैकरनबार टूटै फिरिफिरि जुरि जायहै औ दुर्जन जेहैं कुम्हार के कुम्भ कहे घड़ा जो फूटा तो फिरि नहीं जुरैहै अर्थात् जो साधुजन कहू मार्गमें भूलिहूजायँ परन्तु फिर समझाये वाहीमें लगिजायहैं खोटीराह छाड़िदेइहैं औ दुर्जन जेहैं ते घड़ासे फूटिजायहैं अर्थात् जौने कुसंगमेंपरे तौनेहीकेभये फिरिनहीं बूझैहैं२१३॥

काजरकेरीकोठरी बूडन्तासंसार ॥
बलिहारीतेहिपुरुषकी पैठिकैनिकसनहार २१४

यहकाजरकै कोठरीमायाहै तौनेमें यहसंसार बूड़िगयो सो वह जीवकी बलिहारीहै जो मायामें आयनिकसिजाय २१४॥

काजरहीकीकोठरी काजरहीकाकोट ॥
तौभीकारीनाभई रहाजोओटहिओट २१५

गुरुमुख ॥ साहबकहैहैंकि यहमायाकाया काजरकीकोठरीहै याकेकाजरहीकेकोटबनेहैं नानाआशा नानामतमानेहैं सो यद्यपिऐसहू रह्यो परन्तु मोको रक्षकमानेरह्यो मेरीभक्तिकी ओटहीओट बचिगयो अर्थात् मायाते बचिगयो २१५॥

अर्बखर्बलोंदर्बहै उदयअस्तलोंराज ॥
भक्तिमहातमनातुलै येसबकौनेकाज २१६

अर्बखर्बलों द्रव्यभई अथवा अर्बखर्बलों विद्याको पटजानाभयो साखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दचौपाई दोहाकण्ठभये सबशास्त्र कण्ठभये औउदय अस्तलौं राज्य भयो बड़ो बादशाह भयो सबको अपने बशकैलियो अथवा महन्त भयो पण्डितभयो सबकोउदयअस्तलौंचेलाकरिलियो औशास्त्रार्थकरिकैजीतिलियो औमन न जीत्यो तौकहाकियो भक्तिकेमाहात्मकोनहीं तूलैहै२१६॥

मच्छबिकानेसबचले ढीमरकेदरबार ॥
रतनारीअँखियांतरी तूक्योंपहिराजार २१७

मनमें लगिकै सब जीव मच्छमायाको अनुभव ब्रह्महै ताहीके हाथ जीवबिकायगये औढीमरके दरबार सबचलेजायहैं अर्थात् कालमन रूपी जालमें सबको फँदायलेइहै ताहीकेदरबार सबचलेजायहैं अर्थात् माया के मारिबेको सबउपायकरैहैं कि मायाकोनाश कैकै ब्रह्महैजायँ मनरूपी जालमें फन्दे मछरी जा मायाको अनुभव ब्रह्म ताहीके साथ बिकाय गये अर्थात् वहीमेंलीनभये ताहूपै कालते न बचे सो साहब कहैहैं कि तैतो मेराहै तेरेज्ञाननयन रतनारेरहेहैं कहे मोमें तेरो अनुराग रह्योहै तैं काहे मनरूपी जालमें परिकै कालकेदरबार चलोजायहै जामेंमेरो अनुरागहै वे आपनो ज्ञान नयननखोलु मेरी निर्गुणभक्ति छागुणवारीहै सो करु मेरेपास आइकै मनमाया कालते बचिजायगो २१७॥

पानीभीतरघरकिया शय्याकियापतार॥
पाँसापराकरमको तबमैंपहिराजार २१८

जीवमुख॥जीवकहैहैं कि मैं बानी रूपपानीमें घरकियोहै गुरुवा लोग बाणीको उपदेश करिकै वहीबानी रूपपानीमें डारिदिये औसंसाररूपीजो पतारहै बनतामें शय्याकिया तबकर्मको पाँसापरयो तामें मनरूपी जाल म पहिरयो अर्थात् मनरूपजालमें फँदिगयो २१८॥

मच्छहोयनाबाचिहौ ढीमरतेरेकाल ॥
जेहिजेहिडावरतुमफिरौ तहँतहँमेलैजाल २१९

हेजीवजोतुम मच्छजोहै मायाको अनुभवब्रह्म सोईहैकै जोबाचाचाहो तौ न बाचौगे तेरो फँदावनवारो ढीमरजोहैमन सोईकालहै सो तुमको फँदायकै कालकेघर पहुंचायदेइगो अर्थात् जोज्ञानकरि ब्रह्महूहैजाउगे तब हूं मायाधरिही लैआवैगी अथवा समाधि करिकै प्राणको ब्रह्मांडमें पठा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यकै ज्योतिमें लीनौहोउगे तबहूं मायाधरिलै आवैगी तेहिते जौने जौने मतजे डावरतामें फिरौगे कहेमतमें लागौगे तहाँतहाँ यामनरूपी ढीमर जाल फेंकिकै तुमको धरिहीलैआवैगी तेहिते मनबचनके परे जोभक्तियोग तौनेको जानौ तबवह कालते बाचौगे सो भक्तिकेगुण पाछेकहिआयेहैंओ भक्तियोग मनबचनके परेहै तामेंप्रमाण कबीरजीके शब्दावली ग्रन्थको॥ अबधूऐसा योगबिचारा। जो अक्षरहू सोंहे न्यारा॥ जौनपवन तुमगङ्ग चढ़ावो करौगुफामेंबासा। सोतो पवन गगनजब बिनशै तबकह योग तमाशा॥ जबबिनशै इंगलापिंगला बिनशैसुषुमन नारी॥ जोउनमुनि सोनाड़ी लागी सोकहरहै तुम्हारी॥ मेरुदण्डमें डारिदुलैचा योगीआसन ल्याया। मेरुदण्डको खाखउठैगी कच्चेयोग कमाया॥ सोतो ज्योतिगगनमेंदरशै पानीमें ज्योंतारा। बिनशो नीरन सों जबतारा निसरौगे केहि द्वारा॥ द्वैतलाग बैराग कठिनहै अटके मुनिजन योगी। अक्षरलों सब खबरि बतावैजहँलों मुक्तिवियोगी॥ सो पदकह्यो कहे सो न्यारा सत्य असत्य निबेरा। कहैकबीरताहि लखुयोगी बहुरि न करियेफेरा २१६॥

बिनरसरीगरसबबँध्यो तामेंबँधाअलेख॥
दीन्होंदर्पणहाथमें चसमबिनाक्यादेख २२०

गुरुमुख॥ बिन रसरी सबके गर बांधिलियो ऐसो जो है धोखाब्रह्म तामें अलेख जे जीवहैं ते बँधेहैं साहब कहेहैं तिनके हाथमें दर्पणदियो रामनाम बताइदियो सो चसमतो हैनहीं कहे रामनामको ज्ञानतो हैनहीं आपनो रूप कैसेदेखैं कि मैं साहबको अंशहौं मकारस्वरूपहौं जब आपनो रूप न जान्यो तब मोको कहाजानै २२०॥

समझायेसमझैनहीं परहथआपबिकाय॥
मैंखेंचतहौंआपको चलासोयमपुरजाय २२१

साहब कहेहैं कि मैं बहुत समझाऊहौं कि तू मेरोहै मेरे पास आउ आनके हाथ कहां बिकान जायहै नानामतनमें लागेहै ब्रह्ममें लागेहै कि आपहीको मालिक मानेहै सो मैं बहुत खैंचोहौं आपनो ओर कि तैं मेरे पास आउ यह यमपुरहीको चलोजायहै २२१॥

लोहेकेरीनावरी पाहनगरुवाभार॥
शिरमेंविषकीमोटरी उतरनचाहैपार २२२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या काया लोहेकी नाव संसार समुद्र पारजावेको है मनपाहन ताको गुरुवाभार भरोहै तापर बिषयरूप बिषकी मोटरी शिरपर लीन्हे है सो जीव कैसेकै पारजाय २२२ ॥

कृष्णसमीपीपाण्डवा गलेहेवारहिजाय ॥
लोहाकोपारसमिलै तौकाहेकोखाय २२३

कृष्णसमीपके बसनवारे पाण्डवा ते हेवारमें गलेजाय सो कृष्णचन्द्र को जो वे जानते तो हेवार में काहेको जाते काहेते जो पारस में लोहा छुइजातोहै तामें काई नहीं लगैहै अर्थात् सोना ह्वैजायहै साहबको जाननवारो पारसही ह्वैजायहै यामें या हेतुहै कि जे नीकीतरह साहबको जानैहैं ते यही देह जायहैं सो गोपी याही देह गईहैं सो ब्रह्मवैवर्तक में प्रसिद्धहै सो गोपिका नीकीप्रकार जान्योहै २२३ ॥

पूरुबऊगैपश्चिमअथवै भखैपवनकोफूल ॥
ताहूकोतोराहुगरासै मानुषकाहेकोभूल २२४

पूरुबते सूर्य उगैहैं औ पश्चिम अथवैहैं पवनको फूल भखैहैं अर्थात् प्रबल पवन चलैहै वाही भ्रमतरहैहैं ऐसे सूर्यहैं तिनहू सूर्यको राहुगरासै है अरे मनुष्य जो तैं भूलेहै कि पवनते मैं आत्माको चढ़ायलेउँगो हजारन बर्ष पवनै खाय जियैगो मुक्त ह्वैजायगो सो तैं केतेदिन पवन खायगोजे सूर्य केतोदिन पवनखायो ताहूको कालराहु गरासै है तैं कैसे कालतेबचौगे २२४ ॥

नैनकेआगेमनबसै पलपलकरैजोदौर ॥
तीनिलोकमनभूपहै मनपूजासबठौर २२५

ज्ञान नैनके आगे मनहीं बसैहै यह धोखाब्रह्म मनहीं को अनुभव है पलपलमें दौरैहै नैनबिषयनमें लगैहै नानामतनमें लगैहै नानाज्ञान विचार करैहैं तीनिलोकमें या मनहीं भूपहै मनहीं की पूजा सबठौरहोइहै अर्थात् मनहीं ब्रह्महै पुजावैहै मनहीं जीवात्माको ज्ञान करैहै कि मनहीं मालिकहौं जो मनके परे साहबहैं ताको कोईनहीं जानैहैं २२५ ॥

मनस्वारथआपहिरसिक बिषयलहरिफहराय ॥
मनकेचलतैतनचलत तातेसरबसुजाय २२६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या आपनो स्वारथ मनही को मानिलियो मनको रसिक आपहीभयो अर्थात् मनको रस आपही लेइहै मनके किये जे पाप पुण्य तिनको भोगैया आपही बन्योहै याही हेतुते याके बिषय लहरि फहराय रहीहै सोई बिषयनको जब मन चल्यो तब जीवहु चल्यो मनके चलते तनहु चल्योजायहै बिषय करनको ताते सरबसुहानि या जीवकी होतीहै अर्थात् बिषय लिये पापादिक कर्मकियो नरककोगयो औयेई बिषयनलिये अप्सरनको भोग करैहै नानायज्ञादिक कियो स्वर्गको चलोगयो सो सरबसु याको साहबहै तिनके ज्ञानकी हानि ह्वैगई पाखडवनके दृष्टान्त ते उपासना काण्ड औ सूर्यके दृष्टान्ततेयोग औमनके अनुभवके दृष्टान्तते ज्ञान काण्ड औ बिषयलहरिके दृष्टान्तते कर्मकाण्ड कह्यो सो इनमें लगिकै नित्यबिहारी साकेतनिवासी जे श्रीरामचन्द्र तिनको जीव भूलिगये याही ते जीवनको जरामरण नहीं छूटैहै २२६ ॥

ऐसीगतिसंसारकी ज्योंगाड़रकीठाट ॥
एकपराजोगाड़में सबैजाततेहिबाट २२७

या संसारकी ऐसी गतिहै जैसे गाड़रकी पाँति जो एक गाड़मेंगिरै तौ वाहीराह सिगरी गिरती जायहैं सो या संसार को भेड़ियाधसान यहीहै एकजोकौनौमतगहैतौसिगरे वा मतगहैंनीकनागाकोबिचार न करैं २२७॥

वामारगतोकठिनहै तहँमतिकोईजाय ॥
जेगेतेबहुरेनहींकुशलकहैकोआय २२८

वा मार्ग तो महाकठिनहै जे साहब के पास जायहैं ते नहीं लौटै हैं उनको जनन मरन नहीं होयहै इहां फिरि आइकै वा मार्गकी खबरि को कहै अर्थात् कुशल को बतावै रहिगे कुसङ्गी तिनकोसङ्ग करिकै जीव नरक को चले जायहैं साहब को न जाने २२८ ॥

मारीमरैकुसंगकी केराकेढिगबेर ॥
वहहालैवहअँगचिरै बिधिनेसंगनिबेर २२९

केराकेसाथ बैरजामैहै तौ जैसे बैरके हाले केराको अङ्ग फटि जाय है वाकेकांटाते तैसे कुसङ्गकीन्हे साहब को ज्ञान जातरहैहै गुरुवनकेबचन जेहैं तेई कांटाहैं गुरुवालोग बैरहैं २२९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरातबहिँनचेतिया जबढिगलागीबेरि ॥
अबकेचेतक्याभया काँटनलीन्होघेरि २३०

गुरुमुख ॥ साहब कहैहैं कि अरेकेरा अरेजीवौ तेतो बड़ोकोमल है तब न चेतकियो जब तेरेसमीप बैरलागी अर्थात् गुरुवालोग उपदेश करनलगे अब तेरेचेत कहाभयो अबतो उपदेशरूप कांटा तोकोघेरिलियो मेरेज्ञानको फारिडारयो अब कहा चेतैहै तामेंप्रमाण ॥ आछेदिनपाछेगये कियोनहरिसोंहेत ॥ अबक्याचेतेमूढ़तें चिड़ियाचुनिगईखेत २३० ॥

जीवमरणजानैनहीं अंधभयासबजाय ॥
बादीद्वारेदादिनहिँ जनमजनमपछिताय २३१

सो कबीरजी कहैहैं कि साहब या पुकारतें उपदेश करैहैं पै जीवको कोई मरण नहीं जानैहै कि हम मरिजायँगे हमारो जनन मरन न छूटैगो सो एकतौ आँधरही रहे साहबको ज्ञान नहीं रहो तापै गुरुवनको उपदेश भयो आँधरते आँधर होत जायहैं बादीके द्वारे दादि नहीं पावै अर्थात् जासों पूछैहैं कि हम कौनके हैं हमारो जनन मरन कैसे छूटै नरकतेकौन हमारी रक्षा करै तौ वेतौ बादीहैं साहब को कैसे बतावैं औरऔर मत में लगाय दियो फिरि यादिहू किये साहबको न पायो ताते जगतमें जनमि जनमि पछितायहैं जनन मरन न छूट्यो गुरुवा साहब को ज्ञान भुलाय दियो तामेंप्रमाण बिप्रमतीसीको ॥ बिनपरसनदरशनबहुतेरे ह्वैहैं ब्रह्मज्ञानी । बीजबिनाविज्ञानकथैगो धोखाकीसहिदानी ॥ कृतिमउपासी कर्म्मविलासी जायँतेजनयमद्वारं । हमकरताभजिकरताह्वैरहे औरकेउपकारं ॥ रामकहैगासोनिबहैगा उलटिरहैजोगाड़ा । धोखादंदुरबहुतउठैगा रामभक्तिकेआड़ा ॥ हिंदूतुरुकदोऊदलभूले लोकवेदबटपार । सतगुरु बिनासिद्धनहिँकोई खिरकीकैनउधारं २३१ ॥

जाकोसतगुरुनामिल्यो ब्याकुलचहुँदिशिधाय ॥
आँखिनसूझैबावरा घरजारैघरबुताय २३२

गुरुमुख ॥ जाको सतगुरु नहीं मिलेहैं सो ब्याकुल ह्वैके चारयो ओर धावैहै कहूं ब्रह्ममें कहूं नानाईश्वरनमें नानामतमें लागेहै कि हमारीमुक्ति ह्वैजाय सो अरेबावरे तेरी आँखिनमेंनहीं सूझैहै औरऔरेमतनमें निश्चय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करैहै सो घूरहै ताको कहाबुतावैहै मेरोरूप औ आपनो स्वरूप ताको तौ जानु या घरतो जरोजाय है ताको बुताउ जामें जनन मरन छूटै घूर बुताये कहाहै २३२ ॥

अनतबस्तुजोअनतैखोजै केहिबिधिआवैहाथ ॥
ज्ञानीसोईसराहिये पारिखराखैसाथ २३३

श्रीकबीरजी कहैहैं कि अनतकी बस्तु अनतै खोजैहै कहे यहजीव साहब को अंशहै सदाको दासहै तौनेको कहैहै कि ब्रह्मकोहै देवतनको है ईश्वरनको दासहै सो जौने साहब को दासहै ताको तो जानबही न कियो आपनो स्वरूप कौनीरीतितेजानै सोहमतो सोई ज्ञानीको सराहते हैं जो पारिख आपने साथराखैहै कि हम साहबकेहैं दूसरेके नहीं हैं न ब्रह्म के न मायाके न ईश्वरनकेहैं सोईसाँचे ज्ञानीको हमसराहतेहैं २३३॥

सुनियेसबकीनिबेरियेअपनी ॥
सेंदुरकोसेंधौराझपनीकीझपनी २३४

जहांजहां सुनिये तहांतहां साहबहीकी बात निबेरि लीजिये औरमत खंडन करि डारिये काहेतेकि वेदशास्त्र सोईहै जामें साहबको परत्वहोइ जो कहूँ वेद शास्त्र करिकै साहबको न जान्यो ताको उपदेश यह रीतते जैसे सिंधुराजो हाथी ताको सेंदुर शृङ्गार कियो वे शुंडते धूरि भरिलियो झपनीकी झपनी कहे जैसे रज झपिगई तैसे जबलौं उपदेश सुन्यो तब लौंज्ञान रह्यो फिरि नहीं रहै औ जौने वेदशास्त्रमें साहबको परत्वहोइ सोई अर्थ तामेंप्रमाण चौरासीअंगकीसाखी ॥ रामनामनिजजानिले येही बड़ाअरत्थ ॥ काहेकोपढ़िपढ़िमरै कोटिनज्ञानगरत्थ २३४ ॥

बाजनदेवाजंतरी कलिकुकरीमतिक्रेर ॥
तुझेबिरानीक्यापरी तूआपनीनिबेर २३५

जे औरऔर बातैं सबकहैहैं सो या शरीर यंत्रकहे बीणाहै जैसोबजवैया बजावैहै तैसो बाजैहै ऐसे या शरीर मनके आधीनहै जहां चलावैहै तहांचलैहै कहूं बकबक करावैहै कहूँ ब्रह्म में लगावैहै नानामतको सिद्धांत करैहै सो वा यंत्रको बाजनदे मन बैकल कुरियाहै वाको बिषजो तेरेचढ़ैगो तौ तहूँ बैकलहै मरिजाइगो अर्थात् चौरासी योनिमें परैगो सोतोको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरानी कहापरीहै तैंआपनी निबेरु जो तेरेयंत्र बाजैहैं सुरति कमल में गुरू रामनाम ध्वनि उपदेशदेइहैं ताकोध्यानकरु रामनाम शब्द सबशब्द ते अलगहै सोई साँचहै और सब मिथ्याहैं सो तैंरामनामते सनेह करु रामनामको सनेहीमरत नहीं है तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥ शुन्यमरैअजपामरै अनहदहू मरिजाय ॥ रामसनेहीनमरै कहकबीरसमुझाय २३५ ॥

गावैंकथैंबिचारैंनाहीं अनजानैकोदोहा ॥
कहकबीरपारसपरसेबिन ज्योंपाहनबिचलोहा २३६

नानापुराण नाना शास्त्र नानामत गावैहैं औउनको कथनी करैहैं और औरको समुझावैहैं परन्तु सर्वशास्त्रको अर्थ साहबहीहै यहनहीं बिचारैहैं जैसे शुकचित्रकोटी राम कहिदिये न चित्रकूट अर्थ न रामको अर्थ जानैहै आनैमें आनसाजैहैं रसाभास करिदेयहैं ऐसे सर्व शास्त्रको सिद्धांत जो साहब पारसरूप तिनकोतो जानतही नहीं हैं कौनी रीतिजीव लोहा कंचन होइ अर्थात् जब स्पर्शहोय उनको जानि उनमेंलगै भजनकरै तब कंचन होय २३६ ॥

प्रथमैंएकजोहोकिया भयासोबारहबाट ॥
कसतकसौटीनाटिका पीतरभयानिराट २३७

प्रथममें यहजीवको एककियो कहेएकराहमेंलगायो किमेरीभक्ति करैगो तोसंसारते छूटिजायगो औ यह बारह बनभयो कहेआपने रूपीबान को बारह लच्छिमें लगायो अर्थात् छः शास्त्रके सिद्धान्तमें छःदर्शनमें लगाय दियो बारह बाटभयो मोको नजान्यो सोजब ज्ञा नरूपी कसौटीमें करयो कि साहबको ज्ञानहै कि नहीं तब पीतरही ह्वैगयो जगत्मुखै ठहरयो साहब मुख न ठहरयो साहबको ज्ञान सोनानाठहरयो २३७ ॥

कबिरनभक्तिबिगारिया कंकरपत्थरधोय ॥
अंदरमेंबिषराखिकै अमृतडारैखोय २३८

कबिरा जेजीवहैं तेभक्तिको बिगारि डारयो कंकर जोहै जौनेको पत्थर जोहै मन तामें धोयकै ॥ पाहनफोरिगंगयकनिकरी चहुँदिशिपानीपानी ॥ यापदमें पाहन मनको लिखिआयेहैं सो पाषाणमें जोकंकरधोवै तौ और चूर चूर ह्वैजाय सो मेरे भक्तिरूपी जलमें आपने अणुजीव कंकरको तैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं धोये पाथरमेंधोये ताते चूर चूरहै नानामत नाना देवमेंलागे आपने स्वरूपको न जाने अन्दरमें विषयरूपी विष राखि अमृतरूप साहब को ज्ञान ताको खोइ डारयो २३८ ॥

रहियएककीभयअनेककी बेश्याबहुतभतारी ॥
कहकबीरकाकेसंगजरिहै बहुतपुरुषकीनारी २३९

गुरुमुख ॥ साहबकहेहैं कि हेजीव तैंतोमेरो रह्योहै सो तैं अब बहुत मतनमें लगिकै बहुत मालिक मानन लग्यो सोकौन तेरो उद्धार करैगो बहुतभतारी बेश्या काके काके साथ जरैगी २३९ ॥

तनबोहितमनकागहैलखयोजनउड़िजाय ॥
कबहींदरियाअगमवहकबहींगगनसमाय २४०

येचारिउ शरीर बोहितकहे नावहैं तामें मनरूपी काग बैठोहै सो लख योजनलौं उड़िजायहै कबहूं संसार समुद्रमें बहतरहैहै औ कबहूं पंचवाँ शरीर जो कैवल्य चैतन्याकाश अगम जायबेलायक नहीं तामें महा-प्रलयादिकनमें समायहै सो जेहरिकी शरण जायहैं तेयहिसंसार समुद्रको गोखुरकी तुल्य उतरिजायहैं तामेंप्रमाण ॥ इच्छाकरभवसागरबोहितराम अधार ॥ कहकबीरहरिशरणगहुगोवक्षखुरबिस्तार २४० ॥

ज्ञानरत्नकीकोठरीचुपकरिदीन्होताल ॥
पारखिआगेखोलियेकुंजीबचनरसाल २४१

ज्ञानरत्नकी जो कोठरीहै तामें चुपको तारा दीन्हेही रहिये जो कोई समुझने वारो पारखी होइ ताहीकेआगे रसालबचन कुंजीते चुपकोतारा खोलिकै ज्ञानको प्रगट करिये काहेते कि जेनहीं समुझैहैं तिनके आगे न कहिये साहबको ज्ञानरत्न वे कहांजानैं २४१ ॥

स्वर्गपतालकेबीचमेंद्वैतुमरीयकबिद्ध ॥
षटदर्शनसंशयपरोलखचौरासीसिद्ध २४२

यहस्वर्ग पातालरूपीवृक्षमें जीवईश्वररूप दुइतुमरी लगीहैं तामेंजीव-रूपी तुमरी बेधीहै कहे जीवहीते नाना शब्द निकसैहैं शरीर सारीहैं सो येई जे जीवहैं षटदर्शन आदि दैकै तिनको नानामत करिकै संशयपरोहै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहबको नहीं जानैहैं एकसिद्धांत नहीं पावैहैं तिनको चौरासी लाख योनि सिद्धिबनीहैं भटकतही रहैहैं २४२ ॥

सकलौदुरमतिदूरिकरुअच्छाजन्मबनाउ ॥
कागगवनबुधिछोड़िदेहंसगवनचलिआउ २४३

साहब कहैहैं कि अरेजीव तेरोजो सकलहै शरीर सोई दुर्मतिहै सो पांचौ शरीरनको छोड़िदे औ आपनो अच्छो जन्म बनाउ कागबुद्धिको त्यागु मेरोदियो हंसशरीर तामें टिकिकै मेरेपास आउ २४३ ॥

जैसीकहौंकरौजोतैसी रागदोषनिरुवारै ॥
तामेंघटैबढ़ैरतिऔनहिंयहिबिधिआपसँभारै २४४

गुरुमुख ॥ साहबकहैहैं कि जैसो उपाय मैं तेरेछूटिबेको कहिआयोंहै तैसोकरै औ संसारमें नाना रागदोष करिराखेहैं ताको निरुवारै मोमें प्रीति रतिउभर घटै न पावै एक रसरहीआवै २४४ ॥

द्वारेतेरेरामजीमिलाकबीरामोहिं ॥
तूतोसबमेंमिलिरहामैंनमिलौंगातोहिं २४५

साहबकहैहैं कि हेजीव तेरेमुखद्वारमें मेरो रामअसनाम बनोहै ताको भजनकरि हे कबीरजीवौ मोको मिलौ जो कहौ कि साहब दयालुहैं वोई मिलिबेकी सामर्थ्य देइँगे सो सत्यहै तेरी दया मोको लगैहै परन्तु तैं सबमें मिलि रहाहै ताते मैं तोको न मिलूंगा तैं सब छोड़िदे तौमैं तोको आपसे मिलौं आइ २४५ ॥

भर्मपरातिहुँलोकमेंभर्मबसासबठाउं ॥
कहहिकबीरपुकारिकैबसैभर्मकेगांउं २४६

कबीरजी कहैहैं कि हेजीव साहबको तैं कैसेमिलै काहेते कि तीनों लोक कर्म भर्म जोहै धोखाब्रह्म सो भरोहै तिनमें भर्म बसोहै भरमहीमें सबमिलिरहेहैं भरमकेपार जेसाहबहैं तिनकोतो जानबेही न कियो २४६॥

रतनलमाइनिरेतमेंकंकरचुनिचुनिखाय ॥
कहकबीरयहअवसरबीतेबहुरिचलेपछिताय २४७

रतनजोहै साहबको ज्ञान ताकोरेतमें लड़ाय कहेलगाय दियो अति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठोरजोहै कंकर ब्रह्मज्ञान तामें आत्माको लगायो चुनिचनि खानलग्यो सो कबीरजी कहैहैं कि जब याअवसर बीति जायगो अर्थात् शरीर छूटि जायगो तब पछितायगो वा धोखाब्रह्ममें कुछु न मिलैगो २४७ ॥

जेतेरेणुबनस्पतीओगंगाकीरेणु ॥
पण्डितबिचाराक्याकहैकबिरकहेसुखबेणु २४८

सारासारके बिचार करनेवारे पण्डित तोको केतो समुझावैंगे कबीरजी कहैहैं किजेतो मैं समुझायोहै कि बनस्पती पत्रगिनि जायँ औ गंगाकी रेणु गनीगनि जायँ परन्तु मेरे मुखके बैन गनेनहीं गिनिजायहैं तऊ न तुम बूझ्यो २४८ ॥

हमजान्योंकुलहंसहौतातेकीन्ह्योंसंग ॥
जोजनत्योंबकबरणहौछुवननदेत्योंअंग २४९

कबीरजीकहैंहैं कि हमतो तुमको हंसके कुलमें जानते रहेहैं ताते तुम को उपदेश कियो तुम्हारो सङ्ग कियोहै जो तुमको बकैके बर्ण जानते कि हंस नहीं हौ तो एकौअङ्ग छुवन न देत्यों अर्थात् उपदेश की बातहू न चालतो उपदेश तौ कौन २४९ ॥

गुणियातोगुणकोगहै निर्गुणगुणहिघिनाय ॥
बैलहिदीजैजायफर क्याबूझैक्याखाय २५०

गुणियाकहे जो सगुणहोयहै सो गुणकोगहैहै सत रज तमको जोधारण करैहै सो अशुद्धई रहैहै ते मायातेनहीं छूटैहैं औ जो निर्गुण उपासकहोइ है सो सगुणकोघिनायहै सो निर्गुणौवाले सगुणवाले साहबकेगुणको कहा जानैं वैतो सगुण निर्गुणकेपरेहैं मायाकृत गुणते रहितहैं दिव्यगुण सहित हैं काहेते कहैहै कि बैलकेआगे जो जायफर धरिदीजिये तौ कहाबूझै क्या खाय ऐसे वैसाहबके गुणको कहाजानैं २५० ॥

अहिरहुतजिखसमहुतज्यो बिनादाँतकोठोर ॥
मुक्तिपरीबिललातिहै वृन्दाबनकीखोर २५१

बिनादाँत को ठोर जो है बूढ़ा गाय बैल ताको अहिरौ चराइबोछांड़ि देइहै औ खसम जो है बैलको मालिक सोऊ छोड़िदेइहै अर्थात् बूढ़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानिकै कि मेरेकामको नहीं है तब वहबैल वृन्दाबनकीखोरि बिललान लग्यो ऐसेजब मनरूपीदाँत उखारिडार्‌यो तब अज्ञानअहिर याकोछोड़ि दियो औ याको खसमजोहै माया सबलितब्रह्म सो जब मन न रहिगयो तब याहू छांड़िदियो तब आपहीआप मुक्तह्वैगयो सर्बत्र साहबही को देखनलग्यो जैसे वृन्दाबनमें डारमें पातमें कृष्णदेखिपरैं हैं मुक्ति परी बिललाइहै काको मुक्तकरै ऐसे यहू सर्वत्र साहबको देखनलग्यो मुक्तही ह्वैगयो मुक्ति काको मुक्तकरै तामें प्रमाण ॥ सबनदिया गङ्गाभइ सबशिल शालिग्राम ॥ सकलौबनतुलसीभयो चीन्हौआत्माराम २५१ ॥

मुखकीमीठीजेकहैं हृदयाहैमतिआन ॥
कहकबीरतेहिलोगसों रामौबड़ेसयान २५२

जो याभाँतिते मनकोत्यागिकै सर्व्वत्र साहबको देखैंहैं तिनको साहब सर्व्वत्र देखिपरैंहैं औ जिनकेमनमें औ मुखमें आनैआनहै तिनको कबीर जी कहैंहैं कि रामऊ बड़ेसयानहैं अर्थात् उनते दूरिरहैंहैं २५२ ॥

इततेसबतौजातहै भारलदायलदाय ॥
उततेकोइनआइया जासोंपूछौधाय २५३

नानाकर्म्मके नानाउपासनाके नानाज्ञानके भारलदाय लदायइततेसब जातहैं परन्तु उहाँते ऐसाकोई न आया जासोंधायकै उहाँकीखबरि पूछौं कि कौनफलपाया सो आपनेहीजन्मकी खबरिनहीं जानै साहबकीखबरि कहाजानै २५३ ॥

भक्तिपियारीरामकी जैसेप्यारीआगि ॥
सारापाटनजरिगया फिरिफिरिल्यावैमांगि २५४

यहभक्ति साहबकी बहुतपियारीहै जैसेआगि पियारीहोइहै कि आगि लगी औ सारापाटन कहे शहरजरिजाय पुनि आगीकीचाहना बनीहीरहैहै पुनिपुनि माँगिलैआवैहै आपनीकरैहै कामलोग ऐसेसाहबकी भक्तिकेतौ लोग साहबकीभक्तिकरि संसारते पारह्वै गये परन्तु अबतक जो कोई भक्तिकरैहै सो पियारे होतजायहै संसारते उतरिजायहै २५४ ॥

नारिकहावैपीउकी रहैऔरसँगसोइ ॥
जारमीतहिरदैबसै खसमखुशीक्याहोइ २५५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारितौ अपनेप्रीतमकीकहावैहै औ आनपतिलैके सोइरहैहै तौ खसम कैसेखुशीहोय ऐसे यहजीव साहबको अंशहै औरऔरमतमें लग्यो कहीं ब्रह्ममें कहीं मायामें सो साहब कैसे खुशीहोय २५५॥

सज्जनतौदुर्जनभया सुनिकाहूकोबोल ॥
काँसाताँबाह्वैरहा नहिंहिरण्यकामोल २५६

सज्जन शुद्धजीवहैं ते गुरुवालोगन के बोलसुनिकै दुर्जन ह्वैगये सो जो हिरण्यकामोलहै सो जातरहा काँसा ताँबाकीतुल्यह्वैरहाहै २५६॥

बिरहिनसाजीआरती दर्शनदीजैराम ॥
मुयेतेदरशनदेहुगे आवैकौनेकाम २५७

कबीरजीकहैहैं कि जे श्रीरामचन्द्रके बिरहीजीवहैं ते आरतीसाजेखड़े हैं कि जो रामजीमिलैं तौ आरतीकरैं संसारछांड़ि एक तुम्हारे मिलिबे की आशाकियेहैं सो हेसाहबदर्शनदीजै मुयेते दर्शनतोदेवहीकरोगे परन्तु औरेजीवनके काम न आवोगे काहेते वैतौ उपदेशकरहीनआवैंगे साहब बिरहीकोमिलैहै तामेंप्रमाण चौरासीअङ्गकीसाखी॥बिरहिनजरतीदेखिकै साईआयेधाय ॥ प्रेमबुन्दतेसीचिकै हियमेंलईलगाय२५७॥

पलमेंपरलयबीतिया लोगनलगीतमारि ॥
आगिलशोचनिवारिकै पाछेकरोगोहारि २५८

पलभरेमें प्रलयतेरी होतिजायहै आयु छिन्नहोतीजायहै यहीतमारि लोगनके लगीहै फिरि वा घरी नहीं मिलै ताते आगिलशोच छांड़िदेउ जौनधन जोरिजोरि स्त्रीलरिकनहेतधर्योहै पाछिलगोहारिकरौ साहबको जानों जातेजननमरनछुटै २५८॥

एकसमानासकलमें सकलसमानाताहिं ॥
कबिरसमानाबूझमें तहाँदूसरानाहि २५९

एकजोब्रह्महै सोसबजीवनमें समायरह्योहै औकबीरजीकहैहैं कि मैंबूझ मेंसमान्योहै ब्रह्मकेप्रकाशी औ सबजगत्के अन्तर्यामी ऐसे जे श्रीरामचन्द्र तिनको जबबूझ्यो तब वहीबूझमें समायरह्योहै सर्वत्र साहबही को देखनलग्यो दूसरा न देखतभयो मुक्तह्वै सांचा दासभयो तामें प्रमाण क-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीरजीको ॥ जीवनमुक्तै ह्वैरहै तजैखलककीआस ॥ आगेपीछेहरिफिरैं क्योंदुखपावैदास २५९ ॥

यकसाधेसबसाधिया सबसाधेयकजाय ॥
उलटिजोसींचैमूलको फूलैफलैअघाय २६०

एकजो साहबकीभक्तिहै ताकेसाधे सब सधिजायहै अर्थात् लोकौपरलोक बनिजायहै और जब साधेते अर्थात् नानामतनमें लागेते एक जो साहबकीभक्ति सो जातरहैहै औ ऊपरते वृक्षकेजलमें डारिराखै तौ पत्ता फूलफल सरिजायहै औ जो वृक्षको मूलतेसींचै तौ फूलैफलैअघायकै ऐसे सबकेमूल साहबहैं तिनकीभक्ति कीन्हे सबफूलै फलै है दूसरे की चाहनहो रहिजायहै दूसरेकीउपासनामें संसारनहीं छूटैहै २६० ॥

जेहिबनसिंहनसंचरै पक्षीनहिंउड़िजाय ॥
सोबनकबिरनहीठिया शून्यसमाधिलगाय २६१

जेहि बाणीरूपीबनमें कहे जेहिबाणीते ब्रह्मज्ञानौ कथैहै तौनीबाणीमें सिंह जे हैं शुद्धजीव साहबके जाननवारे ते नहो सञ्चरैहैं कहेनहीं जाय हैं औपक्षीजेहैं नानामतवारे नानाशास्त्रवारे ते आपनेआपनेपक्षकरि ब्रह्म को बिचारकरैहैं उड़ैहैं पार कोईनहीं पावैहैं सो तौनेबनको कबीर जे हैं जीव सो हीठिया कहे हीठतभयो वही शून्यसमाधि लगायकै साहब की प्राप्ती न भई तामेंप्रमाण चौरासीअङ्गकीसाखी ॥ शून्यमहलमेंसुन्दरी रहीअकेलेसोइ । पीउमिल्योनासुखभयो चलीनिराधारोइ २६१ ॥

बोलीएकअमोलहै जोकोइबोलेजानि ॥
हियेतराजूतौलिकै तबमुखबाहरआनि २६२

सो वै शून्यसमाधि लगायकै शून्यब्रह्ममेंजायहैं तिनको कहिआये अब ज्ञानकरिकै जे ब्रह्ममें लीनह्वैहैं तिनको कहैहैं कि वहबोली सोहं अमोल ताको जो कोई जानिकै हियेकेतराजूमें तौलिकै मुखकेबाहर लैआइकै बोलै कहे श्वास श्वासमें यहीजपै जातमें सो आवतमें हृदयतराजूमें यही तोलै कि सो पार्षदरूप हंस साहबकोहै २६२ ॥

वोहूतौवैसहिभया तूमतिहोइअयान ॥
तूगुणवंतावैनिरगुणी मतिएकैमेंसान २६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीकबीरजीकहैंहैं कि योगीतौ समाधिकरिकै शून्यमेंगये औ वोहू जेहैं वहज्ञानी सहजसमाधिवारे तौनौ ज्ञानकरिकै वैसेभये कहे वही शून्य में समायरह्यो तू मतिअयानहोय कहे अज्ञानीहोइ तूतो गुणवन्ताकहे दिव्य गुण सहित जे साहबहैं तिनकोहै दिव्यगुण तेरहूहै निर्गुणजो धोखाब्रह्म तामें तू काहे सानैहै तूमतिसान सांचा ह्वैकै तू असांचकाहेहोइहै २६३॥

साधूहोनाचहहुजो पक्काकेसँगखेल ॥
कच्चासरसोंपेरिकै खरीभयानहिंतेल २६४

जो तुम साधुहोना चाहोतौ पक्केजे साहबकेजाननवारे तिनकेसंगखेल कहे सत्सङ्गकरौ जो तुम और नानादेवता नानामतनमें लागौगे तौ तुम्हारो न लोकैबनैगो न परलोकै बनैगो जैसे कच्चेसरसों को पेरनो ना तेलैभयो न खरी भई २६४ ॥

सिंहैकेरीखालरी मेढ़ावोढ़ेजाय ॥
बाणीतेपहिंचानिया शब्दहिदेतबताय २६५

सिंहकी खालरीकहे शुद्धजीवनको बेष गुरुवालोग संसारमें बनाये कण्ठी छापा टोपी दीन्हेहैं सबलोग जानैं कि बड़ेसाधुहैं जैसे सिंहकी खालरी मेढ़ाको वढ़ायदेइ अर्थात् मढ़िदेइ तो सब सिंहैकी नाईं जानैंहैं परन्तु जब भ्या भ्या बोलनलग्यो तबबाणीते जानि परयो कि सिंहनहीं है मेढ़ाहै ऐसे जब गुरुवनको सत्संग कीन्ह्यो तब बाणीते जानिपरे कि ये साहबको नहीं जानैंहैं बेषैभरि बनायेहैं इनते संसार न छूटैगो तामें प्रमाण चौरासीअंगकी साखी॥ स्वामीभयातोकाभयाजान्योनहीं बिबेक॥ छापातिलकबनायकै दग्धैजन्मअनेक १ जपमालाछापातिलक सरैनएकौ काम ॥ मनकाचेनाचेवृथा सांचेराचेराम २६५ ॥

ज्यहिखोजतकल्पनभया घटहीमेंसोपूर ॥
बाढ़ेगर्बगुमानते तातेपरिगोदूर २६६

जौने मुक्तिको खोजत खोजत कल्पै भयो अर्थात् कल्पना करत करत कल्पनारूप ह्वैगया ब्रह्ममें लीनभया मुक्तिको मूल जो रामनाम सो तेरे घटहीमें है ताको अहंब्रह्मास्मिके गर्बते तोको दूरिपरिगयो अबहूं समुझ तौ तेरे समीपही हैं २६६ ॥

दशद्वारेका पींपरा तामेंपक्षीपौन ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहिबेकोआश्चर्यहै जायतोअचरजकौन २६७
रामहिंसुमिरहिरणभिरै फिरैऔरकीगैल॥
मानुषकरीखालरी ओढ़िफिरतहैबैल २६८

रामनामको तौ सुमिरैहैं परन्तु रामनाम जपिबेकी बिधि सतगुरु ते नहीं पाये बादबिवाद करत साधुनते भिरतफिरैहैं साहबकोनहीं जानैहैं ते मानुषकीखाल ओढ़तौहैं परन्तु बैलहैं अर्थात् पशुहैं जानैंनहीं हैं २६८॥

खेतभलाबीजौभला बोइयेमूठीफेर॥
काहेबिरवारूखरा यागुणखेतैकेर २६९

खेत तो नीकईहै परन्तु तृणादिकनके जरको कारण वामें बनोहै त्यहिते बिरवा उठैनहीं पावै तृण छाय जायहै सो या गुण खेतैको है ऐसे खेत अन्तःकरणमें नानाबासना रूप तृण जामिरहेहैं तामेंरामनामरूपी बीज फेरिफेरि बोवैहैं परन्तु तृण बासननके मारे लगैनहीं पावै साहबमें प्रीति नहीं होयदेइ जब सत्संग करिकै निराय डारै तौ तृण औ रामनामरूप अंकुर दृढ़ह्वैजाय साहबको जाननलगै संसार छूटिजाय पापजारैमें नामकी बड़ी शक्तिहै तामें प्रमाण॥ नाम्नीतियावतीशक्तिःपापनिर्दहनेहरेः॥ तावत्कर्त्तुनशक्नोति पातकम्पातकीजनः २६९॥

गुरुसीढ़ीतेऊतरै शब्दबिमूखाहोइ॥
ताकोकालघसीटिहै राखिसकैनहिंकोइ २७०

गुरुके बताये साधनसीढ़ीमें चढ़ो फिर उतरि और और साधनमेंलगो रामनामते बिमुखह्वैगयो ताको कालनरकमें घसीटिकै डारिहीदेइगो कोई नहीं राखिसकैगो २७०॥

आगिजोलागीसमुदमें जरैसोकादौझारि॥
पूरुबपश्चिमपण्डिता मुयेबिचारिबिचारि २७१

या संसारसमुद्रमें अज्ञानरूपी अग्निलगीहै सो पूरुब पश्चिमके पंडित कहे उदय अस्तके पण्डित बिचारि बिचारि मरे परन्तु अज्ञानरूपी अग्नि न बुतानि उपासना करिकै ज्ञानहू करिकै संसारसमुद्र सूखिहूगयो परन्तु वा मूल अज्ञानरूप कादो में फँसे जरेजायहैं २७१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोमोहिं जानैत्यहिमैंजानौं लोकवेदकाकहानमानौं ॥
भूभुरघामसबैघटमाहीं सबकोउबसैशोककीछाहीं २७२

गुरुमुख॥अज्ञानरूपी घामते अन्तःकरणरूपी भूमि सबके तपिरही है शोकरूपी जे नानाउपासना तिनकी छाया चाहैहैं परन्तु वहीते और तप्त होयहै शीतल नहीं होइहै सो मोको तो जानतही नहीं है मैं वाको काहे को जानौं जो कोई मोकोजानै तौ मैं वाकोजानौं जानबही करौं लोक वेद तो कहतहीहै कि जो जाकोहै सो ताहूको जानैहै सो या लोक वेदको कहा मानबहीकरौं अथवा कैसोपापीहोइ जो मेरी शरणआवै तौ मैं लोक वेदका कहा न मानू वाको शरणमें राखबईकरौं वाके सम्पूर्ण पाप मही छुड़ायदेउँ तामेंप्रमाण ॥ शकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते ॥ अभयसर्व भूतेभ्योददाम्येतद्व्रतम्मम २७२ ॥

जौनमिलासोगुरुमिला चेलामिलानकोइ ॥
छइउलाखछानबेरमैनी एकजीवपरहोइ २७३

श्रीकबीरजी कहैहैं कि एकजीवके उपदेशपर मैं छःलाख छान्नबेरमैनी युगयुग कह्यो पै मेरो कह्यो कोई न समझ्यो जो मिलो सो गुरुहीमिलो चेलाकोई न मिलो जो मेरोकहो बूझै साहबकोजानै संसारते छूटै छान्नबे रमैनीमेंप्रमाण॥ सहसछान्नबेऔरछलाष॥युगपरमाणरमैनीभाषा २७३ ॥

जहँगाहकतहँहौंनहीं हौंजहँगाहकनाहिं ॥
बिनबिबेकभटकतफिरै पकरिशब्दकीछाहिं २७४

गुरुमुख ॥ जहां नानाईश्वर नानाउपासना नानाज्ञान इन एकहूको जहां गाहकहै तहां मैं नहीं हौं अथवा जहां कौनिहू बस्तुकी चाहहै तहां मैं नहीं हौं जहां कौनिहू बस्तुकी चाहनहीं है तहां मैं हौं सो बिनाबिबेक कहे बिना सांच असांचके जाने अर्थात् सांच जो रामनाम ताके बिना जाने गुरुवालोगनके शब्दकी छांह पकरिके संसार भटकत फिरैहै जनन मरन नहीं छूटैहै जब रामनामजानै तब संसारते छूटै तामें प्रमाण॥सप्तकोटिमहामंत्रःश्चित्तविभ्रमकारकाः॥एकएवपरोमंत्रोरामइत्यक्षरद्वयम्२७४॥

शब्दहमाराआदिका इनतेबलीनकोइ ॥
आगेपाछेजोकरै सोबलहीनाहोइ २७५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुमुख ॥ साहब कहैंहैं कि शब्द जोहै हमारो रामनाम सो आदिका है अर्थात् रामनामही ते सबकी उत्पत्ति भईहै सो या रामनामते बली कोईनही है यह आदिशब्द जो रामनाम ताके जपिबे में जो आगे पीछे करैहै अर्थात् याको बलछोड़ि और देवतनको बलमानै है सो बलहीन होइहै अर्थात् मुक्तिहोनेको बल नहीं रहिजाय २७५ ॥

नगपषानजगसकलहै लखिआवैसबकोइ ॥
नगतेउत्तमपारखी जगमेंबिरलाकोइ २७६

या जगमें नग जोहै तिहारो मन सो पाषाण ह्वैरह्योहै त्यहिते तुमहू पाषाण ह्वैगयो मनमें मिलिकै जगह्वैगये सो वहीमें आवैहै वहीमें जाइहै सो नग जोहै मन त्यहिते उत्तम जे पारखी जीवहैं अर्थात् मनते न्यारे जे जीवहैं तौन जक्तमें कोई बिरला है औ मनको मानिक पीछे बेलिमें कहिआयेहैं २७६ ॥

ताहिनकहियेपारखी पाहनलखैजोकोइ ॥
नगनलयादिलसोलखैरतनपारखीसोइ २७७

जो कोई पाहनरूपी मनको देखैहै अर्थात् जबभरम जाकेमन बनोरहै है ताको पारखी न कहिये औ जो कोई नर आपनो आत्मारूप जोहै नगस्वस्वरूप सो आपने दिलमें रामनाममें देखैहै अर्थात् मकारस्वरूप जोहै आपनो स्वस्वरूप ताको रकाररूप जेहैं साहब तिनके समीप देखै सोई पारखी है जब नग मुंदरीमें जड़िजायहै तबही शोभा होयहै नहीं तो पाहनैहै २७७ ॥

सारीदुनियाबिनसती अपनीअपनीआगि ॥
ऐसाजियरानामिला जासोंरहियेलागि २७८

सारी दुनियां आपनी आपनी आगिमें कहे कोई ब्रह्ममें लागिकै कोई नानादेवतनमें लागिकै कोई नानामतनमें लागिकै बिशेषते बिनसिरहे हैं साहबको नहीं जानैंहैं सो कबीरजी कहैंहैं ऐसा जियराकहे रामोपासक सन्त कोई न मिला जासों लागिरहैं अर्थात् सत्संग करौं कहे जे साहबको नहीं जानैं ते बिनसिजायहैं तामें प्रमाण ॥ यश्चरामंनपश्येत यंचरामोनपश्यति ॥ निन्दितःसर्वलोकेषु स्वात्माप्येनंविगर्हते २७८ ॥

सपनेसोयामानवा खोलिदेखैजोनैन ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवपराबहुलूटमें नाककुलेननदेन २७९

जो मानुष आपनी आँखि खोलिकै देखै तो सब स्वप्न है यह जीव बहुत लूटमें परयोहै नानामतनमें नानाउपासननमें लग्योहै साहबको नहीं जानै ताते न कछु लेनहै न देनहै याते या आयो कि इनमें वृथैलागे हैं मुक्ति काहूको दई नहीं दैजायहै या सब स्वप्नहै तामें प्रमाण कबीर जीको गोरख पूछैहैं ॥ कर्त्ताकोस्वरूपकौन । अण्डकोस्वरूपकौन । अण्ड पारबसैकौन । नादबिन्दुयोगकौन । जीवईश्वरभोगकौन । भौमीअवतार कौन। निराकारपारकौन । पापपुण्यकरैकौन । वेदऔबेदान्तकौन । बाचा औअबाचाकौन । चन्द्रसूर्यभासकौन । पञ्चमेंपूपञ्चकौन । ओहंऔसोहं कौन । स्वर्गनर्कबसैकौन। पिण्डऔब्रह्माण्डकौन । आत्मपरमात्मकौन । जरामरणकालकौन । गुरुशिष्यबोधकौन । अक्षरक्षरनिर्क्षरकौन ॥ तब कबीरजी बोले ॥ नादबिन्दुयोगस्वप्न जीवईश्वरभोगस्वप्न भौमीअवतार॥ स्वप्न निराकारस्वप्नहै । पापपुण्यकरैस्वप्न वेदऔबेदान्तस्वप्न बाचा औ अबाचास्वप्न चन्द्र सूर स्वप्नहै ॥ इत्यादिक बहुत बाक्यहैं २७९ ॥

नष्टैकायहराजहै नफरकबरतैद्वैक ॥
सारशब्दटकसारहै हिरदयमाहिँविवेक २८०

नष्टजोहै धोखा ताहीको यहराजहै अर्त्थात् अहंब्रह्मास्मिकै सब नष्ट भये औ नफर जो है काल ताहीकोछेक संसार बरतरह्योहै अर्त्थात् सब संसार को काल छेकिछेकि खाये जायहै सारशब्द जो रामनाम टकसार ताको हृदयमें कोईकोई विवेककरतभये अर्त्थात् कोईसाहबको नजानत भये संसारते न छूटतभये २८० ॥

दृष्टमानसबबीनशै अदृष्टलखैनाकोइ ॥
हीनकोईगाहकमिलै बहुतैसुखसोहोइ २८१

जहाँभर दृष्टिमानहै सो सबबिनशैहै नाशहोयहै औ मनबचनके अगोचर जो ब्रह्महै ताकोतो कोई देखतैनही है धोखही है सो दृष्टिअदृष्टि के परे हीन कोईकहे कोईहीनहोइ अर्त्थात् दीनहोइ ताको गाहक ऐसे जे साहब श्रीरामचन्द्रते मिलैं जो जीवकोतौ बहुतसुखसो होय अर्त्थात् जनन मरन छुटिजाय साहबके समीप सेवामें बनोरहै तामें प्रमाण ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोसाईंजीकोदोहा ॥ पदगहिकहतिसुलोचना सुनहुबचनरघुबीर ॥ तुमहिं मिलेनहिंहोइभव यथासिन्धुकरनीर २८१ ॥

दृष्टिहिमाहिंबिचारहै बूझैबिरलाकोइ ॥
चरमदृष्टिकूटैनहीं तातेशब्दीहोइ २८२

जोकहो साहबको देखै कैसेहैं तौ दृष्टिहीमें बिचारहै साहबको देखैहै या चर्मदृष्टिकरिकै साहबकोनहीं देखै या बात कोईबिरला बूझैहै याजीव की चर्मदृष्टि नहीं कूटैहै तेहिते जो मन बचनमें आवैहै सो ज्ञान करैहै शब्दीहैजायहै विषयनमें लागैहै २८२ ॥

जबलगढोलातबलगबोला तबलगधनव्यवहार ॥
ढोलाफूटाधनगया कोईनझाँकैद्वार २८३

जबलग या ढोलाकहे शरीरहै तबलगबोलैहै तबलग सबधन व्योहार जब ढोलाशरीर कूट्यो कहे फट्यो तब घर धन व्यवहार सब आनै को ह्वैगयो कोई वाकोनाम नहीं लेइ न कोई द्वार झाँकै याते या आयो कि साहबकोजानों जाते संसारकूटै २८३ ॥

करुबन्दगीविवेककी भेषधरेसबकोइ ॥
सोबन्दगिबहिजानदे शब्दविवेकनहोइ २८४

अरे मूढ़ बिबेक करिकै बन्दगी करु ई सब जितने मतवाले भेष धरे हैं तिनमें शब्द जो रामनाम ताको बिबेक जाके न होइ अर्थात् साहब न जानतहोइ ताको बहिजानदे न ग्रहणकरु जे संसारसुख अर्थछांड़िकै साहबमुख अर्थ बिबेक करि जानैहैं ताको बन्दगी करु २८४ ॥

सुरनरमुनिओदेवता सातद्वीपनवखण्ड ॥
कहकबीरसबभोगिया देहधरेकादण्ड २८५

जे साहबमुख अर्थजानि साहबमें न लगे असांचमतनमेंलगे ते सात द्वीप नवखण्ड जहांभर सुर नर मुनिहैं ते सब कर्मभोग भोगैहैं २८५ ॥

जौलगदिलपरदिलनहीं तौलगसबसुखनाहिं ॥
चारोंयुगनपुकारिया सोसंशयदिलमाहिं २८६

जबलग दिलपर दिलकहे जो दिलहै मन ताके परे जो साहबको दियो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन हंसस्वरूपवाला सोमन जबलग याकेनहीं है तबलग याकोसुखनहीं है अर्थात् एकहू सुख नहीं है सो कबीरजी कहहैं कि मोको चारौ युगन में चारिरूपते पुकारत भयो पै सो संशय इनके दिलमें पराहीरह्यो साहबको न जानो जातेसंसार छूटै २८६ ॥

यंत्रबतावतहोसुना टूटिगयेसबतार ॥
यंत्रबिचाराक्याकरै गयोबजावनहार २८७

अनहद आदिक बजावत मैं सुन्योहै जब बजावनहारो जीव जब शरीरते निकसिगयो कहे शरीर छूटिगयो तब नस जे सबतारहैं ते टूटिगये तब यंत्र जो शरीरहै बिचारा सो कहाकरै अरु वह अनहद बाजा कैसे बाजै जहां भरबाणी सब बोलैंहैं ते सबबाजैहैं जीव बजावनवारो निकसो बाजा कहाकरै २८७ ॥

जोतुमचाहौमूझको छांडुसकलकीआस ॥
मेराऐसाइक रहै सबकुछतेरेपास २८८

गुरुमुख ॥ साहब कहैंहैं कि जो तुम मोको चाहो तो सबकी आशा छांड़िदे जब तें सबकी आशाछोड़िकै मोमें लगैगो तब तें मेरा ऐसा ह्वै रहै औ सबकछु तेरेपास ह्वैजायगो कछु कमी न रहैगी अथवा जैसा मैं द्विभुजहौं तैसा तुहूं रहैगो २८८ ॥

साधुभयातोक्याभया जोनहिंबोलबिचार ॥
हतैपराईआत्मा जीभलियेतलवार २८९

जो वाके बोलकहे शब्दको बिचार नहीं है तौ साधुभया तो क्याभया वातौ जीभरूपी तलवारलियेपराई आत्मा हतैहै कैसे किसबको उपदेश करिकै नानामतनमें लगावैहै सो उनको उद्धारकबहूँ नहीं होयहै तेहिते अरेमूढ़ौ आपनी जीभरूपी तरवारिते कहे सबकेआत्माको हतन करौहौ जीवनकोजननमरनदेवावौहौबिनासाहबकेजानेजननमरन नछूटैगो२८९॥

हंसाकेघटभीतरे बसैसरोवरखोट ॥
जीवठौरलागैनहीं रहासोआटैओट २९०

याहंसाजोहै जीवतौनेके घटभीतर एकमनरूपी सरोवर खोटहै तहैंया हंसजीव बसैहै सो याजीवठौरमें न लग्यौ कहेसाहबकेपास न गयो वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनके ओटही ओटमेंरहिगयो अर्थात्मनरूपी सरोवरैमें रहिगयो२९०॥

मधुरबचनहैंऔषधी कटुकबचनहैंतीर ॥
श्रवणद्वारहवैसंचरै शालैसकलशरीर २९१

कटुकबचन तीरहैं औ मधुरबचन औषध हैं ते ये दोऊ श्रवण द्वारहैकै सञ्चरैहैं कहे जाइहैं औसिगरे शरीरमें शालैहैं कहेव्याप्त ह्वैजायहैं जोकोई मीठबचनकह्यो तौ वासों रागभयो औ जोकोईकटुकबचनकह्यो तौ वासों द्वेषभयो औ मधुर बचन ते जहां राग कियो जहांमन लग्यो तहैं जन्मत भयो औ कटुबचनसुनि कोपकरि बधादिक कियो तेहिते आयु हानिभई मरतभयो याते मधुरबचन कटुबचन दोऊ बरोबर शालैहैं २९१॥

ईजगतोजहडेगया भयायोगनाभोग ॥
तिलतिलझारिकबीरलिय तिलठीझारैलोग २९२

याजगतो जहडेगयो कहे ह्वैगयो काहेतेकि न याको योगही सिद्धभयो न भोगही सिद्धभयो कैसेहजारन वर्षलों योगके जिये महाप्रलय भररहे आखिर नाशही ह्वैजाइहै जोधर्मकरि दिबिको भोगकियोतौजब पुण्यक्षीण ह्वैजाइहै तबतो मृत्युहोलोकको आवैहै याते न भोग सिद्ध भयो न योग सिद्धभयो सो तिल जोहै रसरूपाभक्ति साहबकी ताकोतो कबीरजीकहैंहैं किमैं झारिलियो तिलेठीजोहै नानामत नानाउपासना तिनकी ओरलोग झारैहैं नामकरैहैं जामेंरस नहीं है २९२ ॥

ढाढसदेखुमरजीवको धसिकैपैठिपताल ॥
जीवअटकमानैनहीं गहिलैनिकर्योलाल २९३

मरजीवते कहावैं हैं जेसमुद्रमें पैठि रत्न निकारैहैं ताको ढाढस देखो ढाढस करिकै पातालमें पैठैहैं जीवको अटक नहीं मानैहैं समुद्रते लाल गहिलैआवैहैं तैसेजीव तेंहूँ मनादिकन को त्यागिदे मरिबेको न डेराय विश्वास करिकै साहब रसरूप सागरमें पैठु २९३॥

येमरजीवाअमृतपीवा काधसिमरैपताल ॥
गुरुकीदयासाधुकीसङ्गति निकसिआउयहिकाल २९४

ये मरजीवा कहे तेंतो अमृतको पीवनवारो पातालमेंधसिकैकहेसंसार में पसिकै कहांमरैहै औ जियैहै नरकको चला जाइहै सो गुरूकी दयाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधुनकी सङ्गतिते तू यहीकालमें संसारते निकसि आउ जोतें साहबके जाननवारे साधुनकी शरणहोइ वाही चालचलै २६४॥

एकबुन्दहलकेगये केतेगयेबिलोइ ॥
एकबुन्दकेकारणेमानुषकाहेकोरोइ २६५

हा इति कष्टमेंहै सो कबीरजी कहैंहैं कि हाय केतन्यो जीव लफेकहे नैगये अर्थात् ढरकि गये अर्थात् साहबके मार्गचले साहबकी उपासना कियो पै गुरुवालोग जो नानामत लखायो तिनहीमें लफेकहे नैगये सो केतौ तौ याप्रकारसों गये औकेतौ पहिलेहीते बिगोयगये कहे बिगरिगये सो हे मानुष श्रीरामचन्द्रको जो आनन्दसमुद्र ताके एकबुन्दके कारण हे संसारीजीव तैं काहेरोवैहै धोखाब्रह्मकोछाड़ि साहबकोजानु जाते जनन मरणछूटै २६५ ॥

आगिजोलगीसमुद्रमें टुटिटुटिखसैजोझोल ॥
रोवैकबिराडिम्भिया मोरहीराजरैअमोल २६६

या संसारसमुद्रमें अज्ञानरूपी आगिलगी कर्मरूप झोला जे शरीरके कारणहैं ते या देहते टुटिटुटि वादेहमें गये या देह जरिगई याहीरीतिते नानादेह धरैहैं संसार नहीं छूटैहै सो कबीरजी रोवैहैं कि दम्भीह्वैकै मोर अमोल हीराजीव ते अज्ञानरूपी आगिमें जरेजायहैं २६६ ॥

साँचेशापनलागिया साँचेकालनखाय ॥
साँचेसाँचेजोचलै ताकोकहानशाय २६७

कबीरजी कहैंहैं कि दम्भ करिकै काहे अज्ञानरूपी आगिमें जरेजाउहौ जोसांचे साहबमें लगिकैसांचे साधुहोउ तौ वे सबतेजबरहोइहैं न वाको शापलागै न वाको काल खायहै सो जाम्बवन्त हनमानादिक अबतक बनेहैं २६७ ॥

पूरासाहबसेइये सबबिधिपूराहोइ ॥
ओछेनेहलगाइयेमूलौआवैखोइ २६८

पूरा साहब जे सर्वत्र पूर्णहैं तिनको जो सेइये तौ सबबिधि पूराहोइ औ ओछेजेहैं नानामत धोखा तौनेमें जो लगाइये तौ नफाकी कौनचालै मूलौकी हानि ह्वैजायहै २६८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाहुबैद्यघरआपने बातनपूछैकोइ ॥
जिनयहभारलदाइया निरबाहैगासोइ २९९

कबीरजी कहैंहैं कि हेबैद्य गुरुवालोगौ तुम आपने घरको जाहु तुमको बात कोईनहीं पूछैहै जिन यह संसाररूपी भार लदायाहै कहे संसार उत्पत्ति कियाहै तौनै निर्बाहैगा अर्थात् न निर्बाहैगा येतो सब मायिकहैं अधिक बांधनेवारेहैं छोड़ावनेवारे नहीं हैं २९९ ॥

औरनकेसमुझावते मुखमेंपरिगोरेत ॥
राशिबिरानीराखते खायेघरकोखेत ३००

औरेनको उपदेश करत करत तुम्हारे मुखमें रेतकहे धूरि परिगई अर्थात् कुछु न तुमसों बनिपरयो बिरानी राशि तो तुम राखतेहौ कहे औरे औरेको उपदेश करिकै समुझावतेहौ आपने घरको खेत जो स्वरूप ताको नहीं ताकतेहौ काल खाये लेइहै सो तुम्हारो स्वरूपखेततौ ताको नहीं रहै औरकी राशिकहे आत्मा तुमकैसे ताकौगे ३०० ॥

मैंचितवतहौंतोहिंको तुमकहँचितवैऔर ॥
नालतऐसेचित्तको चित्तएकदुइठौर ३०१

गुरुमुख॥साहब जीवसों कहैंहैं कि मैंतो तेरीओर चितवौहौं सदा सन्मुख बनेरहौंहौं औ तुकहा और औरमें चित्तलगावैहै सो ऐसे तेरेचित्तको नालतिहै कि एकआपनेचित्तको मायामें औब्रह्ममें दुइठौर लगायेहै ३०१ ॥

तकततकावततकिरहे सकेनबेझामारि ॥
सबैतीरखालीपरे चलेकमानीडारि ३०२

साहब कहैंहैं कि जेजीव मोको तकैंहैं अर्थात् मेरेसन्मुख भयेहैं तिनको माया कालादिक जेहैं ते कामक्रोधादिकन ते तकावैंहैं कि जबहीं संधिपावैं तबहीं मारिलेइ औ आपहू ताके रहैंहैं परन्तु जेजेमोको तकरहे चारयोयुग तिनको येकबहूं न बेझामारिसकैहैं सोजबसबैतीर खाली परी माया कालादिकननते तब कमानी डारिकै चलेगये अर्थात् मोको जे हंसजीव जानैंहैं तिनमें माया कालादिकनको जोर नहीं चलैहै ३०२ ॥

जसकथनीतसकरनियौ जसचुम्बकतसनाम ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहकबीरचुम्बकबिना क्योंछूटैसंग्राम ३०३

जस साधुनकी कथनीकहे कहैंहैं तस करनिउहै कैसे जैसेचुम्बक श्री रामचन्द्रहैं तैसे उनको नामहू है सो कबीरजी कहैंहैं कि रामनाम चुंबक बिना कामादिकनको संग्राम याको कैसेछूटै जैसे लोहेकोकना धूरिमें मिलोरहैहै जब चुम्बक देखावो तौ वाहीमें लपटिआवैहै धूरिमें नहीं रहै ऐसे या जीव साहबकोहै साहबको नामलेइहै तबहीं संसारते छूटैहै नहीं भटकते रहैहै ३०३ ॥

अपनीकहेमेरीसुनै सुनिमिलिएकैहोइ॥
मेरेदेखतजगगया ऐसामिलानकोइ ३०४

गुरुमुख ॥ साहब कहैंहैं कि आपनीशंका मोसों कहै पुनि जौनमें वद शास्त्रादिकनमें कह्योहै ताकोसुनै औ वहमेरेवाक्यमेंमिलावै देखैतोकोई शंका रहिजातीहै अर्थात् न रहिजायगी तब एकैमत ह्वैजाय एकजोमैंहौं ताहीको जानिलेइ और सबछोड़ि देइ सो ऐसामोको कोई न मिला जो मेरेदेखत जगगया होय कहे जगतते दूरि भयाहोइ ३०४ ॥

देशदेशहमबागिया ग्रामग्रामकीखोरि ॥
ऐसाजियरानामिला जोलेइफटिकपछोरि ३०५

कबीरजी कहैंहैं कि मैं देशदेश गांउ गांउ खोरि खोरि बाग्यो परन्तु ऐसा जियरा मोको कोईनमिला कि जोमैं कहौंहौं ताको फटिक पछोरि लेइ ३०५ ॥

लोहेचुम्बकप्रीतिजसलोहालेतउठाय ॥
ऐसाशब्दकबीरको कालतेलेइछड़ाय ३०६

लोहेकी औ चुम्बककी प्रीतिहै जोलोहको चुंबक देखैहै सो उठाय लेइहै ऐसे कबीरजोहै कायाको बीर जीव ताको या शब्द रामनामहै जौनजीवको कालते छड़ाय लेइहै जैसे चुम्बक लोहेके किनकाको आपने में लगाय लेइहै ऐसे रामनामजीवको आपनेमें लगायलेइहै ३०६ ॥

गुरूबिचाराक्याकरैशिष्यहिमेंहैचूक ॥
शब्दबाणबेधैनहींवासबजावैफूक ३०७

कबीरजी कहैंहैं कि गुरू जोहै साहब सो बिचारा कहाकरै शिष्यजोहै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीव ताहीमें चूकहै कौन चूकहै यासों कि रामनामरूपी जो शब्द बाण ताके साथ छयउजेचक्रहैं तिनको बेधिकै सातों चक्र जेहैं सुरतिचक्र ताको बेधिकै उहां जो गुरूबतावैहैं मकरतारडोरि ताहीचढ़िकै रामनाम रूपीबाणके साथ साहबके पासजायवो न जान्यो वहै निर्गुण ब्रह्म जोहै झूर बास ताहीमें लगिकै फूंकिफूंकि बजावैहैं अर्थात् वोहीको ज्ञान कथैहैं ३०७ ॥

दादाबाबाभाईकैलेखैचरनहोइगेबंधा ॥
अबकीबेरियाजौनासमुझ्योसोईसदाहैअंधा ३०८

मानुष शरीर पायकै दादा बाबा भाई सबसाहिबैको मानैहै सोई साहबके चरणको बंधाहोयहै कहे साहबके चरणमें सदा लगेरहैहैं सो अबकी बेरियाकहे या मानुष शरीरपायकै साहबको न जान्यो सोई सदा को अंधाहै ३०८ ॥

लघुताईसबतेभलीलघुताइहिसबहोय ॥
जसद्वितियाकोचन्द्रमाशीशनवैसबकोइ ३०९

लघुताई सबते भलीहै लघुताइन ते सबहोइहै सर्वत्र साहबको देखै आपनेको दासमानै तौ वाकी प्रीति साहबमें बढ़ते जायहै औ सब माथनावैहै तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥ लघुतातेप्रभुतामिलै प्रभुतातेप्रभु दूरि ॥ चींटीलैशक्करचली हाथीकेशिरधूरि ३०९ ॥

मरतेमरतेजगमुवामरणनजानैकोइ ॥
ऐसाहैकेनामुवाजोबहुरिनमरनाहोइ ३१०

मरते मरते सबजग मराजायहै मरण कोईनहीं जानैहै ऐसा ह्वैकै कोई न मुवा जाते फेरि मरण न होय अर्थात् इन्द्रिनते मनते शरीरते भिन्न ह्वैकै साहबमें न लगे जाते पुनि जनन मरन नहीं होय ३१० ॥

बस्तुअहैगाहकनहींबस्तुसोगरुवामोल ॥
बिनादामकोमानवाफिरैसोडामाडोल ३११

वह गरुवामोलको जो साहबहै सर्वत्र पूर्णहै परन्तु वाको गाहक कोई नहीं मिलैहै औ बिना दामको कहे बिना मोलको यह जीव साहबके ज्ञानविना डामा डोलमें फिरैहै अर्थात् जैसे बाजारमें गयो औ सब साज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उहां बनीहै औ हाथमें दाम नहीं है तौ डामाडोल फिरैहै लै नहीं सकै है तैसे साहब सर्बत्र पूर्णहै परन्तु सतगुरुको उपदेश रूप दामनहीं है डामाडोल फिरैहै ३११ ॥

सिंहअकेलाबनरमैपलकपलककैदौर ॥
जैसाबनहैआपनातैसाबनहैऔर ३१२

बनजोहै शरीर तामें सिंह जोहै जीव सो अकेला रमैहै औ पलक पलकमें दौर करिकै गुरुवनसों पूछैहै सो असनहीं बिचारैहै कि जैसा बन कहे शरीर मेरोहै तैसे औरहू कोहै जैसे मोको अज्ञानहै तैसे इनहूं को अज्ञान है येई नहीं संसारते छूटे हमको कैसे छुड़ावैंगे ३१२ ॥

मरतेमरतेजगमुवाबहुरिनकियाबिचार ॥
एकसयानीआपनीपरबशमुवासंसार ३१३

मरत मरत सबजग मरिगया औ मरत चलोजायहै पै बहुरिकै कहे उलटिकै कोई न बिचार कियो कि काहेते मरेजायहैं आपनी आपनी सयानीते एकएक खामिन्द खोजिलियो साहबको न जान्यो जे जीवके मालिकहैं तेहिते कालके बशहै सबमरे जायँहैं ३१३ ॥

पैठाहैघरभीतरैबैठाहैसाचेत ॥
जबजैसीगतिचाहतातबतैसीमतिदेत ३१४

साहबजोहै सो सबके घटमें पैठाहै औ साचेत बैठाहै जबजैसीगति जीवचाहैहै तबतैसी मतिजीवको देइहै जीव अणुचैतन्यहै साहब बिभु चैतन्यहैं सो जीव जौनेकर्मको सन्मुख होइहै तबचैतन्यता बढ़ाय देइहै तैसेमति बढ़ाय देयहै औ बिना साहबके समर्थ जीव कछूनहीं करिसकै तामेंप्रमाण ॥ कर्तृत्वंकरणत्वंच सुभावश्चेतनाधृतिः ॥ यत्प्रसादादिमे संतिनसंतियदुपेक्षया इतिश्रुतेः ३१४ ॥

बोलतहीपहिचानियेचोरशाहुकेघाट ॥
अंतरकीकरणीसबैनिकसैमुखकीबाट ३१५

जे साहब में लगैहैं ते औ जे धोखाब्रह्ममें लगैहैं ते इनको कैसेपहिचानिये तौ उनके बोलते अन्तरकी करणी मुखकी बाट निकसैहै तबहीं चोर शाहू पहिचाने परैहै इहां चोर जो कह्यो सो यहजीव साहबको है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिनको चोराइकै कहे छोड़िकै धोखामें लग्यो ताते चोरकह्योहै तामेंप्रमाण ॥ नारिकहावैपीउकी रहैऔरसँगसोइ ॥ जारपुरुषहिरदेबसै खसम खुशीक्योंहोइ ३१५ ॥

दिलकामहरमकोईनमिलिया जोमिलियासोगरजी ॥
कहकबीरअसमानैफाटा क्योंकरिसीवैदरजी ३१६

मन दिलका महरमी कहे निःकामह्वै साहबमें लगै याकोई न मिल्यो जो मिल्यो सो गरजवाला मिल्यो ताको तेतनै मँजूरीदैकै साहब अऋण ह्वैजायहै सो कबीरजी कहैंहैं कि जोजीव साहबकोहै तौ जौन जौनवस्तु साहबकीहै तौनतौन बस्तु जीवहूकीहै पै आपनेको असफाटा कहे जुदा जुदामानैहै कि साहबसों मांगैहै कि फलानीबस्त मोको देउ या मूरुख नहीं समुझैहै कि साहबकी शरण भये कौनौ बातकी टोटी न रहिजायगी सो दरजी जो साहबहै सो कहांतक सीवै कहे आपनेमें मिलावै ३१६ ॥

बनाबनायामानवा बिनाबुद्धिबेतूल ॥
कहालालललैकीजिये बिनाबासकाफूल ३१७

यह मानवा जोहै मनुष्य सो बनै बनावा औ बेतूलहै कहे कौनौ देवता याकी बराबरीको नहीं है पै विना बुद्धिकोहै याहीते सबते नीचह्वै रह्योहै बिनाबासको कहे बिना सुगंधको लाल फूल लैकै कहाकरै ऐसे जीव बहुत सुन्दरभयो औ साहबको न जान्यो और मतनमें लगिकै लालह्वैरह्यो वा बुद्धिनहीं जाते साहबकोबूझै तौ कहाभयो तामेंप्रमाण ॥ कहाभयोजोबड़कुलउपजे बड़ीबुद्धिहैनाहिँ ॥ जैसेफूलउजारिके वृथालालझरिजाहिँ ३१७ ॥

साँचबरोबरतपनहीं झूंठबरोबरपाप ॥
जाकेभीतरसाँचहै ताकेभीतरआप ३१८
करतैंकियानबिधिकिया रबिशशिपरीनदृष्टि ॥
तीनलोकमेंहैनहीं जानतसकलौसृष्टि ३१९

यासाखीको अर्थ स्पष्टहै ३१८ कर्त्ता पुरुष भगवान नहीं किया न करतार किया न रबि शशि दृष्टि परी न तीनलोकमें खोजेमिलै परन्तु सब सृष्टि जानैहै सो कबीरजी कहैंहैं कि या झूंठ कहांते आईहै ३१९ ॥

आगेआगेदववरै पीछेहरियरहोइ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलिहारीवावृक्षकी जरकाटेफलहोइ ३२०

कर्त्ता जगतको बनायो सो कैसोहै ताकोकहैंहैं आगे आगे दवबरै आगे शरीर सबके जरतजायहै औ पीछे हरियरहोयहै कहे नयेनये शरीरधारण होतहैं सो ऐसे संसाररूपी बिटपकी बलिहारी है जामें जरकाटे फलहोइहै अर्थात् जौनेजीवको संसार निर्म्मूल ह्वैगयो तौनेजीवको साहबरूपी फल मिलैहै ३२० ॥

सरहरपेड़अगाधफल अरुबैठाहैंपूर ॥
बहुतलालपचिपचिमरे फलमीठापैदूर ३२१

या शरीररूपी सरहर वृक्ष बड़ाऊंचाहै सरलहूहैसबकोमिलैहै औ शरीर वृक्षको फलकहाहै साहबको जानै सरअगाध है औ सर्व्वत्र पूर्णहै अन्तर्यामी रूपते सबके हियेमेंबैठाहै सो ऐसोसाहबको ज्ञानरूपीफलमीठाहै परन्तु दूरिहै बहुतलाल कहे बहुत जे जीवहैं ते पचिपचि मरे पै पाये नहीं अथवा साहबको ज्ञानरूपीफल सरहरहै कहे चीकनहै चढ़नेमाफिक नहीं है खसिलिपरैहै तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥ बहुतफलोगचढ़ेबिन भेदा देखाशिखगहिपानी। खसिलापाउँऊर्ध्वमुखझूले परेनरककीखानी॥ औ शरीरकोफल साहबको भजनहै तामेंप्रमाण गोसाईंजीको ॥ देहधरे कोयाफलभाई। भजीरामसबकामबिहाई ३२१ ॥

बैठरहैसोबानिया धरारहैसोग्वाल ॥
जागतरहैसोपाहरू तिनहुँनखायोकाल ३२२

बनिया बैठरहैंहैं दूकान लगाये ते गुरुवालोगहैं जे जौने देवताकोमन्त्र मांगैंहैं ताको तौनही मन्त्र देइँहैं औ ग्वालखड़े गौवनको चरावैंहैं तेवेहैं जे आत्मैको मालिक मानैंहैं इन्द्रिन कोचरावैंहैं जौने बिषयचाहैंहैं तौने भोगैंहैं दूसरोलोक नहीं मानैंहैं शरीरहीको मानैंहैं औ जे जागत रहैंहैं ते पाहरूहैं आपनी बस्तु ताकैंहैं तेयोगीहैंआपनी इंद्रीको ताकेरहैंहैं समाधि लगाये सदा जागतरहैंहैं सोये तीनों साहबको न जान्यो ताते तिनहुँनको काल धरिखायो ३२२ ॥

युवाजराबालापनबीत्यो चौथिअवस्थाआई ॥
जसमुसवाकोतकैबिलैया तसयमघातलगाई ३२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीनिउँ अवस्था बीतगई चौथि अवस्था आयगई जैसे मूसको बिलारी ताकेहै ताको घात लगायेहै तैसे यम तोको घात लगाये हैं सो अजहूँ साहब को चेतु ३२३ ॥

भुलासोभुलाबहुरिकैचेतु ॥ शब्दकीछुरीसंशयकोरेतु ३२४

गुरुमुख ॥ साहब कहैंहैं कि हेजीव तैंभूला सोभूलाभला यह संसारते बहुरिकहे उलटिकै तौचेतकरौ सारशब्द जोरामनाम छूरीतेहिते आपनी संशय रेतडारु कहे काटिडारु अर्थात् रामनामको अर्थतौ बिचारु तैंमेरोई है और पदार्थ छोड़िदे तामेंप्रमाण ॥ यकरामनामजानेबिना भवबूड़िमुवा संसार ३२४ ॥

सबहीतरुतरजायकै सबफललीन्होचीखि ॥
फिरिफिरिमांगतकबिरहै दर्शनहींकीभीखि ३२५

सबहि तरुतर जायकै कहे शरीर धारणकरिकै सुख दुःखरूप फलसब चाख्यो नाना उपासना योग ज्ञान बैराग्य सबकै चुक्यो शरीरधरेको फल कोई न पायो सो शरीर धरेको फल साहब को दर्शन है सो फिर फिर कबीर मांगैहै ३२५ ॥

श्रोतातोघरहीनहीं बकताबदैसोबाद ॥
श्रोताबकताएकघर तबकथनीकोस्वाद ३२६

श्रोतातो घरहीमें नहीं है अर्थात् सुनतै नहीं है औ बक्ता आपनो मत बादि बादि बदैहै श्रोताको समुझावैहै सो जब श्रोता बक्ता एक घर होइ कहे एकै उपासना होइ एकैमत होय तब कथनीको स्वादहै कहे कथाको स्वाद तबहीं मिलैहै जैसे याज्ञबल्क्य भरद्वाज इत्यादिक तामेंप्रमाण ॥ इष्टमिलैअरुमनमिलै मिलैभजनरसरीति ॥ तुलसिदाससोइसंतसों हठ करिकीजैप्रीति १ शिष्यसाँचगुरुसाँचहै झूंठनजियतनमान ॥ बध्योशिष्य साँचीप्रकृति छोरतगुरुदैज्ञान २ श्लोकबीरहूजीकोप्रमाण ॥ नामसत्य गुरुसत्यहैआपसत्यजबहोइ ॥ तीनसत्यप्रकटैंजबैगुरुकाअमृतहोइ ३२६॥

कंचनभोपारसपरसि बहुरिनलोहाहोइ ॥
चंदनबासपलाशबिधि ढाककहैनहिंकोइ ३२७

पारसको परसिकै कंचन भयो जोलोहहै सोफिरि लोहा नहीं होइ है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औ चन्दनके बासते पलाश जो छिउलहै सो बेधिगयो ताको ढाख कोई नहीं कहैहै चन्दनै कहैहै ऐसेजोजीव साहबकोह्वैगयो साहबके पासगयो ताको जीव कोईनहीं कहैहै पार्षदरूप कहावन लगैहै ३२७ ॥

बेचूनैजगराचिया साईंनूरनिनार ॥
तबआखिरकेबखतमें किसकाकरौदिदार ३२८

बेचून निराकार जौन जगतको रचिसिहै सोसाईंके नूरते कहेप्रकाशते निनारहै जुदाहै अर्थात् साहबको प्रकाश न होइ वा नूरही अल्लाहहै ऐसा जो मानो तो हेमुसल्मानो मैंपूछताहौं कि आखिरके बखतमें कहे क्यामतिके बखतमें वानिसाफ करैगा ऐसा कुरानमें लिखताहै सो उसको बेचून मानतेहौ निराकार मानतेहौ तौ भला वा किसतरहसे निसाफ करैगा औ किसका दिदारकरौगे अर्थात् किसकी सूरति देखौगे भावयाहै कि वा निराकार नहीं है साकारहै तुमको भरम भयाहै सो यावात सत्ताईस रमैनीके मूलमेंहै साहबको नूरजोहै प्रकाश सो सबके भीतर बाहर भराहै कोई जगह उससे खालीनहीं है औ साहब औ साहबकी सामग्री औसाहबको लोक सब नूरहीनूरकाहै वहां बहुतसा नूर समिटिकै एकसल देखी परैहै जिसतरहकी मसालकी जैसा साहबहै तैसासाहबहै दृष्टांत काकोदेइ सो कबीरजी पूछैहैं कि भला तुमहूँ तो बिचारिदेखो कि जो उसके हाथपांउ न होतो तौ जगतकोकैसे रचतो सो साहबसाकारहै तुमकोनिराकारकी भरम भईहै तामेंप्रमाण॥कलिमा बाग नेवाजगुजारै । भरमभईअल्लाह पुकारै ॥ अजबभरमयकभई तमासा । लामकान बेचूननिवासा ॥ बेनिमून वै सब केपारा । आखिर काकोकरौदिदारा ॥ रगरैमहजिदनाकअचेता । भरमाने वुतपूजाहोता ॥ बावनतीसबरण निरमाना । हिन्दूतुरुक दोऊपरमाना ॥ भरमिरहेसबबरणमहँहिन्दूतुरुकबखान । कहैकबीरबिचारिकै बिनगुरुकी पहिचान ॥ भरमतभरमतसबभरमाना ॥ रामसनेहीबिरलाजाना ३२८ ॥

साईंनूरदिलएकहै सोईनूरपहिचानि ॥
जाकेकरतेजगमया सोबेचूनक्योंजानि ३२९

साईंजोहै साहब श्रीरामचन्द्र ताहीको एक नूरसबके दिलमेंहै सोई नूरतें प्रकाश पहिचानु जौनेके करते जग सब उत्पत्ति भयाहै ऐसोजो साहब ताकोतू बेचून कहेनिराकार न जानु वेसाहब साकारहैं औ निर्गुण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सगुणकेपरेहैं तामेंप्रमाण कबीरजीको साक्षीरूप अखण्डित व्यापीचैतन्य श्चैतन्य । ऊंचेनीचे आगेपीछे दाहिनबायँअनन्य ॥ बड़ातेबड़ा छोटते छोटा मोहीतेसबलेखा । सबकेमध्य निरन्तरसाईं दृष्टि दृष्टिसोंदेखा ॥ चामचश्मसों नजरिन्आवै खोजुरूहके नैना । चूनचगूनबजुदन मानुतें सुभानमूनाऐना ॥ ऐनाजैसे सबदरशावै जोकछुभेषबनावै । ज्योंअनुमान करैसाहबको त्योंसाहबदरशावै ॥ जाहिरूह अल्लाकेभीतर तेहिभीतरके ठाईं । रूपअरूपहमारीआशहै हमदूनहुंकेसाईं ॥ जोकोउरूहआपनीदेखै सोसाहबकोपेखा । कहैंकबीरस्वरूपहमारा साहबकोदिलदेखा ३२९॥

रेखरूपजेहिहैनहीं अधरधरोनहिंदेह ॥
गगनमँडलकेमध्यमें रहतापुरुषविदेह ३३०

कैसोसाहबहै कि जाकेरूपरेखा नहीं है औबिशेषिकै देहधारण कीन्हेहै अर्थात् रसहीरस देहधारणकियेहै पञ्चभौतिकनहीं है औअधरजो आकाश तामेंदेह कबहूं नहीं धरै अर्थात्जो कबहूं नरहै तबनदेहधारै वातोसर्बत्र पूर्णहै गगनमण्डलके मध्यमें कहेतीनआकाशहैं एकनीचे एकमध्यमें एक ऊपर सोतीनों आकाशमें वा बिदेहपुरुष पूर्णहै ३३० ॥

धरोध्यानवापुरुषको लावहुबज्रकेवाल ॥
देखिकैप्रतिमाआपनी तीनोंभयेनिहाल ३३१

वह परमपुरुष साहबजे रसरूपतिनको ध्यानधरो जलन्धरबन्ध लगाय कै झटकादेकैबज्र कपाट लगायो सुरति कमलमेंजोरकारहै सोध्यानकिये साहब आपही प्रगटहोयहै यहीध्यान करिकै तीनों ब्रह्मा बिष्णु महेश आपनी आपनी प्रतिमा देखिकै निहाल भयेहैं अर्थात् साहबके समीप हजारन ब्रह्मा बिष्णु महेशदेखिकै यानिहालभये कि धन्य हमारीभाग्यहै किश्रीरामचन्द्रके द्वारमेंहमहूं हैं यहांतो कोटिनब्रह्मांडके ब्रह्माबिष्णु महादेवमौजूदहैं ठाढ़े स्तुति करैहैं ३३१ ॥

यहमनतोशीतलभया जबउपजाब्रह्मज्ञान ॥
जेहिबैसन्दरजगजरै सोपुनिउदकसमान ३३२

जब ब्रह्मज्ञानभयो तब यहमन शीतलह्वैगयो अर्थात् सङ्कल्प बिकल्प छोड़िदियो तपिबो मिटिगयो सो जौने बैसन्दरते कहे ब्रह्मज्ञानते मन को सङ्कल्प बिकल्प छूटिगयो जगजरिगयो अर्थात् न रह्यो तौन जोब्रह्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान सो उदकजो साहबकी प्रेमाभक्ति तामेंसमान अर्थात् जब साहब कीभक्तिभई तबवा ब्रह्माग्नि न रहिगई यामेंते याआयो कि ज्ञानको फल साहबकी भक्तिहै तामेंप्रमाण ॥ ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मा नशोचतिनकांक्षति॥ समःसर्वेषुभूतेषु मद्भक्तिं लभतेपरां १ भक्तिमें छागुणहैं ॥ क्लेशघ्निशुभदा मोक्ष लघुताकृतसुदुर्लभा । सांद्रानन्दविशेषात्मा श्रीकृष्णकर्षणीमता ॥ बिनाभक्ति साहब नहीं मिलैं तामेंप्रमाण कबीरजीको भवतरणग्रन्थको॥ सुनुधर्मदासभक्तिपदऊंचा । तिनसीढ़ीनहिं कोउपहूंचा ॥ बर्तएकहैभक्ति कोपूरा ।औरबर्त सबकीजैदूरा ॥ औरबर्तसब जनकीफाँसी । भक्तिहिबर्त मिलैंअबिनासी ३३२ ॥

जासोंनाताआदिकोबिसरिगयोसबठौर ॥
चौरासीकेबशपरेकहतऔरकोऔर ३३३

जौने साहबको आदिको नातारहै कहेजाको सदाको दासअंश तौने रामचंद्रको भक्तिबिसरिगयो मायामेंपरि चौरासीलाख योनिके बशहै औरकोऔर कहैहैं अर्थात् कहूं कहैंहैं किवा ब्रह्ममही हौं कहूं आत्मैको मालिक मानैहैं कहूं नाना देवतनको स्वामी मानैहैं परन्तु संसार काहूको छुड़ायो न छूट्यो ३३३ ॥

बूझौशब्दकहांतेआयाकहांशब्दठहराय ॥
कहकबीरहमशब्दसनेहीदीन्हाअलषलषाय ३३४

लीन्ह्यो फटिकपछोरि यहसाखीभर सबपोथिनको पाठमिलि आवाहै औलोहे चुंबक प्रीति जस यह साखीते चौरासीकेबश यह साखीभो उन्तिससाखी एकपोथीके क्रमते ह्वैआवा अर्थ अबएक पोथीमें अट्ठाइस साखी औरईऔरहैं तिनहुनको अर्थलिखैहै यहशब्द जोरामनामहै सो बूझौ कहेबिचारौ कहांते आयाहै औकहां ठहरायहै सोहम वहीशब्दके सनेहीहैं वाशब्द तुमनहीं बूझतेहौ कैसोहैशब्द किसाहबके इहांते आयोहै ॥ रामनामलैउचरीबानी ॥ यहरमैनीमें लिखिआयेहैं सोजब कुछुनहीं रह्यो तबरामनामहीते सबकी उत्पत्तिभईहै सोरामनाम मंत्रार्थ जोमें बनायोहै तामेंबिस्तरते लिखिदियोहै इहां संक्षेपते जनाये देउँहौ आ ई ऊ ऋ ऌ ए ओ ऐ अ उ च हयवरट ञणनम झभ घढधस जबगडद खफछठ तचतटवक पयशषसरहलः ॥ येसबवर्ण चौदहसूत्रमें पाणिनि लिखिदियो ॥ आद्यंताभ्यांआद्यंतौ सहमध्यगानामसंज्ञा ॥ यहसूत्र करिकै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकार आदिका लीन औलकार अंतका लीन तब अलपूत्याहार कीन तेहिते बीचके चरण सब आयगये सोअलपूत्याहार रामनामको एकदेश ते निकसैहै सोरामनामके रकारकोवर्ण बिपर्यय कियो तबअकारको यह कैतिलै औ रकारको वह कैतिलैगये तब अर भयो सो रकार लकारको अभेदहै तेहिते अलभयो तेहिते रामनामके एकदेशते सबनिकसि आये तेहिते सबको आदि रामनामहै सोरामनामको अर्थसाहिबै केठहरायहै अर्थात् रामनाम साहबहीको बतावैहै सोभीकबीरजी कहैहैं किहम वही शब्दके सनेहीहैं कैसोहै शब्द किअलषहै वा सबको लषावैहै वाको कोई नहीं लषैहै जैसेआंखीते सबकोदेखै औआंखी आपनीकोई नहीं देखैहै जोकहो कबीरकैसे कहैहैं किहमअलषको लषायदियो तौसुनौ जैसेअयना लैकैदेखै तौआपने आंखीको प्रतिबिंब देखिपरैहै सोयह बीजकरूप अयनाहै तामेंअनिर्बचनीय जोरामनाम ताको प्रतिबिंब बीजकमें दिखायो अर्थात् यहबतायदियो किरामनामहीते जगतमुख अर्थमें सबकी उत्पत्ति भईहै औरामनामही साहबको बतावैहै साहबमुखअर्थमें औअनिर्बचनीय साहबको रामनामही देखायदेइहै यहकबीरजी अलषके देखिबेकी उपाय बतायदियो यहीअलषको लषावनोहै सोजब साहबको ह्वै जाय तबया लषै तामें प्रमाण सुखसागरको ॥ अलषअपारलषैकेहिभांती । अलषलषै अलषैकीजाती ३३४ ॥

बूझौ करताआपना मानौबचनहमार ॥
पंचतत्वकेभीतरैजिसकायहबिस्तार ३३५

तुमकहांतेआये औतुमको कोकियो सोअपने कर्ताको तुम बूझौ वह साखीमेंतो बचन हमकहिआये ताको तुममानौ तुम वहशब्द रामनामही ते भयेहौ जिसका यहबिस्तार सबदेखतेहौ औजौनजौन मानिदी तुम मानिराखेहौ सोसब पंचतत्वके भीतरहै एकवह रामनामही पंचतत्वके बहिरेहै औवही तुम्हारो आदिकर्त्ताहै ३३५ ॥

हमकर्ताहैंसकलसृष्टिकेहमपरदूसरनाहिं ॥
कहैकबीरहमैंनहिंचीन्हैसकलसमानाताहि ३३६

हमैंसम्पर्ण सृष्टिके कर्ताहैं हममालिक दूसरनही है हमैंसबके मालिक हैं सबमहीं में समानहै हमैंब्रह्महैं ऐसाकोईकोई कबीर कायाके बीरजीव कहैहैं ताकोआपै खंडन करैहैं ३३६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुतनहिंमानैबातपिताकी सेवैपुरुषबिदेह ॥
कहैकबीरअबहुँकिनचेतौ छाड़ौझूंठसनेह ३३७

तैं सुतहै रामनाम प्रतिपाद्य जे साहबहैं ते तेरे पिताहैं तिनकी बात तैं नहीं मानैहै औ बिदेह पुरुष जोहै ब्रह्म ताको सेवैहै कहे आपही ब्रह्म ह्वै बैठैहै सो अबहू चेतकरु साहब कहि आयेहैं कि ॥ अजहू लेहुँछंड़ायकाल सों जोघटसुरतिसँभारै ॥ सो ऐसेपिताकी बातमानु यह झूंठसनेह छोड़िदे जो आपनेको ब्रह्ममानिकै बैठेहै कि महीं ब्रह्महौं यहब्रह्मतो मनकोअनुभवहै झूंठाहै जीव ब्रह्म कबहूं नहीं होयहै ३३७॥

सबैआशकरशून्यनगरकी जहांनकर्त्ताकोई ॥
कहकबीरबूझौजियअपने जातेभरमनहोई ३३८

सबैवह शून्यनगरकी आशाकरैहैं जहांकोई कर्त्ता नहीं है सो वहतो झूंठाहै सो कबीरजी कहैंहैं कि तुम आपने मनमें बूझौ तौ उहांतौ कर्त्ता हईनहीं है औ जगत बनैहै तौ कौन जगतको कियो है तेहिते निराकार अकर्त्ता ब्रह्म कहनूति जो कहौहौ सो सब झूंठी है सो यह तुम आपने जियमें बूझौ जेहिते ब्रह्मवालोभ्रम तुमको न होइ ३३८ ॥

भक्तिभक्तिसबकोइकहै भक्तिनआईकाज ॥
जहँकोकियाभरोसवा तहँतेआईगाज ३३९

भक्तिभक्ति सबकोईकहैंहैं औरेऔरे देवतनकी भक्तिकरैहैं सो वा भक्ति कौनौ काज न आई जेहिजेहि देवको भरोसाकियो तहांते गाजआई कहे वेसब काल स्वरूप हैं सबयाको मारिकै आपनेलोक लैगये जब महाप्रलय भई तब इष्ट औ उपासक दोऊ न रहे पुनि जबजगतकी उत्पत्तिभई तब कर्म्मानुसार वोऊ उत्पत्ति भये ३३९ ॥

समुझौभाईज्ञानियो काहुनकहासँदेश ॥
जेइगयेबहुरेनहीं हैवहकैसादेश ३४०

हेभाई ज्ञानिउ तुम समुझतेजाउ तौन तुम ब्रह्म ब्रह्म कहौहौ तहांको संदेश कोई न कह्यो कहे सब वेदांती ब्रह्मज्ञानी कहैंहैं कि वाकोतो हम कहीनहीं सकैंहैं धोंकैसाहै औ जेउहां गये ते बहुरिकै न आये जो वहांको संदेश बतावै अर्थात् कुछु न हाथलग्यो ३४० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धोखेसबजगबीतिया धोखेगईसिराइ ॥
थितिनाकरैसोआपनी यहदुखकहानजाइ ३४१

धोखाहीते सम्पूर्ण जगत व्यतीतहोगया और धोखाहीतेसिराइगया औ यहमन अपनीथिति नहीं पकरैहै कहे स्थिरनहीं होयहै सोआपनीभूल कासोंकहै या दुःख काहूसों नहीं कह्यो ३४१ ॥

मायातेमनऊपजै मनतेदशअवतार ॥
ब्रह्माबिष्णुधोखेगये भरमपरासंसार ३४२

साहब औ साहब के पास पहुँचेहैं जे तिनकोछोड़े औरसब मनकेफंद में परेहैं औरअर्थ स्पष्टहीहै ३४२ ॥

रामकहतजगबीतेसिगरे कोईभयेनराम ॥
कहकबीरजिनरामहिँजाना तिनकेभेसबकाम ३४३

हमहीं रामहैं हमहीं रामहैं या कहत कहत सबजगबीतिगये कहे मरि गये परन्तु कोई राम न भये औ कबीरजी कहैंहैं कि जिन श्रीरामचन्द्रको मालिकजान्योहै तिनके सबकाम ह्वैगयेहैं ३४३ ॥

यहदुनियाभैबावरी अदिटसोंबाँध्योनेह ॥
दृष्टमानकोछोड़िकै सेवैपुरुषबिदेह ३४४

यह दुनिया बावरी ह्वैगई अदृष्ट जो निराकार ब्रह्म तासों नेहबाँध्योहै सो वातो धोखाहै काकोमिलै जीवब्रह्म होतही नहीं है सो दृष्टमान जे साहब श्रीरामचन्द्रहैं तिनको छोड़िकै वा बिदेहपुरुष निराकार ब्रह्मको सेवैहै अर्थात् वाहीमें लागैहै ३४४ ॥

राजारैयतकैरहा रैयतलीन्हीराज ॥
रैयतचाहैसबलिया तातेभयाअकाज ३४५

राजा जो साहबहै सो रैयत ह्वैरहाहै अर्थात् वाकोकोई जानतही नहीं है औरैयत जो धोखाब्रह्म सोसबलेतभयो अर्थात् सबजगत वाहीमें लगतभयो सो रैयत जोहै अहंब्रह्मास्मि सो साहबको सबलियो चाहैहैं अर्थात् आपै ब्रह्म होनचाहैहै ताते अकाजभयो मायाके बशह्वै आपनेन को मालिक माननलग्यो ३४५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसकामंत्रजपैसबसिखिकै तिसकेहाथनपांऊं ॥
कहैकबीरमातुसुतकाही दियानिरंजननांऊं ३४६

जिसका मंत्र सबसिखिकै जपैहैं प्रणव उसकाअर्थ ब्रह्महीहै जिसके हाथपांउ नहीं हैं औ निरञ्जन जोहैब्रह्म ताको निरञ्जन नाम मायैकोधरायो है माया वा निरञ्जन ब्रह्मकी माताहै काहेते किया निरञ्जननाम बचन में आवैहै बिज्ञान करिकै अनुभव जो ब्रह्महोइहै सो मनको अनुभव है मायैको पुत्रहै वहमाया मनमेंमिलि इच्छारूपहै सो जाकोतुम ब्रह्मकहौ हौ सोई मायाते रहित नहीं है तुम कैसे अहब्रह्म मानि मायाते रहित होउगे तामेंप्रमाण कबीरजीकेशब्दको ॥ मनपरपंचीमनैनिरंजन मनहीं हैओंकारा ॥ तीनलोकमनफाँसिलियाहै कोईनमनतेन्यारा ३४६ ॥

जनिभूलौरेब्रह्मज्ञानी लोकवेदकेसाथ ॥
कहकबीरयहबूझहमारीसोदीपकलियेहाथ ३४७

कबीरजी कहैंहैं कि रेब्रह्मज्ञानी तुमजनिभूलौ लोकवेदके साथ लोकमें सरहना पायकै वेदमें धोखाब्रह्ममें लगिकै अर्थात् तुमयामें न खराबहोउ सो कहकबीर यह बूझ हमारी कहे कायाके बीर जीवौ परमपर पुरुष जे साहब श्रीरामचन्द्र तिनमें तनमनतेलागो जोहमारी बूझहैसोई साहबके अनुरागरूप दीपक हाथमें लैउ जातेसंसाररूप अंधकारते पारहोउ ३४७ ॥

देवनदेखासेवकहि सेवकदेवनदीख ॥
कहकबीरइनमरतेदेखो यहगुरुदेईसीख ३४८

देवता आपने सेवक को न सेवक आपने इष्ट देवतन को न दीख तिनको कबीरजी कहैंहैं कि हम दूनोंको मरते देखाहै अर्थात् महाप्रलय में नहीं रहै ताते हम गुरूकी सीख इनको देतेहैं कि धोखा औ नानामत को त्यागि साहबको जानो जाते जनन मरनछूटै या सीखदेतेहैं ३४८ ॥

तेरीगतितैंजानैदेवा हममेंसमरथनाहीं ॥
कहकबीरयहभूलसबनकी सबपरेसंशयमाहीं ३४६

सबलोग याकहैंहैं कि तुम्हारी गति तुम्हीं जानो हममें सामर्थ्य नहीं है जौन हमको गुरू बताय दियोहै ताहीमेंलगेहैं तिनको कबीरजी कहैंहैं कि इन सबकी भूल ईश्वर तो बतायै न आवैंगे औ जीवको तो आपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहबको जानबै चाही नाहक संशयमें परेहैं साहबको जानैं तौ साहब छुड़ाइ लेइँगे ३४९ ॥

खालीदेखिकैभरमभा ढुंढ़तफिरैचहुँदेश ॥
ढूंढ़तढूंढ़तमरगया मिलानिर्गुणभेश ३५०

जौने संशयमें सबबूड़िगयेहैं सोसंशय कबीरजी देखावैंहैं खाली कहे शून्य देखिकै सब जीवनको भरम भयो सो देवता परोक्षहै वाको अर्थ जानैंनहीं है औ चारो देशमें ढूंढ़त फिरैंहैं औ केतौ वानिर्गुण धोखाब्रह्म को ढूंढ़त ढूंढ़त मरिगये खोज न लाग्यो ३५० ॥

बूझआपनीथिररहै योगीअमरसोहोइ ॥
अबबूझैंभरमैतजै आपैऔर न कोइ ३५१
देखादेखीसबजगभरमा मिलानसतगुरुकोइ ॥
कहैकबीरकरतनितसंशय जियराडारखोइ ३५२

गुरुवालोग कहैहैं कि जोबूझ थिररहै तौ योगी अमरह्वैजाय जोजगत्के नानाभरम छोड़िकै अबहू बूझैतौ एक आपहीहै दूसरानहीं है मारैगाकौन ऐसे कहि कहि देखादेखी श्रीकबीरजी कहैहैं कि सबजगत् भरमि गयो सतगुरु कहे साहबके जाननवारे इनको कोई न मिलो हमहीं ब्रह्म हैं यही संशय में डारिकै आपने जीवन को खोइ डारे अर्थात् नरक में डारि दीन्हे ३५१ । ३५२ ॥

ढांकीआशलगाइया झूंठीढांकीआश ॥
गृहतजिबनखँडमानिया युगयुगफिरैनिराश ३५३

वा ब्रह्म जोधोखा ताकीआश लगायेहै सो आशतेरी झूंठीहै गृहत्यागि कै जाके हेत तुम बनखण्डमें टिकेहु सो युग युग निराश फिरैगो अर्थात् ठिकान न लगैगो वहमिथ्याहै बिनासाहबकेजाने संसारतेनछूटैगो३५३॥

नेइकेबिचलेसबघरबिचला अबकछुनाहिंबसाइ ॥
कहैकबीरजोअबकीसमुझै ताकोकालनखाइ ३५४

कबीरजी कहैहैं कि नेइजब बिगरि जायहै तब सगरो घर बिगरिजाय हैऐसे नेइ जोहै धोखाब्रह्म जौनेको गुरुवालोग समुझावैं हैं सोई जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिथ्या ठहरयो तब और सब लोकके देवता येई घरहैं ते बिगरिबोई चाहैं अर्थात् इनते अब कौन सांचफल मिलै सो श्रीकबीरजी कहैहैं जो कोई साहबको समुझै अर्थात् तन मनते लागै ताको कालनहीं खायहै और सब कालको कलेवा हैं ३५४ ॥

रामरहेबनभीतरे गुरुकीपूजिनआश ॥
कहकबीरपाषंडसब झूठेसदानिराश३५५

बन जोहै संसार तौनेके भीतर जब जीव भयो तब रामरहे कहे वह जीव रामते रहित भयो रामकोपुनि बरिआई पावैहै अथवा रामतेरहित जब जीव भयो तब संसारी ह्वैजायहै और परम गुरुजे सुरति कमल में बैठे रामनाम बतावैहैं तिनकीआश न पूजतभई वे रामनाम बतावै हैंयह नहीं सुनैहैं वेछड़ावनचहैहैं सोनहीं छूटैहैं औजेसाहबकोछोड़ि औरऔरमें लगावैहैं ते सबपाषण्डहैं झूठेहैं औपाषण्डीजेहैं औरऔरमें लागे हैंतिनकी मुक्ति कबहूं नहीं होइहै वे सदानिराशरहैं तामेंप्रमाण चौरासी अङ्गकी साखी ॥ चकईबिछुरीरैनिकी जायमिलीपरभात ॥ जेजनबिछुरेरामते दिवसमिलैंनहिंरात ३५५॥

बिनारूपबिनरेखको जगतनचावैसोइ ॥
मारैपाचौजोनहीं ताहिडरैसबकोइ ३५६

जोमनजगत्को नचावैहै सो बिनारूपकोहै औ बिनारेखकोहै आकाश बायुआदिकजेहैं तिनमें रूपनहीं हैं पैरेखदेखीपरैहै औबायुको परसहोइ है साइरेखहै औ मनकेरेखऊनहीं है सो जेपाँचौज्ञानेन्द्री पाँचौकर्मेन्द्री कोनहीं मारैहैं ऐसेगुरुवनकोसबजने डेरातेजाउ नहीं तौ तुमहूं कोसंसार मेंडारिदेइँगे ३५६॥

डरउपजाजियहैडरा डरतेपरानचैन ॥
देखारामहिहैनहीं यहौकहैदिनरैन ३५७

यहीमनतेडरउपजा कहेयहीके अनुभवते ब्रह्मभयोसो भूतब्रह्मकोसबै डेरायहैं सो यहीब्रह्मके डरमेंजीवडराहै कहेपराहैसो यहब्रह्मकेडरते चैनी याको परा अर्थात् यहब्रह्मकोढूंढ़तही रहिगये पायोनब्रह्म न भयो नचैन भयो यहकहैहैं कि रामको कोई देखाहै हमतोनहीं देखा जो कोईहमको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखाइदेइ तौहममानैं सो अरेमूढ़ौ तुमतोडरमें परेहौ तुमकोकैसेदेखाइ देइँ जाकोसाहब कृपाकरैहैं ताकोदेखाइदेइहौं ३५७॥

सुखकोसागरमैंरचा दुखदुखमेलोपाव॥
थितिनापकरैआपनी चलेरंकऔराव ३५८

श्रीकबीरजीकहैंहैं कि मैंतो या बीजकग्रन्थमें सुखकोसागर रच्योहै कहे साहबको बताइदियोहै तामेंनहीं लगैदुखमेंपाँउमेलैहैअर्थात् कहूं ब्रह्ममें कहूं ईश्वरनमें कहूँ नानामतमें लागैहै जहाँ याकीथितिहै साहबमें तिनको नहीं पकरैयाहीते राजारङ्कसबचले जायहैं कालखायेलेइहै ३५८॥

दुखनहतासंसारमें हतानसोगबियोग ॥
सुखहीमेंदुखलादिया बोलैबोलीलोग ३५९

यासंसारजोहै सो चितअचितरूप साहबकोहै सोजोकोई साहबरूप करि संसार को देखैहै ताको न दुखहै न सोगहै न बियोगहै साहबतो सर्वत्रपूर्णहै ऐसोसुखरूपजोहै संसारतामें मोरतोरमें परिकै दुखलादिया कहेदुखभोगनलग्यो औ वही मोरतोरकी बोलीलोग बोलैहैं साहबको नहीं जानैहैं ३५९॥

लिखापढ़ीमेंपरेसब यहगुणतजैनकोइ ॥
सबैपरेभ्रमजालमें डारायहजियखोइ ३६०

सबलिखापढ़ीमें परेहैं वेदशास्त्रतात्पर्य्य करिकै साहबको बतावैहैं सो तो न जान्यो बादबिवाद पढ़िपढ़ि करनलगे नयेनयेग्रन्थ बनाय लेनलगे लिखनलगे वेदशास्त्रको अर्थफेरिडारनलगे साहब मुखअर्थ जौनतात्पर्य्य करिकै वेदशास्त्रबतावैहैं ताकोछोंड़िअर्थबदलैहैं यागुणको कोईनहीं छांड़ै याहीतेसबभ्रम जालमेंपरे आपनेजियको खोइडारचो ३६०॥

धोखेधोखेसबजगबीता द्वैअगुआकेसाथ ॥
कहैकबीरपेड़जोबिगरै आवकाअवैहाथ ३६१

कबीरजीकहैहैं कि एकशुभकर्म एकअशुभकर्म येदुइअथवा बिद्याअबिद्यामायाये दुइ अथवा माया ब्रह्मयेदुइअगुवाके साथबिगरिगयो अर्थात् माया बादीशक्ति ब्रह्मबादी ये दुइअगुवाहैं तामेंप्रमाण कबीरजीको ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबिरायुगयुगसंप्रदा सिरीशङ्करीदोय ॥ सिरीसुवादीशक्तिके शङ्करशिवही होइ १ सो धोखेधोखेन सब जग बीताकहे मरिगये मरतजायहैंमरिजाँयगे श्रीकबीरजी कहैंहैं कि पेड़ही बिगरिगयो काहेतेकि साहबजीवको बहुत गोहरायोकि मेरेपास आ परन्तु पेड़हीते अर्थात् प्रथमहीते मेरेपास न आयो मन औमनको अनुभव ब्रह्मकोऔमायाकोमिलिकैयहजीव संसारी ह्वैगयो साहबको न जान्यो जब शुद्धरह्यो है तबहीमायामन ब्रह्म याको धरिकै संसारी कैदियोहै ताहीके वश परयोहै अबकहां याकेहाथ साहब आवैहैं सो याको भावयहहै कि जो मन मायाब्रह्म ईश्वर उपासना ज्ञान सब छोड़ि साहबमें लगै तब यह जीव को कल्याण होइ यह जीव श्रीरामचन्द्रहीकोहै औरको नहीं है सो आपने स्वामीको चीन्है तबहीं याको कल्याण होइगो औरी भांति कल्याण न होइगो औ बीजक भरेको सिद्धांत यहहै कि वेदशास्त्र पुराणादिक कुरान किताबनको कि जीव साहब श्रीरामचन्द्र कोहै सो जब उनको जानै तबहीं कल्याणहै औरी भांति कल्याण नहीं है औ जो यासिद्धांत न जानै तौ संसारमें भटकतही रहै सो मैं सर्ब सिद्धांत ग्रन्थमें स्पष्टही लिख्योहै कि वेद शास्त्र सिद्धांतमें प्रतिपाद्य श्रीरामचंद्रही कोकियोहै सो देखिलीजियो औ बीजकमें सोई कबीर जी सिद्धांत कियोहै कि मन बचनके परे निर्गुण सगुणके परे श्रीरामचन्द्रहैं औ तिनहीं के जाने जीवकी मुक्ति होइहै तामेंप्रमाण ॥ सायरबीजकको पद ॥ संतौबीजकमतपरमाना । कैयकखोजी खोजिथकेकोइ बिरलाजन पहिंचाना ॥ चारिउयुगऔनिगमचतुर्भुज गावैग्रन्थअपारा । विष्णुबिरंचि रुद्रऋषिगावैं भेवनपावैपारा ॥ कोइनिर्गुणसगुणठहरावै कोईजोतिबतावै । नामधनीकोसबठहरावै रूपकोनहीं लखावै ॥ कोउसूक्षमअस्थूलबतावै कोउअक्षरनिजसांचा । सतगुरुकहँबिरलेपहिंचानैं भूलेफिरैंअसांचा ॥ शोभकेभक्तिसरैनहिंकामा साहबपरमसयाना । अगमअगोचरधामधनीको सबैकहैंहाँजाना ॥ देखैनपंथमिलैनहिपंथी ढूंढ़तठौरठिकाना । कोउठहरावैशुन्यककीन्हा जोतिएकपरमाना ॥ कोउकहैंरूपरेखनहिंवाकेधरतकौन कोध्यानां । रोमरोममेंपरगटकर्ता काहेभरमभुलाना ॥ पक्षअपक्षसबैपचिहारे करताकोइनबिचारा । कौनरूपहैसांचासाहब नहिंकोईबिस्तारा ॥ बहुपरचैपरतीतिदृढ़ावै सांचेकोबिसरावै । कलपतकोटिजन्मयुगवागैदर्शन कतहुँनपावै ॥ परमदयालुपरमपुरुषोत्तम ताहिचीन्हनरकोई । ततपरहाल निहालकरतहै रीझतहैनिजसोई ॥ बधिककर्मकरिभक्तिदृढ़ावै नानामतके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानी । बीजकमतकोइबिरलाजानै भूलिफिरेअभिमानी ॥ कहकबीरकर्ता मेंसबहैकर्तासकलसमाना।भेदबिनासबभरमपरेकोउबूझैसंतसुजाना३६१॥

सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहांदुर श्री सीतारामचन्द्रकृपापात्राधिकारिबिश्वनाथसिंहजू देवकृतपाषंडखंडनीटीकासमाप्तसुभमस्तु ॥

श्लोक ॥

पाषंड खंडनीनाम टीकेयं परमामता ।
प्रेरणात्बिश्वनाथेनबिश्वनाथप्रकाशिता ॥

दोहा ॥

बीजकग्रन्थकबीरको कहरा साखी जान ॥
गूढ़मूललखितिलककिय श्रीबिश्वनाथसुजान १
लहिबिश्वनाथ रजायशुभ रामनाथ परधान ॥
लिख्योआपने हस्तते साखी शब्द महान २

इतिसाखीसम्पूर्णम् ॥

इतिश्रीबीजककबीरदाससम्पूर्णम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
रासलीला	चित्रचन्द्रिका	सहस्र रजनी चरित्र	हरिहर सगुण निर्गु-
नाटक	बारहमासा बलदेवप्र	राविन्मन् का इतिहा-	ण पदावली
प्रबोध चन्द्रोदय	मनोहर लहरी	सीता हरण	वनयात्रा
रामाभिषेक	गंगा लहरी	सती विलास	कायस्थ वर्णनिर्णय
आनंद रघु नन्दन	यमुना लहरी	क़िस्सा मर्द औरत	बिहार वृन्दावन
भ्रमजाल नाटक	जगद् बिनोद	सांगीत प्रह्लाद	समरबिहार वृन्दावन
वेदान्त	शृंगार बत्तीसी	**मुतफ़र्रिक़ात**	कल्प भाष्य
योग वाशिष्ठ	**राग**	शनिश्चर की कथा	लक्ष्मी सरस्वती संवाद
आनन्दामृत वर्षिणी	राग प्रकाश	ज्ञान माला	**दरशी**
सांख्य तत्व कौमुदी	लावनी	गोपी चन्द भरतरी	अक्षरावली
काव्य	**क़िस्सा वग़ैरह**	कथा श्री गंगाजी	स्वयं बोध
सूर सागर	नानार्थनौ संग्रहावली	अवध यात्रा	ज्ञान चालीसी
कृष्ण सागर	ब्रह्मसार	भरतरी गीत	दोहावली
विश्राम सागर	शिव सिंह सरोज	दानलीला व नागली०	बाला बोध
ब्रजविलास बड़ाव छो-	भक्त माल	दोहावली व रत्नावली	विद्यार्थी की प्रथम पु-
कृष्ण प्रिया	इन्द्रसभा	उपदेश चन्द्रिका	किताब जंत्री
विजय मुक्तावली	विक्रम विलास	मंगल बिनोद	गणित कामधेनु
अनेकार्थ	बैताल पच्चीसी	[illegible] चन्द्रिका	लीलावती
छन्दोर्णव पिंगल	सिंहासन बत्तीसी	सिद्धान्त संग्रह	पटवारियों की पु० ४ भा०
रसराज	पद्मावती खण्ड	राम विनय शतक	**वैद्यक भाषा**
सत्सई सटीक व मू	शुक बहत्तरी	गोकर्ण माहात्म्य	निघण्टु
सभा विलास	बकावली सुमन	श्री गोपाल सहस्रना-	अमरबिनोद
तुलसी शब्दार्थ प्र०	चहार दरवेश	कथा सत्य नारायण स-	वैद्यजीवन
भजनावली	क़िस्सा हातम ताई	हनूनाटक	औषधि संग्रह कल्प व-
प्रेमरत्न	अपूर्व्व कथा	हनुमान बाहुक	अमृत सागर बड़ाव छो-
युगल बिलास	क़िस्सा गुल सनोवर	जनक पच्चीसी	रसायन प्रकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
इलाजुल गुर्ब्बा	मार्कण्डेय पुराण	परमार्थसार	ऐक्ट स्टाम्प [illegible]
वैद्यमनोत्सव	ज्योतिष	शार्ङ्गधर संहिता	२६ सन १८६७
दिल लगन	मुहूर्त्तगणपति	पाराशरी सटीक	मज़मूआ ऐक्ट अव
ज्योतिषभाषा	मुहूर्त्तचक्रदीपिका	शीघ्रबोध सटीक	लगान १८ सन १
जातक चन्द्रिका	मुहूर्त्तचिंतामणि स-	लघुजातक	पुरज़ादारी २६ स
जातकालंकार	मुहूर्त्तदीपक	षट्पंचाशिका	१८६६ ई० वग़ैरह
दैवज्ञाभरण	वृहज्जातक सटीक	सामुद्रिक	ऐक्ट स्टाम्प दस्ता
ज्ञानस्वरोदय	जातकालंकार	गरुड़पुराण	त १८ सन् १८६९ ई
रमलसार	जातकाभरण	रामविवाहोत्सव	ऐक्ट नाल्लुकदारा
रमलनौरत्न	होरामकरंद	क़ानून कैथी	मक़रूज़ अवध २
इन्द्रजाल	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड स-	पटवारियों के क़ायदे	सन १८७० ई०
संस्कृत की पुस्तकें	संस्कृत उर्दू टीका	उर्दू कैथी महाजनी	ऐक्ट चौपायों का
लघुकौमुदी	मनुस्मृति	टिकट के लाइसन्स	खलत बेजा १ सन् १
सिद्धान्त चन्द्रिका	विष्णु हारीत	का ऐक्ट २ सन् १८७८ ई०	ऐक्ट मज़मूआ ज़ा
भाषातत्वप्रकाश	महिम्नस्तोत्र	नागरी	ता फ़ौजदारी १० स
पंचमहायज्ञ	व्रतार्क	ऐक्ट लगान मग़रबी	१८७२ ई०
निर्णयसिन्धु	याज्ञवल्क्य स्मृति	व शिमाली १० सन	ऐक्ट माल गुज़ारी
कर्म्मविपाक	संस्कृत भाषाटी०	१८५९ ई०	ग़रबी व शिमाली १
संग्रहशिरोमणि	अमरकोष तीनों कांड	इंडियन पिनल कोर्ट	सन् १८७३ ई०
भगवद्गीता पंचरत्न	याज्ञवल्क्य स्मृति	मज़मूआ ज़ाबिता फ़ौ	तरमीम मज़मूआ ज़
दुर्गापाठ सू० व सटी-	सन्ध्या पद्धति	जदारी ऐक्ट २५ सन	बिता फ़ौजदारी १
विष्णु भागवत	व्रतार्क	१८६१ ई०	सन १८७४ ई०
अपराधभंजनस्तोत्र	भगवद्गीता टीका ह-	ऐक्ट रजिस्टरी २० सन	तक़ावी के क़ायदे
कायस्थ कुलभास्कर	भगवद्गीता टीका आ-	१८६६ ई०	सवाल व जवाब पु
कायस्थ धर्म्मनिरूप-	गीत गोविंद	ऐक्ट स्टाम्प १ सन	स -
मथुरा सभा	कथा सत्य नारायण	१८६२ ई०	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

पुस्तक-वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित १५ वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५ नये पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri